पुस्तकनो नंबर. १

लेनारनुं नाम. [illegible]

श्री युगादिदेवाय नमः

श्री

ऋषिमंडलवृत्ति.

भाषांतरसहित

(पूर्वार्द्ध)

प्रथम टीका करनार श्री शुभवर्द्धनगणी ठ श्लोकवडे
मंगलाचरण करे छे.

(आख्यानकी वृत्तम.)

योऽभूद्युगादौ शिवशुद्धमार्गप्रकाशकत्वाद्रविरेव साक्षात् ॥
गोभिः स्वकीयैः प्रहरंस्तमांसि, स नाभिभूर्भूरिविभूतये वः ॥१॥

शब्दार्थ—युगादिकने विषे जे पोतानी वाणीवडे अज्ञानरूप अंधकारनो नाश करता छतां कल्याणकारी शुद्ध मार्गने प्रकाश करवाथी साक्षात् सूर्यरूप-ज थयेला छे, ते श्री नाभिराजाना पुत्र (ऋषभदेव प्रभु) तमारी म्होटी संपत्तिने अर्थे थाओ ॥ १ ॥

चित्रं प्रदत्ते विजयांगजोऽपि, प्रणोमुषां यो विजयाङ्गनानाम् ॥
जिनो द्वितीयोऽपि जनेऽद्वितीयः, श्रिये स भूयादजितप्रभुर्वः ॥२॥

शब्दार्थ—विजया राणीना पुत्र एवाय पण जे प्रभु. विजयने विषे अङ्गना एवा नमन करनारा जनोने आश्चर्य करे छे. वळी बीजा जिनेश्वर प्रभु छतां पण मनुष्यने विषे अद्वितीय (एकज) छेः एवा ते श्री अजितनाथ प्रभु तमारी संपत्तिने अर्थे थाओ ॥ २ ॥

निजावतारेऽपि जगज्जनानां, कृता प्रशांतिर्विघ्ननाशयानां ॥
येनार्थिसार्थैप्सुरद्रुमाभः, स शांतिदेवस्तनुतां दिनानि ॥३॥

शब्दार्थ—जेमणे पोताना अवतारने विषे पण [illegible] जगतना मनुष्योने शांति करी छे. वळी याचकोना समूहने [illegible] आप-वामां कल्पवृक्ष समान शांतिनाथ ते शांतिनाथ प्रभु तमारां [illegible] विस्तारो ॥३॥

कुर्वत्यनिष्टं कमठासुरे श्री नागाधिपे चामितभक्तिपूजां ॥
भयोः समादृष्टिरभूद्यदीया, पार्श्वप्रभुर्विघ्नभिदे स वोऽस्तु ॥४॥

शब्दार्थ—कमठासुरे अनिष्ट करे छते अने नागाधिपे (धरणेंद्र) अत्यंत भक्ति पूजा करे छते पण जेमनी दृष्टि ते बन्ने (कमठ तथा धरणेंद्र) उपर समान हती एवा ते श्री पार्श्वनाथ प्रभु तमारा विघ्नोनो नाश करवाने अर्थे थाओ ॥ ४ ॥

येनार्हतो ज्ञातकुलं प्रवृद्धिं, नीतं नितांतं निजकावताराात् ॥
स विश्वविश्वार्चितपादपद्मः, पायादपायात्प्रभुवर्द्धमानः ॥ ५ ॥

शब्दार्थ—जे अरिहंत प्रभुए पोताना अवतारथी ज्ञातकुलने अत्यंत वृद्धि पमाड्युं छे, विश्वे पूज्युं छे. चरण कमल जेमनुं एवा ते श्री वर्द्धमान प्रभु तमारुं नाश (मृत्यु) थकी रक्षण करो ॥ ५ ॥

दृषत्समानोऽपि हि यत्प्रसादमाप्याति मूढः पुरुषोऽतिदक्षः ॥
आदेयवाग् स्याज्जगतीजनेषु, वयं स्तुमस्तान् सुगुरून् सुरद्रून् ॥६॥

शब्दार्थ—जेमना प्रसादथी पथ्थर समान मूढ पुरुष पण जगत्ना मनुष्योने विषे अत्यंत विद्वान् अने ग्रहण करवा योग्य वाणीवालो थाय छे एवा ते सुगुरु रूप कल्पवृक्षने अमे स्तवीए छीए ॥ ६ ॥

आ प्रमाणे छ काव्यथी मंगलाचरण करीने पछी श्री शुभवर्द्धनगणी मूल ग्रंथनी टीकानो आरंभ करे छे.

आ संसारने विषे नाना प्रकारना भवमां उपार्जन करेला असंख्य पापना तापनो नाश करवाने चंद्र समान, भविक जनना समूहने अत्यंत मंगलकारी अने सर्व सिद्धांतोना समुद्र रूप श्री धर्मघोष सूरिए रचेला सर्वागमोक्त आ महर्षिमंडलना स्तोत्रनुं कांइक व्याख्यान अल्पबुद्धिवालो हुं पोताना अने परना अनुग्रहने माटे लखुं छुं.

(आर्यावृत्तम्.)

भत्तिब्भरनमिसुरवर—तिरीडमणिपंतिकंतिकयसोहे ॥
उसभाइजिणवरिंदा—णपायपंकेरुहे नमिमो ॥ १ ॥

शब्दार्थ—भक्तिना भारथी नम्र थयेला इंद्रादिक देवताउना मुकुटना मणिउनी पंक्तिनी कांतिये करीने सुशोभित बनेला श्री ऋषभादिक जिनवरोना चरण कमलने अमे नमस्कार करीए बीए. ॥ १ ॥

तेमां प्रथम मंगलने माटे लेशमात्र श्री युगादिदेवनुं (श्री ऋषभप्रभुनुं) चरित्र कहेवाय बे.

॥ श्री आदिनाथचरित्रम् ॥

देवताउने हर्ष पमाम्नार अने सर्व प्रकारना धर्म कर्मना मार्गने प्रगट करनार श्री ऋषभप्रभुने तेमना चरित्रना बंधथी हुं कांइक वर्णन करीश.

पूर्वे महाविदेह क्षेत्रने विषे क्षितिप्रतिष्ठित नामना नगरमां कुबेरना समान धनवंत धन नामनो सार्थपति रहेतो हतो. एकदिवस कार्यने विषे निपुण एवो ते पोताना नगरथी चार प्रकारना करीआणां लइ श्री वसंतपुर प्रत्ये वेपार करवा माटे जवानी तैयारी करवा लाग्यो. तेनी साथे पोताना शिष्यवर्ग सहित श्री धर्मघोष आचार्य पण ते नगर जेवा तैयार थया.अनुक्रमे प्रयाण करता तेमने मार्गने विषे वर्षाकाल प्राप्त थवाथी ते सार्थपतिए एक म्होटा अरण्यनी मध्ये पमाव कर्यो. त्यां काल विलंब थवाथी भाथुं थै रहेवाने लीधे सौ माणसो कंद मूलनुं भक्षण करवा लाग्या. ते जोइने धन सार्थपति पोताना मनमां विचार करवा लाग्यो के, “अहो ! भाथा रहित ए मुनिउ शुं करता रहेता हशे? अने तेउ शुं भिक्षा लावीने भोजन करता हशे !” आम विचार करीने ते तेमनी पासे गयो अने हर्षथी मुनिउने कहेवा लाग्यो के “ हे भगवंतो ॥ पूज्य एवा तमे म्हारा सार्थने विषे आव्या बो, बता में पापीये आपनी जरा पण चिंता करी नथी, तेथी तमे भक्त पान विना दुःखी थता हशो; माटे म्हारा उपर कृपा करीने म्हारा स्थानकने विषे पधारो अने तमारे योग्य एवुं जे भक्त पान होय ते ग्रहण करीने मने निस्तारो.पबी तेनो अति शुद्धभाव जाणीने आचरण अने अनाचरण जाणवामां कुशल एवा धर्मघोष सूरि तेना आश्रमे (तंबुप्रत्ये) आव्या. त्यां जेने सर्व शरीरे रोमांच थयो बे एवा ते सार्थपतिए सर्व प्रकारना दूषण रहित तेमने बहु घी वहोराव्युं. आवा शुद्धभावथी आपेला दानना प्रभावे करीने तेज भवने विषे प्राप्त थयुं बे बोधीबीज जेने एवो ते सा-

ति मृत्यु पामीने उत्तर कुरु देशने विषे त्रण पल्योपमनी आयुष्यवालो युलीयापणे उत्पन्न थयो. त्यांथी मृत्यु पामीने पहेला देवलोकने विषे त्रण पल्योपमनी आयुष्यवालो देवता थयो अने त्यांथी चवीने ज्यां पश्चिम महाविदेह क्षेत्रने विषे वैताढ्य पर्वत उपर आवेली गंधिलावती नामे विजयमां रहेला गंधार देशमां गंधसमृद्धि नगरने विषे महा बलवंत एवो अतिबल नामनो राजा राज्य करतो हतो; त्यां ते धनसार्थपतिनो जीव इंद्र समान कांतिवालो तेना महाबल नामना पुत्रपणे उत्पन्न थयो. पिता मृत्यु पाम्या पछी राज्यासन उपर बेठेलो महाबल राजा इंद्रनी पेठे साम्राज्य पद भोगववा लाग्यो. तेने विनयादि सर्व गुणवाली श्रेष्ठ विनयवती नामे स्त्री हती. साधुजनो उपासक स्वयंबुद्ध नामे मंत्री हतो अने संभिन्नश्रोत नामे दुष्ट बुद्धिवालो बीजो पण मंत्री हतो.

एक दिवस राज्य सभामां नाटच चालतुं हतुं ते वखते तेमां आसक्त बनेला महाबल राजाने स्वयंबुद्ध मंत्रीए तत्वना जाणपणाथी विनंती करी के, "हे महाराज! आ सर्व गीत विलाप समान अने नाटच विगेरे सर्व विटंबना समान छे. सुवर्णादिना आभरणो भाररूप छे अने सर्वे कामो पण दुःखदायी छे. एम मानीने जिनेश्वर प्रभुए कहेला धर्मने भावथी आदरो. कारण के, जेनाथी तमने परलोकने विषे पण घणुं सुख प्राप्त थाय. वली हे राजन्! हवणां आपना घरने विषे देवता समान जे संपत्ति छे, ते पण निश्चय पूर्व जन्ममां करेला पुण्यनुं फलज छे." आवां स्वयंबुद्ध मंत्रीनां वचन सांभली दुष्टबुद्धिवालो बीजो संभिन्नश्रोत मंत्री बोल्यो. "हे प्रभो! आ स्वयंबुद्ध मंत्री जे कहे छे ते सर्व मिथ्या जाणो. स्वामिन्! आप हृदयमां जरा विचार तो करो के, प्राप्त थयेला लाभने त्यजी दइने अप्राप्य एवा लाभने माटे कयो पुरुष म्होटो प्रयत्न करे? आ राज्यादिक मनोरथो हाथमां प्राप्त थयेला छे, तो पछी थइ गयेला अथवा हवे पछी थवाना स्वप्न समान सुख क्यां! अने वली परभव पण कोणे दीठो छे! माटे हे महाराज! आ प्राप्त थयेला भोगोने दीर्घ काल सुधी भोगवो अने जो आप धर्मना अर्थी हो तो अंत अवस्थाने विषे स्वयंबुद्धना कहेवा प्रमाणे ते जैनधर्मने उज्वल करजो." संभिन्नश्रोत मंत्रीनां वचन सांभली स्वयंबुद्ध कहेवा लाग्यो. "अरे! रणमां घायल थया पछी अश्वादिनुं दम-

न कोण करे ? शत्रुए घेरी लीधेला नगरने विषे धनधान्यादिनो संग्रह शी रीते थाय ? अने घर बलवा लाग्या पछी कूवो केम खोदाय ? माटे प्रथमथी करी राखेला अश्व दमनादि श्रेष्ठ छे. कारण जो ए प्रकारे प्रथमथी जे धर्म करी राखेल होय तो ते सुख आपनारो थाय छे. हे नृपति ! ए उपर हाथीनुं दृष्टांत आपुं, ते सांभलो.

कोइ एक सुकाइ गयेली नदीने विषे कादवमां म्होटो गजराज खुची गयो. तेणे नीकलवाने माटे घणीए मेहेनत करी पण सर्व फोगट गइ. पछी तरसथी पीडा पामेलो ते केटलेक काले भूख तरसनी वेदनाथी काल धर्म पाम्यो एटले शीयाल विगेरे पशुउए तेनुं कलेवर गुदाद्वारथी भक्षण करवा मांड्युं. मांसने विषे लुब्ध थयेला केटलाक कागडाउ ते द्वारथी प्रवेश करीने अंदरनुं मांस पण भक्षण करता.एवामां उनालानी ऋतु आववाथी हाथीनुं गुदा द्वार संकोचाइ जवाने लीधे केटलाक कागडाउ अंदर रही गया. पछी वर्षा ऋतुमां जलना प्रवाहथी ते हाथीनुं कलेवर समुद्रमध्ये गयुं. त्यां मत्स्य विगेरे जलचर जीवोए तेने चीरी नांख्युं एटले तेमांथी कागडाउ नीकल्या. पछी ते कागडाउ आम तेम घणुंए भम्या, पण कांठो प्राप्त न थवाथी जलने विषेज मृत्यु पाम्या. परंतु जो ते कागडाउ प्रथमथीज नीकली गया होत तो सुखी थात. आ दृष्टांतनो सार एवो छे के, कागडा समान भव्य प्राणीउ, हाथीना अंगसमान मनुष्यभव, मांसना भक्षण रूप भोग, गुदाद्वारनुं संकोचाइ जवुं ए भवना प्रतिबंध अने तेमांथी नीकली जवुं ए मृत्यु छे. माटे राजन् ! तमे प्राणीउना उत्तम भोगोने ए.. तुछ जाणो. कारण के, जे पुरुष तेवा भोगोने भावथी त्याग करे छे ते तत्त्वनो जाण कहेवाय छे. वली हे राजन् ! तमे शीयालनी पेठे तुछ एवी भोगसमृद्धिमां न बंधाउ अने दीर्घकाल सुधीना पुष्कल सुखने न हारी जाउ."

संभिन्नश्रोत मंत्रीए कह्युं. "हे स्वयंबुद्ध मंत्री ! तमे ए शीयालनी वात शी कही ?" स्वयंबुद्धे कह्युं. सांभलो तेनुं दृष्टांत.

कोइ एक अरण्यने विषे भमता एवा बलवंत (भिल्ले) म्होटा हाथीने जोइने तेने बलथी बाण मार्युं. बाणथी विंधायेलो ते हाथी पासेथी जता एवा एक सर्प उपर पड्यो. पछी धनुष बाणने नीचे मूकी दइने पेलो वनेचर हाथीना दांतने ग्रहण करवा उत्साहवंत थइ जेटलामां हर्षथी हाथीनी पासे आवे छे ते-

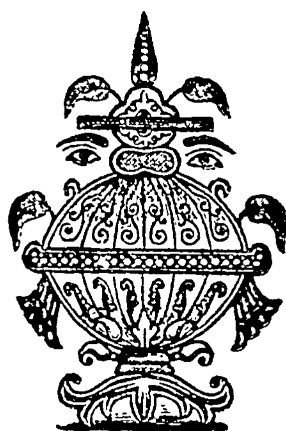
वामां हाथीना कलेवरथी दबाइ रहेला पेला सर्पे तेने मंश दीधो. आ प्रमाणे ते त्रणे मृत्यु पाम्या. पछी कोइ एक शीयाल ते त्रणेने पमेला जोइ हर्षथी विचार करवा लाग्यो के, "अहो! आ हाथीतो म्हारे जीवित पर्यंतनी आजीविका थइ. वली आ मनुष्य अने सर्प पण म्हारे केटलोक काल चालशे; माटे सतेनुं रक्षण करीने हवणा आ धनुष्यना बंधनने भक्षण करुं." आवो विचार करीने ते शीयाल जेटलामां धनुष्यनी दोरीनुं भक्षण करवा लाग्यो तेटलामां बूटी गयेला अर्थात् पहोला थइ गयेला कामठाना छेमावमे करीने गलाने विषे विंधायेलो ते शीयाल तत्काल मृत्यु पाम्यो. (स्वयंबुद्ध मंत्री कहेछे के,) ए प्रमाणे जे पुरुष मनुष्यसुखमां आसक्त थइ परलोकने विषे अवलामुखवालो थाय छे; ते आ शीयालनी पेठे अन्यजन्मने विषे अत्यंत दुःखी थाय छे. हे राजन्! वली सांभलो. आपणे ज्यारे नंदनवनने विषे गया हता त्यारे देवताउने दीठा हता. ते वखते तेउमांथी एक देवताए आपने कह्युं के, "हे भूपति! हुं अतिबल नामनो त्हारो पितामह (दादो) चारित्रने पालीने बीजा देवलोकमां देवतापणे उत्पन्न थयोछुं; माटे हे वत्स! निरंतर जिनधर्मने विषे म्होटो उद्यम कर. (स्वयंबुद्ध कहेछे के,) हे नृपेंद्र! जो आ म्हारुं वचन आपने स्मरणमां आवतुं होय तो निःशंसय परलोक छे, एम जाणो." पछी "हे मंत्री! ते हुं जाणुं छुं." एम महाबल राजाए कह्युं एटले स्वंबुद्ध मंत्रीए भूपतिने जैनधर्ममां स्थिर करवाने माटे फरीथी कह्युं के, "हे भूप! पूर्वे आपना वंशने विषे कुरुचंद्र नामे राजा थयो हतो. तेने कुरुमती नामनी स्त्रीथकी उत्पन्न थयेलो हरिचंद्र नामे पुत्र हतो. ए कुरुचंद्र राजा दुष्ट होवाथी नाना प्रकारना घोर पापकर्म आचरतो; तेथी तेने मृत्युकाल प्राप्त थयो एटले पापना उदयथी गायन गालो समान लाग्युं; सुरूप कुरूप समान जणायुं; मधुर आहार कमवा सरखो लाग्यो; गोशीर्षनो लेप दुर्गंधरूप थयो अने कोमल एवीय पण शय्या छोलाना अग्नि समान जणाइ. वली तेने कोमल स्पर्शवाली अन्य वस्तुउ पण अत्यंत कांटारूप थइ पमी. आ प्रमाणे महा दुःखी थयेलो ते राजा कालधर्मने पाम्यो. पछी तेनो पुत्र हरिचंद्र राज्यासन उपर बेठो. एकदिवस हरिचंद्र संसारथकी भय पामतो छतो पोताना सुबुद्धि मंत्रीने कहेवा लाग्यो के, "हे सुबुद्धि मंत्री! मने उत्तम धर्म संभलाव." ते उपरथी प्रधान तेने केवलज्ञानी पासे लइ गयो. त्यां हरिचंद्र

राजाए ते केवलज्ञानीने पूछ्युं के, “हे विभो! म्हारो पिता मृत्युं पामीने शी गतिमां उत्पन्न थयो छे?” केवलीए कह्युं. “हे राजन्! ते घोर एवा पापना उदयथी सातमी नरकने विषे दुःखनुं पात्र थयो छे.” केवलीनां आवां वचन सांभली प्राप्त थयो छे वैराग्य जेने एवो ते हरिचंद राजा संयम ग्रहण करी अने सर्व कर्मनो क्षय करी मोक्ष पाम्यो. (स्वयंबुद्ध मंत्री महाबल राजाने कहे छे के) हे महाराजाधिराज! ते वंशने विषे घणा राजाओ निवृत्ति पाम्या पछी आप राजा थया छो अने हुं पण सुबुद्धि मंत्रीना वंशने विषेज उत्पन्न थयो छुं;माटे आपना वंशने विषे अमारो अधिकार परंपराथी चाल्यो आवे छे. हे प्रभो! आ सर्व में अवसर विना कह्युं छे, तो पण तेनुं कारण सांभलो. आजे हुं नंदन वनमां तीर्थयात्रा करवा गयो हतो. त्यां में विजयामितघोष नामना बे चारण मुनिने दीठा. में तेमने भक्तिथी प्रणाम करीने आपनुं आयुष्य पूछ्युं तो तेमणे कह्युं के, “भूपतिनुं आयुष्य हवे एक मास बाकी छे.” हे प्रभो! आवां तेमनां वचन सांभली भयभ्रांत थयेलो हुं अहिं आपनी पासे आव्यो छुं. तो हवे आप ए म्हारा वचनने सत्य मानी सुखे अरिहंत प्रभुना धर्मनुं आचरण करो.” भय पामेला महाबल राजाए कह्युं. “अरे प्रधान! जो म्हारुं हवे एकज मासनुं आयुष्य छे तो पछी हुं परलोक संबंधी हित शुं करुं?” मंत्रीए कह्युं. “हे विभो! खेद न करो. कारण के, सावद्य योग रोकनार माणसने एक दिवस पण घणो छे? तो पछी आपनुं आयुष्य तो एक मासनुं छे.”आ प्रमाणे मंत्रीए कह्युं एटले महाबल राजाए अठ्ठाइ महोत्सव करी हर्षथी दीक्षा लीधी. पछी बावीश दिवस सुधी अनशन व्रत पाली ते राजा मृत्यु पामीने बीजा देवलोकने विषे ललितांग नामे देवता थयो.

हे भव्यो! पछी तेनो जेवी रीते उत्तम जीवनी साथे संबंध थयो. ते हुं तमने कहुं छुं, माटे ते ध्यान दइने सांभलो.

जंबूद्वीपना धातकी खंडने विषे मंगलावती विजयमां नंदी नामे गाम छे. त्यां कोइ एक नागिल नामे कुटुंबी वसतो हतो. तेनी स्त्रीये मृगश्री विगेरे छ पुत्रीओनी उपर एक सातमी अत्यंत अप्रिय एवी पुत्रीने जन्म आप्यो. माता पिताए अप्रिय होवाने लीधे ए पुत्रीनुं नाम पण न पाड्युं,तेथी लोकमां ते “निर्नामिका”एवा नामथीज प्रसिद्ध थइ,माता विगेरेने अप्रिय एवीय पण ते पुत्री कष्ट-

ा वृद्धि पामवा लागी. कह्युं बे के–सार विनानो पदार्थ पण वृद्धि पामे बे. एक दिवस निर्नामिकाये केटलाक बालकोने कांइ सारुं खावानुं खाता जोइ पोताानी माता पासे आवीने कह्युं के, "हे मात! मने ते वस्तु लावी आप." मातानिंये पुत्री अप्रिय होवाने लीधे तेने कह्युं. "अरे डुर्नागिणी! तुं मर अने गगनतिलक पर्वतना शिखर उपर जइने फलोनुं नक्षण कर." माताये आ प्रमाणे कहीने तत्काल तेने घरमांथी काढी मूकी, तेथी ते बीचारी रुदन करती करती ते महा नयंकर पर्वत उपर गइ अने त्यां पमेला मनोहर पाका फलोने रुचि प्रमाणे नक्षण करी संतुष्टचित्तवाली थइने त्यांज निवास करीने रही अने पक्षी विगेरेना मधुर शब्दो सांनलवा लागी. एक दिवस ते कुमारीकाये युगंधर गुरुने जोइ प्रणाम करीने पूब्युं के, "हे नगवन्! सर्व प्राणीजने विषे कोइ जीव म्हारा सरखो डुःखी बे?" गुरुए ते कुमारीनी आगल मनुष्य, तिर्यच अने नारकीजना डुःखो कह्या एटले प्रतिबोध पामेली ते कुमारीकाये हर्षथी श्रावक धर्म अंगीकार कस्यो. पबी गुरुने वंदना करी पोताना आश्रम प्रत्ये आवेली ते कुमारीकाये तप करी, शांत थइ अंते अनसन ग्रहण कर्युं. एवामां रात्रीने विषे ललितांग नामना देवताने जोइने ते मोह पामी. ते वखते ते देवता पण स्वयंप्रन्ना देवीना वियोगथी पीडित थयो हतो; तेथी तेणे मंत्रीना वचनथी निर्नामिकाने नियाणुं कराव्युं एटले ते निर्नामिका मृत्यु पामीने ललितांग देवतानी स्त्री स्वयंप्रन्ना थइ. एक दिवस ते स्वयंप्रन्नाये जातिस्मरण ज्ञानथी पोतानो पूर्व जन्म दीठो. पबी ते तेज गगनतिलक पर्वत उपर पोताना गुरु युगंधरने जोइ त्यां तेमने नाटक देखामी पोताने स्थानके गइ. हवे ललितांग देव पण कोइ एक दिवस इशानेंड देवनी साथे श्री नंदीश्वरनी यात्राये जतो हतो. एवामां ते चवीने जंबूद्वीपना विदेह क्षेत्रने विषे रहेली महा पुष्कलावती विजयमां पूर्ण समृद्धिवाला लोहार्गल नगरमां सुवर्णजंघ राजानी लक्ष्मी राणी थकी वज्रजंघ नामना पुत्रपणे उत्पन्न थयो अने अनुक्रमे राज्य पाम्यो. हवे अहिं तेना वियोगथी पीडा पामेली स्वयंप्रन्नादेवी पण गुरुथकी धर्मोपदेश पामीने श्री नमीश्वरनी यात्रा करती चवीने तेज विजयमां पुंमरीकिणी नगरीने विषे वज्रसेन राजानी गुणवती स्त्री थकी श्रीमती नामे पुत्रीपणे उत्पन्न थइने अनुक्रमे यैावन अवस्था पामी. एक दिवस देवतानुं आगमन जोवाथी जा-



श्री अमदावाद जैन विद्याशालामां वेचातां पुस्तकोनुं सूचिपत्र.

कींमत.		
१—०—०	श्राद्धविधि (श्रावकनी सामाचारी)	शास्त्री
१—२—०	सुलसाचरित्र (बांधेली चोपडी)	”
१—०—०	सुलसा चरित्र (छुटापाना)	”
२—८—०	भरतेश्वरवृत्ति	गुजराती
०—८—०	समकित कौमुदी	”
०—२—०	संबोध सत्तरी	”
१—४—०	पर्यूषण महात्म्य बालावबोध	शास्त्री
३—०—०	सज्झायमाला	”
१—८—०	प्रकरणमाला	”
०—६—०	सिंदुरप्रकरण	”
०—४—०	देवसीराइप्रतिक्रमण	”
२—८—०	ऋषिमंडलवृत्ति	”

आ नीचेना पुस्तकोनी किंमत मूल कींमत करतां घटाडेली छे, तेथी ते हवे पछी घटाडेली कींमत प्रमाणे वेचाय छे.

मूल किंमत,	घटाडेली किंमत.		
१-८-०	१-०-०	देवसीराइप्रतिक्रमण	गुजराती
१-८-०	१-४-०	पंडित वीरविजयजीकृत पूजासंग्रह	शास्त्री
१-४-०	१-०-०	जयानंद केवलीनो रास	गुजराती
१-८-०	१-४-०	पूजासंग्रह पद्मविजयजीकृत तथा रूपविजयजीकृत	शास्त्री
१-०-०	०-१२-०	स्नात्र पंचाशिका	गुजराती
१-४-०	१-०-०	देववंदनमाला	शास्त्री
०-१२-०	०-८-०	शत्रुंजयतीर्थ महात्म्य सार	गुजराती
२-०-०	१-१०-०	पंचप्रतिक्रमण तथा नवस्मरण अर्थ सहित	शास्त्री

आ पुस्तको शीवाय मुंबईवाला भीमसी माणके छपावेलां सर्वे पुस्तको तथा तीर्थना नकशा मुंबईनी कींमत प्रमाणे विद्याशालामांथी वेचातां मळे छे.

श्री जैनविद्याशाळा.

डोशीवाडानी पोल—अमदावाद.

तिस्मरण ज्ञान प्राप्त थवाने लीधे अत्यंत दुःखी थयेली ते मूर्छा पामी. मूर्छा निवृत्त थइ एटले ते विचार करवा लागी के "अहो! क्यां ते म्हारा पूर्व भवनो पति? म्हारे आ भवने विषे पण पूर्वभवना पति विना बीजानो खप नथी अने तेज कारणथी हवे हुं बीजा पुरुषनी साथे बोलीश पण नहीं." आ प्रमाणे ते विचार करती हती एवामां धावमाताये मूर्छानुं कारण पूछवाथी तेणे पोतानो सर्व अभिप्राय कही बताव्यो एटले धावमाताये तेना पूर्वभवनुं यथार्थ चरित्र पट्टमां आलेख्युं. तेमां प्रथम नंदिगाम, गगनतिलक पर्वत, पुष्पित उद्यान, अशोक वृक्ष, युगंधर गुरु, देवनुं युगल, इशानेंद्र देव, श्रीप्रभ विमान, स्वयंबुद्ध तथा संभिन्नश्रोत बन्ने मंत्री ए प्रमाणे आलेख्युं. वली तेज पट्टमां स्वयंप्रभा अने ललितांग देवने पण आलेख्या. पछी ते धावमाता पट्टने हाथमां लइ राजपुत्री श्रीमतीना पूर्वभवना पतिने शोधवा माटे नगरमां फरवा लागी. एवामां कोइएक धूर्त पुरुषे पट्टने जोइ मोहथी ते धावमाताने कह्युं के, "हे भद्रे! हुं तेनुं सर्व चरित्र जाणुं छुं." धावमाताये कह्युं. "हे वत्स! जो तुं जाणतो होय तो यथार्थरीते तत्काल कही आप." पछी पेलो धूर्त पुरुष जेम तेम कहेवा लाग्यो एटले धावमाताये पोताना मनमां विचार कर्यो के, "आ कोइ धूर्त पुरुष छे; माटे म्हारे तेने निश्चे छेतरवो."एम धारीने तेणे पेला धूर्त पुरुषने कह्युं. "हे भद्र! तुं ललितांग तो खरो, पण स्वयंप्रभा हवणां लुली थइ छे; माटे ते पोताना पूर्वभवना पतिने इच्छे छे. कारण के, स्वजन विना तेनुं बीजुं कोण पालन करे? माटे हे उत्तम! तुं त्यां चाल अने ते पांगली एवी स्वयंप्रभा देवीनुं पालन कर." आवां धावमातानां वचन सांभलीने ते धूर्त पुरुष भय पामीने शीयालनी पेठे नासी गयो. आ प्रमाणे धावमाताने राजकुमारीना पूर्व भवना पतिनो मेलाप न थवाथी ते प[illegible]ी आवी. पछी ते पुष्कलावती विजयना सर्वे राजाउ एकठा थया; परंतु पट्टने [illegible]इने ते सर्वे जेम आव्या हता तेम पाछा पोतपोताने देश चाल्या गया.

पछी लोहार्गल नगरना महाराजा वज्रजंघे त्यां आवीने अ[illegible]नें जोइने आश्चर्यथी धावमाताने पूछ्युं के, "आ पट्ट कोणे आलेख्यो[illegible]" धावमाताये कह्युं. "हे प्रभो! आप शुं पूछो छो?" पछी वज्रजंघ राजा[illegible] पोतेज सर्व चरित्र कही आप्युं. ए उपरथी धावमाताये कह्युं. "आपनी पूर्व भवनी

प्रिया आ श्रीमती कन्या छे अने वज्रसेन राजा तेने आपनी साथेज परणावशे; परंतु हवणां आप पोताना नगरप्रत्ये जाउ." पछी हर्ष पामेलो वज्रजंघ राजा पोताना लोहार्गल नगर प्रत्ये गयो अने धावमाताये ते सर्व वात श्रीमतीनी आगल वज्रसेन राजाने कही. वज्रसेने पण कह्युं. "हे प्रियधाव! हुं पण श्रीमती अने ललितांग कुमारनी पूर्व जन्मनी वात जाणुं छुं, ते सांभल.

महाविदेह क्षेत्रमां सलिलावती नामनी विजयने विषे वीतशोका नामनी नगरी छे. त्यां जितशत्रु नामनो राजा राज्य करे छे. तेने पेहेली मनोहरी अने बीजी केकयी एम बे स्त्रीयो छे. ते बन्ने स्त्रीयोने अचल अने विधीशन नामना बे पुत्रो थया. पिता मृत्यु पाम्या पछी विजयना सर्व राजाने जीतीने ते बन्ने भाइउ महा बलवंत एवा केशव अने बलदेव नामथी प्रसिद्ध थया. एक दिवस मनोहरीये पोताना पुत्र अचलने पूछ्युं के, "हे पुत्र! हुं जैनी दीक्षा धारण करुं?" अचले तेने स्नेहथी दीक्षा लेवानी ना पाडी. माताये बहु आग्रह कर्यो एटले अचले कह्युं के, "जो तुं मने बोध पमाडे, तो हुं रजा आपुं." पछी मनोहरीये ते वातने कबुल करी चारित्र लीधुं. अनुक्रमे अतिचार रहित चारित्रने पाली ते मनोहरी मृत्यु पामीने लांतक देवलोकमां इंद्र पद पामी. ते इंद्र हुं पोते हतो. हवे कोइ वखते दुष्ट घोडाउए अचलने अने विधीशनने म्होटा अरण्यमां खेंची आण्या. त्यां ते बन्ने भाइउ पडी गया. घोडाउ मरी गया अने विधीशन पण मृत्यु पाम्यो. अचल तेने मृत्यु पामेलो जोइ मूर्छा पाम्यो. आ वखते लांतक देवलोकमां ते वात जाणीने हुं इंद्रनुं रूप त्यजी रथ उपर बेसी तुरत त्यां आव्यो. में अचलने कह्युं. "हे भाइ! हुं विद्याधरनी साथे युद्ध करवा गयो हतो. आ प्रमाणे तने कोणे कर्युं छे? उठ. आपणे आपणी नगरी प्रत्ये जइए." म्हारां आवां वचनथी अचल उठ्यो अने ते विधीशनना शरीरने बालीने पछी अमे नगरीमां आव्या. पछी में मनोहरीनुं स्वरूप करी अचलने देखाड्युं; तेथी ते बोली उठयो के, "हे मात! तुं अहिं क्यांथी आवी?" माताये कह्युं. "हे वत्स! हुं उत्तम रीते चारित्र पाली लांतक देवलोकमां महा वैभववालो देवता थयो छुं. तुं विवेक रहित थइने त्हारा विधीशन भाइनो शोक करे छे, माटे पूर्वना संकेतथी तने बोध करवा आव्यो छुं. हवे तुं विधीशननां बहु शोक त्यजी दइ जिनेश्वरे कहेलो धर्म कर; जेथी तने

आलोक अने परलोकमां सुख थाय." म्हारां आवां वचनथी अचल प्रतिबोध पाम्यो अने चारित्र लइ तपथी श्री प्रभनामना विमानमां ललितांग देवता थयो. त्यां देवसुख भोगवी ते देवता चवी गयो अने तेने पदे पवित्र आत्मावालो वज्रजंघ ललितांग थयो. वली पूर्वनी स्वयंप्रभादेवी पण चवी गइ, तेथी तेना पदे पवित्र आत्मावालो श्रीमतिनो जीव स्वयंप्रभा थइ.लांतक देवलोकमां सत्तर सागरोपमनी आयुष्यवालो हुं पण आयुष्यने पूर्ण करी वज्रसेन नामनो राजा थयो छुं." आ प्रमाणे श्रीमति अने ललितांगनुं स्वरूप कही वज्रसेन राजा पोते आनंद पाम्यो.

पछी वज्रसेन राजाए अनेक महोत्सवपूर्वक पोतानी पुत्री श्रीमती हाथी विगेरेनी भेटो सहित वज्रजंघ राजाने आपी. पछी हर्षित मनवालो ते महाराजा श्रीमती सहित पोताना लोहार्गल नगरने विषे गयो. अहिं पाछल वज्रसेन राजाए पोताना पुत्र पुष्कलपालने राज्य आपी सांवत्सरीक दान दइ, चोसठ इंद्रोए करेला उत्सव पूर्वक दीक्षा धारण करी तीर्थंकर पद प्राप्त कर्युं. अहिं वज्रजंघ राजाने पण अनुक्रमे एक पुत्र थयो अने अनुक्रमे वृद्धि पामतो एवो ते पुत्र निर्मल यौवनावस्था पाम्यो. एवामां पुंमरीकिणि नगरीना राजा पुष्कलपाले पोताना उपर शीमाडाना राजा विरुद्ध थयेला जाणी पोतानी सहाय्य माटे वज्रजंघ राजाने बोलाववा दूत मोकल्यो. पछी वज्रजंघ राजा पण नगरने विषे पोताना पुत्रने राखी पोते श्रीमती सहित म्होटी सेना लइ उत्साहथी शरवण नामना अरण्यने रस्ते थइ चाल्यो एटले तेने केटलाक माणसोए कह्युं के, "हे प्रभो आ मार्गने विषे भयंकर दृष्टीविष सर्पो रहे छे; माटे एने त्यजी दइ बीजा रस्तेथी जाउ." लोकोनां आवां वचन सांभली वज्रजंघ भूपति ते मार्गने त्यजी दइ बीजे मार्गेथी पुंमरीकिणी नगरी प्रत्ये गयो. पछी ते बन्ने महा बलवंत राजाउना भयथी सर्वे राजाउ पुष्कलपालनी आज्ञामां वर्तवा लाग्या. पछी पुष्कलपाल भूपतिए वज्रजंघ राजानो आदर सत्कार करीने विदाय कर्यो. ते वखते केटलाक माणसोए तेने कह्युं के, "हे विभो! तमारे शरवण अरण्यना रस्ते थइनेज लोहार्गल नगरे जवुं." राजाए कारण पूछ्युं एटले तेउए कह्युं के, "ते वनमां बे साधुउने केवलज्ञानना म्होटा उत्सव थवाथी दृष्टी विष सर्पो शांत थइ गया छे." लोकोनां आवां वचन सांभलीने तेज रस्ते थइने जता एवा वज्रजंघ राजाए त्यां ज्ञानधारीउ-

मां उत्तम एवा सागरसेन अने मुनिसेन नामना बन्ने साधुउने दीठा. पछी तेउने वंदना करी वज्रजंघ राजा पोताना लोहार्गल नगरने विषे गयो. ते वखते राज्यना लोभी एवा तेना पुत्रे वज्रजंघने रहेवाना घरनी अंदर विषनो धुमाडो दीधो. पछी जेटलामां महाराजा वज्रजंघे पोतानी प्राणप्रिया श्रीमती सहित ते घरनी अंदर प्रवेश कर्यो के, तुरतज विषना धुमाडाथी लींपाइ गयेला अंगवाला ते बन्ने जणा मृत्यु पाम्या. त्यांथी तेउ उत्तरकुरुक्षेत्रने विषे त्रण पल्योपमनी सूक्ष्म आयुष्यवाला युगलियापणे उत्पन्न थया अने त्यांथी तेउ मृत्यु पामीने पेहेला सौधर्म देवलोकने विषे त्रण पल्योपमनी आयुष्यवाला देवता थया.

हवे वज्रजंघनो जीव पहेला देवलोकथी चवीने जंबूद्वीपमां वप्राव्रज नामनी विजयने विषे प्रभंकर नगरमां सुविधि वैद्यना केशव नामना पुत्रपणे उत्पन्न थयो. श्रीमतीनो जीव पण स्वर्गथी च्यवीने तेज नगरमां शेठना भयघोष नामना पुत्रपणे उत्पन्न थयो. ते पोते श्रेयांस कुमारनो आत्मा हतो. अनुक्रमे ते बन्नेने गाढ प्रीति थइ. वली वैद्यना पुत्र केशवने तेज भवमां पोताना समान गुणवाला राजपुत्र महीधर, मंत्रीपुत्र सुबुद्धि, सार्थवाह पुत्र पूर्णभद्र अने शेठना पुत्र गुणाकरनी साथे मीत्राइ थइ.

एक दिवस प्रीतिना पात्ररूप ते छए मित्रो परस्पर प्रेमथी व्याप्त थया छतां केशवना घरे एकठा थइने बेठा हता. ते वखते अनेक जीवयुक्त एवा कोढना रोगथी व्याप्त थयेला कोइ भिक्षार्थी मुनिने जोइ पेला पांचे मित्रोए हास्य पूर्वक केशवने कह्युं के, "हे भ्रात! तें आवा मुनिने क्यारे पण उपचार कर्यो नहीं." केशवे कह्युं. "हुं तेनो उपाय करीश; परंतु तेने माटे लक्ष लक्ष मूल्यवाळी त्रण वस्तुउ जोशे. ते एज के, रत्नकंबल, गोशीर्ष चंदन अने लक्षपाक तेल. तेमां म्हारा घरने विषे लक्षपाक तेल तो हशे; माटे तमे बाकीनी बन्ने वस्तुने तत्काल मेलवो." आवां केशवनां वचन सांभली उत्पन्न थइ छे श्रद्धा जेमने एवा ते सर्वे मित्रो गोशीर्ष चंदन अने रत्नकंबनी शोध करतां करतां कोइ वेपारीनी डुकाने गया अने तेने पूछवा लाग्या के, "हे भद्र! तमारी डुकानने विषे आ बन्ने वस्तुउ छे?" तेणे कह्युं. "हा, पण तमारे तेनुं शुं काम छे?" तेउए कह्युं. "मुनिराजना उषधने माटे जोइए छीए, माटे

दरेकनुं लक्ष लक्ष मूल्य लइ ते बन्ने वस्तुउ अमने तत्काल आपो." वेपारीए कह्युं. "हे उत्तम पुरुषो! साधुने अर्थे तो एमज लइ जाउ. म्हारे ए वस्तुना मूल्यनुं जरुर नथी." पछी ते वेपारीए भावथी बन्ने वस्तुउ साधुने अर्थे आपी-ने तेज भवने विषे दीक्षा ग्रहण करीने मोक्ष पद प्राप्त कर्युं.

हवे पेला छए मित्रो रत्नकंबलादि सर्व वस्तुउ लइ, नगरनी बहार जइ साधुने उपाय करवा लाग्या. तेमां प्रथम लक्षमूल्यवाला लक्षपाक तेलथी मुनिना शरीरने मर्दन करी रत्नकंबल उढाडीने तेमने तडके बेसार्या. आम करवाथी तो एम बन्युं के, तेल अने तडकाना तापथी तप्त थयेला जीवो मुनिना देहमांथी निकलीने रत्नकंबलने विषे चोटी गया. पछी ते सर्व जीवोने पेला छए मित्रोए उत्कृष्ट दयाने लीधे गायना कलेवरने विषे मूक्या. आ प्रमाणे त्रणवार करवाथी तो साधुनी चामडी, मांस अने हाडकामां रहेला सर्व जीवो जाणे तेमना पुण्यथीज खेंचायला होय नहि शुं! एम बहार निकली गया. पछी शीतलता करवाने माटे गोशीर्ष चंदननो लेप करी, संरोहणी नामनी महाउषधीवडे मुनिना शरीरने छिद्र रहित बनावी दीधुं. पछी तेउए रत्नकंबलने वेची उपजेला पैशाथी एक जिनमंदीर बंधाव्युं. पछी तेउ शुद्ध एवा श्रावक धर्मने पाली अंते मृत्यु पामीने बारमा अच्युत देवलोकने विषे देवता थया.

हवे प्रथम वैद्यपुत्र केशवनो जीव त्यांथी चवीने जंबूद्वीपमां पूर्वमहाविदेह क्षेत्रने विषे पुष्कलावती विजयनी पुंडरीकिणी नगरीमां वज्रसेन राजानी स्त्री धारणीना उदरने विषे उत्पन्न थयो. अनुक्रमे ते अवतर्यो अने तेनुं वज्रनाभ एवुं नाम पाड्युं. बाकीना चार मित्रो पण तेना सुबाहु, बाहु, पीठ अने महापीठ नामना सगा भाइउ थया. श्रेयांसनो जीव बीजे कोइ ठेकाणे अवतरी श्री वज्रनाभनो सारथी थयो. पछी वज्रसेन राजाए प्रव्रज्या धारण करी केवलज्ञान मेलव्युं एटले वज्रनाभ म्होटो होवाथी राज्यासन उपर बेठो. अनुक्रमे ते चक्रवर्ती थयो अने बाकीना चार न्हाना भाइउ मंडलीक (खंडिया) राजाउ थया. वज्रनाभे कुमार अवस्थामां त्रीश लाख पूर्व, सामान्य राज्य पदवीमां सोल लाख पूर्व, चक्रवर्तीपणामां चोवीश लाख पूर्व अने साधुपणामां चौद लाख पूर्व एम चोराशी लाख पूर्वनुं आयुष्य भोगव्युं छे. पछी सर्व पुत्रोए पिता श्री वज्रसेन मुनिपासे हर्षथी दीक्षा धारण करी. अनुक्रमे वज्रनाभ

मुनिए चौद पूर्वनो अभ्यास करीने आचार्य पद मेलव्युं अने बाकीना चार मुनिउए एकादशांगीनो अभ्यास कर्यो. बाहुमुनि निरंतर साधुउने भक्तपानादि लावी आपता अने सुबाहु मुनि सर्व साधुउनी सेवा करता ए उपरथी ते बन्ने साधुउए अनुक्रमे भोगकर्म अने बलकर्म उपार्जन कर्युं हतुं. ज्यारे गुरु ते बन्ने साधुउनी प्रशंसा करता त्यारे पीठ अने महापीठ इर्ष्या करता ते उपरथी पापनेलीधे तेउए पण अत्यंत बलीष्ट एवुं स्त्रीनामकर्म उपार्जन कर्युं हतुं. वज्रनाभ मुनिए पण अरिहंतादिक मनोहर वीश[१] स्थानकने आराधवाथी संसार समुद्रने तारनारुं तीर्थंकर नाम-गोत्रकर्म उपार्जन कर्युं. पछी अनुक्रमे ते सर्वे साधुउ कालधर्म पामीने सर्वार्थसिद्ध विमानने विषे देवतापणे उत्पन्न थया. सारथीनो जीव तेज विमानने विषे देवतापणे उत्पन्न थयो.

हवे पश्चिम महाविदेह क्षेत्रमां परस्पर स्नेहथी व्याप्त एवा सागरचंद अने अशोकदत्त नामना बे मीत्रो वहेपार करता हता; परंतु तेउमां सागरचंद सरल स्वभाववालो अने अशोकदत्त मायावी हतो. सागरचंदने शुद्ध शीलवती प्रियदर्शना नामनी स्त्री हती. अनुक्रमे ते त्रणे जणाउ पोत पोतानुं आयुष्य पूर्ण करी मृत्यु पाम्या. तेमां सागरचंद अने प्रियदर्शना, आ जंबूद्वीपने विषे भरतक्षेत्रना दक्षिण भागमां गंगा अने सिंधु नदीना मध्य प्रदेशने विषे आ अवसर्पिणीना त्रीजा आरामां पल्योपमनो आठमो भाग बाकी रह्यो हतो ते वखते नवसें धनुष्य उंचा शरीरवालो युगलीयापणे उत्पन्न थयो. अशोकदत्त पण पूर्व जन्ममां करेला कपटथी तेज ठेकाणे हाथीरूपे उत्पन्न थयो. एकदिवस वनमां फरता एवा ते हाथीए युगलधर्मे प्राप्त थयेला एवा पोताना पूर्व भवना मित्र सागरचंदने दीठो. पछी एकबीजाना परस्पर दर्शनथी उत्पन्न थयेली प्रीतिने लीधे गजराजे ते जोमलाने पोतानी पीठ उपर बेसार्युं; तेथी बीजा युगलीयाउए तेनुं विमलवाहन नाम पाड्युं अने तेनी स्त्रीनुं नाम चंद्रयशा पाड्युं. ते वखते कालधर्मना अनुसारे कल्पवृक्षो अल्प थवा लाग्या एटले ममता करता एवा तथा अत्यंत क्लेश करता एवा युगलियाउ विमलवाहनने कहेवा लाग्या. "तमे अमारा अधिपती छो, माटे नीति प्रवर्तावो." ते उपरथी तेणे हकार

१ आ विश स्थानकनुं स्वरूप विद्याशालामां छपायेली भरतेश्वर बाहुबलि वृत्तिना पाना ११ मेथी जोइ लेवुं.

नामवाली अर्थात् "हां" एवी महानीति प्रकाशीत करी. पछी थोडुं आयुष्य बाकी हतुं ते वखते चंद्रयशाथी पूर्वना पूण्यने लीधे चक्षुष्मान् अने चंद्रकांता नामनुं एक जोडलुं उत्पन्न थयुं. पल्योपमना दशमा भागनुं पोतानुं आयुष्य पूर्ण थये छते विमलवाहन पोताना पदने विषे चक्षुष्माननने स्थापन करी पोते कालधर्म पामी भवनवासी सुवर्णकुमार देवताउने विषे देवपणे उत्पन्न थयो." चक्षुष्मान् आठशें धनुष्यप्रमाण उंचा शरीरवालो हतो. ते पोताना पीतानी पेठे चंद्रकांता प्रियासहित हकारनीतिथी राज्य चलाववा लाग्यो. अनुक्रमे ते पण आयुष्य पूर्ण थवाने अवसरे पोताथकी उत्पन्न थयेला यशस्वी नामना पुत्रने प्रियंगुप्रिया सहित कुलकरना पदने विषे स्थापन करीने अंते कालधर्म पामी सुवर्णकुमार देवताउने विषे देवपणे उत्पन्न थयो.

चक्षुष्मान् पिताना करता यशस्वी कांइक उंग आयुष्यवालो तथा उंछी उंचाइवालो (साडासातसें धनुष्यनी उंचाइवालो) हतो. तोपण पितानी पेठे राज्य करतो हतो; परंतु मदमां आवी गयेला युगलीयाउ हकारनीतिनुं उलंघन करवा लाग्या, ते उपरथी तेणे हकारनीतिने अनुसरती मकार नामनी "मां" ए नामनी महानीति प्रकाश करी. पछी आयुष्य पूर्ण थवाने अवसरे अभिचंद्र नामना पुत्रने सुरूपाप्रिया सहित पोताने पदे स्थापी पोते उदधिकुमारने विषे देवपणे उत्पन्न थयो. हवे सातसें धनुष्यप्रमाण उंचो, पिताना समान आयुष्यवालो अने चंद्रसमान कांतिवालो अभिचंद्र पोताना सरखी रूपवाली प्रियानी साथे सुख भोगवतो छतो राज्य करवा लाग्यो. अनुक्रमे ते पण कुलकर एवा प्रसेनजित् नामना पुत्रने चक्षुकांता स्त्रीसहित पोताना पदने विषे स्थापन करी पोते पितानी गतिने पाम्यो. पछी साडा छसें धनुष्य प्रमाण उंचाइवालो अने सुवर्णनी समान कांतिवालो प्रसेनजित् पोतानी चक्षुकांता नामनी प्रिया सहित राज्य करवा लाग्यो. ते वखते वीजा युगलीयाउ हकारनीतिनुं तथा मकारनीतिनुं उल्लंघन करवा लाग्या एटले ते प्रसेनजिते धिक्कारनीतिने प्रकाश करी. अनुक्रमे आयुष्य पूर्ण थवाने अवसरे मरुदेव नामना पुत्रने श्रीकांता प्रियासहित पोताने पदे स्थापन करीने पोते कालधर्म पामी द्वीपकुमारने विषे महा समृद्धिवंत देवता थयो. हवे सुवर्णसमान कांतिवाला, साडापांचसें धनुष्यप्रमाण उंचाइवाला, त्रण नीतिना जाण अने श्रीकां-

ता नामनी प्रियायुक्त एवा मरुदेव, नाभिनामना पोताना पुत्रने मरुदेवी नामनी प्रियासहित पोताने पदे स्थापन करी पोते मृत्यु पामीने द्वीपकुमारने विषे देवरुपे उत्पन्न थयो. पछी सवापांचसें धनुष्यप्रमाण देहवाला, संख्याता पूर्व लक्षना आयुष्यवाला अने मरुदेवी नामनी वहाली प्रियावाला, नाभिकुलकर पूर्वे कहेली त्रणनीति प्रमाणे राज्य करवा लाग्या.

हवे सुखम दुखम आरो चालतो हतो, ते वखते सवार्थसिद्ध विमानथी चवीने श्री वज्रनामनो जीव जंबूद्वीपना भरत क्षेत्रनी विनीता नगरीमां अशाढमासनी अंधारी चोथने दिवसे उत्तराषाढा नक्षत्रनो योग छते मरुदेवीना उदरने विषे अवतरयो. ते वखते रात्रीने विषे माता मरुदेवीये जगत्मां श्रेष्ट एवा आ चौद महास्वप्न दीठां. तेमां प्रथम पाणी वरसी जवाने लीधे उज्वल वादलां समान कांतिवालो, पुछ, मुख, कांध अने शींगडाउथी सुशोभित एवो वृषभ जोयो. बीजे स्वप्ने ऐरावण हाथीनी उपमावालो, चार दांत वाळो, श्वेतवर्णवाळो अने जेना साते अंग पृथ्वीनो स्पर्श करी रह्या हता एवा हाथीने पोताना मुखमां प्रवेश करतो दीठो. त्रीजे स्वप्ने कपूरना हार अने नीहार (बरफ) ना समान कांतिवाला अने केशवालीथी मनोहर एवा केशरीसिंहने माता मरुदेवीये पोताना मुखमां प्रवेश करतो दीठो. चाथे स्वप्ने दिशाउना गजेंद्रोए सिंचन करेली अने उत्तम वैभववाळी लक्ष्मीदेवीने पोताना मुखमां प्रवेश करती दीठी. पांचमे स्वप्ने पांचवर्णना पुष्पोथी गुंथेली अने अत्यंत सुगंधीवाली बे दिव्यमालाने दीठी. छठे स्वप्ने पांच प्रकारना ज्योतिश्चक्रथी विंटलाइ रहेला अने प्रकाशथी अंधकारना समूहने नाश करनारा पूर्ण चंद्रने दीठो. सातमे स्वप्ने माता मरुदेवीये किरणोवडे ग्रहोना तेजने हरण करनारा, अंधकारना समूहने नाश करनारा अने कमलना समूहने प्रबोध करनारा सूर्यने दीठो. आठमे स्वप्ने शब्द करती एवी लक्ष घुघरीउथी सुशोभित, आकाशने स्पर्श करी रहेला अने बीजी न्हानी हजारो ध्वजाउथी युक्त एवा मनोहर इंद्रध्वजने दीठो. नवमा स्वप्ने पवित्र जलथी भरेलो, कमल उपर रहेलो, कमलवडे ढंकायेलो अने सर्व कल्याणना मूल रूप एवो कलश दीठो. दशमे स्वप्ने राजहंसोए मथन करी नाखेला कमलना रसथी कांइक पीळा वर्णना जलवाळुं अने श्वेतवर्णना कमलोथी व्यास एवुं पद्म सरोवर दीठुं. अग्यारमे स्वप्ने दूध स-

मान जलथी भरपूर, चंचल एवा कल्लोलथी उछलतो अने नाना प्रकारनां रत्नना समूहथी पूर्ण एवो क्षीरसमुद्र दीठो. बारमे स्वप्ने सुवर्ण तथा रत्नोथी भरपूर, रत्नजडीत्र सुवर्णना हजारो स्तंभवालुं अने वागती एवी नोबतथी आनंदना स्थानरूप विमान दीठुं. तेरमे स्वप्ने चंद्र सूर्यना तेज सरखा, मेरुपर्वतना शिखर समान अने स्फुट एवा पांचवर्णनां रत्नोना समूहने दीठो. चौदमे स्वप्ने प्रसरती एवी ज्वालानी झालेकरीने जटावाला, मध अने घीथी सिंचन थयेला धूमाडारहित अग्निने दीठो.

आवां चौद स्वप्न जोइ प्रभाते जागी उठेला मरुदेवी माताये पोताना स्वप्ननो विचार नाभिकुलकरने कह्यो अने पछी जेटलामां नाभिराजा तेमने स्वप्नानो विचार कहेछे तेटलामां जिनेश्वर प्रभुनी भक्तिथी व्याप्त थयेला इंद्र त्यां आवीने आ प्रमाणे कह्युं. “हे त्रण जगतूनी मात ! हे श्रेष्ठ रत्नगर्भवाली ! तमने हुं नमस्कार करुं छुं. हे देवी ! तमारे धर्मने विषे चक्रवर्ती एवो उत्तम पुत्र थशे. पछी चैत्र मासनी अंधारी आठमने दिवसे उत्तराषाढा नक्षत्रना योगमां प्रभु अवतरया. ते वखते छप्पन कुमारीकाउए त्यां आवीने भूमी मार्जन, जल सिंचन, दर्पण, झारी, वींझणा, अने चामर विगेरेना उपचारोथी प्रभुनी सेवा तेमज रक्षानी पोटली बांधवा विगेरे घाढ क्रियाउ करी. पछी पूर्ण भक्तिथी भरपूर छे आत्मा जेमनो एवा चोसठ इंद्रो पोतानी भक्तिथी मेरु पर्वतना शिखरने विषे प्रभुने अभिषेक महोत्सव करी, नाभी राजाना घरने विषे रत्न विगेरेनी वृष्टी करी तेमज प्रभुनी तथा माता मरुदेवानी नमस्कार पूर्वक स्तुति करी पोत पोताने स्थानके गया.

माताए स्वप्नामां प्रथम वृषभ दीठो हतो तेमज प्रभुना साथलने विषे वृषभनुं चिन्ह हतुं ए उपरथी अत्यंत हर्षवाला माता पिताए इंद्रनी आज्ञाथी शुभ दिवसे तेमनुं वृषभ (ऋषभ) एवुं नाम पाड्युं. अरिहंत प्रभुनी सर्व आद्य क्रीयाउ इंद्रोथीज कराय छे. ए उपरथी एक दिवस इंद्र हाथमां शेरडीनो सांठो लइ प्रभुनो वंश स्थापन करवा माटे आव्यो. पछी आवेला इंद्रने जोइ प्रभुए शेरडीनो सांठो लेवाने माटे लांबो हाथ करयो. ते उपरथी प्रभुना वंशजो इक्ष्वाकु नामना क्षत्री थया. आ प्रमाणे इंद्रथी प्रभुना वंशनी स्थिति थइ. माता पिता जेजे अवसरे प्रभुने योग्य क्रीया करवानी इच्छा करतां हतां तेते अवसरे

तेते सर्व क्रीयाउ इंडे करेली तेउ जोतां हतां.

हवे कोइ एक दिवस कोइ युगलनुं वालजोमुं तालवृक्षनी नीचे रमत हतुं. एवामां अकस्मात् तालफल पडवाथी काकतालीय न्यायनी पेठे पुत्र रूप बालक मृत्यु पाम्यो एटले कन्याने "आ ऋषभनी स्त्री थशे." एम कहीने नाभि राजाए तेने लइ अने तेनुं सुनंदा नाम पाड्युं. पछी सुनंदा अने सुमंगला ए बन्ने कन्याउ सहित श्री ऋषभ प्रभु पोताना पुण्यना योगथी जगतूने आश्चर्यकारी यौवनावस्था पाम्या. प्रभुना विवाहना अवसरे विवाह संबंधी सर्व काम इंड अने इंडाणीये कर्युं. पछी कांइक न्यून एवा छ लाख पूर्व गये छते सर्वार्थसिद्ध विमानथी चविने बाहु अने पीठना जीव सुमंगलाथकी भरत अने ब्राह्मी नामना युगलपणे उत्पन्न थया. वली तेज देवलोकथकी चवीने सुबाहु अने महापीठना जीव सु-नंदाथकी बाहुबलि अने सुंदरी नामना युगलपणे उत्पन्न थया. त्यारपछी सुमं-गलाए श्रेष्ठ लक्षणोथी मनोहर एवा बीजा उगणपचास पुत्रना जोमलांने जन्म आप्यो.

हवे परस्पर नीतिनुं उल्लंघन करता एवा युगलीयाउना समूहो ज्ञानथी, कांतिथी अने बुद्धिथी अधिक एवा ऋषभ प्रभुने जोइने कहेवा लाग्या के "हे प्रभो ! तमे अमारे माटे नीति प्रगट करो. कारण के, जे राजा होय छे ते नीतिने प्रगट करे छे." प्रभुए कह्युं. "हे युगलिको ! ते बातनी तमे नाभिकुलकर नृपति पासे जइने याचना करो". ते उपरथी सर्वे युगलियाउ नाभिराजानी सभामां आवीने ते प्रमाणे याचना करवा लाग्या. नाभिराजाए कह्युं. "तमारो राजा ऋषभ थाउ." पछी सर्वे युगलियाउ प्रभु पासे आवीने कहेवा लाग्या के, "नाभिराजाए अमारा पति आपने ठराव्या छे; माटे तमने उंचा स्थान उपर बेसारी अमे जलवमे अभिषेक करीए. का-रण जे राजा होय छे तेनाथीज नीति प्रकाश कराय छे."

पछी ते सर्वे युगलियाउ जिनेश्वर प्रभुने धुलना ढगला उपर बेसारीने अभिषेकने माटे जल लेवा गया. एवामां इंडे आवीने प्रभुने बहु आभुषणोथी सुशोभीत करीने एक सुंदर आसन उपर बेसार्या. पछी युगलियाउ जल लइने आव्या अने प्रभुने घरेणां विगेरेथी सुशोभित थयेला जोइने तेमणे अत्यंत हर्षथी प्रभुना बे चरणने विषे आणेला जलथी तेमणे अभिषेक कर्यो. पछी

ईंडे "आ युगलियाउ विनीत छे." एम कहीने बार योजन लांबी अने नव योजन पहोली विनीता नामनी नगरी बनावी आपी. पछी प्रभुए ब्राह्मीने जमणे हाथे अढार जातनी लीपी शीखवी अने सुंदरीने डाबा हाथथी गणित शास्त्र शीखव्युं. वली भरतने रूपना कार्य अने बाहुबलिने मनुष्य विगेरेना लक्षण तथा तेमनां मान, उन्मान अने प्रमाण ए त्रण जातना भेद तथा तेमनां लक्षण शीखव्यां. अश्वादि चार पगवाला पशुउनां लक्षणने निरुपण करी, चारवर्णनी स्थापना करी अने सर्व कलाउ प्रदर्शित करीने प्रभुए पोताना भरतादि सो पुत्रने जूदा जूदा देशने विषे राजाउ बनाव्या अने पोते चार हजार राजाउ सहित चैत्र मासनी अंधारी आठमने दिवसे उत्तराषाढा नक्षत्रना योगमां छठ्ठभक्त सहित सिद्धार्थ नामना उद्यानमां आवी संयम ग्रहण कर्यो. ते वखते साथे रहेला चार हजार राजाउए पण चारित्र लीधुं; परंतु तेउ भिक्षा नहिं पामवाथी वनने विषे तापसो थया. कच्छ अने महाकच्छ पण तापसपणुं पाम्या. ते वखते तेउना पुत्रो देशांतरथी पितानी सेवा करवाने माटे त्यां आव्या एटले कच्छ अने महाकच्छे ते पोताना पुत्र नमि विनमिने कह्युं के, "हे पुत्रो! तमे घेरे जाउ अथवा तो कल्पवृक्ष समान जिनेश्वर प्रभुनी सेवा करो." पछी राज्यनी इच्छाथी जिनेश्वर प्रभुनी सेवा करता एवा ते बन्नेने (नमि विनमिने) धरणेंद्रे सर्व विद्या आपीने वैताढय पर्वतनी उत्तरश्रेणि तथा दक्षिणश्रेणिना अधिपति बनाव्या.

हवे भिक्षा नहिं मलवाने लीधे एक वर्ष पर्यंत निराहार अने भिक्षुकोना मध्ये मुख्य एवा प्रभु विहार करता करता भिक्षाने अर्थे हस्तिनापुर प्रत्ये आव्या. ते वखते त्यां बाहुबलिनो पुत्र सोमयशा स्वर्गमां इंद्रनी पेठे राज्य करतो हतो. तेने श्रेयांसकुमार नामे पुत्र हतो. एकदा ते श्रेयांसे एवुं स्वप्न दीठुं के, "जाणे में स्यामवर्ण थइ गयेला मेरुपर्वतने अमृतथी धोइने अति उज्वल कर्यो." ते वखते त्यांना शेठने एवुं स्वप्न आव्युं के, "जाणे सूर्यथकी पृथ्वी उपर पडेलां किरणो श्रेयांसकुमारे लइने पाछा त्यांज (सूर्यना प्रतिबिंबने विषे) स्थापन कर्यां." वली सोमयशाने पण तेज रात्रीने विषे एवुं स्वप्न आव्युं के, "जाणे युद्ध करतो एवो कोइ सुभट श्रेयांसकुमारनी सहायथी विजयलक्ष्मी पाम्यो." सवारे ते त्रणजणा सभामां भेगा थया अने "श्रे-

यांसकुमारनो उदय थशे." एम परस्पर विचार करी पोतपोताने स्थानके गया. पछी जेटलामां श्रेयांसकुमारे पोताना घरने विषे भीक्षाना अर्थी एवा प्रभुने प्रवेश करता जोया तेटलामां शुभ हृदयवाला तेने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थवाथी तेणे जाण्युं के, "हुं पूर्व जन्मने विषे वज्रसेन जिनेश्वरना वज्रनाभ पुत्रनो चक्री नामे सारथी हतो. ते वखते में वज्रसेन केवलीना मुखथी एवुं सांभळ्युं हतुं के, "आ वज्रनाभकुमार भरतक्षेत्रने विषे तीर्थंकर थशे." आ प्रकारना पूर्वभवने जाणी उत्पन्न थयो छे रोमांच जेने एवा सोमप्रभ राजाना पुत्र श्रेयांसकुमारे पोताने भेटमां आवेला शेरडीना रसना घडा उपाडी प्रभु पासे जइने कह्युं के, "हे प्रभो! प्रासुक एवा आ इक्षुरसने ग्रहण करो." पछी प्रभुए एकवर्षे ते निर्दोष आहार ग्रहण कर्यो. ते वखते "अहोदान! अहोदान!!" एवो शब्द करता एवा देवताउए श्रेयांसकुमारना आंगणाने विषे सुवर्ण अने रत्ननी वृष्टी करी. ते उपर कवी घटना करेछे के, जेणे ऋषभ प्रभुने भावथी निर्मल दान आपवाथी पोतानुं घर बहु धनथी पूर्ण कर्युं, पोतानां देदीप्यमान यशना समूहथी त्रण भुवन पूर्ण कर्युं, आत्मा पुण्यना भारथी पूर्ण कर्यो अने लोकने विषे आ सत्पात्रदान प्रवर्ताव्युं. ते श्रेयांसनाम जगत्ने विषे कोने कोन वखाणवा योग्य नथी थतुं? अर्थात् श्रेयांस एज नाम वखाणवा योग्य छे.

पछी राजा विगेरे सर्व लोक, महात्मा श्रेयांसकुमारना घर प्रत्ये जइने तेनां वखाण करवा लाग्या. ते वखते श्रेयांसकुमारे तेउनी आगल पात्रदाननी प्रशंसा करी के, जेथी त्यार पछी लोकने विषे पात्रदान प्रवर्त्युं. "तमे ए शीरीते जाण्युं?" एम लोकोना पूछवा उपरथी सोमयशाना पुत्रे कह्युं के, "प्रभुने देखवाथी मने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं छे; तेथी में जाण्युं." वली तेणे कह्युं के, "म्हारे पूर्वना भवथी प्रभुनी साथे संबंध चाल्यो आवे छे; माटे प्रभुना दर्शनथीज मने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं छे." आ प्रकारे श्रेयांसकुमारना अने प्रभुना परस्पर पूर्वभवना संबंधने सांभली आश्चर्य पामेला लोक पोत पोताने स्थानके गया. पछी जे स्थानके प्रभु उभा हता त्यां श्रेयांसकुमारे रत्ननुं एक पीठ कराव्युं, ते प्रभुना प्रभावथी सूर्यना मंडल समान शोभवा लाग्युं.

हवे भगवान् पृथ्वी उपर विहार करता करता तक्षशिलापुरी प्रत्ये ग-

या एटले सेवकोए हर्षथी प्रभुनुं आगमन बाहुबलिने निवेदन कर्युं. बाहुबलिए पण तेमने प्रीतिदान आपीने कह्युं के, "हुं प्रभाते उत्सव सहित प्रभुनुं दर्शन करीश." परंतु प्रभाते प्रतिबंधथी रहित एवा प्रभु तो बीजे स्थानके विहार करी गया. कारण के, अरिहंतोने प्रेमनुं बंधन होतुं नथी. हवे प्रभाते प्रभुने नहिं देखवाथी शोक करता एवा बाहुबलिए भगवानना कायोत्सर्ग स्थाने सूर्यमंडल समान देदिप्यमान पांच योजन प्रमाण उंचुं, ध्वजाथी सुशोभित दंडवालुं अने योजन प्रमाण विस्तारवालुं प्रभुनी बे पाडुकायुक्त रत्न समान स्तूप कराव्युं. पछी छद्मस्थावस्थामां रहेला भगवान् जोणगाढ, वइलाख्य अने बहली विगेरे देशोमां विहार करतां करतां पुरिमताल नगरना शकटोद्यानमां आव्या.त्यां अठमनो तप करीने वडनी नीचे बेठेला प्रभुने फागण मासनी अंधारी अगीयारसने दिवसे उत्तराषाढा नक्षत्रमां सवारे केवलज्ञान प्राप्त थयुं. तेज वखते भरत राजानी आयुधशालामां पण चक्ररत्न उत्पन्न थयुं. पछी प्रभुने केवलज्ञाननी उत्पत्तिनी तथा आयुधशालामां चक्ररत्ननी उत्पत्तिनी वधामणी आपनारा बन्ने सेवकोए एक कालेज भरत राजाने वधामणी आपी. पछी "आ बन्नेना मध्ये प्रथम पूजा कोनी करुं ?" एम क्षण मात्र विचार करीने उत्पन्न थयो छे विवेक जेने एवो भरत राजा विचार करवा लाग्यो. "पितानुं पूजन करे छते चक्ररत्ननुं पण निश्चय पूजन करेलुं गणाय. कारण चक्ररत्न आ लोकमां सुख आपनारुं छे अने प्रभु तो परलोकने विषे पण सुख आपनार छे; माटे पिताज प्रथम पूजन करवा योग्य छे, पण चक्र नथी."एवो विचार करीने तेणे पोतानी पितामही (बापनी मा)मरुदेवा माताने कह्युं. "हे माता ! झट चालो, हुं आपने त्रण लोकना पति रूप आपना पुत्रनी समृद्धि बतावुं." भरतनां आवां वचन सांभली मरुदेवा माताये हर्षपामी भरतने कह्युं. "तुं मने म्हारा पुत्र ऋषभनुं दर्शन कराव्य." माताये आ प्रमाणे कह्युं एटले भरत राजा तेमने हाथी उपर बेसारीने जिनेश्वर प्रभुने वंदना करवा चाल्यो. पछी देवताओना वैमानना समूहथी चारे तरफ व्याप्त थइ रहेला आकाशने जोइने भरत राजाए मरुदेवा माताने कह्युं. "हे अंब ! त्रण जगत्ने आश्चर्यकारी आपना पुत्रनी आ समृद्धि जूओ के, जेमना आगल आ म्हारी सर्व समृद्धि अल्पमात्र देखाय छे." आ प्रकारनी पुत्रनी सं-

पत्तिने अने पुत्रने वारंवार स्मरण करता एवा मरुदेवा माता ते वखते उत्कृष्ट आनंद पाम्या अने हर्षना आंसुने लीधे बाह्य (उपरनां) अने अभ्यंतर (अंदरनां) नेत्रनां पम्लनो नाश थवाथी माता मरुदेवा पोताना पुत्रनी बाह्य अने अभ्यंतर लक्ष्मी जोइने तत्काल परम पदने पाम्या. अर्थात् मोक्ष पाम्या.

पछी भरतराजाए माता मरुदेवाना देहने अग्निसंस्कार करी समवसरणमां जइने प्रभुनो केवल महोत्सव कर्यो. ते वखते प्रभुए पापने नाश करनारी धर्मदेशना आपी के, जेने सांभलीने केटलाक वैराग्यवंत थया. पछी भरतना पांचसें पुत्रोए अने सातसें पौत्रोए (पुत्रना पुत्रोए) श्री जिनेश्वर प्रभु पासे दीक्षा लीधी. ऋषभसेन विगेरे चोराशी गणधरो थया. ब्राह्मी आदि साध्वीओ अने श्रेयांसकुमार विगेरे श्रावको थया. सुंदरी पण दीक्षा ग्रहण करवाने तैयार थइ हती, परंतु " आ म्हारुं स्त्रीरत्न थवानुं छे." एम धारीने भरतराजाए तेने दीक्षा लेवानी ना कहेवाथी ते श्राविका थइ. आ प्रमाणे प्रभुना चार प्रकारना संघनी स्थापना थइ. ते वखते कच्छ अने महाकच्छे पोतानुं तापसपणुं त्याग करीने प्रव्रज्या आदरी. पछी प्रभुने नमस्कार करी घरप्रत्ये आवेला भरत राजाए चक्ररत्ननी पूजा करी अष्ठाइ महोत्सव कर्यो. त्यारबाद साठ हजार वर्ष पर्यंत पराक्रमथी भरतक्षेत्रने साधी नवनिधि अने चौदरत्नने ग्रहण करी पच्चिस हजार यक्ष अने बत्रीश हजार राजाए परवरेलो ते भरतराजा पोतानी विनिता नगरी प्रत्ये आव्यो. पछी तेणे बार वर्ष पर्यंत चक्रवर्तीनो अभिषेक कराव्यो.

एक दिवस भरतराजाए दुर्बल अंगवाली सुंदरीने जोइने रसोइआने कह्युं के, " अरे! शुं म्हारा घरने विषे एटलुं पण सारुं भोजन नथी के, आ सुंदरी दुर्बल अंगवाली देखाय छे? " रसोइयाए कह्युं. " हे राजन्! आप दिग्विजय करवा गया ते दिवसथी आरंभीने आ सुंदरी निरंतर आंबिलनो तप करे छे." पछी तेने विषे मंदरागवाला भरतराजाए सुंदरीने कह्युं. " तुं मरजी प्रमाणे भोग भोगव्य अथवा तत्काल प्रव्रज्या ग्रहण कर." ते उपरथी वैराग्यवंत थयेली सुंदरीए जिनेश्वरप्रभु पासे संसारनो नाश करनारी दीक्षा लीधी.

पछी महा पराक्रमवंत एवा भरतराजाए पोताना अठाणुं भाइओ पासे दूतो मोकल्या; तेथी तेओ त्यां जइ तेमने कहेवा लाग्या के, "तमे भरत चक्रवर्तीनी सेवा करो." ते उपरथी ते सौए कह्युं के, " हे जनो! भरतने अने

अमने राज्य तो पिताए आप्युं छे, तो अमे तेनी सेवा केम करीए? अमे पितानी आज्ञा लेइने तेनी साथे युद्ध करीशुं." एम कहीने तेओ सर्वे अष्टापद पर्वत उपर प्रभुनी पासे गया.त्यां प्रभुए तेओनी आगल एक अंगाराकरनारनुं दृष्टांत कह्युं के,

"कोइ एक अंगारानो करनार पाणी लइने अंगारा करवा माटे वनमां गयो. त्यां अंगारा करतां करतां पाणी खूटयुं; माथे सूर्यनो तप पडतो हतो अने पडखे अग्नि सलगतो हतो तेथी बलवड काष्टने कापता एवा ते अंगारा करनारने घणी तरश लागवाथी मूर्छा आवी एटले पासे रहेला बीजा सज्जन पुरुषो तुरत तेने घेर लइ गया. पछी मूर्छामां ने मूर्छामां पेलाए नदी, कूवा, धरा अने समुद्रो दीठा ते तेणे पीधां; परंतु तेनी तरश निवृत्त पामी नहीं. पछी तेणे एक घासनो पूलो लइ तेने सलगावीने एक जीर्णवडनी पोलाणमां मूक्यो. पछी तेमांथी निकलतां एवा पाणीनां टीपाने ते जीववडे चाटवा लाग्यो. (भगवान् पोताना पुत्रोने कहे छे के,) हे वत्सो ! तमे पण ए अंगारा करनारनी पेठे देवताना भोगथी तृप्ति पाम्या नथी तो पछी हवणां ए राज्यथी शी तृप्ति पामवाना छो ?" आ प्रमाणे कहीने पछी प्रभुए पापने नाश करनारुं दश वैकालिकनुं अध्ययन तेमने कही संभलाव्युं. ते सांभलीने वैराग्यवंत थयेला ते सर्वे पुत्रोए तेज वखते प्रभु पासे दीक्षा लीधी. पछी तेओना पुत्रो हर्षथी भरत राजानी आज्ञाने अंगीकार करी उत्तम सुखकारी पोत पोताना राज्यो करवा लाग्या.

पछी भरत राजाए एक दुतने शीखामण आपीने बाहुबलि पासे मोकल्यो. दूत त्यां जइने सुनंदाना पुत्र बाहुबलिने मधुर वचनथी कहेवा लाग्यो के, "हे राजन् भरतराजाने छखंडना राजाओ हर्षथी सेवे छे तो तमे महाबलवंत अने चक्रवर्ती एवा ए भरतराजानी सेवा शा माटे करता नथी ?" बाहुबलिए कह्युं. "मने पिताएज राज्य वहेंची आप्युं छे, तो पछी हुं शा माटे भरतनी वृथा सेवा करुं? शुं मने ए सेवा करवाथी वधारे करी आपे तेवो छे ?के शुं ते म्हारा व्याधीओने नाश करी शके तेवो छे ?, शुं आवती एवी वृद्धावस्थाने रोकी राखे तेवो छे? अथवा शुं प्राप्त थयेला मरणने निवारण करी शके तेवो छे? आ उपर कहेलाने निवृत्त करवाने इंद्र पण समर्थ नथी. म्हारे अने एने मनुष्यपणुं समान छे तो पछी हुं लघुपणाने आपनारी तेनी सेवा शा माटे

करुं ?" आ प्रमाणे कहीने बाहुबलिए दूतने पोताना नगरमांथी काढी मूक्यो. पछी दूते जइने बाहुबलिनुं कहेलुं सर्व भरतराजाने कह्युं.

पछी महा पराक्रमवाला ते बन्ने जणाउ सैन्य सहित दुर्जय मृगेंद्रनी पेठे पोतपोताने सीमामे एकठा थया. त्यां अकाले मनुष्यनो क्षयकारी युद्ध करता एवा ते बन्ने जणाने जोइने देवताउए शांत करीने आ प्रमाणे कह्युं. " तमे अमारा कहेवा प्रमाणे पांच प्रकारनुं युद्ध करो. " बन्ने राजाउए कह्युं. " हे देवताउ! कयुं कयुं युद्ध करीए, ते कहो ? " देवताउए कह्युं. " प्रथम दृष्टियुद्ध करो. " पछी देवतानां कहेवा प्रमाणे दृष्टियुद्ध करता एवा ते बन्ने जणामां बाहुबलिनो विजय थयो. पछी देवतानी आज्ञाथी परस्पर वाक्युद्ध अने बाहुयुद्ध करवामां पण बाहुबलिज विजयी निवम्यो. छेवट देवताउए बतावेला दंम अने मुष्टियुद्धमां पण बाहुबलिनो जय अने भरतनो पराजय थयो. आ प्रकारनो सर्व युद्धमां बाहुबलिनो विजय जोइ भरतराजा मनमां विचार करवा लाग्यो. "अहो! सर्व प्रकारना युद्धमां विजय पामनारा आ बाहुबलिनेज हुं चक्रवर्ती मानुं के शुं ?" आम धारी तेणे चक्रनुं स्मरण कर्युं एटले वैरीनो नाश करनारुं चक्र तत्काल तेना हाथने विषे प्राप्त थयुं.

पछी भरते बाहुबलि सामुं चक्र मूक्युं; परंतु ते तो तेने नहिं मारतां प्रदक्षिणा करीने पाछुं भरतना हाथने विषे प्राप्त थयुं. पछी अत्यंत क्रोध पामेलो बाहुबलि मुठी उपामी भरतने मारवा माटे दोम्यो; परंतु रस्तामां वैराग्य प्राप्त थवाने लीधे ते पोताना मनमां विचार करवा लाग्यो के, " अरे! चक्रवर्ती राज्यने धीक्कार हो के, जेना माटे लोभथी आकुल व्याकुल थयेला भाइयो पोताना भाइयोने मारवा माटे दोमे छे. " एम कहीने देवताए आपेला साधु वेषने धारण करी प्रव्रजित थयेलो अने कृतार्थ एवो ते बाहुबलि कायोत्सर्गे उभो रह्यो ते एवो अभिग्रह लइने के, " केवलज्ञान प्राप्त थया विनानो हुं केवलज्ञानी एवा म्हारा न्हाना भाइयोने शी रीते मलुं? माटे हुं त्यां सुधी अहिंज रहीश के, ज्यां सुधी मने केवलज्ञान उत्पन्न थाय. " आ प्रमाणे त्यांज कायोत्सर्गे उभा रहेला तेने एक वर्ष पूर्ण थयुं एटले प्रभुए तेने प्रतिबोध पमामवाने माटे पोतानी ब्राह्मी अने सुंदरी बन्ने पुत्रीउने मोकली. पछी बाहुबलि पासे आवीने ते बन्ने जणीउए तेने कह्युं. " हे बंधो! हाथी उपर रहेलाने केव-

वलज्ञान उत्पन्न थतुं नथी." आवां व्हेनोनां वचन सांभली बाहुबलि विचार करवा लाग्यो के, "अहो! मान एज मदोन्मत गजराज देखाय छे. जगत्पूज्य एवा पोताना भाइयोने वंदन करवामां म्हारी शी हानी थवानी छे? माटे चाल, हवे हुं न्हाना भाइयोने तथा जिनेश्वर प्रभुने वंदन करवाने जाउं."आम धारी जेवो ते पग उपाडी आगल चालवा जाय छे एटलामां तेने केवलज्ञान प्राप्त थयुं, तेथी ते जिनेश्वरनी पासे जइ केवलीउनी पर्षदामां बेठो.

भरतराजा पण बाहुबलिना पदे तेना पुत्र सोमप्रभने स्थापी पोते विनिता नगरीमां जइ अनर्गल भोगोने भोगववा लाग्यो. भरतनो पुत्र मरिचि के, जे प्रभुनी साथे दीक्षा ग्रहण करीने पूर्ण एकादशांगीनो धारक थइ विहार करतो हतो; ते उनालानी ऋतुमां तापना परिसहने सहन करवा समर्थ थयो नहिं, तेथी मूढ मनवाला तेणे परिव्राजकनुं शासन प्रवर्ताव्युं. अर्थात् ते तापस थयो.

कोइ वखते श्री ऋषभस्वामी विहार करता करता अष्टापद पर्वत उपर समवसर्या. ते वखते भरतराजा विचार करवा लाग्यो के "म्हारा राज्यने विषे सुखी अथवा दुःखी कोण छे? म्हारा नवाणुं भाइयोए, बे बेन्होए, पांचसें पुत्रोए अने बीजा पुत्रना पुत्रोए आ प्रमाणे सर्व संबंधीए प्रभु पासे दीक्षा लीधी छे." आ प्रमाणे विचार करीने वली ते चिंतववा लाग्यो के, "हित वादिलुए भोगवेला आ राज्यवडे करीने शुं? निमंत्रण कर्या छतां पण तेउ प्रभु विगेरे म्हारा संबंधिउ तो ते राज्यने इच्छता पण नथी, माटे हवे हुं तेउनी उत्तम अन्नादिकथी भक्ति करूं." आम धारी भरतराजाए पांचसे गाडाथी खेंचीलवाय एटला विविध प्रकारना आहारने लावी प्रभुने निमंत्रण कर्युं. ते वखते प्रभुए कह्युं के, "हे भरत! आधाकर्मादि दोषयुक्त आ अन्न साधुउने कल्पे नहीं; तेमां पण प्रासुक एवोय पण राजपिंड तो नज कल्पे." आ प्रमाणे प्रभुए ना कह्याथी भरत जेटलामां अत्यंत खेद पामे छे तेटलामां इंद्रे आवीने प्रभुने अवग्रह पूछ्या; तेथी प्रभुए तेने इंद्रसंबंधी, चक्रवर्तीसंबंधी, राजासंबंधी, शय्यातर संबंधी अने साध्वीसंबंधी आवा पांच प्रकारना अवग्रहनुं स्वरूप कह्युं. तेमां इंद्र पोतानो अवग्रह साधुने माने छे. पछी भरते पण पोतानो अवग्रह जाणी अने इंद्रने पूछीने पोते आणेलो आहार श्रावकोने आपी दीधो. पछी तेणे इंद्रने तेनुं (इंद्रनुं) खरुं स्वरुप देखाडवानुं कह्युं एटले इंद्रे भरतराजानी आज्ञा नि-

ष्फल न थाय एटला हेतुथी पोताना खरा स्वरुपनी एक आंगली तेने बतावी, जेथी नरते अठाइ महोत्सव कर्यो. अने ते "इंद्र महोत्सव" एवा नामथी प्रसिद्ध थयो. पछी नरतराजाए श्रावकोने कह्युं के, "तमारे आरंन्न मूकी दइने निरंतर म्हारे घेर नोजन करवुं अने सवारमां एम केहेवुं के, "तमे जीताएला छो, नय वर्ते छे; माटे (आत्मगुणने) न हणो न हणो." नरतराजानां आवां वचन सांन्नली सर्वे श्रावको एज प्रमाणे करवा लाग्या.

कोइ एक दिवस ते श्रावकोनां एवां वचन सांन्नली नरतराजा विचार करवा लाग्यो के "हुं कषायोथी जीताएलो छुं अने आ संसारने विषे नय वर्ते छे."

एक दिवस रसोइआए आवीने नरतराजाने विनंती करीने कह्युं के, "हे स्वामिन्! आलस्यवाला घणा माणसो अहिं निरंतर नोजन करवा आवे छे. तो पछी अमो एटली बधी रसोइ शी रीते करी शकीए." रसोइआनां आवां वचन सांन्नली नरत राजा नोजन करवा आवेला श्रावकोने आ प्रमाणे पूछवा लाग्यो. "तमे शुं शुं जाणो छो?" केटलाके कह्युं. "हे नरेश्वर! अमे पांच अणुव्रत जाणीए छीए." एज प्रमाणे केटलाके त्रण गुणव्रत अने केटलाके चार शिक्षाव्रत जाणवानुं कह्युं. ए उपरथी नरतराजाए तेउनी उलखाणने माटे तेमनी छातिने विषे पांच, त्रण अने चार एम अनुक्रमे काकिणीरत्नवमे रेखाउ करी. बाकीना के जेउ कांइ नहोता जाणता तेउने तेणे बहार काढी मूक्या. आ प्रमाणे नरतराजा छ छ महिने परीक्षा करवा लाग्या. अनुक्रमे काकिणी रत्नना चिह्नने स्थानके जनोइ थइ. नरत चक्रवर्तीना वंशने विषे पण आदित्ययशादि राजाउए सोनानी, रुपानी अने सूतर विगेरेनी जनोइ धारण करवा मांमी. आ धर्म दीर्घकाल सुधी अर्थात् शीतलनाथ तीर्थंकर थया त्यां सुधी प्रवर्त्यो. त्यार पछी काकिणी रत्नना चिह्नने धारण करनारा श्रावको मिथ्यात्वपणाने पामीने ब्राह्मणो थया के, जेउ मिथ्यात्वना उपदेशथी लोकने विषे गुरुउ थइ पम्या. पछी सर्व लोको पण तेमने दान आपवा लाग्या. श्री नरत राजाए श्रावकोना हितने माटे जिनेश्वरना स्तोत्र रूप श्रावक धर्मनुं निरुपण करनारा वेदो बनाव्या; परंतु ते कालयोगे सुलसादिकथी अनार्यपणुं पाम्या अने ते अवसरे तो सर्व प्रकारे साधुउनो विछेद थयो.

एक दिवस नरतराजाए प्रभुने पूछ्युं. "हे प्रभो! आ सभामां कोइ एवो

पुरुष छे के, जे आपनी पेठे धर्मतीर्थ प्रवर्तावे." प्रभुए कह्युं. "त्हारो पुत्र मरीचि छेल्लो (चोवीसमो) वीर नामे तीर्थंकर थशे; परंतु पहेलां तो ते वासुदेव, महाविदेह क्षेत्रने विषे मूका नगरीमां चक्रवर्ती अने छेवट भरतक्षेत्रमां तीर्थंकर थशे." प्रभुनां आवां वचन सांभली भरतराजा भगवानने नमस्कार करीने पछी मरीचिने वंदन करवा गयो. त्यां जइ तेने त्रण प्रदक्षिणा तथा नमस्कार करीने कह्युं. " आप प्रथम वासुदेव, पछी महाविदेह क्षेत्रने विषे मूकानगरीमां चक्रवर्ती थवाना छो ए हेतुथी नहि तेमज आ कुलिंग धारण कर्युं छे एथी पण नहीं; परंतु छेवट आ भरतक्षेत्रने विषे छेल्ला वीरनामे तीर्थंकर थवाना छो ए हेतुथीज हुं आपने भक्तिपूर्वक वंदना करुं छुं."

आ प्रमाणे कहीने भरतराजा गया पछी तेमना वचनथी हर्ष पामेलो मरीचि त्रणवार पोताना हाथथी खभाने मारी कहेवा लाग्यो के, "अहो ! म्हारी पदवी, स्थान अने कुल जगत्‌मां सर्वोत्तम छे." आवी रीते कहेता एवा तेणे कुलमदथी नीच गोत्रकर्म उपार्जन कर्युं. अहो ! सुखने नाश करनारी प्राणीओनी मदप्राप्तिने धिक्कार थाओ धिक्कार थाओ. !! प्रभुनुं कुमार अवस्थामां विशलाख पूर्व, भूपतिपणामां त्रेसठलाख पूर्व, छद्मस्थावस्थामां एकहजार वर्ष अने बाकीनुं केवलीपणामां एम कुल चोराशीलाख पूर्वनुं आयुष्य हतुं. हवे प्रभुना साधु साध्वी विगेरे परिवारनुं प्रमाण कहे छे.

गणने धारण करनारा चोराशी गणधरो, चोराशीहजार पुंडरीकादिक साधुओ, त्रणलाख ब्राह्मी विगेरे साध्वीओ, त्रणलाख अने पंचाणुंहजार श्रावको, पांचलाख अने चोपनहजार सुभद्रादिक यशवंती श्राविकाओ, चारहजार चारसें ने सत्तावन गुणवंत चौद पूर्वधारीओ, नव हजार अवधिज्ञानीओ, वीशहजार केवलीओ, वीशहजार अने छसें वैक्रियलब्धिवालाओ, बारहजार अने सातसें मनःपर्यव ज्ञानवाला, बारहजार छसें अने पचास वादीसाधुओ तथा बावीशहजार अने नवसें अनुत्तर विमानवासी महात्माओ, आ प्रमाणे प्रभुनो परिवार हतो.

हवे त्रीजा आराना त्रण वर्ष अने साडा आठ मास बाकी रह्या छते माघ मासनी अंधारी तेरसने दिवसे अभिची नक्षत्रनो चंद्र छते प्रभात समये चौद भक्ते (छ उपवासे) पर्यंकासने (पलांठीवाली) बेठेला प्रभु पोताना न-

वाणुं पुत्र, आठसें पौत्र (पुत्रना पुत्र) अने दश हजार साधुउ सहित मोक्ष पाम्या. प्रज्जुना निर्वाण कल्याणने सांज्ञली अत्यंत शोकाकुल थयेलो ज्ञरत राजा पगे चालतो अष्टापद पर्वत प्रत्ये आव्यो. इंड़ो पण प्रज्जुना निर्वाण समयने जाणी तेमनो महोत्सव करवा माटे पोत पोताना परिवार सहित त्यां आव्या. पढी प्रज्जुनी गोल आकारवाली, इक्ष्वाकुसाधुउनी त्रण खूणावाली अने बाकीना महात्माउनी चार खूणावाली एम अनुक्रमे पूर्वादि दिशाथी जूदी जूदी चिताउ रची. पढी पूर्वादि दिशामांथी अग्निकुमार देवताउए पोताना मुखथी अग्नि प्रगट कर्यो. आ प्रमाणे अग्नि संस्कार करीने पढी इंड़े प्रज्जुनी जमणी दाढ गृहण करी. इशानेंड़े माबी दाढ लीधी तथा बीजा चमरेंड़ादि सर्वे देवताउए ज्ञस्म लीधी. देवताउ आ प्रमाणे प्रज्जुनो निर्वाण उत्सव करीने पोत पोताने स्थानके गया.

ज्ञरत राजाए प्रज्जुनी अग्निसंस्कारनी ज्ञूमी उपर एक योजन विस्तारवालुं अने ढ गाउ उंचुं बेठेला सिंहने आकारे प्रासाद कराव्युं. तेमां पोत पोतानां शरीरना प्रमाणवाली चोविश जिनेश्वरोनी प्रतिमानुं स्थापन कर्युं. वली तेणे पोताना नवाणुं ज्ञाइयोनी प्रतिमा करावी जूदा जूदा स्तूपोमां पधरावी. आ प्रमाणे तेणे एक श्री जिनेश्वरनुं तथा नवाणुं पोताना ज्ञाइउना स्तूपो कराव्यां अने तेनुं रक्षण करवा माटे लोहयंत्रमय द्वारपालो बनाव्या. पढी दंमरत्नथी अष्टापद महा पर्वतने टांकीने तीर्थ रक्षाने माटे फक्त आठ पगथीयां बनाव्यां. वली म्लेह्नादिना ज्ञयथी तीर्थ रक्षाने माटे सगर राजाना जन्हु विगेरे पुत्रोए दंमरत्नवमे तेज तीर्थने विषे गंगा उतारी. पढी ते जिनेश्वरनां मंदिरने विषे प्रज्जुनी पूजा करता एवा ज्ञरत राजाए पांच लाख पूर्व निवृत्त कर्या.

एक दिवस ज्ञरत राजा अरिसा ज्ञुवनमां उज्ञा हता, त्यां तेमना हाथनी आंगलीमांथी वींटी पमी गइ. ते उपरथी तेमणे पोताना सर्व अलंकारो उतारी नांख्या. पढी संवेगथी शुज्ञ ध्यान ध्यातां तेमने केवलज्ञान प्रगट थयुं एटले इंड़े आवीने तेमने यतिवेश आप्यो. प्रज्जुना निर्वाण पढी पांच लाख पूर्व गये ढते ज्ञरत राजाने अरिसाज्ञुवनमां केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. पढी इंड़ना कहेवा उपरथी ज्ञरत ज्ञूपतिए दशहजार राजाउ सहित इव्यलिंग गृहण कर्युं अने कर्मरूप मलनो त्याग कर्यो.

भरतराजाए सित्तोतेर लाख पूर्व कुमार अवस्थामां, एकहजार वर्ष मांडलिक पदमां, एकहजार वर्ष उणा एवा छलाख पूर्व चक्रवर्तीपणामां अने एकलाख पूर्व केवलीपणामां एम चोराशीलाख पूर्व सुधी आयुष्य भोगव्युं. भरतमुनिए विहार कर्या पछी इंद्रे आवीने तेमना पुत्र आदित्ययशाने महोत्सवपूर्वक राज्याभिषेक कर्यो. आ प्रमाणे युगादीश्वर प्रभुना आठ वंशजोने इंद्रे स्वर्गमांथी आवीने महोत्सव पूर्वक अभिषेक कर्यो छे.

॥ इति श्री आदिनाथचरित्रं समाप्तम् ॥

बीजा जिनेश्वरोनां चरित्रो तो ज्यां ज्यां कह्यां होय त्यां त्यांथी जाणी लेवां; परंतु श्री महावीर स्वामीना चरित्रने तो श्री धर्मघोषसूरि पोतेज सूचवे छे के—

निज्जिअपरीसहचमुं, संभग्गुवसग्गवग्गरिउपसरं ॥
संपत्तकेवलसिरिं सिरिवीरजिणेसरं वंदे ॥ १ ॥

अर्थ—परीषहना सैन्यने जीतनारा, उपसर्गना समूह रूप शत्रुना युथने मर्दन करनारा अने केवलज्ञान रूपी लक्ष्मीने मेलवनारा श्री वीर जिनेश्वरने हुं वंदना करुं छुं. २

पूर्व भवना संबंधथी आरंभीने श्री महावीर स्वामीनुं चरित्र श्री रूपभदत्त अने देवानंदाना अधिकारने विषे कहेलुं छे; माटे अहियां तो श्री महावीर स्वामीने थयेला उपसर्गो कहीशुं. ते आ प्रमाणे—

॥ श्री महावीरस्वामीचरित्रम् ॥

श्री वर्द्धमान स्वामीए ग्रहस्थावासमां त्रीश वर्ष रहीने पछी चोसठ इंद्रोए करेला महोत्सव पूर्वक दीक्षा लीधी. कोइ वखते फक्त बेज घडी दिवस बाकी हतो ते वखते पोतानी पासे रहेला बीजा साधुउनी रजा लइ श्री वर्द्धमान स्वामी पोते कर्मार नामना गामे गया; परंतु त्यां अंधारुं थइ जवाथी गामनी बहार कायोत्सर्गे रह्या. पछी गाम मध्ये पेसता एवा कोइ गोवालीयाए तेमने कह्युं. "हे देव! हे आर्य! तमे हमणां आ म्हारा बे बळदोने जोता रहेजो." एम कहीने ते तो गाममां गयो. पाछळ बळदो पण चरता

बहु दूर जता रह्या. कारण पशुउने विवकीपणुं क्यांथी होय ! हवे पेलो गोवालीयो गाममां जइने पाछो आव्यो त्यारे तेणे वाछडा नहिं देखवाथी प्रभुने पूछ्युं. "म्हारा वाछडा क्यां छे?" आम पूछवा छतां प्रभुए तो उत्तर आप्यो नहिं ते उपरथी "आ ते पुरुष के बीजो !!" एम मनमां विचार करतो तेगोवालीयो आम तेम शोधवा लाग्यो. एवामां पेला वाछडाउ त्यां आवीने बेठा. पछी गावालीयो फरतो फरतो पाछो त्यां आवी वाछडाउने जोइ विचार करवा लाग्यो. "निश्चय आणेज म्हारा वाछडा हरण कर्या हता." एम धारी कोपथी एक म्होटी शीला उपाडी ते गोवालीयो प्रभुने मारवा माटे दोड्यो. आ वात अवधिज्ञानथी इंद्रे जाणी, तेथी ते तत्काल प्रभुनी पासे आवी उपसर्ग करता एवा गोवालीयाने शक्तिथी निवृत्ति पमाड्यो. पछी वीर प्रभुने नमस्कार करीने इंद्रे कह्युं. "हे स्वामिन्! आपने बहु उपसर्गो थवाना छे; माटे हुं बार वर्ष पर्यंत आपनी पासे रहिश." प्रभुए कह्युं. "हे इंद्र ! जे थवानुं होय ते थया विना रहेतुं नथी. वली तीर्थंकरो तो परनिश्रायेकरीने श्रेष्ठ एवा ज्ञानने मेलवे छे." ज्यारे प्रभुए आवी रीते इंद्रने ना कही त्यारे तो तेणे पोतानी मासीना पुत्र सिद्धार्थ नामना व्यंतरने प्रभुनी पासे रक्षण करवाने मूकी पोते स्वर्गे गयो.

पछी बीजे दिवसे सवारे श्री महावीर स्वामी कुल्लाग नामना सन्निवेसे गया. त्यां बहुल नामना ब्राह्मणे तेमने छठना पारणे खीर वहोरावी. प्रभुए त्यांज ते ग्रहस्थाना पात्रमां पारणुं कर्युं. ते एम देखाडवाने माटे के, म्हारे सुपात्र साधुउने धर्मोपदेश करवो. पछी देवताउए "अहोदान ! अहोदान !!" एम कहेता कहेता ते ब्राह्मणना घरने विषे साडाबार क्रोड सोनैयानी वृष्टि करी. पछी प्रभु मोराग नामना सन्निवेश प्रत्ये समवसर्या. त्यां कोइ तेमना पितानो मित्र दूइजंतक नामनो कुलपति रहेतो हतो. तेणे प्रभुने वंदन करी अत्यंत हर्षित थइ अने तेमने रहेवा माटे स्थान आप्युं; परंतु प्रभु तो त्यां एकज रात्री रहीने बीजे विहार करी गया. केटलाक दिवस पछी पहेलां चोमासाना चार मास निवास करवाने माटे प्रभु पाछा त्यांज आव्या अने कुलपतिए आपेली एक झुंपडीमां रह्या. कोइ वखते केटलीक गायो घास नहिं मलवाने लीधे झुंपडीना घासने खावा लागी. ते जोइ तापसे गायोने निवारण

करता छता झुंपडीमां रहेला प्रभुने कह्युं के, "हे देव ! हे आर्य ! पक्षीओ पण पोताना स्थानननी रक्षा करे छे तो तमे गायोथी भक्षण करातो पोतानीज झुंपडीने केम नथी रक्षण करता ?" तापसनां आवां वचन सांभली दयाना समुद्ररूप प्रभु ते स्थानने अप्रीयकारी मानी चोमासाना पंदर दिवस गया छतां पण पांच अभिग्रहोने लइने त्यांथी चाल्या. ते अभिग्रहो आ प्रमाणे–१ शरीर उपर राग रहित एवा म्हारे अप्रीति थाय तेवा स्थानके निवास करवो नहीं; २ निरंतर कायोत्सर्गमां रहेवुं; ३ हमेशां मौन धारण करवुं, ४ हाथरूप पात्रमांज भोजन करवुं; ५ कोइ ग्रहस्थ वंदन करे तो पण तेनो सत्कार करवो नहीं. आ प्रमाणे पांच अभिग्रहोने धारण करी प्रभु अस्थिनामना गाममां आव्या. त्यां ते बीजा माणसोए ना कह्या छतां पण शूलपाणियक्षना मंदिरने विषे रह्या. हवे ए गामनुं नाम अस्थिगाम शाथी पड्युं, ते कहे छे.

पूर्वे आ गामनुं नाम वर्द्धमान हतुं. त्यां वेगवती नामे नदी हती. ए नदीमां घणी वेलुं हती. एक दिवस धनदेव नामे सार्थवाह मालथी भरेलां पांचसें गाडांओ सहित त्यां आवी चड्यो. नदीमां वेलुं बहु होवाथी कोइ गाडुं सामे पार जइ शक्युं नहीं एटले एक भव्य बलदे पांचसे गाडाओ नदीने सामे पार पहोंचाड्यां; परंतु पोते तूटी गयो. बलदने तूटी गयेलो जाणी धनदेव सार्थवाह तेने आजीविका सहित गामना माणसोने भलावी पोते पोताना नगर तरफ चाल्यो गयो.

हवे पाछल नगरवासी लोकोए उनालानी ऋतुमां तेनी घास पाणीथी सेवा करी नहीं; तेथी ते बीचारो भूख तरसथी मृत्यु पामीने महाबलवंत शूलपाणी नामे यक्ष थयो अने ते पूर्व भवनुं वैर संभारी क्रोधवडे मरकी विगेरेना रोगो उत्पन्न करी ते गामना प्राणीओने मारवा लाग्यो. लोकोए तेने बलीदान आपवा विगेरेथी संतोष पमाड्यो एटले ते आकाशमां अदृश्यपणे रहीने कहेवा लाग्यो के, "में उत्पन्न करेला रोगथी मृत्यु पामेला प्राणीओनां अस्थि (हाडकां)थी बनावेला पीठने विषे एक मंदिर करावो अने तेमां वृषभ रूपे म्हारी मूर्ति स्थापो." लोकोए तेना कहेवा प्रमाणे सघलुं कर्युं अने इंद्रशर्मा नामना ब्राह्मणने त्यां पूजा करवा राख्यो. ए उपरथी ए गामनुं नाम वर्द्धमान मटीने अस्थिगाम पड्युं छे. प्रभुनो वर्षाऋतुमां निश्चय करीने अ-

हिंज रह्या. एवामां सायंकाले इंद्रशर्मा ब्राह्मणे आवीने श्री वीरप्रज्जुने कह्युं. "हे देव ! हेआर्य ! आप अहिं रहेशो नहिं. कारण आ यक्ष महा मत्सरवालो छे; तेथी आपने उपसर्ग करशे." इंद्रशर्मानां आवां वचन सांजलता छतां पण जाणे न सांजलता होय नहिं ? एम प्रज्जुतो यक्षनो उपकार करवाने माटे मौन धारण करीने कायोत्सर्गे त्यांज रह्या. पछी महा क्रोध पामेलो शूलपाणी यक्ष त्यां रहेला जिनेश्वरने जोइ अट्टाटहासपूर्वक पिशाच, सर्प अने वाघ विगेरेना रूपोने धारण करी प्रज्जुसामो दोमवा लाग्यो. ज्यारे आवा आवा जयंकर उपसर्गोथी पण प्रज्जु क्षोज्ज न पाम्या त्यारे तो डुष्टात्मा एवा ते यक्षे प्रज्जुने बीजाउथी न सहन थइ शके एवी (माथुं, कान, नाक, दांत, आंख, नख अने पुंठ ए) साते अंगने विषे वेदनाउ करी. आ वेदनाउथी पण ज्यारे प्रज्जु जरा पण क्षोज्ज न पाम्या त्यारे तो ते यक्ष विचार करवा लाग्यो के, "अरे ! आवा उपसर्गोथी पण क्षोज्ज नहि पामेला आ मेरु पर्वतना सरखा कोण छे ? पछी तेणे अवधि ज्ञानथी जोयुं तो श्री जिनेश्वर एवा वीर प्रभुने जाण्या; तेथी तो ते शांत चित्तवालो थइ प्रज्जुने खमाववा लाग्यो. एवामां सिद्धार्थ नामना व्यंतरे त्यां आवीने ते शूलपाणी यक्षने प्रतिबोध पमाड्यो.

हवे प्रज्जु देशेन्यून एवा रात्रीना चार प्रहर उपसर्गोथी पीडा पाम्या; तेथी पाछली रात्रीने विषे निद्रावश थया. एवामां तेमणे पाछली बे घमी रात्री रहि एटले आ दश स्वप्न दीठां. ते आ प्रमाणे—

१ पोते हणेलो ताल प्रमाण उंचो पिशाच, २ बे कोकिलाउ (तेमां एक धोलो अने ३ बीजो विचित्र) ४ पुष्पनी बे मालाउ, ५ गायोनो समूह, ६ सरोवर, ७ पोतानी बन्ने जूजाउथी तरी शकातो समुद्र, ८ सूर्य, ९ पोतानां आंतरडांथी विंटलाएलो मानसोत्तर पर्वत, अने १० मेरुपर्वत." आ दश स्वप्नांने जोइ जगवान् प्रज्जाते जाग्या एवामां तो जेणे दीक्षाने त्याग करी हती एवो श्री पार्श्वनाथ प्रज्जुनो शिष्य उत्पल नामनो निमित्तियो त्यां आवी प्रज्जुने नमस्कार करीने हर्षथी बोल्यो. "हे स्वामिन् ! आपे दश स्वप्नांउ जोयां छे, तेनुं फल सांजलो.

१ आपे जे ताल प्रमाण पिशाच हण्यो एनुं फल एम छे के, हवे आपने मोह थशे नहीं २ धोला कोकिलाने जोवाथी आपने शुकलध्यान थशे. ३

विचित्र कोकिलाने जोवानुं फल एम छे के, आप द्वादशांगीनी प्ररुपणा करशो. ४ गायना समूहना दर्शनथी तो चतुर्वर्ग संघनी स्थापना रूप फल सूचवाय छे. ५ वली शरोवरना दर्शनथी आपनी चार निकायना देवताउ सेवा करशे. ६ भूजाथी तरी शकाता समुद्रनां दर्शननुं फल तो एवुं छे के, आप संसार समुद्रने सुखेथी तरशो. ७ सूर्यनुं दर्शन तो निर्मल एवुं केवलज्ञान रूप फल आपे छे. वली हे जिनाधिश ! ८ आपे पोताना आंतरमांथी विंटलाएला मानुषोतर पर्वतने जोयो तो आपना यशथी त्रण लोक विंटाइ जशे एम जणाय छे अने ए मेरु पर्वतना दर्शनथी आप सिंहासन उपर विराजमान थइ धर्मदेशना आपशो; परंतु हे विभो ! आपे पुष्पनी वे मालाउ दीठी तेनुं फल शुं हशे ? ते हुं जाणी शकतो नथी." उत्पलनां आवां वचन सांभली प्रभुए कहुं. "हे उत्पल ! पुष्पनी वे मालानुं फल एवुं सूचवाय छे के, हुं मनुष्य, देवता अने असुरोनी पर्षदामां साधु अने श्रावक ए वंने धर्मने प्रकाश करीश."

पछी प्रभु त्यां एक पक्षे उवुं एवुं प्रथम चोमासुं पूर्ण करी मोरागसन्निवेशे गया अने त्यां गामनी वहार कायोत्सर्गे रह्या. त्यां पण सिद्धार्थ व्यंतर प्रभुना मुखमां निवास करी लोकोने भूत, भविष्यादिक कहेवा लाग्यो. ते एटलाज हेतुथी के, लोको त्यां आवीने प्रभुनी स्तुति करे. पछी मनुष्यनी मध्ये महिमावंत थयेला वीर प्रभुने जोइ तेमना उपर इर्ष्यावंत थयेलो अछंदक नामनो कोइ पाखंडी निमित्तियो त्यां आव्यो अने सर्व प्रकारना पूजनथी व्याप्त तथा अधम एवो ते हाथमां तृण लइने प्रभुने पूछवा लाग्यो के, "आ तृण छेदाशे के नहिं, ते कह कहो ?" आ प्रमाणे तेणे प्रश्न कर्यो एटले सिद्धार्थ देव के, जे प्रभुनां मुखमां अदृश्यपणे रहेलो हतो तेणे उत्तर आप्यो के, "ते तृण छेदाशे नहि." पछी अछंदक ते तृणने छेदवा लाग्यो एटलामां इंद्रे तेनी आंगली छेदी नांखी. पछी प्रभुने विषे अत्यंत मत्सर धरता एवा ते अछंदकने विषे महा क्रोध पामेला सिद्धार्थ व्यंतरे लोकोनी आगल कहुं के, "हे लोको ! आ चोर छे." लोकोए कहुं. "हे मुनि ! ए आपे शी रीते जाण्युं ?" सिद्धार्थे कहुं. "हे जनो ! एणे वीरघोष नामना पुरुषनो दशपल प्रमाणनो एक गोलाकार वाटको चोरीने खजुरीनी नीचे पश्चिमदिशामां हस्तप्रमाण भोंयमां

माट्यो छे." लोको ते बाटकाने लइ आवीने फरी पूछवा लाग्या. "हे मुनि! एणे बीजुं शुं कर्युं छे?" सिद्धार्थे कह्युं. "एणे इंद्रशर्मा नामना ग्रहस्थना बोकमानुं भक्षण करीने तेनां अस्थि (हामकां) बोरमीनी नीचे उकरमामां माट्यां छे." लोकोए ते जोइने खरेखरो निश्चय कर्यो. वली तेमणे त्रीजीवार अछंदक संबंधी वात मुनिने पूछी एटले तो सिद्धार्थे कह्युं के, "त्रीजी वात तो तेनी स्त्री कहेशे, हुं नहि कहुं." पछी सर्वे माणसो विस्मय पामी अछंदकने घेरे जइने तेनी स्त्रीने पूछवा लाग्या. ए उपरथी तेनी स्त्रीये अत्यंत क्रोध करीने कह्युं के, "अरे लोको! ए महापापी पोतानी व्हेनने भोगवे छे अने म्हारी क्यारे पण इच्छा करतो नथी, तेथी तेनुं मोढुं जोवुं पण योग्य नथी." पछी तो लोकोथी महा निंदा पामेलो ते प्रभुनी पासे जइने कहेवा लाग्यो के, "हे दयानिधि! आप तो अहिंथी विहार करी जशो, पण हुं क्यां जइश?"

पछी प्रभुए पोतानो निवास अछंदकने अप्रीतिकर थयो जाणी त्यांथी विहार कर्यो; परंतु पोताना पितानो मित्र कोइ ब्राह्मण तेमनी पाछल चाल्यो. रस्ते दक्षिणवाचाल अने उत्तरवाचाल नामना गामोनी मध्ये तेणे सुवर्णवालुका नामनी नदीमां कांटा उपर रहेलुं वस्त्र लीधुं अने प्रभु तो उत्तरवाचाल गामनी पासे महावनमां कनकखल नामना कोइ तापसना आश्रममां मेरु पर्वतनी पेठे निश्चल थइ कायोत्सर्गे रह्या. हवे ते वनमां महा भयंकर एवो चंम कौशिक नामनो दृष्टिविष सर्प रहेतो हतो. ते अर्हंत प्रभुने जोइ अत्यंत क्रोध करी पोतानी विषमय दृष्टिथी तेमने जोवा लाग्यो; पण तेनुं दृष्टिविष स्वामिना अंगने विषे चम्युं नहि; तेथी तो तेणे श्री वीर प्रभुने दंश दीधो, तो पण प्रभुने विष तो चम्युंज नहि.

पछी हाहाकार करतो ते सर्प समर्थ एवा वीर प्रभुने जोतो छतो विचारवा लाग्यो के, "अहो! आ पुण्यवंत एवा कोण महात्मा छे के, जे म्हारी विषमय दृष्टिथी पण भस्मरूप न थया?" आम विचार करतो ते सर्प जेटलामां प्रभुना सामुं जूए छे तेटलामां तो तेनी दृष्टिनुं सर्व विष शांत थइ गयुं. पछी "हे चंम कौशिक सर्प! तुं शांति कर." आवां प्रभुनां वचन सांभली तेने विचार थयो के, "अहो! में आवी वाणी कोइ ठेकाणे सांभली छे अने आवुं रूप पण कोइ ठेकाणे जोयुं छे." आम विचार करतां करतां तेने

जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं अने पोताना पूर्व भवो पण तेणे जोया के, "हुं पूर्व भवने विषे साधु हतो. में भिक्षा लेवा जतां एक देडकी मारी हती. सायंकाले प्रतिक्रमणमां बालशिष्ये मने ते संबंधी आलोयण लेवानुं कह्या छतां में लीधी नहि; परंतु उलटो हुं क्रोध करी तेने मारवा दोड्यो. रस्तामां अंधारुं होवाथी एक स्थंभ साथे अथडायो, तेथी मृत्यु पामीने हुं जोतिषिक देवता थयो. पछी त्यांथी चवीने आ वनने विषे पांचशे शिष्योना परिवारवालो तापस थयो. एक दिवस राजकुमारने आ अमारा वनमांथी फलफुल विगेरे लइ जतां जोयो, तेथी हुं फरसी लइ तेने मारवा दोड्यो; पण रस्तामां अंधारो कूवो आववाथी तेमां पड्यो अने फरशी म्हारा शरीरने वागी, तेथी हुं मृत्यु पामीने आज वनने विषे दृष्टिविष सर्प रूपे उत्पन्न थयो छुं." आ प्रमाणे पोताना पूर्व भवने संभारी सर्प कहेवा लाग्यो के, "अहो! हुं म्हारो मनुष्यभव वृथा हारी गयो." पछी सर्प प्रभुने खमावी, अनशन लई, राफडामां मुख राखी अने शरीरने तेथी बहार राखीने रह्यो. भगवान् पण तेना उपर कृपा करीने त्यांज रह्या. पछी गोवालीयाउ ते सर्पने दुरथीज पथ्थर विगेरे मारवा लाग्या, तो पण ते जरा पण चलायमान थयो नहि एटले तो तेउ सौ तेनी पासे आवीने लाकडीउथी मारवा लाग्या, तोपण ते सर्पे कोइने दंश कर्यो नहि. पछी तो सर्व गोवालीयाउये नगरमां जइ तेनी यथार्थ वात कही एटले तो लोको त्यां आवी ते सर्पनुं पूजन तथा वंदन करवा लाग्या. वली ए रस्ते थइने घी वेचवा जनारी स्त्रीयोए भक्तिथी आदर पूर्वक तेना शरीरने विषे घीनो लेप कर्यो. आम करवाथी तो घीना सुगंधने लीधे पिपीलिका (कीडि)योए तेनुं भक्षण कर्युं. एथी एक पक्ष सुधी पीडा भोगवी ते सर्प मृत्यु पामीने आठमे देवलोके देवता रूपे उत्पन्न थयो. पछी प्रभु उत्तरवाचाल गाममां गया. त्यां तेमणे नागसेन श्रावकने घेर पक्षने अंते खीरथी पारणुं कर्युं. त्यां पंचदिव्य प्रगट थयां अने देवताए सुवर्णनी वृष्टि करी. पछी श्वेतांबी नगरीने विषे पण श्रावकधर्मी प्रदेशी राजाए पण आदरथी प्रभुनी पूजा करी.

पछी सुरभिपुर प्रत्ये जता एवा भगवानने रस्तामां प्रदेशी राजाना वंशना बीजा पांच राजाउ मल्या अने तेमणे तमने वंदना करी. त्यांथी श्री वीरप्रभु सुरभिपुर प्रत्ये आवीने घणा उपसर्गोना समूहने सहन करवा माटे

गंगानदीमां नावने विषे बेठा. एवामां शुकन जाणवामां चतुर एवा खेमिल नामना पुरुषे घुवमना शब्दने सांजलीने सिध्यात्र नामना म्होटा खलाशीने कह्युं के, "हे सिध्यात्र ! म्हारां वचन सांजल. आजे समुद्रमां मरणांतकारी दुःसह विघ्न थशे; परंतु आ महासाधुना महिमाथी मंगल थशे." खेमील आ प्रमाणे कहेतो हतो एवामां वाहाण समुद्ररस्ते वेगथी चाल्युं.

हवे जगवाने त्रिपृष्ठ वासुदेवना जवमां जे सिंहने मार्यो हतो ते हवणां सुदंष्ट्रनामे नागकुमार देवता थयो हतो. तेणे नावमां बेठेला प्रजुने जोया; तेथी ते पूर्वना वैरने संजारी श्री वीरप्रजुने हणवा माटे वहाणने मोलावा लाग्यो. एवामां प्रजुने उपसर्ग प्राप्त थयो जाणी कंबल अने संबल नामना बे देवताउ तत्काल त्यां आव्या अने तेउए अत्यंत दुर्बल एवा सुदंष्ट्र नागकुमारने जीतीने प्रजुनो महिमा वधार्यो. ते कंबल अने संबल बन्ने देवताउ कोण हता ? तेनी अहिं कथा कहे छे.

मथुरा नगरीने विषे महा धनवंत जिनदास नामे श्रावक वसतो हतो. तेणे पांचमा व्रतनी अपेक्षाये चतुष्पदनुं पच्चखाण कर्युं हतुं. आजीर लोकोनी साथे क्रय विक्रय करनारा ए जिनदासे एक दिवस कोइ आजीरने विवाह संबंधि उपकरण आप्यां. केटलाक दिवस पछी पेलो आजीर जिनदासने घेर आव्यो अने "आ म्हारा कंबल अने संबल नामना बे वृषज तमे राखो, बीजा नहि." एम कहीने पेला विवाह संबंधी लीधेला उपकरणना बदलामां बे बलद शेठने घेर बांधी गयो. शेठ ते बन्ने बलदोने निर्दोष आहार खवरावे अने आठम चौदश विगेरे तिथीने विषे अरिहंत प्रजुनो धर्म संजलावे. आ प्रमाणे शेठनां मुखथी धर्म सांजलता एवा ते बन्ने बलदो लघु कर्मपणाने लीधे शुद्ध एवा श्रावक धर्मने पाम्या. पछी ज्यारे शेठ आठम चौदश विगेरे तिथीउने विषे पौषध करे त्यारे ते बन्ने बलदो पण उपवास करे.

एक दिवस शेठनो कोइ मित्र जंमिर यक्षनी यात्राये जवानो हशे. तेणे शेठने पूछ्या विनाज ते पुष्ट बलदोने रथमां जोमी रस्ते बहु दोमाव्या; तेथी तउ तूटी गया. पछी यात्रा करीने पाछा आवी मित्रे ते बन्ने बलदो शेठने घेर बांध्या. शेठे पण पुत्र समान पालेला ते बलदोने तूटी गयेला जोइ अत्यंत खेद करता छता औषध करवा मांम्युं; परंतु तेथी तेउने जरा पण गुण थयो नहि.

पछी ते बन्ने बलदो अनशन करी अने शेठना मुखथी पंच नवकार सांभली काल धर्म पामीने नागकुमार देवतापणे उत्पन्न थया ते एज कंबल अने संबल देवताउ के, जेमणे प्रभुने सुदंष्ट्रथकी थयेला उपसर्गो अवधि ज्ञानथी जाणी भक्ति पूर्वक तत्काल त्यां आवीने निवारया.

हवे प्रभु गंगाने तीरे इर्यावही प्रतिक्रमी जेटलामां चाल्या तेटलामां पाछल त्यां कोइएक सामुद्रिक शास्त्रनो जाण पुष्प नामनो पुरुष आव्यो. ते त्यां मार्गने विषे चक्र, ध्वजा, अंकुश विगेरे श्रेष्ठ लक्षण युक्त प्रभुनां पगलां जोइ विचारवा लाग्यो के, "आ कोइ चक्रवर्ती जाय छे." एम धारी ते प्रभुनी पाछल चाल्यो. पछी ते अनुक्रमे प्रभुनां पगलां जोतो जोतो स्थूणा नामनी नगरीये पहोच्यो. त्यां तो तेणे नगरनी बहार वस्त्र रहित कायोत्सर्गे उभेला प्रभुने जोया एटले तो ते विचारवा लाग्यो के, " अहो ! म्हारुं सामुद्रिक शास्त्र वृथा थयुं. " आ प्रमाणे ते पुष्प खेद करतो हतो, एवामां ते वात अवधिज्ञानथी जाणी इंद्र त्यां आव्यो अने प्रभुने प्रणाम करी पुष्पने कहेवा लाग्यो के, " हे पुष्प ! तुं वृथा खेद न कर. कारणके, ए धर्म चक्रवर्ती छे. एमना शरीरने विषे पण गायना दुध समान उज्वल वर्णवाला धर्म चक्रवर्तीनां चिन्हो छे. " आवां इंद्रनां शुद्ध वचन सांभली अत्यंत प्रसन्न थयेलो पुष्प श्री वीर प्रभुने भक्तिथी प्रणाम करी पोताने घरे गयो.

हवे बीजा चोमासाने विषे प्रभु राजगृह नगरमां वणकरनी शालाने विषे रह्या. त्यां कोइ एक पृथ्वी उपर भमतो अने जेणे हाथमां चित्रनो पट्ट धारण कर्यो हतो एवो मंखलीना पुत्र गोशालो प्रथम आव्यो हतो. गोशालानी उत्पत्ति एम छे के, सरवण नामना सन्निवेशने विषे मंखलि नामे कोइ मंख रहेतो हतो, तेने सुभद्रा नामे वहाली स्त्री हती. एक दिवस ते सुभद्राये कोइएक ब्राह्मणनी घणी गायोवाली गोशालामां पुत्र प्रसव्यो. ते उपरथी माता पिताए पुत्रनुं नाम " गोशाल " पाड्युं.

पछी विशुद्ध अध्यवसायवाला प्रभुने मासखमणे विजय शेठे हर्षथी कूर विगेरेथी पारणुं कराव्युं एटले तेना घरने विषे पंच दिव्य प्रगट थयां. ते जोइने आश्चर्य पामेला गोशाले तीर्थपति एवा श्री वीर प्रभुने कह्युं के, " हुं आपनो शिष्य छुं." पछी बीजा पारणाने विषे श्री जिनेश्वर प्रभुने आनंदथी गृहस्थ-

युक्त थयेला आणंद शेठे पक्वान्नथी प्रतिलाभ्या.त्रीजा पारणे नंद शेठे सर्वोत्तम एवा परमान्नथी प्रभुने पारणुं कराव्युं. पछी चोथे पारणे तो प्रभु कुल्लाग नामना सन्निवसे गया. त्यां बहुल नामना ब्राह्मणे प्रभुने खीर वहोरावीने देवताए करेला पंचदिव्यथी तथा सुवर्ण वृष्टि विगेरेथी पोतानुं घर तथा पुण्यराशीथी पोतानो आत्मा पूर्ण कर्यो. आवां आवां आश्चर्य जोइ चकीत थइ गयेलो गोशालो तो पोतानी उपधीने दूर मूकी, मस्तक मुंमावी अने वेश धारण करीने प्रभु पासे आवी कहेवा लाग्यो के, "हुं पण दिक्षीत थयोछुं, माटे आपनो शिष्य छुं." एम कही ते प्रभुनी साथे फरवा लाग्यो.

एक दिवस प्रभु गोशाला सहित स्वर्णखल नामना गाम प्रत्ये जता हता; त्यां गामनी बहार केटलाक गोवालीयाने खीर रांधता जोइने गोशालाए श्री वीर प्रभुने कह्युं के, "हे भगवन्! आपणे अहिं भोजन करीए." त्यारे सिद्धार्थे कह्युं. "ए खीरनुं पात्र हवणां फुटी जशे." पछी गोशालो गोवालीयाने कहेवा लाग्यो के, "हे गोवालो! तमारे आ खीरनां पात्रनुं यत्नथी रक्षण करवुं. कारण के, आ प्रभु कहे छे के, ते हवणां फुटी जशे." पछी गोवालीयाउए ते पात्रनुं यत्नथी रक्षण कर्युं; तो पण ते फुटी गयुं. ते जोइ गोशालो कहेवा लाग्यो के, "भावी अन्यथा थतुं नथी." एम कहीने पछी तेणे नियतवादीपणुं अंगीकार कर्युं.

पछी भगवान् विहार करतां करतां ब्रह्मगाम प्रत्ये गया. त्यां ते गाममां बे पाटीउ हती. एक पाटीनो अधिपति नंद नामनो ब्राह्मण हतो अने बीजी पाटीनो अधिपति तेनो भाइ उपनंद नामनो हतो. प्रभु नंदनी पाटीमां गया. त्यां नंदे तेमने खीरथी पारणुं कराव्युं अने गोशालो उपनंदनी पाटीमां गयो,त्यां उपनंदने घेर तेने कोइ दासीये अनादरथी टाढुं अन्न वहोराव्युं,तथी अत्यंत क्रोध पामेलो ते गोशालो टाढा अन्नने ते स्त्रीना मस्तक उपर फेंकी कहेवा लाग्यो के, "जो म्हारा धर्मगुरुनुं तपोतेज होय तो आ त्हारुं घर बली जाउ.!" पछी प्रभुना अतिशयनो उद्योत करवाने अर्थे सुकृतना समीपपणाथी ते वखते देवताउए अर्था गाम सहित तेनुं घर बाल्युं.

हवे प्रभुए त्रीजुं चोमासुं बेब मासनी तपस्याए चंपा नगरीमां कर्युं, त्यां पारणुं करीने कोल्लाग सन्निवेश जइ त्यां एक शून्य घरमां तेमणे कायो-

त्सर्ग निवास कर्यो. गोशालो बारणे रह्यो एवामां ते गामना राजानो पुत्र सिंहरथ विद्युन्मति दासीनी साथे त्यां क्रीडा करवा आव्यो. तेने जोइने दुष्ट बुद्धिवालो गोशालो हश्यो; तेथी सिंहरथे तेने खूब मार्यो, गोशालो प्रभुने कहेवा लाग्यो. "हे स्वामिन्! मने मारता एवा आ राजपुत्रने तमे केम ना कहेता नथी?" सिद्धार्थे उत्तर आप्यो के, "तें एवुं शा माटे कर्युं." पछी प्रभु पाशलक नामना सन्निवेशे जइ त्यां एक शून्य घरमां कायोत्सर्गे रह्या. गोशालो पण साथेज हतो, तेथी ते त्यां पण तिलका दासीनी साथे क्रीडा करीने ते शून्य घरमांथी निकली जता एवा स्कंद नामना क्षत्री कुमारने गोशालो हश्यो; तेथी तेणे पण गोशालाने खूब प्रहार कर्यो. पछी भगवान् त्यांथी चंपा नगरीना रमणीय उद्याननें विषे कायोत्सर्गे रह्या अने त्यांथी कुमार नामना सन्निवेशे जइ त्यां रह्या. एवामां श्री पार्श्वनाथ प्रभुना गुणवंत शिष्य श्री मुनिचंद्र सूरि कूपनय नामना कुंभारना घरे केटलाक साधुउ सहित रह्या हता. तेमने जोइ गोशाले पूछ्युं के, "तमे कोण छो?" तेउए कह्युं. "अमे निग्रंथो (साधुउ) छीए." ते सांभली गोशाले कह्युं. "अहो तमे क्यां? अने म्हारा धर्माचार्य गुरु क्यां? साधुउए कह्युं. "जेवो तुं छे तेवो त्हारो गुरु पण जरूर हशे." मुनिउनां आवां वचन सांभली अत्यंत क्रोधातुर थयेला गोशाले कह्युं के, "अरे महा मूढो! जो तमे म्हारा गुरुनी निंदा करोछो तो ते म्हारा गुरुना तपथी आ तमारो आश्रम तुरत भस्मरुप थइ जाउ." साधुउए कह्युं. "अमने कशो भय नथी." पछी गोशाले प्रभु पासे आवीने सर्व वार्ता निवेदन करी एटले सिद्धार्थे कह्युं. "शुद्ध चारित्र पालनारा ए साधुउ भस्मरुप थाय नहीं. पछी निजकल्पनी तुलना करता छता श्री मुनिचंद्र सूरि रात्रीये कायोत्सर्गे रह्या हता तेमने कुंभारे चोर बुद्धिथी गले पकडीने खूब प्रहार कर्यो. एटलामां सूरिने अवधिज्ञान उत्पन्न थयुं अने ते मरण पामीने देवलोकने विषे देवता रूपे उत्पन्न थया. देवताए महिमा कर्यो तेनो प्रकाश थयो ते जोइ गोशालो तत्काल प्रभुने कहेवा लाग्यो के. "हे विभो! जूउ जूउ!! पेला साधुउनी वसति बलवा लागी." पछी सिद्धार्थे सर्व वार्ता निवेदन करी एटले तो ते गोशालो अत्यंत विस्मय पामी गयो. वली सुगंधि जलनी वृष्टि अने उत्तम पुष्पनी वृष्टी जोइ वधारे क्रोधातुर थयेलो गोशालो सूतेला बीजा साधुउ पासे जइ आ प्रमाणे क-

हेवा लाग्यो के, "अरे साधुर्ज ! तमे निश्चिंत चित्तवाला थइने केम सूता गे ? आ तमारा जत्तम गुरुतो काल धर्मने पामेला गे." आम तिरस्कार करी गोशाले ते सर्वे साधुर्जने जगामूचा. पगी अत्यंत खेदातुर थयेला ते सर्वे साधुर्जए गुरुनी अंत्य क्रीया करी.

पगी प्रजु त्यांथी चोराकसन्निवेशे जइने त्यां कायोत्सर्गे रह्या. अहिं चोरलोकोने शत्रुर्ज तरफथी घणी बीक हती अने गोशालो गाममां फरतो हतो; तेथी पाप वृत्तिवाला चोर लोकोए तेने हेरु जाणी बंधनथी बांधी केदखाने नाख्यो. प्रजुने पण एमज कर्युं, परंतु कोइ जत्पल नामना ब्राह्मणनी सोमा अने जयंती नामनी बे ब्हेनोए गोशालाने तथा प्रजुने गेमावी तेर्जनो जपसर्ग दूर कर्यो. हवे प्रजु त्यांथी विहार करी चोथुं चोमासु पृष्ट चंपा नगरीये रह्या. त्यां तेमणे गामनी ब्हार कायोत्सर्गे रही चार मास जपवास वमेज निर्गमन कर्या. त्यांथी जिनेश्वर प्रजुए कयंगल नामना सन्निवेशे जइ दिव्य एवा देवमंदिरमां कायोत्सर्गे निवास कर्यो. त्यां दारिड नामना स्थविर पाखंमिर्ज पोत पोतानी स्त्रीर्ज सहित जागरणनो दिवस होवाथी नृत्य करता हता, तेर्जने जोइने गोशालो बहुज हश्यो एटले ते पाखंमिर्जए तेने वरसाद वरसतामां बहार काढी मूक्यो; परंतु "आ प्रजुनो जक्त गे." एम धारी तेने पागो आण्यो.

हवे प्रजु श्रावस्ति नगरी प्रत्ये जइ त्यां गामनी बहार कायोत्सर्गे रह्या. ते वखते गोशाले प्रजुने पूग्युं के, "आजे मने शुं जोजन मलशे ?" सिद्धार्थे जत्तर आप्यो के, "आजे तने मनुष्यनुं मांस मलशे." जगवाननां आवां वचन सांजली गोशालो श्रावकनां घरे फरतो फरतो पितृदत्त नामना श्रावकने घेर वहोरवा गयो. हवे त्यां एम बन्युं हतुं के, ते श्रावकनी स्त्री सुजद्राये एक दिवस शिवदत्त नामना निमितियाने पूग्युं के, "हे जड ! म्हारे बालको जीवतां नथी, तो शुं करवाथी जीवतां रहे ते तुं कहे ?" तेनां आवां वचन सांजली निमितियाए कह्युं के, "जो तुं त्हारा मृत्यु पामेला गर्जनी श्रेष्ट खीर बनावी तपस्वीने वहोरावे तो बालक जीवतां रहे. पगी ते स्त्रीये पोताना मृत्यु पामेला बालकनी खीर बनावी दासी पासे गोशालाने बोलावी तेने ते वहोरावी अने आपना जयथी घरनुं बारणुं फेरवी नाखीने रही. गोशालो पण खीर जमीने पगी प्रजुने कहेवा लाग्यो के, " आपनुं वचन मिथ्या थयुं. "

सिद्धार्थे कह्युं. “ अरे मूढ ! म्हारी वाणी क्यारे पण मिथ्या न होय. जो तने विश्वास न होय तो उलटी करीने जो.” गोशालाए तेम कर्युं तो तेणे बालकना वालनखो (नखना कटकाओ) दीठा. आथी अत्यंत क्रोध पामेलो गोशालो सुनंदाना घरे गयो; परंतु तेणे घरनुं बारणुं फेरवी नाखेलुं होवाथी ते उलखी शक्यो नहि. पछी तेणे सर्व पाडो बाळ्यो.

पछी हलिद्दक नामना गामने विषे हरिद्रवृक्षनी नीचे कायोत्सर्गे रहेला प्रभुना चरण त्यां कोइए करेला अग्निथी दाझ्या अने बळता एवा अग्निने जोइ गोशालो तो त्यांथी नाशी गयो. पछी भगवान् मंगलागामे आवी विष्णुना मंदिरमां कायोत्सर्गे रह्या. त्यां गोशालो आंखो काढीने बालकोने भय पमाडवा लाग्यो, तेथी ते बालकोना पिताओए तेने बहु मारीने पछी प्रभुनो दास जाणी छोडी दीधो. हवे त्यांथी प्रभुए आवर्त्तक नामना गामे जइ बलदेवना मंदिरमां कायोत्सर्गे निवास कर्यो. त्यां पण गोशालो पोताना मुखने पोलुं करी सर्व बालकोने बीवराववा लाग्यो; ते उपरथी ते बालकोना पिताओए गोशालाने “आ कोइ पिचाश छे.” एम धारी मारवानो विचार कर्यो अने प्रभुने पण ते दुष्ट पापवृत्तिवालाओए जेटलामां बांध्या तेटलामां तो मंदिरनी अंदर मूर्तिरूपे बेठेला बलभद्रे हल उपाडी उठीने तेमने छोडाव्या. त्यांथी प्रभुए चोरक नामना सन्निवेशे कायोत्सर्गे निवास कर्यो. त्यां गोशालो कोइ गृहस्थना मांडवे रंधातुं भोजन जोइ गुप्तरीते वारंवार आमतेम जोवा लाग्यो; तेथी लोकोए तेने चोर धारी दंड विगेरेथी प्रहार करवा मांड्यो. ते वखते गोशालाए कह्युं के, “तमारो आ मंडप म्हारा स्वामीना तेज वडे भस्मरूप थइ जाओ.” आ प्रमाणे गोशाले शाप आप्यो एटले ते तेमज थयुं.

त्यार पछी भगवान् कलंबुक नामना सन्निवेशे गया. त्यां मेघ अने कालहस्ति नामे बे भाइओ वसता हता. कालहस्तिए रस्तामां प्रभुने तथा गोशालाने जोइ क्रोधथी तेमने उपसर्ग करी तथा बांधीने पोताना भाइ मेघनी पासे मोकल्या; परंतु ए मेघे तो पूर्वे प्रभुने कुंड गाममां जोया हता; तेथी तेणे तो नम्रता पूर्वक तेमने छोडी दइने पूज्या.

कोइ वखते अनार्य लोकोए करेला एवा नाना प्रकारना उपसर्गोने सहन करीने पूर्णकलश नामना गामे जता एवा जिनेश्वर प्रभुने रस्तामां बे म्होटा

चोर मळ्या. पछी चोरो "आ आपणने अपशुकन थयां." एम धारी तेन त त्काल प्रभुने मारवा दोम्या; परंतु इंडे वज्र वमे तेउनेज मारी नाख्या.

त्यार पछी सरल स्वभाववाला भगवान् पांचमुं चोमासुं भद्रिका नगरी (भद्दिलपुर)मां रह्या. त्यां तेमणे चोमासी तप कर्यो. पारणाने अंते धर्म ध्यानमां परायण एवा प्रभु त्यांथी कदली नामना गामने विषे जइने कायोत्सर्गे रह्या. त्यां गोशालो दहिं अने भातनुं भोजन करतो छतो जरा पण तृप्ति न पाम्यो; तेथी लोकोए तेने बहुज धिक्कार्यो. भगवान् त्यांथी जंबूखंम नामना गामे गया. त्यां पण मंखलिनो पुत्र (गोशालो) दुध अने चोखानुं भोजन करतो छतो पण अतृप्त रह्यो; तेथी लोकोए त्यां पण तेनो बहु तिरस्कार कर्यो. त्यांथी प्रभु तंबापुरे गया. त्यां श्री पार्श्वनाथना शिष्य नंदिषेण घणा शिष्यो सहित कायोत्सर्गे रहेला हता. तेमने कोइ आरक्षकनो पुत्र के, जे चोर हतो तेणे बुद्धिपूर्वक बाणवमे मार्या; तेथी तेमने अवधिज्ञान उत्पन्न थयुं एटले मुनिचंद्रनी पेठे देवताउ त्यां आववा लाग्या, तेमना तेजनो प्रकाश जोइ गोशालो प्रभुने कहेवा लाग्यो के, "जूउ ! पेला साधुउनो उपाश्रय बले छे." त्यांथी प्रभु कूपिक नामना सन्निवेशे गया. त्यां तेमने "आ कोइ हेरु छे." एम धारीने लोकोए बांध्या; परंतु पार्श्वनाथ प्रभुनी पासे रहेनारी तेमनी शिष्यणी प्रगल्भाये अने विजयाये तेमने छोमाव्या.

पछी गोशाले प्रभुने कह्युं के, "हे प्रभो ! तमने बहु उपसर्ग प्राप्त थाय छे, माटे हवे हुं तमाराथी जूदो रहीश." एम कही भगवानने मूकी पोते जूदा मार्गे चाल्यो. रस्तामां केटलाक चोरो मळ्या. तेउए तेनी पासे भार उपमाव्यो, तेथी गोशालो हसीने (मामा) एम चोर लोकोने कहेतो छतो मनमां विचार करवा लाग्यो के, "जो आ लोको मने छोमीदे तो हुं तुरत प्रभुनी पासे जाउं. कारणके, तेमनी पासे जवाथी मने कांइ पण भोजन मलशे." एम धारी गोशालो पोतानी दृष्टिने आमतेम फेरवतो छतो प्रभुने जोवा लाग्यो; परंतु प्राणीउ उपर अनुग्रह करनार भगवंत तो वैशाली नगरी प्रत्ये लुवारनी शालामां कायोत्सर्गे रह्या हता. लुवार छ महिना थया मांदो हतो, पण ते दिवसेज साजो थयेलो होवाथी ते पोतानी शालामां कायोत्सर्गे उभेला प्रभुने जोइ क्रोधथी घण लइ मारवा दोम्यो. आवो घोर उपसर्ग प्राप्त थतो जोइ

तत्काल इंद्रे आवीने तेनाज घणवडे ते लुवारने मार्यो. त्यांथी भगवाने ग्रामाक सन्निवेशना बिभीतक उद्यानने विषे निवास कर्यो. त्यां तेमनी यक्षे उत्तम प्रकारे पूजा करी. प्रभु त्यांथी शालिशीर्ष गामना उद्याने रह्या. त्यां त्रिपृष्ठ वासुदेव भवमां अपमान करवाथी जे अंतःपुरनी स्त्री मृत्यु पामीने व्यंतरी थइ हती ते पूर्वना वैरथी अत्यंत क्रोध पामती छती तापसीनुं रूप धारण करीने जलथी भीना एवा पोताना जटाना भारथी प्रभुने सिंचन करती छती अत्यंत पवन नाखवा लागी. आ वखते माघ मास हतो; तेथी प्रभुने बहु शीत उपसर्ग सहन करवो पड्यो. पछी विशुद्ध परिणामवाला प्रभुने छट्ठने तपे परम अवधि नामनुं ज्ञान उत्पन्न थयुं. ते वखते त्रण प्रहर सुधी प्रभुने उपसर्ग करवाथी अत्यंत खीन्न थयेली व्यंतरी शांतपणाथी प्रभुने ओलखीने सर्व ऋद्धिपूर्वक महोत्सव करवा पूर्वक स्तुति करवा लागी. पछी छट्ठा चोमासाने विषे प्रभु भद्रिका नगरीने विषे गया. त्यां तेमणे चातुर्मासिक तप करीने घणा अभिग्रहो धारण कर्या. छ मासने अंते फरीथी गोशालो आवीने प्रभुने मळ्यो. भगवाने पण चातुर्मासने अंते कायोत्सर्गने पारीने मगध देशमां निर्विघ्न पणे विहार करता करता सातमा चोमासाने विषे आलंभिका नगरीये जइ गामनी व्हार कायोत्सर्गे निवास कर्यो. चातुर्मास पूर्ण थया पछी कायोत्सर्गने पारी त्यांथी श्री अरिहंत प्रभु कुंडक नगरे गया. त्यां तेमणे विष्णुना मंदिरमां कायोत्सर्ग कर्यो. गोशालो पण विष्णुनी मूर्तिनां मुख आगळ पोतानी पुंठ राखीने रह्यो. प्रभाते पूजारीये आवीने तेने बहु मार्यो. त्यांथी प्रभुए विहार करी मर्दना गाममां आवीने बलभद्रना मंदिरमां एक बाजुए कायोत्सर्ग कर्यो. त्यां पण गोशालो बलदेवना मुख आगळ पोतानुं पुरुष चिन्ह राखी उभो रह्यो; तेथी त्यां पण पूजारीये तेने बहुज कूट्यो अने पछी छोड्यो. पछी बहुशाला नगरना शालवन नामना उद्यानने विषे कायोत्सर्गे रहेला प्रभुने कटपूतना नामनी व्यंतरीए नाना उपसर्गो कर्या. परंतु प्रभुने शांत चित्तवाळा जाणीने शांत थयेली ते व्यंतरीये हर्षथी प्रभुनो म्होटो महिमा कर्यो.

त्यांथी भगवान् लोहार्गल नगरने विषे गया. त्यां चोकी करनार पुरुषो "आ चोर छे." एम धारी गोशाला सहित प्रभुने बांधी जितशत्रु राजा पासे लइ गया; परंतु त्यां कोइ प्रयोजनथी जेवा माटे आवेला उत्पल नामना प-

रिव्राजके तेमने गेमाव्या. त्यांथी भगवाने पुरिमताल नगरने विषे कायोत्सर्गे निवास कर्यो. एवा वखतमां शकटमुख उद्याननी अने ते पुरिमताल नगरना मार्गना उद्याननां जीर्ण प्रासादमां रहेली श्री मल्लिनाथनी मूर्त्तिने नमस्कार करी कोइ वग्गुर नामनो शेठ पोतानी सुभद्रा नामनी प्रिया सहित बोल्यो के, "हे निर्मम! जो म्हारे आपना प्रसादथी संतान थशे तो हुं आ नविन मंदिर बंधावीने तमारी पूजा करीश." अनुक्रमे तेने पुत्र थयो एटले ते वग्गुर शेठ श्री मल्लिनाथनुं नविन जिनालय बंधावी म्होटा महोत्सवपूर्वक पूजा करवा चाल्यो. ते वखते ईशान देवना इंद्रोए तेने कह्युं के, "हे वग्गुर! तुं भाव अरिहंतने त्यजी दइने बीजाने केम वंदन करवा जाय छे?" ईशान देवेंद्रोनां आवां वचन सांभली वग्गुर शेठ श्री वीरप्रभुने भावजिनेश्वर मानी तेमनुं पूजन करी महोत्सवपूर्वक श्री मल्लिनाथना मंदिर प्रत्ये चाल्यो. हवे त्यांथी श्री वीरप्रभु उन्नाय नामना सन्निवेशे जता हता एवामां रस्ते म्होटा दांतवालुं स्त्री पुरुषनुं जोरुं सामुं मल्युं. तेने जोइने गोशालो हशी पड्यो, तेथी ते पुरुषे गोशालाने दोरीवती बांधीने वांसनी जालमां नाख्यो; परंतु पाछलथी तेणे प्रभुने जोइने तेमनो भक्त जाणी तुरत गोशालाने छूटो कर्यो. त्यांथी प्रभु गोभूमि प्रत्ये गये छते गोशालो गोवालीआउने कहेवा लाग्यो के, "हे म्लेछो! आ मार्ग बलो." आवां गोशालानां वचन सांभली अत्यंत क्रोधातुर थयेला तेउए गोशालाने बांधी वंशजालमां नाख्यो; परंतु पाछलथी तेउए तेने जिनेश्वरनो सेवक जाणी तुरत छोमी मूक्यो. पछी आठमुं चोमासुं प्रभुए राजगृह नगरने विषे तपथी निर्गमन कर्युं. नवमे चोमासे प्रभु वज्र भुमी म्लेछ देशने विषे गया. त्यां म्लेछोए निरंतर बहु उपसर्ग कर्या; परंतु प्रभुए उपसर्गोने सहन करता छता पण निराहारपणे त्यांज निवास कर्यो. प्रभुए चोमासुं पूर्ण थया पछी पण निराहारपणे बीजा बे मास ते देशमां विहार कर्यो. आ प्रमाणे प्रभुए ते देशमां छ मास विहार कर्यो, तेथी प्रभुने ते देशमां छमासिक तप थयुं. जो वसती न मले तो चोमासामां पण तेवा वसती विनाना एकज स्थानके रहेवानो कांइ नियम नथी, तो पण प्रभु तो त्यांज रह्या. त्यांथी प्रभुए सिद्धार्थपुर प्रत्ये निवास करी अने त्यांथी कुर्म गामे जवानुं प्रयाण कर्युं. रस्तामां गोशालाए एक तिलनो छोम जोइने

प्रभुने पूछ्युं के, " हे विभो ! आ तिलनो छोड फलीभूत थशे के नहि ? " प्रभुए उत्तर आप्यो के, " सात तिलपुष्पना जीवो तो मरी गया छे; परंतु हे भद्र ! एक शींगने विषे तिलनो लाभ थशे. " आ प्रमाणे प्रभुए कहेली तिलनी उत्पत्तिनी वात सांभलीने तेमना कह्याथी उलटो चालनारो ते गोशालो प्रभुनुं वचन मिथ्या करवाने माटे तिलना छोडने उखेडी नाखीने फेंकी दीधो अने पछी आगल चाल्यो.

हवे अहिं सांनिध्य रहेला देवताउए ते वखते बहु वर्षाद वरसाव्यो, तेथी गायोनी खरीयोवडे चंपायेलो ते तिलनो छोड फरीथी पृथ्वीमां चोटी गयो. केटलाक दिवस पछी एज रस्ते थइने पाछा वलेला प्रभुए अने गोशाले तेटलाज तिलो दीठा. ए उपरथी गोशालाए पोतानुं नियतवादीपणुं वधारे दृढ कर्युं. त्यांथी निस्पृहवंत एवा प्रभु कुर्मगामे गया. त्यां लोकप्रसिद्ध एवो लोकायन नामे बाल तापस तप करतो हतो. ते तापसनी उत्पत्ति विस्मय करनारी छे, ते आ प्रमाणे.

श्री राजगृह नगर अने चंपापुरीनी वचे गोर्वर नामनुं गाम छे. त्यां गोसंख्याक नामनो अपुत्रिउ गोवाल राजा वसतो हतो. एक दिवस चोरलोकोए ते गाममां धाड पाडी; तेथी सघला माणसो नासवा लाग्या. एवामां एक स्त्रीने चोर लोको पकडीने लइ गया; परंतु ते स्त्रीनो पुत्र गाममांज रही गयेलो होवाथी पेला गोसंख्याक नामना गोवाले दीठो; तेथी तेणे पोताना घरने विषे ते पुत्रने लावीने पोतानी स्त्रीने सोंप्यो. स्त्रीये पण तेने पोताना पुत्रनी पेठे पालीने म्होटो कर्यो. हवे पेला चोरलोकोए जे स्त्रीनुं हरण कर्युं हतुं ते स्त्रीने तेउए चंपानगरीमां एक गणिकाने घेर वेची; तेथी ते स्त्रीये पण गणिकानो उद्यम करवा मांड्यो.

हवे यौवनावस्था पामेलो ते बालक एक दिवस घी लइने वेचवा माटे चंपा नगरीमां गयो; परंतु कामदेवथी विह्वल थवाने लीधे ते ज्यां पोतानी माता वेश्यानो धंधो करती हती त्यां गयो. पछी पाछो आवतां रस्ते तेनो पग विष्टाथी खरडायो एटले यौवनथी उन्मत्त छे मन जेनुं एवो ते रस्ते बेठेला एवा कोइ वाछडाने पोताना खरडायेला पगथी घसवा लाग्यो. पछी कुलदेवीनां सानिध्यपणाने लीधे ते वाछडो पासे बेठेली पोतानी माताने कहेवा लाग्यो

के, "हे मात! आ खल पुरुष पोताना खरमायेला पगथी मने स्पर्श करे छे." धेनुये पण देवीनां सानिध्यपणाथी पोताना वाछमाने कह्युं के, "हे वत्स! आ महापापी पोतानी मातानी साथे क्रीमा करे छे, तोपण ए वात त्हारे कोइने कहेवी नहि." माता पुत्रनो आ प्रकारे थतो वार्तालाप सांजलीने पछी ते पोतानी माताने वेश्यानो धंधो करती जाणीने अने तेने त्यजी दइने वैराग्यना रसथी जावित थयो थको प्राणामिक दिक्षाने धारण करी वेश्यायन नामे तापस थयो अने करुणायुक्त हृदयवालो ते सूर्यना तापथी आतापना करतो छतो निरंतर तप करवा लाग्यो. सूर्यना तापथी तेना मस्तकने वीषे जूजु पमवा लागी अने ते जूजने पोते दयाने लीधे पोतानी जटामांज राखवा लाग्यो; तेथी तेनुं यूकाशय्यातर (जुजवालो साधु) एवुं नाम पम्युं.

हवे गोशालो मुनिने आ प्रकारना जोइ पूछवा लाग्यो के, "अरे! यूकाशय्यातर। तमे दीक्षित छो के अदीक्षित छो? आ प्रमाणे जुरात्मा एवा ते गोशालाये त्रणवार पूछ्युं एटले तो वेश्यायन नामना तापसे क्रोधथी तत्काल तेजोलेश्या मूकी. प्रजुए पण कृपाथी तेजोलेश्याना उपर शीतलेश्या मूकी; जेथी तेजोलेश्या शीतलेश्याथी बूकाइ गइ. पछी गोशालो प्रजु पासे गयो एटले सिद्धार्थे तेने कह्युं. "तुं हवणां मृत्यु पामत. कारण त्हारी वाणीना अनियमथी आ तापसे तेजोलेश्या मूकी हती; परंतु प्रजुए कृपाथी शीतलेश्या मूकीने तेने (तेजोलेश्याने) शांत करी छे. सिद्धार्थनां आवां वचन सांजली अत्यंत जय पामेलो गोशालो प्रजुने पूछवा लाग्यो के, "हे अरिहंत! तेजोलेश्या शी रीते उत्पन्न थाय?" आवा गोशालाना प्रश्न उपरथी सिद्धार्थे कह्युं के, "निरंतर आतापना करनारा पुरुषने छछना पारणे एक मूठी अमद खातां अने एक चलुं (छापुं) जनुं पाणी पीतां छ मासने अंते तेजोलेश्या उत्पन्न थाय छे." सिद्धार्थे कहेली तेजोलेश्यानी उत्पत्तिना उपायने सांजली जुष्ट बुद्धिवालो गोशालो प्रजुथी जूदो थइ श्रावस्ती नगरीने विषे कुंजारना घेर रही तेजोलेश्याने उपायथी साधवा लाग्यो. वली ते अष्टांग निमित्तने पण शीख्यो. पछी ते गोशालो "हुं पोतेज जिन छुं अने ते अजिन छे." एम सर्वने कहेतो अने माणसोना समूहने छेतरतो पृथ्वी उपर विचरवा लाग्यो.

हवे श्री वीरप्रजु पण विशालानगरीप्रत्ये गया. त्यां तेमना पिताना मि-

त्र शंखनामना कुलपतिए "आ बालमुनि छे." एम धारी तेमनी हर्षथी पूजा करी. त्यांथी प्रभु दंभिका नामनी नदी वहाणवमे उतरया एटले खारवा लोकोए प्रभुने रोकीने तेमनी पासे वाहाणनुं भाडुं मागवा मांड्युं. एवामां शंखरा जानी व्हेनना पुत्र चित्र भूपतिए ते आवेला अने खारवा लोकोए रोकी राखेला वीरप्रभुने छोडाव्या. पछी त्यांथी प्रभु वाणीज गामप्रत्ये गया. अहिं आनंद नामनो श्रावक रहेतो हतो. ते आतापना करतो होवाथी तेने छठ्ठने पारणे तेज वखते अवधिज्ञान उत्पन्न थयुं हतुं. तेणे प्रभुने जाणीने पछी वंदना करीने कह्युं के, "परीषहने सहन करनारा हे प्रभो! तेमने आटला वखतमां ज्ञान उत्पन्न थशे."

पछी महा तपोवंत एवा वीर प्रभुनुं दशमुं चोमासुं श्रावस्ती नगरीमां थयुं. त्यांथी प्रभु सानुलष्टिक नामना गामे गया अने त्यां गामनी व्हार उद्याननेविषे कायोत्सर्गे रह्या. अहिं भगवाने अनुक्रमे अठावीश दिवसे करीने भद्र, महाभद्र अने सर्वतो भद्र नामनी पडिमा करी. पछी आनंद श्रावकने घेरे दासीये आपेला शीतल (टाढा) अन्नवमे प्रभुने पारणुं थयुं. त्यां पंचदिव्य प्रगट थयां. त्यांथी प्रभुए वहुम्लेच्छोथी व्याप्त एवी दृढ भुमिने विषे पेढालपुर नगरना उद्याननेविषे रहेला पोलास नामना चैत्यने विषे कायोत्सर्गे निवास कर्यो. अहिं तेउ अठमने तपे पाछली रात्रीए कार्योत्सर्ग रह्या हता एवामां प्रभुना निमेष रहित एवा योग्य पुद्गलने अवधिज्ञानथी जाणीने कांइक नम्र थइ छे काया जेनी एवो इंद्र सभामां वेगे वेगे अत्यंत हर्ष पामीने कहेवा लाग्यो के,

"श्री वीरप्रभुना मनने चलाववाने त्रण लोक पण समर्थ नथी." आवां इंद्रनां वचन सांभली संगमक नामनो देव इर्ष्याथी कहेवा लाग्यो के, "जे आ इंद्र एम कहे छे के, अरिहंतनुं मन चलाववाने कोइ समर्थ नथी; ते हुं एनुं वचन मिथ्या करीने अरिहंतने तेमना नियमथी भ्रष्ट करीश. कारण ए प्रभु बीजाना आश्रयथीज तप करे छे." आम कहेता एवा ते संगमक देवताने इंद्रे वहु ना कही तोपण तेतो तत्काल प्रभुनी पासे आवीने तेमने उपसर्ग करवा लाग्यो. तेमां प्रथम धुलनी वृष्टिथी तेणे प्रभुने श्वासोश्वास लेतां बंध करी दीधा. बीजो उपसर्ग एवो कर्यो के, कीडीयोना रूपथी प्रभुना अंगने विषे प्रवेश करीने तेमनुं शरीर चालनी समान बनावी दीधुं. वली मच्छर अने डंशथी प्रभु-

ना शरीरे बहु पीमा करी. देवताए करेला आ प्रकारना उपसर्गथी प्रभु बहु पीमा पाम्या. वली ते देवताए घीमेलोनां रूप बनावी अरिहंत प्रभुने बहुवार पीमया. एज प्रमाणे वींछी, नोलीया, सर्प अने उंदरनां रूपो धारण करीने वारंवार पीमा उपजावी. वली तेणे हाथीनुं रूप बनावी उंचे उगाल्या, पगवमे मर्दन कस्या अने दांतो मास्या. पिशाचनां रूपथी उपसर्ग करी अने पछी वाघनां रूपथी दाढोवमे तामन कस्या. तेमज सिद्धार्थ अने त्रिशलामातानुं रूप करी प्रभुने मोह पमामया. रसोइयानुं रूप धारण करीने प्रभुना बंने पगनी वच्चे अग्नि सलगावी रसोइ बनावी. चंमालनुं रूप बनावी प्रभुना कान विगेरेमां माला बनाव्या. पक्षीउनां रूप बनावी वज्रसमान तीक्ष्ण चांचवमे पीमा पमामया; कठोरवायुथी उंचे उगली पृथ्वी उपर फेंकया. वंटोलीयानां रूपे चक्रनी पेठे भमाव्या. छेवट ते दुरात्मा देवताए कालचक्रथी हणेला प्रभु जानु (ढींचण) पर्यंत भुमीमां खूची गया. सवारे इंद्रसमान समृद्धिने विकुर्वी वैमानमां बेठेलो ते देवता प्रभुने कहेवा लाग्यो के, " हे प्रभो ! स्वर्ग अने मोक्षनी सिद्धिने वरो. " आ प्रमाणे तेणे एक रात्रीने विषे उगणीश उपसर्ग कस्या. पछी अधम एवो ते संगमक पोताना विभंगज्ञानथी जोवा लाग्यो के, " आ मुनि में करेला उपसर्गोवमे पोताना नियमथी भ्रष्ट थया छे के नहि ? " आम विचारी ज्ञानवमे जोवा लाग्यो तो मालम पम्युं के, क्षोभने नहि पामेला अने षट्निकायना जीवोनुं हित इछता प्रभु ध्यानमांज रहेला छे. त्यांथी वालुका गाम प्रत्ये जता एवा प्रभुने ते दुरात्मा संगम देवताए ढींचण प्रमाण वेलुवाला रस्तामां पांचशे चोरोने विकुर्वी तेउना वाहनने विषे जोमया. वली तेणे पोताना वज्रमय अंगथी प्रभुने (मामा) एम कहीने गाढ आलिंगन कस्युं. आ आलिंगन तेणे एवा बलथी कस्युं हतुं के, जो पर्वत होय तो पण ते तत्काल चूर्णरूप थइ जाय; परंतु प्रभु तो महा शक्तिवंत होवाथी कांइ थयुं नहि. प्रभु वालुका गामे गया. त्यां पण ते देवताए प्रभुनुं एक आंखे काणुं एवुं स्त्री रूप बनाव्युं. सुभूम गाममां स्त्रीयोनी आगल हाथ जोमी रहेला जारनुं रूप बनाव्युं. आ प्रकारे विविध कुचेष्टाउ तथा अनेक प्रकारना उपसर्गो लोको पासे पगले पगले करावतो छतो ते संगमक प्रभुने पीमा करतो हतो. मलय गाममां प्रभुनुं पिशाचमय रूप बनावी स्त्री विगेरेने गालो देवरावबा लाग्यो, ते उपरथी

लोकोए तेमने बहु मार्या. वली हस्तिशीर्ष गाममां भिक्षाने अर्थे गयेला प्रभुनुं शिवरूप विकुर्वीने स्त्रीयोनी समक्ष पुरुष चिन्हने खेंची विकारमय बनाव्युं. ते उपरथी लोकोए प्रभुने बहु मार्या. पछी प्रभुए विचार्युं के, आ लोको मने बहु उपसर्ग करे छे; तेथी हवे म्हारे नगरमां जवुंज नहि." एवुं धारी प्रभु नगरनी ब्हार रह्या. संगमक पण "शुं ते हजु नथी थाक्या ?" आम पोताना अवधिज्ञानथी जोवा लाग्यो तो मालम पड्युं के, "प्रभु तो पोताना शुभ ध्यानथी जरापण भ्रष्ट थया नथी." प्रभुनुं आवुं उत्कृष्ट लिंग-श्मशानपणुं (शरीरनुं निरभीमानपणुं) जोइने लोकमां शिवलिंगादिक प्रवर्त्यां.

एक दिवस तोसल नामना सन्निवेशनी ब्हार प्रभु कायोत्सर्गे रह्या हता, एवामां पेलो देवताउने विषे अधम एवो संगमक, एक कुशिष्यनुं रूप धारण करी गाममां खातर पाडवा लाग्यो. लोकोए तेने पकडीने बांध्यो एटले तेणे कह्युं के, "गामनी ब्हार रहेला म्हारा गुरुए मोकलवाथी हुं अहिं आव्यो छुं." ए उपरथी क्रोधातुर थयेला लोकोए "आ वध करवा योग्य छे." एम धारीने प्रभुने बांध्या. परंतु कोइ भूइलनामना इंद्रजालिके छोडाव्या. वली मोसली नामना सन्निवेशने विषे शिष्यरूप बनेला संगम देवताने सुरंगादि शोधतो जोइ लोकोये पूछ्युं एटले तेणे कह्युं के, "हुं गाममां खातर पाडवा जाउं त्यारे म्हारा गुरुने कोइ उपद्रव न करे, माटे हुं तेमना अर्थे एकांत स्थान शोधुं छुं." पछी लोकोए जिनेश्वरने बांधेला जोइने प्रभुना पिताना मित्र कोइ मागध नामना पुरुषे भगवानने छोडाव्या. तोसली गामने विषे ते संगमक देवताए तेवी ज रीते करवाथी तोसली नामना क्षत्रिये प्रभुने सात दोरीवती बांध्या; परंतु धर्मना प्रभावथी ते सघली दोरी तूटी गइ. ते उपरथी तोसलिके "आ चोर नथी." एम धारी प्रभुने छोडी मूक्या. वली एवी रीते सिद्धार्थ नगरमां पण प्रभुने चोररूपे बंधाव्या. त्यां पण कौशिक नामना श्रावके छोडाव्या.

पछी प्रभु व्रजनगरे गया. ते दिवसे त्यां सर्वने घेर खीर रंधाती हती. तो पण "आ देव उपसर्ग करे छे." एम धारी प्रभुतो नगर ब्हार कायोत्सर्गे रह्या. देवताए त्यां पण बहु उपसर्ग कर्या. पछी बीजे दिवस शांत चित्तवालो थयेलो ते देवता अवधिज्ञानथी प्रभुने शुद्धपरिणामवाला जाणीने अने "उपसर्ग करतां छ मास थया." एम विचारीने कहेवा लाग्यो. "हे भगवन! भिक्षाने माटे

ग्रामादिकने विषे जाउ अने हवे पछी हुं तमने निश्चय कांइ पण घोर उपसर्ग करीश नहिं." प्रभुए कह्युं. "हे देव ! हुं म्हारी मरजी प्रमाणे जइश. त्हारे कांइ पण कहेवुं नहि. पछी तेज गाममां प्रभु बीजे दिवसे भिक्षाने अर्थे गया. त्यां कोइ वत्सपालिका नामनी वृद्ध गोशीये तेमने टाढी खीर वहोरावी. ते उपरथी तेना घरने विषे सुवर्णवृष्टि थइ. अभव्य एवो संगम देवता पण छ मास पर्यंत उग्र एवा उपसर्गो करीने पछी ते व्रज नामना गामप्रत्ये प्रभुने नहि भांगेला परिणामवाला जाणीने ते अधम संगमक उत्साह रहित थइने स्वर्गप्रत्ये चाल्यो गयो. हवे ज्यारथी आ नवमा वर्षने विषे संगमदेवताए प्रभुने उपसर्ग करवा मांड्या ते दिवसथी आजसुधी एटले छ मास पर्यंत इंद्रादिक सर्वे देवताउ अत्यंत उद्वेग मनवाला रह्या. पछी अत्यंत क्रोधातुर थयेला इंद्रे संगमक देवताने स्वर्गमांथी काढी मूक्यो; तेथी ते अधमदेव हवणां पण मेरुपर्वतनी चूलिकाने विषे पोतानी प्रिया सहित वसे छे अने ते संगमकना भक्तो तो इंद्रना आग्रहथी स्वर्गने विषे रह्या.

पछी विद्युत्कुमार देवेंद्र अलभिकापुरी प्रत्ये आवी प्रभुने वंदना करी हाथजोडीने पूछवा लाग्यो के, "हे तीर्थेश ! आपे बहु उपसर्गो जीतेला छे, तेथी हुं आपने कुशल समाचार पूछु छुं. पछी श्वेतांबिका नगरी प्रत्ये गयेला तथा निर्विघ्नपणे वर्तता एवा प्रभुने इंद्र कुशल समाचार पूछवा आव्यो. त्यांथी प्रभु श्रावस्ति नगरी प्रत्ये आवीने गामनी व्हार कायोत्सर्गे रह्या. ते वखते त्यांना लोको कार्तिकस्वामीनी मूर्त्तिनो उत्सव करता हता. आ वखते इंद्रे ते कार्तिकस्वामीनी मूर्त्तिमां प्रवेश करीने श्रीवीरप्रभुने नमस्कार कर्या. आम थवाथी तो सर्वे लोको आदरथी अरिहंत प्रभुनुं वंदन करवा लाग्या. त्यांथी कौशांबी नगरी प्रत्ये गयेला प्रभुने कुशल समाचार पूछवा माटे वैमानीक देवता सहित दिवस अने रात्रिना अधिपति एवा सूर्य अने चंद्र त्यां आव्या. एज प्रमाणे वाराणसी नगरीमां इंद्र, राजगृह नगरमां इशानेंद्र, अने मिथिला नगरीमां जनकराजा तथा धरणेंद्र प्रभुने कुशल समाचार पूछवा आव्या. त्यांथी प्रभुनुं अग्यारमुं चोमासुं विशालानगरी प्रत्ये थयुं. अहिं पण भूतानंद हरिये प्रभुने कुशल समाचार पूछ्या. त्यांथी प्रभु सुंसुमारपुर प्रत्ये जइने कायोत्सर्गे रह्या. ते वखते नवीन उत्पन्न थयेला भुवनपतिना इंद्र चमरेंद्रे पोताना

मस्तक उपर रहेला सौधर्मेंद्रनां सिंहासनने जोइने विचार्युं जे, "हुं तेने हेठो पाडुं." आम धारी ते त्यां गयो, परंतु इंद्रथी पराभव पामेलो ते सुंसुमारपुर प्रत्ये आवीने कायोत्सर्गे रहेला श्रीवीरप्रभुना शरणे रह्यो; तेथी ते निर्भय थयो. त्यार पछी भोगपुरने विषे माहेंद्र नामनो क्षत्रिय क्रोधथी जेटलामां खजुरीनी कांटावाली सोटीवडे प्रभुना शरीरने पीडा उपजावे छे तेटलामां प्रभुने कुशल समाचार पूछवा आवता एवा सनत्कुमार देवेंद्रे तेने तत्काल निवार्यो. त्यांथी प्रभु नंदि गाम प्रत्ये गया. त्यां तेमना पिताना मित्र नंदे तेमने वंदना करी. त्यांथी मिंढक गाम प्रत्ये कायोत्सर्गे रहेला प्रभुने कोइ एक गोवाल क्रोधथी उपसर्ग करवा लाग्यो एवामां वंदन करवा माटे आवेला इंद्रे भयंकर रूपथी तेने त्रास पमाडीने काढी मूक्यो. त्यांथी प्रभु कौशांबी नगरी प्रत्ये गया. त्यां शतानिक नामे राजा राज्य करतो हतो. अहिं प्रभुए पोताना पूर्वना दुष्ट कर्मने जीतवा माटे पोष मासनी शुक्ल पडवेने दिवसे एवो घोर अभिग्रह लिधो के, "जो कोइ मने द्रव्यथी सूपडाने खूणे रहेला अडदना बाकला गोचरी वखत गया पछी वहोरावे तो म्हारे पारणुं करवुं. परंतु ते वहोरावनार राजानी पुत्री छतां दासीपणाने पामेली होवी जोइए. वली तेनो जमणो पग उंबराथी व्हार अने डावो उंबराथी अंदर होवो जोइए. माथे मुंडेली तथा पगे बेडीवाली तेमज त्रण उपवासवाली अने रुदन करती होवी जोइए." आ प्रमाणेनो प्रभुनो अभिग्रह त्यां चार मास सुधी पुरो थयो नहि.

हवे अहिं एवुं बन्युं हतुं के, शतानिक राजाए दधिवाहन भूपतिनो युद्धमां पराजय करीने तेनी चंपा नगरी लुंटी. ते वखते मृगावती, शतानीक, नंदाप्रिया सहित सुगुप्त, द्वारपालीका विजया अने धर्मोपाध्याय एटला जणा बहु दुःख पाम्या. वली ते युद्धमां वसुमति के जेनुं बीजुं नाम चंदनबाला हतुं ते पुत्री सहित तेनी धारणी माताने कोइ शतानिक राजानो लश्करी माणस पकडीने कौशांबी नगरीये लाव्यो; परंतु रस्ते माता धारणी तो मृत्यु पामी; तेथी पछी लश्करीये चंदनबाला पुत्रीने कोइ धनावह शेठने त्यां वेचाती आपी. धनावह शेठे पण ते पुत्रीने पोताने घेर तेडी जइ अने तेने स्नान, वस्त्र, विलेपन तथा अलंकारादिकथी सुशोभित करी. एक दिवस शेठना पग धोवरावती एवी चंदनबालाना केशने नीचे पडता जोइ शेठे ते केशने उंचा राख्या ते जोइ धनावह

शेठनी स्त्री मूलाये विचार कर्यो के, “ निश्चय ए म्हारी शोक्य थशे. ” आम धारी तेणे ते बीचारीने बेमीमां नाखी त्रण दिवस सुधी भोजन न आप्युं. वली ते बीचारीनुं मस्तक पण मुंमावी नाख्युं. छेवट मूलाये तेने भक्षण करवा माटे आपेला अमदना बाकला सूपमाने खूणे राखीने अने ते सुपमाने हाथमां धारण करी रहेली, वली एक पग उंबरानी बहार अने एक पग अंदर राखीने बेठी बेठी रुदन करती एवी ते चंदनबालाये पांच मास अने चोविश दिवसे गोचरीने अर्थे फरता अभिग्रह धारी एवा वीरप्रभुनो अमदना बाकला वहोरावी अभिग्रह पूर्ण कर्यो. ते वखते आकाशमांथी सुवर्णवृष्टि थइ. प्रभु रूप सत्पात्रने दान आपवाथी चंदनबालानी बेमी पोतानी मेले तूटी गइ, केशपाश नवो आव्यो अने तेनुं सर्व अंग अलंकारयुक्त थइ गयुं. पछी दधिवाहनना कंचुकि एवा उत्पले तेने तुरत उलखी अने मृगावती राणीये पण तेने पोतानी व्हेननी पुत्री जाणी. पछी इंद्रे शतानिक राजाने चंदनबाला सोंपी अने कह्युं के, तमे तेनुं रक्षण करजो. कारण के, ए श्री वीरस्वामिनी प्रथम साध्वी थवानी छे. पछी सुमंगल गामने विषे प्रभुने वंदन करवा माटे सनत्कुमार माहेंद्र आव्यो. पालक नामना गामने विषे पण वाइल नामे कोइ वणिक् यात्रार्थे जतो हशे ते पोतानी सन्मुख आवता श्रीवीरप्रभुने जोइ अमंगलिक थयुं मानी क्रोधथी तरवारवमे तेमने मारवा दोम्यो; परंतु रस्तामांज तेनो सिद्धार्थे विनाश कर्यो. पछी प्रभुए बारमुं चोमासु चंपानगरीमां स्वातिदत्त ब्राह्मणनी अग्निहोत्रशालामां कर्युं. त्यां प्रभु चार मास पर्यंत निश्चल ध्यानथी रह्या. ते वखते पूर्णभद्र अने माणिभद्र नामना जे बे यक्षो तेमनी सेवामां रह्या हता ते छतो तेमने जोइने आश्चर्य पामी गया. पछी स्वातिदत्त ब्राह्मणे प्रभुने प्रश्न कर्युं के, “आत्मा (जीव) कोने कहेवो ?” प्रभुए कह्युं “जे हुं एवो अभिमान करे छे, तेज आत्मा (जीव) कहेवाय छे.” आ प्रमाणे भगवाने जीवनुं स्थापन कर्युं एटले वली स्वातिदत्ते तेमने फरीथी पूछ्युं के, “हे प्रभो ! प्रदेशन अने प्रत्याख्यान कोने कहेवुं?” प्रभुए कह्युं. “ हे विप्र ! प्रदेशन बे प्रकारनुं छे. एक धार्मिक अने बीजुं अधार्मिक. तेमज प्रदेशन शब्दवमे करीने पण निश्चय उपदेशज कहेवाय छे. वली मूलगुण अने उत्तरगुणथी प्रत्याख्यान पण जिनेश्वरोए बे प्रकारनुं कह्युं छे. ” प्रभुनां आवां वचन सांभली विप्र स्वातिदत्त अने पूर्णभद्र तथा माणिभद्र बन्ने यक्षो प्रतिबोध

पाम्या. पछी जूंभिक गाम प्रत्ये गयेला भगवान् पासे इंद्रे आवीने तथा म्होटुं नाटक करी बतावीने पछी कह्युं के. "हे नाथ! तेमने थोडा दिवसमां केवल ज्ञाननी उत्पत्ति थशे." त्यांथी भगवान् मिंढिक गामे गया. त्यां तेमनी वंदना करवाने माटे चमरेंद्र आव्यो. पछी षम्मानी गामनी व्हार कायोत्सर्गे रहेला प्रभुने कोइ गोवालीउ पोतानो बलद भलावी पोते गाममां गयो. थोडीवारे पाछा आवी तेणे प्रभुने पूछ्युं के "हे देव! में आपने म्हारो बलद भलाव्यो हतो ते अहिं देखातो नथी माटे क्यां गयो?" गोवाले आम पूछ्या छतां पण ज्यारे प्रभु तो मौनज रह्या त्यारे तो तेणे क्रोधथी प्रभुना बन्ने कानने विषे एवा खीला मार्या के, ते बन्ने खीलानां मुख अंदर एकठां थइ गया. वली ते दुरात्मा गोवाले खीलाना उपला भागने कापी नाखी कोइथी न देखाइ शके तेम कर्या. अहो! धिक्कार छे पूर्वे करेलां कर्मने के, जे भवांतरने विषे पण भोगव्यां विना छूटी शकतां नथी. प्रभुए त्रिपृष्ट वासुदेवना भवे शय्यापालकना बन्ने कानने विषे उकालेलुं तरवुं रेडाव्युं हतुं. ते कर्म अत्यारे उदय आव्युं. ते शय्यापालक पण संसारमां भमतो भमतो गोवाल थयो अने तेणे पूर्वना वैरने लीधेज श्रीवीरप्रभुना कानने विषे खीला मार्या.

हवे प्रभु मध्यम एवी अपापा नगरीप्रत्ये आव्या त्यां ते गोचरीने अर्थे फरता फरता सिद्धार्थ नामना वणिकूने घेर गया. वणिके प्रभुने शल्य (कानमां खीला) वाला जाणी ते वात खरक नामना वैद्यने कही; तेथी वैद्य बहु दुःख पाम्यो. पछी ते बंने जणा प्रभुनी पाछल पाछल उद्यानमां जइ साणसीउवडे ते बन्ने खीलाने प्रयत्नथी खेंची काढ्या. आ वखते प्रभुने बहु वेदना थवाथी ते मणे एवी भयंकर बूम पाडी के, जाणे म्होटो पर्वत फाट्यो होयनी शुं? पछी वैद्ये व्रणसंरोहिणी औषधीना प्रयोगथी प्रभुने पीडा रहित कर्या. प्रभुने थयेला उपसर्गने विषे केटलाक दुःसह अने केटलाक सामान्य हता. तेमां जघन्यने विषे तो कटपूतना व्यंतरीये करेलो शीतवेदना उपसर्ग हतो. मध्यममां संगमिक देवताए करेला उपसर्गो हता अने उत्कृष्ट तो प्रभुना कानमांथी खीला काढवानो हतो. प्रभुने उपसर्गोनो आरंभ पण गोवालथी अने अंत पण गोवालथीज थयो. पछी प्रभुना कानने विषे खीला मारनारो गोवाल पोताना दुष्टकर्मथी मृत्यु पामीने सातमी नरके गयो तथा सिद्धार्थ वणिक् अने ख-

रुक वैद्य ए बन्नेजणा पोताना पुण्यने लीधे स्वर्गे गया.

हवे जृंनिक नामना गामनी समीपे ऋजुवालिका नामनी नदीने तीरे व्या वृत्त नामना चैत्यनी पासे श्यामाक नामना कणबीना खेतरमां शालवृक्षनी नीचे उत्कटितासने बेठेला प्रनुने छठ नक्ते सुध्यान ध्याता कर्मक्षय थवाने लीधे केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. ते वखते चोसठ इंडोए तुरत एकठा थइने जगत्ने आश्चर्यकारी एवी समवसरणनी रचना बनावी. प्रनुए पण "आ माणसो नाव रहित छे." एम धारीने पण पोतानो आचार जणाववाने माटे एक मुहूर्त (बे घमी) धर्मदेशना आपी. पछी अमरेंडोए परवस्था थका नगवान् एकज रात्रीमां बार योजन प्रमाणवालो मार्ग उलंघीने तत्काल मध्यम अपापा नगरी प्रत्ये आव्या. त्यां सौमिल नामनो ब्राह्मण यज्ञ करतो हतो, तेने माटे इंडनूति विगेरे म्होटा अगीयार उपाध्याय त्यां आव्या हता. आ सर्वेने बोध करवा माटे प्रनुतो नगरीनी व्हार महसेन उद्यानमां समवसस्या. देवताउए धर्मदेशनाने माटे एक म्होटुं समवसरण रच्युं. त्यां सिंहासनने विषे बेशी प्रनु धर्मदेशना आपवा लाग्या, जेथी देवताउ महोत्सर्व पूर्वक त्यां आववा लाग्या. देवताउने आवता जोइ इंडनूति विगेरे उपाध्यायो सोमिल ब्राह्मणने केहेवा लाग्या के, "याज्ञिक गोरोए अग्निने विषे सारी रीते आहुति आपवाथी देवताउ पोते अहिं आवे छे." आ प्रमाणे तेउ वात करे छे एटलामां तो देवताउ यज्ञस्थानने त्यजी दइने जिनेश्वर प्रनुनी पासे गया एटले तो वली इंडनूति उपाध्याय अन्य पुरुषोने पूछवा लाग्यो के, "हे लोको ! आ सर्वे देवताउ यज्ञस्थानने मूकीने बीजे क्यां जाय छे ?" तेउए उत्तर आप्यो के, "हर्षवंत एवा ते देवताउ सर्वज्ञ एवा श्री वीरप्रनुनी पासे जाय छे." आवां लोकोनां वचन सांनली अत्यंत गर्वयुक्त थयेलो इंडनूति पोताना पांचसे शिष्योने लइने प्रनुना समवसरणमां गयो. त्यां ते त्रणलोकनी लक्ष्मीथी सुशोनित एवा श्री वीरप्रनुने जोइने पोताना चित्तमां चमत्कार पाम्यो अने "शुं आ सर्वज्ञ हशे के बीजा !!!" एम शंका पामतो उतो बेठो. एवामां प्रनुए तेनो आशय जाणीने तेने कह्युं के, "हे इंडनूति ! तुं नले आव्यो." प्रनुनां आवां वचन सांनली इंडनूति विचार करवा लाग्यो. "शुं ए मने उलखता हशे ? हा ! ए मने जाणताज हशे. कारण मने कोण नहिं उलखतुं होय ? परंतु जो ए म्हारो संशय जाणे

अने तेने टाले तो हुं एमने सर्वज्ञ जाणुं." आम धारी ते जेवो स्थिर थइने रहे छे एटलामां प्रभुए "तने जीव विषयनो संशय छे?" एम कहीने पछी वेदनां पदोनो उच्चार करी तेनो संशय छेदी नांख्यो; जेथी ते इंद्रभूतिये पोताना पांचसो शिष्य सहित चारित्र अंगीकार कर्युं. पछी अग्निभूतिना पण कर्म संबंधी संशय दूर थवाथी तेणे पण पांचसो शिष्य सहित दीक्षा लीधी. वली शरीर एज आत्मा, ए संशय छेदावाथी वायुभूतिये पण पांचसो शिष्य सहित व्रत ग्रहण कर्युं. पंच महाभूत संबंधी संशयनो प्रभुए वेदनां वाक्यथी नाश कर्यो, ए उपरथी व्यक्त नामना ब्राह्मणे पांचसो शिष्य सहित व्रत अंगीकार कर्युं. आ जन्मने विषे जेवुं होय तेवुंज परभवने विषे मले, आ संशय पण प्रभुए छेद्यो; तेथी सुधर्मा नामना ब्राह्मणे पांचसो शिष्य सहित चरित्र लीधुं. बंध अने मोक्षनो संशय प्रभुए वेदयुक्तिथी छेद्यो. ए उपरथी मंडिकना पुत्र मंडिते साढात्रणसो शिष्य सहित दीक्षा लीधी. देवताउ छे के नथी, आ संशय पण प्रभुए छेदवाथी मौर्यपुत्रे त्रणसो शिष्य सहित चरित्र लीधुं. नरक छे के नथी, आ शंसय प्रभुए छेद्यो, एथी अकंपिते त्रणसो शिष्य सहित दीक्षा लीधी. पुण्यपाप छे के नथी, आ संशयनो प्रभुए नाश करवाथी अचलभ्राताए त्रणसो शिष्य सहित चारित्र आदर्युं. परलोक छे के नथी, आ संशय छेदवाथी मेतार्ये त्रणसो शिष्य सहित व्रत अंगीकार कर्युं. मोक्ष छे के नथी, आ संशयनो उत्तर प्रभुए वेद वचनवडे आपवाथी प्रभास नामना विप्रे त्रणसो शिष्य सहित व्रत आदर्युं. आ वखते आवी रीते इंद्रभूति विगेरे अगीयार जणाए पोताना शंसयनो नाश थवाथी चुमालीशसो शिष्यो सहित दीक्षा लीधी. पछी प्रभुए तेउने त्रीपदीनुं दान कर्युं अर्थात् त्रिपदी भणावी एटले तेउए द्वादशांगी रची. पछी भगवाने ते अगीयारे जणाने पोताना गणधर पदे स्थाप्या. प्रभुने चौदहजार साधुउ, शुद्ध शीलवंत छत्रिशहजार साध्वियो, एक लाख अने उगणसाठ हजार श्रावको, त्रण लाख अने अढारहजार श्राविकाउ, त्रणसो चौद पूर्वधारियो, तेरसो अवधिज्ञानि साधुउ, सातसो व्रतधारी एवा केवलज्ञानीयो, सातसो वैक्रियलब्धिने धारण करनाराउ, पांचसो मनःपर्यवज्ञानने धारण करनाराउ, चारसो वादलब्धिने धारण करनारा तपस्वीउ, आठसो अनुत्तर देवलोकमां जनाराउ अने सातसो अंतेवासी सिद्धे, आ प्रमाणेनो परिवार हतो. प्रभु

ग्रहस्थावासमां त्रीश वर्ष, बद्मस्थपणे बार वर्ष अने साढा ब मास तथा केवली पणे ब मासमां कांइ उंगा त्रीश वर्ष एम प्रभुनुं सर्व आयुष्य बोंतेर वर्षनुं हतुं.

हवे सुखम दुःखमकालना त्रणवर्ष साढाआठमास बाकी रह्ये बते अपापा नगरीने विषे *कार्तिकवदी अमावस्याने दिवसे स्वाति नक्षत्रना योगमां अठम तप करीने पर्यंकासने बेठेला कर्मरहित प्रभुए पंचावन पुण्यपापना फलरूप बत्रिश अध्ययन सभामां देशनारूपे कहीने अने प्रधान नामना अध्ययननुं निरुपण करीने पबी मोक्षलक्ष्मीनो अंगीकार कर्यो. हे भव्यलोको! जेमणे संगमक देवता विगेरे जीवोए करेला उपसर्गना समूहने धीरजताथी सहन कर्या बे, जेमणे गाढ एवुं तप कर्युं बे अने जेमणे दुःसह एवा परीषहोनी सेनाने लीलामात्रमां जीती लीधी बे ते इंद्रादि देवताउए पूजन करेला श्री वीरजिनेश्वरने तमे नमस्कार करो.

॥ इति श्री महावीरचरित्रं संपूर्णम् ॥

निम्मविअबारसंगे निहयअणंगे विमुक्कभवसंगे ॥
करुणामयजलनिहिणो नमामि गणहारिणो सव्वे ॥३॥

अर्थः—द्वादशांगीना रचनारा, कामदेवनो नाश करनारा, संसारना संगने त्यजी देनारा अने दयारूप अमृतना समुद्र एवा सर्व गणधरोने हुं नमस्कार करुं बुं. ॥ १ ॥

अहिं सर्व तिर्थंकरोना सर्व गणधरोने नमस्कार करुं बुं, एम कह्युं. तो कया कया तिर्थंकरना केटला केटला गणधरो हता ते कहे बे. १ श्री ऋषभदेव प्रभुना पुंमरिकादि चोराशी गणधरो हता. २ अजितनाथना सिंहसेनादिक पंचाणुं गणधरो हता. ३ शंभवनाथना चारुरु विगेरे एक सो अने बे गणधरो हता. ४ अभिनंदनना वज्रनाभादिक एकसोने सोल गणधरो हता. ५ पद्मप्रभुना सद्योतादिक एक सो ने सात गणधरो हता. ६ सुमतिनाथना चमरादिक एक सो गणधरो हता. ७ सुपार्श्वनाथना विदर्भादिक पंचाणुं गणधरो हता. ८ चंद्रप्रभुना दिन्नादिक त्राणुं गणधरो हता. ९ सुविधिनाथना वराहादिक अठा-

* आ मास पूनमीया गणवा.

शी गणधरो हता. १० शीतलनाथना नंद विगेरे एकाशी गणधरो हता. ११ श्रेयांसनाथना कौस्तुभादिक छोतेर गणधरो हता. १२ वासुपुज्यना सुभूमादिक छासठ गणधरो हता. १३ विमलनाथना मंदर विगेरे सत्तावन गणधरो हता. १४ अनंतनाथना यशादिक पच्चास गणधरो हता. १५ धर्मनाथना अरिष्टप्रमुख त्रेंतालीश गणधरो हता. १६ शांतिनाथना चक्रायुधादिक छत्रिश गणधरो हता. १७ कुंथुनाथना शंखादिक पांत्रिश गणधरो हता. १८ अरनाथना कुंभादिक तेत्रिश गणधरो हता. १९ मल्लिनाथना भिषगादिक अठाविश गणधरो हता २० मुनिसुव्रतस्वामिना मल्लप्रमुख अढार गणधरो हता. २१ नमिनाथना संभु विगेरे सत्तर गणधरो हता. २२ नेमिनाथना (आवश्यकसूत्रना अभिप्राय प्रमाणे) वरदत्तादि अगियार गणधरो अने (कल्पसूत्रना अभिप्राय प्रमाणे) अढार गणधरो हता. २३ पार्श्वनाथना (आवश्यकसूत्रना अभिप्रायथी) आर्यदिन्नादिक दश अने (कल्पसूत्रना अभिप्रायथी) आठ गणधरो हता. २४ महावीरस्वामीना गौतमादिक अगीयार गणधरो हता. ए चोवीश जिनेश्वरना पहेला पहेला गणधरोने हुं वंदना करुं छुं.

ए उपर आ नीचेनी त्रण गाथाउ कहे छे.

सिरिउसहसेण पहु सी-हसेण चारूरु वज्जनाहक्खा ॥
चमरो सज्जो अ विद-ब्भ दिन्न पहुणो वराहो अ ॥ १ ॥
पहु[illegible] त्थुभो चिय, सुभुम मंदर जसा अरिट्ठो अ ॥
च[illegible] संखा कुं-भ भिसय मल्लीय संभू अ ॥ २ ॥
[illegible]. अज्जदिन्ना, तहिंदभुई अ गणहरा पढमा ॥
सीसाउ सहाईणं, हरंतु पावाइं पणयाणं ॥ ३ ॥

अर्थ—१ श्री ऋषभसेन, २ प्रभु सिंहसेन, ३ चारुरु, ४ वज्रनाभ, ५ चमर, ६ सद्योत, ७ विदर्भ, ८ दिन्न, ९ प्रभु वराह, १० नंद, ११ कौस्तुभ, १२ सुभूम, १३ मंदर, १४ यशा, १५ अरिष्ट, १६ चक्रायु, १७ शंख, १८ कुंभ, १९ भिषग, २० मल्ल, २१ शंभु, २२ वरदत्त, २३ आर्यदिन्न, २४ इंद्रभूति. चोविश तीर्थंकरना आ चोवीश शिष्यो सहित प्रथम गणधरो नमस्कार करता एवा प्राणीउनां पापने नाश करो. ॥ ३ ॥ इति गणधरोनी स्तुति.

हवे प्रथम चक्रवर्त्ती एवा भरतमुनिनी स्तुति करे छे.

भरहमहारायरिसिं, गिहिवेसुपन्ननाणवररयणं ॥
दसहिं सहस्सेहि समं, निरकंतं वंदिमो सिरसा ॥ ४ ॥

अर्थ—जेमने गृहस्थना वेशमांज केवलज्ञानरूप रत्न उत्पन्न थयुं छे अने जेमणे दशहजार राजाउनी साथे चारित्र अंगीकार कर्युं छे एवा ते भरत महा राजर्षिने अमे मस्तकवमे नमस्कार करीए छीए.

हवे महाबल एवा बाहुबलि महर्षिनी स्तुति करे छे.

हच्छिविलग्गस्स न के-वलं तिसोऊण वरिसपमिमंते ॥
पयपउमसमुप्पाइअ-नाणवरो जयउ बाहुबली ॥५॥

अर्थ—जेमणे एक वर्ष कायोत्सर्गे रह्या पछी "हाथी (गर्वरूप हाथी) उपर चमेलाने केवलज्ञान न होय." एवां पोतानी व्हेनोनां वचन सांभली आगल चालवा माटे पग उपाम्वाथी जेमने केवलज्ञान प्राप्त थयुं छे एवा बाहुबलि जयवंता वर्तो ॥ ५ ॥

आ भरत अने बाहुबलिनो संबंध श्री ऋषभदेवना चरित्रथी जाणी लेवो. हवे भरतराजाना वंशना अजितनाथ सुधीना सर्व राजर्षिउनी स्तुति त्रण गाथाथी कहे छे.

सुरवइणा अहिसित्ता, भरहपए अद्धभरहवरपहुणो ॥
आइच्चजसप्पमुहा, अठवि सासयसुहं पत्ता ॥ ६ ॥

अर्थ—सौधर्मेंद्रे जेवी रीते भरतराजाने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं ते वखते तेमनो केवल महोत्सव करीने तेमना पदे तेमना पुत्रने राज्याभिषेक कर्यो तेज प्रकारे अर्ध चक्रवर्त्तीनो अर्धा भरतक्षेत्रना राज्यने विषे राज्याभिषेक कर्यो छे. भरतना पुत्रोनो वंश नीचे प्रमाणे १ आदित्ययशा, २ महाबल. ३ अतिबल. ४ बलभद्र, ५ बलवीर्य, ६ कार्तवीर्य; ७ जलवीर्य अने ८ दंमवीर्य एम आठ आठ पुत्रो साश्वता सुखने पाम्या छे. ते वात आदिनाथना चरित्रथी जाणी लेवी ॥ ६ ॥

अन्नेवि पुहविवइणो, उसभस्स पउप्पए असंखिज्जा ॥
जावजिअसत्तुराया, अजियजिणपिआ समुप्पन्नो ॥ ७ ॥

अर्थ—श्री ऋषभदेव प्रभुना पछी तेमना वंशने विषे श्री अजितनाथ जिनेश्वरना पिता जितशत्रु राजा जेटला कालमां उत्पन्न थया छे तेटला कालमां (पचास क्रोड लाख सागरोपम कालमां) बीजापण असंख्याता पृथ्वीपतियो थइ गया छे ॥ ७ ॥

तेउए शुं कर्युं छे? ते नीचेनी गाथाथी कहे छे.

उझित्तु रज्जलच्छिं, पवइआ केवि सिवपुरं पत्ता ॥
सवठ्ठपत्तम्मवरे, अवरे ते वंदिमो सिरसा ॥ ८ ॥

अर्थ—तेमांथी केटलाक तो राज्यलक्ष्मीने त्यजी दइने दीक्षा धारण करी मोक्षपुरने पामेला छे अने बाकीना सर्वार्थसिद्ध वैमाने प्राप्त थया छे. ते सर्वेने हुं मस्तकवडे नमस्कार करुं छुं ॥ ८ ॥

भरत चक्रवर्त्ती संबंधी जे कांइ कहेवानुं हतुं ते आगलनी गाथामां कहेवाइ गयुं छे. हवे बाकी रहेला चक्रवर्त्तीनी स्तुति एक गाथाथी कहे छे.

तणमिव भरतपहुत्तं, चइत्तु नरवइसहस्सपरिअरिए ॥
निरकंते नरनाहे, नमामि नवसगरपामुक्के ॥ ९ ॥

अर्थ—भरतक्षेत्रना प्रभुपणाने तृणनी पेठे त्यजी दइने हजारो भूपतियोथी परवरेला अने दीक्षा धारण करेला सगर विगेरे नव चक्रवर्त्ती राजाउने हुं नमस्कार करुंछुं. आ गाथानी अंदर "नव" ए शब्द मूक्यो छे, ते उपरथी एम समजवानुं के, चक्रवर्त्तीयो बार छे. तेमां प्रथम भरतनुं आख्यान आगल कहेलुं छे. सुभूम अने ब्रह्मदत्त सातमी नरके गयेला होवाथी तेउ वंदना करवाने योग्य नथी; बाकीना नव वंदना योग्य छे एज हेतुथी "नव" शब्द मूक्यो छे.

हवे तेमां प्रथम सगर चक्रवर्त्तीनुं चरित्र कहेवाय छे.

॥ श्री सगर चक्रवर्त्ती चरित्रम् ॥

साकेत नगरने विषे इक्ष्वाकु कुलमां उत्पन्न थयेला अने पापथी भय पामता एवा जितशत्रु अने सुमित्र नामना बे भाइउ राज्य करता हता. तेमां जितशत्रुराजाने विजया नामनी स्त्री हती अने सुमित्रने वैजयंती नामनी गुणवंत स्त्री हती.

एक दिवस विजया अने वैजयंती ए बन्ने स्त्रीयोए जूदा जूदा गजादि चौद

ते पट्टराणी नेत्र वंध करी राजाना जोता जोतामां मृत्यु पामी. पछी राजा पण मूर्छा पामी पृथ्वी उपर पड्यो. वहु वारे महा कष्टथी सचेत थयो त्यारे ते आ प्रमाणे विलाप करवा लाग्यो. "देवताने पण प्रिय स्वरूपवाळी, उदार विवेकवाळी, गुणोने धारण करनारी अने प्रीतिवाळी हे सुतारा प्रिया! तुं क्यां गइ छे?" आ प्रमाणे राजा वहु वखत विलाप करीने प्रियानी चिता रची तेमां पोते वळी मरवा तैयार थयो एटलामां ते स्थानके आकाशमांथी वे विद्याधरो आव्या. पछी एक विद्याधरे मंत्रेलुं जल चितानी अग्नि उपर छांट्युं एटले ते-मांथी अट्टाट्ट शब्द करती प्रतारणी विद्या तुरत नासी गइ. विजयराजा "आ शुं थयुं! आ शुं थयुं!!" एम आश्चर्यथी वोलवा लाग्यो एटले ते वन्ने विद्याधरोए नमस्कार करी तेने कह्युं के, "हुं अमिततेज विद्याधरनो संभिन्नश्रोत ना-मनो निमित्तियो छुं. आ साथे छे ते म्हारो पुत्र छे. अमे वन्ने जणा शत्रुंज-यादि तीर्थोने नमस्कार करवा जता हता एवामां "अरे श्री विजयनरेश्वर प्राणनाथ! अरे विवेकवंत अमिततेज वंधु! म्हारुं रक्षण करो! म्हारुं रक्षण करो!!" अमे तेनां आवां वचन सांभळी तुरत पाछा वळ्या अने अमारा महाराजा अमिततेजनी व्हेननुं हरण थतुं जोइ क्रोधथी तरवार काढी युद्ध करवा तैयार थया एवामां सुताराये अमने कह्युं के, "तमे युद्ध करशो नहि; परंतु ज्योतिर्वनमां जइ प्रतारिणी विद्यानी पाछळ मरवा तैयार थयेला विजय महाराजानुं रक्षण करो." अमे तेनां वचनथी तुरत अहिं आव्या एटलामां प्रतारिणी विद्या नासी गइ." आवी रीते कहीने वन्ने विद्याधरो खेदयुक्त चित्त-वाळा राजाने शांत करी लेइ गया अने वात कही. हवे आ वात स्वयंप्रभा माताये अने विजयभद्रे सांभळी; तेथी तेओ जेटलामां वहु शोक करवा लाग्या तेटलामां कोइ एक पुरुषे आकाशमार्गेथी त्यां आवी तेमने कह्युं के, "हे स्वयंप्रभा देवी! तमे शोक करशो नहि. वळी म्हारां वचन सांभळो. रथनूपुरचक्रवाल नगरना महाराजा अमितविद्याधरनो मान्यवंत एवो संभिन्नश्रोत नामे निमित्तियो म्हारो पिता छे. हुं तेमनो दीपशिख नामनो पुत्र छुं. एक दिवस अमे वन्ने जणा ज्योतिर्वन नामना उद्यानमां क्रीडा करता हता एवामां चमरचंचापुरीनो रा-जा अशनिघोष सुताराने हरण करी लइ जतो अमारा जोवामां आव्यो. अमे तेनी साथे युद्ध करवा तैयार थया, पण सुताराये तेम करवानी ना पाडीने

विजयराजानुं रक्षण करवानुं कह्युं. अमे ते प्रमाणे प्रतारिणी विद्यानी पाछल भरवा तैयार थयेला राजानुं रक्षण कर्युं छे. पछी सुतारानी सर्व वात जाणीने तेने मेलववा माटे तैयार थयेला विजय राजानी आज्ञाथी आ सर्व समाचार कहेवा माटे हुं तमारी पासे आव्यो छुं."

पछी स्वयंप्रभाये सत्कार करेलो दीपशिख फरी विजयराजा पासे गयो अने ते पिता पुत्र बन्ने जणा राजा विजयने तेना नगरमां तेमी लाव्या. त्यां अमिततेज विद्याधरराजाए सेवाभक्तिथी तेने पूछ्युं एटले तेणे पोतानी सर्व वात कही. ते सांभली महा क्रोध पामेला विद्याधरपति अमिततेजे मरीचि नामना दूतने शीखामण आपी चमरचंचापुरीने विषे मोकल्यो. दूते चमरचंचापुरीमां जइने अशनिघोषने कह्युं के, "तुं अजाणपणाथी अमारा महाराजानी व्हेन जे विजयराजानी स्त्री छे ते सुताराने अहिं लाव्यो छुं, ते तेमने ऊट पाछी आपी दे; परंतु त्हारे त्यां राखी पोतानो अनर्थ करीश नहि." अशनिघोष गर्वथी ऊंचुं माथुं करीने बोलवा लाग्यो के, "अरे दूत! शुं एने पाछी आपवा माटे हुं अहिं लाव्यो छुं? म्हारी पासेथी जे पुरुष ते सुताराने लइ जवानी इच्छा करे छे, ते पुरुषरूप पतंगीयो निश्चे म्हारी ऊलहलती तरवाररूप दीपकज्योतमां ऊंपलाशे." एम कही अशनिघोषे दूतने गलुं पकमी काढी मूक्यो. पछी दूते रथनूपुर चक्रवाल नगरमां आवी सर्व समाचार कह्या. पछी अमिततेज विद्याधरे विजयराजाने बे विद्याउ आपी. तेमां एक विद्या शस्त्रने निवारनारी अने बीजी बंधन करनारी तेमज छोमावनारी. आ बन्ने विद्यायो विजयराजाए सात सात दिवसे साधी. पछी विद्यासिद्ध थयेलो पोतनपुरपति विजयराजा शत्रुनी साथे युद्ध करवा चाल्यो. ते वखते अमिततेज विद्याधरना रश्मिवेगादि सेंकमो पुत्रो विजयराजानी साथे चाल्यो अने अमिततेज पोते पोताना म्होटा पुत्र सहस्ररश्मी सहित शत्रुनी विद्यानो नाश करनारी महाज्वाला नामनी विद्याने साधवा माटे हिमालय पर्वत ऊपर गयो. त्यां ते मासभक्तथी विद्या साधवा लाग्यो.

हवे अहिं सैन्य सहित विजय राजाने पोताना नगरनी पासे आव्यो जाणी अशनिघोष विद्याधरे सेनासहित पोताना पुत्रोने सामा युद्ध करवा मोकल्या. पछी पोतपोताना अधिपतिनो विजय इच्छती बन्ने सेना परस्पर युद्ध करवा

लागी. आ प्रमाणे अमिततेजना रश्मिवेगादि पुत्रोनी साथे एक मास सुधी युद्ध करीने पछी अशनिघोषना बलवंत एवाय पण पुत्रो हारी गया; तेथी अशनिघोष पोते युद्ध करवा आव्यो. तेणे बलवंत एवाय पण अमिततेजना पुत्रोने नसाडी मूक्या. पछी विजय राजा युद्ध करवा आव्यो. कारण हाथीउनी साथे युद्ध करवा सिंहज समर्थ होय छे. क्रोध युक्त एवा विजय राजाए खड्गनो घा करीने अशनिघोषना बे ककडा करी नाख्या; तेथी बे अशनिघोष थया. तेमना पण बबे ककडा कर्या एटले तो चार अशनिघोष थया. आवी रीते ककडा करतां करतां सेंकडो अशनिघोषो थया एटले तो विजय राजा आकुल व्याकुल थवा लाग्यो एवामां विद्यासिद्ध थयेलो अमिततेज विद्याधर आवी पहोच्यो. अमिततेजने आव्यो जाणी तेना जयथी अशनिघोष मायाने त्यजी दइ नासी जवा लाग्यो. तेने नासी जतो जोइ अमिततेजे पोतानी विद्यामुखी नामनी विद्याने आज्ञा करी के, “ त्हारे ए पापीने दूरथी पण अमारी पासे लइ आववो. ” पछी विद्यामुखी तेनी पाछल चाली; परंतु अशनिघोषतो सीम नामना पर्वत उपर श्री ऋषभस्वामीना मंदिरनी पासे जेमने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं छे अने जेमने सेंकडो देवताउ वंदन करी रह्या छे एवा बलदेव मुनिना शरणे गयो. पछी विद्याये पाछा आवी अमिततेजने सर्व वात निवेदन करी. अमिततेज पण “ तुं सुताराने साथे लइ अमारी पासे आव. ” एम मारीचि नामना दूतने आज्ञा करी पोते विजय राजा सहित सर्व सैन्यने साथे लइ श्री ऋषभदेव प्रभुना मंदिरनी पासे बलदेव मुनिने वंदना करवा गयो. मारीचि दूत पण सुताराने लइ तेमनी पासे गयो. त्यां तेणे अक्षत व्रतवाली देवी विजय राजाने सोंपी. त्यां अशनिघोषे ते बन्ने राजानी क्षमा मागी अने तेमणे पण तेनो आदर कर्यो त्यारे तेउ परस्पर वैर रहीत थया. आ वखते केवलीये भव्यजनोना कानने विषे अमृतनी धारा समान धर्मदेशना आपी के, “ हे भव्यजनो ! रागद्वेषने वश थयेला जीवो बहु अनर्थो करीने पोतानो जन्म निरर्थक गमावी नाखे छे. वली ते रागद्वेषना बंधनने पामेला जीवो मोक्ष मेलववाने शक्तिवंत थता नथी; माटे तमे शत्रुरूप ते रागद्वेषने त्यजी द्यो. ” केवलीनी आवी देशना सांभली प्रबोध पामेला केटलाक माणसोए दीक्षा लीधी अने केटलाके श्रावक धर्म धारण कर्यो. पछी अशनिघोषे केवलीने पूछ्युं के, हे, प्रभु ? में राग

विना सुताराने हरण करी म्हारा घरमां शा माटे राखी ?" केवलीये " हे राजन् ! आ अमिततेजनो जीव पूर्व भवने विषे रत्नपुर नगरमां श्रीषेण नामनो राजा हतो. " इत्यादि तेना सर्व भव कहीने वली कह्युं के, " ते वखते तुं कपिल हतो अने त्हारे सत्यभामा नामनी स्त्री हती. ए सत्यभामा आ भवने विषे सुतारा थइ छे. अने कपिलनो जीव ते तुं केटलाक भव करीने पछी तपस्वीना कुलमां उत्पन्न थयो. त्यां बाल तप करीने मृत्यु पामेलो तुं अशनिघोष थयो छे. हे राजन् ! पूर्व भवना संबंधथी रागरहित एवाय पण तें ते सुतारानुं हरण कर्युं हतुं. पूर्व भवने विषे पण ए सुतारा त्हारा उपर स्नेह रहित हती. ए कारणथी हवणां पण तुं एना उपर मंद रागवालो छे. "

आवी रीते पोतपोताना पूर्वभवो सांभली अमिततेज राजा विगेरे सर्व माणसो हर्ष पामीने केहेवा लाग्या के, "अहो! महात्माने कांइ अजाण्युं नथी! पछी अमिततेजे केवलीने पूछ्युं के, " हे प्रभु ! हुं भव्य छुं के अभव्य ?" केवलीये कह्युं. " हे राजन् ! तुं आजथी नवमे भवे आ भरतक्षेत्रमां पांचमो चक्रवर्ती अने शोलमो तीर्थंकर थइश. तेमज आ विजयराजा त्हारो पुत्र थइने गणधरपद धारण करशे. " केवलीनां आवां वचन सांभली अमिततेज अने विजय ए बन्ने जणाये सम्यक्त्वमूल श्रावकधर्म आदर्यो. वैराग्यवंत थयेला अशनिघोषे पण पोताना पुत्रने राज्य आपी पोते ते केवली पासे चारित्र लीधुं. स्वयंप्रभाये पण बहु स्त्रीयो सहित केवलीनी पासे दीक्षा लीधी. पछी विजय अने अमिततेज बन्ने जणा पोतपोताना परिवार सहित मुनिने वंदना करी पोतपोताना स्थानके गया. त्यां तेउये देवपूजा, गुरुभक्ति अने तप विगेरे धर्म कार्यथी केटलाक दिवस निर्गमन कर्या. पुण्यात्मा एवा अमिततेज विद्याधरे पांचवर्णनां उत्तम रत्नोथी एक जिनमंदिर कराव्युं अने तेनी पासे एक पौषधशाला करावी. एक दिवस ते पौषधशालाने विषे विद्याधरोनी सभामां बेठेलो अमिततेज धर्मकथा करतो हतो एवामां शाश्वता जिनेश्वरना दर्शन करवा माटे आकाशमार्गे थइने जता एवा बे चारण मुनियोए ते नविन जिनमंदिर दीठुं; तेथी तेउ ते जिनप्रतिमाने वंदन करवामाटे नीचे उतर्या. राजा अमिततेजे बन्ने मुनियोने आसन उपर बेसारी भक्तिथी वंदना करी. पछी एक मुनिये कह्युं के, " हे राजन्। जो के तुं पोते धर्म जाणे छे, तोपण अ-

मारे धर्म करवो योग्य छे; माटे कहुं छुं ते तुं सांभल.

आ मनुष्य भव विगेरे सर्वसामग्री पामीने अने भवस्थितिने जाणीने सुखना अर्थी माणसोए निरंतर धर्म आचरवो." मुनिनो आवो धर्मोपदेश सांभली हर्षित थयेला अमिततेजे तेमने नमस्कार कर्यो. पछी बन्ने मुनियो आकाशमार्गे थइने इच्छित स्थानके चाल्या गया अने अमिततेज तथा विजये केटलोक काल धर्मध्यानमां निवृत्त कर्यो. पछी पुण्यात्मा ते बन्ने राजाओ दरवर्षे त्रण यात्रा करवा लाग्या. तेमां बे शाश्वत् तीर्थनी यात्रा अने एक अशाश्वत् तीर्थनी यात्रा. चैत्रमासना शुक्लपक्षमां पहेली शाश्वतीयात्रा अने बीजी आसोमासमां अठाइ नामनी यात्रा. देव अने विद्याधरो चैत्र तथा आसोमासमां नंदीश्वरे यात्रा करता अने बाकीना सर्वे माणसो पोतपोताना स्थानके रही जिनमंदिरमां हर्षथी यात्रा करता. वली ते राजाओ त्रीजी यात्रा सीम पर्वत उपर ज्यां बलदेव मुनिने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं हतुं ते आदीश्वर प्रभुना मंदिरमां करता हता. आ प्रमाणे बहु वर्षो सुधी यात्रा करीने कोइ वखते अमिततेज अने विजय ए बन्ने जणा मेरुपर्वत उपर शाश्वताजिननां दर्शन करवा गया. त्यां तेमणे नंदनवनमां विमल अने महामति नामना बे चारण मुनिने बेठेला दीठा. मुनिने वंदना करी अने तेमनो धर्मोपदेश सांभलीने बन्ने जणाए तेमने पूछ्युं के, "हे भगवन्! अमारुं केटलुं आयुष्य छे?" मुनियोए "तमारुं छवीश दिवसनुं आयुष्य छे." एम कह्युं एटले तेओ बन्ने कहेवा लाग्या के, "हाय! हाय!! विषय रूप मांसने विषे गीधपक्षीनी पेठे लोभी थयेला आपणे आटला वखत सुधी चारित्र लइ शक्या नहि! हवणां अल्प आयुषवाला आपणे शुं करीशुं?" मुनियोए कह्युं. "एमां तमारुं शुं नाश थयुं छे? कारण हवणां तुरत लीधेलुं व्रत पण तमने स्वर्ग तथा मोक्ष आपनारुं थशे."

पछी अमिततेज अने विजय बन्ने जणा पोतपोताने नगरे गया. त्यां तेओए पोतपोताना पुत्रोने राज्य आपी बन्ने जणाये अभिनंदन मुनि पासे चारित्र लीधुं. पछी पादपोपगमन अनशन लइने रहेला ते बन्नेनी मध्ये विजय मुनिने पोताना पिता बलदेवनुं बल सांभर्युं; तेथी तेमणे एवुं नियाणुं कर्युं के, "हुं पण आ तपथी म्हारा पिताना समान बलवंत थाउं." दिव्य-

विना सुताराने हरण करी म्हारा घरमां शा माटे राखी ?" केवलीये "हे राजन् ! आ अमिततेजनो जीव पूर्व जवने विषे रत्नपुर नगरमां श्रीषेण नामनो राजा हतो." इत्यादि तेना सर्व जव कहीने वली कह्युं के, "ते वखते तुं कपिल हतो अने त्हारे सत्यजामा नामनी स्त्री हती. ए सत्यजामा आ जवने विषे सुतारा थइ छे. अने कपिलनो जीव ते तुं केटलाक जव करीने पछी तपस्वीना कुलमां उत्पन्न थयो. त्यां बाल तप करीने मृत्यु पामेलो तुं अशनिघोष थयो छे. हे राजन् ! पूर्व जवना संबंधथी रागरहित एवाय पण तें ते सुतारानुं हरण कर्युं हतुं. पूर्व जवने विषे पण ए सुतारा त्हारा उपर स्नेह रहित हती. ए कारणथी हवणां पण तुं एना उपर मंद रागवालो छे."

आवी रीते पोतपोताना पूर्वजवो सांजली अमिततेज राजा विगेरे सर्वे माणसो हर्ष पामीने केहेवा लाग्या के, "अहो ! महात्माने कांइ अजाण्युं नथी! पछी अमिततेजे केवलीने पूछ्युं के, "हे प्रजु ! हुं जव्य छुं के अजव्य ?" केवलीये कह्युं. "हे राजन् ! तुं आजथी नवमे जवे आ जरतक्षेत्रमां पांचमो चक्रवर्ती अने शोलमो तीर्थंकर थइश. तेमज आ विजयराजा त्हारो पुत्र थइने गणधरपद धारण करशे." केवलीनां आवां वचन सांजली अमिततेज अने विजय ए बन्ने जणाये सम्यक्त्वमूल श्रावकधर्म आदर्यो. वैराग्यवंत थयेला अशनिघोषे पण पोताना पुत्रने राज्य आपी पोते ते केवली पासे चारित्र लीधुं. स्वयंप्रजाये पण बहु स्त्रीयो सहित केवलीनी पासे दीक्षा लीधी. पछी विजय अने अमिततेज बन्ने जणा पोतपोताना परिवार सहित मुनिने वंदना करी पोतपोताना स्थानके गया. त्यां तेउये देवपूजा, गुरुजक्ति अने तप विगेरे धर्म कार्यथी केटलाक दिवस निर्गमन कर्या. पुण्यात्मा एवा अमिततेज विद्याधरे पांचवर्णनां उत्तम रत्नोथी एक जिनमंदिर कराव्युं अने तेनी पासे एक पौषधशाला करावी. एक दिवस ते पौषधशालाने विषे विद्याधरोनी सजामां बेठेलो अमिततेज धर्मकथा करतो हतो एवामां शाश्वता जिनेश्वरना दर्शन करवा माटे आकाशमार्गे थइने जता एवा बे चारण मुनियोए ते नविन जिनमंदिर दीठुं; तेथी तेउ ते जिनप्रतिमाने वंदन करवामाटे नीचे उतर्या. राजा अमिततेजे बन्ने मुनियोने आसन उपर बेसारी जक्तिथी वंदना करी. पछी एक मुनिये कह्युं के, "हे राजन् । जो के तुं पोते धर्म जाणे छे, तोपण अ-

मारे धर्म कहेवो योग्य छे; माटे कहुं छुं ते तुं सांभल.

आ मनुष्य भव विगेरे सर्वसामग्री पामीने अने भवस्थितिने जाणीने सुखना अर्थी माणसोए निरंतर धर्म आचरवो." मुनिनो आवो धर्मोपदेश सांभली हर्षित थयेला अमिततेजे तेमने नमस्कार कर्यो. पछी बन्ने मुनियो आकाशमार्गे थइने इच्छित स्थानके चाल्या गया अने अमिततेजे तथा विजये केटलोक काल धर्मध्यानमां निवृत्त कर्यो. पछी पुण्यात्मा ते बन्ने राजाउ दरवर्षे त्रण यात्रा करवा लाग्या. तेमां बे शाश्वत् तीर्थनी यात्रा अने एक अशाश्वत् तीर्थनी यात्रा. चैत्रमासना शुक्लपक्षमां पहेली शाश्वतीयात्रा अने बीजी आसोमासमां अठाइ नामनी यात्रा. देव अने विद्याधरो चैत्र तथा आसोमासमां नंदीश्वरे यात्रा करता अने बाकीना सर्वे माणसो पोतपोताना स्थानके रही जिनमंदिरमां हर्षथी यात्रा करता. वली ते राजाउ त्रीजी यात्रा सीम पर्वत उपर ज्यां बलदेव मुनिने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं हतुं ते आदीश्वर प्रभुना मंदिरमां करता हता. आ प्रमाणे बहु वर्षो सुधी यात्रा करीने कोइ वखते अमिततेज अने विजय ए बन्ने जणा मेरुपर्वत उपर शाश्वताजिननां दर्शन करवा गया. त्यां तेमणे नंदनवनमां विमल अने महामति नामना बे चारण मुनिने बेठेला दीठा. मुनिने वंदना करी अने तेमनो धर्मोपदेश सांभलीने बन्ने जणाए तेमने पूछ्युं के, "हे भगवन्! अमारुं केटलुं आयुष्य छे?" मुनियोए "तमारुं छवीश दिवसनुं आयुष्य छे." एम कह्युं एटले तेउ बन्ने कहेवा लाग्या के, "हाय! हाय!! विषय रूप मांसने विषे गीधपक्षीनी पेठे लोभी थयेला आपणे आटला वखत सुधी चारित्र लइ शक्या नहि! हवणां अल्प आयुषवाला आपणे शुं करीशुं?" मुनियोए कह्युं. "एमां तमारुं शुं नाश थयुं छे? कारण हवणां तुरत लीधेलुं व्रत पण तमने स्वर्ग तथा मोक्ष आपनारुं थशे."

पछी अमिततेज अने विजय बन्ने जणा पोतपोताने नगरे गया. त्यां तेउए पोतपोताना पुत्रोने राज्य आपी बन्ने जणाये अभिनंदन मुनि पासे साथे चारित्र लीधुं. पछी पादपोपगमन अनशन लइने रहेला ते बन्नेनी मध्ये विजय मुनिने पोताना पिता बलदेवनुं बल सांभर्युं; तेथी तेमणे एवुं नियाणुं कर्युं के, "हुं पण आ तपथी म्हारा पिताना समान बलवंत थाउं." विज-

य मुनिये आ प्रमाणे नियाणुं कर्युं अने अमिततेजे नियाणुं कर्युं नहि. पछी ते बन्ने जणाउ मृत्यु पामी प्राणत देवलोकमां साथीयाना सरखा आकारवाला नंदकावर्त नामना वैमानमां दिव्यचूल अने मणिचूल नामना महा समृद्धिवंत देवता थया. त्यां तेमणे समग्र देवकार्य करी, दिव्य सुख जोगवी तेमज जिनचैत्यवंदन विधि करवापूर्वक नंदीश्वर द्वीपमां यात्रा करीने पोताना सम्यक्त्व रत्नने उज्वल कर्युं. (चोथो तथा पांचमो भव.)

आ जंबूद्वीपना पूर्व महाविदेह क्षेत्रनी मध्यमां रहेली रमणीय नामनी विजयमां शुजगा नामनी नगरी छे. त्यां गांजीर्य विगेरे गुणोथी समुद्रना सरखो महा प्रतापवंत स्तिमितसागर नामनो राजा राज्य करतो हतो. तेने पवित्रशीलथी पृथ्वीना समान पहेली वसुंधरी अने गुणयुक्त एवी बीजी अनुद्धरी एम बे स्त्रीयो हती.

हवे दिव्यचूलनो जीव प्राणत देवलोकथी चवीने वसुंधरीना उदरने विषे अवतर्यो. माताये ते वखते रात्रीये स्वप्नामां गज, पद्म सरोवर, चंद्र अने वृषज जोया. कारण ते चार बलदेवना जन्मने सूचवनारा शुज छे. पछी वसुंधरीये पूर्ण अवसरे सुवर्णना सरखी कांतिवाला पुत्रने जन्म आप्यो. पिताए तेनुं अपराजित एवुं उत्तम नाम पाड्युं. पछी मणिचूलनो जीव पण प्राणत देवलोकथी चवी अनुद्धरीना उदर रूप मानसरोवरने विषे हंसनी पेठे उत्पन्न थयो. ते वखते रात्रीमां अनुद्धरीये स्वप्नाने विषे सिंह, सूर्य, कुंज, समुद्र, लक्ष्मी, रत्ननो राशी अने अग्निज्वाला ए सातने पोताना मुखने विषे प्रवेश करता दीठा. पछी जागी उठेली अनुद्धरीये स्वप्नानी वात पतिने कही एटले स्तिमितसागर राजाए स्वप्न पाठकने बोलावी स्वप्ननी वात कही एटले तेणे कह्युं के, “हे राजन्! आ स्वप्नथी तमने वासुदेव पुत्र थशे अने प्रथमनो पुत्र बलदेव थशे.” पछी राजाए धनादिकथी सत्कार करेलो स्वप्नपाठक पोताने घेर गयो. पछी अनुद्धरीये पूर्ण अवसरे श्यामकांतिवाला पुत्रने जन्म आप्यो. पिताए तेनुं ‘अनंतवीर्य’ नाम पाड्युं. अनुक्रमे कलाउनो अन्यास करता करता युवावस्थामां आवी पहोचेला अने रूप लावण्यथी मनोहर एवा ते बन्ने पुत्रोने स्तिमितसागर राजाए उत्तम कन्याउ साथे परणाव्या.

एक दिवस ते नगरीना उद्यानने विषे उत्तम ज्ञानधारी स्वयंप्रजप्रजु ना-

मना मुनि आव्या हता. ते वखते राजा क्रीडा करवा गयो हतो. त्यां क्रीडा करतां थाकी गयेलो ते उद्यानमां आवी अशोक वृक्षनी नीचे बेठो. एवामां त्यां तेणे निश्चल ध्यानथी बेठेला मुनिने दीठा. पछी शुभभावथी मुनिनी पासे जइ तेमने त्रण प्रदक्षिणा पूर्वक वंदना करीने ते योग्य स्थानके बेठो एटले मुनिये धर्म देशना आपी के, "कषाय (क्रोध, मान, माया, लोभ) रूप वृक्षोने दुष्ट ध्यानरूप फुल थइने पछी आ लोकमां पापकर्म रूप फल अने परलोकमां दुर्गति रूप फल थाय छे. संसारथी उद्वेग पामेला चित्तवाला अने मोक्षसुखनी इच्छा करनारा माणसोए अनर्थना कारणरूप ते कषायोने त्यजी देवा." मुनिनो आवो पवित्र धर्मोपदेश सांभली वैराग्यवंत थयेला स्तिमितसागर राजाए अनंतवीर्यने राज्य आपी अने अपराजितने युवराज पद्वी आपीने पोते स्वयंप्रभप्रभु मुनि पासे दीक्षा लीधी. पछी अंत अवसरे मनथी व्रतनी कांइक विराधना करी मृत्यु पामेलो ते अधोलोकमां चमरेंद्र थयो.

हवे समृद्धिवंत एवा अपराजित अने अनंतवीर्यने कोइ विद्याधरनी साथे प्रीति थइ; तेथी ते विद्याधरे तेमने आकाशगमननी विद्या शीखवी अने ते साधवाना उपाय तथा सामग्री बतावी. आ अनंतवीर्य राजाने त्यां गीत अने नृत्यमां चतुर एवी बर्बरी अने चिलाती नामनी वेश्याओ हती. एक दिवस ते बन्ने स्त्रीयोनां अद्भूत गीत अने नृत्यना रंगमां अनंतवीर्य अने अपराजित बन्ने जण व्याप्त थइ रह्या हता एवामां पोतानी इच्छा प्रमाणे विचरनारा, ब्रह्मचारी अने क्लेश कराववो जेमने प्रीय छे एवा पुण्यात्मा नारद ऋषि आव्या. पण ते बन्नेमांथी कोइये सामा जइ तेमनो सत्कार कर्यो नहि. तेथी नारद क्रोध पामी विचार करवा लाग्या के, "आ बन्ने जण दासीना नाटकने विषे मोह पामेला छे, माटे तेमणे म्हारो सत्कार कर्यो नथी. तो हवे म्हारे आ कलाना पात्ररूप बन्ने वेश्याओने कोइ बलवंत पुरुष पासे हरण कराववी." आ प्रमाणे विचार करी नारद त्यांथी प्रतिवासुदेव एवा विद्याधरना अधिपति दमितारि राजा पासे गया. त्यां राजाए तेमने आदर सत्कारथी आसन उपर बेसारीने पछी पूछ्युं के, "हे ऋषि! तमे पृथ्वी उपर कांइ आश्चर्य दीठुं होय तो कहो?" नारदे कह्युं. "हे राजन्! सांभल. हुं शुभगा नगरीना राजा अनंतवीर्यनी पासे गयो हतो. में त्यां विश्वने आश्चर्य करनारी बर्बरी अने चिलाती नामनी तेनी

बे उत्तम नर्तकीयोने जोइ. हे राजन् ! ते बन्ने नर्तकीयो विना आ त्हारी उग्र विद्या अथवा विस्तारवंत राज्यथी पण शुं ?" आ प्रमाणे कहीने नारद त्यांथी चाल्या गया.

पछी दमितारि राजाए दूत मोकल्यो; तेथी ते पोताना स्वामीना बलथी गर्वधारी दूत अनंतवीर्य राजानी पासे आवीने कहेवा लाग्यो के, "हे राजन् ! रत्न तो राजानी पासे होय छे, माटे आ तमारी बन्ने नर्तकीयो दमितारि महाराजाने अर्पण करो." दूतनां आवां वचन सांभली अनंतवीर्य अने अपराजित बन्ने जणाए कह्युं. "हे दूत ! ए योग्य छे; परंतु तुं त्हारा राजाना कहेवाथी बोले छे. पोतानी मरजीथी बोलतो नथी. तो हवे अमे विचार करीने ते प्रमाणे करिशुं. तुं त्हारा राजा पासे जा." दूतने आ प्रमाणे कहीने रजा आप्या पछी ते बन्ने भाइयो विचार करवा लाग्या के, "ए दमितारि राजा पोतानी विद्याना बलथी आपणो पराभव करशे, माटे आपणे पण आपणा चित्तमां रहेली विद्याने साधीने तेना गर्वनो नाश करीये." आवी रीते ते बन्ने बंधुउ विचार करता हता एवामां तेमणे पूर्व जन्मे साधेली तेज विद्या पोतानी मेले त्यां आवी अने "तमे विद्या सिद्ध थया छो." एम कहीने तेणे तेमना शरीरने विषे निवास कर्यो; तेथी ते बन्ने भाइयो विद्याना प्रभावथी म्होटा बलवंत विद्याधर थया. पछी तेमणे गंध, पुष्प विगेरेथी विद्यादेवीनुं पूजन कर्युं. आ वखते फरीथी दमितारि राजानो दूत त्यां आवी तेमने कहेवा लाग्यो के, "अरे ! शुं तमे दमितारि महाराजाना हाथथी यमराजाना परुणा थवानी इच्छा करो छो ? के जे तमे आज सुधी बन्ने नर्तकीयोने मोकली नहि ?" पछी बन्ने भाइयोए कह्युं के, "निश्चे स्वामीनुं हीत करवुं जोइये." पछी बंने जणा दमितारि राजानी कनकश्री पुत्रीना लोभथी उत्तम नर्तकीनुं रूप धारण करी दमितारि राजा पासे गया. त्यां दमितारि राजाए तेमनुं कलाकौशल्य जोइने कह्युं के, "तमारे म्हारी पुत्री कनकश्रीने विनोद कराववो." राजानो आवो बीलाडीने दुध भलाववा जेवो हुकम सांभली अपराजित अने अनंतवीर्य बंन्ने भाइयो बहु हर्ष पाम्या. पछी तेमणे अंतःपुरमां जइ कनकश्रीनुं स्वरूप जोइने विचार्युं के, "निश्चय ब्रह्माये जगत्‌नी उत्तम वस्तुनो सार लइने आ कन्याने बनावी छे." आम विचारीने बन्ने जणा हास्यथी मनोहर अने देशी भाषायुक्त मधुर प्रिय वच-

नथी तेनी साथे वार्ताविनोद करवा लाग्या एटले कनकश्रीये अनंतवीर्यना गुण अने रूप विगेरे अपराजितने पूछ्युं. अपराजिते कह्युं. "एना रूप, चातुर्य अने गांभीर्यादि गुणो बहु जीभोथी पण कही शकाय तेम नथी. आ त्रण लोकमां एना जेवुं रूपवान् अने गुणवान् कोइ नथी. भाग्य विना एनुं नाम सांभळवुं दुर्लभ छे तो पछी रूप अने लावण्यनुं दर्शन तो क्यांथीज थाय?" आवा अनंतवीर्यना गुणो सांभळी कनकश्री अत्यंत रोमांचयुक्त थइ गइ; तेथी अपराजिते तेने फरी कह्युं के, "हे राजकन्या! जो त्हारे एनुं स्वरूप जोवुं होय तो कहे, ते हमणांज बतावुं." कन्याये कह्युं. "ते स्वरूप एक वखत बतावो तो म्हारो जन्म सफळ थाय." पछी अपराजित अने अनंतवीर्य बन्ने जणाये पोतानुं स्वरूप प्रगट कर्युं. ते जोइ हर्षित थयेली कनकश्रीये कह्युं के, "निश्चय हुं तमारी आज्ञा प्रमाणे चालनारी दासी छुं." तेनां आवां वचन सांभळी अनंतवीर्यें कह्युं. "जो एम छे तो चाल, अमारी नगरीये जइये." कनकश्रीये कह्युं. "आपनुं कहेवुं सत्य छे; परंतु म्हारो पिता बहु भयंकर छे, तेथी ते तमारो नाश करशे." बन्ने भाइयोए हसीने कह्युं. तेनो त्हारे जरा पण भय न राखवो. ए अमारी सामो एक क्षणमात्र रही शकवानो नथी." तेओनां आवां वचन सांभळी प्रेमपाशथी बंधायली कनकश्री रूप अने सौंदर्यथी तेमना उपर आशक्त थइ छती तेमनी साथे चाली निकळी. पछी विद्याथी तैयार करेला वैमानमां बेसीने आकाश मार्गे उभा रहेला अनंतवीर्यें सभामां बेठेला दमितारि राजाने कह्युं के, "अरे सामंत, मंत्री सेनापति विगेरे पुरुषो! सांभळो. हुं आ तमारा राजानी पुत्रीनुं हरण करीने जाउं छुं. तमे पाछळथी एम कहेशो के, अमने कह्या विना चोरी करीने चाल्यो गयो, माटे कहुं छुं." अनंतवीर्यनां आवां वचन सांभळी कोपथी विकराळ देखाता दमितारिये कह्युं के, "अरे! ए दुष्टने झट पकडो! पकडो!!" पछी सर्वे विद्याधरो हुंकार शब्द करता "अरे दुष्ट! तुं क्यां जवानो छे?" एम कही हथीयार लइ, सिंहनी पाछळ शियाळनी पेठे अनंतवीर्यनी पाछळ दोड्या. पण ते सर्वेने अनंतवीर्यें पवन जेम पांदडांने उराडी मूके तेम नसाडी मूक्या. पछी कल्पांतकाले उछळता समुद्रनी पेठे चालती सेनाथी गर्वधारी तेम हाथी, घोडा अने पायदलना म्होटा शब्दथी आकाशने गजावी मूकतो दमितारि राजा पोते चाल्यो.

तेने आवतो जोइ जय पामेली कनकश्रीने शांति करी अनतवीर्ये शत्रुना सैन्यनो नाश करवा माटे पोतानुं सैन्य एकठुं कर्युं. पछी बन्ने सेनानुं युद्ध चाल्युं तेमां पोतानी सेनाने शत्रुओए नसाडी मूकी जोइने जेटलामां अनंतवीर्य कांइक व्याकुल थवा लाग्यो तेटलामां वनमाला, गदा खड्ग, मणि शंख, धनुष्य अने प्रतिवासुदेव पासेथी आववानुं चक्र ए सात रत्न प्राप्त थयां. पछी पांचजन्य शंख लइ अनंतवीर्ये एवो जयंकर शब्द कर्यो के, जेथी शत्रुनुं सैन्य ते सांजली मूर्छा पामी गयुं अने पोतानुं सैन्य उत्साहवंत थयुं; तेथी दमितारि राजा पोते युद्ध करवा आव्यो. तेने जोइ शस्त्रथी जरपूर रथमां वेसी अनंतवीर्य अने अपराजित बन्ने जणा तैयार थया. ते वखते रणजूमीने विषे लोहीनी नदीमां सुजटोना जूदा जूदा शरीरो नृत्य करवा लाग्या. दमितारि राजाना सर्व शस्त्रो अनंतवीर्ये कापी नाख्यां एटले तेणे देदीप्यमान एवुं चक्र अनंतवीर्य उपर मूक्युं. परंतु ते चक्र तो अनंतवीर्यना हृदयनो स्पर्श करीने तेनाज हाथ उपर बेठुं.पछी अनंतवीर्ये कह्युं के, “हे दमितारि! तुं राज्यलक्ष्मी जोगव. मृत्यु न पाम. तुं कनकश्रीनो पिता छे तो हुं तने जीवतो मूकुं छुं, माटे जा.” दमितारिये कह्युं. “जेवी रीते में मूकेलुं चक्र निष्फल थयुं तेवी रीते त्हाराथी मूकायलुं ते चक्र पण निष्फल थशे. एम हुं धारुं छुं.” एम कही तरवार लइ पोतानी सामे दोडता एवा ते दमितारिनुं मस्तक अनंतवीर्ये कापी नाख्युं. आ वखते आकाशमां उजा रहेला व्यंतरोए हर्षथी स्तुति करवापूर्वक अनंतवीर्यना मस्तक उपर पुष्पवृष्टि करी अने कह्युं के, “बलवंत एवो आ अनंतवीर्य आ विजयनो अर्ध चक्रवर्ती वासुदेव छे अने आ बीजो छे ते बलदेव छे. ते बन्ने दीर्घकाल सुधी विजयवंता वर्तो.” पछी विद्याधर सुजटो अनंतवीर्यनो आश्रय करता छता तेमने प्रणाम करवा लाग्या. अनंतवीर्ये पण ते सर्वेनो आदरसत्कार कर्यो. पछी अपराजित अने अनंतवीर्य बन्ने जणा विद्याधरो सहित मनोहर वैमानमां बेसीने पोतानी नगरी तरफ चाल्या. रस्तामां कनकाचल पर्वत आव्यो तेने जोइ विद्याधरोए तेमने कह्युं के, “हे महाराज! आपणे आ पर्वत उपर रहेला जिनेश्वरोना चैत्योने वंदन करता जइये.” पछी वैमानमांथी नीचे उतरी जिनचैत्योने वंदन करतुं एटलामां तेओए त्यां जेमने एक वर्षना उपवासना तपथी केवल ज्ञान उत्पन्न थयुं हतुं एवा कीर्तिधर ना-

मना मुनिने जोइ हर्षथी तेमने वंदना करी. पछी हर्षथी रोमांचित शरीरवाला ते बन्ने ज्नाइयो मुनिनी सन्मुख बेसीने पवित्र एवी धर्म देशना सांज्नलवा लाग्या. पछी अवसरे कनकश्रीये मुनिने पूछ्युं के, "म्हारे बंधुउनो वियोग अने पितानुं मृत्यु शा कारणथी थयुं?" कीर्तिधर मुनिये कह्युं. "हे ज्नडे! तेनुं कारण सांज्नल."

धातकीखंमना ज्नरतक्षेत्रने विषे धन धान्यथी ज्नरपूर एवुं शंखपुर नामनुं नगर छे. त्यां दरिडी एवी श्रीदत्ता नामे स्त्री रहेती हती. कोइ वखते ते स्त्री चालती चालती श्रीपर्वत उपर गइ. त्यां तेणे सत्ययश नामना साधुने जोइ वंदना करीने तेमनो धर्मोपदेश सांज्नली पोते गीतार्थ थइने श्रीधर्मचक्रवाल नामनुं तप कर्युं. ते तपना आरंज्ने अने अंते अठम कराय छे अने मध्ये सामत्री चोथ कराय छे. शक्ति प्रमाणे देव गुरुनी ज्नक्ति करवी. श्रीदत्ताये ए प्रमाणे सर्व कर्युं एटले पारणाने दिवसे सर्वे माणसोए एकठा थइ ते श्रीदत्ताने मनोहर ज्नोजन वस्त्रादि आप्यां. वली ते जेना घरने विषे काम करती हती तेउए तेने वधारे ज्नोजन वस्त्रादि आप्यां; तेथी ते कांइक धनवाली थइ. एक दिवस तेना घरनी ज्नींत पमी गइ तेमांथी बहु धन निकल्युं एटले ते श्रीदत्ताये करेला व्रतनुं उद्यापन करवानो आरंज्न कस्यो. तेमज जिनमंदिरोमां विशेष पूजा रचावी. त्यार पछी तेणे साधर्मीवात्सल्य कर्युं. ते वखते तेना घरने विषे एक मासना उपवासी सुव्रत नामना मुनि गोचरी माटे आव्या. श्रीदत्ताये तेमने बहु हर्षथी शुद्ध आहारवमे प्रतिलाज्या अने धर्मना फलने जोइ हर्षित थयेली तेणे धर्म पूछ्यो एटले मुनिये कह्युं के, "अत्यारे धर्मोपदेशनो अवसर नथी. जो धर्म सांज्नलवो होय तो अवसरे उपाश्रये आवीने सांज्नलवो." एम कही मुनिये उपाश्रये जइ पारणुं कर्युं. पछी अवसरे श्रीदत्ता विगेरे नगरवासी लोकोए उपाश्रये आवी धर्म सांज्नल्यो, तेथी सरल मनवाली श्रीदत्ताये समकीतमूल धर्म धारण कस्यो. पछी मुनि विहार करी गया अने श्रीदत्ता पण घेर जइने पोते अंगीकार करेला धर्मने विधि प्रमाणे पालवा लागी.

(श्रीकीर्तिधरमुनि कनकश्रीने कहे छे के) हे राजकन्या! एक दिवस तेणे कर्मना वशपणाथी धर्मने विषे मनमां डुगंछा करी के, "हुं आ जिनधर्मने उत्तम प्रकारे पालुं छुं, पण तेनुं फल मने थशे के नहि? आवी रीते धर्मनी डु-

गंछा करीने आयुष्यनो क्षय थये मृत्यु पामेली ते ज्यां उत्पन्न थइ ते हुं तने कहुं छुं. आ विजयमां वैताढ्य पर्वत उपर सुरमंदिर नामना नगरने विषे कनकपूज्य नामनो राजा हतो. तेने वायुवेगा नामनी स्त्री अने कीर्त्तिधर नामनो हुं पोतेज पुत्र हतो. म्हारे अनिलवेगा नामनी स्त्री हती. एक दिवस ते अनिलवेगाये गज, कुंभ अने वृषभना स्वप्नथी सूचवेला एक पुत्रने जन्म आप्यो के, जे प्रतिवासुदेव एवो दमितारि राजा पोतेज म्हारा पुत्ररूपे हतो. पछी युवावस्थामां आवेला ते पुत्रने बहु कन्यायो परणावीने राज्यासन उपर बेसारी में चारित्र लीधुं. ए दमितारि राजानी मदिरा नामनी स्त्रीना उदरथी उत्पन्न थयेली कनकश्री नामनी पुत्री ते तुं पोते छे. तें पूर्वभवने विषे धर्मनिंदा करी तेथीज तने आ बंधुवियोगादि दुःख प्राप्त थयुं छे."

आ प्रमाणे कीर्तिधर मुनिरूप पोताना [1]पितामहना मुखथी पोतानो पूर्वभव सांभली कनकश्री अत्यंत वैराग्यवासीत थइ; तेथी तेणे हाथ जोमी अनंतवीर्य तथा अपराजितने कह्युं के, "जो तमे मने आज्ञा आपो तो हुं दीक्षा लउं." पछी ते बन्ने जणाए कह्युं के, "एक वखत आपणे नगरीये जइये. त्यां स्वयंप्रभप्रभुनी पासे तुं चारित्र धारण करजे." पछी ते कीर्तिधर मुनिने नमस्कार करी अने वैमानमां बेसी अपराजित अने अनंतवीर्य बन्ने जणा कनकश्री सहित पोतानी नगरीये आव्या.

हवे कोइ वखते देव, असुर अने मनुष्योए पूजेला श्री स्वयंप्रभप्रभु ते सुभगा नगरीने विषे समवसर्या एटले कनकश्री सहित अनंतवीर्य अने अपराजित बन्ने जणा त्यां जइ प्रभुने वंदना करीने धर्म सांभलवा लाग्या. कनकश्री पहेलां पण विरक्त बुद्धिवाली हती, ते हवे आ जिनेश्वरनी वाणी सांभली विशेषे वैराग्यवासीत थइ, तेथी अपराजिते अने अनंतवीर्ये करेला महोत्सव पूर्वक तेणे प्रभु पासे दीक्षा लइने एकावल्यादि म्होटां तप कर्यां. अनुक्रमे शुक्लध्यानरूप अग्निथी चार घातीकर्मनो क्षय करीने केवलज्ञान मेलवी ते कनकश्री मोक्षपद पामी.

हवे अपराजितनी विरता नामनी स्त्रीने सुमति नामनी पुत्री हती. जीवाजीवादिक तत्त्वनी जाण अने तपना कार्यमां उद्यमवती एवी ते पुत्री बाल

[1] बापना बाप.

अवस्थाथीज जिनशासनने विषे कुशल हती. एक दिवस तेना घरने विषे शांत, क्षमावंत अने नम्र एवा कोइ वरदत्त नामना मुनि गोचरीने अर्थे आव्या. आ वखते पोताना पारणाने माटे पीरसेला थालमां सुमति जोजन करवा बेसती हती एवामां ते मुनिने जोइ तेणे तेज थालमां पीरसेली उत्तम रसवतीथी साधुने प्रतिलाभ्या, तेथी मुनिना प्रजावने लीधे सुमतिनी जक्तिथी प्रसन्न थयेला देवताए तुरत पंच दिव्य प्रगट कर्यां. पछी साधु पोताने स्थाने गया अने पुत्रीनो आवो प्रजाव जोइ अपराजित अने अनंतवीर्य विचार करवा लाग्या के, "निश्चे आ पुत्री पुण्यवंती छे." पछी तेमणे प्रधाननी साथे विचार करीने म्होटा उत्साहथी पुत्रीनो मनोहर स्वयंवर मंरूप रच्यो. पछी उत्तम शृंगार धारण करी अने हाथमां वरमाला लइ राजकुमारी जेटलामां सखीयोना परिवार सहित स्वयंवर मंरूपमां आवी तेटलामां संकेतने लीधे पूर्वजवनी व्हेन देवीये आवीने तेने व्रत लेवानो प्रतिबोध आप्यो. पछी स्वयंवरमां आवेला सर्वे राजाउनी अने अपराजित तथा अनंतवीर्यनी रजा लइ पांचसे कन्याउ सहित सुमति राजकन्या सुव्रता साध्वी पासे चारित्र लइ निर्मल तप करवा लागी. अनुक्रमे क्षपकश्रेणी उपर चढी केवलज्ञान मेलवनारी ते साध्वी अनेक जव्यजीवोने प्रतिबोध करी मोक्ष पामी. अनंतवीर्य पण पोतानुं चोराशी लाख पूर्वनुं आयुष्य पूर्ण करी मृत्यु पामीने पहेली नरकने विषे बेतालीश हजार वर्षना आयुष्यवालो नारकी थयो. पछी अपराजित पण बंधुना वियोगथी बहु शोक करवा लाग्यो एटले नीति अने धर्मना जाण एवा मंत्रीये तेने कह्युं के, "हे राजन्! ज्यारे तमारा सरखा धीर पुरुषो मोह पीशाचथी व्याकुल थाय त्यारे पछी बीजा पुरुषो शी रीते धीरपणुं धारण करी सकशे?" मंत्रीनां आवां वचन सांजली अपराजित कांइक शोक रहित थयो. पछी ते यशोधर गणधर पासे चारित्र लइ बहु प्रकारनां तप करी मृत्यु पामीने अच्युत देवलोकने विषे इंद्र थयो.

हवे आ जंबूद्वीपना जरतक्षेत्रने विषे वैताढ्य पर्वतनी दक्षिण श्रेणी उपर गगनवल्लज नामना नगरने विषे मेघवाहन नामनो विद्याधर राजा राज्य करतो हतो. तेने अनेक प्रकारना गुणने धारण करनारी अने उत्तम रूपवाली मेघमालिनी नामनी स्त्री हती. अनंतवीर्यनो जीव नरकमांथी निक-

ली तेमनो मेघनाद नामनो पुत्र थयो त्यारे तेने बहु कन्या परणाववा पूर्वक राज्याभिषेक करी मेघवाहन राजाए चारित्र लीधुं. पछी बन्ने श्रेणीना अधिपति मेघनाद राजाए पोताना पुत्रोने एकसोने दश देशो वेंहेची आप्या. कोइ दिवसे ते मेरुपर्वत उपर शाश्वता जिनेश्वरोने अने प्रज्ञप्ति विद्याने भक्तिपूर्वक वंदना करतो हतो एवामां त्यां अच्युत देवलोकना सर्वे देवता आव्या. तेमां तेनो पूर्वभवनो बंधु अच्युतेंद्र पण आव्यो हतो. अच्युतेंद्रे पोताना पूर्वभवना बंधु मेघनादने जोइ स्नेहथी तेने पूर्वभवनुं स्वरूप धर्म सहित संभलाव्युं; तेथी ते मेघनाद हर्षित थयो छतो अनेक विद्याधरो सहित पोताना नगर प्रत्ये गयो. त्यां ते अमरसूरि गुरु पासे चारित्र लइ नंदन पर्वत उपर जइ तप करवा लाग्यो. आ वखते हयग्रीव राजाना पुत्रनो जीव के जे, असुरकुमारपणे उत्पन्न थयो हतो तेणे ते एक रात्रीये कायोत्सर्ग करी रहेला मेघनाद मुनिने बहु उपसर्गो कर्या. पछी कायोत्सर्गने पारी पृथ्वी उपर विहार करता ते मुनिये अनुक्रमे समाधिथी कालधर्म पामी अच्युत देवलोकने विषे इंद्रपद मेलव्युं. कषायनो नाश करनारी कथाउथी विचित्र एवो श्री शांतिनाथनो छठो अने सातमो भव श्री चतुर्विध संघनुं कल्याण करो. (छठो तथा सातमो भव).

हवे जंबूद्वीपना महाविदेहक्षेत्रनी मध्यमां सीता नदीने कांठे मंगलावती नामनी विजयमां तीर्थंकरादि पुरुषरत्नने जन्म आपनारी तेमज सिद्धांतमां वखणायली रत्नसंचया नामनी शाश्वती नगरी छे. त्यां दुष्ट नीतिने दूर करवाथी प्रजानुं कुशल करनारो क्षेमंकर तीर्थंकर नामे राजा राज्य करतो हतो. ते राजाने रत्नमाला नामनी स्त्री हती. अपराजितनो जीव बावीश सागरोपम सुधी अच्युत देवलोकमां सुख भोगवीने पछी त्यांथी चवी रत्नमालाना उदरने विषे अवतर्यो. ते वखते रात्रीये चक्रवर्त्तीना जन्मने सूचवनारा हाथी विगेरे चौद स्वप्नो रत्नमालाये दीठा. अनुक्रमे तेणे पूर्ण समये पुत्रने जन्म आप्यो एटले पिताये महोत्सवपूर्वक तेनुं वज्रायुध नाम पाड्युं. पछी कलाउनो अभ्यास करतो ते यौवनावस्था पाम्यो एटले पिताए तेने लक्ष्मीवती नामनी राजकन्या परणावी. पछी अनंतवीर्यनो जीव पण अच्युत देवलोकथी चवी तेमना पुत्रपणे उत्पन्न थयो. पिताए तेनुं सहस्रायुध नाम पाड्युं. ते ज्यारे युवावस्था पाम्यो त्यारे पिताए तेने कनकश्री नामनी राजक-

न्या साथे परणाव्यो. प्रियानी साथे विषयसुख जोगवतां तेने पण शतवल नामनो पुत्र थयो.

एक दिवस क्षेमंकर राजा पोताना पुत्र पौत्रादि परिवार सहित सन्ना-मां बेठो हतो, एवामां त्यां ईशान देवलोकनो चित्रचूल नामनो कोइ मिथ्यात्वी देवता आव्यो, तेने वज्रायुधकुमारे हेतु युक्तिथी जीतीने प्रतिबोध पमाड्यो; तेथी ते देवताए सम्यक्त्व धारण कर्युं अने " आ वज्रायुध शोलमो तीर्थंकर अने पांचमो चक्रवर्ती थशे." एम कहीने ते पोताने स्थानके गयो.

कोइ वखते वसंत समयमां सुरा नामनी दासीये कामदेवना सरखा रूपवंत वज्रायुध कुमारने पुष्पोनी गाबडी अर्पण करीने विनंती करी के, "हे देव! लक्ष्मीवती राणी आपनी साथे सूरिनिपात उद्यानमां क्रीडा करवानी इच्छा करे छे." पछी वज्रायुध कुमार पोतानी सातसें राणीयो सहित मुख्य पटराणी लक्ष्मीवतीने साथे लइ ते उद्यानमां गयो. त्यां सौ नाना प्रकारनी क्रीडा करवा लाग्या एटले वज्रायुध कुमार लक्ष्मीवती सहित उत्तम वाव्य पासे गयो. त्यां ते वाव्यने कांठे क्रीडा करीने केटलीक स्त्रीयो सहित जलक्रीडा करवा माटे वाव्यमां पड्यो. आ वखते दमितारि प्रतिवासुदेवनो जीव केटलाक नव नमी अने [1]छेवटना नवे कांइ अनुष्टान करी विद्युद्दंष्ट्र नामनो देवता थयो हतो; तेणे जलक्रीडा करता एवा वज्रायुध कुमारने जोइ पूर्वजवना द्वेषथी तेनो नाश करवामाटे म्होटो पर्वत उपाडी वाव्य उपर पडतो मूक्यो. वली ते दुष्टे निचे वज्रायुधने नागपाशथी बांधी लीधो हतो; परंतु महा बलवंत अने बे हजार यक्षोये आश्रय करायेला वज्रायुधे नागपाशने तोडी नाखी उंचेथीज पर्वतने जेदी नाख्यो. पछी वाव्यमांथी बहार निकली अखंडित शरीरवालो कुमार सर्व स्त्रीयो सहित क्रीडा करीने नगरमां गयो.

हवे स्थितिने जाणनारा लोकांतिक देवताए "हे प्रजु ! तीर्थ प्रवर्तावो." एम विनंती करी एटले क्षेमंकर राजाए वज्रायुधने राज्य सोंपी पोते वार्षिक दान आपीने चारित्र लीधुं. पछी अनुक्रमे घातिकर्मनो क्षय करी जेटलामां तेमणे केवल ज्ञान मेलव्युं तेटलामां वज्रायुधनी शस्त्रशालामां चक्ररत्न उत्पन्न थयुं. प्रथम केवल महोत्सव करीने पछी चक्ररत्ननो उत्सव करवापूर्वक वज्रा-

---

[1] विद्युद्दंष्ट्र भवना पेहेला भवे

युध मंगलावती विजयने साधीने पोते चक्रवर्तीना भोगो भोगववा लाग्यो अने सहस्त्रायुधने युवराजपद्वी उपर स्थाप्यो.

एक दिवस वज्रायुध चक्री बत्रीश हजार राजा अने मत्स महामत्स विगेरे परिवारथी विंटलायो छतो सभामां सुवर्णना सिंहासन उपर बेठो हतो एवामां भयथी कंपता शरीरवालो कोइ एक विद्याधर आकाशमांथी नीचे उतरी तेना शरणे आव्यो. ते विद्याधरनी पाछल कोइ रूपवंती तेमज हाथमां खड्ग धारण करी रहेली विद्याधरी अने गदाधारी एवो कोइ विद्याधर एम बे जण आवी पहोच्या. पछी ते गदाधारी विद्याधरे सर्व सभा सांभलतां छतां चक्रवर्तीने कह्युं के, " हे महाराज? ए पापीनो अपराध सांभलो.

हुं सुकच्छ विजयनी शुक्र नगरीना शुक्रदत्त राजानो पवनवेग नामनो पुत्र छुं. म्हारे सुकांता नामनी स्त्री छे. तेना उदरथी उत्पन्न थयेली आ शांतिमति नामनी म्हारी उत्तम रूपवंती पुत्री छे. एक दिवस में तेने प्रज्ञप्ति विद्या आपी; तेथी ते, ते विद्याने साधवामाटे मणिसागर नामना पर्वत उपर गइ. त्यां ते विद्या साधती एवी म्हारी पुत्रीने आ पापीये हरण करी. एवामां तेने भक्तिथी प्रसन्न थयेली प्रज्ञप्ति विद्या सिद्ध थइ; तेथी ते आ पापी भय पामतो छतो तमारी शरणे आव्यो छे. हुं पण त्यां म्हारी पुत्रीने न जोवाथी तेनी पाछल आव्यो छुं; माटे हे राजन्! म्हारी पुत्रीना शीलने खंडन करवानी इच्छावाला ते दुष्टने त्यजी द्यो के, जेथी हुं तेने आ गदाना प्रहारथी मारी नाखुं."

पछी अवधिज्ञानथी तेओना पूर्वभवने जाणी तेमना प्रतिबोधने अर्थे वज्रायुध चक्रवर्तीये कह्युं के, " हे पवनवेग ? आ विद्याधरे त्हारी पुत्रीनुं हरण कांइ कारणथी कर्युं छे ते हुं तने कहुं छुं." पछी सर्वे सभासदो पोताना राजानुं ज्ञान महात्म्य जाणवाने सावधान थया एटले वज्रायुधे कह्युं.

जंबूद्वीपना आ पवित्र भरतक्षेत्रने विषे विंध्यपुर नामना नगरमां विंध्यदत्त नामनो राजा राज्य करतो हतो. तेने सुलक्षणा नामनी स्त्री हती. ते स्त्रीना उदरथी उत्पन्न थयेलो ते राजाने नलिनकेतु नामनो प्रसिद्ध पुत्र हतो. वली ते नगरमां धर्ममित्र नामना सार्थपतिने श्रीदत्ता नामनी स्त्रीथी उत्पन्न थयेलो दत्त नामनो पुत्र हतो. ते दत्तने रतिना सरखी रूपवाली अने चंद्रज्योत्स्नाना सरखी कांतीवाली प्रभंकरा नामनी स्त्री

हती. कोइ वखते वसंत समयमां सार्थपति पुत्र दत्त पोतानी प्रज्ञंकरा प्रियानी साथे बगीचामां क्रीमा करतो हतो. एवामां नलिनकेतु ते सुंदर रूपवाली स्त्रीने जोइ कामदेवथी मोह पाम्यो; तेथी तेणे राज्य अने यौवनना गर्वथी पोताना कुलशीलने लागता कलंकने नहि गणकारता ते स्त्रीनुं हरण कर्युं. पछी ते राजकुमार प्रज्ञंकराने घरमां राखी तेनी साथे विषयसुख न्नोगववा लाग्यो अने दत्त ते स्त्रीना वियोगथी पीमा पामवा लाग्यो. पछी कोइ वखते दत्त तेज बगीचामां गयो तो त्यां तेणे जेमने तेज वखते केवलज्ञान नत्पन्न थवाने लीधे देवताउ जेमनो केवल महोत्सव करता हता एवा कोइ मुनिने दीठा. दत्त ते मुनिने वंदना करीने तेमनी आगल बेठो अने तेमनी धर्मदेशनाथी प्रतिबोध पाम्यो. पछी ते दानादि धर्मकार्य करीने मृत्यु पाम्यो अने वैताढ्य पर्वत नपर सुकछ विजयने विषे विद्याधरपति महेंद्रविक्रमना अजितसेन नामना पुत्रपणे नत्पन्न थयो. त्यां तेने कमला नामनी स्त्री हती.

हवे नलिनकेतु पितानुं राज्य पामी प्रज्ञंकरानी साथे गृहस्थावास न्नोगवतो हतो. एवामां एक दिवस ते पोताना महेलना सातमे माले गयो तो त्यां तेणे आकाशमां पांचवर्णनां वादलां दीठां. वली तेना जोतां जोतामां ते वादलांउ प्रचंम वेगथी खंम खंम थइ अदृश्य थइ गयां. ते जोइ जेने संवेग प्राप्त थयो छे एवो ते नलिनकेतु विचार करवा लाग्यो के, "अहो! आ वादलानी पेठे संसारनी इत्यादि सर्व वस्तु अनित्य देखाय छे. वली अज्ञानथी मूढ एवा में क्षणमात्रना सुखने माटे परस्त्रीनुं हरण करी बहु पाप बांध्युं छे, माटे चारित्र लइ तप नियम रूप जलथी पापने धोइ नांखीने हुं निर्मल थाउं." आ प्रमाणे विचार करी तेणे पुत्रने राज्य सोंपीने क्षेमंकर प्रन्नुनी पासे चारित्र लीधुं. अनुक्रमे शुद्ध चारित्र पालवाथी केवलज्ञान मेलवीने कर्मरूपा मेलने धोइ नाखी ते पवित्र बुद्धिवालो नलिनकेतु मोक्ष पाम्यो. प्रज्ञंकरा पण सुव्रता नामनी साध्वी पासे चांद्रायण नामनुं पवित्र तप करी अने अनुक्रमे आयुष्यनो क्षय थये मृत्यु पामीने आ त्हारी शांतिमती नामनी पुत्री थइ छे. आ अजितसेन विद्याधर त्हारी पुत्रीनो पूर्व न्नवनो पति छे. पूर्व न्नवना स्नेहथी मोह पामेलो ते आ त्हारी पुत्रीने विद्या साधती जोइ आकाशमां लइ गयो हतो. हे पवनवेग! हे शांतिमती! तमे बन्ने जण एना नपर निरर्थक कोप न करो." वज्रा-

युद्धनां आवां वचन सांभली बन्ने विद्याधरो अने शांतिमती एम त्रणे जणां एक बीजानी क्षमा मागीने प्रसन्न चित्तवालां थयां.

हवे सहस्रायुध कुमारने जवना नामनी स्त्रीथी उत्पन्न थयेलो कनकशक्ति नामनो पुत्र हतो. तेने समानकुलमां उत्पन्न थयेली कनकमाला अने वसंतसेना नामनी बे स्त्रीयो हती. कोइ वखते कनकशक्ति क्रीमा करवा माटे वनमां गयो. त्यां तेणे उंचे उमता अने नीचे पमता एवा कोइ पुरुषने जोइ तेनुं कारण पूछ्युं एटले ते पुरुषे कह्युं के, "हे मित्र! हुं वैताढ्य पर्वत उपर रहेनारो विद्याधर छुं. हुं अहिं आवीने बहु वखत रह्या पछी म्हारे स्थानके जतो हतो एवामां आकाशगामिनी विद्यानुं एक पद भूली जवाथी म्हारे स्थानके जवा समर्थ न थवाने लीधे आ प्रमाणे करुं छुं." कनकशक्ति कुमारे कह्युं. "हे भाइ! त्यारे तुं त्हारी विद्या म्हारी आगल भणी जा." ते पुरुष पोतानी विद्या भणी गयो एटले कनकशक्ति कुमारे पदानुसारी लब्धीथी ते पद पूर्ण करी दीधुं. पछी प्रसन्न थयेला विद्याधरे हर्षथी पोतानी विद्या कुमारने आपी अने विधि बतावी. कुमारे पण विधि प्रमाणे ते विद्याने साधी.

कोइ वखते कनकशक्ति कुमार बन्ने स्त्रीयो सहित फरतो फरतो हिमालय पर्वत उपर गयो. त्यां तेणे विपुलमति नामना चारण मुनिने जोइ भक्तिथी वंदना करीने तेमनो अमृतना सरखो धर्मोपदेश सांभल्यो. पछी प्रतिबोध पामेला तेणे बन्ने स्त्रीयो सहित ते मुनि पासे चारित्र लीधुं. कोइ वखते ते कनकशक्ति मुनि विहार करता करता सिद्ध पर्वत उपर गया. त्यां तेमणे एक रात्रीये कायोत्सर्गे निवास कर्यो एटले तेमना पूर्व भवनो शत्रु के, जे देवता थयो हतो ते तेमने उपसर्गो करवा लाग्यो; पण ते उपसर्गो विद्याधरोए दूर कर्या. पछी प्रभाते कायोत्सर्ग पारी कनकशक्तिमुनि रत्नसंचया नगरीये आव्या, त्यां पण तेमणे सूरनिपात उद्यानमां कायोत्सर्ग कर्यो. शुक्लध्यान ध्यातां चार घातीकर्मनो क्षय थवाथी तेमने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. ते वखते देवता, विद्याधर, भुवनपति, वज्रायुध चक्रवर्ती अने बीजा सामान्य माणसोए तेमनो केवल महोत्सव कर्यो. कोइ अवसरे रत्नसंचया नगरीनी पासे ईशान खूणामां क्षेमंकर जिनेश्वर समवसर्या. ते वात सेवक लोकोए वज्रायुधने करी, तेथी ते परिवार सहित तेमने वंदना करवा गयो. त्यां ते त्रण प्रदक्षिणा पूर्वक

जिनेश्वरने प्रणाम करी योग्य स्थानके बेसीने धर्म देशना सांभलवा लाग्यो. धर्म सांभलीने प्रतिबोध पामेला तेणे सहस्त्रायुधने राज्य सोंपी चौद हजार राजा, चौद हजार राणीयो अने सातसो पुत्रो सहित चारित्र लीधुं. विविध प्रकारनी शिक्षा पामी गीतार्थ थयेला ते मुनि पृथ्वी उपर विहार करता करता सिद्धिपर्वत उपर गया. त्यां ते वैरोचन स्तंभने विषे रमणीय शीलातल उपर एक वर्षनी पडिमा लइने निश्चलपणे रह्या. एवामां हयग्रीव राजाना मणिकुंभ अने मणिध्वज नामना बे पुत्रो अनेक भव भमीने असुर कुमारपणे उत्पन्न थया हता. तेउ फरता फरता सिद्धि पर्वत उपर गया. त्यां तेमणे वज्रायुध मुनिने जोइ क्रोध पामीने ते महामुनिने बहु उपसर्गो कर्या. तेमां प्रथम तीक्ष्ण दाढोथी विकराल मुखवालुं, लांबा पुंछडावालुं, सिंह अने वाघनुं रूप करीने भयंकर शब्दो कर्या. पछी हाथीनां रूप करीने क्रोध करता छता दांतोना प्रहार विगेरे उपद्रव कर्या. छेवट फणाथी भयंकर साप अने सापणनां रूप करीने तथा पिशाच अने राक्षणीनां रूप करीने मुनिने बहु वखत उपद्रव कर्या. ते वखते इंद्रनी मुख्य वारांगना रंभा अने तिलोत्तमा वज्रायुध मुनिने वंदना करवा आवी. बन्ने वारांगनाउए भयंकर वचनथी तेमनो तिरस्कार कर्यो एटले तेउ बन्ने जणा तुरत नासी गया. पछी मुनिनी आगल रंभाये अंगहार विलास तथा हावभावथी उत्तम नृत्य आरंभ्युं. ते वखते परिवार सहित तिलोत्तमाये सात स्वरथी युक्त अने त्रण ग्रामथी पवित्र एवुं गायन शरुं कर्युं. आ प्रमाणे भक्ति करी अने मुनिने प्रणाम करी बन्ने देवांगनाउ पोताना स्थाने गइ. पछी दुष्कर एवी वर्षनी पडिमा पूर्ण थइ एटले तेने पारीने वज्रायुध मुनि पृथ्वी उपर विहार करवा लाग्या.

हवे क्षेमंकर प्रभु मोक्ष पाम्या पछी तेमना गणधर पिहिताश्रव पृथ्वी उपर विहार करता करता कोइ वखते ते रत्नसंचया नगरीने विषे आव्या. सहस्त्रायुध राजा तेमनी पासे धर्म सांभलीने प्रतिबोध पाम्यो; तेथी तेणे पोताना पुत्रने राज्य सोंपी तेमनी पासे चारित्र लीधुं. पछी गीतार्थ थइ पृथ्वी उपर विहार करता तें सहस्त्रायुध मुनि पोताना पिता वज्रायुध मुनिने मल्या एटले ते बन्ने मुनि साथे विविध प्रकारनां तप करता पृथ्वी उपर विहार करवा लाग्या. पछी तेउ इषत्प्राग्भार नामना पर्वत उपर जइ पादपोपगमन अनशनथी

देह त्याग करी नवमा ग्रैवेयकने विषे देवपणे उत्पन्न थया. (आठमो तथा नवमो भव.)

हवे आ जंबूद्वीपना पूर्व महाविदेहक्षेत्रनी आभूषणरूप विष्कलावती विजयमां पुंडरीकिणी नामनी नगरी छे. त्यां नीति, कीर्ति अने विजयलक्ष्मीना संकेतस्थान रूप घनरथ नामना तीर्थंकर राजा राज्य करता हता. तेने रूप अने लावण्यथी मनोहर एवी प्रीतिमती अने मनोहरा ए नामनी बे स्त्रीयो हती. वज्रायुधनो जीव नवमा ग्रैवेयकने विषे त्रीश सागरोपम सुधी सुख भोगवीने पछी आयुष्यनो क्षय थये त्यांथी चवीने मेघस्वप्नने सूचवतो छतो घनरथ तीर्थंकरनी पहेली राणीना उदरने विषे पुत्रपणे उत्पन्न थयो. सहस्रायुधनो जीव पण त्यांथी चवी उत्तम रथना स्वप्नने सूचवतो छतो तेज राजानी बीजी स्त्री मनोहराना उदरने विषे पुत्रपणे अवतर्यो. पछी पूर्ण अवसरे बन्ने स्त्रीयोए पुत्रोने जन्म आप्या अने राजाए महोत्सव करीने तेमनां मेघरथ अने दृढरथ नाम पाड्यां. अनुक्रमे ते बन्ने पुत्रो कलाचार्य पासे अभ्यास करता करता युवावस्था पाम्या एटले घनरथ राजाए सुमंदिरपुरना निहतारि राजानी प्रियमित्रा अने मनोरमा बे पुत्रीयो मेघरथने परणावी तथा तेज राजानी त्रीजी न्हानी पुत्री सुमती दृढरथने परणावी. मेघरथथी प्रियमित्राने नंदीषेण अने मनोरमाने मेघसेन नामना पुत्रो थया अने सुमतीने दृढरथथी रथसेन नामनो पुत्र थयो. अनुक्रमे ते त्रणे पुत्रो कलाचार्य पासे कलाउनो अभ्यास करवा लाग्या.

एक दिवस घनरथ राजा अंतःपुरमां रत्नजडित्र सिंहासन उपर पुत्र पौत्रादि परिवार सहित बेठो हतो. एवामां त्यां सुसेना नामनी वेश्या आवीने राजाने कहेवा लागी के, “हे देव ! आ म्हारो कुकडो कोइना कुकडाथी जीती शकाय तेवो नथी, छतां जो कोइने पोताना कुकडानो गर्व होय तो पोतानो कुकडो आपनी समक्ष लावे अने जो तेना ते कुकडाथी म्हारो कुकडो जीताय तो हुं तेने एक लाख द्रव्य आपीश, परंतु म्हारो कुकडो तेना कुकडाने जीतशे तो हुं तेनी पासेथी एक लाख द्रव्य लइश.” वेश्यानां आवां वचन सांभलीने मनोरमा राणीये राजानी रजा लइ दासी पासे पोतानो कुकडो मगाव्यो. पछी बन्ने कुकडा क्रोधथी लाल आंखो करीने परस्पर एकबीजाने चांचोना प्रहार करता युद्ध करवा लाग्या. चांच अने पगना प्रहार करता बन्ने कुकडाउनी राज

सन्नाना माणसोए सरखीज प्रशंसा करी. पछी तीर्थंकरपणाने लीधे गर्भवास-थीज आरंभीने त्रण ज्ञानवाला घनरथ राजाए मेघरथने कह्युं के, "हे वत्स! घणो वखत युद्ध करवाथी पण आ बन्नेमांथी एके विजयी निवडशे नहि." पछी मेघरथे तेनुं कारण पूछ्युं एटले घनरथ राजाए कह्युं के–

आ जंबूद्वीपना ऐरवत क्षेत्रमां रत्नपुर नगरने विषे धनदत्त अने वसुदत्त नामना बे वणिक्मित्रो हता. तेओ भूख्या अने तरस्या बळदोने बहु भार भरेली गाडीमां जोडी परगाम जइ वेपार करता हता. मिथ्यात्वथी मोह पामेला अने खोटा तोल तथा खोटा मापथी वेपार करता एवा तेओए कांइ थोडुं धन मेळव्युं हतुं. पछी कोइ वखते क्लेश करता ते बन्ने जणा परस्पर एक बीजाने प्रहार करी मृत्यु पामीने तेज क्षेत्रमां हाथी थया. त्यां तेओ सुवर्णकुला नदीने कांठे वृद्धि पामता छता कांचन अने ताम्रकलश नामना युथपति थया. पछी युथना लोभथी ते बन्ने जणा परस्पर युद्ध करीने मृत्यु पाम्या अने जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रनी अयोध्या नगरीमां नंदिमित्रना घरे पाडारूपे उत्पन्न थया. पछी राजपुत्रे ते बन्नेने लडने लडाव्या. तेमां तेओ बन्ने जणा मृत्यु पामीने तेज नगरीमां घेटा रूपे उत्पन्न थया. त्यां पण तेओ युद्ध करवाथी लोहीवडे खरडायला कपालवाला थइ अंते मृत्यु पामीने आ कुकडा थया छे, माटे तेओ मध्ये कोइ विजयी नीवडशे नहि."

घनरथ राजानां आवां वचन सांभळी अवधिज्ञानी एवा मेघरथे कह्युं के, "हे तात! एओ फक्त द्वेषथीज युद्ध करे छे, एम नथी. परंतु बीजुं एक कारण छे ते हुं आपने कहुं छुं.

आ भरतक्षेत्रमां वैताढ्य पर्वतनी उत्तर श्रेणीना आभूषणरूप सुवर्ण-नाभ नामनुं नगर छे. ते नगरमां गरुडवेग नामनो विद्याधर राजा राज्य करतो हतो. तेने चंद्रतिलक अने सूरतिलक नामना बे पुत्रो हता. एक दिवस ते बन्ने जणाओ शाश्वति प्रतिमाओने वंदना करवा माटे जिनेश्वरोनां स्नात्रथी पवित्र एवा मेरुपर्वतना शिखर उपर गया. त्यां तेओए सुवर्ण शिला उपर बेठेला सागरचंद्र नामना चारण मुनिने हर्षथी वंदना करीने पोताना पूर्वभव पूछ्या एटले मुनिए तेओना पूर्वभवनी स्थिति जाणीने तेमने कह्युं के–

धातकीखंडना ऐरवत क्षेत्रने विषे वज्रपुर नगरमां अभयघोष नामनो

राजा राज्य करतो हतो. तेने सुवर्णतिलका नामनी स्त्रीना उदरथी उत्पन्न थयेला जय विजय नामना बे पुत्रो हता. हवे सुवर्णनगरना शंख राजाने पृथ्वी राणीना उदरथी उत्पन्न थयेली पृथ्वीसेना नामनी पुत्री हती. ते पुत्रीये पोताना पति तरीके अजयघोष राजाने पसंद कर्यो हतो, तेथी ते राजपुत्री वज्रपुर नगरमां अजयघोषने सामी परणावा आवी हती. अजयघोष राजा पण ते मृगना सरखां नेत्रवाली राजकन्याने हर्षथी परण्यो. एक दिवस ते अजयघोष राजा सेंकमो राणीयोने साथे लइ वसंत समयमां पुष्पोथी मनोहर एवा बगीचामां क्रीमा करवा माटे गयो. त्यां बगीचामां फरती एवी पृथ्वीसेना राणीये दांतमदन नामना श्रेष्ट मुनिने दीठा. पछी मुनि पासेथी धर्म सांजली प्रतिबोध पामेली राणीये राजानी रजा लइने मुनि पासे दीक्षा लीधी. राजा अजयघोष पण वसंतलक्ष्मीने सफल करी नगरमां आव्यो.

एक दिवस अजयघोष राजाने घेर छद्मस्थावस्थावाला श्री अनंतनाथ तीर्थंकर गोचरीने अर्थे आव्या. राजाए तेमने प्रासुक अन्न पाणीथी प्रतिलाज्या एटले तेना घरने विषे देवताउए पंच दिव्य प्रगट कर्यां. पछी अनंतनाथने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं एटले अजयघोष राजाए पोताना जय विजय नामना बन्ने पुत्रो सहित चारित्र लीधुं. पछी वीश स्थानकने आराधवाथी तीर्थंकरगोत्र कर्म बांधी ते राजा पुत्रो सहित मृत्यु पामीने अच्युत देवलोकने विषे देवता थयो. आयुष्य क्षय थयुं एटले त्यांथी चवीने अजयघोषनो जीव हेमांगद राजानो घनरथ नामे पुत्र थयो अने जय विजयना जीवो तमे (चंद्रतिलक अने सूरतिलक) थया छो."

(मेघरथ पोताना पिता घनरथ राजाने कहे छे के,) हे तात! सागरचंद्र मुनिनां एवां वचन सांजली बन्ने विद्याधर कुमारो तमारा दर्शन करवा माटे अहिं आव्या छे, परंतु तेउ अहिं आपणी पासे कुकमाना युद्धने क्षणमात्र जोइने पछी विद्याना बलथी कुकमाना शरीरमां प्रवेश करीने रहेला छे.

आवां मेघरथनां वचन सांजली ते प्रसन्न थयेला ते बन्ने विद्याधरो प्रगट थइ पोताना पूर्वजवना पिता घनरथ राजाना पगमां प्रणाम करी अने क्षणमात्र रही पोताने स्थानके चाल्या गया. पछी ते चंद्रतिलक अने सुरतिलक दीक्षा लइ दीर्घकाल तप करी केवलज्ञान मेलवी मोक्षपद पाम्या.

हवे बन्ने कुकमाउ पण पोताना पूर्वना नवनी स्थिति जाणीनें पोताना महापापनो मनमां पस्तावो करवा लाग्या. पछी तेमणे राजाना पगमां प्रणाम करीने पोतानी नाषामां कह्युं के, “हे प्रनु ! हवे अमे शुं करीये ?” पछी राजाए तेमने सम्यक्त्वमूल अहिंसा लक्षणवालो धर्म कह्यो. ते धर्म तेमणे श्रेष्ट नावथी स्वीकास्यो. पछी तेउ मृत्यु पामीने देवयोनीमां ताम्रचूल अने सुवर्णचूल नामना नूतदेवता थया. पछी तेउ वैमानमां बेसी घनरथ राजा पासे आवी तेमने हाथ जोमीने प्रणाम करी तेमनी प्रशंसा करवापूर्वक क्षमा मागी पोताने स्थानके गया. राजा घनरथे पण बहु कालसुधी राज्यलक्ष्मीनुं पालन कर्युं. कोइ वखते लोकांतिक देवताए आवीने “हे नाथ ! तीर्थप्रवर्त्तावो.” एम कही दीक्षा अवसर जणाव्यो एटले घनरथ राजाए मेघरथ कुमारने राज्यासन उपर बेसारवापूर्वक सांवत्सरिक दान आपी दीक्षा लीधी. पछी अनुक्रमे केवलज्ञान मेलवी अनेक नव्यजीवोने प्रतिबोध पमामी मेघरथ जिनेश्वर पृथ्वी उपर विहार करवा लाग्या. एक दिवस मेघरथ राजा दृढरथने साथे लइ प्रिया सहित देवरमण उद्यानने विषे गयो. त्यां ते जेटलामां अशोकवृक्षनी नीचे बेठो तेटलामां केटलाक नूतोए आवीने तेनी आगल नृत्य शरु कर्युं. नाना प्रकारना शस्त्रने धारण करनारा, वस्त्र सहित आनूषणोथी सुशोनित बनेला ते नूतोए राजानी पासे क्षणमात्र अत्यंत आश्चर्यकारी नृत्य कर्युं. एटलामां तो घुघरीयोथी तेमज ध्वजाउथी सुशोनित एवुं एक वैमान आकाश मार्गेथी राजानी पासे आव्युं. ते वैमानमां सुंदर रूपवालां स्त्री पुरुषने जोइ प्रियमित्रा राणीये मेघरथने पूछ्युं के, “हे स्वामिन् ! आ कोण छे ?” मेघरथे कह्युं “हे प्रिया सांनल.

वैताढ्य पर्वतनी उत्तरश्रेणी उपर अलका नामनी नगरीना राजा विद्युद्रथनो पुत्र आ सिंहरथ छे. तेनी साथे रहेली ते तेनी वेगवती नामनी स्त्री छे. ए सिंहरथ पोतानी स्त्री सहित धातकीखंमने विषे जिनेश्वरोने वंदन करवा गयो हतो. ते त्यांथी पाछो फरी जेटलामां अहिं आव्यो तेटलामां तेनुं वैमान आकाशमां तुरत अटकी पमयुं. पछी मने जोइने ते विचार करवा लाग्यो के, “आ सामान्य राजा नथी. कारणके, जेना प्रनावथी आ म्हारुं वैमान पण अटकी पमयुं.” आम धारीने पछी तेणे अनेक नूतरूपो बनावी

म्हारी आगल नृत्य कर्युं." पतिनां आवां वचन सांजली प्रियमित्राये फरी पूछ्युं के, "एणे पूर्वजवे एवुं शुं पुण्य कर्युं हतुं के, जेथी ते आवो समृद्धिवंत देवता थयो छे?" मेघरथे कह्युं. "हे प्रिया! पुष्करद्वीपना पूर्व जरतक्षेत्रने विषे संघपुर नगरमां कोइ राजगुप्त नामनो कणबी रहेतो हतो. तेने शंखिका नामनी स्त्री हती. निर्धनपणाथी पीमा पामता ते बन्ने जणा कोइने घेर काम करीने आजीविका करता हता. कोइ वखते ते बन्ने स्त्री पुरुष लाकमां लेवा वनमां गयां हतां; एवामां तेमणे त्यां कोइ मुनिने जोइ जक्तिथी वंदना करी. पछी मुनिये तेमने धर्म उपदेश्यो ते तेमणे विधिथी आराध्यो. वली पूर्व जन्मे मेलवेलां पापकर्मने नाश करनारुं बत्रीश कल्याणक नामनुं तप कर्युं. तेमां बत्रीश चोथ अने बे छठ कराय छे. पारणाने दिवसे तेमना घरने विषे कोइ मुनि आव्या; तेमने तेमणे प्रासुक अन्न पाणीथी प्रतिलाज्या. पछी अवसरे ते बन्ने जणाये चारित्र लीधुं. ते वखते पण तेणे आम्लवर्द्धमान नामनुं तप कर्युं. पछी आयुष्यनो क्षय थये ते राजगुप्त मृत्यु पामीने ब्रह्मलोकने विषे देवता थयो. त्यांथी चवीने आ सिंहरथ नामनो राजा थयो छे. तेनी स्त्री शंखिका पण तप करी पांचमा देवलोकमां गइ हती. त्यांथी चवीने ते आ तेनी वेगवती नामनी स्त्री थइ छे."

आवां मेघरथ राजानां वचनथी पोताना पूर्वजव जाणी प्रतिबोध पामेलो सिंहरथ घरे गयो. त्यां तेणे पोताना पुत्रने राज्य सोंपी प्रिया सहित श्री घनरथ तीर्थपति पासे चारित्र लीधुं. पछी घोर तप करीने उत्तम एवुं केवलज्ञान मेलवी कर्मना मेलने धोइ नाखी सिंहरथ मुनि मोक्षपद पाम्या.

मेघरथ राजा पण बगीचामांथी घेर आव्या पछी कोइ वखते आजूषणादिक आरंज त्यजी दइ पौषधव्रत लइ पौषधशालाना मध्ये योगासने बेसी सर्व राजाउने धर्मदेशना आपवा लाग्या. एवामां कंपता शरीरवालो, हरणीनी पेठे चंचल नेत्रवालो, अने "हे राजन्! हुं त्हारा शरणे आव्यो छुं." एम वारंवार बोलतो कोइ पारेवो राजाना खोलामां पड्यो. जयजीत पारेवाने जोइ दयालु राजाए तेने कह्युं के, "हे जइ! तुं जय न पाम्य. म्हारी पासे तने कोइथी जय नथी." राजानां आवां वचनथी पारेवो जेटलामां निर्जय थयो तेटलामां त्यां तेनी पाछल कोइ सिंचाणो आवीने राजाने कहेवा

लाग्यो के, "हे राजेंद्र ! तमारा खोलामां रहेलो पारेवो म्हारुं भक्ष्य छे, माटे तेने तमे छोडी द्यो. कारण हुं बहु भूख्यो थयो छुं. एना विना म्हारुं जीवित टकी शकशे नहि." ते सिंचाणानां आवां वचन सांभली राजाए कह्युं. "म्हारे शरणे आवेलानी सर्व प्रकारे रक्षा करवी जोइये. वली जेवी रीते त्हारो विनाश थवाथी तेने दुःख थाय तेवी रीते बीजाउने पण निश्चे थाय छे. वली जेवुं जीवित तने वहालुं छे. तेवुं बीजाने पण होय छे. जीव हत्याथी निश्चे नरकादि दुर्गति प्राप्त थाय छे, माटे ते त्हारे निश्चे त्यजी देवी जोइये." सिंचाणे कह्युं. "हे राजन् ! तमे पोते सुखी छो, माटे धर्म अधर्मनो विचार करो छो. आ पारेवो म्हाराथी भय पामीने तमारे शरणे आवेलो छे, परंतु भूखरूप राक्षसीथी गलायेलो हुं कोने शरणे जाउं ? हे राजन् ! तमे सत्पुरुष छो, माटे कोइने दुःख इच्छता नथी तो जेवी रीते तमे पारेवाने रक्षण कर्यो तेवी रीते मने पण रक्षण करो." राजाए कह्युं. "जो तुं भूख्यो छे तो हुं तने सरस अन्न मगावी आपुं तेनुं तुं भोजन कर." सिंचाणे कह्युं. "अमने मांस इष्ट छे, अन्न इष्ट नथी." राजाए कह्युं. "तो हुं तने तेटलुं मांस मगावी आपुं." सिंचाणे कह्युं. "ए मांसनुं अमारे काम नथी, कारण बीजाथी हणायेला जीवनुं मांस अमे भक्षण करता नथी, परंतु पोतेज हणेला जीवोना मांसनुं भक्षण करीये छीये." मेघरथे कह्युं. "जो एम छे तो हुं तने तेटलुं म्हारुं पोतानुं मांस आपुं." सिंचाणे ते वात कबुल करी एटले राजाए त्राजवां मंगावी एक बाजुए पारेवाने मूक्यो अने बीजी बाजुए पोतानुं मांस कापी कापीने मूकवा मांड्युं. जेम जेम मांस मूकवा मांड्युं तेम तेम पारेवानुं वजन भारे थवाथी ते त्राजवुं नीचे बेसवा लाग्युं एटले साहसीक एवो राजा पोतेज त्राजवामां बेसी गयो. ते जोइ बीजा राजाउ हाहा शब्द करवा लाग्या. आ वखते कोइ उत्तम आभूषणोथी देदीप्यमान देवता प्रगट थइ राजाने कहेवा लाग्यो के, "हे राजन् ! त्हारा धीरपणाने धन्य छे. त्हारुं जीवित सफल छे. ईशानेंद्र त्हारा चंद्रना किरणो सरखा निर्मल गुणोने पोतानी सभामां वखाणतो हतो. तेने सत्य नहि मानतो हुं त्हारी परीक्षा करवा माटे आ पूर्वना छेषी एवा बे पक्षीउना शरीरमां प्रवेश करी अहिं आव्यो हतो." पछी राजाए पूछ्युं के, "हे देव! ते बन्ने पक्षीउने शाथी वैर हतुं ते अमने कहो. कारण ते अमने बहु कौतुक छे." देवताए कह्युं. "आज नगरमां पूर्वे सागरचंद्र नामनो वणिक् रहेतो हतो. तेने

जयसेना नामनी स्त्री हती. तेउने साथेज उत्पन्न थयेला नंद अने नंदन नामना वे पुत्रो हता. कोइ दिवस ते बन्ने जणाउ पितानी रजा लइ सार्थवाहनी साथे नागपुर नगरमां वेपार करवा माटे गया. त्यां वेपार करता एवा तेउए दैवयोगथी एक महामूल्यवालुं रत्न मेलव्युं. पछी ते बन्ने जणा रत्ननी इच्छाथी एक बीजाने मारवानी इच्छा करता छता नदीमां गया. त्यां एके कह्युं. "ए रत्न में मेलव्युं छे." बीजाए कह्युं के, "अरे ए तो म्हारुं छे. तुं खोटो लोन्न करे छे." पछी तेउ क्रोधथी राता नेत्रवाला बनी परस्पर एक बीजाने मार मारता छता नदीने कांठे आर्त्तध्यानथी पृथ्वी उपर पड्या. त्यां तेउ मृत्यु पामीने हवणां वनमां पक्षी थया छे. तेउ परस्पर एकठा थइ क्लेश करता हता एवामां तेउनां शरीरमां में प्रवेश कर्यो हतो."

आ प्रमाणे कही देवता पोताने स्थानके गयो एटले विस्मय पामेला सन्नाना लोकोए मेघरथ राजाने पूछ्युं के, "हे राजन्! ए देवता कोण हतो के, जेणे आवी माया करीने निरपराधी एवा आपने आवा महा प्राणसंकटने विषे नाख्या?" मेघरथ राजाए कह्युं. "जो तमने ते वातनुं आश्चर्य होय तो सावधान थइने म्हारुं वचन सांन्नलो.

आ न्नवथी पांचमे न्नवे अनंतवीर्य वासुदेवनो म्होटो न्नाइ अपराजित नामनो बलदेव हुं पोते हतो. ते वखते दमितारि नामनो राजा अमारो शत्रु प्रतिवासुदेव हतो. अमे तेनी पुत्रीनुं हरण करीने तेने मारी नांख्यो. त्यांथी ते संसाररूप अटवीमां न्नमतो न्नमतो अष्टापद पर्वतना मूलन्नागमां कोइ तापसनो पुत्र थयो. ते त्यां बाल तप करी मृत्यु पामीने ईशान देवलोकमां देवता थयो. कोइ वखते ते ईशान लोकनो इंद्र म्हारी प्रशंसा करतो हशे ते सांन्नली आ देवता तेने असद्दहतो छतो अहिं आव्यो अने तेणे अहिं जे कांइ कर्युं ते तो तमे प्रत्यक्ष जोयुं छे."

हवे पारेवो अने सिंचाणो ए बन्ने जणा पोतानुं अने देवतानुं वृत्तांत जाणी जातिस्मरण ज्ञान पाम्या; तेथी तेउ पोतानी वाणीमां राजाने केहवा लाग्या के, "हे स्वामिन्! अमे आ अमारुं पोतानुं चरित्र सांन्नली वैराग्य पाम्या छीये, माटे हवे अमारे जे कांइ करवुं योग्य होय ते कहो." राजा मेघरथे कह्युं. "तमे सम्यक्दृष्टिपणुं धारण करी पापने नाश करनारुं अन-

शन द्यो." बन्ने पक्षीयो ते प्रमाणे करी पंच नवकारनुं स्मरण करी मृत्यु पामीने ज्जुवनवासी देवता थया. पछी विधिथी पौषधने पारी अने पारणुं करी राजा मेघरथ फरी ज्जोगोने ज्जोगववा लाग्यो.

एक दिवस परिसहोथी ज्जय नहि पामता अने वैराग्यवंत एवा मेघरथ राजा अष्ठम करीने कायोत्सर्गे रह्या हता. एवामां अष्ठावीश लाख वैमानना अधिपति एवा ईशानेंद्रे पोतानी सज्जामां रह्ये छते ज्जक्तिना वशथी कह्युं के, "महात्म्यथी त्रणलोकने जीतनारा, पापरहित अने ज्जविष्यकाले अरिहंत थनारा हे महासत्वधारि ! तमने हुं नमस्कार करुं छुं." इंद्रे आ प्रमाणे नमस्कार कर्यो, ते सांज्जली तेनी पासे बेठेली तेनी अतिरूपा अने सुरूपा नामनी स्त्रीयोए पूछ्युं के, "हे स्वामिन् ! तमे हवणां कोने नमस्कार कर्यो ?" इशानेंद्रे कह्युं. "सांज्जलो. पृथ्वी उपर पुंमरीकिणी नगरीमां मेघरथ नामनो राजा राज्य करे छे. ते हवणां अष्ठम तप करी कायोत्सर्गे रहेल छे. शुज्ज ध्यानथी रहेला ते राजाने में ज्जक्तिथी नमस्कार कर्यो छे. वली ते एवी रीते शुज्ज ध्यानथी धर्मने विषे स्थिर मन करीने रह्यो छे के, जेने इंद्रसहित देवताउ पण चलाववाने समर्थ नथी." इंद्रनां आवां वचन सांज्जली तेनी बे स्त्रीयो उत्तम रूप धारण करी मेघरथ राजाने क्षोज्ज पमाम्वा माटे तेनी पासे गइ. उत्कृष्ट रूप, लावण्य अने कांतिथी मनोहर, हावज्जाव करती तेमज उत्तम शृंगारने धारण करी रहेली ते बन्ने देवांगनाउ राजानी आगल आवीने आ प्रमाणे कहेवा लागी. "हे स्वामिन् ! अमे बन्ने देवांगनाउ तमारा उपर स्नेहथी मोह पामीने अहिं आवीयो छीये, माटे तमे अमारी इछा पूर्ण करो. अमे अमारा स्वाधिन पति इंद्रने त्यजी दइ तमारा रूप, गुण अने यौवनमां लोज्ज पामीने अहिं आवीयो छीये." देवांगनाउनां आ प्रकारनां राग उत्पन्न करनारां मनोहर वचनथी तेमज विविध प्रकारना हावज्जावथी राजानुं चित्त जरा पण क्षोज्ज पाम्युं नहि. पछी सघली रात्री अनुकुल उपसर्ग करीने शांत थयेली ते बन्ने देवीयो सवारे मेघरथ राजानी स्तुति करवा लागी. "हे सुंदर ! अहो ! रागरहित एवा तमे अमारुं चित्त रागसहित बनावी दीधुं अने तमे अमाराथी रागवाला थया नहि. हे धीर ! लोहमय पुरुष होय तोपण अमारी चेष्टाथी पीगली जाय छे, छतां तमारुं मन जरापण पीगलायुं नहि." पछी ते बन्ने देवांग-

नाउ पोताना अपराधनी क्षमा मागी अने नमस्कार करी तेना गुणनुं गान करती करती स्वर्ग प्रत्ये गइ. राजा मेघरथे पण सवारे विधि प्रमाणे कायोत्सर्ग पारीने पारणुं कर्युं.

एक दिवस मेघरथ राजा सामंतो सहित सन्नामां बेठो हतो एवामां बागना रक्षक मालीये त्यां आवी नक्तिपूर्वक विनंती करी के, "हे स्वामिन्! आजनो दिवस धन्य छे जे, आजे तमारा पिता श्रीघनरथ जिनेश्वर बागमां समवसर्या छे." मालीनां आवां वचन सांनली हर्ष पामेलो मेघरथ राजा ते मालीने इच्यादिक आपी संतोष पमामीने अनेक राजकुमारो सहित जिनेश्वरने नमन करवा गयो. त्यां ते धर्मोपदेश सांनली चारित्र लेवानी इच्छा करतो उतो जिनेश्वरने वंदना करी घरे गयो. पछी तेणे दृढरथने कह्युं के, "हे बंधु! तुं राज्य गृहण कर. कारण हुं चारित्र लेवानी इच्छा करुं छुं." दृढरथे कह्युं. "हुं पण तमारी साथे चारित्र लइश. पछी मेघरथे पोताना पुत्र मेघसेनने राज्यासने बेसारी दृढरथना पुत्रने युवराज पद्वी आपी पोते चार हजार राजा, सातसो पुत्र तेमज पोताना बंधु दृढसेन सहित घनरथ जिनेश्वर पासे चारित्र लीधुं. पछी पोताना देहने विषे स्पृहा रहित, परीषहोने सहन करनारा, हमेशां पांच समिति अने त्रण गुप्तियुक्त एवा ते घनरथ मुनि पृथ्वी उपर विहार करता उता बहु नव्य जीवोने बोध पमामी अने कर्मना मेलने धोइ नाखी मोक्षपद पाम्या. मेघरथ मुनिये पण प्रधान एवा वीश स्थानकनुं आराधन करी तीर्थंकर नाम गोत्रकर्म मेलव्युं. वली तेमणे अरिहंत, सिद्ध, प्रवचन, गुरु, स्थविर साधु, बहुश्रुत अने तपस्वीउनुं हमेशां वात्सल्य कर्युं. क्षणे क्षणे ज्ञाननो उपयोग, तेमज दर्शन, विनय, आवश्यक तथा शीलव्रतने विषे अतिचार रहितपणुं धारण कर्युं. वली ते क्षण क्षण तप, त्याग, वैयावच्च अने समाधीथी अपूर्व ज्ञानने मेलववामां तत्पर थया. छेवट प्रवचननी प्रनावना अने सिंहनिक्रीमित तप पण तेमणे कर्युं. श्रीमेघरथ मुनि एक लाख वर्ष चारित्र पाली अने अंते न्हाना बंधु सहित तिलकाचल पर्वत उपर अनशन लइ समाधिथी मलमय देहनो त्याग करीने सर्वार्थसिद्ध नामना पांचमा अनुत्तर वैमानने विषे तेत्रीश सागरोपमना आयुष्यवाला देवता थया. (दशमो तथा अगीयारमो भव.)

जंबूद्वीपना आ नरतक्षेत्रमां कुरुदेशने विषे हस्तिनापुर नामनुं नगर छे.

त्यां उदारतादि उत्तम गुणोथी विख्यात एवो विश्वसेन नामनो राजा राज्य करतो हतो. तेने अचिरा नामनी स्त्री हती.

हवे मेघरथनो जीव सर्वार्थसिद्धथी चवीने भादरवा मासनी अंधारी सातमने दिवसे रात्रीये अचिरा देवीना उदररूप मानसरोवरमां राजहंसनी पेठे अवतर्यो. ते वखते देवीये निद्रामां चौद महास्वप्न जोयां. पछी जागी उठीने तेणे स्वप्नानी वात विश्वसेन राजाने कही, तेथी राजाये हर्ष पामी स्वप्नपाठकोने बोलावी स्वप्नानी वात पूछी एटले तेउए कह्युं के, "देवीये चौद स्वप्न जोयां छे, माटे तेमनो पुत्र चौदराज लोकनो अधिपति थशे. वली चौदपूर्वने प्रकाश करनार तेमज अगीयार अंगनो जाण थशे." स्वप्नपाठकोनां आवां वचन सांभली हर्ष पामेला विश्वसेन राजाए सत्कार करेला स्वप्नपाठको पोतपोताने स्थानके गया. पछी गर्भने धारण करती एवी अचिरा देवीने उत्पन्न थयेला शुभ दहोला राजाए पूर्ण कर्या. विश्वसेन राजाना देशमां प्रथम म्होटो उपद्रव उत्पन्न थयो हतो तेना लोकोये बहु उपायो कर्या, पण ते शांत थतो नहोतो, परंतु प्रभु गर्भमां आव्या त्यारथी ते शांत थइ गयो; तेथी प्रजा गर्भनी प्रशंसा करती हती. अनुक्रमे नव मास अने सात दिवस गये छते जेठ मासनी अंधारी तेरसने दिवसे भरणी नक्षत्रमां चंद्रनो योग तेमज सूर्यादि ग्रहो उच्चस्थानमां रह्ये छते शुभ मुहूर्त्तमां अचिरा देवीये अर्धी रात्रीये पुत्रने जन्म आप्यो. ते वखते नारकी जीवोने पण क्षणमात्र सुख उत्पन्न थयुं तेमज त्रणलोकमां सूर्यकांतिथी अधिक प्रकाश थयो. आ वखते छपन्न दिग् कुमारीकाउये अवधिज्ञानथी जिनेश्वरनो जन्म जाणी त्यां आवीने संवर्त वायुथी वालवुं, जल सिंचवुं, आभूषण, दर्पण, झारी, विंझणा, चामर विगेरेने धारण करवापूर्वक रक्षाविधि विगेरे सूतिकानां कार्यो कर्यां. पछी आसनकंपथी इंद्रे जिनेश्वरनो जन्म जाण्यो; तेथी तेणे प्रभुने मेरुपर्वत उपर लइ जवादिक सर्व अभिषेक क्रिया करीने मातानी शय्यामां मूक्या. पछी विश्वसेन राजाना घरने विषे सुवर्णवृष्टि करी सर्व देवता पोतपोताने स्थानके गया एटले अचिरा देवी जागी उठ्या अने ते पोतानी पासे रहेला पुत्रने जोइ बहु हर्ष पाम्या. विश्वसेन राजाए पण पुत्र जन्मनी वधामणि आपनाराने द्रव्यादिकथी संतोष पमाडी महोत्सव करवा पूर्वक बारमे दिवसे अरिष्टनी शांती

करवाथी पुत्रनुं 'शांति' एवुं नाम पाड्युं. पछी अनुक्रमे वृद्धि पामता ते गोशिर्ष चंदनना सरखा सुगंधित शरीरवाला, चंद्रना सरखी कांतिवाला, स्वयंभूरमण समुद्रना सरखा गंभीर, परसेवादि मलरहित शरीरवाला, एक हजार अने आठ लक्षणवाला, शांतिना करनारा अने मृगना लंछनवाला शांति जिनेश्वरने पच्चीस हजार वर्ष गये छते विश्वसेन राजाए मंडलीकपदे स्थाप्या. विश्वसेन राजाए शांतिनाथने बहु स्त्रीयो परणावी हती, परंतु यशोमति तेमनी मुख्य पटराणी हती.

हवे दृढरथनो जीव सर्वार्थसिद्ध विमानथी चवीने चक्र स्वप्न सूचवतो छतो यशोमतिना उदरने विषे अवतर्यो. पूर्ण अवसरे माताए पुत्रने जन्म आप्यो. पिताए पण महोत्सव करीने तेनुं चक्रायुध नाम पाड्युं अने अनुक्रमे वृद्धि पामेला ते पुत्रने राजकन्या साथे परणावीने युवराज पदवी आपी. पछी शांतिनाथनी आयुधशालामां चक्ररत्न उत्पन्न थयुं; तेथी तेनो अठाइ महोत्सव करीने शांतिनाथ भरतक्षेत्रने साधवा माटे तैयारी करवा लाग्या. चक्ररत्ननी पाछल प्रयाण करनारा शांतिनाथे मागध, वरदाम अने प्रभासक्षेत्रने साधी सिंधु नदीने कांठे पडाव कर्यो. त्यां पण सिंधुदेवीये तेमनो बहु आदर सत्कार कर्यो. पछी वैताढ्य पर्वते गया. त्यां वैताढ्य कुमार तेमनी आज्ञा पालनारो थयो. पछी शांतिनाथनी आज्ञा पालवा तैयार थयेला कृतमाल देवताए प्रपता गुफाना बारने उघाड्युं. त्यां उन्मग्ना अने निर्मग्ना नामनी बे नदी होवाथी वार्धिकि रत्ने तुरत ते उपर पुल बांधी आप्यो. पछी प्रभु सैन्य सहित गुफामां पेठा, पण त्यां अंधारुं होवाथी काकिणी रत्नवडे अंधकारने दूर करवा माटे मंडल कर्यां. ए प्रमाणे अंधकार दूर करी सामी बाजुए जइ त्यांना आपात चिलात नामना म्लेच्छोने पोताने वश कर्या. सिंधुनदीना बीजा कांठाने साधी हिमालय पर्वतना अधिष्ठायक देवने पोताना स्वाधिन कर्यो. ऋषभकुट उपर पोतानुं नाम लखीने पछी सेनापतिये गंगानदीनो उत्तरतट साध्यो. त्यां गंगाना कांठे निवास करी रहेला शांतिनाथ चक्रवर्त्तीनी समीपे बार योजन लांबां अने नव योजन पहोलां पेटीना आकारवालां नव निधान निकल्यां. पछी शांतिनाथ हस्तिनापुर नगरे गया. त्यां तेमने मुकुटबद्ध बत्रीश हजार राजाउए बार वर्ष सुधी चक्रवर्त्तीनो अभिषेक कर्यो. पछी श्रीशांतिनाथे पच्चीस हजार वर्ष सुधी

चक्रवर्त्तीना न्नेगो न्नोगव्या एटले लोकांतिक देवताए आवीने तेमनी विनंती करी के, "हे स्वामिन्! तीर्थ प्रवर्त्तावो." पढी सांवत्सरी दान आपी अने चक्रायुध नामना पुत्रने राज्य सोंपी सर्व देव, दानव अने राजाउए बहु न्नक्तिथी पूजेला श्री शांतिनाथ सर्वार्थ नामनी पालखीमां वेसी सहस्राम्र वनमां जइ त्यां पालखीमांथी नीचे उतरी सर्व आन्नूषणने त्यजी दइ पंचमुष्टि लोच कर्यो. प्रन्नुनां वस्त्रोने लइ इंडे क्षीरसमुड्मां नाख्यां. पढी जेठ मासनी अंधारी चौदशने दिवसे न्नरणी नक्षत्रमां चंड्नो योग ढते प्रन्नुए ढठ तप करीने एक हजार राजाउ सहित सिद्धने नमस्कार करी सामायिक चारित्र लइ पृथ्वी उपर विहार कर्यो अने कोइ सन्निवेशमां सुमित्र नामना ग्रहस्थने घेर खीरथी पारणुं कर्युं. चार ज्ञानना धारणहार अने सर्वे प्राणीयोमां शिरोमणि एवा प्रन्नु ढद्मस्थावस्थामां गाम, नगर विगेरे जूदा जूदा स्थानके आठ मास विहार करीने फरी हस्तिनापुर नगरे सहस्राम्र वनमां आवीने पत्र तथा फुल विगेरेनी समृद्धिवाला अने विस्तारवंत एवा नंदिवृक्षनी नीचे वेठा. त्यां शुक्ल ध्यान ध्यातां प्रन्नुने पोष मासनी शुक्ल नवमीने दिवसे न्नरणी नक्षत्रमां चंड्नो योग ढते चार घाती कर्मनो क्षय थवाथी उज्वल एवुं केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. ते वखते चार प्रकारना देवताउए त्यां आवी समवसरण रचवा मांड्युं. तेमां प्रथम वायुए योजन मात्र न्नूमीना अशुन्न पुद्गलो दूर कर्यां. मेघे सुगंधिवाला पाणीथी तेटली न्नूमीने सींचन करी. वैमानिक, ज्योतसी अने न्नुवनपति देवताउए अनुक्रमे रत्नना, सोनाना अने रुपाना एम त्रण गढो कांगरा सहित बनाव्या. दरेक गढमां तोरणवाला चार चार दरवाजा मूकी मध्यमां प्रन्नुना अंगथी वारगणुं उंचुं अशोकवृक्ष वनाव्युं. तेनी नीचे चार तरफ चार सिंहासन अने तेना उपर त्रण त्रण ढत्र तथा वबे चामर वनाव्यां. पढी पूर्व तरफना दरवाजेथी समवसरणमां प्रवेश करी प्रन्नु तीर्थने नमस्कार करवापूर्वक पूर्वान्निमुखे वेठा एटले देवताउए वाकीना त्रण सिंहासनो उपर त्रण प्रतिमाउ स्थापन करी. प्रन्नुनी पाढल न्नामंमल स्थापन करी देवताउए ढींचण प्रमाण पुष्पवृष्टि करी. उंचे आकाशमां देवडुंदुन्नि वागवा लाग्युं. समवसरणना पहेला गढमां अग्निखूणाने विषे साधु, साध्वी अने देवांगनाउ वेठी. नैरुत्य खूणामां ज्योतिष्क देवांगनाउ, न्नुवनपति देवांगनाउ अने व्यंतर देवांगनाउ

बेठी. वाव्य खूणामां ज्योतिष्क, जुवनपति अने व्यंतर देवता बेठा. ईशानखूणामां वैमानीक देवता, मनुष्य अने मनुष्य स्त्रीयो ए सर्वे बेठां. बीजा गढना सर्व जागमां मत्सर रहित एवा सर्वे तिर्यंचो बेठां अने त्रीजा गढमां सर्व स्थानके सर्वे वाहनो बेठां.

हवे कव्याण नामना पुरुषे चक्रायुध राजानी पासे आवीने प्रजुने केवलज्ञान उत्पन्न थयानी वधामणी आपी. राजा चक्रायुध पण परिवार सहित समवसरणमां जइ जिनेश्वरने स्तुति करवापूर्वक नमस्कार करी हाथ जोमीने तेमना सन्मुख बेठो. पठी जगवाने मधुक्षीराश्रव लब्धिथी युक्त अतिशयवाली वाणीथी धर्मदेशना आपी के, “हे राजन्! तें महाराजपणाना तेजथी लोकमां रहेला शत्रुने जित्या ठे, परंतु पोताना देहने विषे रहेला इंड्रियरूप शत्रुउने जित्या नथी. वली ज्यां सुधी ते शत्रु जिताणा नथी त्यां सुधी शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्शरूप विषयो बहु अनर्थ करनारा थाय ठे. जेवा के, श्रोत्रेंड्रियने वश थयेला हरिणो कान लांबा करी पारधीनां गीतने सांजलवामां तत्पर थया ठतां मृत्यु पामे ठे. चक्षुरिंड्रियने वश थयेलो पतंग सुवर्ण समान देदीप्यमान दीवानी शिखाने जोतो ठतो तेमां ऊंपापात करी परलोक जाय ठे. वली रसना इंड्रियथी जितायला मांठलाउ अगाध जलमां रह्या ठतां पण मांसपेशीना रसना स्वादने विषे लालचु बनीने मृत्यु पामे ठे. घ्राण इंड्रियने वश थयेलो ज्रमर पण हाथीना मदने सुंघवानी इछा करतो ठतो महा डुःख पामे ठे अथवा मरण पण पामे ठे. तेमज हाथणीना अंगने स्पर्श करवानी इछावालो गजराज आलान स्तंज साथे बंधाइने तीक्ष्ण अंकुशनो मार सहन करे ठे. आवा तुछ विषयोने उत्तम पुरुषो क्षण मात्रमां त्यजी दे ठे.”

प्रजुनो आवो धर्मोपदेश सांजली जेम दरिड्री माणस जंमार जोइ हर्ष पामे तेम सर्वे माणसो हर्ष पाम्या अने तेमांथी केटलाके वैराग्यवंत थइने असंख्य डुःखनो नाश करनारी दीक्षा लीधी. केटलाके श्रावक धर्म आदर्यो अने केटलाके सम्यक्त्व धारण कर्युं. वली तीर्थपति एवा पिताना वचन सांजली चक्रायुध पण तुरत वैराग्यवंत थयो, तेथी तेणे वापरवाथी करमाइ गयेली पुष्पमालानी पेठे राज्य लक्ष्मीने त्यजी दइ बहु राजाउ सहित पितानी पासे चारित्र लीधुं. श्रीशांतिनाथे पण तेने प्रथम गणधर पद आप्युं. पठी

सर्वे देवताउ प्रनुने वंदना करी पोतपोताने स्थानके गया.

श्री शांतिनाथ प्रनुने श्रुतसमुद्रनो पार पामेला, सर्व प्रकारनी लब्धिवाला अने चार ज्ञानना धारणहार एवा चक्रायुध विगेरे छत्रीश गणधरो हता. पवित्रमनवाला वासठ हजार साधुउ तेमज एकसठ हजार अने छसोथी कांइक अधिक साध्वीयो हती. वली वे लाख नेवुं हजार श्रावक तथा त्रणलाख त्राणुं हजार श्राविकाउ हती. आठ हजार चौद पूर्वधारी, त्रण हजार अवधि ज्ञानि, चार हजार मनःपर्यवज्ञानी अने चार हजार उपर त्रणसो एटला केवलज्ञानि तेमज छ हजार वैक्रियलब्धिवाला मुनि अने वे हजार चारसो वादी साधु ए प्रमाणे प्रनुनो परिवार हतो. चालीश धनुष्य उंचा शरीरवाला श्री शांतिनाथ प्रनुए नव्यजनरूप कमलने एक वर्ष उंगा एवा पच्चीस हजार वर्ष सुधी प्रतिवोध पमाड्युं. ज्यां ज्यां प्रनु विहार करता त्यां त्यां योजन प्रमाणनूमि सुगंधमय थती. सर्व ऋतुना फुल फलोथी वृक्षो सुशोनित थता तेमज सर्वे प्राणीयो स्वानाविक वैर त्यजी दइ पोतपोतानां कार्य करवामां तत्पर थतां. वली दुर्निक्ष, मरकी, वैर, स्वचक्रनय, परचक्रनय, उपद्रव, रोग, शोक अने विघ्नना समूह विगेरे सर्व नाश पामतुं हतुं. वली जिनेश्वरनां वचनथी दान अने दयामां तत्पर थयेला सर्वे राजाउ सर्वे माणसोने सेवा करवा योग्य थया एटलुंज नहि पण केटलाक प्रतिवोध पामेला राजाउए दीक्षा लीधी अने केटलाके परिग्रह परिमाण लीधुं. वली व्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य अने शुद्रोए प्रतिवोध पामीने विषयनी इच्छा नहि करता छता संग त्यजी दइ दीक्षा लीधी. जेउ साधुपणुं पालवा समर्थ नहोता तेमणे श्रावक धर्म आदर्यो.

आ प्रमाणे सोलमा श्रीशांतिनाथ जिनेश्वर पृथ्वी उपर विहार करता करता संमेतशिखर पर्वत उपर गया. त्यां तेमणे नवसो साधु सहित विधिथी एक मासनुं अनशन लइ जेठ मासनी अंधारी तेरसने दिवसे नरणी नक्षत्रमां चंद्रनो योग छते मोक्षपद मेलव्युं. ते वखते देवताउए त्यां आवी तेमनो मोक्षोत्सव करी नंदीश्वरद्वीपे उत्सव कर्यो. पछी चक्रायुध गणधर पण अनेक साधुउ सहित पृथ्वी उपर विहार करता छता बहु नव्यजनोने प्रवोध करवा लाग्या. तेमणे पण घाती कर्मनो नाश करी केवलज्ञान मेलव्युं. त्यारपछी देवताउए पूजन करेला ते केवली पृथ्वी उपर विहार करता करता कोटिशिला

नामना पवित्र तीर्थने विषे गया. त्यां ते पण बहु मुनियो सहित अनशन लइ मोक्ष पाम्या. ते कोटिशिला नामना पवित्र तीर्थने विषे कोटीगमे मुनियो सिद्धि पाम्या छे, ते उपरथी ते तीर्थनुं नाम कोटिशिला पमुयुं छे. आ संक्षेपमां कहेलुं शांतिनाथनुं पवित्र चरित्र सांभली अनेक भव्य प्राणीयो पाप रहित थइ उपशमने विषे तत्पर थाय छे.

॥ इति श्री शांतिनाथ चरित्रम् ॥

॥ श्री कुंथुनाथ चरित्रम् ॥

श्री जंबूद्विपना महाविदेह क्षेत्रने विषे पुष्कलावती नामे विजय छे. त्यां पुंमरीकिणी नगरीमां जितशत्रु नामे राजा राज्य करतो हतो. एक दिवस ते राजा गुरुनी पासेथी जिनेश्वर प्रणित धर्म सांभली वैराग्य पाम्यो, तेथी तेणे सनय नामना पुत्रने महोत्सवपूर्वक राज्यासने स्थापी अनेक राजाउ सहित अत्यंत हर्षथी चारित्र गृहण कर्युं. अनुक्रमे ते जितशत्रु मुनि अगीयार अंगना धारक थया. पछी दीर्घकालपर्यंत वीश स्थानक तप करी अने तीर्थंकर नामगोत्र कर्म मेलवी सर्वार्थसिद्ध देवलोके तेत्रीश सगारोपमना आयुष्यवाला देवतापणे उत्पन्न थया. त्यां महासुखनो अनुभव करीने पछी ते जितशत्रु राजानो जीव आ भरतक्षेत्रने विषे लक्ष्मीथी भरपूर एवा गजपुर नगरमां सूर भूपतिनी श्रीदेवी राणीना उदरने विषे चौद महास्वप्ने सूचित पुत्रपणे उत्पन्न थयो. जन्म अवसरे छपन्न कुमारीका अने चोसठ इंद्रोए मली प्रभुनो शांतिनाथनी पेठे मेरु पर्वत उपर पामुकवनमां सिंहासन उपर जन्म महोत्सव कर्यो. त्यांथी इंद्रे प्रभुने लावीने माताना प्रसूतिगृहमां मूक्या.

ज्यारे प्रभु माताना गर्भने विषे आव्या हता त्यारे श्रीदेवीये स्वप्नामां भूमि उपर रहेलो तेमज आकाश पर्यंत उंचो एवो रत्नथी विचित्र एक स्तूप दीठो हतो. ते उपरथी मातापिताए प्रभुनुं 'कुंथु' एवुं नाम पाम्युं. पछी देव समूहथी विंटाएला प्रभु अनेक गुणो सहित वृद्धि पामवा लाग्या. जेमना मुखनी स्पर्द्धा करतो एवो चंद्रमा कलावान् छतां पण प्रभुना मुखनी समानपणुं पामतो नहोतो. श्री कुंथुनाथनां नेत्रनी शोभाथी जिताएला कमलो पण ल-

ज्ञाने लीधे निरंतर रात्रिने विषे ग्लानी पामता हता. वली लक्ष्मी पण श्रीवत्स-ना चिन्हथी जेना हृदयनो आश्रय करीने रही छे एवा कृष्ण पण ते लक्ष्मी-ना वियोगथीज समुद्रमां पड्या छे, एम हुं जाणुं छुं. ढींचणथी पण नीचे सुधी लांबा एवा प्रभुना बन्ने हाथ दुर्गतिरूप नगरना द्वारना कमाडनी जाणे भोगलो होय नहि शुं ? एम हुं जाणुं छुं. प्रभुना हाथनी आंगलीयो पण अशोकवृक्षना पल्लवनो तिरस्कार करती हती. आ प्रमाणे जिनेश्वर प्रभुना समग्र देहनी ल-क्ष्मी पूर्ण रीते शोभि रही हती. प्रभुए त्रेवीश हजार अने साडासातसो वर्ष सुधी कुमार अवस्था घणा सुखथी भोगवी. त्यार पछी वैराग्यवंत थयेला श्री सूरभूपतिये महोत्सव पूर्वक प्रभुने राज्यासने वेसाड्या.

पछी इंद्रोए स्तुति करेला, करुणाना समुद्र अने तपायमान सुवर्ण समान कांतिवाला प्रभुए इंद्रनी पेठे राज्य करवा मांड्युं. तेवीश हजार अने साडा सातसो वर्ष प्रभुए मंडलीकपदे राज्य कर्युं. एटलामां प्रभुना शस्त्रगृहने विषे चक्ररत्न उत्पन्न थयुं. पछी प्रभु म्होटा उत्सवथी चक्ररत्ननी पूजा करी शांतिना-थनी पेठे सर्व भरतक्षेत्रने साधी बत्रीश हजार राजाउ सहित हर्षथी गजपुर नगर प्रत्ये आव्या. त्यां तेमनो बार वर्षपर्यंत चक्रवर्तीपणानो अभिषेक थयो. पछी प्रभुए त्रेवीश हजार अने साडासातसो वर्ष सुधी चक्रवर्ती राज्य कर्युं. त्यार पछी प्रभु आदर्शभुवनमां रही संपत्तिना अनित्यपणानो विचार करता हता ते वखते लोकांतिक देवताउये आवीने प्रभुनी विनंती करी के, "हे भग-वन्! निश्चे आपे भव अने मोक्ष ए बन्नेनी गति जाणी छे, माटे हे प्रभु! भव्य जीवोना बोधने माटे चारित्र अंगीकार करो अने चार घातिकर्मनो नाश करी केवलज्ञानने मेलवो. वली हे नाथ! धर्म देशनावडे भव्य जीवोने तारो." इ-त्यादि भक्तियुक्त वचनथी जिनेश्वरनी स्तुति करीने लोकांतिक देवताउ पोताने धन्य मानता छता अंतर्ध्यान थया.

पछी भगवाने दानना फलने नहि इच्छता छतां पण "अरिहंतोनी आ-वीज रीती छे" एम धारी पृथ्वीने विषे वर्षादनी पेठे वार्षिक दान आप्युं. पछी विजय नामनी पालखीमां वेसीने सर्व इंद्रो अने बत्रिश हजार भूपतिउथी विं-टलायेला, राजा अने देवताउए स्तुति करेला, मागध जनोए उत्कृष्ट भक्तिथी वारंवार स्तवन करेला, कुलवधुउए अत्यंत मंगल करेला, जूंभक देवताउए द्र-

षेथी पुष्पवमे वधावेला, किंनरोए गायन करेला प्रजुना गुणथी आनंदित थयेला लोकोवमे जोवाएला, वली "अहो! आ असंग एवा प्रजु आवी समृद्धिने त्यजी दे ठे" एम चारण लोकोए वारंवार स्तुति करेला जगवान् सहस्राम्र वनने विषे आव्या. त्यां कृतिका नक्षत्रमां सर्व सिद्धोने नमस्कार करीने तेमणे व्रत ग्रहण कर्युं. ते वखते प्रजुने चोथुं मनःपर्यवज्ञान उत्पन्न थयुं. पठी प्रजु पृथ्वी उपर विहार करवा लाग्या. आ प्रमाणे तेमणे छद्मस्थावस्थाए सोल मास विहार कर्यो. फरी सहस्राम्र वनमां आव्या. त्यां आत्माने जावतां एवा प्रजुने तिलक वृक्षनी नीचे तत्काल केवल ज्ञान प्राप्त थयुं एटले चोसठ इंद्रोए मलीने जक्तिपूर्वक समवसरण रच्युं. प्रजुए सिंहासन उपर विराजमान थइ अमृतवाणीवमे एवी धर्मदेशना आपी के, जेथी मनुष्योनुं मिथ्यात्वरूप विष गली गयुं. ते आ प्रमाणे—बहु जोगमां आसक्त बनेला जे मूढ पुरुषो निरंतर पापकर्म करे ठे, ते परतंत्र थयेला एवा प्राणीयो नरकरूप खाइमां पमे ठे अने अरिहंत प्रजुए देखामेला मार्गने जाणनारा, धर्मने विषे उद्यम करनारा, त्रण तत्त्वने विषे उत्साह धरनारा, श्रद्धायुक्त मनवाला जे प्राणीयो निरंतर गुरुजक्तिने विषे आसक्त थइ बे प्रकारना तपने विषे तत्पर रहे ठे तेउ थोमा कालमां मुक्ति नगरी प्रत्ये जनारा थाय ठे अरिहंत प्रजुनो आवो धर्मोपदेश सांजली सर्व सन्ना उत्तम संवेगवाली थइ गइ; जेथी केटलाके चारित्र अने केटलाके श्रावक धर्म अंगीकार कर्यो. शंख राजा पोतानुं सर्व राज्य तृणनी पेठे त्यजी दइ प्रजुनी पासे तेमनो प्रथम गणधर थयो. प्रजुने शंखादिक साठ हजार शिष्यो (साधुउ), साठ हजार अने आठसो साध्वीयो, एक लाख अने नव्यासी हजार श्रावको तथा त्रण लाख अने एकाशी हजार श्राविकाउ हती. श्री कुंथुनाथ प्रजु तेवीश हजार अने सामासातसो वर्ष पृथ्वी उपर विहार करीने पठी सम्मेतशिखर पर्वत उपर एक मासना अनशनथी कृतिका नक्षत्रमां चंद्रनो योग ठते मुक्तिरमणीने वर्या. पठी देवताउए त्यां आवी हर्ष सहित प्रजुनो निर्वाण महोत्सव कर्यो. घणा साधुउ प्रजुनी साथे सिद्धिपुरी प्रत्ये गया. पठी कोटी शीलाने विषे श्री कुंथुनाथ जिनेश्वरनी पाठल कोटी साधुउ सहित अठावीश युगपुरुषो मुक्ति पाम्या.

॥ इति कुंथुनाथ चरित्रम् ॥

॥ श्री अरनाथ चरित्रम् ॥

पूर्व विदेहक्षेत्रना विभूषणरूप मंगलावती विजयने विषे अमरावतीथी पण अधिक समृद्धिवंत रत्नसंचया नामनी नगरी छे. त्यां इंद्रनी पेठे न्यायमार्गे प्रजानुं पालन करनार अने असंख्य भोग संपत्तिना धणी एवा महीपाल नामना भूपतिये दीर्घकाल पर्यंत राज्य कर्युं. पछी गुरुना मुखथी धर्म सांभली वैराग्यवंत थयेला ते भूपतिये पोताना म्होटा समृद्धिवंत राज्यने त्यजी दइ चारित्र लीधुं. अनुक्रमे अगीयार अंगनो अभ्यास करी अने गीतार्थपणुं पामी तेमज उत्कृष्ट तप अने संयममां उद्यमवंत थइने पृथ्वी उपर विहार करता ते मुनि बहु वर्ष पर्यंत शुद्ध संयमनुं आराधन करीने तथा विश स्थानक तपथी अरिहंत गोत्रकर्म बांधीने पछी मृत्यु पामी सर्वार्थसिद्ध देवलोकने विषे सुखकारी तेत्रीश सागरोपमना आयुष्यवंत एवा देवतापणे उत्पन्न थया. त्यांथी चवीने ते महिपालनो जीव आ भरतक्षेत्रना हस्तिनापुर नगरना सम्यक् दर्शनथी अति निर्मल एवा सुदर्शन राजानी श्रेष्ठ रूपवाली देवी नामनी राणीना उदरने विषे चौद स्वप्नने सूचवीने अवतर्यो. अढारमा जिनेश्वर श्री अरनाथ प्रभुना जन्म समये रेवती नक्षत्र हतुं, माटे ते जिनेश्वरनो जन्म रेवति नक्षत्रमां थयो छे.

पछी छपन्न दिग्कुमारीकाये मली प्रभुनो जन्म महोत्सव कर्यो. चोसठ इंद्रोए पण प्रभुने मेरुपर्वत उपर लइ जइ हर्षथी अभिषेक कर्यो. पछी इंद्रे तेमने पोतानी माता पासे मूक्या. सुदर्शन महाराजाए पण हर्षथी मनुष्योने आश्चर्यकारी एवो पुत्रनो जन्म महोत्सव कर्यो. ज्यारे प्रभु माताना गर्भने विषे आव्या हता त्यारे माता श्रीदेवीये स्वप्नामां रत्ननिर्मित आरो (पैडानो वचलो भाग) दीठो हतो, ते उपरथी पिताए पुत्रनुं नाम 'अर' पाड्युं. निरंतर देवताउथी विंटलायला तथा उत्तम मुखवाला प्रभु वय अने गुणोथी चंद्रनी पेठे अधिक वृद्धि पामवा लाग्या. अनुक्रमे अदृश्य आहार अने नीहारवाला, उज्वल अंग, रुधिर अने मांसवाला, प्रफुल्लित कमलना समान श्वासवाला, वज्रना समान कटिभागवाला, वैडुर्यमणिना समान राता हाथ अने प्रसंशा करवा योग्य नख तथा होठवाला, गुप्त सांधायुक्त ढींचणवाला, हाथीनी सुंढ समान साथळवाला, गोलाकार जांघवाला, सुवर्णना कु-

र्म समान सुशोभित बन्ने चरणवाला अने मेघना समान गंभिर शब्दवाला श्री अरनाथ प्रभु सर्वे माणसोने प्रियकारी थया. पछी एकवीश हजार वर्ष कुमार अवस्थामां गये छते पिता सुदर्शन भूपतिये तेमने हर्षथी राज्याभिषेक कर्यो. राज्य भोगवतां जेटलामां एकवीश हजार वर्ष थयां तेटलामां तेमनां शस्त्रमंदिरने विषे चक्ररत्न उत्पन्न थयुं एटले अनुक्रमे मागधादिक सर्व भरतक्षेत्रने साधी प्रभुए बीजा तेटलाज वर्ष चक्रवर्त्तीनुं सुख भोगव्युं.

पछी लोकांतिक देवताओए प्रतिबोध करेला अने चोसठ इंद्रोये सेवन करेला स्वयंबुद्ध ते अरनाथ प्रभु वार्षिक दान आपी सुवर्ण अने रत्नथी निर्माण करेली, स्वर्गना पुष्पोनी मालावाली, वैडुर्यमणि तथा स्फाटिकमणिना उभा करेला स्तंभवाली, अति सुशोभित, गोशीर्षचंदनथी घणा सुगंधवाली, ध्वजादिकनी शोभावाली अने मनुष्य तथा देवताओए उपामेली वैजयंती नामनी पालखीमां बेसी हजारो भूपतियोथी परवर्या थका सहस्राम्र वनमां आव्या. त्यां दीक्षा धारण करीने पछी चतुर्ज्ञानी एवा ते अरनाथ प्रभु त्रण वर्ष पर्यंत छद्मस्थावस्थाए विहार करी फरी सहस्राम्र वनमां आव्या. त्यां पुष्पना परागरूप समृद्धिमां लब्ध थयेला भ्रमरनी मालावाला अने कोकिलाना मधुर स्वरथी मनोहर एवा आम्र वृक्षनी नीचे शुक्लध्यानरूप अग्निथी दग्ध थइ गयो छे घातिकर्मरूप काष्ठसमूह जेमनो एवा ते अरनाथ प्रभुने लोकालोकनुं प्रकाश करनार केवलज्ञान प्राप्त थयुं. ते वखते गाढ मेघनी पंक्तिथी प्रगट थयेला चंद्रनी पेठे सुरेंद्रोए पूजन करेला प्रभु अत्यंत मनोहर कांतिवंत थया. पछी देवताओए रचेला समवसरणने विषे प्रभुए योजनगामिनी वाणीवडे त्रण जगतूने हर्ष पमाडनारी देशना आपी. ते आ प्रमाणे.

हे भव्य प्राणीयो! जड मनुष्यो काचना ककडाने वैडुर्यमणिनी पेठे आ असार संसारने अधिक साररूप माने छे. वली वर्षादथी जेम वृक्षो वृद्धि पामे छे तेम प्राणीयोना विविध प्रकारना कर्म करीने भव भव प्रत्ये संसार वृद्धि पामे छे. तेमज "हुं म्हारा स्वार्थने थोडा कालमां साधीश." एम विचार करतो प्राणी अरण्यमां चोरवडे बंधाता धनवंत पुरुषनी पेठे तत्काल मृत्युरूप दूतथी बंधाय छे. वली मिथ्याबुद्धि प्राणी "आ म्हारी माता, आ म्हारो पिता, आ म्हारा बंधुओ" एम माने छे, परंतु एम नथी जाणतो के, आ शरीर पण म्हा-

रुं नथी. नाना प्रकारना रूपथी निरंतर संसारने विषे भ्रमता एवा सर्वे प्राणीयोने कोण पोतानुं अने कोण पारकुं छे? अर्थात् कोइ नथी. वली जेम ऊंघी गयेला प्राणीयोनी रात्री सर्वथा वृथा जाय छे तेमज मोहथी घेरायला मूढ प्राणीनो जन्म पण वृथा जाय छे, तेथी आ संसारने धिक्कार छे! धिक्कार छे!! हे भव्य प्राणीयो! एटला माटे संसारना स्वरूपने जाणनारा विवेकि पुरुषोए प्रमादनो नाश करी धर्मने आचरण करवो." प्रभुनी आवी धर्मदेशना सांभली सभा आनंदयुक्त थइ. पछी केटलाके श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो अने केटलाके चारित्र लीधुं. कुंभ राजाए वैराग्यने लीधे राज्यनो तृणनी पेठे त्याग करी दीक्षा लइ श्री अरनाथ जिनेश्वरना प्रथम गणधरपदने धारण कर्युं. पछी देवताओ प्रभुनो महिमा करीने नंदीश्वरद्वीपे गया. श्री अरनाथ प्रभुने साठ हजार साधुओ, तेटलीज गुणवंत साध्वीयो, एक लाख अने ऍंशी हजार श्रावको, तथा त्रण लाख अने चोराशी हजार गुणवंत श्राविकाओ हती. पछी भगवाने समेतशैल शिखर उपर एक मासने अनशने निवृत्तिपद धारण कर्युं. ते वखते देवताओए आवीने प्रभुनो मोक्ष महोत्सव कर्यो. आ अरनाथ जिनेश्वरना तीर्थने विषे चोविश युगवडे कोटिशिला नामना पर्वत उपर बारक्रोड साधुओ सिद्धिपद पाम्या छे. मल्लिनाथना तीर्थने विषे वीश युगवडे छ क्रोड साधुओ सिद्धिपद पाम्या छे. मुनि सुव्रतना तीर्थने विषे त्रण क्रोड साधुओ सिद्धिपद पाम्या छे अने श्री नमिनाथना तीर्थने विषे एकक्रोड साधुओ सिद्धिपद पाम्या छे. एज कारण माटे कोटिशिला तीर्थ सर्व तीर्थोमां उत्तम कहेवाय छे.

॥ इति श्री अरनाथ चरित्रम् ॥

॥ अथ श्री महापद्म चरित्रम् ॥

आ भरतवर्षना कुरुक्षेत्रने विषे गजपुर नामे नगर छे. त्यां इक्ष्वाकुकुलमां उत्पन्न थयेलो पद्मोत्तर राजा राज्य करतो हतो. तेने श्रावक धर्ममां तत्पर एवी ज्वाला नामे मुख्य पट्टराणी हती. तेने एक सिंहस्वप्नसूचित विष्णुकुमार नामनो अने बीजो चौद महास्वप्ने सूचित चक्रीपदने धारण करनारो महापद्म नामनो एम बे पुत्रो हता. अनुक्रमे ते बन्ने पुत्रो सर्व कलामां प्रविण थ-

या. पद्मोत्तर राजाए विष्णुकुमारने राज्यसंपत्ति आपवा मांडी, पण तेणे ते न लीधाथी महापद्मने युवराज पद्वी आपी.

हवे आ वखते अवंती नगरीमां श्रीधर्म नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने बुद्धिनो समुद्र नमुचि नामे महामंत्री हतो. एक दिवस श्री मुनिसुव्रत स्वामिना शिष्य सुव्रत नामना आचार्य त्यां आव्या एटले नगरवासी जनो तेमने वंदना करवा जवा लाग्या. ते जोइ राजाए पोताना प्रधान नमुचिने पूछ्युं के, "हे प्रधान! आ म्हारी नगरीना लोको क्यां जाय छे?" प्रधाने उत्तर आप्यो के, "हे नाथ! उद्यानने विषे जैन साधुउ आवेला छे, तेमने वंदना करवा माटे ए लोको जाय छे." नृपतिये कह्युं. "आपणे पण निश्चे त्यां जइए." मंत्रीये कह्युं. "आपे त्यां मौन धारण करवुं. कारण के, हुं तेउनी साथे वाद करीने तेमने जीतीश." राजा ते वात अंगीकार करी मंत्री सहित मुनि पासे गयो. पछी मंत्रीये सूरीने पूछ्युं. "हे सूरि! यशुमान कांतिवाला तमे शुं शुं जाणो छो?" सूरिये उत्तर आप्यो के, "हे मंत्रि! आप जे पूछशो ते अमे कहीशुं." एवामां एक बाल शिष्ये सूरिने कह्युं. "हे जगवन्! मने आज्ञा आपो; हुंज एने जीती तत्काल जैनधर्मनी प्रजावना करुं." पछी गुरुनी आज्ञाथी बालमुनिये नमुचि प्रधानने बोलतो बंध करी दीधो; तेथी राजादि सर्वलोको तेनी निंदा करवा लाग्या. ते उपरथी अत्यंत द्वेषयुक्त थयेलो नमुचि रात्रीने विषे मुनिना समूहनो घात करवा चाल्यो. ते वात राजाए जाणी, तेथी तेने पोताना देशमांथी काढी मूक्यो एटले नमुचि हस्तिनापुर प्रत्ये गयो. त्यां पण ते पूर्वना पुण्यने लीधे महापद्म राजानो मंत्री थयो. कह्युं छे के, प्राणीयोने पुण्यने लिधे आ लोकमां अने परलोकमां शुं शुं नथी मलतुं? अर्थात् सर्व मले छे.

एक दिवस पद्मोत्तर नृपतिना देशने प्रत्यंतपल्लीपति सिंहबल सैन्य सहित लुंटवा लाग्यो. ते उपरथी राजाए नमुचिने तेना सामो युद्ध करवा मोकल्यो. नमुचिये पण शत्रुना सर्व सैन्यनो नाश करी सिंहबलनो दुर्ग (किल्लो) पोताने स्वाधिन कर्यो. तेथी महापद्म कुमार प्रसन्न थइ कहेवा लाग्यो के, "हे महामंत्रि! वरदान माग." नमुचिये कह्युं के, "हे राजकुमार! आप ए वरदानने हवणां जंमारमां राखो, हुं ते अवसरे मागीश." राजकुमार

महापद्मे ते वात कबुल करी.

कोइ वखते जैन शासनने विषे अनुरक्त एवी श्री ज्वाला राणीये अरिहंत प्रभुना मंदिरने विषे सुशोभित जैनरथ कराव्यो. ते वखते ज्वालादेवीनी बीजी मिथ्यात्वी एवी लक्ष्मी नामनी शोक्ये ब्रह्मानो रथ कराव्यो. पछी लक्ष्मीये राजाने कह्युं. "हे नृपति! म्हारो रथ नगरने विषे आगल चाले एटले ज्वालाये पण राजाने कह्युं के, "हे महाराज! जो म्हारो रथ आगल नहि चलावो तो हुं अनशन लइश." पछी महापद्म राजाए बन्ने रथोने नगरमां साथे चलाव्या ते उपरथी खेद पामेलो महापद्म कुमार नगरथी चाली नीकल्यो. अनुक्रमे एकलो जतो एवो ते महापद्म एक तापसना आश्रममां जइ पहोंच्यो.

हवे एम बन्युं के, ते वखते चंपानगरीने विषे जन्मेजय नामे राजा राज्य करतो हतो. त्यां काल नृपतिये आवीने ते नगरीने घेरो घाल्यो; तेथी ते बन्ने राजाउने म्होटुं युद्ध थयुं. तेमां जन्मेजय राजा नाशी गयो; तेथी तेनुं सर्व अंतःपुर पण नाशी गयुं. नागश्री राणी पोतानी पुत्री मदनावली सहित तापसोना आश्रममां जइने त्यां तेमना शरणे रही. महापद्मकुमार पण आहिंज रहेतो हतो, तेथी तेने अने मदनावलीने परस्पर अत्यंत प्रेम थयो एटले नागश्रीये मदनावलीने कह्युं के, "हे राजपुत्री! तुं नैमितिके कहेला वचनने नथी संभारती? तुं चक्रवर्त्तीनी स्त्री थवानी छे, माटे त्हारे जेना तेना उपर आसक्त थवुं नहि." तापसोना अधिपतिये पण कुमारने कह्युं के, "हे वत्स! तुं हवे पोताने स्थानके जा." ते उपरथी कुमार विचार करवा लाग्यो के, "हुं आ मदनावलीनी साथे लग्न करी, भरत क्षेत्रने साधी, जिन भुवनथी पृथ्वी मंडलने सुशोभित करी अने पछी रथ महोत्सव कराववाथी म्हारी मातानी प्रतिज्ञा पूर्ण करीश."

पछी सिंहनी पेठे महाभुजबलवालो ते महापद्म कुमार पृथ्वी उपर भमतो भमतो श्री सिंधुनंदनपुर प्रत्ये गयो. त्यां ते दिवस कौमुदि महोत्सव होवाथी नगरनी बहार हर्षित चित्तवाली स्त्रीयो विविध प्रकारनी क्रीडाथी रमती हती. ते वखते महासेन राजानो हाथी स्त्रीयोना कलकलाटने सांभली, आलान स्तंभने उखेडी अने मावतने मारी दोडतो दोडतो ज्यां स्त्रीयो रमती हती त्यां आवी पहोंच्यो. स्त्रीयो पण अत्यंत भय पामती छती "हे न-

रोतम! अमारुं रक्षण करो! रक्षण करो!!" एम पोकार करवा लागी. पछी दया धारी महापद्मकुमार ते स्त्रीयोनां आवां करुणस्वर सांभली तत्काल दोमी क्षणमात्रमां ते हाथीने हंकारी काढवा लाग्यो एटले तो ते हाथी पण स्त्रीयोने त्यजी दइ कुमार सामो दोम्यो. स्त्रीयो पण "हवे आ कुमार निश्चे मृत्यु पामशे." एम धारी पोकार करवा लागी. पछी कुमारे तत्काल पोतानुं पासे राखवानुं वस्त्र हाथीनी आगल फेंक्युं एटले दुष्ट चित्तवालो ते हाथी वस्त्रने कुमार जाणी तेने पोताना दांतोथी प्रहार करवा लाग्यो. आ वखते महासेन नृपति तत्काल त्यां आवी कुमारने केहेवा लाग्यो के, "तुं ए दुष्ट हाथीना सन्मुख थइ पोतानी आत्महत्या न कर." कुमारे कह्युं. "हे नरेश्वर! आप क्षण मात्र स्वस्थ थइने जूउ के, हुं पोतानी कलावमे ए दुष्ट हाथीने पण केवी रीते वश करुं छुं."

पछी चारे तरफ फरतो एवो कुमार ते हाथीने शास्त्रमां कहेली विधि प्रमाणे खेलावीने तेनी पीठ उपर चमी गयो. कुमारनी आवी जगत्‌ने विस्मय करनारी कला जोइ हर्षित थयेलो महेंद्रसिंह राजा तेने सर्व प्रकारना आदरथी पोताने घेर तेमी गयो अने त्यां तेणे तेने महोत्सव पूर्वक पोतानी एक सो कन्या परणावी. पछी कुमार महापद्म एक दिव्यभुवनने विषे ते पोतानी एकसो प्रियानी साथे क्रीमा करवा लाग्यो, परंतु मदनावलीने तो ते कंठना हारनी पेठे निरंतर हृदयने विषेज धारण करतो हतो.

कोइ वखते रात्रीने विषे कोइएक वेगवती नामनी विद्याधरीये महापद्म कुमारनुं हरण कर्युं. कुमार जागी उठ्यो एटले तेणे विद्याधरीने जोइ मूठी उपामीने कह्युं के, "अरे! तुं कोण छे अने म्हारुं केम हरण करे छे? तेणे उत्तर आप्यो के, "हे राजकुमार! आप तेनुं कारण सांभलो.

वैताढ्य पर्वतने विषे सूरोदय नामे नगर छे. त्यां विद्याधरोनो अधिपति इंद्रधनु नामे प्रसिद्ध राजा राज्य करे छे. तेने मनोहर श्रीकांता नामे स्त्री छे. तेउने एक जयचंद्रा नामनी पुत्री छे. ते पुत्रीने इंद्रधनु नृपतिये भरतक्षेत्रना सर्वे राजाउ पट्टने विषे आलेखीने बताव्या, परंतु कोइ पण राजा तेने प्रीतिकारी थयो नहि, तेथी ते कोइने पोतानो पति करवाने इच्छति नथी. पछी पट्टने विषे तमारुं स्वरुप आलेखीने बताव्युं एटले तो ते तत्काल मोह पामी

अने कहेवा लागी के, "निश्चे आ भवने विषे तो म्हारे आज पति थाओ. नहितो अवश्य मरण एज श्रेयकारी छे. म्हारे आ विना बीजा पुरुषो बंधु समान छे."

(वेगवती विद्याधरी महापद्म कुमारने कहे छे के,) "हे कुमारेंद्र! पछी में जयचंद्रानो मनोरथ तेना मातपिताने कह्यो. ते उपरथी तेउए मने तत्काल तमने त्यां लइआववानी आज्ञा करी. वली में पण अहिं आवतां जयचंद्रा पासे एवी प्रतिज्ञा करी छे के, हे कन्या! जो हुं महापद्म कुमारने अहिं नहि लावुं तो अग्निमां प्रवेश करीश, माटे आपना प्रसादथी जेम म्हारुं मृत्यु न थाय तेम आप करवुं. वली आप चित्तने विषे बीजुं कंइ पण लाववुं नहि." वेगवतीनां आवां वचन सांभली, पद्मोत्तर भूपतिनो पुत्र (महापद्म कुमार) हर्ष पाम्यो. वेगवती पण कुमारने सूरोदय नगरे लइ जइ पोताना राजा इंद्रधनुने सर्व वात निवेदन करी. पछी इंद्रधनुए महोत्सवपूर्वक कुमारनो पोतानी पुत्री साथे पाणी ग्रहण कराव्यो. जयचंद्राये पण वेगवतीनो घणोज सत्कार कर्यो.

हवे जयचंद्राना मामाना पुत्रो गंगाधर अने महिधर के, जेउ महाबलवंत हता, तेउ आ वात सांभलीने अत्यंत क्रोधातुर थइ हाथी, घोडा, रथ अने सुभटो सहित आकाश मार्गे थइने त्यां आव्या अने कहेवा लाग्या के, "जे अमारे विद्याधरोने परणवा योग्य कन्या छे, ते आ साधारण माणस केम परणी जाय?" पछी ते विद्याधरोने आवेला सांभली कुमार तेउना सामो गयो, जेथी तेनुं विद्याधरोना सुभटोनी साथे महा घोर युद्ध थयुं. ज्यारे कुमार महापद्म अने ते विद्याधरोनुं युद्ध चाल्युं ते वखते एवो कोइ हाथी, घोडा के सुभट नहोतो के, जे कुमारना शस्त्रथी घायल थया विनानो रह्यो होय. छेवट विद्याधरो पोताना सैन्यने नाश पामेलुं जाणी भयथी नाशी गया. पछी प्राप्त थयो छे विजय जेनो एवा महापद्म कुमारनो वैताढ्य पर्वतना सर्व विद्याधरोए सत्कार कर्यो. त्यां कुमारने स्त्री रत्न विना बीजा तेर रत्नोनी प्राप्ति थइ, तेथी तेणे बलवडे सर्व भरतक्षेत्रने साध्युं.

पछी नव निधानवालो, बत्रीश हजार राजाउथी सेवायलो अने एकठी एवी चोसठ हजार स्त्रीयोनी साथे क्रीडादि आनंद करनारो ते महापद्म कुमार छ खंडवाला भरतक्षेत्रनुं राज्य भोगवतो हतो पण मदनावली विना

ते सर्वेने निरंतर निरसनी पेठे मानवा लाग्यो. पढी कोइ वखते तापसोना आश्रम प्रत्ये गयेला श्री महापद्म चक्रवर्तीने जन्मेजय राजाए पोतानी पुत्री मदनावली तत्काल परणावी. तेथी ते तेनी स्त्रीरत्न थइ. पढी महापद्म चक्रवर्तीये हस्तिनापुरमां आवी स्नेह सहित माता पिताना चरणने विषे प्रणाम कर्यो एटले पुत्रनी आवी विस्मय करनारी चक्रवर्तीपणानी संपत्ति जोइ माता पितादि नगरवासी जनो तेना वखाण करवा लाग्या.

आ वखते श्री मुनिसुव्रत स्वामीना शिष्य श्री सुव्रत सूरि हस्तिनापुरमां आव्या एटले पद्मोत्तर राजा त्यां जइ तेमनुं वंदन करी धर्मोपदेश श्रवण करवा बेठो. गुरुए तत्काल संसारनो नाश करनारी सरस अमृत समान देशना आरंभी. राजा पद्मोतर ते धर्मदेशनाने सांभली परम वैराग्यवासी थयो बतो गुरुने कहेवा लाग्यो के, "हुं म्हारा राज्यने विषे पुत्रने स्थापन करी चारित्र अंगीकार करीश." गुरुए "हे भूप ! धारेला कार्यमां विलंब न करो." एम कह्युं एटले राजा तत्काल नगरमां आवी प्रधानोने कहेवा लाग्यो के, "तमे विविध प्रकारना महोत्सवपूर्वक म्हारा म्होटा पुत्र विष्णुकुमारने राज्याभिषेक करो." पढी विष्णुकुमारे भूपतिने कह्युं के, "हे तात ! म्हारे राज्यनुं कांइ प्रयोजन नथी, कारण राज्यथी तो नरकनी प्राप्ति अने भव भव प्रत्ये निरंतर भ्रमण करवुं पमे बे. वली हे तात ! फक्त आरंभमां मधुर परंतु परिणामे अत्यंत कमवा एवा विषफल समान भोगनुं म्हारे कांइ पण प्रयोजन नथी. हुं तो आपनी साथेज भवनोच्छेद करवा माटे चारित्र ग्रहण करीश." पढी पद्मोतर राजाए महापद्मने बोलावीने कह्युं के, "हे पुत्रोत्तम ! तुं म्हारा संतोषने माटे राज्यनो स्वीकार कर." सुविनीत एवा महापद्मे पिताने कह्युं. "आपने पदे विष्णुकुमारने स्थापो; हुं तेमनी निरंतर पूर्ण प्रेमे सेवा करीश." राजाए कह्युं. "हे सुपुत्र ! ए राज्यना भारने अंगीकार करतो नथी." पढी महापद्मे पिताने हर्ष करवा माटे तत्काल राज्यने स्वीकार्युं अने विष्णुकुमारे वैराग्यथी पद्मोत्तर भूपतिनी साथे श्री सुव्रत गुरुनी पासे महोत्सव पूर्वक दीक्षा लीधी. आ महापद्म पण भरतक्षेत्रने विषे प्रसिद्ध एवो नवमो चक्रवर्त्ती थयो. आटला कालसुधी तेनी बन्ने माताउना रथ तेवीज स्थितिमां रह्या हता. पढी चक्रवर्त्ती महापद्मे पोतानी माताना संतोषने माटे जिनेश्व-

रनो रथ सर्व नगरमां विस्मय करनारा महोत्सव पूर्वक फेरव्यो, ते उपरथी ते बहु प्रसन्न थइ. लोकमां जिन शासननी म्होटी उन्नति थइ अने ते दिवसथी आरंभीने बहु लोको जैनधर्मने विषे अनुरागवाला थया. भरतक्षेत्रने विषे निरंतर अरिहंत धर्मनी प्रभावना करता एवा महापद्म चक्रवर्त्तीये पृथ्वीने विषे जिनेश्वरोना लाखो मंदिरो कराव्यां. पद्मोतर राजर्षि पण दीर्घकाल सुधी अत्यंत निर्मल एवा चारित्रने पाली समग्र कर्ममलने खपावी अनुक्रमे ज्ञान पामी अंते मोक्ष पाम्या. वली विविध प्रकारना तप, कर्म, चारित्र विगेरेना कार्यमां तत्पर एवा विष्णुकुमार महर्षिने पण तत्काल सर्व लब्धियो उत्पन्न थइ, तेथी ते कोइ वखते आकाशमां गरुडनी पेठे मेरुपर्वत समान म्होटो देह करीने विचरवा लाग्या. वली क्यारेक कामदेवनी पेठे दिव्यरूप धारण करी अने क्यारेक सुरेंद्रनी पेठे बहुरूपी थइ फरवा लाग्या.

हवे एवामां श्री सुव्रतसूरि अनेक साधुउ सहित चोमासुं रहेवाने माटे हस्तिनापुर नगरना उद्यानने विषे आव्या. ते वखते पूर्वे वादथी जिताएला अने एज कारणथी गुरु उपर द्वेष राखनारा नमुचि प्रधाने महापद्म नृपति पासे पूर्वे भंडारमां राखी मूकेला वरदानने माग्यो. महापद्मे कह्युं. "हुं तने शुं आपुं ?" नमुचि प्रधाने कह्युं. "हे नाथ! आपनुं राज्य आपो." पछी महापद्म नृपति नमुचिने राज्याभिषेक करी पोते अंतःपुरमां रह्यो. पछी माणसोनी मध्ये चंद्र समान नमुचि तत्काल यज्ञस्थान प्रत्ये आवीने यज्ञना मीषथी अनेक जीवोनो वध करवा लाग्यो. नमुचिने राज्य प्राप्त थयुं, तेथी सर्व प्रजा उत्साहवंत थइने हर्षथी वधामणी माटे आववा लागी. पछी नमुचि विचारवा लाग्यो जे, "म्हारा राज्यने नहि सहन करी शकनारा श्वेतांबर साधुउ आव्या नहि." आवुं छिद्र शोधी काढी तेणे मुनिने बोलावीने कह्युं के, "जे वखते जे ब्राह्मण, क्षत्रीय अथवा बीजो कोइ नवो राजा थाय ते वखते सर्व पाखंडियोए आवीने वधामणी आपवी जोइए. कारण सर्व तपना कार्यो राजाथीज रक्षण कराय छे, परंतु अहो! दुष्ट आचारवाला, मर्यादा रहित अने दुष्ट हृदयवाला तमे पोताना धर्मथी गर्विष्ठ थया छता अने सर्व प्रकारना पाखंडपणे बहु लोकोने दूषित करता छता म्हारा राज्यनी निंदा करो छो. माटे हवे तमारे म्हारा राज्यने त्यजी दइ बीजे चाल्या जवुं. वली तमा-

रा मध्ये जे कोइ साधु आ म्हारी आज्ञाने उल्लंघन करशे ते निश्चे म्हारे वध करवा योग्य छे." नमुचिनां आवां वचन सांजली गुरुए कह्युं. "अमारे राजा पासे जवुं कल्पतुं नथी, माटे अमे नहोता आव्या. वली अमे कोइनी निंदा पण करता नथी. कारणके, अरिहंत प्रजुना धर्मने जाणनारा अने समता परिणामथी जावित आत्मावाला मनुष्यो क्यारे पण कोइ उपर रागद्वेष करता नथी." सूरिये आ प्रमाणे कह्युं तोपण दुष्ट हृदयवालो ते नमुचि कहेवा लाग्यो के, "हे सूरि! जो तमारामांथी एक पण साधुने सात दिवस उपरांत म्हारा नगरने विषे अथवा म्हारा राज्यने विषे देखीश तो तेने म्हारा सेवको पासे मजबुत बंधनथी बंधावी तत्काल मारी नंखावीश, माटे हे मुनींद्रो! तमारे निःशंसय म्हारो देश त्यजी दइ बीजे चाल्युं जवुं." पछी सूरिये उद्यानमां आवी ते वात पोताना गणने कही के, "हवे आपणे शुं करवुं?" एटलामां ते साधुने विषे एक मुनि बोली उठ्या के, "छ हजार वर्ष सुधी उग्र तप करीने हमणां विष्णुकुमार मुनि मेरुपर्वतनी चुलिकाने विषे चोमासुं रह्या छे. त्यां तेमनी पासे जो कोइ विद्यालब्धिवाला जाय तो ते आपणुं कार्य करे." एटलामां एक बीजा साधुए कह्युं. "म्हारी त्यां जवामां शक्ति छे, परंतु पाछुं आववानी शक्ति नथी." गुरुए कह्युं. "हे साधु! तमने अहिं पाछा तो विष्णुकुमार लावशे." पछी ते मुनि तत्काल मेरुपर्वतनी चूलिका प्रत्ये गया. विष्णुकुमार तेमने आवता जोइ पोताना मनमां विचार करवा लाग्या के, "निश्चे संघथी पण नहि बनी शके एवुं मोटुं कार्य आवी पड्युं देखाय छे. कारण एम न होय तो आ वर्षाऋतुमां अहिं साधुनुं आववुं क्यांथी होय? पछी ते मुनिये विष्णुकुमारने वंदना करी गुरुए कहेली सर्व वात निवेदन करी. पछी विष्णुकुमार ते मुनिने साथे लइ गजपुर प्रत्ये गया. त्यां तेमणे गुरुने नमस्कार करीने कह्युं. "हे मुनीश्वर! आपने जे कार्य होय ते झट कहो? गुरुए कह्युं. "हे वत्स! साधुउने प्राप्त थयेला जयंकर उपद्रवने नाश करो. कारणके, शक्तिवंत पुरुषे संघना कार्यने विषे पोतानी शक्ति गोपववी नहि."

पछी साधुउ सहित विष्णुकुमार नमुचिपासे गया. त्यां जूपति विना बीजा सघलाए तेमने वंदना करी. विष्णुकुमारे नमुचिने कह्युं. "हे नमुचि! ज्यां सुधी चोमासुं छे त्यां सुधी साधुउने त्हारा नगरने विषे रहेवा दे." नमु-

चिये कह्युं " हे विष्णुकुमार ! तमे एम शा माटे बोलो छो ? साधुओए पांच दिवस रही पछी चाल्या जवुं." विष्णुकुमारे कह्युं. " त्यार पछी साधुओ ह्हारना उद्याननें विषे रहेशे." विष्णुकुमारनां आवां वचन सांभली क्रोधातुर थयेला नमुचिये तत्काल कह्युं के, "अरे! पोताना माता पिताने दूषित करनारा, निर्लज्ज, मलिन अने सर्व पाखंडियोमां अधम एवा तमारे अहियां थोडीवार पण न रहेवुं. वली जो तमारे जीवितनुं कार्य होय तो सर्वथा म्हारा राज्यने त्यजी देवुं. नहि तो हुं तमारो नाश करीश. " तेनां आवां वचन सांभली अत्यंत क्रोधातुर थयेला विष्णुकुमारे फरीथी कह्युं के, " हे नृपति ! त्रण पगला पृथ्वी तो आप. " मंत्री नमुचिये कह्युं. "हुं तमने त्रण पगलां पृथ्वी आपुं छुं; परंतु तेनी ब्हार कोइ पण साधुने देखीश तो तेने निश्चे मारी नाखीश. "

पछी मुनिओना वधनी वार्ताथी उत्पन्न थयेला क्रोधरूप अग्निवडे ज्वाजलित हृदयवाला विष्णुकुमार, पोते राजाओनां जोता छता वधवा लाग्या. नाना प्रकारना रूपने धारण करनार अने गर्जना करता छतां अनुक्रमे वृद्धि पामता ते एक लाख योजन प्रमाण देहवाला थया. चरणना प्रहारथी गाम, नगर, खाण, पर्वत अने समुद्रथी व्याप्त एवा पृथ्वीनां पीठने कंपावता ते महामुनि पर्वतोना शिखरोने पाडवा लाग्या. महासमुद्र क्षोभ पामवा लाग्यो. ज्योतिश्चक्र दूर नासवा लाग्युं अने सर्व देवताओ "आ कोइ प्रलयकाल समान उत्पन्न थयो छे. " एम संशय करवा लाग्या. आ प्रमाणे त्रण जगत्‌ना क्षोभथी इंद्रे ते मुनिने अत्यंत कोप पामेला जाणी तेमने शांत करवामाटे रंभादिक देवांगनाओने अने गंधर्वोने मोकल्या. पछी ते देवांगनाओ उपशमधारी एवा विष्णुकुमारना काननी पासे जइ उंचे स्वरे एम गायन करवा लागी के, " आप प्रबोध पामो अर्थात् शांत थाओ. कारण के, आपे करेलो जे आ क्रोध छे ते स्वजन अने परजन ए बन्नेने ताप पमाडनारो थयो छे. अरिहंत भगवंतोए पण क्रोधने संसारमां गाढ दुर्गतिनुं कारण कहेलो छे, माटे हे महामुनि ! उपशम धारण करो. कारण के, मुनियो तो उपशमना भाण्डागार होय छे. वली साधुओने क्रोध करवो ए चारित्र तथा तपनी हानि करनार छे. एम सर्व पुरुषो माने छे, माटे हे मुनिश्वर ! संसारना निबंधनरूप क्रोधने नाश करो ! नाश करो ! !

विष्णुकुमार वृद्धि पामे छते देवांगनाओ आ प्रमाणे क्रोधने उपशम क-

रा मध्ये जे कोइ साधु आ म्हारी आज्ञाने उल्लंघन करशे ते निश्चे म्हारे वध करवा योग्य छे." नमुचिनां आवां वचन सांभली गुरुए कह्युं. "अमारे राजा पासे जवुं कल्पतुं नथी, माटे अमे नहोता आव्या. वली अमे कोइनी निंदा पण करता नथी. कारणके, अरिहंत प्रभुना धर्मने जाणनारा अने समता परिणामथी भावित आत्मावाला मनुष्यो क्यारे पण कोइ उपर रागद्वेष करता नथी." सूरिये आ प्रमाणे कह्युं तोपण दुष्ट हृदयवालो ते नमुचि कहेवा लाग्यो के, "हे सूरि ! जो तमारामांथी एक पण साधुने सात दिवस उपरांत म्हारा नगरने विषे अथवा म्हारा राज्यने विषे देखीश तो तेने म्हारा सेवको पासे मजबुत बंधनथी बंधावी तत्काल मारी नंखावीश, माटे हे मुनींद्रो ! तमारे निःशंसय म्हारो देश त्यजी दइ बीजे चाल्युं जवुं." पछी सूरिये उद्यानमां आवी ते वात पोताना गणने कही के, "हवे आपणे शुं करवुं ?" एटलामां ते साधुने विषे एक मुनि बोली उठ्या के, "छ हजार वर्ष सुधी उग्र तप करीने हमणां विष्णुकुमार मुनि मेरुपर्वतनी चुलिकाने विषे चोमासुं रह्या छे. त्यां तेमनी पासे जो कोइ विद्यालब्धिवाला जाय तो ते आपणुं कार्य करे." एटलामां एक बीजा साधुए कह्युं. "म्हारी त्यां जवामां शक्ति छे, परंतु पाछुं आववानी शक्ति नथी." गुरुए कह्युं. "हे साधु ! तमने अहिं पाछा तो विष्णुकुमार लावशे." पछी ते मुनि तत्काल मेरुपर्वतनी चूलिका प्रत्ये गया. विष्णुकुमार तेमने आवता जोइ पोताना मनमां विचार करवा लाग्या के, "निश्चे संघथी पण नहि बनी शके एवुं मोटुं कार्य आवी पड्युं देखाय छे. कारण एम न होय तो आ वर्षाऋतुमां अहिं साधुनुं आववुं क्यांथी होय ? पछी ते मुनिये विष्णुकुमारने वंदना करी गुरुए कहेली सर्व वात निवेदन करी. पछी विष्णुकुमार ते मुनिने साथे लइ गजपुर प्रत्ये गया. त्यां तेमणे गुरुने नमस्कार करीने कह्युं. "हे मुनीश्वर ! आपने जे कार्य होय ते झट कहो ? गुरुए कह्युं. "हे वत्स ! साधुओने प्राप्त थयेला भयंकर उपद्रवने नाश करो. कारणके, शक्तिवंत पुरुषे संघना कार्यने विषे पोतानी शक्ति गोपववी नहि."

पछी साधुओ सहित विष्णुकुमार नमुचिपासे गया. त्यां भूपति विना बीजा सघलाए तेमने वंदना करी. विष्णुकुमारे नमुचिने कह्युं. "हे नमुचि ! ज्यां सुधी चोमासुं छे त्यां सुधी साधुओने त्हारा नगरने विषे रहेवा दे." नमु-

चिये कह्युं " हे विष्णुकुमार ! तमे एम शा माटे बालो गे ? साधुनए पांच दिवस रही पगी चाल्या जवुं." विष्णुकुमारे कह्युं. " त्यार पगी साधुन व्हारना नद्याननें विषे रहेशे." विष्णुकुमारनां आवां वचन सांजली क्रोधातुर थयेला नमुचिये तत्काल कह्युं के, "अरे! पोताना माता पिताने दूषित करनारा, निर्लज्ज, मलिन अने सर्व पाखंमियोमां अधम एवा तमारे अहियां थोमीवार पण न रहेवुं. वली जो तमारे जीवितनुं कार्य होय तो सर्वथा म्हारा राज्यने त्यजी देवुं. नहि तो हुं तमारो नाश करीश." तेनां आवां वचन सांजली अत्यंत क्रोधातुर थयेला विष्णुकुमारे फरीथी कह्युं के, " हे नूपति ! त्रण पगला पृथ्वी लो आप." मंत्री नमुचिये कह्युं. "हुं तमने त्रण पगलां पृथ्वी आपुं बुं; परंतु तेनी व्हार कोइ पण साधुने देखीश तो तेने निश्चे मारी नाखीश."

पगी मुनिनना वधनी वार्ताथी नत्पन्न थयेला क्रोधरूप अग्निवमे ज्वाजलित हृदयवाला विष्णुकुमार, पोते राजानुनां जोता गता वधवा लाग्या. नाना प्रकारना रूपने धारण करनार अने गर्जना करता गतां अनुक्रमे वृद्धि पामता ते एक लाख योजन प्रमाण देहवाला थया. चरणना प्रहारथी गाम, नगर, खाण, पर्वत अने समुद्रथी व्याप्त एवा पृथ्वीनां पीठने कंपावता ते महामुनि पर्वतोना शिखरोने पामवा लाग्या. महासमुद्र क्षोन्न पामवा लाग्यो. ज्योतिश्चक्र दूर नासवा लाग्युं अने सर्वे देवतान "आ कोइ प्रलयकाल समान नत्पन्न थयो गे." एम शंसय करवा लाग्या. आ प्रमाणे त्रण जगत्ना क्षोन्नथी इंद्रे ते मुनिने अत्यंत कोप पामेला जाणी तेमने शांत करवामाटे रंन्नादिक देवांगनानने अने गंधर्वोने मोकल्या. पगी ते देवांगनान नपशमधारी एवा विष्णुकुमारना काननी पासे जइ नंचे स्वरे एम गायन करवा लागी के, "आप प्रवोध पामो अर्थात् शांत थान. कारण के, आपे करेलो जे आ क्रोध गे ते स्वजन अने परजन ए बन्नेने ताप पमामनारो थयो गे. अरिहंत न्नगवंतोए पण क्रोधने संसारमां गाढ डुर्गतिनुं कारण कहेलो गे, माटे हे महामुनि ! नपशम धारण करो. कारण के, मुनियो तो नपशमना सारवालाज होय गे. वली साधुनने क्रोध करवो ए चारित्र तथा तपनी हानि करनार गे. एम सर्व पुरुषो माने गे, माटे हे मुनिश्वर ! संसारना निबंधनरूप क्रोधने नाश करो! नाश करो ! !

विष्णुकुमार वृद्धि पामे गते देवांगनान आ प्रमाणे क्रोधने नपशम क-

रवा माटे गीत गावा लागी. पछी जेटलामां विष्णुकुमारे नमुचिने पातालप्रत्ये प्रवेश करावavाने तेना मस्तकने विषे प्रथम चरण आरोपण करी अने पछी बीजो पूर्व समुद्रमां तथा त्रीजो पश्चिम समुद्रमां एम मूकीने उन्ना रहे छे तेटलामां ते वृत्तांतने जाणी नयथी कंपतुं छे शरीर जेनुं एवो महापद्म चक्रवर्त्ती तत्काल त्यां आवी गुरुने नमस्कार करीने कहेवा लाग्यो के, “ हे नगवन् ! हवे हुं आवो अपराध नहि करुं. ” पछी महापद्म चक्रवर्त्ती गुरु सहित स्तुतिथी विष्णुकुमारने शांत करवा लाग्यो के, “ हे विष्णुमुनि ! आप अमारा वचनथी देवताउनी शांति माटे तथा संघनी शांति माटे क्षमा करो. ” पछी ते विष्णुकुमार मांम मांम शांत थया अने अनुक्रमे पोताना स्वानाविक स्वरुपने पाम्या. ते दिवसथी आरंनीने लोको विष्णुकुमार मुनिने त्रिविक्रम एवा नामथी कहे छे. पछी समुद्रनी पेठे अत्यंत उपशम पामेला क्रोधवाला गंनीर विष्णुकुमार आलोचना लइ पवित्र आत्मावाला थइ विधि प्रमाणे पृथ्वी उपर विहार करवा लाग्या.

पछी महासत्ववंत एवा विष्णुकुमार मुनीश्वर निःकलंक चारित्रने पाली, उत्कृष्ट केवल ज्ञान मेलवी मोक्ष पाम्या. महापद्म चक्रवर्त्ती पण दीर्घकाल पर्यंत महा नोगोने नोगवीने पछी संसारथी नय पामी पुत्रने पोताना राज्यने विषे स्थापी पोते गुरुपासे चारित्र अंगीकार कर्युं. त्यां सूत्र अने अर्थ बन्नेनो अन्यास करी अत्यंत घोर एवा तप अने चारित्रयुक्त एवा ते मुनीश्वर निरतिचारपणे पोताना धर्मने चीरकाल पर्यंत आराधी, कर्मना क्षयथी केवल ज्ञान पामीने पछी अखंमित सुखना स्थानरूप मोक्षपद पाम्या. श्री महापद्म मुनिनां शरीरनुं प्रमाण वीश धनुष्यनुं अने आयुष्य त्रीश हजार वर्षनुं हतुं. श्री विष्णुकुमार मुनीश्वरनुं पण तेटलुंज हतुं. चक्रधरहिंमीमां विष्णुकुमारने श्री शांतिनाथना शिष्य कह्या छे अने वसुदेवहिंमीमां महापद्मना बंधु कहेला छे.

॥ इति श्री महापद्म चक्रवर्त्ती चरित्रम् ॥

॥ अथ श्री हरिषेण चक्रवर्त्ती चरित्रम् ॥

आ नरत क्षेत्रना कांपिल्य नगरने विषे प्रसिद्ध एवो महाहरि नामे रा-

जा राज्य करतो हतो. तेने सर्व प्रकारना भाग्यादिक गुणवाली मदिरा नामनी स्त्री हती. तेणने चउद स्वप्न सूचित, जगत्ने आनंद पमाडनारो अने महा बलवंत एवो हरिषेण नामे पुत्र थयो. अनुक्रमे ते यौवनावस्था पाम्यो एटले महाहरि भूपतिये हर्षथी तेने महोत्सव पूर्वक पोताना उत्कृष्ट सुखवाला राज्यासने स्थाप्यो अने पोते उत्पन्न थयेला गाढ वैराग्यथी बाह्य तथा आभ्यंतर सर्व परिग्रहने त्यजी दइ तत्काल दीक्षा लीधी.

पछी प्रजानुं पालन करता एवा ते सत्यवादी हरिषेण भूपतिना घरने विषे चौद रत्नो उत्पन्न थयां; तेथी तेणे बलवडे सर्व भरत क्षेत्रने साध्युं एटले बत्रीश हजार राजाउए तेने बारवर्ष पर्यंत अभिषेक कर्यो. पछी जेम इंद्र देवलोक संबंधी सुख भोगवे तेम हरिषेण चक्रवर्त्तीये चक्रवर्त्तीपणाना महाभोगोने दीर्घकाल पर्यंत भोगव्या.

एक दिवस संसारवासथी भयभीत थयेलो ते हरिषेण विचारवा लाग्यो के, "अहो! शुं पुण्यहिन दरिद्री लोको क्यारे पण संपत्तिने पामी शके खरा? अर्थात् नज पामी शके. हुं पूर्वजन्मने विषे करेला पुण्यथीज आ म्होटि संपत्ति पाम्यो छुं, माटे हवे परलोकना हितरूप निर्मल पुण्यने आदरुं." आम विचार करी उत्पन्न थयो छे वैराग्य जेने एवा शुभ हृदयवाला हरिषेण भूपतिये राज्यासने पुत्रने स्थापन करी पोते हजारो राजाउ सहित दीक्षा धारण करी. पछी पृथ्वी उपर विहार करता ते मुनिये दीर्घकाल तीव्र तप करीने कर्मनो क्षय करी अंते केवल ज्ञानने मेलवी मुक्तिपद प्राप्त कर्युं. ए प्रमाणे पंदर धनुष्य प्रमाण शरीरवाला अने दश हजार वर्ष प्रमाण आयुष्यवाला हरिषेण चक्रवर्त्ती मुनि कर्मनो क्षय करी सिद्धिपदने पाम्या.

॥ इति हरिषेण चक्रवर्त्ती चरित्रम् ॥

॥ अथ जय चक्रवर्त्ती चरित्रम् ॥

मगध देशमां राजगृह नगरने विषे समुद्रविजय नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने वप्रा नामे स्त्री हती. तेणने सौभाग्यरूप भाग्यनी भूमी एवो चौद महास्वप्न सूचित जय नामे पुत्र थयो. अनुक्रमे ते युवावस्था पाम्यो

एटले उत्पन्न थयेला वैराग्यवाला पिता समुद्रविजय राजाए तेने पोताने पदे स्थाप्यो. पछी जय नृपति अनुक्रमे चक्रवर्त्तीपणुं पाम्यो एटले तेणे सर्व भरतक्षेत्रने साधी चीरकाल पर्यंत चक्रवर्त्तीना भोगो भोगव्या.

एक दिवस जय चक्रवर्त्ती विचार करवा लाग्यो के, "आवी चक्रवर्त्तीनी संपत्ति शी रीते प्राप्त थती हशे?" आम विचार करतो ते गुरु पासे गयो. त्यां गुरुने वंदना करी तेणे पूछ्युं के, "आवी चक्रवर्त्तीनी लक्ष्मी कया पुण्यथी प्राप्त थाय छे? गुरुए अमृत समान मधुर वाणीथी उत्तर आप्यो के, "जे कांइ भव्यपणुं प्राप्त थाय छे, ते सर्व धर्मनोज प्रभाव छे. तेमज हे राजन्! आ लोकमां हाथी घोमा अने पायदलना समूहथी विस्तारवंत मनोहर राज्य, गाढ स्नेहथी अद्भूत रूपवाली अत्यंत मनोहर स्त्री, स्नेहवंत बंधुउ अने निरंतर निरोगी शरीर ए सर्व धर्मथीज प्राप्त थाय छे. वली भव्य पुरुषोने धर्मथीज कुबेर समान समृद्धि, निर्मल बुद्धि, कीर्ति, विनीत पुत्रो अने घरने विषे पूर्ण संपत्ति ए सर्व प्राप्त थाय छे. पूर्वे पुण्य करनारा प्राणीयोना मनोरथो सिद्ध थाय छे अने पुण्य रहित प्राणीयोना मनोरथो तो वायुथी मेघपंक्तिनी पेठे नाश पामे छे."

गुरुनां आवां वचन सांभली वैराग्य पामेला पुण्यवंत जय चक्रवर्त्तीये पोतानी समृद्धि त्याग करी प्रव्रज्या अंगीकार करी. पछी शुभ ध्यान अने तपरूप अग्निवमे बाली नाख्यो छे सर्व कर्मरूप काष्ट समूह जेणे एवा तथा बार धनुष्य प्रमाणे उंचा शरीरवाला अने त्रण हजार वर्षनी आयुष्यवाला ते जयचक्रवर्त्ती मुनि मोक्ष पाम्या.

॥ इति जय चक्रवर्त्ती चरित्रम् ॥

विमलजिणेसरतित्थे, थेराणं अंतिअंमि पवइउ ॥
चउदसपुव्वी पत्तो, महब्बलो पंचमे कप्पे ॥ १ ॥
ततो चइत्तु जाउ, वाणिअगामे सुदंसणो सिद्धि ॥
वीरसगासे पुणरवि, चउदसपुव्वी गउ सिद्धिं ॥ २ ॥

अर्थ–तेरमा विमलनाथ जिनेश्वरना तीर्थने विषे स्थविर आचार्यनी पासे

प्रव्रज्या ग्रहण करीने चौद पूर्व धारी थयेला महाबल पांचमा देवलोक प्रत्ये गया. १ अहिं महाबलनुं पांचमा ब्रह्मलोकने विषे जवुं कह्युं तेनुं कारण ते कोइ पण पूर्व विसरी जवाना हेतुथी संभवाय छे. कारणके, एम नहि तो चौद पूर्वधारीउनुं जवुं जघन्यथी पण छठा लांतक देवलोक सुधी होय छे. त्यां दश सागरोपमनुं आयुष्य भोगवीने पछी चवीने वणिक् गाममां सुदर्शनामा शेठपणे उत्पन्न थया. त्यां पण ते फरीथी वीरप्रभु पासे चारित्र लइ चौद पूर्वधारी थइ सिद्धि पाम्या. ॥ २ ॥

॥ श्री महाबल चरित्रम् ॥

हस्तिनापुर नगरने विषे बलि राजाना समान निर्मल एवो महाबलवंत बल नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने प्रभावती नामे पट्टराणी हती. कोइ वखते ते प्रभावतीये अर्ध रात्रे स्वप्नामां सिंह जोयो. पछी जागी उठेली तेणे ते वात पोताना पति बलिराजाने कही एटले बलभूपतिये कह्युं. "हे प्रिया! तें स्वप्नाने विषे सिंह दीठो छे ते उपरथी तने पूर्ण दिवसे सिंहसमान पराक्रमी पुत्र थशे. वली ते ज्यारे वृद्धि पामशे त्यारे आपणा कुलनो आधार अने कुलरुप समुद्रने उल्लास पमाडवाने चंद्र समान थशे. छेवट ते युवावस्था पामशे त्यारे सर्व पृथ्वीनो राजा थशे." राजानां आवां वचन सांभली प्रसन्न थयेली राणी पोताना मंदीरे गइ अने सुखथी गर्भने पोषण करवा लागी. पछी भूपतिये जेना उत्पन्न थयेला दहोला पूर्ण कर्या छे एवी ते प्रभावती राणीये साडानव मासे एक उत्तम पुत्रने जन्म आप्यो. अंगरक्षक दासीयोए हर्षित थइ तत्काल पुत्र जन्मनी वधामणी राजाने आपी एटले राजाए पण प्रसन्न थइ पोताना एक मुकुट विना बाकीना सर्व अंगना आभुषणो ते दासीयोने आप्यां. त्यार पछी भूपतिये सेवकोने बोलावीने कह्युं के, "तमे बंदिजनोने छोडी देवापूर्वक मानने वृद्धि पमाडनारी वधाइनो नगरमां पटह वजडावो." सेवकोए राजानी आज्ञा प्रमाणे ते सर्व कर्युं. बारमा दिवसे राजाए सर्व पोताना स्वजनोने संतोष पमाडी महोत्सव पूर्वक पुत्रनुं महाबल एवुं नाम पाड्युं.

पछी पांच धावमाताउथी पालन करतो अने सर्व कलाउनो अभ्यास करतो ते महाबल कुमार अनुक्रमे यौवनावस्था पाम्यो एटले पिताए तेने समान लावण्यरूप अने यौवनवाली आठ राजकन्याउ परणावी. वली पुत्रने

माटे तेणे प्रेमथी आठ मालनो एक मेहेल बनावी आप्यो अने पुष्कल द्रव्य आप्युं तेमज आठे स्त्रियोने पांचमा अंगमां कह्या प्रमाणे सुवर्णना आन्नरणो अने आठक्रोम सोनामहोरो आपी. पछी महाबल कुमार ते मेहेल उपर रह्यो छतो आठ स्त्रियोनी साथे न्नोग संबंधी महा सुखने न्नोगववा लाग्यो.

एक दिवस श्री विमलनाथ तीर्थंकरनी परंपराना श्रुतकेवली श्री धर्मघोष सूरि ते नगरने विषे आव्या. तेमने वंदन करवा माटे सर्व प्रकारनी समृद्धि सहित एवो श्रद्धावंत बलराजा पोताना परिवारे परवर्यो छतो बहारना उद्यानमां गयो. महाबल कुमार पण पोताना द्वारपालना मुखथी गुरुने आवेला सांन्नली उद्यानने विषे गयो. ते वखते गुरुए धर्मोपदेश आप्यो के—

धर्म, अर्थ अने कामरूप पुरुषार्थो श्रेष्ठ धर्मना प्रन्नावथीज मले छे, माटे मोक्षनी इच्छावाला तत्त्वज्ञ पुरुषोए धर्मने विषेज उद्यम करवो. लक्ष्मी हाथीना कान समान चपल, शरीर नाशवंत स्वन्नाववालुं अने जीवित दर्न्नना अग्र न्नाग उपर रहेला पाणीना बिंदु समान नाशवंत छे. जेम चंद्रनुं प्रतिबिंब जलने विषे अनेक रूपे मिथ्या देखाय छे तेमज स्त्री विगेरे समस्त जगत् पण मिथ्यान्नूतज छे. वली जेम दश दिशामां गयेलां पक्षीयो सायंकाले एकठां थइ हर्षित थया छतां परस्पर वार्तालाप करीने सवारे पोतपोतानी जीविकाने माटे जूदा जूदा चाल्या जाय छे तेमज स्वजन संयोग समजवो. वली राज्यादिक कुगतिने आपनारुं छे, माटे हे न्नव्यजनो ! आ असार एवा संसारना स्वरूपनो चित्तने विषे विचार करी मोक्षदायक धर्मने विषे यत्न करो. "

गुरुनी आवी वाणी सांन्नली प्रसन्न थयेलो महाबल कुमार तेमने केहेवा लाग्यो के, " हे न्नगवन् ! अरिहंत प्रन्नुए कहेला मार्गने हुं हर्षथी सद्दहुं छुं. माटे हे मुनीश्वर ! हवे हुं माता पितानी आज्ञा लइ तमारी पासे आवी दीक्षा ग्रहण करुं त्यां सुधी तमे अहियांज रहो. " सूरिये कह्युं. " हे वत्स ! अमने प्रतिबंध न कर." पछी महाबल कुमार सूरिने वंदना करी पोताना मंदिरे गयो. त्यां माता पिताने प्रणाम करी ते बोल्यो के, " हे माता पिता ! में धर्मघोष गुरु पासे धर्म सांन्नल्यो छे अने ते मने रुच्यो छे." माता पिताए कह्युं. " हे वत्स ! तुं धन्य अने कृतपुण्य छे के, जे तें गुरुना मुखथी धर्म सांन्नल्यो अने ते तने रुच्यो. " कुमारे कह्युं. " हे माता पिता ! हुं तमारी आज्ञाथी श्री ध-

र्मघोष सूरीश्वर पासे संयम गृहण करवानी इच्छा करुं छुं." पूर्वे क्यारे पण नहि सांभलेलां पुत्रनां आवां अनिष्ट वचनने सांभली तत्काल झरतां नेत्रवाली, परसेवाथी भिंजाइ गयेली, गाढ शोकरूप अग्निथी तपी गयेली, पोताना पुत्रना वियोगथी पीडा पामेली अने अस्वस्थ थइ गयेलां वस्त्रवाली प्रभावती देवी मूर्छा पामी. पछी दासीयोए करेला नाना प्रकारना शीतवातादि उपचारोथी चेतनाने पामेली ते विविध प्रकारना विलाप करती करती महाबलकुमारने कहेवा लागी के, "हे वत्स ! तुं अमोने घणो वहालो पुत्र छे. अमे त्हारा वियोगने इच्छता नथी, माटे हवे फरीथी आवुं न बोलीश. वली अमे ज्यां सुधी जीविये त्यां सुधी तुं पोताना घरने विषेज रहे अने अमारा मृत्यु पाम्या पछी तुं व्रत अंगीकार करजे." पछी महाबल पोतानी माता प्रत्ये कहेवा लाग्यो के, "हे अंब ! आपे कह्युं ते सत्य छे; परंतु इंद्रजाल समान, विविध प्रकारनां दुःख आपनारा, वली जन्म, मृत्यु, जरा, रोग, शोक अने भय विगेरेथी व्याप्त एवा, तेमज अशाश्वत, अध्रुव तथा नाशवंत स्वभाववाला आ मनुष्य भवने विषे कोइ माणस एम नथी जाणतो के, हुं प्रथम मृत्यु पामीश के, पछी मृत्यु पामीश; माटे हे मात ! हुंतो प्रवृज्याज अंगीकार करीश, माटे मने आज्ञा आपो." माताए कह्युं. "हे वत्स ! त्हारुं स्वरुप सुवर्ण समान कांतिवालुं अने यौवन विश्वने विस्मय पमाडनारुं छे. तो दीर्घकाल सुधी भोगने भोगववाथी तेने सफल करीने पछी निश्चे तुं व्रत ग्रहण कर." महावले कह्युं. "हे मात ! आ मनुष्य शरीर दुःखना घररूप तेमज बहु व्याधि शोकादिकथी गलायलुं छे. वली ते अस्थि, मांस, वसा, रुधिर, मुत्र अने विष्टानुं मंदिर, निरंतर असुचिनुं स्थान तथा नाशवंत स्वभाववालुं छे, माटे बुद्धिवंत प्राणीयोए ज्यां सुधी इंद्रियोनी क्षीणता न थइ होय, ज्यां सुधी निरोगीपणुं विद्यमान होय अने ज्यां सुधी जरावस्था न आवी होय त्यां सुधी धर्म करी लेवो जोइये; ए कारणथी हुंतो चारित्र लइश." माताए कह्युं. "हे पुत्र ! त्हारे कलामां कुशल, रूपवती, शुद्ध शीलवाली, त्हारा समान वय अने गुणवाली तथा अनुरक्त एवी आठ बाल्यावस्थावाली स्त्रीयो छे. तो तुं तेउनी साथे हर्षथी भोग भोगव्य." महावले कह्युं. "हे मात ! मनुष्योने भोग सुख फक्त आरंभमांज कांइक सुख आपनारुं छे, परंतु परिणामे बहु दारुण छे. तेमज स्त्रीयोनुं शरीर विष्टा, मूत्र

अने पाच विगेरे अपवित्र वस्तुउथी जरपुर ठे तो पठी तेउनी साथे प्रीति शा कामनी ठे ? वली स्त्रीयो तीक्ष्ण एवा संसार जावना वासने उन्नो करवामां स्तंज्ञ समान ठे अने सिद्धि पदने विघ्न करनारी ठे, माटे मोक्षना अजिलाषी पुरुषोए तो तेवी स्त्रीयोने त्याग करवा योग्य कही ठे, तो हे अंब! हवणां हुं चारित्र ग्रहण करीश." माताए कह्युं "हे पुत्र! आपणे त्यां अनुक्रमे प्राप्त थयेली असंख्य लक्ष्मी ठे ते तुं जोगव." कुमारे कह्युं. "ते तो राजा, चोर, अग्नि अने मृत्युने स्वाधिन रहेली ठे, माटे अशाश्वत एवी ते लक्ष्मीने तो हुं त्यजी दउं ठुंज." आवी रीते माता ज्यारे पुत्रने संयमनी आशाथी ठोमाववा समर्थ न थइ अने पुत्र लोजमां आसक्त न थयो त्यारे माता तेने जय देखामती ठती कहेवा लागी के, "हे वत्स! खङ्गधारा उपर चालवुं अने बन्ने हाथथी समुद्र तरवो ए जेम दुष्कर ठे तेम चारित्र पालवुं ए पण निश्चे अत्यंत दुष्कर ठे. वली जूमि उपर शयन करवुं, केशनो लोच करवो, जिक्षाचर्या करवी तथा ब्रह्मचर्य पालवुं ए उत्तरोत्तर दुष्कर ठे. तेमां पण क्षुधा अने तृषाने सहन करवुं तेतो अत्यंत दुष्कर ठे. तेम तुं अत्यंत सुकुमार ठे माटे हवणां घरमां रहे." कुमारे माताने फरीथी कह्युं. "हे मात! नपुंसक प्राणीयोने व्रत दुष्कर ठे, परंतु धीर पुरुषोने तो दुष्कर पण साध्यज ठे." आ प्रमाणे ज्यारे मातापिता पुत्रनी संयमनी इच्छा ठोमाववाने समर्थ न थयां त्यारे तो तेउ तत्काल उदास जावने पाम्या. पठी बलराजाए आज्ञाकारी सेवकोने बोलावीने आदरथी कह्युं के, "गजपुर नगरनी अंदरनी तथा व्हारनी जूमी साफ करी, जल विगेरेनो ठंटकाव करी अने चारे तरफ ध्वजा पताका उन्नी करो तथा ठेकाणे ठेकाणे कौतुकनी साथे नाच करवो." जूपतिनी आज्ञा प्रमाणे सेवकोए ते सर्व तैयार कर्युं एटले राजाए महाबलने हर्षथी तत्काल सिंहासन उपर बेसारी सोनाना अने माटीना एक सो आठ कलशथी अजिषेक करीने पोते कह्युं के, "अमे तमारी आज्ञा प्रमाणे चालनारा ठीये." कुमारे कह्युं. "हे तात! म्हारे माटे जंमारमांथी निश्चे त्रण लाख सोनाम्होर मंगावो. तेमांथी एक लाखनी कातर, एक लाखनां पात्रां अने एक लाखनुं रजोहरण तत्काल मंगावी आपो." जूपतिये ते प्रमाणे सर्व आणी आप्युं. पठी ते महाबले पोताना आगला केशने कापी मुखे मुहपत्ति बांधी. माता प्रजावतीये रुदन करतां कर-

तां ते पुत्रना केशने पोताना वस्त्रमां लइ लीधा. पछी महाबल दिव्य चंदनथी शरीरे लेप करी, सर्व अलंकारोथी भूषित थइ, हजारो मनुष्योए उपाडेली पालखीमां बेठो. वली मस्तके छत्र धारण कराएलो, चामरोथी विंजाएलो, अत्यंत म्होटी सेना सहित परिवारथी विंटाएलो अने मनुष्योए स्तुति करेलो ते महाबल रजोहरणने ग्रहण करी नगरीथी निकलीने हर्षवडे श्री धर्मघोष सूरीश्वर पासे आव्यो. त्यां माता पिताए ते महाबल कुमारने आगल करी, गुरुना चरणकमलने नमस्कार करीने कह्युं के "हे भगवन् ! आ अमारो अत्यंत प्रिय एवो एक महाबल नामनो पुत्र संसारना भयथी तमारी पासे चारित्र लेवानी इच्छा करे छे, माटे हे प्रभु ! आपना हस्तथी एने तत्काल दीक्षा आपी संसारना भय रहित करो." गुरुए ते वात अंगीकार करी एटले कृतार्थ एवा महाबले ईशान दिशामां जइ पोतानी मेले देहथी सर्व आभूषणोने त्यजी दीधां. पछी प्रभावती माताए रुदन करता छतां ते सर्व लइ पुत्रने कह्युं के, "हे वत्स ! त्हारे निरंतर आ चारित्रने विषे अत्यंत यत्न करवो. भवना हेतुरुप प्रमाद न करवो अने विशेषे धीरज धारण करवी." पुत्रने आ प्रमाणे शीक्षा आपी माता पिता सूरीश्वरने वंदना करी पोताना नगरे गया.

अहिं पाछल कुमारे पंचमुष्ठी लोच करीने पछी श्री धर्मघोष सूरि पासे आवी नमस्कार करीने कह्युं के, "हे विभु ! हुं जन्मादि दुःखथी अत्यंत भय पाम्यो छुं. वली आ लोक पण जन्ममरणादि अग्निथी लींपाइ रहेलो छे, माटे मने दिक्षारूप अमृतनुं दान आपीने तत्काल शीतल करो." तेनां आवां वचनथी गुरुए तेने पोताना हाथथी दिक्षा आपी सर्व आचारमां प्रविण बनाव्यो. महाबल मुनि पण त्रण गुप्ति अने पांच समितिथी युक्त छतां विनयादिक गुणोथी चौद पूर्व भणया. पछी छठ अठमादिक विविध प्रकारना तपवडे आत्माने भावतां ते मुनि बारवर्ष पर्यंत अतिचारना लेश विना चारित्रने पाली अंते आलोचना लइ एक मासना अनशनथी मृत्यु पामी ब्रह्मदेवलोकने विषे दश सागरोपमनी स्थितिवाला देवता थया. त्यांथी चवीने ते महाबल मुनिनो जीव वाणिज नामना नगरने विषे संपत्तिथी म्होटा शेठना कुलने विषे उत्पन्न थयो. त्यां तेमनुं सुदर्शन नाम पाड्युं. अनुक्रमे ते बाल्यावस्था त्यजी नगरमां श्रेष्ठ एवी सुदर्शन शेठनी पद्वि पाम्यो. एवामां त्यां भगवान् श्री महावीर स्वामी समवसर्या.

उद्यानपालके नगरमां वीरप्रज्ञुना आगमननी वधामणी आपी; तेथी नगरना सर्व लोक तेमने वंदन करवा चाल्या. सुदर्शन शेठ पण गया. ते अवसरे प्रज्ञुए सजामां सर्व लोकना हितने माटे एक समयथी आरंजीने दश सागरोपम सुधीना कालना प्रमाणनुं वर्णन कर्युं. ते सांजली विस्मयवंत थयेला सुदर्शन शेठे पूछ्युं के, " हे स्वामिन् ! जेणने आ सागरोपम काल कोइ गतिमां आव्यो होय तो ते शी रीते क्षय थाय ? " प्रज्ञुए कह्युं. " पूर्वे तें एटलो काल अनुजव्यो छे. तुं पूर्व जवने विषे ब्रह्म देवलोकमां दश सागरोपमना आयुष्यवालो महाबलनो आत्मा देवता हतो. " प्रज्ञुना आवां वचन सांजली तत्काल पूर्वजवना जातिस्मरणने लीधे वैराग्यवंत थयेला सुदर्शन शेठे प्रज्ञु पासे चारित्र लीधुं. पछी पोताना कार्यने जाणनारा सुदर्शन मुनिये अनुक्रमे चौदपूर्वनो अज्यास करी केवलज्ञान मेलवी मुक्तिपद अंगीकार कर्युं.

(आ ग्रंथकर्ता श्री शुजवर्द्धन गणी कहे छे के,) हे जव्यजनो ! में पापने नाश करनारुं आ महाबलनुं चरित्र पोताना अने परना उपकारने माटे संक्षेपे कह्युं छे; परंतु विस्तारे जाणवानी इछावाला विद्वान् पुरुषोए ते चरित्र पांचमा अंगथी (जगवती सूत्रथी) जाणी लेवुं.

॥ इति श्री महाबल चरित्रम् ॥

॥ अथ अष्ट बलदेव चरित्राणि ॥

पयरयमिवरज्जसिरिं, उझिअ गहिअवए अयलपमुहे ॥
अठवि बलदेवरिसी, नमामि निव्वाणमणुपत्ते ॥१५॥

अर्थ–पगने विषे चोटेली रजनी पेठे राज्यलक्ष्मीने त्यजी दइ चारित्र अंगीकार करी मोक्षपद प्राप्त करनारा अचल विगेरे (अचल, विजय, जड, सुजड, सुदर्शन, आनंद, नंदन, अने पद्म) आठ बलदेव मुनियोने नमस्कार करुं छुं. १५

ए गाथानो विशेषार्थ तो चरित्रोथी जाणी लेवो. वली अचल चरित्र श्री शांतिनाथना चरित्रमां आवी गयुं छे, माटे ते त्यांथी जाणी लेवुं अने विजय चरित्र अहियां संक्षेप मात्रथी कहे छे.

॥ श्री विजय बलदेव चरित्रम् ॥

आ जरतक्षेत्रना पश्चिम महासमुद्रने कांठे लक्ष्मीने क्रीमा करवानां म-

नोहर कमल सरखी द्वारका नामनी नगरी छे. त्यां रामना समान कांतिवालो अने जेनो यशसमूह विश्वमां प्रसरी रहेलो हतो एवो ब्रह्म नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने गुणोये करीने म्होटी तथा प्रिय अने श्रेष्ठ एवी सुभद्र राजानी पुत्री सुभद्रा नामनी स्त्री हती. तेउने बलवंत एवो विजय नामे बलदेव पुत्र हतो. वली ते ब्रह्मराजाने उत्कृष्ट भाग्यनी भूमीरूप बीजी उमा नामे स्त्री हती. तेने वासुदेवना पदने योग्य एवो द्विपृष्टक नामे पुत्र हतो. ज्यारे आ बन्ने पुत्रो युवावस्था पाम्या त्यारे ब्रह्म भूपतिये तेउने राज्य आपी पोते सत्य एवा ब्रह्मज्ञानने माटे चारित्र लीधुं. पछी सर्व कलामां कुशल एवा महाबलवंत द्विपृष्टे तारक नामना प्रतिवासुदेवने युद्धमां जीत्यो. वली तेणे जमणा हाथ वमे कोटिशिला नामनी महाशिलाने उपामी दरुानी माफक पोताना मस्तक सुधी उंची करी. ते उपरथी अर्द्ध भरतक्षेत्रनां सोल हजार राजाउए एकाठा थइ महोत्सवपूर्वक द्विपृष्टने वासुदेवनो अभिषेक कर्यो. पछी श्वेत अने कृष्ण छे शरीरनी कांति जेमनी एवा अने सीतेर धनुष्यना देहवाला ते द्विपृष्ट अने विजय बन्ने भाइयोए दीर्घकाल सुधी राज्य भोगव्युं. बोंतेर लाख वर्ष पर्यंत पोताना आयुष्यने पूर्ण करी घोर पापना उदयथी द्विपृष्ट मृत्यु पामीने छही नरके गयो. पछी पोताना बंधुना वियोगथी डुःखी थता विजय बलदेवे सर्वथा राज्यने विषे स्पृहारहित थइ वैराग्यथी दीक्षा लीधी. राज्यलक्ष्मीने त्यजी दइ चारित्र अंगीकार करनार ते श्री विजय नामना बलदेव पोतानुं पंचोतेर लाख वर्षनुं सर्व आयुष्य पूर्ण करी चारित्र पालवावमे केवलज्ञानने प्राप्त करी अंते कर्मक्षयथी संसारना भयने भेदी नाखनारा परमानंद रूप निर्वाण पदने पाम्या.

॥ इति श्री विजय बलदेव चरित्रम् ॥

॥ अथ श्री भद्र बलदेव चरित्रम् ॥

आ भरतक्षेत्रनी द्वारका नगरीने विषे क्रूर एवा शत्रु भूपतियोनो नाश करवाने प्रगट पराक्रमवालो रुइ नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने अत्यंत रूपवती एवी सुप्रभा नामनी पट्टराणी हती. तेने महाबलवंत एवो भद्र ना-

मनो बलदेव पुत्र हतो. रुइ राजाने बीजी लोकमां विख्यात एवी पृथिवी नामे स्त्री हती तेने स्वयंभू नामनो प्रसिद्ध वासुदेव पुत्र हतो. पछी पिताए राज्यासने स्थापन करेला स्वयंभूए युद्धमां मेरक नामना प्रतिवासुदेवने भद्र बंधु सहित मारी पोते कंठ सुधी कोटिसीला उपाडी. ते उपरथी सोल हजार राजाओए तेने बंधू सहित अर्द्धचक्रवर्त्तीनो अभिषेक कर्यो. पछी साठ धनुष्यना शरीरवालो ते स्वयंभू वासुदेव साठ लाख वर्ष पर्यंत आयुष्य भोगवी अंते मृत्यु पामीने अशुभ कर्मथी छठी नरके गयो. भद्र बलदेवे सर्व सावद्यनो त्याग करी श्रेष्ठ संवर युक्त थइ चारित्र लीधुं. छेवटे साठ धनुष्यना शरीरवाला ते भद्र मुनि पांसठ लाख वर्ष पर्यंत आयुष्य पूर्ण करी मोक्षपद पाम्या.

॥ इति श्री भद्र बलदेव चरित्रम् ॥

॥ अथ श्री सुप्रभ बलदेव चरित्रम् ॥

पृथ्वी उपर प्रसिद्ध एवी द्वारका नगरीने विषे चंद्र समान मनोहर मुखवालो श्रीमान् सोम नामनो राजा राज्य करतो हतो. तेने सुदर्शना नामनी पट्टराणीथी उत्पन्न थयेलो मनुष्योमां उत्तम एवो सुप्रभ नामे बलदेव पुत्र हतो एने बीजी शीलव्रतथी शीतल एवी वहाली सीता नामनी स्त्रीथी उत्पन्न थयेलो पुरुषोतम नामनो वासुदेव पुत्र हतो. पचास धनुष्यना प्रमाण देहवाला, अने श्वेत तथा कृष्ण एवी शरीरनी कांतिवाला ते बन्ने बंधुओ पिताथी राज्य पामीने शोभता हता. अनुक्रमे सुप्रभ बंधुनी सहायताने लीधे पुरुषोतम वासुदेवे पोताना पुरुषार्थथी प्रतिवासुदेव एवा मधुकैटभने मार्यो अने बन्ने भुजाथी छाती सुधी कोटि शीला उपाडी. ते उपरथी सोल हजार राजाओए तेने अर्द्धचक्रवर्त्तीनो अभिषेक कर्यो. उत्तम वैभववालुं साम्राज्यपद भोगवीने पछी ते पुरुषोतम पोतानुं त्रीस लाख वर्षनुं आयुष्य पूर्ण करी छठी नरकने विषे नारकी थयो अने सुप्रभ वैराग्यनी उत्कृष्टताथी चारित्र लइ पोतानुं पंचावन लाख वर्षनुं आयुष्य पूर्ण करी मोक्षपद पाम्या.

॥ इति श्री सुप्रभ बलदेव चरित्रम् ॥

॥ अथ श्री सुदर्शन बलदेव चरित्रम् ॥

सर्व संपत्तिना मंदिर रूप स्वपुर नामना नगरने विषे प्रजाने कल्याणकारी एवो श्रीमान् शिव नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने विजया नामनी पट्टराणी हती. तेने सुदर्शन नामे बलदेव पुत्र थयो. बीजी अंबीकाना समान गुणवाली अंबीका नामनी राणी हती. तेने महा बलवंत एवो पुरुषसिंह नामे वासुदेव पुत्र हतो. अनुक्रमे श्वेत तथा कृष्ण कांतिवाला अने पीस्तालिश धनुष्य प्रमाण शरीरवाला ते बन्ने भाइयो अद्भुत एवा पिताना राज्यने पाम्या. पछी वासुदेव एवा पुरुषसिंहे युद्धमां निशुंभ नामना प्रतिवासुदेवने मारी उदर सुधी कोटिशिलाने उपाडी. पछी त्रणखंडनुं राज्य भोगवतो एवो पुरुषसिंह पोतानुं दश लाख वर्षनुं आयुष्य पूर्ण करी छठी नरके गयो. सुदर्शन पण दीक्षा लइ पोतानुं सत्तर लाख वर्षनुं आयुष्य पूर्ण करी मोक्ष पाम्यो.

॥ इति श्री सुदर्शन बलदेव चरित्रम् ॥

॥ अथ श्री आनंद बलदेव चरित्रम् ॥

परचक्रना भयरहित चक्रपुर नामनुं नगर छे. त्यां पुत्रनी पेठे प्रजानुं पालन करनार महाशिव नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने कांतिये करीने वैजयंती देवी समान वैजयंती नामनी पट्टराणी हती. तेने आनंदकारी आनंद नामे बलदेव पुत्र हतो अने बीजी साक्षात् लक्ष्मीना समान लक्ष्मी नामे स्त्री हती. तेने उत्तम बुद्धिवालो पुंडरिक नामे वासुदेव पुत्र हतो. अनुक्रमे उगणत्रीश धनुष्य प्रमाण शरीरवाला ते बन्ने भाइयो पिता पासेथी राज्यपद पामी दिवस दिवसने विषे सर्व समृद्धिथी अधिक शोभवा लाग्या. पछी पुंडरिक वासुदेवे युद्धमां बलीष्ट एवा प्रतिवासुदेव बलि राजाने मारी दुर्बलपणाथी कोटीशिलाने केड सुधी उपाडी. ते उपरथी सोल हजार राजाउए महोत्सवपूर्वक तेने अर्द्ध चक्रवर्तीनो अभिषेक कर्यो; तेथी ते पोताना बंधुसहित अर्धा भरतक्षेत्रनुं राज्य भोगववा लाग्यो. अनुक्रमे पांसठ हजार वर्ष पर्यंत पोतानुं आयुष्य भोगवी क्लिष्ट हृदयवालो ते पुंडरिक छठी नरके गयो. आनंद बलदेव पण पोतानुं पंचाशुं हजार वर्षनुं आयुष्य भोगवी चारित्र पाली केवलज्ञान पामी मोक्षपद पाम्यो.

॥ इति श्री आनंद बलदेव चरित्रम् ॥

॥ अथ श्री नंदन बलदेव चरित्रम् ॥

कल्याणकारी लक्ष्मीवमे वखाणवा योग्य वाराणसी नगरीने विषे बलवंत अग्निसिंह नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने जयंती नामे पट्टराणी हती. तेने जगत्ने आनंदकारी नंदन नामे बलदेव पुत्र हतो अने बीजी समग्र उज्वल गुणोथी प्रिय एवी शेषवती नामे स्त्री हती. तेने दत्त नामे वासुदेव पुत्र हतो. अनुक्रमे श्वेत कृष्णकांतिवाला अने बवीश धनुष्य प्रमाण शरीरवाला ते बन्ने ज्ञाइयो पिताना राज्यने पाम्या. पछी वासुदेव एवा दत्ते युद्धमां प्रतिवासुदेव एवा प्रह्लादने हणी साधल पर्यंत कोटिशीला उपामी. ते उपरथी अनेक राजाउए तेने अर्द्ध चक्रवर्त्तीपणानो अभिषेक कर्यो. पछी ते वासुदेव पोतानुं छप्पन्न हजार वर्षनुं आयुष्य ज्ञोगवी पांचमी नरके गयो. नंदन बलदेव पण चारित्र लइ पांसठ हजार वर्षनुं पोतानुं आयुष पूर्ण करी अंते मोक्ष पद पाम्यो.

॥ इति श्री नंदन बलदेव चरित्रम् ॥

॥ अथ श्री पद्म बलदेव चरित्रम् ॥

जेमणे दयाने लीधे दूरथी आवी अश्व ज्नूपतिने प्रतिबोध पमाम्यो छे ते जगत्ना पति एवा श्री मुनिसुव्रत तीर्थंकर जयवंता वर्तो. ते तीर्थंकरना तीर्थने विषे थयेला अने मोक्ष पामेला गुणवंत आत्मा श्री पद्मबलदेवनुं चरित्र हुं कहुं छुं.

आ ज्नरतक्षेत्रमां उत्तम वैज्नववाली, पुरातन अने इंद्रनी आज्ञाथी कुबेरे स्थापन करेली अयोध्या नामनी नगरी छे. त्यां श्री ऋषज्नदेव प्रज्नुना संताननी परंपरामां उत्पन्न थयेलो, महा तेजवंत अने *महारथ एवो दशरथ राजा राज्य करतो हतो. जे राजा युद्धरूप उदयाचलने विषे सूर्यनी पेठे उदय पाम्ये छते तत्काल सैन्य सहित शत्रु राजाउ घुमनी पेठे आचरण करता. अर्थात् आंधला थइ जता. महाराजा दशरथने जाणे लक्ष्मीनी वृद्धि करनारी त्रण शक्ती होयनी ? एवी तथा गुणोए करीने अत्यंत वहाली त्रण स्त्रीयो हती. तेमां पहेली

* युद्धकलामां प्रवीण एवो जे पुरुष दश हजार सुभटोनी साथे युद्ध करे ते महारथ कहेवाय छे.

पोतानी अद्भुत शोभाथी बीजी श्रेष्ट स्त्रीयोनां रूपने पण तीरस्कार करनारी अने शुद्ध शीलवती कौशल्या नामनी स्त्री हती. बीजी पोताना शीलव्रतना तेजथी सूर्यनी कांतिने पण मलीन करनारी सुमित्रा नामनी स्त्री हती. त्रीजी धर्मने विषे बुद्धिवाली, सौभाग्यवती अने पतिने घणीज वहाली एवी सुप्रभा नामनी स्त्री हती.

हवे ते वखते महा समुद्रना मध्य भागने विषे मनुष्योने स्वर्गनो विभ्रम करावनारी लंका नगरीने विषे, रत्नश्रव विद्याधरना कुलरूप वनमां केसरीसिंह समान , कैकसी विद्याधरीना उदररूप तलावने विषे हंस समान, विश्वने भयंकर, प्रौढ विद्यामां प्रचंड पराक्रमवालो, महा तेजवंत, राक्षसोनो अग्रेश्वर, श्री जिनेश्वरना चरणकमलनी सेवामां तत्पर अने बिभीषण तथा कुम्भकर्णनो भाइ एवो प्रतापवान् प्रतिवासुदेव रावण राजा राज्य करतो हतो. एक दिवस सभाने विषे सिंहनी पेठे सिंहासन उपर बेठेला, पराक्रमथी सर्व राजाओनो पराभव करनारा, तेजस्वीओमां श्रेष्ठ, कोटी सुभट एवा राक्षसोए तथा विद्याधरोए निरंतर सेवा करेला, इंद्रना समान कांतिवाला, देव, दानव अने मनुष्योथी नाश नहि करी शकाय तेवा, मृत्युथी पण भय नहि पामनारा, विश्वने आक्रमण करवामां लंपट अने जीवित छे प्रीय जेने एवा ते रावणे कोइ एक अष्टांगनिमित्तना जाण एवा श्रेष्ट नैमित्तिकने बोलावीने पूछ्युं के, “ म्हारुं मृत्यु कोनाथी थवानुं छे. रोगथी के बीजा कोइथी ते कहो ? ” रावणे आम प्रश्न कर्युं एटले नैमितिके क्षणमात्र विचार करीने कह्युं के, “ हे रावण महाराजा ! सांभलो. कोशला नगरीना अधिपति अने इक्ष्वाकुवंशना शिरोमणिरूप श्री दशरथ राजाना पुत्र राम लक्ष्मणथी मिथिला नगरीना पति जनकनी पुत्री सीताना कारणे तमारुं मृत्यु थवानुं छे. ” नैमितिकनां आवां वचन सांभली रावण शंकायुक्त थयो एटले पासे बेठेला बिभीषणे गाढ स्नेहना वशथी तेने कह्युं के, “ हे नाथ ! जो आ नैमितिक सत्यवादी हशे, तोपण हुं बलात्कारे तेनां वचन मिथ्या करीश. हुं दशरथ राजाने अने जनकभूपतिने ए बन्नेने मारी नाखीश तो पछी तमारा वध करनारानी उत्पत्तिज शी रीते थशे ? ” तेनां आवां वचन सांभली रावण “ लोकमां त्हारुं सहोदरपणुं श्रेष्ट छे. ” एम वखाण करतो छतो अत्यंत संतोष पाम्यो.

आ वखते नारद मुनि रावणनी सभामां बेठा हता, ते विभीषणनां आवां वचन सांभली तत्काल आकाशमार्गे थइ कोशलापुरीमां आव्या. त्यां दशरथ राजाए तेमनो अत्यंत आदर सत्कार कर्यो. पछी नारदे कह्युं. "हे नृपति ! तुं स्वस्थ थइने म्हारा आववानुं कारण सांभल. हुं अहिंथी प्राग्विदेह क्षेत्रमां पुंमरीकिणी नगरी प्रत्ये गयो हतो. त्यां श्री विश्वपति सीमंधर जिनेश्वरे गृहस्थावासमां त्र्यासी लाख पूर्व निर्गमन कर्या पछी चोसठ देवेंद्रोए ते प्रभुना करेला दीक्षा कल्याणकना उत्सवने जोइ मेरु पर्वत उपर शास्वता चैत्यने नमस्कार करवा गयो हतो. त्यांथी अत्यंत मनोहर एवी लंका नगरी प्रत्ये गयो. त्यां प्रथम उद्यानने विषे श्री शांतिनाथनी प्रतिमाने हर्षथी प्रणाम करीने पछी हुं रावणनी सभामां गयो, त्यां नैमितिकनां वचन सांभली अत्यंत खेदातुर थयेलो हुं अहिं आव्यो छुं. हे दशरथ ! नैमितिकनां वचनथी विभीषण तमने तत्काल मारवा आवशे, माटे पोतानुं रक्षण करवामां यत्न करो." नारद मुनि आ प्रमाणे दशरथने कही आकाशमार्गे चाली निकल्या.

पछी दशरथ राजाए सर्व मंत्रीवर्गने बोलावीने कह्युं. "हे मंत्रीयो ! सांभलो. तमारे सर्वेए आ म्हारा राज्यनुं रक्षण करवुं. कारण हुं जीवित रक्षाने माटे बीजा देशमां जाउं छुं." दशरथ राजा आ प्रमाणे मंत्रीयोने भलामण करी अने विदेशीवेश धारण करी गुप्त रीते पोताना नगरथी चाली निकल्यो. जनक राजाए पण नारदनां हित वचनथी तेमज कर्युं. कह्युं छे के—सर्व प्राणीयोने निश्चय पोतानुं रक्षण करवामां एक सरखी बुद्धि होय छे. पछी क्रोधथी कंपतो एवो विभीषण पोतानी प्रतिज्ञा पालवाने माटे अखंभित प्रयाणथी अयोध्याना राजमंदिर प्रत्ये आव्यो. त्यां अत्यंत क्रोधथी अंध थयेला चित्तवाला तेणे रात्रीने विषे तिक्ष्ण खड्गथी दशरथ राजानी बनावी राखेली लेपमूर्त्तिना मस्तकनो छेद कर्यो. ते वखते "हाय हाय ! अमारो पति हणायो." एम कोलाहल थयो अने कोटिसुभटथी भरपुर एवो राजमहेल क्षोभ पाम्यो. अंतःपुर पण रुदन करवा लाग्युं अने अत्यंत शोकातुर एवा बुद्धिवंत प्रधानादि राजपुरुषोए ते लेपमूर्त्तिने अग्निसंस्कार कर्यो.

हवे दशरथ भूपतिने मारी प्रसन्न थयेला विभीषणे "जनक एकलो शुं करशे ?" एम धारी मिथिला नगरी प्रत्ये नहि जतां तुरत लंकामा जइ

रावणने सर्व वात निवेदन करी. शुं दैव विमुख थयो होय त्यारे प्राणीयोना उपायो फलीभूत थाय खरा ? अर्थात् नज थाय.

हवे दशरथ अने जनक ए बन्ने राजाउ पृथ्वी उपर सर्व स्थानके भमता भमता कोइ एक दिवसे एकठा थइ गया. अनुक्रमे निर्भय अने परस्पर प्रीतिवंत थयेला ते बन्ने भूपतियोए साथे फरतां केटलोक काल निर्गमन कर्यो. पछी तेउ उत्तरापथ देशमां सर्व प्रकारे लक्ष्मीना समुद्ररूप अने समस्त प्रकारे मांगलिक एवा श्री मंगलपुर नगर प्रत्ये आव्या. त्यां विजय लक्ष्मीना स्थान समान शुभमति नामनो राजा राज्य करतो हतो. तेने चोसठ कलामां प्रवीण कैकेयी नामे पुत्री हती. भूपतिये ते पोतानी पुत्रीना विवाहने माटे स्वयंवर मंरूप रची अनेक भूपालोने आमंत्रण करेलुं होवाथी म्होटा आरंबरने धारण करनारा हरिवाहन विगेरे अनेक राजाउ त्यां आववा लाग्या हता. पछी उंची बेठको उपर रहेला सुवर्णना मणि जमित्र सिंहासनोने विषे बेठेला अने मनोहर आकृतिवाला ते भूपतियो उत्तम आभूषणने धारण करनारा देवतानी पेठे शोभता हता. कापमीना सरखा वेषवाला राजा दशरथ अने जनक पण ते राजाउनी मध्ये जाणे गुप्त आकृतिवाला श्रेष्ठ देवताउज होयनी ? एम बेसी गया.

पछी मंगलस्नान करी दिव्य वस्त्रथी सुशोभित बनेली तेमज मनोहर आकृतिवाली कैकेयी तत्काल पालखीमां बेसी त्यां आवीने प्रतिहारीणीनो हाथ जाली राजहंसथी सरस्वतीनी पेठे तत्काल पालखीमांथी नीचे उतरी. पछी जमणा हाथमां वरमालाने धारण करी रहेली तेमज प्रतिहारीये करेला राजाउना वर्णनने हर्षथी सांभलती अने पोताना उत्कृष्ट रूपथी राजाउने विस्मित मुखवाला करती ते बालाए कोइ सिंहासन उपर बेठेला कापमिना समान आकृतिवाला दशरथ राजाने दीठो. पछी विस्मित नेत्रवाली अने गुणनी जाण एवी कैकेयीये दशरथ भूपतिना कंठने विषे तुरत वरमाला पहेरावी. ते वखते अत्यंत क्षोभ पामेलुं राजमंमल परस्पर कहेवा लाग्युं के, " अहो ! ए राजकन्याए राजाउने निर्गुणी करी कोइ वैदेशिक वर्यो. जोके कन्या मुग्ध होय, परंतु बलहिन एवो कापमि मुग्ध शामाटे थाय के, जे राजमंमल छतां कन्याने वरे ? निश्चय राजाउनेज योग्य एवी ए कन्याने अमे बलवमे ग्रहण करशुं. कारण के, कागमाना कंठने विषे रहेली मणिनी मालाने कोने

रुचिकर थाय ?" आम कहीने सर्वे राजाउ पोताना विकट आयुधवाला कोटि सुन्नटोनी साथे दशरथ राजाने मारवा उठ्या. ते वखते शुन्नमति नृपाल विचार करवा लाग्यो के, "कन्याये गमे तेवो जे वर वर्यो होय ते म्होटाउने पण प्रमाण होय छे." आ प्रमाणे पोताना हृदयमां विचार करी तेणे तुरत सज्ज थयेली पोतानी सेना सहित सर्व आयुधथी पूर्ण एवो पोतानो रथ दशरथने आप्यो. ते समये दशरथ राजाए कैकेयीने कह्युं के, "तुं म्हारा सारथीपणाने अंगीकार कर के, जेथी करीने हुं शत्रुना सैन्यने जीतुं." पछी बाल्यावस्थाथी अन्यास करेली कलाउमां प्रवीण एवी कैकेयीये बीकण छतां पण निर्नय थइ पोताना हाथथी घोमानी राशने पकमी सारथी थइ रथने शत्रुना सैन्य तरफ चलाव्यो एटले दशरथ राजाए लीला मात्रमां तीक्ष्ण बाणनो वर्षाद वरसावता छतां सिंह जेम शियालना समूहने त्रास पमामे तेम शत्रुना सैन्यने त्रास पमाम्युं. आ वखते युद्धमां कैकेयीये पतिनी आज्ञाथी रथने वाम, दक्षिण, आगल अने पाछल एम चारे तरफ आश्चर्यकारी रीते चलाव्यो. ते उपरथी प्रसन्न थयेला दशरथ राजाए प्रिया कैकेयीने कह्युं के, "हे न्नद्रे! हुं त्हारी सारथीनी कलाथी प्रसन्न थयो छुं, माटे वरदान माग." कैकेयीये कह्युं. "हे प्रिय ! हवणां ए वरदानने उत्तम आन्नूषणनी पेठे न्नंमारमां राखो, हुं तेने अवसरे मागीश. पछी राजा दशरथे असंख्य शत्रुरूप अंधकारना समूहने नाश करी सूर्य जेम दिनश्रीनो अंगीकार करे तेम कैकेयीनो अंगीकार कर्यो. पछी शुन्नमति राजा दशरथने उलखी पोतानी न्नाग्यवती कन्या कैकेयीनां अने बलवंत एवा दशरथ राजाना वखाण करवा लाग्यो. शुन्नमति सहित दशरथ राजा बलीष्ठ सैन्यथी शत्रुउने जीतीने पछी राजगृह नगर प्रत्ये गयो. त्यां तेणे ते नगरना न्नूपतिने जीतीने त्यांज निवास कर्यो. कह्युं छे के–विश्वमां बलवंत पुरुषोनुं स्थान सर्व ठेकाणे होय छे. पछी जनक राजा पण पोतानी मिथिला नगरी प्रत्ये गयो. कारण कालक्षेपथी विघ्नो कुकोपनी पेठे तत्काल नाश पामे छे.

पछी दशरथ राजा राजगृह नगर प्रत्ये रह्यो छतो लक्ष्मीनी साथे पुरुषोत्तमनी पेठे पोतानी स्त्रीनी साथे अखंमित न्नोगोने न्नोगववा लाग्यो. वली त्यां तेणे अयोध्याथी पोतानी त्रण स्त्रीयोने तेमावी. कारण के, पुरुषने स्वस्थपणामां सर्व स्मृति

आवे छे. ते त्रण प्रियाउनी साथे विषय सुख जोगवता एवा दशरथ राजा विविध बुद्धिथी शोजता एवा बुद्धिमान् पुरुषनी पेठे अत्यंत शोजवा लाग्यो.

हवे कोइ एक देवता ब्रह्मलोकथी चवीने रात्रीना शुज्ञ अवसरे कौशल्याना उदररूप सरोवर विषे राज हंसनी पेठे अवतर्यो. ते वखते चतुर बुद्धिवाली कौशल्याये पूर्व पुण्यना प्रज्ञावथी चंद्रकिरण समान उज्वल चार स्वप्न जोयां. पछी पूर्ण समये तेणे गायना दुध अने हीराना समान गौर अंगवाला तथा सर्व प्रकारनां उत्तम लक्षणवाला पुत्रने जन्म आप्यो एटले पुत्र जन्मथी उत्पन्न थयेला महा हर्षवंत दशरथ जूपतिये नाना प्रकारना दानथी म्होटा उत्सवो कर्या. अनुक्रमे मातापिताए तेनुं पद्म एवुं नाम पाड्युं; परंतु उत्तम आकृतिने लीधे लोकमां राम नाम प्रसिद्ध थयुं. पछी आकाशमां चंद्रबिंबनी पेठे सर्व राजलोकना नेत्रने आनंद पमाडनारो ते कुमार त्यांज वृद्धि पामवा लाग्यो.

हवे स्वर्गथी बीजो कोइ पुण्यवान् जीव चवीने रात्रीना शुज्ञ अवसरे सुमित्राना उदरने विषे अवतर्यो. ते वखते तेणे उत्तम फल सूचवनारा सात महा स्वप्नो जोयां. पछी पूर्ण समय थये सुमित्राये अंजन समान श्याम कांतिवाला, श्रीवत्सथी लांछित वक्षस्थलवाला अने वासुदेवना पदने योग्य एवा एक पुत्रने जन्म आप्यो. ते वखते राजा दशरथे ते पुत्रनी प्रशंसा करता जन्म महोत्सवो कर्या. अनुक्रमे पिताए ते पुत्रनुं नारायण नाम पाड्युं, परंतु जाग्य लक्ष्मीना चिन्हना दर्शनथी लोकमां तेनुं लक्ष्मण नाम प्रसिद्ध थयुं. पछी बलदेव अने वासुदेव एवा ते राम लक्ष्मण बन्ने जाइयो उरमान माताना पुत्र छतां पूर्वजवना संबंधने लीधे परस्पर अत्यंत स्नेहवाला थया.

कोइ वखते कैकेयी राणीये पण अवसरे शुज्ञ स्वप्न सूचवीने उदरमां आवेला जरत नामना पुत्रने जन्म आप्यो अने सुप्रजाये पण श्रेष्टकांतिथी सूर्यने तिरस्कार करनारा तथा शत्रुने विनाश करनारा शत्रुघ्न नामना पुत्रने जन्म आप्यो. पछी ते जरत अने शत्रुघ्न उरमान माताउना पुत्र छता परस्पर अत्यंत स्नेहवाला थया. अनुक्रमे दशरथ जूपतिना ते चारे पुत्रो कोटि शत्रुरूप हाथीयोने दलन करवामां सिंह समान, राज्यश्रीरूप हाथणीने विलास कराववामां

हाथी समान, सौन्नाग्यवंत पुरुषोमां अग्रेसर, सर्वकलाउना समूहने विषे अत्यंत चतुर तथा संपत्तियोने क्रीमा करवाना मंदिर रूप थया.

॥ इति श्री पद्म बलदेव चरित्रे प्रथम प्रस्तावः ॥

हवे जंबूद्वीपना ज्नरतक्षेत्रने विषे दारु नामनुं म्होटुं गाम बे. त्यां वसुन्नूति नामनो उत्तम ब्राह्मण रहेतो हतो. तेने कोशा नामनी स्त्री हती. तेउने अतिन्नूति नामे पुत्र हतो अने ते अतिन्नूतिने सुरसा नामनी स्त्री हती. तेउ सर्वे परस्पर अत्यंत स्नेहवाला हता. कोइ वखते कयान नामना कोइ कामी ब्राह्मणे ते सुरसाने जोइ कामथी अत्यंत पीमा पामता बतां तेनुं हरण कर्युं. कह्युं बे के–कामीयोना चेष्टितने तो धिक्कार बे. पबी अतिन्नूति ब्राह्मण पोतानी प्रियाने न देखी वियोगथी आकुल व्याकुल मनवालो थइने पृथ्वी उपर न्नमवा लाग्यो. कोशा अने वसुन्नूति पण मोहना वश थकी पुत्र अने तेनी प्रियानी शोधने माटे न्नमवा लाग्या. कह्युं बे के–निश्चय दुःखना वासरूप गृहस्थाश्रमने धिक्कार बे. पबी पृथ्वी उपर न्नमतां एवां ते कोशा अने वसुन्नूतिये कोइ एक वनने विषे चारणमुनिने जोइ तेमने वंदना करीने तेमनी श्रेष्ठ धर्मदेशना सांन्नली. अनुक्रमे ते बन्ने जणाउए प्रतिबोध पामी तेमनी पासे व्रत अंगीकार कर्युं. पबी मुनिये कोशाने कमल लक्ष्मीनी समीपे राखी. अनुक्रमे शुद्ध एवा चारित्रने पाली ते बन्ने जणाउ पहेला देवलोक प्रत्ये गया. त्यांथी वसुन्नूतिनो जीव चवीने वैताढ्य पर्वतने विषे रथनूपुर नगरमां चंद्रगति नामे विद्याधर थयो. कोशा पण त्यांथी चवीने पुष्पवती नामे तेनी स्त्री थइ.

हवे कयाने जेनुं हरण कर्युं हतुं ते सुरसाए पण गुरु पासेथी धर्म सांन्नली प्रबोध पामीने व्रत लीधुं. पबी ते व्रतनुं पालन करी ईशानेंद्रनी देवी थइ. प्रियाना वियोगथी गांमो बनेलो अतिन्नूति पण बहु काल सुधी संसाररूप अरण्यमां न्नमी अने पबी मृत्यु पामी कोइ एक राजहंसना पुत्रपणे उत्पन्न थयो. कोइ वखते आकाशने विषे उमता एवा ते राजहंसना बालने सिंचाणे पकम्यो, परंतु ते तेना मुखथी निकली जइने कोइ एक कृपाना समुद्र एवा मुनीश्वरनी पासे पम्यो. पबी मुनिये सिंचाणाना घातथी पीमायुक्त देहवाला अने जेनुं मृत्यु पासे आवी रह्युं ब एवा ते राजहंसना बालने पंच नवकार संन्नलाव्यो एटले परमेष्ठि नमस्कारना ध्यानथी ते पक्षी मृत्यु

पामी दश हजार वर्षनां आयुष्यवालो किंनर देव थयो. त्यांथी चवीने ते विदग्ध नगरने विषे प्रकाशसिंह नूपतिनी प्रवरावली राणीने विषे कुंमलमंमित नामना पुत्रपणे नत्पन्न थयो.

हवे पेलो दूरात्मा कयानो पण सुरसाना वियोगथी पीमा पामतो ठतो अनेक नवोने नमीने ठेवट चक्रपुर नगरने विषे श्री चक्रध्वज नूपतिनी स्वाहा नामनी स्त्रीना धूमकेश नामना पुरोहितनो बुद्धिहिन अने जम हृदयवालो पिंगल नामे पुत्र थयो. ते चक्रध्वज नूपतिने एक अतिसुंदरी नामे पुत्री हती. तेनी साथे पेलो पिंगलक गुरुनी पासे पाठशालामां रह्यो ठतो अन्यास करतो हतो. एक दिवस रागने लीधे जम बुद्धिवाला पिंगलके अवसर मलवाथी गुप्तरीते अतिसुंदरीनुं हरण करयुं. कह्युं ठे के—घणुंकरीने प्राणीयोनो स्वनाव अनेक नवोने विषे एकज रीतनो होय ठे. पठी ते पिंगलक ते राजकन्याने साथे लइ पोताना नगरथी नासी गयो अने ज्यां प्रकाशसिंह नूपति राज्य करतो हतो ते विदग्धपुर प्रत्ये आवी पहोच्यो. त्यां पण ज्ञान रहित एवो ते पिंगलक घास अने लाकमाना नारा वेचीने पोतानी आजीविका करवा लाग्यो. एक दिवस राजपुत्र कुंमलमंमिते रति अने प्रीतिने धिक्कार करवामां अति रूपवंती एवी अतिसुंदरीने दीठी; तेथी अनुरागवाला थयेला तेणे पिंगलक पासेथी ते कन्यानुं हरण करयुं अने पठी पिताना नयथी ते एक पल्लीमां जइ अतिसुंदरीनी साथे रहेवा लाग्यो.

पठी अतिसुंदरीना वियोगथी निरंतर आक्रमाना रुनी पेठे पृथ्वी नपर नमता एवा विप्र पिंगलके कोइ स्थानकने विषे आर्यगुप्त नामना साधुने जोइ तेमने वंदना करी. पठी तेमनी देशना सांनली नत्पन्न थयेला वैराग्यवाला तेणे चारित्र लीधुं; परंतु ते मुनिये अतिसुंदरीने विषे थयेलो राग त्यजी दीधो नहि.

हवे पेलो पल्लीमां रहेलो राजपुत्र कुंमलमंमित दशरथ राजाना देश प्रत्ये आवीने लुंट करवा लाग्यो. ते वखते दशरथ महाराजानी आज्ञाथी क्रोधातुर एवा बालचंद्र नामना सामंते तेने पकमीने बंधीखाने नाख्यो. पठी दशरथ नूपतिये केटलोक काल बंधीखाने राखी तेने प्रकाशसिंह नूपतिनो पुत्र जाणी दयाने लीधे ठोमी दीधो एटले तो पृथ्वी नपर भ्रमण करता ते कुंमलमंमिते कोइ दिवसे मुनिचंद्र नामना साधुने वंदना करीने तेमना नपदेशथी

श्रावक धर्म आदर्यो, परंतु तेणे मनमांथी क्यारे पण पिताना राज्यनी स्पृहा-ने त्यजी दीधी नहि. पछी ते अवसरे काल करी जनक नृपतिनी विदेहा राणी-ना उदरने विषे पुत्रपणे उत्पन्न थयो. देवांगना सुरसा पण ईशान देवलोकथी चवीने फरीथी धूमकेश पुरोहितनी वेगवती नामनी पुत्रीपणे उत्पन्न थइ. त्यां ते व्रत अंगीकार करी अनुक्रमे मृत्यु पामी ब्रह्मदेवलोक प्रत्ये गइ. त्यांथी च-वीने जनक नृपतिनी विदेहा राणीना उदरने विषे पुत्रीपणे उत्पन्न थइ. अनु-क्रमे विदेहाये ते पुत्र पुत्रीना जोमलांने साथे जन्म आप्यो.

हवे पिंगलक मुनि मृत्यु पामीने सौधर्म देव लोकने विषे देवतापणे उ-त्पन्न थया. त्यां तेमणे अवधिज्ञानथी पोताना शत्रु कुंमलमंमितने जनक रा-जाना घरे पुत्रपणे उत्पन्न थयेलो जोयो. पछी पूर्वभवना वैररूप दावानलथी तप्त थयेला अंगवाला ते देवताए ते बालकनुं हरण करी तत्काल आकाशमार्गे प्रयाण कर्युं. त्यांथी वैताढ्य पर्वत उपर जता एवा ते देवताए मनमां विचार कर्यो के, “ आ बालकने शिला उपर पछामीने तुरत मारी नाखुं. ” आ प्रमा-णे ते विचार करतो हतो एवामां तेने विवेक प्राप्त थयो; तेथी ते वली विचारवा लाग्यो के, “ अरे ! पूर्वभवने विषे करेला पापोथी संसारमां भ्रमण करतो ए-वो हुं दैवयोगथी देवपणुं पाम्यो छुं. तो वली बालहत्याथी उत्पन्न थयेला दुःखो-नो पात्र शा माटे थाउं ? ” आ प्रमाणे विचार करीने ते देवता उत्तम एवा आ-भूषणथी बालकने विभूषित करी रथनूपुर नगरना उद्यानने विषे पुष्पथी सु-शोभित एवी पृथ्वी उपर मूकीने पोताने स्थानके चाल्यो गयो. एवामां त्यां चंद्रगति विद्याधर आव्यो; ते बालकने जोइ चित्तमां घणो हर्ष पाम्यो. पछी चिं-तामणि रत्ननी पेठे ते बालकने ग्रहण करी विद्याधराधिप चंद्रगतिये पोताने घरे आवी पोतानी प्रियाने ते बालक पुत्रपणे सोंप्यो अने नाना प्रकारना दान आपीने विविध प्रकारना महोत्सवो कर्या. अहो ! सर्व स्थानके पुण्यथीज क-ल्याणकारी सुख प्राप्त थाय छे. पछी चंद्रगति विद्याधरे ते बालकनुं शरीर तेज-मय जोइ तेनुं महोत्सव पूर्वक भामंमल नाम पाड्युं.

हवे अहिं फक्त जन्म अवसरेज देखाइने तत्काल अदृश्य थइ गयेला पुत्रने जाणी विदेहा अत्यंत रुदन करवा लागी. अने राजा जनक पण तेनी साथे रुदन करवा लाग्यो. पछी तेणे सर्व स्थानके दूतोने मोकली गाम, नगर

अने खाण विगेरे पृथ्वी मंमलनो शोध कराव्यो, पण क्यांइथी पुत्रनी नाल मली नहि एटले सर्व दुःखनी शांति करनारी पुत्रीनुं नाम सीता पाम्युं. पछी जनक राजाना कुलने विषे सौभाग्यथी विशाल अने सर्व प्रकारना गुणनी गजशालारूप ते वाला रसाल एवी स्वर्गवेलनी पेठे वृद्धि पामवा लागी. अनुक्रमे सर्व कलाउनो अभ्यास करती यौवनावस्थाने प्राप्त थयेली ते कुमारीका विवाह योग्य शरीर संपत्तिने धारण करवा लागी एटले जनक नृपति पोताना प्रधानोनी साथे तेना वरनो विचार करवा लाग्यो. पछी अनेक नृपतियोए पोताना चित्रपट्ट त्यां मोकलाव्या. सीताये ते सर्वेना रूपोने जोयां, पण तेमांथी कोइ तेने रुचिकर थयो नहि—कह्युं छे के—सुवर्णनी वींटीमां जेवो तेवो हीरो योग्य होय नहि."

कोइ वखते अर्द्धबर्बर देशमां रहेला तरंगतम प्रमुख अनेक क्रूर राजाउए सैन्य सहित आवीने जनक नृपतिना देशने उपद्रव करवा मांम्यो. ते वखते पोताना बलथी तेउने दूर करवाने असमर्थ एवा जनक राजाए पोतानी सहायने माटे दशरथ राजाने तेमावा माटे तेनी पासे दूत मोकल्यो. दूत दशरथ नृपतिनी सभामां आव्यो एटले तेमणे जनक राजाना सर्व कुशल समाचार पूछया. दूते कह्युं. "हे महाराज! आप सरखा मित्र छतां मिथिला नगरीना अधिपति जनक राजाने भय क्यांथी होय? तो पण हे नाथ! एक वात निवेदन करवानी छे अने ते ए छे के, वैताढ्य पर्वतना दक्षिण भागमां अने कैलाश पर्वतना उत्तर भागमां रहेला घणा अनार्य देशोमां बहु क्रूर माणसो रहे छे. तेमां पण सर्व संपत्तिना स्थानरूप अर्द्धबर्बर नामना देशने विषे मयुरमाला नामना अति म्होटा नगरमां नाना प्रकारना पापकर्मने विषे तत्पर एवा सर्व लोको वसे छे. वली ते मयुरशाला नगरमां म्लेछनो अधिपति तरंगमत नामनो अति बलवान् राजा राज्य करे छे के, जेणे पोताना शौर्यथी कंबोजादि देशोने तत्काल पोताने स्वाधिन कर्या छे. हवणां पोताना बलथी स्फुरायमान थयेला ते राजाए घणा धान्यथी पूर्ण एवा क्षेत्रने जेम मुंम विनाश पमामे तेम मिथिलादेशने विनाश पमामवा मांम्यो छे. हाथी जेम झाडोने उखेमी नाखे तेम धर्मस्थानोने उखेमी नाखवा मांम्या छे अने पाषाण जेम केलना झामने पीमा उपजावे तेम साधु लोकना

समूहने पीमा उपजाववा मांमी छे. आवा कारणथी जनक राजाए ते शत्रुने जीतवा माटे आपनी सहाय मागी छे. कह्युं छे के, गांमो माणस पण मित्रना तेजने पामी पोतानी गांमाशने त्यजी दे छे.

पछी शत्रुरूप वनने दग्ध करवामां दावानल समान दशरथ राजाए दूतनां एवां वचन सांजली अत्यंत क्रोध पामता छतां शत्रुनो विनाश करवा माटे प्रयाणनो पटह वगमाव्यो. ते वखते पुत्रोमां मुख्य एवा श्री रामे पिताने प्रयाण करवामां सज्ज थयेला जोइ तत्काल प्रणाम करी प्रिय वचनथी विनंती करी के, “हे तात ! बंधुउवाला म्हारा सरखा पुत्र छतां अतुल पराक्रमवाला आप पोतेज शा माटे युद्धने अर्थे प्रयाण करो छो ? हे पिता ! कृपा करी मनेज आज्ञा आपो. कारण के, काकुस्थ कुलमां उत्पन्न थयेलो बालक पण शत्रुउना समूहनो विनाश करे छे.” आ प्रमाणे विनंती करी बलात्कारथी पिताना आज्ञा लइ कृतार्थ एवा श्री रामे जाइयोने साथे लइ म्होटी सेना सहित प्रयाण कर्युं. पछी शत्रुउनो नाश करवामां उत्पन्न थयेला रसवाला अने उत्तम बुद्धिवाला श्री राम, अनुक्रमे बंधुउ सहित मिथिलदेशनी समीपे आव्या. त्यां तो तेमणे इष्टिवेध करनारा, अत्यंत बलवंत अने चारे तरफ प्रसरी रहेला असंख्य कोटि म्लेच्छ सुजटोने दीठा. म्लेच्छना सुजटो पण अकस्मात् पोतानी समीपे आवेला रामना उत्कट सैन्यने जोइ तत्काल बहु क्रोध करवा लाग्या. पछी सज्ज कर्या छे आयुध जेमणे एवा ते म्लेच्छना कोटि सुजटो उत्कट एवा रामना सैन्य सामे युद्ध करवा दोम्या. ते वखते तेमणे तीक्ष्ण आयुधना वर्षादवमे जेम मेघ दावानलनो विनाश करे तेम रामना सैन्यनो विनाश कर्यो. पोताना सैन्यनो विनाश थतो जोइ क्रोधातुर थयेला म्होटा बलवंत राम पोते युद्ध करवाने उठ्या. तेमणे पोताना बाणोथी प्रबल एवाय पण शत्रुउने सिंह जेम पोतानी गर्जनाथी हाथीयोने त्रास पमामे तेम तत्काल त्रास पमाम्या. पछी म्लेच्छ नूपति पोतानी सेनाने चारे तरफ नासी जती जोइ पोते उत्कट बलथी युद्ध करवा लाग्यो, पण ते राम तरफथी आवतां संख्यावंध शस्त्रोने जोइ पोतानुं जीवित आपवाने समर्थ न थवाथी तुरत सर्व परिवारने त्यजी दइ कागमानी पेठे नासी गयो. ते वखते मिथिला नगरीना लोक अत्यंत आनंद पाम्या. जनक राजाए पण रामने मोटी गौरवपणाने यो-

ग्य एवा सज्जनोना आनंदने माटे तेमने महोत्सव पूर्वक पोतानी मिथिला नगरीमां प्रवेश कराव्यो. पछी तेणे गुणोथी मनोहर एवा श्री रामनी साथे पोतानी पुत्री सीतानो विवाह कर्यो. कह्युं छे के—पोताने घेर आवेला उत्तम वरने कोण न वरे ?

पछी नारदमुनि जगत्ने आनंदकारी सीतानी रूप संपत्ति सांभली आश्चर्यने धरता छता तत्काल जनक पुत्रीने जोवा माटे त्यां आव्या अने जेटलामां तेमणे कन्याना अंतःपुरने विषे प्रवेश कर्यो तेटलामां लांबी जटावाला, पिंगलवर्णा केशवाला अने भयंकर आकृतीवाला ते नारदने जोइ अत्यंत भय पामेली सीता तत्काल "हे मात ! हे मात ! !" एम कहेती कहेती घरनी अंदर पेसी गइ. एटलामां कन्यानुं रक्षण करवा माटे सखियोए त्यां आवीने नासी जता ते जटावंत नारदमुनिने रोकी दीधा अने सोर कर्यो के, "अरे सुभटो ! आ पापी एवा तापसने मारो ! मारो. ! !" सखियोनां आवां वचन सांभली, शस्त्रधारी अनेक सुभटो तैयार थइ गया. नारदमुनि तेम पासेथी महाकष्टे छूटीने नासी गया अने अपमान माटे सीताने विषे अत्यंत मत्सर धरवा लाग्या. वली क्लेश करावनारा ते नारदे विचार्युं के, "वैताढ्य पर्वत उपर जइ त्यां चंद्रगति विद्याधरनो भामंडल नामे पुत्र के, जे हवणां युवावस्थाने पाम्यो छतो पाणिग्रहण करवाने योग्य थयो छे, तेने सीतानुं प्रीतिकारी रूप देखाडुं." आ प्रमाणे विचार करी नारदे चित्रकार पासे सीतानुं श्रेष्ठ रूप पटमां आलेखावी भामंडल कुमारने देखाड्युं; तेथी चित्रपटने जोइ प्रसन्न थयेला उत्तम बुद्धिवाला भामंडल कुमारे कह्युं के, "हे नारदमुनि ! मनुष्योमां अद्भुत एवुं आ कोनुं रूप छे ?" नारदे कह्युं. "मिथिला नगरीना जनक राजानी पुत्री सीतानुं ए रूप छे." एम कही नारदमुनि आकाश मार्गे चाल्या गया. भामंडल कुमार पण सीतानी प्राप्तिने माटे व्याकुल मनवालो थयो. पछी चित्रपटने जोवाथी दुःखरूप मन्मथ समुद्रमां बूडी गयेला पुत्रने जाणी चंद्रगति विद्याधरे तेने कह्युं. "हे पुत्र ! शुं त्हारा शरीरने विषे कोइ रोग थयो छे के मन संबंधि कांइ पीडा उत्पन्न थइ छे ? अथवा अदृष्ट वस्तुने मेलववामां चिंतातुर थयो देखाय छे ?" ते वखते कुमारना मित्रोए चंद्रगति राजाने कह्युं के, "हे विभु ! मालतीमां भ्रमरनी पेठे जन-

क राजानी पुत्री सीता के, जे रूप संपत्तिथी प्रसिद्धि पामेली अने गुणवाली बे, तेने विषे आ कुमारनुं मन आसक्त थइ गयुं बे. तो तेने सीतानी साथे परणावीने तेनी चिंता दूर करो." चंड्गतिये आ प्रमाणे पुत्रनो मनोरथ जाणी तेने कह्युं के, "हे वत्स ! तुं जरा पण खेद न कर. हुं थोमाज वखतमां जानकीनी साथे त्हारो विवाह करावीश, माटे शांत था.". पितानां आवां वचन सांजली अत्यंत हर्षित थयेलो जामंमल कुमार स्वेछाथी पोताना मित्रोनी साथे सुखे क्रीमा करवा लाग्यो.

पछी चंड्गति विद्याधरे पोताना चपलगति नामना सेवकने मिथिलाना अधिपति जनकने बोलाववा आज्ञा करी, ते उपरथी ते विद्याधर मिथिला नगरी प्रत्ये आवी रात्रीये जनक राजानुं हरण करी तेने वैताढ्य पर्वत उपर लइ गयो. त्यां चंड्गति विद्याधरे तेमने जेटी उत्तम सिंहासने बेसारी अने पोते म्हाना सिंहासन उपर बेसी आ प्रमाणे जनक राजाने कहेवा लाग्यो. "हे राजन् ! आपनी पुत्री सीता के, जे उत्तम रूपवाली अने गुणवाली बे ते म्हारा पुत्र जामंमलने आपो अने ए संबंधथी विद्याधरना अधिपति अने माणसोना अधिपति एवा आपणी प्रीति दीर्घकाल सुधी स्थिर अने कुशलकारी थाय." जनक राजाए कह्युं. "हे विद्याधरेंड् ! अमारा सरखा माणसोने विषे उत्कृष्ट स्नेहने धारण करता एवा आपे योग्य कह्युं बे, परंतु ए पुत्रीने में दशरथना पुत्र रामने प्रथमथी आपी दीधी बे; कारण कन्यानुं दान एकवारज थइ शके बे. पछी चंड्गति विद्याधरे क्रोधातुर थइ पोतानी शक्तिने देखामनारुं वचन कह्युं के, "हे राजन् ! हुं पोतानी विद्याबले तमने आकाश मार्गे करी अहिं लाव्यो बुं, तो पछी सीतानुं हरण करवामां केटलोक वखत थवानो ते कहो ? माटे हुं प्रीतिनो संबंध मागुं बुं ते अंगीकार करो. वली हे राजन् ! अमारा सरखा महा शत्रु उत्पन्न थये बते राम अथवा बीजा कोइ राजानो पुत्र सीतानुं पाणीग्रहण करी शकशे खरो ?" विद्याधर चंड्गतिये आ प्रमाणे कह्युं एटले जनक राजा मौन रह्यो, तेथी तेणे जनक राजाने फरी विचार करीने कह्युं. "हे राजन् ! वली म्हारुं एक वचन सांजलो.

म्हारा घरने विषे म्हारा पूर्वजोनी परंपराथी चालता आवेला अने वासुदेवना वलने योग्य एवा वज्रावर्त्त अने अर्णवावर्त्त नामना बे धनुष्य बे. जूदा

जूदा हजारो देवताए आश्रित करायेला ते बन्ने मांथी एक धनुष्यने पण राम अथवा बीजो कोइ राजपुत्र पोताना भुजबलथी चमावशे तेज राजपुत्र भुजबलथी संपादन करेली सीताने परणशे. बीजो कोइ समर्थ एवो य पण भूपति नहि परणी शके." जनके परवश्यपणाने लीधे विद्याधरनां आ वचन अंगीकार कर्यां एटले चित्रगतिये तेने बन्ने धनुष्यो आपी मिथिला नगरी प्रत्ये पहोचाड्यो अने पोते पुत्र परिवार सहित पोताना घरने विषे रह्यो. अहिं जनक राजाए पोतानी मिथिला नगरी प्रत्ये आवी सर्व वृत्तांत पोतानी प्रियाने कह्यो एटले तो ते पुत्रीना मोहथी अत्यंत पीडा पामती छती बहु रुदन करवा लागी अने दैवने ठबको आपीने केहेवा लागी के, "अरे दैव ! तेंज म्हारा तुरतना जन्मेला पुत्रनुं हरण करी मने दुःख आप्युं छे अने वली हवणां आ पुत्रीनुं हरण करीने शा माटे दुःख आपीश ? निश्चय हुं नथी जाणती के, देवताउए आश्रित करेलां आ बन्ने धनुष्यने राम के बीजो कोइ राजपुत्र चमावे, ए म्हारा हृदयने विषे म्होटुं शल्य उत्पन्न थयुं छे." आ प्रमाणे शोक करती एवी प्रियाने जनके कह्युं. "हे प्रीया ? परवश्यपणाथी जे अंगीकार कर्युं छे तेनो हवे शोक शो करवो ? वली में रामनुं पराक्रम जोयुं छे. हुं धारुं छुं के, ते एकवार वज्रने पण भागी नाखे तेवा छे तो पछी ते आ बन्ने धनुष्यने चमावे एमां तो शंका शी राखवी, माटे हे प्रिया ! शांत था अने शोक त्यजी दे."

आ प्रमाणे प्रियाने शांत करी जनक राजाए सर्व प्रकारनी शोभाथी स्वर्गलक्ष्मीने जीतनार म्होटा स्वयंवर मंडपने रची तथा बन्ने धनुष्योने जूदा जूदा सिंहासनो उपर मूकीने पछी ते चंद्रगति विद्याधरने अने बीजा बहु राजपुत्रोने तेडाव्या. पछी चंद्रगति विगेरे विद्याधर अने राजकुमारो पोतपोताना सिंहासन उपर विराज्ये छते महा तेजवंत सिंहासन उपर बेठेला श्री राम लक्ष्मण महा कांतिवंत एवा पुष्पदंतनी पेठे शोभवा लाग्या. पछी जनकनी आज्ञाथी उत्तम शृंगारवडे सुशोभित एवी सीता पोताना हाथने विषे वरमालाने धारण करती छती हर्षथी स्वयंवर मंडपमां आवीने पालखीमांथी नीचे उतरी सिंहासन उपर मूकेलां बन्ने धनुष्योनुं आदरथी पुष्पवडे पूजन करवा लागी. त्यारपछी पण दिव्य वेशने धारण करनारी सीता जाणे ते धनुष्योनी अधिष्टायक देवीज होयनी ? एम ते धनुष्योनी

आगलज रामने पोतानो पति इच्छती छती ऊन्नी रही. ज्ञामंमल कुमार पण सीतानुं स्वरूप जोइ कमलीनीने विषे भ्रमरनी पेठे अत्यंत अनुरागवालो थयो. आ वखते जनक नृपतिनी आज्ञाथी द्वारपाले पोतानो हाथ ऊंचो करीने तत्काल कह्युं के, "हे नृपालो अने विद्याधरो! म्हारुं वचन सांभलो. "तमारा मध्येथी जे कोइ पुरुष आ बन्ने धनुष्यमांथी एकनी उपर पण बाणने आरोपण करशे. तेज आ सीता नामनी कन्यानो पाणीगृहण करशे." द्वारपालनां आवां वचन सांभली सर्वे विद्याधरो अने राजकुमारो धनुष्य चमावानी इच्छाथी तेनी पासे गया; परंतु त्यां तो ऊंची करेली फणावाला महासर्पना दृष्टिरूप विषना ज्ञारथी व्याप्त थयेला तथा यमनी जिह्वाना समान अतुल अग्नि ज्वालारूप ते बन्ने धनुष्योने जोइ भयथी खेदयुक्त थयेला तेओ तत्काल पाछा आवी पोतपोताने आसने बेठा. पछी भुजा बलथी शत्रुना वर्गने तिरस्कार करनारा अने सिंहना समान पराक्रमवाला श्री राम पोताना आसनथी ऊठी धनुष्य पासे आव्या. ते वखते बीजा सन्नाजनोए "जेम पूर्वे आवेला राजकुमारोए धनुष्य चमाव्युं तेम आ पण चमावशे" एम कही रामने हसी काढ्या; परंतु श्री रामे तो चंड्गत्यादि विद्याधर पतियोए रोष सहित जोता छतां नाश पामेला सर्पना समूहरूप अने शांत थयेली ज्वालावाला अग्निरूप ते वज्रावर्त नामना धनुष्यने लीला मात्रमां कमलना नालनी पेठे उपामी ते उपर बाण चमाव्युं. ते वखते "इक्ष्वाकु कुलरूप आकाशने प्रकाश करवामां सूर्य समान, कोटि वीर पुरुषोमां हीरा समान! महा बलवंत हे राम! तमे जयवंता वर्तो." आम अनेक विद्याधरो, देव अने दानवो श्री रामनी स्तुति करवा लाग्या एटले सीताये पोताना हाथमां रहेली वरमाला श्री रामना कंठने विषे हर्ष सहित आरोपण करी. पछी रामनी आज्ञाथी लक्ष्मणे पण सर्व राजलोक जोता छतां तत्काल अर्णवावर्त्त नामना धनुष्यने चमाव्युं. लक्ष्मणनुं आवुं अद्भुत पराक्रम जोइ प्रसन्न थयेला विद्याधरोए पोतानी अढार कन्याओ लक्ष्मणने आपी. पछी खेदयुक्त मनवालो चंड्गति विद्याधर पोताना ज्ञामंमल पुत्र सहित वैमानमां बेसी परिवारे परवस्यो थको पोताना नगर प्रत्ये आव्यो. जनक राजाए पण पोतानी पुत्री सीताना विवाह महोत्सव निमित्ते दशरथ नृपतिने पोताना नगर प्रत्ये बोलाव्या. दशरथ राजा त्यां आव्या एटले ज-

नके पोतानी पुत्री जानकीनो लग्न विधि महोत्सव कर्यो. जनकना न्हाना भाइ जटके पण कैकेयी नामनी पोतानी पत्नीना उदरथी उत्पन्न थयेली भद्रा पुत्री भरतने परणावी. आ प्रमाणे सर्व राजाउने विस्मयकारी पुत्रना विवाह उत्सवने करी प्रसन्न थयेला मनवालो दशरथ राजा पुत्र अने पुत्रनी स्त्रीयो सहित जनक राजाथी सज्जनोने प्रशंसवा योग्य एवा श्रेष्ट गौरवपणाने पामीने निर्भय थयो उतो फरी पोतानी अयोध्या नगरी प्रत्ये आव्यो.

॥इति श्री पद्म बलदेव चरित्रे सीता विवाहो नाम द्वितीयः प्रस्तावः॥

पछी प्रशंसा करवा योग्य साम्राज्य पदने भोगवता एवा दशरथ राजाए कोइ वखते शांति निमित्ते म्होटि समृद्धि पूर्वक श्री जिनेश्वरनो स्नात्र महोत्सव कर्यो.पछी तेमणे एक दिव्य कचोलामां ते स्नात्रनुं पवित्र जल भरी कौशल्याने आपवा माटे वृद्ध द्वारपालने मोकल्यो अने वीजां सारां पात्रमां भरी वीजी स्त्रीयोने आपवा माटे पोतानी दासीयोने मोकली. हवे कौशल्या विनानी वीजी सर्वे स्त्रीयोए पोतपोताने प्रथम प्राप्त थयेलां ते स्नात्र जलने मस्तकवडे वंदन करी अमृत रसनी पेठे सुवर्ण पात्रमां भरी राख्युं अने कौशल्या तो पोताने स्नात्र जल नहि मलवाथी शोकाकुल थइने विचार करवा लागी के, " मान रहित जीवितने धिक्कार छे के, जे पतिये वीजी स्त्रीयोने विघ्ननी निवृति माटे स्नात्र जल मोकल्युं अने मने मोकल्युं नहि, माटे निश्चय हुं मंद भाग्यवाली छुं. हवे पतिना सन्मान रहित एवी म्हारे मरण पामवुं एज श्रेयकारी छे. " आम धारीने दशरथ प्रिया कौशल्याए जेटलामां पोताना कंठने विषे पाश नाख्यो तेटलामां दैवयोगथी त्यां दशरथ राजा आवी चड्या. तेमणे कौशल्यानी आवी अवस्था जोइ हृदयमां विस्मय पामी तत्काल हरीनेज ते कंठ पासने छेदी नाख्यो अने पछी पोताना खोलामां बेसारीने प्रेमथी तेने कह्युं के, " हे प्रिया ! त्हारो आवो म्होटो अपराध कोणे कर्यो छे ? निश्चय त्हारो अपराध करनार माणस म्हारे सन्मान करवा योग्य हशे तो पण तेणे पोतानुं मृत्यु इच्छेलुं देखाय छे. "

कौशल्याए कह्युं " हे नाथ ! आपे वीजी स्त्रीयोने त्यां स्नात्र जल मोकलाव्युं अने मने न मोकल्युं, एथीज आ म्होटुं दुःख उत्पन्न थयेलुं छे. " कौशल्या आ प्रमाणे जेटलामां पोताना पतिने कहे छे, तेटलामां वृद्ध द्वारपाल आ-

वी ने कह्युं के, "हे मात? महाराजाए मोकलावेलुं आ स्नात्र जल ग्रहण करो." कौशल्याए अत्यंत हर्ष पामी ते स्नात्र जलने स्वीकार्युं. पछी दशरथ नूपतिये द्वारपालने पूछ्युं के, "हे नइ! तने दुःखदाइ आटली वार क्यां थइ?" तेणे कह्युं "हे महाराज! मने बहु वृद्धावस्था प्राप्त थइ छे; तेथी हुं उतावलथी चालवाने असमर्थ छुं." पछी दशरथ महाराजा पण वलीयांथी व्याप्त शरीरवाला, धोला केशवाला, अमनोहर शरीरवाला, वली गयेली केमवाला, गलतां नेत्रवाला, क्षणे क्षणे मुखमांथी पमती लालना समूहवाला, सुकाइ गयेला मांस अने चामडीथी अत्यंत दुर्बल देखाता, बल रहित थयेला, श्वासोश्वास चमवाने लीधे ठेकाणे ठेकाणे उन्ना रहेता अने जरावस्थाथी जर्जरीनूत थइ गयेला ते द्वारपालने जोइ विचार करवा लाग्यो के, "अहो! देव अने दानवोथी पण न निवारी शकाय एवी आ जरावस्था बलात्कारथी शरीरने जर्जरीत न करी नाखे त्यां सुधी माणसोए परलोकना हितने माटे यत्न करवो." आम विचार करता ते नूपति केटलोक काल त्यांज रह्या. कोइ वखते चारज्ञानना धारणहार सत्यनूति सूरि अनेक साधुउना समूह सहित ते नगरीना उद्यानने विषे आव्या एटले दशरथ राजा पोताना पुत्र अने स्त्रीयोना परिवार सहित हर्षथी तेमनी धर्म देशना सांनलवाने उद्यानमां गयो. त्यां ते आचार्यने योग्य रीते प्रदक्षिणा करी अने परम नक्तिथी वंदना करी योग्य स्थानके बेठो. हवे ते अवसरे विद्याधरनो अधिपति चंड्गति के, जे पोताना पुत्र नामंमल सहित वैमानमां बेसी रथावर्त पर्वत उपर गयो हतो तेणे त्यांना चैत्योने वंदना करी पाछा आवता आकाश मार्गथी आ सूरीश्वरने जोया; तेथी ते पण आकाश मार्गथी नीचे उतरी मुनीश्वरने वंदना करी धर्म सांनलवा बेठो. पछी आचार्ये ते सर्वने प्रतिबोध करवा सारु अमृत समान वाणीवमे पापनो नाश करनारी देशनानो आरंन कर्यो. तेमां पण विशेषे तो जानकीनी स्पृहाथी उत्पन्न थयेलां पापथी छोमाववाने अर्थे अने नामंमल कुमारना चित्तना संतोषने अर्थे तेना पूर्व जन्मना माता पिता, पुष्पवती अने चंड्गतिना पूर्व नवो कही संनलाव्या. पछी नामंमल कुमार अने सीताना जोमलानी उत्पत्ति तथा नामंमलनुं उत्पत्ति वखतेज शत्रुए करेलुं हरण पण कही बताव्युं. विद्याधर कुमार नामंमल आ सर्व हकीकत सांनली पोताना

पूर्व भवनुं यथार्थ स्मरण करतो छतो तत्काल मूर्छा पामी गयो. थोडीवारे मूर्छा वली एटले उत्तम बुद्धिवंत एवा तेणे सीताने पोतानी बेन मानता छता अने पोताना आत्मानी निंदा करता छता सीतानी साथे विवाह करवानी इच्छा त्यजी दीधी; एटलुंज नहि पण तेणे सीताने पोतानी व्हेन जाणीने वंदना करी. सीताए पण तेने पोतानो साथे जन्मेलो बंधु जाणी आशिष आपी. पछी चंद्रगति विद्याधरे भामंडल कुमारने मिथिलापुरीने विषे ज्यां जनक भूपति अने विदेहा हतां त्यां पहोचाड्यो अने तेउने जोडलामां उत्पन्न थयेला भामंडल कुमारनी वात अने तेनुं पूर्व जन्मना वैरीये करेलुं हरण ते सर्व कही संभलाव्युं. भामंडल कुमारे पण प्रेमयुक्त थइ हर्षनां आंसुने वरसावतां पोताना खरा माता पिताना चरणमां प्रणाम कर्यो. माता पिताए दिव्यरूपनी संपत्तिवाला पुत्रने प्रेम दृष्टिथी जोइने हर्षथी पोताना खोलामां बेसार्यो. वली भामंडल कुमारे सीताना आवरणथी उत्पन्न थयेला क्रोधनी शांतिथी प्रसन्न थइ रामने पण नमस्कार कर्यो. पछी चंद्रगति विद्याधरे प्रबोध पामी भामंडल कुमारने पोतानुं साम्राज्यपद आपी तेज सत्यभूति सूरि पासे चारित्र अंगीकार कर्युं. कह्युं छे के—महात्माउने पुण्यकार्यमां विलंब होतो नथी. पछी भामंडल कुमार चंद्रगति राजर्षिने, विदेहाने, जनक भूपतिने, दशरथ नृपने, व्हेन सीताने अने रामने नमस्कार करी वैताढ्य पर्वत उपर गयो. व्रत ग्रहण करवाने अभिलाषवंत थयेला दशरथ भूपति पण उद्यानथी नगरीने विषे आवी कौशल्यादि सर्व प्रियाउने तथा श्री रामप्रमुख पुत्रोने तत्काल बोलावी कहेवा लाग्या के, "हे वत्सलो! तमे सौ मने दीक्षा लेवानी आज्ञा आपो. कारण के, पूर्वजोनो एज क्रम चाले छे." पछी भक्तिवंत भरते कह्युं. "हे तात! हुं पण आपनी साथे नाना प्रकारना भवनो नाश करवा माटे व्रत अंगीकार करीश." आ वखते कैकेयी विचार करवा लागी के, "हाय हाय! हणायेली आशावाली हुं पति अने पुत्र विना एकली घरने विषे केम रही सकीश?" आम धारी ते बोली के, "हे नाथ! पूर्वे आपे मने वरदान आप्यो छे ते हवणां म्हारा उपर कृपा करी मने आपो." दशरथे कह्युं. "हे प्रिया! मरजी प्रमाणे ते वरदानने तुं तत्काल मागी ले. कारण इक्ष्वाकु वंशमां उत्पन्न थयेला राजाउनुं वचन क्यारे पण फोगट जतुं नथी."

पछी कैकेयीए कह्युं. "हे नाथ! ज्यारे आप दीक्षा लेवाना छो त्यारे ज्ञरतने राज्यासन आपो अने लक्ष्मण सहित रामने वनवास जवानी आज्ञा आपो." दशरथ राजाए "एम थाउ." एम कही प्रियानां वचन अंगीकार कर्यां. पछी पुत्र उपर प्रीतिवंत एवा दशरथ ज्ञूपतिये राम तथा लक्ष्मणना सामुं जोइने स्नेह सहित कह्युं के, "ज्ञुजाबलथी श्रेष्ठपणुं मेलवनार हे ज्येष्ट पुत्र! तुं आदरथी सांज्ञल. पूर्वे विवाह अवसरे आ त्हारी उरमान माता कैकेयीना शक्तियोगथी में रणसंग्राममां शत्रुनो नाश कर्यो हतो अने एज कारणथी जयवंत थयेला में तेने तत्काल वरदान आप्यो हतो. परंतु ते अवसरे तेणे ए वरदान न ग्रहण करतां ज्ञंमारमां रखाव्यो हतो, परंतु हवणां ते पोताना पुत्र ज्ञरतने राज्यपद अपाववारूप ते आपेला वरदाननी मागणी करे छे." पछी श्री रामे हाथ जोमी पिताने कह्युं. "हे तात! पोताना अवसरनी जाण एवी कैकेयीए पोतानो वरदान सारो माग्यो छे, माटे ज्ञरतने मरजी प्रमाणे राज्य आपो अने आपनी आज्ञा मने निश्चय श्रेयकारी थशे." दशरथे कह्युं. "हे वत्स! तें पोताना कुलने योग्य एवुं बहु सारुं कह्युं. में प्रथमथीज सांज्ञव्युं छे के, राम अत्यंत विनयी छे." दशरथ राजा आम कहेता हता एटलामां विनयवंत एवा ज्ञरते ज्ञूपतिने फरीथी कह्युं. "हे तात! में आपनी प्रथमथीज विनंती करी छे के, "निश्चय आपनी साथे म्हारे पण दीक्षा लेवी छे. वली सर्व गुणोना समुडरूप अने राज्यपदने योग्य एवा म्होटा ज्ञाइ रामने मूकी म्हारे विषे राज्यनो ज्ञार मूकवो ते योग्य नथी, माटे हे पिता! गुण समूहना स्थानरूप रामने पोताने पदे स्थापी म्हारा सहित आप दिक्षा स्वीकारो." पछी रामे राज्य संपत्तिथी विरक्त थयेला अने गुणसंपत्तिथी श्रेष्ठ एवा पोताना न्हाना ज्ञाइ ज्ञरतने कह्युं. "विनीत पुरुषोमां मुख्य अने मर्यादा रसना समुडरूप हे बंधु! तुं पितानी आज्ञाने उल्लंघन करवा योग्य नथी. तुं राज्य ग्रहण कर एटले पिता रुणमुक्त थाय, माता पोताना हृदयने विषे प्रसन्न थाय अने हुं वनमां जाउं. पछी तुं दीर्घकाल पर्यंत राज्यलक्ष्मीने ज्ञोगव." विनयवंत ज्ञरते रामना चरणनो स्पर्श करीने कह्युं के, "हे बंधु! विजयवंत एवा आप पूज्य म्होटा बंधु विद्यमान छतां जो हुं राज्यने अंगीकार करुं तो निश्चे डुर्विनीतनो शिरोमणि थाउं." ज्ञरतनां आवां वचन उपरथी रामे

निश्चय कर्यो के, "हुं ज्यां सुधी अहिं रहिश त्यां सुधी भरत राज्यने अंगीकार करशे नहि अने तेथी पितानां वचननी हानी थशे." आम धारी निष्कपट चित्तवाला रामे दशरथ भूपतिने कह्युं. "हे पिता ! ज्यां सुधी हुं अहिं रहीश त्यां सुधी भरत राज्यने गृहण करशे नहि; माटे हुं आपना चरणने नमस्कार करी हवणांज वनवास जाउं के, जेथी पछी भरत सुखे राज्य भोगवे." आ प्रमाणे कही प्रौढ पराक्रमवंत राम पोताना धनुष्य बाण लइ पितानी पासेथी चाली निकळ्या. ज्यारे कुलरूप आकाशने प्रकाश करवामां सूर्य समान राम पोतानी नजरेथी दूर गया एटले तो शोकथी विह्वल थयेला दशरथ राजा मूर्छा पाम्या. राम पण पिताने विषे भक्ति धारण करता अने भरतने विषे प्रेम संपत्ति धारण करता कौशल्या माता पासे आवीने आ प्रमाणे केहेवा लाग्या. "हे मात ! पोतानी प्रतिज्ञा पूर्ण करवाने माटे म्हारा पिता भरतने राज्य आपे छे; परंतु ज्यां सुधी हुं अहिं छुं त्यां सुधी ते राज्यनो स्वीकार करता नथी, माटे हुं हवणां एकलोज वनमां जाउं छुं. तमारे म्हारा संबंधी कांइ दुःख धरवुं नहि." पछी कौशल्या पण दीर्घकाल सुधी पुत्र विरह थतो जाणी तत्काल रुदन करता छता मूर्छा पाम्या. वली ते विलाप करवा लाग्या के, "हे पुत्र ! हवणां तुं मने दुःखना पात्ररूप बनावे छे तो पछी हुं शोक्योने विषे दुःसह एवा पराभवने शीरीते सहन करी सकीश." पछी जानकीपति श्री राम रुदन करती एवी माताने महाकष्टथी शांत करी पोतानी प्रतिज्ञा पालवाने उत्साहवंत थया थका नगरनी बहार उद्याननेविषे आव्या. आ वखते पतिना प्रवासने जाणी सीता विचार करवा लागी के, "हाय हाय ! म्हारा पूर्वे करेला कर्मने धिक्कार छे. वली कुलवंत एवी सती स्त्रीयोने तो संपत्तिने विषे, विपत्तिने विषे, सुखने विषे अथवा दुःखने विषे पतिनी पाछल जवुं एज वखाणवा योग्य छे." आम निश्चय करी जानकी कौशल्या पासे आवीने केहेवा लागी. "हे मात ! हुं भक्तिने लीधे पतिनी पाछल जइश." प्रशंसा करवा योग्य गुणनी पंक्तिथी आनंदित थयेला अने वियोगथी आकुलव्याकुल थता एवा कौशल्याए सीताने कह्युं. "केलना स्तंभ समान अत्यंत कोमल देहवाली अने मनोहर नेत्रवाली हे पुत्री ! तुं प्रवासथी उत्पन्न थयेला महा दुःखने शीरीते सहन करी सकीश ?" वीरपत्नी ते-

ताए कह्युं. "हे मात ! पोताना पतिनी सेवाथी तो मने वनवास पण अत्यंत सुखकारी थशे." आ प्रमाणे कहीने नित्य शीलरूप अलंकारने धारण करनारी सीता निर्मल चित्तथी रामनी पाछल गइ. त्यां कवि उत्प्रेक्षा करे छे के, जेम दातारनी पाछल कीर्त्ति, धर्मी पुरुषनी पाछल श्रद्धा अने वीर पुरुषनी पाछल जयश्री जती शोभे छे तेम रामनी पाछल जती सीता शोभती हती. "सर्व स्त्रीयोने विषे मुकुट समान आ सीताने धन्य छे के, जे पतिनी भक्तिथी राज्यने त्यजी दइ वनने विषे जाय छे." आम पुरनी स्त्रीयोनां मुखथी पगले पगले पोतानी प्रशंसा सांभलती ते शीलरूप आभूषणवाली सीता प्रेमपूर्वक पतिनी साथे चाली.

हवे अहिं रामनीज साथे रात्री दिवस निवास करनारा अने प्रेमना ऊंडारूप लक्ष्मण पोताना मनमां विचार करवा लाग्या के, "अहो! कैकेयीनी कपट चातुरीने धिक्कार छे के, जेणे राज्यने योग्य एवा श्री रामने वनवास अपाववाने अने पोताना पुत्र भरतने राज्य अपाववाने माटे राजा पासेथी आवो वरदान माग्यो. हुं क्षणमात्रमां भरतने राज्यथी दूर करी श्री रामने राज्यासने स्थापुं, परंतु एम करवाथी पितानी आज्ञानो भंग शुं न थाय? अर्थात् थाय. अरे ! जनकसुता सहित श्री रामना चरण तो वनमां पण पहोंच्यां अने हवे जो हुं अहिं रहुं तो म्हारा बंधुपणाना प्रेमने धिक्कार छे ! धिक्कार छे !!" आम विचार करी भाइना स्नेहथी आकुल थयेला लक्ष्मण, पोतानी माता सुमित्रानी, पिता दशरथनी अने कौशल्यानी आज्ञा लइ बाणथी पूर्ण एवा भाथा सहित पोताना अर्णवावर्त्त धनुष्यने हाथमां लइ गुफामांथी निकलेला केसरीसिंहनी पेठे पोताना भुवनथी निकली जेम संसारना पारने पामेला उत्तम मुनिने वैराग्यवंत पुरुष मले तेम बहु दूर गयेला रामने मल्या. आ वखते जेम विजली अने मेघथी मंदराचल पर्वत शोभे तेम लक्ष्मण अने जानकीवमे श्री राम अत्यंत शोभवा लाग्या. अहिं पाछल जानकी, राम अने लक्ष्मण विनानुं दशरथ राजानुं घर, नेत्र अने नासिका विनानां मुखनी पेठे देखावा लाग्युं. दशरथ भूपति पण राम, जानकी अने लक्ष्मणना वियोगथी पोताना घरने स्मशान तुल्य मानवा लाग्यो. पछी ते वेगवाला घोमा उपर बेसी कौशल्यादि प्रियाउ अने मंत्री सामंतोने साथे लइ रामनी पाछल गयो.

त्या तेणे रामने "हे वत्स ! सीता अने लक्ष्मण सहित पाछा वलो." एम बहु आग्रहथी कह्युं; परंतु ते बन्ने भाइयोए पोतानी प्रतिज्ञा पूर्ण करवामां उत्साहवंत थइ सद्वचनथी समजावीने पिताने पाछा वाल्या. ज्यारे वियोगथी झांखा सरखा थयेला दशरथ विगेरे माणसो पाछा वल्या त्यारे सीता अने लक्ष्मण सहित राम आगल चालवा लाग्या. रस्ते ठेकाणे ठेकाणे अनेक राजाओ तेमनुं गौरव करता हता; परंतु प्रतिज्ञा पालवामां तत्पर एवा ते बन्ने भाइयो कोइ ठेकाणे रह्या नहि.

हवे अहिं दीक्षा लेवामां उत्साहवंत थयेला उत्तम बुद्धिवाला दशरथ राजाए भरतने राज्य अंगीकार माटे बहु समजाव्या; परंतु तेमणे तो रामना प्रवासना मूल कारणरूप पोताना आत्माने अने पोतानी माता कैकेयीने वारंवार निंदता छता कोइपण उपाये राज्यपद अंगीकार कर्युं नहि एटले तो फरी तेमणे व्रतनी इच्छाथी रामने पाछा वालवा सेना सहित सर्व सामंतोने मोकल्या. सामंतोए नृपतिनी आज्ञाथी तत्काल रामने मली तेमने पाछा वालवा बहु विनंती करी, पण चारे दिशाओने जोवामां उत्साहवंत अने प्रतिज्ञा पूर्ण करवामां तत्पर एवा श्री रामे ते सामंतोना आग्रहने कोइपण रीते स्वीकार्यो नहि. सामंतो पण श्रीमान् रामचंद्रे पाछा वलवानुं कह्या छतां तेमने पाछा लइ जवानी इच्छाथी ते वात तेमणे कबुल करी नहि.

पछी ते सर्व सामंतो सहित पृथ्वीनुं उल्लंघन करता राम एक म्होटा घोर अरण्यमां आवी पहोंच्या अने तेमां पण पोतानुं प्रयाण शरु राखवाथी तेओ एक म्होटी गंभीर अने नहि तरी शकाय एवी विषम नदीना तीरे आव्या. त्यां तेमणे निवास करी सर्व सामंतोने आ प्रमाणे कह्युं के, "हे सामंतो ! आ आगल रहेली नदी बहु विषम छे. वली हुं पण पितानी प्रतिज्ञा पूर्ण करवानी इच्छाथी हवणां पाछो वलीश नहि; माटे तमारे पाछुं जवुं, एमां जरा पण विचार करवो नहि. तमारे पिताश्री दशरथ नृपतिने अने माता श्री कौशल्याने म्हारा प्रणाम कहेवा तथा राज्यपद धारण करी रहेला भरतने विषे भक्तिवंत थवुं." पछी राम ते सर्व सामंतोने ते नदीने तीरे राखी लक्ष्मण अने सीता सहित पोते ए नदीने तत्काल उतर्या. सामंतो पण नदीने तीरे दूर रह्या छता नदीने उतरी सामे तीरे जइ त्यांथी आगल चालवाने लीधे पोतानी

दृष्टिथी अदृश्य थयेला रामने जोइ पाछा वळ्या. त्यांथी तेमणे विनीता नगरी प्रत्ये आवी दशरथ नृपतिने प्रणाम करीने रामनुं अरण्यमां प्रयाण, कुशल अने प्रणाम विगेरे कही संभळाव्युं. पछी दशरथ राजाए भरतने कह्युं. "हे वत्स! हवणां तुं राज्यने गृहण करी म्हारी वृद्धनी व्रतेच्छा पूर्ण कर." रामनी भक्तिथी सर्व नगरवासी जनोने प्रसन्न करनार भरते पण कह्युं के, "हे तात! आप गमे तेम करशो तो पण हुं वमी काढेला अन्ननी पेठे राज्यने तो नहिज भोगवुं. वली हुं आपनी आज्ञाथी रामनी पाछल जइ तेमने अति आदर पूर्वक अहिं तमारी पासे तेडी लावीश. आ वखते कैकेयीये आवीने दशरथने कह्युं. "हे नाथ! आपे म्हारा पुत्रने राज्य आपवानी इच्छाथी मने सत्य वचनवडे वरदान आप्यो छे; परंतु रामनी भक्तिने विषे भावित मनवालो ते कुलीन म्हारो पुत्र अनुक्रमना लोपथी साम्राज्यपदने गृहण करतो नथी. वली हे देव! रामादिना प्रवासथी उत्पन्न थयेला दारुण दुःखने जोइ अपवादना भयथी मने अत्यंत खेद थाय छे, माटे हुं पण आपनी आज्ञाथी म्हारा पुत्रनी साथे त्यां जइ सीता अने लक्ष्मण सहित श्री रामने तत्काल पाछा वालीश." पछी रामने पाछा वालवा माटे कर्यो छे उद्यम जेणे एवी कैकेयी पोताना पुत्र सहित दशरथनी आज्ञा लइने चाली अने वेगवाला घोडाना अखंड प्रयाणे करीने छ दिवसमां जे वनने विषे राम हता त्यां आवी पहोची. प्रौढ रथमां बेठेली पोतानी उरमान माताने तथा उत्तम सेना सहित भरतने दूरथी आवता जोइ सीता अने लक्ष्मण सहित प्रसन्न मुखवाला रामे तेमनी सामा जइ रथथी उतरेली कैकेयीने प्रणाम कर्या. ते वखते हे राम! उत्तम लक्षणधारी हे लक्ष्मण! दीर्घायु थाउ." एम राम लक्ष्मणने आशिष आपती कैकेयी वारंवार राम अने लक्ष्मणना मस्तकने सुंघवा लागी. पछी तेणे प्रणाम करती एवी जानकीने पण गाढ आलिंगन करीने मधुर वचनथी आशिष आपी के, "हे पुत्री! तुं वीरपुत्रने जन्म आपनारी था."

भरत पण दीर्घकाल पर्यंत विरहथी उत्पन्न थयेला दुःखने जाणे हर्षना आंसुना समूहना मीषथी खेंची काढतो होयनी! एम प्रेमपूर्वक रामने प्रणाम करवा लाग्यो. पछी श्री रामे सूक्ष्म वस्त्रथी नांखेला पवने करी धीमे धीमे भरतने तथा कैकेयीने शांत कर्या एटले कैकेयीए रामने कह्युं. "लक्ष्मीना

मंदीरूप गुणोने शोभावनार अने सूर्यवंशरूप समुद्रने उल्लास पमाडवाने चंद्ररूप हे राम! लक्ष्मण अने सीता सहित तमे वनप्रत्ये आव्ये छते राज्य अने देश विगेरे सर्व अत्यंत निस्तेज बनी गयुं छे. वली तमने राज्य आपवाने अवसरे मूढ बुद्धिवाली अने क्षुद्र चित्तवाली में तमारा पिता पासे भरतने राज्य आपवानो वरदान माग्यो, परंतु ते भरत तो पूज्य एवा तमारे विषे म्होटी भक्तिने धारण करतो छतो तेने आपवा मांडेलुं राज्य अंगीकार करतो नथी, माटे हवे आ अरण्यथी पाछा फरी राज्यने अंगीकार करो. कारण तमारा पिता संवेगने लीधे तत्काल दीक्षा लेवानी इच्छा करे छे. हुं वधारे शुं कहुं, पण तमे पिताना भक्त अने विनीत छो, माटे राज्यने अंगीकार करी मने प्राप्त थयेलो अपवाद टालो." भरत पण श्री रामना चरणने विषे पोतानुं मस्तक मूकी एमज कहेवा लाग्यो के, "हे बंधु! तमारुं पूर्वना सरखुं बंधुवात्सल्यपणुं क्यां जतुं रह्युं के, जेथी स्नेह रहित एवा यतिनी पेठे माता पिता अने भाइयोने त्यजी आवा घोर वनमां निवास करवा आव्या छो? हवे पाछा वली अमारा उपर दया करो. हे भाइ! मातानी अने म्हारी प्रार्थनानो भंग न करो. कारण तमे सर्वनुं इच्छित कार्य पूर्ण करवाने कल्पवृक्षरूप छो." कैकेयीनां अने भरतनां आवां वचन सांभलीने पछी रामे कह्युं. "हे मात! हे बंधो! तमे मने पाछा वालवाने पूर्ण आग्रह करो छो; परंतु पिताश्री दशरथ महाराजाए पोतानी प्रतिज्ञा पूर्ण करवाने माटे तथा में पण पितृभक्तिने लीधे राज्य तो भरतनेज अर्पण कर्युं छे. वली हे बंधु! हुं क्षत्रिय पुत्र थइ आ अंगीकार करेला वनवासने त्यजी दइ पिताना अने म्हारा नामने शी रीते लोपी दउं!! माटे भाइ भरत! हवणां पिताने सिंहासने विराजीत थइ आपज राजा थाओ. हवणां तमारे पितानी आज्ञा उल्लंघन करवी जोइती नथी." आम कहीने पछी पतिनी आज्ञाथी सीताये आणेला निर्मल नदीना जलथी रामे तथा लक्ष्मणे हर्षपूर्वक भरतने त्यांज राज्याभिषेक कर्यो. पछी विनयथी कैकेयीने तथा भरतने संतोष पमाडी रामे सहुने शीखामण आपी कौशल्या नगरी प्रत्ये विदाय कर्या अने लक्ष्मण तथा सीता सहित पोते स्वच्छ चित्तवाला थइ कौतुक जोवाने उल्लास धरता थका दक्षिण दिशाप्रत्ये चाल्या. दशरथ नृपतिये पण पोताना हितकारी अंगज माता सहित पाछा आवेला भरत

पुत्रने महोत्सवपूर्वक पोताने पदे स्थापी अनेक सामंत अने नृपतियो सहित विधिपूर्वक श्री सत्यनूति गुरु पासे दीर्घकालथी इष्ट एवी चारित्र लक्ष्मीने अंगीकार करी.

॥ इति श्री पद्म चरित्रे नरत राज्यानिषेको नाम तृतीयः प्रस्तावः ॥

पढी श्री रामना प्रवासने लीधे अत्यंत दुःख धरता एवा नरत विनीता नगरीने विषे राज्य करवा लाग्या. राम पण लक्ष्मण अने सीतानी साथे चित्रकुट नामना महा पर्वत उल्लंघी मनोहर वैनववाला अवंती नामना देशप्रत्ये आव्या. त्यां बहु श्रमने लीधे सीता एक वमवृक्षनी नीचे सूइ गया एटले चारे तरफ दिशाउमां जोता एवा रामे पोताना न्हाना नाइ लक्ष्मणने कह्युं. " नाइ ! हवणां आ तरफनो देश उमती धूलथी व्याप्त थयेलो देखाय बे ते शुं कांइ निमित्तथी बे के ए देशज एवो बे ?" आम बन्ने नाइयो वात करे बे एवामां कोइ उत्साह धरतो मुसाफर त्यां आवी चम्यो. रामे तेने पेली उमती धूलनुं कारण पूब्युं एटले तेणे कह्युं. " हे श्रेष्ट ! सांनलो.

अहि अवंती नामे नगरी बे. त्यां सिंहना सरखो पराक्रमी सिंहोदर नामे राजा राज्य करे बे. ए सिंहोदर राजाना मालव देशमां पुरदेश नामना नगरने विषे तेनो वज्रकर्ण नामे सामंत (खंमियो राजा) राज्य करे बे. एक दिवस ते वज्रकर्ण सामंत राजा मृगया रमवाने वनमां गयो हतो; त्यां तेणे कायोत्सर्गने विषे रहेला कोइ ध्यान धरता मुनिने जोया; तेथी तेणे तेमने प्रणाम करी हर्षथी पूब्युं के, " हे मुनि ! आप आ अरण्यने विषे स्थिर वृक्षनी पेठे शा माटे उन्ना बो ते कहो ? " मुनिये कायोत्सर्ग पारीने कह्युं के, " हे नइ ! हुं म्हारा पोताना हितने माटे अहिं उन्नो रह्यो बुं." राजाए फरी प्रश्न कस्यो के, "तमारे अहिं कंइ खावा पीवानुं तो बे नहि तो पढी हित शानुं ? " पढी ते प्रीतिवर्द्धन मुनिये राजाने योग्य जाणी तेने बन्ने लोकने विषे हितकारी धर्म संनलाव्यो. राजाए पण धर्म सांनलवाथी प्रबोध पामी शुद्ध सम्यक्त्व पूर्वक श्री जिनेश्वरे प्ररूपेला श्रावक धर्मने अंगीकार करीने धार्युं के, " म्हारे देव, दानव, माणस अने राजाउने विषे फक्त अरिहंत देव अने शुद्ध क्रीयावान् गुरु विना बीजा कोइने पण वंदन करवुं नहि." आवो अनिग्रह लइ माननो समुद्र ते राजा पोताने घरे आवी फरी मनमां विचार करवा लाग्यो के, " म्हाराथी

सिंहोदर नृपतिने प्रणाम कर्या शिवाय तेमनी सेवा शी रीते करी सकाशे? अने में कोइने प्रणाम नहि करवा संबंधी लीधेलो अभिग्रह केटलोक काल रहेशे?" आम विचार करता तत्काल उत्पन्न थयेली बुद्धिथी तेणे पोताना हाथनी वींटीमां श्री मुनिसुव्रत प्रभुनी मणिमय मूर्त्ति जडावी. पछी बहु गुणोथी सुशोभित एवो ते वज्रकर्ण अवसरे पोताना हाथनी वींटीमां रहेला प्रभुना प्रतिबिंबने प्रणाम करतो हतो देशाधिपतिने प्रणाम देखाडतो खुशी करे. आ प्रमाणे तेणे केटलाक समय चलाव्युं, परंतु आ तेना कपटनी वात कोइ चाडियाए सिंहोदर नृपतिने कही दीधी.

पछी सिंहोदर नृपति ते वात जाणी अत्यंत क्रोधातुर थयो हतो वज्रकर्णने मारवा सज्ज थयो. तेना आवा दुष्ट विचारने जाणी कोइ राज पुरुषे ते वात वज्रकर्णने कही; तेथी तेणे ते पुरुषने पूछ्युं के, "हे श्रेष्ट पुरुष! तें ए गुप्त वात शी रीते जाणी?" तेणे कह्युं. "हे नृपति! सांभलो.

स्कंधदेशने विषे सराम नामनो उत्तम शेठ वसतो हतो. तेने यमुना नामे स्त्री हती. तेओने विधुदंग नामे हुं पुण्यवान् पुत्र हतो. कोइ वखते हुं वेचवानी वस्तुओने लइ वेपार निमित्ते अवंती नगरी प्रत्ये जइने रह्यो अने कामलता नामनी वेश्यानी साथे अनुरागवंत पण थयो. एक दिवसे वश्य करी लीधेला मने ते वेश्याये आ प्रमाणे कह्युं. "सिंहोदर नृपतिनी राणी श्रीधराने जेवां बे कुंडलो छे तेवां मने करावी आपो." में तेनां आ वचन कबुल कर्यां, परंतु म्हारी पासे धन न होवाने लीधे हुं रात्रीने विषे श्रीधरादेवीनांज कुंडलो चोरी लेवा सिंहोदर नृपतिना मेहेलमां पेठो. ते वखते राजा पोतानी पट्टराणीनी साथे सुतो हतो, पण कंइ विचारने लीधे निद्रा पाम्यो नहोतो. पछी राणीये नृपतिने पूछ्युं के, "हे नाथ! आज आपने निद्रा केम नथी आवती?" राजाए कह्युं. "हे मानिनि! हुं वज्रकर्णने मार्या विना शी रीते निद्रा लउं? निश्चय काले हुं तेने सहकुटुंब मारीने पछी निद्रासुख अंगीकार करीश." सिंहोदर नृपतिनां आवां वचन सांभली चोरीने तजी दइ तमने साधर्मिक जाणी हुं खबर आपवाने माटे अहिं आव्यो छुं, माटे हे बंधु! सिंहोदर नृपति अहिं आवे एटलामां तमे अहिंथी बीजे नासी जाओ." दूतनां एवां वचन सांभली वज्रकर्ण तेटलामां धनधान्यनो संग्रह करी न-

ऊ थयो तेटलामां बीजे दिवसे सिंहोदर नृपति त्यां आवी पहोंच्यो. तेणे सीमाडा उपर पडाव नाखी दूत मोकली वज्रकर्णने कहेवराव्युं के, "हे अधम ! तें आटलो काल वींटीमां मूर्त्ति राखी कपट करीने मने छेतर्यो छे, पण हवणां ते वींटीने त्यजी दइ मने प्रणाम कर. नहितो बंधुउ सहित त्हारो तत्काल नाश करीश." सिंहोदर नृपतिये कहेलां दूतनां आवां वचन सांभली स्थीर चित्तवाला वज्रकर्णे तेज दूतनी साथे विशालेश्वरने विनंतीपूर्वक कहेवराव्युं के, "हुं अहंकारने लीधे अथवा शौर्यने लीधे आपने प्रणाम करवामां विमुख थयो नथी, परंतु श्री सर्वज्ञ विना बीजा कोइने प्रणाम न करवाना निश्चयथी में एम करेल छे, माटे हे नृपति ! एक प्रणाम करवानी वात त्यजी दइ बीजी जे आज्ञा करशो ते हुं करवा तैयार छुं. आ में धर्मद्वारने माटेज गृहण करेलुं छे. हवे आप म्हारुं सर्व लइ ल्यो अथवा मने छोडी द्यो." दूते आवीने आ सर्व वात सिंहोदर नृपतिने निवेदन करी एटले तो ते घी विगेरे पदार्थो नाखवाथी ज्वाजलीत थयेला अग्निनी पेठे अत्यंत कोपाकुल थयो. पछी तेणे दशपुर नगरने घेरो घाली वज्रकर्णना देशने पोताना सैन्यथी लुंटवा मांड्यो.

(मुसाफर रामने कहे छे के,) हे भाइ ! एज कारणथी आ देश उडती धूलथी भरपूर देखाय छे. वली ते वैरीयोए श्रीमंतोनां घरोने बाली नाखवानी साथे म्हारी धन रहितनी झुंपडी पण बाली नाखी छे. पछी म्हारी स्त्रीये पोकार करतां मने घरमांथी वासणो काढवा मोकल्यो, परंतु तेम करवाने हुं विमुख थइ चाली निकल्यो. हे श्रेष्ट ! म्हारा आ प्रवासनुं मने उत्तम फल मल्युं के, जे हवणां मने आपनुं दर्शन थयुं." पछी रामे ते मुसाफरने पोतानो मणिजडित्र सोनानो कंदोरो आप्यो. कह्युं छे के—उत्तम पुरुषोनुं दर्शन घणुंकरीने कल्याणकारीज होय छे.

पछी सीता अने लक्ष्मण सहित श्रीराम परोपकारने माटे दशपुर नगर प्रत्ये वज्रकर्ण राजा पासे जवा निकल्या. त्यां नगरनी बहार उद्यानमां रहेला चैत्यने विषे श्री चंद्रप्रभु जिनेश्वरने नमस्कार करी राम त्यांज रह्या अने लक्ष्मण तेमनी आज्ञा लइ भोजननी सामग्रीने माटे नगरमां गया. त्यां राजपुरुषोए नहि रोकेला लक्ष्मण वज्रकर्ण नृपतिना घरने विषे आवी पहोंच्या ए-

हवे तो नृपतिये पोते आवी तेमने अद्भुत आकृतीवंत जोइ भोजनने माटे आमंत्रण कर्युं. पछी लक्ष्मणे ते वज्रकर्णने कह्युं के, "म्हारा अधिपति पोतानी प्रिया सहित क्षुधातुर थवाने लीधे नगरीनी बहार बेठा छे." ते उपरथी राजाए लक्ष्मणनीज साथे नाना प्रकारना शाक सहित घणां घीथी बनावेलुं उत्तम भोजन रामने माटे मोकल्युं. रामे पण लक्ष्मण अने जानकी सहित ते उत्तम रसवालां भोजनने जमीने पछी रामे लक्ष्मणने सिंहोदर राजा पासे मोकल्या. लक्ष्मणे सिंहोदर नृपतिनी पासे आवीने कह्युं के, "हे राजन् ! तमने कोशलानो अधिपति महाराजा भरत कहेवरावे छे के, तमारे वज्रकर्ण नृपतिनी साथे आरंभेलो विग्रह त्यजी देवो अने तेनी पासे तमारे प्रणाम पण न कराववो. कारण धर्मी पुरुषने पीडा करवी ते योग्य नथी. वली ए वज्रकर्ण पोताना अभिग्रहने लीधेज नथी नमतो, कारण जैनधर्मना जाण एवा ए राजाने विषे निश्चे गर्व तो नथीज." पछी महा गर्वधारी एवा सिंहोदर राजाए कह्युं. "अहो ! पोताना देशनोज अधिपति एवो ए भरत कोण छे ? हुं म्हारा भुजबलने लीधे तेनी आज्ञाने अंगीकार करतो नथी. शुं शियालनी आज्ञाने केसरी सिंह क्यारे पण कबुल करे खरो ? मने नहि नमन करता ते दुराशय वज्रकर्ण सामंतने हुं भरतनी आज्ञाथी त्यजी देवानो नथी." लक्ष्मणे पण गर्व सहित कह्युं. "अरे ! तुं पोताना वृथा भुज बलना गर्वथी भरत नृपतिनुं अत्यंत अपमान करे छे ? तुं भरतनी आज्ञा लोपे छे, माटे हुंज तने आज शिक्षा करीश. अरे नृप ! जो ह्मारामां पुरुषार्थ होय तो शस्त्र ग्रहण कर." लक्ष्मणनां आवां वचन सांभली अत्यंत कोपातुर थयेलो सिंहोदर राजा सज्ज थयो अने तेना विकट सुभटो पण जेटलामां लक्ष्मणने मारवा माटे तयार थया तेटलामां लक्ष्मण पण हाथीना एक म्होटा आलान स्तंभने उखेडी तेने हाथमां लइ बलवंत कोटि सुभटोना सैन्य सन्मुख आवीने ऊभा रह्या. पछी लक्ष्मणे ते चार तरफ भमावेला आलानस्तंभथी त्रास पामेला सर्वे विकट सुभटो नाशी गया पछी तेमणे बलथी सिंहनी पेठे उछलीने हाथी उपर बेठेला सिंहोदर नृपतिने वस्त्र वडे तेना धनुष्यबाण बांधीने पकडी लीधो. तेथी शत्रुनुं सर्व सैन्य भयभ्रांत थइ आमतेम नाशी गयुं. लक्ष्मणे पण नगरवासी जनो सहित रामचंद्र पासे जइने अपूर्व शत्रुनी पेठे सि-

ऊ थयो तेटलामां बीजे दिवसे सिंहोदर नूपति त्यां आवी पहोच्यो. तेणे सीमाम्रा उपर पमाव नाखी दूत मोकली वज्रकर्णने कहेवराव्युं के, " हे अधम ! तें आटलो काल वींटीमां मूर्त्ति राखी कपट करीने मने बेतर्यो बे, पण हवणां ते वींटीने त्यजी दइ मने प्रणाम कर. नहितो बंधुउ सहित त्हारो तत्काल नाश करीश. " सिंहोदर नूपतिये कहेला दूतनां आवां वचन सांजली स्थीर चित्तवाला वज्रकर्णे तेज दूतनी साथे विशालेश्वरने विनंतीपूर्वक कहेवराव्युं के, " हुं अहंकारने लीधे अथवा शौर्यने लीधे आपने प्रणाम करवामां विमुख थयो नथी, परंतु श्री सर्वज्ञ विना बीजा कोइने प्रणाम न करवाना निश्चयथी में एम करेल बे, माटे हे नूपति ! एक प्रणाम करवानी वात त्यजी दइ बीजी जे आज्ञा करशो ते हुं करवा तैयार बुं. आ में धर्मद्वारने माटेज गृहण करेलुं बे. हवे आप म्हारुं सर्व लइ ल्यो अथवा मने गोमी द्यो. " दूते आवीने आ सर्व वात सिंहोदर नूपतिने निवेदन करी एटले तो ते घी विगेरे पदार्थो नाखवाथी ज्वाजलीत थयेला अग्निनी पेठे अत्यंत कोपाकुल थयो. पबी तेणे दशपुर नगरने घेरो घाली वज्रकर्णना देशने पोताना सैन्यथी लुंटवा मांम्यो.

(मुसाफर रामने कहे बे के,) हे नाइ ! एज कारणथी आ देश नमती धूलथी नरपूर देखाय बे. वली ते वैरीयोए श्रीमंतोनां घरोने बाली नाखवानी साथे म्हारी धन रहितनी फुंपमी पण बाली नाखी बे. पबी म्हारी स्त्रीये पोकार करतां मने घरमांथी वासणो काढवा मोकल्यो, परंतु तेम करवाने हुं विमुख थइ चाली निकल्यो. हे श्रेष्ट ! म्हारा आ प्रवासनुं मने उत्तम फल मल्युं के, जे हवणां मने आपनुं दर्शन थयुं. " पबी रामे ते मुसाफरने पोतानो मणिजमित्र सोनानो कंदोरो आप्यो. कह्युं बे के—उत्तम पुरुषोनुं दर्शन घणुंकरीने कल्याणकारीज होय बे.

पबी सीता अने लक्ष्मण सहित श्रीराम परोपकारने माटे दशपुर नगर प्रत्ये वज्रकर्ण राजा पासे जवा निकल्या. त्यां नगरनी बहार उद्यानमां रहेला चैत्यने विषे श्री चंड्प्रनु जिनेश्वरने नमस्कार करी राम त्यांज रह्या अने लक्ष्मण तेमनी आज्ञा लइ नोजननी सामग्रीने माटे नगरमां गया. त्यां राजपुरुषोए नहि रोकेला लक्ष्मण वज्रकर्ण नूपतिना घरने विषे आवी पहोच्या ए-

टले तो नृपतियें पोते आवी तेमने अद्भुत आकृतीवंत जोइ भोजनने माटे आमंत्रण कर्युं. पछी लक्ष्मणे ते वज्रकर्णने कह्युं के, "म्हारा अधिपति पोताना प्रिया सहित क्षुधातुर थवाने लीधे नगरीनी बहार बेठा छे." ते उपरथी राजाए लक्ष्मणनीज साथे नाना प्रकारना शाक सहित घणां घीथी बनावेलुं उत्तम भोजन रामने माटे मोकल्युं. रामे पण लक्ष्मण अने जानकी सहित ते उत्तम रसवालां भोजनने जमीने पछी रामे लक्ष्मणने सिंहोदर राजा पासे मोकल्या. लक्ष्मणे सिंहोदर नृपतिनी पासे आवीने कह्युं के, "हे राजन्! तमने कोशलानो अधिपति महाराजा भरत कहेवरावे छे के, तमारे वज्रकर्ण नृपतिनी साथे आरंभेलो विग्रह त्यजी देवो अने तेनी पासे तमारे प्रणाम पण न कराववो. कारण धर्मी पुरुषने पीडा करवी ते योग्य नथी. वली ए वज्रकर्ण पोताना अभिग्रहने लीधेज नथी नमतो, कारण जैनधर्मना जाण एवा ए राजाने विषे निश्चे गर्व तो नथीज." पछी महा गर्वधारी एवा सिंहोदर राजाए कह्युं. "अहो! पोताना देशनोज अधिपति एवो ए भरत कोण छे? हुं म्हारा भुजबलने लीधे तेनी आज्ञाने अंगीकार करतो नथी. शुं शियालनी आज्ञाने केसरी सिंह क्यारे पण कबुल करे खरो? मने नहि नमन करता ते दूराशय वज्रकर्ण सामंतने हुं भरतनी आज्ञाथी त्यजी देवानो नथी." लक्ष्मणे पण गर्व सहित कह्युं. "अरे! तुं पोताना वृथा भुज बलना गर्वथी भरत नृपतिने अत्यंत अपमान आपे छे? तुं भरतनी आज्ञा लोपे छे, माटे हुंज तने आजे शिक्षा करीश. अरे नृप! जो त्हारामां पुरुषार्थ होय तो शस्त्र ग्रहण कर." लक्ष्मणनां आवां वचन सांभली अत्यंत कोपातुर थयेलो सिंहोदर राजा सज्ज थयो अने तेना विकट सुभटो पण जेटलामां लक्ष्मणने मारवा माटे तैयार थया तेटलामां लक्ष्मण पण हाथीना एक म्होटा आलान स्तंभने उखेडी तेने हाथमां लइ बलवंत कोटि सुभटोना सैन्य सन्मुख आवीने उभा रह्या. पछी लक्ष्मणे ते चारे तरफ भमावेला आलानस्तंभथी त्रास पामेला सर्वे विकट सुभटो नासी गया एटले तेमणे बलथी सिंहनी पेठे उछलीने हाथी उपर बेठेला सिंहोदर नृपतिने त्रास पमाडी तेना धनुष्यबाण खेंची लइने पकडी लीधो, तेथी शत्रुनुं सर्व सैन्य भयभ्रांत थइ आश्चर्य पामी गयुं. लक्ष्मणे पण नगरवासी जनो सहित रामचंद्र पासे जइने अपूर्व वस्तुनी पेठे सि-

होदर नृपतिने नन्नो कस्यो. आ वखते आवंतीनो पति सिंहोदर आश्चर्ययुक्त थइ रामने नमस्कार करी हाथ जोमीने कहेवा लाग्यो के, "में आपने उलख्या नहोता, तेथीज लक्ष्मणनो अपराध कस्यो छे. वली ते अपराधथी केवल अग्निने विषे पमता एवा पतंगनी पेठे हुं फोकट अपराधमां आवी पम्यो छुं. हे महाबल ! आ म्हारा सर्व अपराधने क्षमा करो अने हे विश्वपति ! हुं आपनो सेवक छुं, माटे मने कार्य फरमावो." श्री रामे कह्युं. "हे नृपति ! आ वज्रकर्ण राजा तमारी सेवा अथवा तमने नमस्कार न करे तोपण तेना उपर तमारे मनमां प्रीति राखवी." सिंहोदर नृपतिये कह्युं. "हे नाथ! जेनुं रक्षण करनार आप छो तेनी साथे कोण वृथा द्वेष करे ?" वज्रकर्ण महिपति पण रामनी आज्ञाथी त्यां आव्यो. पछी राम अने लक्ष्मणे "तुं अमारो साधर्मीक छे" एम कहीने तेनो आदर कस्यो एटले सिंहोदर नृपति श्री रामने कहेवा लाग्यो के, "युगादि जिनेश्वरना वंशरूप तलावने विषे राजहंस समान तमोने में पूर्वे गुणोथी सांजलेला हता ते तमोने में आजे प्रत्यक्ष रीते जोया छे. हुं अने बीजा सर्वे राजाउ तमारा सेवक छइए, माटे आप आ म्हारा राजाने बंधनथी मुक्त करो." पछी लक्ष्मणे सिंहोदर नृपतिने कह्युं. "आ वज्रकर्ण सामंत तमने प्रणाम न करे तो पण तमारे तेना उपर लक्ष्मीनो नाश करनारो कोप करवो नहि."

लक्ष्मणनां आ वचन सिंहोदर नृपतिये श्री रामनी पासेज अंगीकार कस्यां एटले लक्ष्मणे तेने बंधनथी तत्काल मुक्त कस्यो. पछी विशालेश्वर सिंहोदरे वज्रकर्ण नृपतिने प्रीतिपूर्वक नेटीने पोतानुं अर्धुं राज्य आप्युं. कह्युं छे के–सत्पुरुषोना प्रसादथी शुं प्राप्त थतुं नथी ? अर्थात् सर्व वांछित वस्तु प्राप्त थाय छे. पछी वज्रकर्ण नृपतिये पोतानी आठ पुत्रीयो अने सिंहोदर नृपतिये सामंतो सहित पोतानी त्रणसें पुत्रीयो लक्ष्मणने आपी. लक्ष्मणे पण रामनी आज्ञाथी ते सर्वे कन्यानी साथे पाणीग्रहण कर्युं. पछी रामे ते बन्ने नृपतियोने कह्युं के, "हे नृपालो ! म्हारुं वचन सांजलो. हवणां पितानी आज्ञाथी अयोध्याने विषे नरत राज्य करे छे अने अमो वनवास कबुल करी अहिं आव्या छीए, माटे हवणां तमारी पुत्रीयो तमारे घेर राखो. अमे ज्यारे पाछा वलशुं त्यारे तेमने साथे लइ जशुं." आम समजावीने राम

तथा लक्ष्मणे ते बन्ने राजाउने विदाय कर्या, तेथी तेउ हर्ष पामता उता पोताने स्थानके गया. प्रताप अने कीर्तिने वृद्धि पमाडनारा रामे पण त्यां ते रात्री रही बीजे दिवसे सीता अने लक्ष्मण सहित आगल प्रयाण कर्युं. अनुक्रमे तेउ कोइ महा अरण्यमां आवी पहोंच्या. त्यां महा वर्षाद वरसवा लाग्यो; तेथी तेमणे एक वडवृक्षनी नीचे निवास कर्यो. पछी रामे ते वडवृक्षने महा विस्तारवंत जोइने जानकी तथा लक्ष्मणने कह्युं के, "आपणे वर्षाकाल पुरो थाय त्यां सुधी आ वडवृक्षनी नीचेज निवास करिशुं."

हवे ते वडवृक्षनो अधिष्टायक कोइ अश्वकर्ण नामे यक्ष हतो ते श्री रामना तेजने न सहन करी शकवाथी पोताना गोकर्ण नामना अधिपति पासे जइने केहवा लाग्यो के, "हे नाथ! म्हारा वडवृक्षनी नीचे कोइ असह्य तेजवंत पुरुष आवेल छे. तेमनी दृष्टि आगल हुं क्षणमात्र पण रहेवाने समर्थ नथी. वली ते वर्षाकाल त्यांज रहेवाना छे, माटे हे विज्ञु! तमे म्हारुं तेमनाथी रक्षण करो." पछी गोकर्ण अवधिज्ञानथी तेमने वासुदेव तथा बलदेव जाणीने अश्वकर्ण यक्षने केहवा लाग्यो के, "हे अश्वकर्ण! त्हारा जाग्यने लीधेज दशरथ राजाना पुत्रो ते महा बलवंत राम लक्ष्मण त्हारा आश्रमे अतिथीरूप थया छे. निश्चे तुं एमनी सेवा जक्ति कर." पछी अश्वकर्णे "हुं एमनी सेवा जक्ति करुं." एम विचारी पोतानी देवशक्तिथी नव योजन पहोली, बार योजन लांबी, सोनाना किल्लावाली अने सोनाना, रूपाना अने मणिना महेलवाली रामनामनी प्रख्यात पुरी वसावी दीधी.

प्रजाते मांगलिक वाजींत्रोना शब्दोथी राम लक्ष्मण जागी उठ्या एटले तो तेमणे गीत गानमां आसक्त थयेला तथा अति प्रेमवाला ते यक्षने दीठो. पछी यक्षे जक्तिपूर्वक राम लक्ष्मणने कह्युं. "में आपने माटेज आ पुरी बनावी छे, माटे तेमां सुखेथी रहो." पछी यक्षे निरंतर सेवा करेला सीता अने लक्ष्मण सहित राम त्यांज वर्षाकाल रह्या. यक्ष हमेशां कल्पवृक्षनां पुष्प, दिव्यहार अने विविध प्रकारना फूलोथी राम लक्ष्मणने जक्तिपूर्वक संतोष पमाडवा लाग्यो. लक्ष्मण अने सिता सहित राम पण दुःखी, अनाथ अने दीन लोकोनो द्रव्यदानथी उद्धार करता उता त्यांज रह्या.

हवे ज्यारे वर्षाकाल निवृत्त थयो त्यारे आगल प्रयाण करवाने उत्साहवं-

त थयेला रामने ते यक्षे चंद्र समान कांतिवालो हार आप्यो. लक्ष्मणने बे दिव्य निर्मल कुंमल अने सीताने नाना प्रकारना मणिजमित्र चूमारत्न आप्युं. पछी रामे ते यक्षनी रजा लइ जेटलामां आगल प्रयाण कर्युं तेटलामां यक्षे ते पुरीने अंतर्ध्यान करी दीधी. अनुक्रमे अरण्यने विषे जता एवा रामे सीता अने लक्ष्मण सहित विजयपुरना उद्यानने विषे वमवृक्षनी नीचे निवास कर्यो. त्यां महिधर नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने चंपकमाला नामे सौभाग्यवती राणी हती. तेउने वनमाला नामनी पुत्री हती. महिधर भूपतिये पोतानी आ वनमाला पुत्रीनो संबंध प्रथम लक्ष्मणनी साथे कर्यो हतो. पण पाछलथी तेणे दशरथ महाराजाए अंगीकार करेला चारित्रने तथा रामादिकना वनवासने सांभली ए संबंध छोमी दइने फरी महेंद्रपुरना राजा वृषभना पुत्र महेंद्ररूपनी साथे कर्यो. आ वात वनमालाए सांभली, तेथी तो ते लक्ष्मणने विषे अत्यंत प्रेम धारण करती छती दुःखरूप समुद्रने तरवाना हेतुथी पोताना नगरथी चाली निकलीने तेज रात्रीने विषे दैवयोगथी ज्यां रामे निवास कर्यो हतो ते वमवृक्षनी समीपे आवी पहोची. आ वखते सीता अने राम बन्ने निद्रावश थया हता अने लक्ष्मण जागता हता, तेथी तेमणे ते आवती एवी स्त्रीने जोइ विचार्युं के, “ शुं आ कोइ पुरनी अधिष्टायक देवी आवे छे के कोइ वनदेवता आवे छे ? ए शुं करशे ? ” एम धारी लक्ष्मण मौन राखी गुप्तरीते उभा रह्या. एवामां ते स्त्रीये “ हाय हाय ! म्हारा अभाग्यने लीधे ज लक्ष्मण आ भवना पति न थया तो हवे पछी आवता भवने विषे तो एज म्हारा पति थजो. ” एम कहीने पोताना गलाने विषे पाश नाख्यो. पछी “ हे भद्रे ! तुं आ प्रकारनुं साहस न कर. ” एम बोलता एवा लक्ष्मणे तत्काल त्यां जइ पोताना खड्गवती पाशने छेदी नाखीने कह्युं के, “ त्हारो अभीष्ट पति लक्ष्मण हुं पोतेज आ रह्यो. ” पछी लक्ष्मणे तेने शांत करीने पोतानी पासे बेसारी अने ज्यारे म्होटा भाइ श्री राम जाग्या त्यारे तेमने सर्व वात निवेदन करी.

हवे बीजे दिवसे पुत्रीने न देखी महिधर भूपति सुभटो सहित तेनी शोधने माटे निकली पम्यो. अनुक्रमे फरतो फरतो ते वमवृक्षनी पासे आव्यो तो त्यां तेणे पोतानी पुत्रीने राम लक्ष्मणनी पासे बेठेली जोइ अत्यंत

क्रोधातुर थइने कह्युं के, "अरे ! सुभटो ! पुत्रीनुं हरण करनार आ चोरोने तुरत मारो ! मारो ! !" पछी जेटलामां एक लाख योद्धाओ राम लक्ष्मणने मारवा माटे तैयार थया तेटलामां लक्ष्मणे पोताना धनुष्यने चढावी तत्काल विश्वने पुरी देनारो टंकार शब्द कर्यो. धनुष्यना आवा भयंकर शब्दथी सर्वे शत्रुओ नाशी गया. महिधर भूपति पण पोते लक्ष्मणनी पासे आवी अने तेमने ओलखीने हर्ष पामतो छतो कहेवा लाग्यो. "हे कुमारेंद्र लक्ष्मण ! धनुष्य उपरथी बाणने नीचे उतारो. तमे म्हारी कन्याना अगण्य पुण्यने लीधेज आ वनमां आवी चढ्या छो." पछी लक्ष्मणे धनुष्य उपरथी बाण नीचे उतार्युं एटले प्रसन्न मुखवालो राजा महिधर रामनी पासे आवी हाथ जोडीने आ प्रमाणे विनंती करवा लाग्यो. "हे राम ! पूर्वे आ कन्या में लक्ष्मणने आपी हती अने अनुकुल दैवयोगने लीधे तेओनो आजे मेलाप थयो छे." एम कहीने तेणे महोत्सव पूर्वक सीता अने लक्ष्मण सहित रामने पोताना पुरमां प्रवेश कराव्यो.

एक दिवस राम अने लक्ष्मण राजसभामां बेठा हता एवामां कोइ दूते आवीने महिधर भूपतिने कह्युं के, "हे पृथिवीपाल? आप सांभलो. नंद्यावर्त पुरना महाराजा अनंतविर्य पोतानी सहाय्यने माटे आपने बोलावे छे. कारण ए राजा दशरथना पुत्र भरत नामना बीजा भूपतिनी साथे युद्ध करवाने उत्साहवंत थया छे तेमां भरतनी तरफ घणां भूपतियो एकठा थयाछे, माटे अमारा राजाए आपने बलवान् जाणी तेडावेल छे." दूते आ प्रमाणे कह्युं एटले लक्ष्मणे ते दूतने पूछ्युं. "त्हारा राजाने भरतनी साथे युद्ध करवानुं कारण शुं छे ?" तेणे उत्तर आप्यो के, "अमारो राजा भरतनी पासे पोतानी सेवा करावववानी इच्छा करे छे अने गर्वधारी भरत तेनी आज्ञाने जरा पण मानता नथी. एज ए बन्ने बलवंत भूपतियोने युद्ध करवानुं कारण छे." पछी राम लक्ष्मणना दाक्षिण्यपणाने लीधे महिधर भूपतिये दूतने कह्युं. "हे दूत ! हवणां तुं जा, हुं पण आवुं छुं." महिधर राजा आ प्रमाणे कही दूतने विदाय करीने पछी रामने कहेवा लाग्यो के, "नंद्यावर्तनो अधिपति अनंतवीर्य अमने वृथा युद्ध करावे छे." पछी गुप्त क्रोधथी व्याप्त थयेला रामे महिधरने कह्युं के, "हुं सेनानी साथे जइ ए अनंतविर्यने मारीश. वली हे नराधिप ! तमे अहिंज रहो. हुं सैन्य सहित त्यां

जइ तेनो योग्य घाट घमीश." पढी सीता अने लक्ष्मण सहित राम महि-धरना पुत्रनी साथे बहु सैन्य लइ नंद्यावर्त नगर तरफ चाल्या अने अनुक्रमे जे-टलामां परिवार सहित ते नगरना उद्यानमां आवी पहोच्या तेटलामां ते उद्या-ननी अधिष्टायक देवीये तेमने कह्युं के, " हुं तमारा भाग्य गुणोथी अत्यंत प्र-सन्न थइछुं, माटे तमारुं शुं प्रिय करुं?" रामे कह्युं. " हे देवी ! कयो पुरुष बी-जा माणसनी वृथा प्रार्थना करे ? सवारे स्त्रीयोथी जीतायलो आ अनंतवीर्य मश्करी करवा योग्यपणुं पामे एवी रीते आ अमारुं सर्व सैन्य स्त्रीरूप बनावी आप." पढी वनाधिष्टायक देवीये तेज प्रमाणे सर्व सैन्य स्त्रीरूप बनावी आप्युं. राम अने लक्ष्मण पण तत्काल स्त्रीरूप थइ गया. पढी ते स्त्रीरूप सैन्य राजद्वारे गयुं. त्यां मुख्य स्त्रीरूप रामे द्वारपालनी साथे राजाने कहेवराव्युं के, " हवणां महिधर भूपतिये तमारी सहायने माटे मोकलावेलुं सैन्य द्वारने विषे उभुं छे." द्वारपाले ते वात राजाने जणावी एटले तेणे क्रोध करीने कह्युं के, " जो महिधर भूपति पोते आव्यो नथी तो पढी म्हारे तेना सैन्यनो पण खप नथी." एटलामां बीजा माणसे कह्युं के, " अरे ? जो के ते पोते एकलो आव्यो नथी, पण तेणे स्त्रीसैन्य मोकली आप-णी मश्करी करी छे." राजाए तेनां आवां वचनथी अत्यंत क्रोध करी सुभटोने आज्ञा करीके, "ए सर्वे स्त्रीयोने गले पकमीने नगर बहार काढी मूको." पढी जेट-लामां सर्वे सामंतो एकठा थइ ज्यां द्वारने विषे सर्व स्त्रीसैन्य आव्युं हतुं त्यां आव्या ते टलामां तो पद्मना समान नेत्रवाला श्री रामे हाथीना एक आलान स्तंभने उखेमी पोतानुं भुजबल देखाड्युं, जेथी ते सर्वे सामंतो नाशी गया. सामंतोना नासी जवाथी अत्यंत क्रोधातुर थयेलो अनंतविर्य म्यानथी पोताना उग्र खड्गने खेंची तत्काल स्त्रीसैन्य तरफ दोड्यो; परंतु एटलामां तो महा भुज बलवंत लक्ष्मणे तत्काल उछली ने तेना तेज सहित खड्गने छेदी नाख्युं.पढी ते अनंतवीर्यने बांधीने नगरवासी जनोने आश्चर्य सहित जोये छते लक्ष्मण पोतानी स्त्रीनी लीलाथीज चाली निकल्या. ते वखते जानकीये दयाथी लक्ष्मणने कह्युं के, " एने मूकी द्यो ! मूकी द्यो !!" पढी लक्ष्मणे ते अनंतवीर्य राजा पासे सामी भरतनी आ-ज्ञा मनावीने तेने छोडी दीधो. एवामां पुरदेवताये ते सर्वेनां स्त्रीरूप हरण करी लीधां एटले तो रामादि सर्वे पोतपोताना प्रकाशवंत मूलरूपने पाम्या. अ-

नंतवीर्य राजा राम लक्ष्मणने उलखी तत्काल पोताना घेर तेमनी जइ हर्षपूर्वक भक्ति करवा लाग्यो. पछी ते " हवे हुं बीजा कोइनी सेवा नहि करुं. " एम धारी जेटलामां पोताना पुत्र विजयरथने राज्यासने स्थापी पोते संयम ग्रहण करे छे तेटलामां श्री रामे तेने कह्युं के, " तुं म्हारा भाइ भरत समान छे, माटे सर्वदा राज्यश्रीने भोगव्य. " रामे आम दीक्षा लेवानी ना कही तो पण ते अनंतवीर्ये तो चारित्र अंगीकार कर्युं. कह्युं छे के—धीर पुरुषो आदरेला पोताना कार्यथी क्यारे पण चलता नथी. पछी राजा विजयरथे पोतानी व्हेन रतिमाला लक्ष्मणने आपी. कह्युं छे के—भाग्यवंत पुरुषोने सर्व संपत्तियो सन्मुखज आवी मले छे.

पछी राम पोताना परिवार सहित विजयपुर प्रत्ये आव्या अने विजयरथ पण भरतने नमन करवा माटे कोशलापुरी प्रत्ये गयो. त्यां रामनी सर्व वात सांभली अत्यंत प्रसन्न थयेला भरते तेनो सत्कार करीने पोतानी रतिमाला नामनी व्हेन ते विजयरथने आपी अने विजयरथे पण परस्पर स्नेहनी वृद्धिने माटे पोतानी व्हेन विजयसुंदरी भरतने आपी. आ वखते अनंतवीर्य मुनि विहार करता करता अयोध्यामां आव्या एटले भरते ते मुनिनी पासे जइ प्रणाम पूर्वक पोतानो अपराध खमाव्यो. पछी भरत राजाए विजयरथने सन्मान आपी प्रीतिपूर्वक तेना नगरे जवा विदाय कर्यो.

हवे अहिं रामे पण महिधर भूपतिना विजयपुर नगरथी आगल जवा तैयारी करी. ते वखते लक्ष्मणे तेमनी साथे जवा पोतानी वनमाला कन्या पासे रजा मागी एटले तेणे स्नेहथी एम कह्युं के, " जो तमे वियोगथी व्याकुल बनेली मने त्यजी दइ जवानी इच्छा करोछो तो पछी हे नाथ ! मृत्यु पामवाने तैयार थइ रहेली मने तमे शुं रक्षण करी शकशो ? माटे हे वल्लभ ! आप प्रसन्न थइ मने साथे लइ जाओ. " पछी लक्ष्मणे तेनी प्रसन्नताने माटे मधुर वचनथी कह्युं. " हे प्रिया ! भाइनी सेवा करवामां उद्यमवंत थयेला मने तुं भक्तिमां विघ्न करनारी न था. कारण के, पतिनी साथे जनारी स्त्रीयो तो पुरुषने मार्गमां वेरीरूप थाय छे. हे भद्रे ! हुं म्होटा भाइने इष्टस्थाने पहोचाडीने पछी तने तेडवा माटे आवीश अने ते बाबत हुं त्हारा कहेवा प्रमाणे सोगन खाउं छुं. पछी लक्ष्मणे बालहत्या, स्त्रीहत्या अने ब्रह्महत्यादि

बहु सोगन खाधा. स्त्रीये पण लक्ष्मणने ते वखते रात्री नोजननो निषेध कराव्यो. पछी जानकी अने लक्ष्मण सहित पृथ्वीना आनूषणरूप श्री राम त्यांथी चालीने कुशलपणे क्षेमांजलि नगरी प्रत्ये आवी पहोच्या. त्यां नद्यानने विषे लक्ष्मणे तेमने प्रीतिपूर्वक नोजन कराव्युं अने पछी पोते नगरी जोवानी इछाथी रामनी आज्ञा लइ तत्काल पुरी प्रत्ये गया. त्यां नगरीमां तेमणे पट्टह वागतो सांनली तेनुं कारण कोइ माणसने पूछ्युं एटले तेणे कह्युं के, “ आ नगरीनो शत्रुदमन नामे राजा छे. तेने कनकदेवी नामनी पट्टराणीथी नत्पन्न थयेली जिनपद्मा नामे पुत्री छे. ते पुत्रीना वरनी परीक्षा माटे नूपति आ पट्टह वगमावे छे अने ते एम कहेवरावे छे के, जे कोइ म्हारा खङ्ग प्रहारने सहन करशे, तेने हुं म्हारी पुत्री आपीश. ” लक्ष्मणे तेनां आवां वचन सांनली तत्काल पट्टहने स्पर्श कस्यो एटले राजपुरुषो, शत्रुरूप तृणने नस्म करवामां अग्निरूप लक्ष्मणने राजा पासे लइ गया. त्यां राजाए तेमने सत्कार करीने पूछ्युं के, “ हे पुरुषरत्न ! तमे कोण छो ? ” लक्ष्मणे नत्तर आप्यो के, “ हुं नरत राजानो दूत छुं. अहिंथी आगल जतो हतो; परतुं पट्टहने वागतो सांनली में तेनो स्पर्श कस्यो छे. ” राजाए कह्युं. “शुं तमे म्हारा खङ्ग प्रहारने सहन करी सकशो ?” लक्ष्मणे कह्युं. “एक तो शुं, परंतु एकी साथेना पांच खङ्ग प्रहार सहन करी सकवाने हुं समर्थ छुं. ” लक्ष्मणना आवा नत्तरथी अत्यंत क्रोधातुर थयेला नूपतिये तत्काल पोताना अत्यंत नुजबलथी पांच खङ्ग लक्ष्मण सामां फेंक्यां. लक्ष्मणे पण एकने दांतवती, बेने बगलथी अने बीजा बेने बे हाथथी एम पांचे प्रहार झीली लीधां. कह्युं छे के—धीर पुरुषोनुं धैर्य लोकने विषे जयवंतु होय छे.

पछी जिनपद्माये प्रीतिथी लक्ष्मणना कंठे वरमाला नाखी एटले नूपतिये तेमनी विवाहने माटे विनंती करी. लक्ष्मणे कह्युं. “ आ नगरीना नद्यानने विषे प्रिया सहित म्हारा म्होटा बंधु श्री राम रहेला छे अने हुं हमेशां तेमनी आज्ञामांज रहेलो छुं. ” शत्रुदमन राजाए नत्तम एवा राम लक्ष्मणने आवेला जाणी पोते नद्यानमां जइ तेमने पोताना नगरमां तेमी लाव्यो. पछी लक्ष्मणे विवाह कराववामां नद्यमवंत थयेला ते राजाने कह्युं. “ हे नरेंद्र ! हुं ज्यारे वनथी पाछो फरीश त्यारे तमारी पुत्रीनी साथे लग्न करीश.”

पछी लक्ष्मण अने सीता सहित राम त्यांथी चाली निकल्या अने बहु पृथ्वीने उल्लंघन करता करता बीजे दिवस सांजे वंशस्थलपुर प्रत्ये आवी पहोच्या. ते वखते त्यांनो राजा सर्व प्रजा सहित नगरनी बहार आव्यो हतो. रामे तेने भयभीत थयेलो जाणी कारण पूछ्युं एटले तेणे कह्युं के, "हे पुरुष श्रेष्ठ! सांभलो. आ देशने विषे वंशतट नामे म्होटो पर्वत छे, तेना उपर अति भयंकर शब्द थाय छे; जेने आज त्रण दिवस थया छे. तेना भयथी सर्व नगरवासी जनो रात्रीये बहार आवी प्रभाते पाछा नगर प्रत्ये जाय छे."

राजानां आवां वचन सांभली प्रिया अने बंधु सहित राम ते पर्वत उपर गया. त्यां तेमणे भमतां भमतां कोइ कायोत्सर्गे रहेला अने ध्यानमां लीन थयेला बे महामुनियोने जोइ तत्काल भक्तिपूर्वक वंदना करी. पछी राम गोकर्ण देवताए आपेली विणाने वगाडवा लाग्या, लक्ष्मण गायन करवा लाग्या अने सीता दिव्य हावभावथी नृत्य करवा लाग्या. एवामां सूर्यास्त थवाने लीधे रात्री महा अंधकारमय थइ गइ एटले त्यां कोइ अत्यंत भयकारी वैताल आव्यो अने मुखथी विकट अट्टाटहासने करतो छतो ते बन्ने साधुउने उपसर्ग करवा लाग्यो. पछी क्रोधातुर थयेला राम लक्ष्मण जेटलामां मुनिनी पासे सीताने मूकी अने हथीयार लइ तेनी साथे युद्ध करवा तैयार थया तेटलामां पेलो अधम वैताल पोताना मनमां तेमना बलने सहन करवा समर्थ न थवाथी नासी गयो. आ वखते बन्ने मुनियोने तत्काल कर्मक्षीण थइ जवाथी विश्वने प्रकाश करनारुं केवलज्ञान प्रगट थयुं. देवताउए त्यां आवी तेमनो केवल महोत्सव कर्यो. पछी रामे ते बन्ने केवलीयोने नमस्कार करीने पूछ्युं के, "दुष्ट कर्मने लीधे मलिन एवो आ वैताल कोण छे के, जे तमने घोर उपसर्ग करतो हतो?" मुख्य केवलिये कह्युं. "हे राम! ए कुलभुषक नामनो महा मिथ्यादृष्टि ज्योतिष्क देव छे. ए अमने पूर्व जन्मना वैरथीज उपसर्ग करवा आवतो हतो, परंतु ते आजे तमारा तेजथी पराभव पामी नासी गयो छे. वली अमारा आ भवना पिता के, जे श्रीगरुडेश नामना देवरूपे थया छे. ते पोताना आसन कंपथी अमारो उपसर्ग दूर करवाने अहिं आव्या छे." आ वखते वैतालनी वात सांभलीने वंशस्थलपुरनो अधिपति पण परिवार सहित बन्ने केवलीयोने वंदन करवा त्यां आव्यो. सर्वज्ञ एवा

केवलज्ञानि मुनिये धर्मोपदेश आप्या पछी गरुमेश देवे प्रीतिपूर्वक रामने कह्युं के, "हे महाभाग ! तमे आ बन्ने मुनियोना उपसर्गने दूर करवाथी पोतानो जन्म सफल कर्यो ए बहु सारुं कर्युं छे अने एथी हुं प्रसन्न थयो छुं, माटे तमे इच्छित वरदान मागो." रामे कह्युं. "हे देव ! हवणां म्हारे कांइ वरदाननुं प्रयोजन नथी." देवताए रामना सत्वथी आश्चर्य पामीने फरीथी कह्युं. "त्यारे हुं तमारो अवसरे कांइ उपकार करीश." आम कही ते देवता बन्ने मुनियोने नमस्कार करी तत्काल आकाश मार्गे थइ पोताने स्थाने गयो.

पछी वंशस्थल नगरना अधिपति सुरप्रभ नृपतिये लक्ष्मण सहित रामने आदरपूर्वक पोताना नगरमां तेमी जइ तेमनो बहु सत्कार कर्यो. वली तेणे रामनी आज्ञाथी ते पर्वत उपर एक म्होटुं चैत्य बंधाव्युं. ते उपरथी ते पर्वत रामगिरि एवा नामथी प्रसिद्ध थयो. त्यार पछी राम, लक्ष्मण अने सीता सुरप्रभ राजानी रजा लइ स्थाने स्थाने पोतानी कीर्त्तिरूप स्तंभोने स्थापन करता अने लोकोना कौतुकोने जोवाथी प्रसन्न थता बहु पृथ्वीनुं उल्लंघन करी दंमकारण्य प्रत्ये आवी पहोच्या.

॥इति पद्म बलदेव चरित्रे राम दंमकारण्यागमो नाम चतुर्थः प्रस्तावः॥

पछी दंमकारण्यने विषे महागिरि नामना पर्वतनी गुफामां रामे पोताना घरनी पेठे निवास कर्यो. कोइ वखते तेमना आश्रमे बे चारणमुनि बे मासना पारणे आकाश मार्गेथी आव्या. तेओने सीताये भावथी शुद्ध अन्न वहोराव्युं. कह्युं छे के–विवेकी माणसो संपत्तिमां अथवा आपत्तिमां विवेकीज रहे छे. आ वखते सुगंधी जल, पुष्प अने सुवर्णनी वृष्टि थइ तेमज देवताओए आकाशने विषे दुंदुभि वगाम्या. पछी रत्नजटी नामना कोइ शंखद्वीपना अधिपति विद्याधर नृपतिये अने बे देवताओए त्यां आवी रामने घोमाओ सहित एक रथ भेट तरीके आप्यो. आ अवसरे झाम उपर बेठेलो अने दुर्गंधवाला पाणिना सरखा गंधने लीधे कोइ गंध नामे पक्षि मुनिना दर्शनथी मूर्छा पामी नीचे पम्यो. सीताये तेने पाणीथी अने पोतानां वस्त्रना पवनथी सचेत कर्यो एटले ते महारोगवालो पक्षी भक्तिपूर्वक साधुना चरणने विषे पम्यो. मुनिनां चरणना स्पर्शमात्रथी ते पक्षि निरोगी, दिव्य अंगवालो, सुवर्णना सरखी पांखोवालो अने प्रवाल तुल्य राती चांचवालो थयो. जाणे दिव्य रत्नोनो ढगलो होयनी ? एवी

शोन्नावाला ते पक्षीनुं मुनियोए पोषण कर्युं. ए उपरथी ते पक्षी लोकने विषे जटायु एवा नामथी प्रसिद्धि पाम्यो. पछी पक्षिने जोवाथी आश्चर्य पामेला रामे ते मुनियोने पूछ्युं के, "हे मुनीश्वरो! आ महा रोगवालो अने क्रूर दृष्टि पक्षि तमारा दर्शनथी नीरोगी थइ अद्भूत रूपवंत शी रीते थयो?" सुगुप्त नामना साधुए उत्तर आप्यो के, "हे महामति! सांभलो.

पूर्वे पृथ्वी उपर कुंभकारकट नामनुं नगर हतुं. त्यां दंडक नामनो राजा राज्य करतो हतो. कोइ वखते ते राजाना दुष्ट पुरोहिते बहु शिष्य सहित स्कंदक सूरिने घाणीमां पीली नाख्या. शिष्यो उत्तम पदने पाम्या अने स्कंदक मुनि कोपने लीधे अग्निकुमार देवताउने विषे महा देदीप्यमान देवपणे उत्पन्न थया. तेमणे उत्पन्न थवा मात्रमांज क्रोधथी आ देशने बाली नाख्यो. ते दिवसथी आरंभीने आ अरण्यनुं महा भयंकर एवुं दंडकारण्य नाम पड्युं. दंडक भूपति पण दीर्घकाल सुधी संसारने विषे भमी कंइ बाकी रहेलां पोतानां दुष्ट कर्मने लीधे आ भवमां अत्यंत रोगथी पीडाता शरीरवालो आ पक्षिराज थयो. एणे अमारा दर्शनथी उत्पन्न थयेला जातिस्मरणने लीधेज अमारा पगनो स्पर्श करी आमर्षौषधि लब्धिथी निरोगीपणुं अंगीकार कर्युं छे."

मुनिनां आवां वचन सांभली प्रसन्न थयेला ते पक्षिये मुनिना चरणनो स्पर्श करी उत्तम धर्म सांभलवाथी शुद्ध सम्यक्त्व अंगीकार कर्युं. वली तेणे वृद्धि पामती एवी श्रद्धावडे ते बन्ने मुनियो पासे प्राणी हिंसादि पाप न करवानो नियम कर्यो. मुनियोए कह्युं. "हे राघव! ए पक्षी हवणां साधर्मिकपणाने लीधे तमारी भक्ति करवाने योग्य उत्तम श्रावकपणुं पाम्यो छे." पछी रामे "बहु सारु." एम कहीने नमस्कार करेला ते बन्ने मुनियो तत्काल आकाश मार्गे चाल्या गया. कह्युं छे के–तेवा पुरुषोने प्रतिबंध होतो नथी. पछी जटायु सहित रामादि ते त्रणे जणाउ देवे आपेला रथमां बेसी मरजी प्रमाणे फरवा लाग्या.

हवे पाताल लंकामां खर नामनो राक्षस राजा राज्य करतो हतो. तेने चंद्रनखा नामनी स्त्री हती. तेउने शंबूक अने सुंदर नामना अति बलवान् बे पुत्रो हता. अनुक्रमे शंबूक युवावस्था पामी महा बलवान् थयो. एक दिवस ते पिताए ना कह्या छतां पण सूर्यहास नामना खड्गनुं साधन करवा माटे दं-

मकारण्यमां आव्यो. त्यां क्रौवरीवा नदीने कांठे वांसना भयंकर वनमां रहीने ते एम कहेवा लाग्यो के, "जे अहिं आवशे ते मारे वध करवा योग्य छे." पछी ते पवित्र अंगवालो थइ, ब्रह्मचर्यव्रत पाली, पूर्णमाने दिवसेज भोजन करतो वमवृक्षनी शाखाने विषे पग बांधी नीचे माथे सूर्यहासविद्यानुं साधन करवा लाग्यो. आ प्रमाणे वमवृक्षनी शाखा साथे बंधाइ एकाग्र चित्तथी विद्या साधन करता ते शंबूकने बार वर्ष अने चार दिवस पूरा थया एटले देवताए ज्यां शंबूक तप करतो हतो ते महावंश वनना द्वार पासे म्यान सहित सूर्यहास नामनुं खड्ग मूक्युं. एवामां दैवयोगथी फरता फरता लक्ष्मण त्यां आवी चम्या अने तेमणे ते सूर्यकांति समान सूर्यहास खड्ग जोयुं.

पछी लक्ष्मणे कुतुहलने लीधे म्यानमांथी कल्पांतकालना सूर्य समान अत्यंत दारुण ते खड्गने बहार खेंच्युं एटले तो ते तेना तेजथी विस्मय पामी गया. पछी तेमणे जेटलामां पोताना हाथवती तेने कंपावीने पासे रहेली वंशजाल कापवा मांमी तेटलामां तो ते वंशजालनी साथे कोइनुं मनोहर आकृतिवालुं माथुं पोतानी आगल पमेलुं दीठुं. लक्ष्मण ते जोइ खेद पामता बहु विचार करवा लाग्या के, " निश्चे में हवणां अज्ञानने लीधे कोइ माणसने मारी नाख्यो." आम विचार करी दयाधारी ते जेटलामां वंशजालना युथमां पेठा तेटलामां तो तेमणे वमवृक्षनी शाखाने विषे लटकाइ रहेला अने कंपता एवा कोइ पुरुषना धमने दीठुं. ते जोइ अत्यंत खेद धरता लक्ष्मणे तत्काल त्यांथी बहार नीकली ते सर्व वात श्री रामने कही अने ते दिव्य खड्ग पण देखामयुं. रामे कह्युं. " आ सूर्यहास नामनुं खड्ग छे अने तमे ते खड्गना साधक एवा कोइ पुरुषने मारी नाख्यो छे."

हवे आ अवसरे शंबूकनी माता चंद्रनखा " आजे म्हारा पुत्रने खड्ग विद्या सिद्ध थशे." एम धारी जेटलामां सर्व प्रकारनी पूजानो सामान लइ त्यां आवी तो ते वंशजालमां पोताना पुत्रने मृत्यु पामेलो जोइ अत्यंत दुःख धरती मूर्छा पामी. पछी ज्यारे ते संज्ञा पामी त्यारे विलाप करती रुदन करवा लागी के, " हे वत्स शंबूक ! तुं कया वैरीथी आवी दशाने पाम्यो ? तें कष्टथी विद्यानुं साधन कर्युं तेनुं तने शुं आज फल मल्युं!!!" आ प्रमाणे तेणे बहु काल सुधी विलाप कर्यो. पछी ते " आ म्हारा पुत्रने कोणे मार्यो ? "

एम विचारी शोकथी व्याप्त थइने भमवा लागी एटलामां ते चंद्रनखाये वज्र ध्वजादि लक्षण सहित लक्ष्मणनां पगलां दीठां. " निश्चे आज म्हारा पुत्रने मारनारनां पगलां छे. " एम धारी ते जेटलामां पगलां जोती जोती केटलेक दूर गइ तेटलामां तेणे वड वृक्षनी नीचे सीता अने लक्ष्मण सहित बेठेला अने वैरीरूप वनने बालवामां दावानल समान रामने जोया. पछी ते कोप सहित रामने जोवा लागी; परंतु कामथी विह्वल बनी गइ. कह्युं छे के—स्त्रीयोने सर्व अवस्थामां कामना विकारो स्फुरायमान थाय छे.

पछी ते चंद्रनखा पोतानी विद्याबलथी नाजुक अने सुंदर आकृतिवालुं रूप धारण करी रामनी पासे आवी. रामे तेने " हे भद्रे ! तुं कोण छे ?" एम पूछ्युं एटले तेणे उत्तर आप्यो के, "हुं अवंतीना राजानी पुत्री छुं. रात्रिये मेहेलमां सूति हती त्यांथी कोइ विद्याधर म्हारुं हरण करी आकाश मार्गे जवा लाग्यो. एटलामां बीजो कोइ विद्याधर हाथमां खड्ग लइ तेने रोकीने कहेवा लाग्यो के, " अरे तुं चोरनी पेठे ए कन्यानुं हरण करीने क्यां जाय छे ? " आम कही ते युद्ध करवा तैयार थयो. पछी म्हारुं हरण करनार विद्याधर पण मने मूकी दइ युद्ध करवा लाग्यो. आम ते बन्ने परस्पर बहु वखत सुधी युद्ध करीने मृत्यु पाम्या. पछी दैवयोगथी एकली रहेली हुं भमती भमती अहिं आवी चडी छुं. हे विभु ! आपना दर्शनथी मने घणो संतोष थयो छे, माटे मने अंगीकार करो. कारण उत्तम पुरुषो बीजाउनी प्रार्थनानो भंग क्यारे पण करता नथी." पछी रामे "निश्चे आ कोइ मायावी स्त्री मने छेतरवा आवी छे." एम धारी कह्युं के, "हे भद्रे ? म्हारे स्त्री होवाथी हुं त्हारा उपर निस्पृह छुं, माटे तुं स्त्री रहित एवा म्हारा न्हाना भाइ पासे जा; ते त्हारी याचना स्वीकारशे. " पछी ते चंद्रनखा लक्ष्मणनी पासे जइने पूर्वनी पेठे कहेवा लागी. लक्ष्मणे कह्युं. " हे सुंदरी ! तुं म्हारा म्होटा बंधुने अंगीकार कर अने तेमनी पासे जा. कारण तुं तेमनेज योग्य छे." आ प्रमाणे बन्ने भाइयोए जेनी प्रार्थना व्यर्थ करी छे एवी ते सुर्पनखा अत्यंत क्रोध धरती छती पोताना पति खरदानव पासे जइ पुत्रना मृत्युरूप दुःखनां वचन कहेवा लागी. पछी अत्यंत क्रोधातुर थयेलो खरदैत्य चौद हजार विद्याधरोने साथे लइ रामलक्ष्मणने मारवा माटे आव्यो. लक्ष्मणे आवता एवा शत्रुना समूहने जोइ रामने कह्युं

के, "हे बंधु! तमे सीता सहित अहिंज रहो. हुं ए सर्व शत्रुने जीतीश." रामे कह्युं. "हे सहोदर! तमारो विजय थाओ अने शत्रुना समूहने विषे सिंहनाद करो." पछी दुर्द्धर एवा लक्ष्मणे पोताना धनुष्य बाण धारण करी तुरत सामा जइने शत्रुना सैन्यने रोकी दीधुं. चंद्रनखा पण पतिनी सहाय माटे आ सर्व वात लंकामां पोताना भाइ रावणने जणावीने कहेवा लागी के, "हे बंधु? राम अने लक्ष्मण सीता सहित दंडकारण्यने विषे आवी पोताना घरनी पेठे निश्चितपणे रहेला छे. तेमां लक्ष्मणे तमारा भाणेज शंबूकने सूर्यहास खड्गनुं साधन करतां मार्यो छे. आ वात सांभलीने तमारा बनेवी पोताना न्हाना पुत्र सहित म्होटी सेनाने साथे लइ महा बलवंतपणाने लीधे लक्ष्मणनी साथे युद्ध करवा गया छे. वली हे भाइ! बीजुं पण ए छे के, जेवुं रूप जानकीनुं छे तेवुं रूप बीजी कोइ विद्याधरी के देवांगनानुं पण नथी. हे बंधु! त्हारी देदीप्यमान एवी विद्या अने दिव्य शस्त्रो विगेरेनो संग्रह त्यारेज सफल थवानो छे के, ज्यारे तुं राम पासेथी सीताने ग्रहण करीश. छेवट एटलुंज कहुं छुं के, अर्द्ध भरतक्षेत्रने विषे अतुल आकृतिवालुं स्त्री रत्न तो त्हारेज भोगववा योग्य छे. बीजा कोइने जरा पण नथी." व्हेननां आवां वचन सांभली दशमुखवालो रावण सीता उपर अनुराग अने राम लक्ष्मण उपर क्रोध धारण करतो छतो एकी वखते दीवानी पेठे प्रकाश अने श्यामपणुं बन्ने पाम्यो.

पछी रावण पुष्पक नामना वैमानमां बेसीने बोल्यो के, "हे विमानेंद्र! ज्यां राम छे त्यां जा." पछी वैमान आकाश मार्गथी समुद्रनुं उल्लंघन करी ज्यां दंडकारण्यने विषे राम हता त्यां क्षणमात्रमां आव्युं. त्यां रावण सीता सहित रामने जोइ अत्यंत कंपवा लाग्यो. कह्युं छे के—पापी पुरुषोने सामर्थ्य छतां पण सर्व स्थानके भयज थाय छे. पछी रावणे रामथी बहु दूर रही अतुल शक्ति आपनारी अवलोकिनी विद्यानुं स्मरण कर्युं. स्मरण करवा मात्रमांज उत्पन्न थयेली विद्याये रावणने कह्युं के, "हे राक्षसभूपति! म्हारा योग्य जे कार्य होय ते कहे." रावणे कह्युं. "हवणां सीताना हरणने विषे म्हारुं सानिध्य कर के, जेथी हुं महा बलवंत थाउं." विद्याये कह्युं. "हे भूपाल! सांभल. रामनी पासे रहेली जानकीनुं हरण करवा कोइ देव के दानव समर्थ नथी. परंतु जो राम, सीताने मूकी बीजे जाय तो तुं तेणीनुं तत्काल हरण

करजे. वली तेनो उपाय कहुं ते पण सांभल. ज्यारे लक्ष्मण शत्रुनी साथे युद्ध करवा गया छे त्यारे रामे तेमने कह्युं छे के, ज्यारे तमने शत्रु तरफथी संकट थाय त्यारे तमारे सिंहनाद करवो के, जेथी करीने हुं पण त्यां युद्ध करवाने आवी पहोचुं." रावणे पोतानी विद्यादेवीनां मुखथी आवां वचन सांभली दूर जइ मायाना वशथी तत्काल त्रासकारी सिंहनाद कर्यो. राम ते सिंहनादने सांभली पोताना मनमां विचार करवा लाग्या के, "अहो! पूर्वे क्यारे पण पराभव नहि पामेला एवा लक्ष्मणनो शत्रुओए शुं भंग कर्यो?" राम आ प्रमाणे विघ्नना संकेतकारी सिंह शब्द सांभली विचार करता हता एवामां दियरने विषे हित इच्छनारा सीताये रामने कह्युं के, "हे प्राणनाथ! सिंहनादने सांभल्या छता पण केम विलंब करो छो? निश्चे ए घोर शब्द लक्ष्मणेज कर्यो देखाय छे, माटे शत्रुथी घेराइ गयेला न्हाना बंधुनुं रक्षण करो! रक्षण करो!!" आ प्रमाणे सीताये कह्युं एटले प्रेमना झरारूप रामे पोतानुं वज्रावर्त धनुष्य लइ सीताने त्यां एकलां मूकी पक्षीओए ना कह्या छतां पण चाली निकल्या.

पछी ते अवसरे रावण, धणी रहित रत्नमाला समान सीतानुं हरण करवा माटे तत्काल त्यां आव्यो अने तेणे "हे प्राणनाथ! हे पद्म! हे सौमित्रे! हे महाभट! हे पिता जनक! हे बंधु भामंडल! तमे सौ आपत्तिरूप समुद्रने विषे पडती एवी मने आ अधम राक्षसथी रक्षण करो." आम रुदन करती एवी सीताने वैमानमां बेसारी. सीतानुं आवुं दुःखदाइ रुदन सांभली रामने विषे अनुरक्त एवो जटायुपक्षी त्यां आवी पहोच्यो अने कहेवा लाग्यो के, "हे देवी! भय पामशो नहि." पछी तेणे पासे रहेला रावणने कह्युं. "अरे! राक्षसाधम! उभो रहे. तुं सीतानुं हरण करीने क्यां जाय छे?" आम तिरस्कार करता जटायुए पोतानी चांच अने पंजावती रावणनी छातीने विषे बहु प्रहार कर्या. पछी क्रोध पामेला रावणे खड्गवती तेनी बन्ने पांखो घासनी पेठे कापी नाखी, जेथी ते पक्षीराज पृथ्वी उपर पड्यो.

हवे निर्भय अने निर्दय एवो रावण पोतानी इच्छा पूर्ण थइ, एम मानतो छतो रुदन करती एवी सीताने लइ लंका तरफ चाल्यो. एवामां राम विगेरेने बोलाववारूप सीताना रुदनने दूरथी सांभली अने समुद्र उपर पुष्पक

वैमानमां बेसी जता एवा रावणने जोइ रत्नद्वीपनो अधिपति रत्नजटी विद्याधर तत्काल पोताना चित्तने विषे विचार करवा लाग्यो के, "निश्चे पोतानी विद्याथी राम लक्ष्मणने मोह पमामी अने सीतानुं हरण करी आ रावण कामी पुरुषनी पेठे नासी जाय छे. पूर्वे भामंमले म्हारा उपर बहु उपकारो करेला छे, माटे हवे आ वखते सीताने वाली हुं तेमना रुणथी मुक्त थाउं." आ प्रमाणे विचार करीने तेणे रावणने दुर्जय मानता छता केवल पोताना सत्वना आश्रयथी तत्काल म्यानमांथी खड्ग काढी अने पुष्पक वैमाननी उत्कृष्ट गतिने रोकीने कह्युं के, "अरे दशानन ! मने जीत्या विना सीतानुं हरण करीने तुं क्यां जाय छे ? पछी रावणे हास्य पूर्वक तेना सामुं जोता छतां "जेम कालज्वर प्राणोनुं हरण करे तेम" तेनी सर्व विद्यानुं हरण करी लीधुं एटले विद्याभ्रष्ट थयेलो ते रत्नजटी रणसंग्रामथी पाछो फर्यो. कह्युं छे के–कयो माणस पोतानी मेले कालना मुखने विषे प्रवेश करे ? अर्थात् कोइ न करे.

पछी प्रसन्न मुखवालो रावण, रस्तामां सीताने शांत करवा माटे आ प्रमाणे सुकुमाल वचन कहेवा लाग्यो. "म्हारा मनरूप आम्रवृक्षनी कोयल ! कमल समान मुखवाली हे सीता ! तुं मने तत्काल प्रियकारी एवुं आलिंगन आप. हे सुंदरी ! तुं म्हारी सर्व स्त्रीयोने विषे उत्तमरूपरेखा पामेली छे, जेथी म्हारा मुकुटो त्हारा चरणनी सेवा करवानी इच्छा करे छे." कामदेवथी पीमा पामेलो रावण आ प्रमाणे कहेतो छतो सीताना चरण कमलने विषे पम्यो. धिक्कार छे ! धिक्कार छे !! कामातुर माणसने !!! पछी अन्य पुरुषना स्पर्शथी उत्पन्न थयेला भयवाली सीताये धीरज राखी रावणने कह्युं. "अरे दूराचार ! दुशील ! कुलिनोमां पापरूप ! निर्दय ! तुं मृत्युरूप विपत्तिना कठोर उपहासने विषे प्राप्त थयेलो छे." एम कहीने तेणे एवो अभिग्रह लीधो के, "म्हारे पति अने दियर ए बन्नेनी सुखवार्ता सांभळ्या पछी भोजन करवुं." रावणना प्रौढ शक्तिवाला सारणादिक महा प्रधानो पोताना स्वामीना पराक्रमथी संतोष पामी लंकामांथी तेना सन्मुख आववा लाग्या. पछी माननो पर्वत एवो रावण लंकाथी पूर्व दिशामां रहेला देवरमण उद्यानने विषे सीता सहित उतर्यो. त्यां त्रिजटा राक्षसीनी समीपे जानकीने मूकी अनेक जागता बलवंत सुभटोने रक्षण क-

रवानी आज्ञा करी सीतानी प्राप्तिथी उत्पन्न थयेला कठोर गर्वनो समुद्ररूप ते रावण संपत्तिना स्थानरूप पोताना मेहेल प्रत्ये आव्यो.

हवे बाणथी पूर्ण एवा भाथाने तथा धनुष्यने धारण करी राम युद्ध करवाने माटे लक्ष्मणनी पासे गया. रामने अकस्मात् आवेला जोइ लक्ष्मणे कह्युं. "हे भाइ! तमे सीताने एकलां मूकी अहिं केम आव्या ?" रामे कह्युं. "दुर्वार एवा शत्रुथी विडंबित एवा सिंहनादने सांभली तमने क्रोधाकुल थयेला जाणी हुं अहिं आव्यो छुं." लक्ष्मणे कह्युं. "में सिंहनाद कर्यो नथी, परंतु ते वैरीयोएज माया करीने तेवो शब्द कर्यो देखाय छे, माटे हे भाइ! तमे झट सीतानी पासे जाओ अने हुं पण आ शत्रुओना समूहने जीती तमारी पाछळ आवुं छुं." आम कही लक्ष्मणे पाछा वाळेला राम फरी पोताने आश्रमे आव्या, पण त्यां सीताने नहि देखीने बहु आकुल व्याकुल थइ गाढ मूर्छा पाम्या. पछी ज्यारे वनना शीतल पवनथी ते सचेत थया त्यारे शोक करता विलाप करवा लाग्या के, "हे प्रिया! तुं अमने वियोगीने त्यजी दइ क्यां जती रही छे? अथवा शुं वनवासना दुःखथी त्हारुं कोइए हरण कर्युं छे? अरे नाशवंत प्राणो! तमे पण जानकीनी साथे चाल्या जाओ." आ प्रमाणे विलाप करीने पछी धैर्यवंत थयेला राम, सीताने शोधवा माटे त्यांथी उठी वनमां भमवा लाग्या. एवामां शत्रुरूप रावणे कापी नाखेली बन्ने पांखोने लीधे अत्यंत पीडा पामता जटायु पक्षीने जोइ ते पोताना मनमां विचार करवा लाग्या के, "निश्चे सीतानुं हरण करता एवा कोइ पापी दुरात्माए पोताने विघ्न करता एवा आ पक्षीनी पांखो छेदी नाखी छे." पछी सीताना विरहथी पीडा पामेला रामे ते साधर्मिक एवा जटायुने पापनो नाश करनार पंच नवकार संभळाव्यो. जटायु पण ते नवकारने विषे लागेला पोताना चित्तथी पापने धोइ नाखी आर्तध्यानने त्यजी दइ महेंद्रदेव लोकने विषे श्रेष्ट देवपणे उत्पन्न थयो. पछी जेम विवेकी माणस उत्तमकलानो शोध करे तेम राम दंडकारण्यने विषे सीताने शोधवा लाग्या.

हवे अहिं रणसंग्राममां पण जेम युथवाला बलवंत हाथीयोनी साथे युद्ध करवा सिंह उभो थाय तेम सैन्य सहित आवेला खरदानवनी साथे लक्ष्मण युद्ध करवा उभा थया. ते वखते खरनो न्हानो भाइ त्रिशिरा नामे

दैत्य पोताना न्हाइ खरने पाछो वाली पोते लक्ष्मणनी साथे युद्ध करवा आव्यो. लक्ष्मणे युद्ध करतां ते त्रिशिराने क्षणमात्रमां खड्गवमे मारी नाख्यो. एवामां विराध नामनो कोइ राजपुत्र सैन्य सहित त्यां आवी लक्ष्मणने नमस्कार करीने कहेवा लाग्यो के, “ आप मने अंगीकार करो. हुं तमारी आज्ञानो वशवर्ती थइ तमारेज पक्षे रहीश. आ खरदानव, रावणनी सहायथी पाताललंकाना अधिपति म्हारा पिता चंद्रोदरने काढी मूकी पोते त्यां रहे छे. तमे एकला छो छतां शत्रुनो नाश करवामां सिंहसमान छो. तो पण हे प्रसन्न मुखवाला ! शत्रुने जीती लेवानी मने आज्ञा आपो.” लक्ष्मणे कह्युं “ हे राजपुत्र! शत्रुना वधने विषे म्हारे त्हारी सहायथी सर्युं. कारण हाथपगवालाने बीजानी सहाय लेवी ए लज्जा पामवा जेवुं छे. जो पोताना सेवकने विषे स्नेहवाला रामने तुं पोताना स्वामी मानतो हइश तो म्हारे तने पाताल लंकाना राज्यने विषे स्थापवो. ” पछी पुत्रना वधथी अत्यंत क्रोधातुर थयेलो तेमज कठोर चित्तवालो खर दानव विरोधने सहाय आपवानां वचन कहेता एवा लक्ष्मणनी पासे आवीने कहेवा लाग्यो के, “ अरे लक्ष्मण ! विद्यानुं साधन करता एवा पुत्र शंबूकने हणी म्हारो अपराधी थइ तुं शुं जीवतो जइश ? ” लक्ष्मणे कह्युं. “ हे राजन् ! में त्हारा पुत्रने विद्यानुं साधन करता मारेलो होवाथी म्हारुं पुरुषार्थ प्रगट थयुं नथी; परंतु विकट वैरी एवा तने पण तेनी पाछल विदाय करी हुं म्हारा पुरुषार्थने तत्काल प्रगट करीश. ” लक्ष्मणनां आवां वचनथी अत्यंत क्रोधातुर थयेलो अने युद्धना मर्मने जाणनारो ते खर दैत्य सज्ज थइ आकाशमां मेघनी पेठे तिक्ष्ण बाणोनो वरसाद वरसाववा लाग्यो. पछी लक्ष्मण पण उग्र एवा बाणोथी तुरत शत्रु तरफथी आवता संख्याबंध बाणोना वरसादने बंध करवा माटे आकाशने विषे सुर्यमंमलने ढांकी देनारा शरमंमपने बनावी दीधो. आ प्रमाणे अनेक विधाधरोनी समक्ष दीर्धकाल सुधी तेने युद्ध करावी लक्ष्मणे पोताना तिक्ष्ण शस्त्रथी ते खर दानवनुं मस्तक छेदी नाख्युं. छेवटे सुभटोमां मुकुटरूप लक्ष्मणे उग्रसेना सहित दूषण नामना दैत्यने पण मारी तत्काल देव अने दानवोने विषे विजय लक्ष्मी प्राप्त करी.

॥ इति श्री पद्मचरित्रे खरदुषणविनाशो नाम पंचमः प्रस्तावः ॥

ए प्रमाणे शत्रुउने क्षय करवाथी वृद्धि पाम्युं छे बल जेमनुं एवा महा तेजवंत लक्ष्मण सेनावंत एवा विराध सहित जेटलामां राम तरफ जवा लाग्या तेटलामां मार्गने विषे तेमनुं जमणुं नेत्र फरकवा लाग्युं; तेथी ते सीता अने रामनुं अकुशल मानता खेद करवा लाग्या. पछी त्यां आश्रमे आवीने जोयुं तो तेमणे वनमां वृक्षोनी घटामां सीताना वियोगथी शून्य चित्तवाला रामने जोया. त्यां राम सीताना वियोगथी वारंवार विलाप करता हता के, "हे वनदेवीयो ! तमे झट प्रसन्न थइ मने सीतानी वात कहो. हे पक्षीयो ! तमे पण दूर विहार करवा जाउ छो, माटे जो म्हारी हरण थयेली प्रियाने कोइ स्थानके दीठी होय तो मने कहो." वली सीताना वियोगथी अत्यंत पीडित थयेला राम दीर्घकाल पर्यंत निश्वास नाखीने वारंवार कहेता हता के, "अरे निर्लज्ज प्राणो ! तमे तुरत केम चाल्या जता नथी ? मने एक तरफथी सीताना वियोगरूप अग्नि संताप करे छे अने बीजी तरफथी वैरीयोना संकटथी मुक्त थयेला लक्ष्मण हजु सुधी आव्या नहि ए पीडा करे छे. मने जेमने लीधे गृहवासथी आ वनवास सुखकारी हतो; ते जानकी अने बंधु लक्ष्मण बन्ने जण आजे दुर्लभ दर्शनवाला थइ पड्या छे." आम राम विलाप करता हता एवामां "हे बंधो ! हुं आ रह्यो तमारी आगलज. तमारी आवी अवस्था केम थइ ?" एम कहीने आंसुथी व्याप्त नेत्रवाला लक्ष्मणे रामने नमस्कार कर्यो. पछी दुःखरूप महा समुद्रमां प्राप्त थयेला सुखरूप बेटने पामी रामे लक्ष्मणने कह्युं. "हे वत्स लक्ष्मण ! तमे शत्रुउने जीती सुखथी आव्या छोकनी ?" पछी जानकीना वियोगने जाणता एवा लक्ष्मणे रामने कह्युं. "हुं धारुं छुं के, जेणे सिंहनो शब्द कर्यो हतो तेणेज सीतानुं हरण कर्युं छे; परंतु ते हरण करनार विद्याधर, माणस, राक्षस, सुर के असुर गमे ते हो, परंतु हुं तेनुं मस्तक आ म्हारा खड्गवती छेदी नाखीश." पछी विराधनां वचनथी सीताने शोधवा माटे अनेक विद्याधरो चारे दिशामां मोकल्या. तेउए सर्व स्थानके सीतानी बहु शोध करी; परंतु कोइ ठेकाणेथी जनकपुत्री मल्यां नहि; तेथी तेउ भग्न चित्तवाला थइ पाछा आव्या. लक्ष्मणे रामने कह्युं. "हे भाइ ! में एवी प्रतिज्ञा लीधी छे के, "आ विराधने पाताललंकाना राज्यने विषे स्थापवो." विराधे पण ते बन्ने भाइउने कह्युं. "हे प्रभो ! आप त्यां आवी मने

म्हारा पूर्वना राज्यने विषे स्थापो के, जेथी करीने निश्चिंत थयेलो हुं पछी थोमा कालमां तमारा प्रसादथी सीतानी शोध लावीश." पछी "तथास्तु" एम कहीने लक्ष्मण तथा विराध सहित राम त्यांथी प्रयाण करी पाताललंकाना उद्यानने विषे आवी पहोच्या एटले खरदैत्यनो पुत्र सुंद पोताना पिता अने काका विगेरेनो क्षय करनारा शत्रुने आव्या धारी तत्काल युद्ध करवा आव्यो; परंतु ते पोतानी सामे अति दुर्जय एवा राम लक्ष्मणने युद्ध करवा आवता जोइ चंद्रनखा मातानां वचनथी तत्काल नासी जइने लंकामां गयो. त्यां तेने विश्वमां कंटपरूप अने महाबलवंत एवा रावणे क्रोध धरता छता पोतानी पासे राख्यो. पछी राम लक्ष्मणे पोतानी प्रतिज्ञा पूर्ण करवा माटे विराधने महोत्सवपूर्वक तेना राज्यने विषे स्थाप्यो. कृतज्ञमां शिरोमणिरूप विराध पण ते बन्ने भाइयोने पोताने घेर राखी निरंतर सेवा करवामां तत्पर रह्यो.

आ वखते किष्किंधा नगरीने विषे सुग्रीव नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने देवांगना समान कांतिवाली तारा नामे स्त्री हती. वली पोताना म्होटा भाइ वालीनो पुत्र चंद्ररस्मि युवराज पद्द भोगवतो हतो. सुग्रीवने तारादेवीथी उत्पन्न थयेला अंगद अने जयानंद नामना बे पुत्रो हता. हवे साहसगति नामनो कोइ विद्याधर पुत्र बहु दिवसथी तारानी साथे क्रीमा करवानी इछा करतो हतो; तेथी ते हिमालय पर्वतने विषे जइ प्रतारणी विद्यानुं साधन करीने सुग्रीवनुं रूप धारण करीने किष्किंधा नगरी प्रत्ये आव्यो. आ वखते सुग्रीव पोताना अनेक सुभटोनी साथे क्रीमा करवा माटे उद्यानमां गयो हतो, तेथी पेलो साहसगति के, जेणे मिथ्या सुग्रीवनुं रूप धारण कर्युं हतुं ते आकाश मार्गथी सुग्रीवना घरमां पेशी गयो. पछी ज्यारे साचो सुग्रीव क्रीमा वनथी पाछो आव्यो त्यारे तेने सुभट पुरुषोए बलात्कारे राजद्वारने विषे रोक्यो. आ अवसरे प्रधान प्रमुख पुरुषोए बे सुग्रीवने जोइने अंतःपुरना रक्षणने माटे प्रयत्न करवा मांम्यो. मिथ्या सुग्रीव पण ताराने विषे अभिलाषवालो होवाथी तुरत अंतःपुरमां पेसवा लाग्यो; तेने पण सचिवादिकोए रोक्यो. आ वखत चौद अक्षोहिणी सैन्य एकठुं थयुं अने बन्ने सुग्रीव तरफ अर्धो अर्द्ध वेहेंचाइ गयुं. वली शठ सुभटो तो पोत पोताना सुग्रीवने राज्यासने स्थापन करवा उद्यमवंत थइ परस्पर युद्ध करवा लाग्या. तारादेवीरूप राज्य

लक्ष्मीने माटे वृद्धि पाम्यो छे मत्सर जेमने एवा ते सत्य अने मिथ्या बन्ने सुग्रीवो घोर युद्ध करवा लाग्या; परंतु समान पराक्रमवाला ते बन्नेमांथी एकेने विजयलक्ष्मी वरी नहि. पछी तो ते बन्ने जणा थाकी युद्धथी निवृत्ति पामीने उन्ना रह्या. आ वखते सत्य सुग्रीव पोताना मनमां विचार करवा लाग्यो के, " हुं म्हारी सहायने माटे कोइ बलवंत एवा राजानी सेवा करुं. हा म्हारो सेवक हनूमान बहु बलवान् छे, परंतु ते हवणां सत्य असत्यनो अजाण होवाथी म्हारे विषे उदासीपणुं पाम्यो छे. आ कोइ धूर्तथी सर्व लोक एने विषे मोह पामी गया छे अने बलीष्ट विद्यावल तेनेज विषे आसक्त थया छे. धन्य तो रावणना शत्रु ते आ वालीनेज छे के, जेणे शत्रुथी व्याकुल थया विना राज्यलक्ष्मीनो त्याग करी दीक्षा लीधी. हवे शत्रुने नाश करवामां जे कोइ समर्थ राजा होय तेनी हुं सेवा करुं के, जेथी थोमा कालमां पूर्ण फल प्राप्त थाय. त्रिखंम नोक्ता बलवंत रावणने कार्य निमित्ते सेवुं; परंतु ते बहु अनुरागी छे, तेथी मने अने आ शत्रुने मारी पोते तारादेवीने लइ जाय. खर दानव म्हारो मित्र अने सिंहना सरखो पराक्रमी हतो; पण तेने तो लक्ष्मणे युद्धमां माख्यो, एम में सांजल्युं छे, माटे हवे शत्रुरूप वादलाने उरामी नाखवाने पवन समान दशरथ पुत्रने सेवुं के, जेथी ते मने विराधनी पेठे थोमा कालमां निश्चे फरी मारा राज्यासने स्थापे." आ प्रमाणे चिंतातुर थयेला सुग्रीवे एक चतुर दूतने विराध पासे मोकल्यो. दूते विराधपासे जइने कह्युं. " हे राजन् ! सुग्रीव राजा तमने केहवरावे छे के, जो तमारी आज्ञा होय तो हुं म्हारा पोताना स्वार्थने माटे हर्ष पूर्वक श्रीरामनी सेवा करुं." विराधे कह्युं. "हे दूत ! सुग्रीवराजा तुरत अहिं आवो अने आ रामनी सेवाथी एनुं पण मांगलिक थशे." पछी दूते पाछा आवी ते समाचार पोताना स्वामी सुग्रीवने कह्या. ते उपरथी सुग्रीव सैन्य सहित विराधनी पुरी पाताल लंका प्रत्ये गयो. विराधे पोतानी नगरीप्रत्ये आवेला सुग्रीवनो बहु सत्कार कर्यो. पछी सुग्रीवे शिलातल उपर बेठेला श्री रामलक्ष्मणने प्रणाम कर्या अने पोतानुं दुःख महा शक्तिवंत एवा रामने कही देखामयुं. छेवटे कह्युं के, हे जगत् नियंता ! हुं तमारे शरणे आवेलो छुं." सीताना वियोगथी पीमित एवा रामे तेनुं दुःख दूर करवाने तेने बहु धीरज आपी. कह्युं छे के—संत पुरु-

थो निश्चे परदुःखने नाश करवाना स्वभाववाला होय छे. पछी विराधे समजावेलो सुग्रीव हाथ जोडी वियोगथी दुःखी एवा रामने कहेवा लाग्यो के, "हे विभो! जगत्‌मां आप एकज सर्व अर्थने विषे समर्थ छो, माटे मने तत्काल म्हारा राज्यने विषे स्थापो. हुं सैन्य सहित आपनो सेवक छुं, माटे जेवी रीते तेवी सीतानी वार्ताने थोडा कालमां लावी आपीश." राम आवी सुग्रीवनी वाणीथी प्रसन्न थइ सेना सहित विराधने पोतानी साथे आवता अटकावी पोते एकलाज सुग्रीवनी साथे किष्किंधा नगरी प्रत्ये गया. ज्यारे राम लक्ष्मण किष्किंधा नगरीना उद्याननने विषे आव्या त्यारे सुग्रीवे पोताना वैरीने युद्ध करवा बोलाव्यो. विद्या अने बलथी गर्जना करतो ते साहस गति पण तत्काल युद्ध करवा आव्यो. कह्युं छे के–क्षत्रियोने रणसंग्राममां शौर्य उत्पन्न थाय छे. पछी समान आकृतिवाला अने समान बलवाला ते बन्ने सुग्रीवोए दुःसह एवा हाथीयोनी पेठे दीर्घकाल पर्यंत युद्ध कर्युं; परंतु राम समान आकृतिपणाने लीधे ते बन्नेमांथी पोतानी पक्षना खरा सुग्रीवने उलखी शक्या नहि, तेथी क्षणमात्र उदासी बनी गया. पछी रामे पोताना वज्रावर्त नामना धनुष्यने हाथमां लइ विजलीना निर्घात जेवो टंकार शब्द कर्यो एटले ते शब्दने नहि सहन करती एवी प्रतारणी विद्या तुरत नासी गइ. कह्युं छे के–तेवा सामर्थ्यवंत पुरुषोनी आगल कोण टकी शके? विद्या नासी जवाने लीधे साहसगति पोताना खरा रूपमां आवी गयो अने सुग्रीव जूदो देखाइ आव्यो. कह्युं छे के–दंभ घणो वखत केम रही शके? पछी सर्व लोको क्रोधथी कहेवा लाग्या के, "अरे! परस्त्रीने विषे आसक्त एवा एणे लोकने मोह पमाडी सुग्रीवने दुःखी कर्यो छे. पछी रामे ते साहसगतिने मारी वार्जींत्रोना शब्दपूर्वक सुग्रीवने हर्षपूर्वक तेना राज्यने विषे पूर्वनी पेठे स्थापन कर्यो. सुग्रीव पण रामना समान आकृतिवाली पोतानी तेर कन्या रामने विवाह माटे आपवा लाग्यो; परंतु सीताना वियोगथी असंतोषी हृदयवाला रामे तेने कह्युं के, "हे राजन्! म्हारे बीजा विवाहनुं कंइ प्रयोजन नथी." पछी राम ते उद्याननने विषेज रह्या अने सुग्रीव महोत्सवपूर्वक नगरी प्रत्ये गयो.

हवे ज्यारे सुंद पुत्र सहित खर दानव हणायो त्यारे चंद्रनखा तत्काल लंकापुरीने विषे रावणनी सभामां गइ. त्यां ते रावणना कंठने वलगी पडी

अत्यंत रुदन करवापूर्वक कहेवा लागी के, "हे बंधो ! तमे जयवंता वर्त्तो ! हताशा एवी हुं हणाइ छुं. तमारा बनेवीने युद्धमां मारी नाखी लक्ष्मण सहित रामे विराधने तेना राज्यासने स्थाप्यो छे. हे प्रभो ! हुं त्यांथी जीव लइने नासीने तमारी शरणे आवी छुं, माटे पुत्र सहित एवी मने तमे रक्षण कर्त्ता थाओ.

रावणे कह्युं. "हे व्हेन ! तुं बहु रुदन न कर ! हुं थोडा वखतमां त्हारा पति पुत्रादिकने मारनारा शत्रुने मारीश." आम पोतानी व्हेनने धीरज आपी रावण पोताना मंदीरने विषे शय्यामां सूतो; परंतु सीतानी साथे क्रीडा करवामां उत्साहवंत एवा तेने निद्रा आवी नहि. वली एटलुंज नहि, परंतु आज सुधी जानकीनो समागम न थवाथी शय्यामां सूतेला रावणने स्थलमां रहेला मांछलानी पेठे अत्यंत परिताप थतो हतो. पछी दुःखने विषे पडेला पतिने जोइ मंदोदरी राणीये तेने कह्युं. "हे स्वामिन् ! आपने एवुं शुं दुःख छे ?" रावणे कह्युं. "हे प्रिया ! सीताना विरहरूप कामाग्नि मने कमलनालनी पेठे बाले छे; माटे तुं मान मूकी दइ मारे अर्थे सीताने प्रसन्न कर. नहितो स्थलमां पडेला मांछलानी पेठे म्हारा प्राण जशे. वली म्हारे गुरुए आपेलो एवो नियम छे के, नहि इच्छा करती एवी स्त्री उपर बलात्कार करवो नहि." पछी मंदोदरी पोताना स्वामीनी तुष्टीने माटे उद्यानमां सीतानी पासे जइ प्रीतिपूर्वक वारंवार कहेवा लागी के, "हे सीता ! हुं अने बीजी आ सर्वे विद्याधर स्त्रीयो त्हारी किंकरीयो छीए, तेमज विश्वनो पति श्री रावण पण त्हारा दासपणाने भजे छे, माटे अरण्यमां वास करनारा, सुख रहित अने संपत्ति विनाना एवा पति रामनो तो त्हारे त्यागज करवो जोइए. तुं स्वप्न समान लंकाने पामी छे. वली प्रभुतानो पालक अने त्रिखंडनो भोक्ता तेमज विख्यात पराक्रमवालो रावण त्हारा पूर्वभवना पुण्यथी तने पोताना हृदयरूप कमलने विषे हंसीनी पेठे धारण करवानी इच्छा करे छे; माटे तुं संपत्ति रहित एवा रामने त्यजी दइ में भोगवेला एवा रावणने भज. कारण विकट संकटने विषे पडतो प पापने माटे थतो नथी." मंदोदरीनां आवां वचन सांभली महासती सीता पोताना बन्ने हाथथी बन्ने कानने ढांकी दइ आ प्रमाणे कहेवा लागी. "अरे मुग्धा ! तुं कुलीन छतां अकुलीन सरखां वचन केम बोले छे ? शुं कुलीन स्त्रीयो प्राणांते पण बीजा

थो निश्चे परदुःखने नाश करवाना स्वजावनवालो होय छे. पछी विराधे समजावेलो सुग्रीव हाथ जोमी वियोगथी दुःखी एवा रामने कहेवा लाग्यो के, "हे विन्नो ! जगत्मां आप एकज सर्व अर्थने विषे समर्थ छो, माटे मने तत्काल म्हारा राज्यने विषे स्थापो. हुं सैन्य सहित आपनो सेवक छुं, माटे जेवी हशे तेवी सीतानी वार्ताने थोमा कालमां लावी आपीश." राम आवी सुग्रीवनी वाणीथी प्रसन्न थइ सेना सहित विराधने पोतानी साथे आवता अटकावी पोते एकलाज सुग्रीवनी साथे किष्किंधा नगरी प्रत्ये गया. ज्यारे राम लक्ष्मण किष्किंधा नगरीना उद्यानने विषे आव्या त्यारे सुग्रीवे पोताना वैरीने युद्ध करवा बोलाव्यो. विद्या अने बलथी गर्जना करतो ते साहस गति पण तत्काल युद्ध करवा आव्यो. कह्युं छे के–क्षत्रियोने रणसंग्राममां शौर्य उत्पन्न थाय छे. पछी समान आकृतिवाला अने समान बलवाला ते बन्ने सुग्रीवोए दुःसह एवा हाथीयोनी पेठे दीर्घकाल पर्यंत युद्ध कर्युं; परंतु राम समान आकृतिपणाने लीधे ते बन्नेमांथी पोतानी पक्षना खरा सुग्रीवने उलखी शक्या नहि, तेथी क्षणमात्र उदासी बनी गया. पछी रामे पोताना वज्रावर्त नामना धनुष्यने हाथमां लइ विजलीना निर्घात जेवो टंकार शब्द कर्यो एटले ते शब्दने नहि सहन करती एवी प्रतारणी विद्या तुरत नासी गइ. कह्युं छे के–तेवा सामर्थ्यवंत पुरुषोनी आगल कोण टकी शके ? विद्या नासी जवाने लीधे साहसगति पोताना खरा रूपमां आवी गयो अने सुग्रीव जूदो देखाइ आव्यो. कह्युं छे के–दंन्न घणो वखत केम रही शके ? पछी सर्वे लोको क्रोधथी कहेवा लाग्या के, " अरे ! परस्त्रीने विषे आसक्त एवा एणे लोकने मोह पमामी सुग्रीवने दुःखी कर्यो छे. पछी रामे ते साहसगतिने मारी वार्जीत्रोना शब्दपूर्वक सुग्रीवने हर्षपूर्वक तेना राज्यने विषे पूर्वनी पेठे स्थापन कर्यो. सुग्रीव पण रामना समान आकृतिवाली पोतानी तेर कन्या रामने विवाह माटे आपवा लाग्यो; परंतु सीताना वियोगथी असंतोषी हृदयवालो रामे तेने कह्युं के, " हे राजन् ! म्हारे बीजा विवाहनुं कंइ प्रयोजन नथी. " पछी राम ते उद्यानने विषेज रह्या अने सुग्रीव महोत्सवपूर्वक नगरी प्रत्ये गयो.

हवे ज्यारे सुंद पुत्र सहित खर दानव हणायो त्यारे चंद्रनखा तत्काल लंकापुरीने विषे रावणनी सन्नामां गइ. त्यां ते रावणना कंठने वलगी पमी

अत्यंत रुदन करवापूर्वक कहेवा लागी के, "हे बंधो ! तमे जयवंता छता हा ! हताशा एवी हुं हणाइ छुं. तमारा बनेवीने युद्धमां मारी नाखी लक्ष्मण सहित रामे विराधने तेना राज्यासने स्थाप्यो छे. हे प्रभो ! हुं त्यांथी जीव लइने नासीने तमारी शरणे आवी छुं, माटे पुत्र सहित एवी मने तमे रक्षण कर्ता थाउ.

रावणे कह्युं. "हे व्हेन ! तुं बहु रुदन न कर ! हुं थोडा वखतमां त्हारा पति पुत्रादिकने मारनारा शत्रुने मारीश." आम पोतानी व्हेनने धीरज आपी रावण पोताना मंदीरने विषे शय्यामां सूतो; परंतु सीतानी साथे क्रीडा करवामां उत्साहवंत एवा तेने निद्रा आवी नहि. वली एटलुंज नहि, परंतु आज सुधी जानकीनो समागम न थवाथी शय्यामां सूतेला रावणने स्थलमां रहेला मांछलानी पेठे अत्यंत परिताप थतो हतो. पछी दुःखने विषे पडेला पतिने जोइ मंदोदरी राणीये तेने कह्युं. "हे स्वामिन् ! आपने एवुं शुं दुःख छे ?" रावणे कह्युं. "हे प्रिया ! सीताना विरहरूप कामाग्नि मने कमलनालनी पेठे बाले छे; माटे तुं मान मूकी दइ मारे अर्थे सीताने प्रसन्न कर. नहि तो स्थलमां पडेला मांछलानी पेठे म्हारा प्राण जशे. वली म्हारे गुरुए आपेलो एवो नियम छे के, नहि इच्छा करती एवी स्त्री उपर बलात्कार करवो नहि." पछी मंदोदरी पोताना स्वामीनी तुष्टीने माटे उद्यानमां सीतानी पासे जइ प्रीतिपूर्वक वारंवार कहेवा लागी के, "हे सीता ! हुं अने बीजी आ सर्वे विद्याधर स्त्रीयो त्हारी किंकरीयो छीए, तेमज विश्वनो पति श्री रावण पण त्हारा दास्यपणाने भजे छे, माटे अरण्यमां वास करनारा, सुख रहित अने संपत्ति विनाना एवा पति रामनो तो त्हारे त्यागज करवो जोइए. तुं स्वप्न समान लंकाने पामी छे. वली प्रभुतानो पालक अने त्रिखंडनो भोक्ता तेमज विख्यात पराक्रमवालो रावण त्हारा पूर्वभवना पुण्यथी तने पोताना हृदयरूप कमलने विषे हंसीनी पेठे धारण करवानी इच्छा करे छे; माटे तुं संपत्ति रहित एवा रामने त्यजी दइ में भोगवेला एवा रावणने भज. कारण विकट संकटने विषे उतलो प पापने माटे थतो नथी." मंदोदरीनां आवां वचन सांभली महासती सीता पोताना बन्ने हाथथी बन्ने कानने ढांकी दइ आ प्रमाणे कहेवा लागी. "अरे मुग्धा ! तुं कुलीन छतां अकुलीन सरखां वचन केम बोले छे? शुं कुलीन स्त्रीयो प्राणांते पण बीजा

पतिनी इछा करे खरी ? वनवासने अंगीकार करीने पण उत्तम नीति तथा धर्म साम्राज्यनुं रक्षण करनार वली पोतानी प्रतिज्ञारूप समुद्रनो पार पामनार ए म्हारा प्राणप्रिय क्यां ? अने सर्व कुशीलवंतोमां रेखारूप तथा परस्त्रीनी इछाथी उत्पन्न थयेला पाप समूहना ज्ञाररूप त्हारो पति क्यां ? जे कुलमां पति परस्त्री लंपट होय अने स्त्री दूतीना कार्यने करनारी होय ते कुल अंते लोकमां धिक्कारपणाने पामे छे. प्रौढ साम्राज्य संपत्तिथी इंद्र समान, तथा धनथी कुबेर समान होय तो पण ए दश कंठ (रावण) मने प्राणांतने विषे पण नथी रुचतो." आम सीता मंदोदरीने कहे छे एटलामां कामज्वरथी अत्यंत पीमा पामेलो रावण पोते वायुथी उराफेला रुनी माफक त्यां आव्यो अने सुप्रसन्न दृष्टिथी सीताना सामुं जोतो छतो कहेवा लाग्यो के, "हे वैदेहि ! हुं त्हारो दास छुं अने आ मंदोदरी त्हारी आज्ञाकारी दासी छे. हे ज्ञद्रे! म्हारे विषे कृपा करी तुं मरजी प्रमाणे मने ज्ञज अने मने अंगीकार करी विद्याधरीयोमां ईश्वरीरूप था." पछी "आ रावण परस्त्रीयोना गमनथी अत्यंत पापी थयो छे." एम धारी सीताये अवलुं मुख राखीने तेने कह्युं. "अरे राक्षसाधम ! तने निश्चे काळे कोलीयारूप करेलो देखाय छे. कारणके, तें कपट करी दशरथना पुत्रनी प्रिया एवी म्हारुं हरण कर्युं छे. तें पोतानुं कुल कलंकित कर्युं अने पोतानो आचार पण दुषित कर्यो छे. हे पापीष्ट ! हवे थोमा वखतमां लक्ष्मण त्हारा प्राणोनुं हरण करशे." सीताये आ प्रमाणे अपमान कर्या छतां पण रावण तो तेनी प्रार्थना करता लाग्यो. धिक्कार छे कामदेवने के, जे बलवंत पुरुषोना बलने पण हरण करी ले छे. आ वखते जाणे रावणना कुविकल्पथीज पातालमां पेसी जतो होयनी ? एम सूर्य अस्त पाम्यो, जेथी सर्व स्थानके अंधकार फेलाइ गयो.

पछी रावणे सीताने ज्ञय पमामवा माटे घुत्कार शब्द करनारा घुवमनां, फेत्कार शब्द करनारा शीयालनां, उंची फणवाला सर्पनां, सिंह शब्द करनारा सिंहनां, गर्जारव करनारा हाथीनां, अट्टाटहास करनारा दुष्ट वैतालनां अने बीजा ज्ञयंकर रूपो बनाव्यां; परंतु ते सर्व ने जोइ निर्ज्ञय तथा परमेष्टी मंत्रनुं ध्यान करती सीता पोतानुं शील राखवामांज तत्पर रही. पछी रात्रीनुं सर्व वृत्तांत जाणीने नीतिमान् एवा विज्ञीषणे त्यां रावणे रोकेली सी-

तानी पासे जइने कह्युं. "हे शुभ्रे ! तमे कोण छो ? कोनी पुत्री छो ? अने कोनी प्राणप्रिया छो. ? हुं परस्त्रीयोने भाइ समान छुं, माटे तमारे जे दुःख होय ते मने झट कहो. ?" बिभीषणनां आवां क्षार समुद्रना मध्यमां रहेली मिठी वीरडीनां समान वचन सांभली लज्जा सहित जानकीये कह्युं. "हे सौम्य ! सावधानपणाथी सांभलो. हुं जनकराजानी पुत्री अने दशरथपुत्र श्री रामनी प्राणप्रीया छुं. पितानी प्रतिज्ञा पालवाने माटे लक्ष्मण सहित वनमां निवास करनारा म्हारा पतिनी साथे हुं पण दंडकारण्यमां आवी हती. एक दिवस वनने विषे पितानी मरजी प्रमाणे भ्रमण करता म्हारा दियर लक्ष्मणे दिवसने विषे वंशनी जालीमां रहेलुं एक महा अद्भुत खड्ग जोयुं. पछी तेमणे म्यानमांथी खड्गने खेंची तत्काल सर्व वंशजाली छेदी नाखी एटले तो कोइ स्वविद्यानुं साधन करता पुरुषने हणायेलो दीठो. पछी पोताना चित्तने विषे खेद पामता लक्ष्मणे दयाने लीधे झट रामनी पासे आवी ते सघली वात कही. त्यार पछी विद्या साधन करनारनी माता पुत्रवधने लीधे क्रोधातुर थइ लक्ष्मणनी पाछल गइ; परंतु ते श्री रामने जोइने कामातुर थइ. श्रेष्ठ शीलधारी राम लक्ष्मणे तेनो आदर न कर्यो. ते उपरथी तेणे पोताना पुत्र वधनी वार्ता पोताना पतिने अने भाइने कही. पछी आकाशमार्गे अनेक विद्याधरोनी सेना आवी; तेनी साथे जेटलामां निर्भय एवा लक्ष्मण युद्ध करवा गया तेटलामां पाछल सिंहनादनो संकेत करी जेनुं मृत्यु पासे आव्युं छे एवा रावणे कपट करी पतिने छेतरीने म्हारुं हरण कर्युं छे. हे भाइ ! हुं प्राणनो नाश थये पण शील रक्षण करीश."

सीतानां आवां वचन सांभली नीतिमार्गे रहेलो बिभीषण पोताना बंधु रावण पासे जइने तेने कहेवा लाग्यो के, "हे बंधो ! तें आ पोताना कुलनो अंत करनारुं शुं आरंभ्युं ? ए महासती कल्पांते पण त्हारुं वाक्य अंगीकार करशे नहि. वली तुं राम लक्ष्मणवडे थोडा कालमां कुलनो नाश करीश, माटे न्यायधर्मने विचारी जानकी पाछी रामने सोंप अने स्नेहवंत बंधुजनी साथे पोतानुं साम्राज्य पद दीर्घकाल सुधी भोगव." आम बिभीषणे हित वचन कह्यां छतां पण रावणे पोतानी कुमतीनो त्याग कर्यो नहि. कह्युं छे के—नसीब वांकुं होय त्यारे शुं नथी थतुं ? वलग-

वित रावणे विज्ञीषणने कह्युं. "हे बंधो ! ए बे वनचरोथी तुं केम ज्ञय पामे बे ? में अहिं आणेली ए सीता निश्चे मने अंगीकार करशे अने राम लक्ष्मण अहिं आवशे तो तेउने हुं निश्चे मारी नाखीश. कहे, विद्याधर अने मनुष्यना युद्धने विषे कोइ बलवंत पुरुषे मने क्यारे पण जीत्यो बे ?" विज्ञीषणे फरीथी कह्युं. "ज्ञाइ ! पण ते ज्ञानिनुं वचन तो सत्यज बे के, स्त्रीना हेतुथी तमारा कुलनो क्षय रामथी थवानो बे. में तमारी ज्ञक्तिने लीधे दैवज्ञनुं वचन मिथ्या करवाने दशरथ ज्ञूपने मास्यो हतो, बतां ते एम न होय तो पोतानी नगरी प्रत्ये पाबो क्यांथी आवे ? माटे हुं विज्ञापना करुं बुं के, "निश्चे ज्ञावी अन्यथा थवानुं नथी." एम पोताना मनमां विचारी जानकी पाबी रामने अर्पण करो." पबी रावण विज्ञीषणनां वचनने नहिं गणकारतो तत्काल सीताने पुष्पक वैमानने विषे बेसारी आकाशमार्गे चाल्यो अने कहेवा लाग्यो के, "हे ज्ञद्रे ! कदलीगृहथी मनोहर एवा आ वगीचाउ, क्रीमा शैलने विषे नाना प्रकारनी मणिमय म्होटी गुफाउ अने राजहंसादि मिथुनोए सेवन करेलां जलवाली क्रीमा करवानी वाव्यो, सरोवर विगेरे जे आ मुख्य जलाशयो देखाय बे तेउने विषे हे सुंदरी ! म्हारी साथे निरंतर क्रीमा कर. कारण हुं तने इच्छित वस्तु आपवाने कल्पवृक्षरूप बुं." आ प्रमाणे रावणे मधुर वचनथी सीताने बहु लोज्ञावी; परंतु ते तो पोताना पति श्रीराम नामनो जप करती मौन धारण करीनेज रही. आम रामने विषे स्थीर चित्तवाली सीताने जाणी रावण तेने फरी तेज स्थानके (पोताना उद्यानमां) मूकी पोताने घेर गयो.

हवे अहिं विज्ञीषण, मुख्य प्रधानोनी साथे एकांतमां विचार करता कहेवा लाग्यो के, "हे प्रधानो ! तमे म्हारुं हितकारी वचन सांज्ञलो. पूर्वे आपणो स्वामी रावण पोताना ज्ञुजबलने लीधे सैन्यथी पण वधारे बलवान् हतो; परंतु ते हवणां श्री रघुपतिनी प्राणप्रियानां हरणथी बहु अल्प बलवालो थइ गयो बे. मनुष्योने एक पण कामासक्ति अनर्थनुं कारण थाय बे, तो पबी नरक आपनारी परस्त्रीयोमां आसक्ति करवी तेनुं तो शुंज कहेवुं ? माटे हे मंत्रियो ! तमे रावण पासे जइ तेने कहो के, तुं निश्चे श्री रामनी स्त्रीना हरणथी पोताना कुलनो अने पोतानो नाश न कर. कुलनो क्षय करनारी ए जानकीने त्यजी दइ पोताना बंधुपुत्रादि युक्त आ अमित एवी राज्य लक्ष्मी

ज्ञोगव्य." मंत्रियोए कह्युं. "अमे राजा रावणने कुव्यसनथी दूर करवा तथा श्रेष्ठ रस्ते स्थापन करवा समर्थ नथी; परंतु जेम हाथीने श्रेष्ठ रस्ते चलाववा एक अंकुशज समर्थ छे तेम ए राजा रावणने पण कुव्यसनथी दूर करवा तथा न्याय रस्ते स्थापन करवा आप एकज समर्थ छो." पछी विन्नीषणे तेज ने कह्युं. "हे सचिवो! शुं करीए? कारण म्हारुं गुणकारी हित वचन रावण मानतो नथी. निश्चे कोइनी ज्ञवितव्यता अन्यथा थती नथी, तो पण म्होटा पुरुषोए क्यारे पण पोतानो उद्यम छोमवो नहि." आम कही ते विन्नीषणे प्रथम लंकाना बहु उंचा एवा किल्ला उपर यंत्रो गोठव्या अने त्यां चारे बाजुए कांगरा उपर बलवान् राक्षसो राख्या. वली पोताना ज्ञाइना रक्षण माटे ठेकाणे ठेकाणे अनेक योग्य विचक्षण चर पुरुषो स्थाप्या.

हवे अहिं किष्किंधा नगरीने विषे सीताना समाचार न मलवाथी राम कृष्णपक्षना चंद्रनी पेठे अत्यंत दूर्बल थवा लाग्या. एक दिवस तेवी अवस्थावाला श्री रामना कहेवा उपरथी लक्ष्मण अत्यंत क्रोध धरता छता पोताना धनुष्य बाण लइ सुग्रीवनां घरे गया. "आ लक्ष्मण अत्यारे क्रोध पाम्या छे." एम धारी द्वारपालकोए पण तेमने रोक्या नहि; तेथी ते तत्काल सुग्रीवना अंतःपुर प्रत्ये गया. लक्ष्मणने आव्या सांज्ञली ज्ञय पामता सुग्रीवे सन्मुख आवी हाथ जोमीने प्रणाम कर्या. लक्ष्मणे क्रोध करीने कह्युं. "अरे कपीश्वर सुग्रीव! तुं तो निःशंक थइने ज्ञोगो ज्ञोगवे छे अने राम तो सीताना विरहनी व्यथा सहन करे छे. तें कह्युं हतुं के, हुं थोमा दिवसमां जानकीनी शोध लावी आपीश; पण हवे तो तने राज्य मलवाथी टाढ वाली हशे. शुं आ योग्य छे? हवणां झट सीतानी शुद्धिने माटे उठ अने प्रतिज्ञाना ज्ञंगथी साहसगतिना मार्गने न पाम. अर्थात् मृत्युनी इच्छा न कर." लक्ष्मणनां आवां वचन सांज्ञली ज्ञय पामतो सुग्रीव तेमना चरणने नमस्कार करीने कहेवा लाग्यो के, "हे विज्ञो! आप म्हारा अपराधनी क्षमा करो." आम लक्ष्मणनी विनंती करी कपीश्वर सुग्रीवे अनेक सुज्ञटो सहित श्री रामनी पासे जइ तेमने प्रणाम कर्या. पछी तेणे पोताना सेवकोने आज्ञा करी के, "हे सुज्ञटो! तमे सर्व पृथ्वीने विषे जानकीनी शोध करो." आ प्रमाणे पोताना पतिये आज्ञा करेला सुज्ञटो गाम, खाण अने पुरादिकने विषे जानकीनी शोध करवा चाल्या.

आ अवसरे ज्ञामंमल पण सीताना हरणने सांजली अत्यंत फुःख धरतो ठतो रामनी पासे आव्यो. कह्युं ठे के–प्रेमनो समय तो तेज कहेवाय ठे. विराध पण सेना सहित रामनी सेवा करवा माटे तत्काल आवी पहोच्यो. कह्युं ठे के–ज्ञक्तिना ऊरारूप ज्ञक्त जनो पोताना स्वामीने अवसरे सेवे ठे. पठी सुग्रीव पोते पण सीतानी शोध करवा माटे आकाश मार्गे थइ कंबुद्धीपमां रहेली सुरसंगीतार्थ नामनी पुरीप्रत्ये गयो. त्यां ते द्वीपनो अधिपति रत्नजटी सुग्रीवने आवेलो जोइ विचार करवा लाग्यो के, "शुं म्हारी विद्याना हरणथी पण असंतोषी रहेलो रावण हवे म्हारा प्राणनेज हरण करवा आव्यो ठे के, तेणे अहिं सुग्रीवने मोकल्यो ठे?" आम विचारी जेटलामां ते नगरीमां नासी जवानुं धारे ठे तेटलामां ते रत्नजटीने सुग्रीवे कह्युं. "अरे! आकाश प्रत्ये चालवाने तैयार थयेलो तुं केम निरुद्यमी थइ गयो? अर्थात् हवे तुं केम आकाश मार्गे चाली शकतो नथी?" पठी शांत थयेला रत्नजटीये सुग्रीवने कह्युं. "हे सुग्रीव! सांजल. वैदेहीनुं हरण करीने तुरत नासी जता रावणे म्हारी विद्यानुं हरण करी लीधुं ठे; तेथी म्हारी आकाश गति स्खलित थइ ठे." पठी सुग्रीवे सीतानी शुद्धिना बीजरूप रत्नजटीने तत्काल रामनी पासे आण्यो. त्यां रत्नजटीये वियोगथी फुःखी एवा रामने प्रणाम करीने कह्युं के, "पुष्पक वैमानमां बेठेला रावणे सीतानुं हरण कर्युं ठे. ते वखते "हे दाशरथे! हे लक्ष्मण बंधो! हे ज्ञामंमल! आ अधमे बलात्कारे हरण करेली मने ऊट रक्षण करो!!" आम विलाप करती सीताने म्हारा नगरने विषे सांजलीने हुं खरू लइ तत्काल रावणनी पासे गयो; परंतु तेणे क्रोध करी म्हारी सर्व विद्यानुं हरण करी लीधुं एटले तो दिन एवो हुं तेने जोइ रह्यो अने ते लंकाने विषे चाल्यो गयो."

राम आ प्रमाणे सीतानी उत्तम शुद्धि पामी बहु हर्ष पाम्या अने रत्नजटीने आलिंगन करी तेनी वारंवार प्रशंसा करवा लाग्या. पठी तेमणे सुग्रीव प्रमुख बलवंत योद्धाने पूठ्युं के, "हे सुजटो! कहो. ते लंका अहिंथी केटले दूर ठे?" रामना आवा पूठवा उपरथी उद्वेग पामेलाना समान देखाता तेमणे कह्युं के, "रावण राजा शत्रु ठतां ते न प्रवेश कराइ शकाय एवी लंकाप्रत्ये जवुं सर्युं. कारण युद्धमां विजयी एवो ते पोताना बंधुरूप

जुजथी, डुर्गथी, पुत्रोथी अने सेना विगेरेना बलथी अत्यंत गर्वधारी थइ समग्र शत्रुउने पण तृण समान गणतो नथी." रामे फरीथी कह्युं. "हे नूपो! आपणे जय पराजयनी वार्ताथी शस्युं; पण ते परस्त्रीनो चोर रावण मने देखाम्शो. पठी ते लक्ष्मणनां शस्त्र समूहना प्रहारथी व्यथित आत्मावाला रावणना विद्याबलने जाणशुं." लक्ष्मणे क्रोध करीने कह्युं. "अरे! तमे रावणने केम वखाणो गो? जे सीतानुं हरण करीने चोरनी पेठे नासी गयो ते शुं बलवंत कहेवाय खरो! हुं राक्षसो, विद्याधरो अने नूपतिउनां जोतां उतां रणांगणने विषे ते रावणना मौलिमंम्लने पाम्ी नाखीश." जांबुवाने कह्युं. "जो आपनी शत्रुने मर्दन करनारी शक्ति ठे तो ते सत्य; परंतु पूर्वे अनंतवीर्य नामना मुनिये कह्युं बे के, जे पोताना बलथी कोटिशिलाने उपाम्शे तेज युद्धने विषे प्रबल एवा रावणने हणी सकशे."

जांबुवाननां आवां वचन सांन्नली लक्ष्मणे कह्युं. "ते पण कौतुक जोइए." पठी रामनी आज्ञाथी अनेक विद्याधरोए ते कोटि शिलाने त्यां आणी एटले शत्रुनुं मर्दन करनारा लक्ष्मणे ते योजनप्रमाण शिलाने पोताना दक्षिण हाथवती ढींचण पर्यंत उंची करी. ते वखते आकाशमां देवताउए जयजय शब्द कस्थो अने "आ वासुदेव चिरकाल पर्यंत जीवो." एम कही पुष्पनो वर्षाद वरसाव्यो. पठी थयो ठे निश्चय जेमने एवा ते सुग्रीवादिक राम पासे आवीने तेमनी पासे विचार करवा बेठा. सुग्रीवे कह्युं. "निश्चे तमाराथी रावण हणाशे, तो पण त्यां कोइ चतुर दूतने मोकलवो जोइये. ते दूत लंका प्रत्ये जइ सीताने मुक्त करवानुं विन्नीषणने कहेशे. कारण ते नीतिवान अने चतुर ठे. जो नीति वचनना बोधथी रावण सीता आपणने अर्पण करशे तो कार्य सिद्धि सुखथी थइ जशे; परंतु गर्वधारी रावण अने न्यायवंत विन्नीषण तमारुं कहेवुं नहि माने तो पठी अमे तमारा पक्षमां रहीशुं, माटे प्रथम कोइ समर्थ श्रेष्ट दूतने त्यां मोकलो. वली अमे हवणां एम पण सांन्नल्युं ठे के, लंकाने सारी रीते रक्षण करी लीधी ठे." पठी सुग्रीव विश्वन्नूतिने मोकली वज्रना कठोटावाला हनूमानने बोलावी तेनी साथे राम पासे आवीने कहेवा लाग्यो के, "हे स्वामिन्! सर्व कपिन्नटोने विषे आ हनूमान बहु बलवान् ठे, माटे एने दूतकार्य करवा मोकलो." हनूमाने रामने प्रणाम करीने कह्युं. "आ कपि-

ज्ञने विषे अनेक सुन्नटो ने ग्तां पण सुग्रीव म्हारुं वखाण करे ने. हे स्वामिन्! हुं जनकसुता सहित लंकाने उखामी अहिं लावुं के, पुत्रादि परिवार सहित रावणने बांधी अहिं लावुं? अथवा रावणने त्यांज मारी फक्त सीताने अहिं लावुं? आपनी जेम मरजी होय तेम आज्ञा करो." रामे हर्षित थइने कह्युं. "तमारे विषे सर्व संन्नवे ने; परंतु हवणां लंका प्रत्ये जइ सीताने मलो अने एक बीजानी जाणने माटे आ म्हारी मुद्रिका तेमने आपी तेमनुं शिखामणि अहिं तत्काल लइ आवो. वली तमारे सीताने कहेवुं के, हे न्नद्रे! तमारा विरहानलथी राम पुष्पनी शय्याने अंगारानी गामीरूप माने ने. हे प्रिया! तुं म्हारा वियोगथी पोताना जीवितने त्यजीश नहि. कारण के, लक्ष्मण युद्धने विषे थोमा वखतमां रावणने मारशे."आम सीताना समाचार कही राम फरी हनूमानने कहे ने के, "हे न्नाइ! कार्यसिद्धिने माटे तत्काल त्हारो मार्ग कल्याणकारी थाउ." हनूमाने हाथ जोमी रामने कह्युं. "हे प्रन्नो! हुं ज्यां सुधीमां लंका प्रत्ये जइ अहिं पाग्ो आवुं त्यां सुधीमां आपे अहिंथी बीजे क्यांइ जवुं नहि." हनूमानतुं ए वचन रामे कबुल कर्युं.

पग्ी सुन्नटोथी विंटलायेलो हनूमान पोताना वैमानमां बेसी तेजथी विराजित एवा सूर्यनी पेठे आकाश मार्गे चाल्यो. रस्तामां तेणे महेंद्र पर्वत उपर माहेंद्र नामना नगरने जोइ विचार्युं के, "आ म्हारा मातामह (मानाबाप) महेंद्र नृपतिनुं नगर ने. एणे पूर्वे म्हारी माताने घरमांथी काढी मूकी ने, माटे प्रथम एनी साथे युद्ध करुं." एम धारी हनूमाने न्नंन्ना वगामी. आम अकस्मात् रणसंग्रामनी न्नंन्नानो शब्द सांन्नली बलवंत विद्याधराधिपति महेंद्र सज्ज थइ नगरनी बहार आव्यो. युद्ध चाल्युं तेमां हनूमाने महेंद्रने जीत्यो, ते उपरथी तेनो पुत्र प्रसन्नकीर्ति युद्ध करवा लाग्यो. हनूमाने तेने पोतानो मामो धारी मार्यो नहि; परंतु फक्त कौतुकने माटे पोतानुं बल देखाम्युं अने तेने रथमां बेग्ा ग्तां पकमी लीधो. युद्ध करता एवा बलवंत महेंद्रने पण तेणे पकमयो. पग्ी हनूमाने प्रणाम करीने कह्युं. के, "हे मातामह! हुं तमारी अंजनानो पुत्र हनूमान ग्रुं. में म्हारुं बल तेमने देखामवा माटे आम कर्युं ने. हुं रामनी आज्ञाथी लंकाप्रत्ये जाउं ग्रुं. रस्ते अहिं आव्यो एटलामां तमे म्हारी माताने काढी मूकी हती ते वात याद आववाने लीधे में आ तमारी साथे वृथा महा युद्ध

करयुं छे. हे तात ! तमे म्हारो अपराध क्षमा करो अने श्री राम पासे जाउ." आवां हनूमाननां वचन सांजली प्रसन्न थयेला महेंड नूपतिये हनूमानने कह्युं. "हे वत्स ! में तने पूर्वे नामथी तो श्रवण कर्यो हतो, पण आजे त्हारुं लोकोत्तर शौर्य जोयुं, ए म्हारां म्होटां जाग्य. तुं पराक्रमथी प्रसिद्ध थयो छे. जा तुं त्हारा पतिनुं कार्य निर्विघ्नपणे पूर्ण कर." महेंड आ प्रमाणे पोताना जाणेज हनूमानने विदाय करी पोते सैन्य सहित रामनी पासे गयो.

हवे वैमानमां बेठेला हनूमाने पण आगल जतां दधिमुख द्वीपने विषे कायोत्सर्गे रहेला कोइ बे मुनियोने दीठा. वली ते मुनियोनी पासेना जागमां तेणे कोइ त्रण कन्याउने पण जोइ. ए सर्वेने दावानल फरी वलेलो होवाथी तेउ बली जवानी तैयारीमां हता. आम दावाग्निना संकटमां पमेलां ते सर्वेने जोइ हनूमाने कृपाथी मेघनी पेठे समुद्रनुं पाणी लावी ते दावाग्निने सिंचन करी दीधो. पछी तेणे ते बन्ने मुनियोने प्रणाम कर्या. कन्याउए पण मुनियोने वांद्या. पछी कन्याउए हनूमानने कह्युं के, "तमे आ बन्ने साधुउनुं तथा अमारुं दुःख क्षणमात्रमां नाश करयुं छे." हनूमाने पूछयुं. "तमे कोण छो?" तेउए कह्युं. "हे बलवंत ! अमे दधिमुख नामना पर्वतने विषे रहेला गंधर्वराज नामना नूपतिनी वनमाला पत्नीथी उत्पन्न थयेली कन्याउ छीए. अमने परणवाना हेतुथी अनेक विद्याधरो अमारा पितानी प्रार्थना करे छे. वली अंगारक नामनो विद्याधर तो अमारे विषे बहु अनुरागी थइ गयो; परंतु अमारा पिताने कोइ रुचिकर न होवाथी अमारो कोइ साथे पाणीग्रहण कराव्यो नहि. कारण पूर्वे अमारा पिताए कोइ नैमितिकने अमारा पति संबंधी पूछयुं हतुं; तो तेणे कह्युं हतुं के, जे साहसगतिने हणशे ते तमारी पुत्रीयोनो जर्तार थशे. अमारा पिताए नैमित्तिके कहेलो वर न दीठो एटले अमारा पतिनी जाण थवाने माटे तेणे अमारा सहित विद्यानुं साधन आरम्न्युं. तेमां वैरने लीधे अंगारके विघ्न करवा माटे दावानल सलगाव्यो; परंतु ते तो अमारा उपर उपकार करनारा तमोए तत्काल शमावी दीधो. जे मनोगामिनी विद्या छ मासे सिद्ध थाय छे, ते पण अमने आजे तमारा प्रजावथी सिद्ध थइ छे. एथी अमे अंधुनी स्थिति सहित रामना चित्तनो सर्व वृत्तांत जाणीए छीए. तेमज साहसगतीना मृत्युने पण जाणी लीधुं छे." पछी ते त्रणे कन्याउए हर्ष पा-

मता ठता पितानी पासे जइ पोतानो वृत्तांत कही संजलाव्यो ते उपरथी ते श्री राम पासे गयो.

पढी हनूमान आकाशमार्गे प्रयाण करी लंकाना उद्यान प्रत्ये आव्या. त्यां तेमणे उत्कट एवुं राक्षसीनुं रूप जोयुं. राक्षसीये "अरे कपि ! तुं क्यां जाय डे? निश्चे तुं हवणां म्हारा जक्षणरूप थयेलो ठे." एम कही तत्काल पोतानुं विकराल मुख पहोलुं कर्युं. हनूमाने पण हाथमां गदा लइ तेनां मुख मां प्रवेश कर्यो अने पढी क्षण मात्रमां जीर्ण वस्त्रनी पेठे तेना उदरने चीरी बहार निकल्या. राक्षसीये रचेलो कोट पण तेमणे पाद प्रहारथी तुरत तोमी नाख्यो. ते जोइ कोटनो रक्षक वज्रमुख युद्ध करवा आव्यो; तेने पण हनूमाने क्षणमात्रमां मार्यो. आथी अत्यंत क्रोधाकुल थयेली तेनी महाबलवंत लंकासुंदरी नामे स्त्री हनूमानने बोलावीने तेमनी साथे युद्ध करवा लागी. हनूमाने पण तेने युद्धरूप रंगमंमपमां नर्त्तकीनी पेठे बहु नचावी. डेवट शस्त्र क्षय थवाने लीधे युद्धथी निवृत्तेली ते कामदेव समान आकृतिवाला हनूमानने जोइ कामथी विह्वल थइ ठती हाथ जोमीने कहेवा लागी. "हे नरोत्तम ! पिताना घातथी उत्पन्न थयेला कोपने लीधेज में आपनी साथे युद्ध कर्युं ठे; परंतु पूर्वे नैमित्तिके आपने म्हारा जर्तार थवानुं कह्युं डे, माटे हवे आप पूर्वपुण्यना योगथी म्हारो पाणीग्रहण करो." पढी हनूमाने तेनो गांधर्व विवाहथी पाणीग्रहण कर्यो. पढी तेनी साथे ते रात्री क्रीमा करवामां निर्गमन करीने सवारे अनेक सुजटोथी रक्षण करायेली लंकापुरीप्रत्ये गया. त्यां तेमणे सत्कार पूर्वक विजीषणना घरप्रत्ये प्रवेश कर्यो. विजीषणे हनूमानने आववानुं कारण पूढ्युं. ते उपरथी हनूमाने कह्युं के, "हे विजो ! हुं श्री रामनो दूत हुं अने तमे आ राक्षसोना कुलमां उत्तम ठो, माटे म्हारुं कहेवुं सांजलो. तमे रावणे रोकेली सीताने ढोमावो. नहिं तो ए लक्ष्मणथी नाशज पामशो. हे महामति ! बलवान् पण लोक विरुद्ध आचरण करवाथी नाशज पामे ठे. तो तमे तमारा बंधुने तत्काल बोध पमामो." विजीषणे कह्युं. "आपे तेना संबंधमां बहु सारुं कह्युं ठे. में पण एने पूर्वे सीताने त्यजी देवानुं कह्युं हतुं; परंतु ते म्हारुं कह्युं मानतो नथी. हे बंधो ! जो आप आ वात नहि मानता हो तो हुं ते आपने क्यारेक देखामी आपीश."

पछी हनूमान त्यांथी उठीने देवरमण उद्यानमां गया. त्यां तेमणे त्रिजटा राक्षसीथी रक्षण करायेली, अशोक वृक्षनी नीचे बेठेली, अखंडित आंसुनी धाराथी विरहरूप वृक्षने सिंचन करती, वर्षाकालने विषे ग्लानी पामी गयेली कमलीनी पेठे म्लान शरीरवाली, विरह अग्निना तिखारा समान निश्वासने मूकती, भूतमंत्रनी पेठे राम नामनो जप करती, क्षीण अंगीवाली, क्षीण थइ गयेला लावण्यवाली अने पोताना कपालने विषे हाथ मूकीने अत्यंत दुःखी अवस्थामां बेठेली सीताने दीठी. सीताने आवी अवस्थामां जोइ मनमां बहु खेदातुर थयेला हनूमान विचार करवा लाग्या. “हा! आ सती आवी घोर अवस्थामां पड्या छे? में आजे पूर्वना पूण्यने लीधेज पोताना शीलथी पवित्र अंगवाली अने लावण्यथी मनोहर आकृतिवाली तेमज स्त्रीयोमां मुकुटरूप आ सीताने दीठी छे. आ महा सतीना वियोगथी राम खेद करे छे ते योग्य छे. कारण निश्चे रति अने प्रीतिनुं पण आवुं रूप नथी. आ रावणनेज धिक्कार छे! कारण आ पवित्र अंगवाली महा सतीनी इच्छा करी एणे नरकगति आपनारो पोतानो नाश वहोरी लीधो छे.” आम विचार करीने तेमणे हर्षने माटे रामना नामवाली तथा देदीप्यकांतिवाली मुद्रिका सीताना खोलामां नांखी. सीता ते मुद्रिकाने जोइ अत्यंत प्रफुल्लित मुखवाला थया. आम सीताने प्रसन्नमुखवाला जोइ त्रिजटा राक्षसी, रावणनी पासे आवी कहेवा लागी. “हे विभो! आजे हवणा सीता हर्षित देखाय छे.” तेनां आवां वचन सांभली रावण मंदोदरीने कहेवा लाग्यो के, “हे देवी! आजे पतिने त्याग करनारी सीता म्हारे विषे स्नेहवाली थइ छे, माटे तुं त्यां जइ तेने अहिं म्हारी पासे लाव. कारण एम करवाने त्हारो अवसर आव्यो छे.” पछी पतिनी आज्ञाथी देवी मंदोदरी सीतानी पासे आवीने प्रसन्नमुखवाली सीता प्रत्ये सत्वर कहेवा लागी. “हे सीता! वनेचर एवा रामने त्यजी दइ रावणरूप पतिने भज के, जेथी करीने समर्थ एवी हुं विद्याधरी पण त्हारुं दासपणुं अंगीकार करीश. त्हारा स्वरूपने लीधे रावण विस्मृतिथी पोताना योगने अने विधिने पण आचरतो नथी. वली ते हवणां त्हारा संगनी इच्छा करे छे, माटे राम पतिने विसरी जइ हृदयमां रावण पतिने धारण कर.”

आवां मंदोदरीनां वचन सांभलीने क्रोधथी आक्रोश करती एवी सीताये

कह्युं. “अरे निंदित शीलवाली ! कुमुखवाली ! अने लज्जा विनानी ! तुं मने आवुं अश्राव्य वचन केम संभलावे छे ? तुं राक्षसनी पत्नी छुं, माटे त्हारामां धर्मगुण नथी. जेनी समीपे विपत्ती आवी पहोंची छे एवो त्हारो दीन भर्ता मने शुं करवानो छे ? ते तो निश्चे लक्ष्मणना शस्त्ररूप अग्निवाला रणसंग्राममां पतंगपणुं पामशे. तुं मने त्हारुं मुख नहि बताव. त्हारा आ कुवचनथी म्हारा कर्णोने न विंध.” आ प्रमाणे सीताये धिक्कारेली मंदोदरी पोताने घेरे पाछी गइ. सीतानुं सतीपणुं प्रत्यक्ष जोइ हर्षवंत थयेला हनूमाने प्रगट थइ अने हाथ जोमीने तेने स्पष्ट आ प्रमाणे कह्युं. “हे देवी ! चिरकाल पर्यंत विजयवंता वर्तो. आजे तमारा दर्शनथी म्हारा म्होटा भाग्य. खरादि दूश्मनोने हणी हवणां श्रीराम अने लक्ष्मण किष्किंधा नगरीप्रत्ये रहेला छे. त्यां सुग्रीव अने महेंद्रादि वानर तथा विद्याधरो, उत्तम महिमावाला दशरथना पुत्रने कुल दैवतनी पेठे निरंतर सेवे छे. रामना हृदयने विषे दाह करनारो तमारा वियोगरूप अग्नि एवो स्फुरायमान थयो छे के, ते सुहृदोनां वचनरूप अमृतथी पण शांत थतो नथी. वली सारा कुलमां उत्पन्न थयेलो पुत्र जेम प्रीतिने माटे पोतानी माताना दर्शननी इच्छा करे तेम लक्ष्मण पण रात्री अने दिवस अत्यंत तमारीज स्पृहा करे छे. हे मात ! मने सुग्रीवे बोलावीने रामे तमारी संभाल लेवाने माटे अहिं मोकल्यो छे. म्हारुं नाम हनूमान छे. आ मुद्रिका रामे तमने ओंधाणीने माटे मोकली छे अने तमारो चुमामणि तेमणे मंगाव्यो छे. हुं त्यां जइश पछी बलवंत सेना सहित राम अने लक्ष्मण पोताना शत्रु रावणने मारवा माटे अहिं आवशे.” सीताये हनूमानना सामुं जोइने कह्युं. “हे नरोत्तम ! तमे कोण छो के, जे मने भर्त्तानी कल्याणकारी वार्ताथी प्रसन्न करो छो ?” हनूमाने कह्युं. “हे देवी ! पवनंजय राजानो पुत्र हनूमान ते आ हुं पोते के, जे हवणां रामनो दूत थयो छुं.” आवा रामना कुशल समाचार सांभल्या पछी हनूमानना आग्रहने लीधे सीताये वीश दहामे पारणुं कर्युं.

पछी सीताये हनूमानने कह्युं. “हे वत्स ! तुं हवे अहिंथी झट चाल्यो जा, नहिं तो तने अहिं रहेवाथी रावण विघ्न करशे.” अंजनापुत्रे हास्यपूर्वक कह्युं. “हे मात ! आप म्हारा उपर वात्सल्यपणाने लीधे कहो छो; परंतु युद्ध

करवाने तैयार थयेला म्हारी आगल ए रावण कोण मात्र छे. जो आप आज्ञा आपो तो तमने म्हारा स्कंध उपर बेसारी युद्धमां रावणने सैन्य सहित हणी श्री रामनी पासे तत्काल चाल्यो जाउं." जानकीये विस्मय पामीने कह्युं. "निश्चे तुं सत्य कहे छे. अहो ! शुं तें पराक्रमवडे पोताना प्रभु श्रीरामने तृप्ति नथी पमाड्या ? परंतु म्हारे परपुरुषनो स्पर्श करवो योग्य नथी. वली तें भर्ता रामनुं कुशल कहीने म्हारुं पूर्ण हित कर्युं छे." हनूमाने कह्युं. "एम हो. परंतु ए दुरात्मा रावणने कांइक चमत्कार तो बतावीश. कारण एने पण जाण थाय के, रामना सैनीको पण आवा बलवंत छता युद्ध करवा तैयार रहेला छे." एम कही सीताये आपेला चूडारत्नने लइ अने तेमने प्रणाम करीने पछी हनूमाने देवरमण उद्यानना सर्वे वृक्षोने वायुनी पेठे उखेडी नाखवानो आरंभ कर्यो. आम देवरमण उद्याननो नाश थतो जोइ चारे दिशाना रक्षक राक्षसो क्रोधथी हनूमानने मारवा दोड्या; परंतु हनूमाने वृक्षनी पेठे तेउने एवा मार्या के, जेथी तेउ कागडानी पेठे तुरत नाशी गया. पछी उद्यानना रक्षकोनो नाश सांभली क्रोधातुर थयेला रावणे एक हजार सुभट सहित अक्ष नामना पोताना पुत्रने मोकल्यो. अक्ष हजार योद्धाउनी साथे परवर्यो थको हनूमाननी साथे युद्ध करवा लाग्यो. युद्ध करवामां कुशल एवा हनूमानने एक छता पण ते समरांगणमां जाणे हजाररूपवाला होयनी ! एम राक्षसो देखता हता. "हनूमाने अक्षने अनेक राक्षसो सहित मार्यो." ए वात सांभली रावणपुत्र मेघनाद बहु क्रोधाकुल थयो. ज्यारे हनूमाने सर्वे सुभटोने तत्काल जीती लीधा त्यारे मेघनादपोते युद्ध करवा उठ्यो. पछी रणकर्मने विषे कुशल एवा ते बन्ने सुभटो दुर्जय एवा हाथीयोनी पेठे युद्ध करवा लाग्या. तेमां रणना मर्मने जाणनारा तथा श्रमने जीतनारा तेउ बन्ने जणा परस्पर एक बीजाना शस्त्रोनो रस्तामांज छेद करता छता शस्त्ररहित थइ गया. छेवट पोताना सर्व शस्त्रो नाश थवाथी क्रोधातुर थयेला वीर मेघनादे नागपासवडे हनूमानने गाढ बांधी लीधा. जो के हनूमान ते नागपासना बंधनने त्रोडवामां समर्थ हता तो पण रावणनी सभामां पोतानुं पराक्रम देखाडवाना हेतुथी तेमणे ते पाशो तोड्या नहि. पछी जेनो विजय थयो छे एवा मेघनादे बंधन करेला हनूमानने सुभटोनी पासे रावणनी सभामां बो-

लाव्या. त्यां रावणे तिरस्कार सहित हनूमानने कह्युं. " अरे कपि ! तें आ शुं कर्युं के, जे मने त्यजी दइने वनेचर एवा रामनो आश्रय कर्यो? ए राम तो राज्यथी भ्रष्ट थयेलो छे. तो पछी तेने राज्य शी रीते आपशे? कारण जे पोते मूंगो होय ते बीजाने शी रीते बोलता शीखवे ? तुं पोते दूत कार्य करवा माटे आव्यो छे, तेथी तुं पोताना तेजने नाश करे छे. कारण कयो पुरुष सुतेला सिंहनी केशवाली खेंचे ?" हनूमाने कह्युं. " अरे दुर्बुद्धि दशानन ! में क्यारे त्हारा चरणनी सेवा करवानी प्रतिज्ञा करी हती ते तो केहे? पूर्वे तुं न्यायवंत हतो; तेथी शत्रुना संकटमां पमेला त्हारुं में रक्षण करेलुं छे; परंतु हवणां तुं भ्रष्ट प्रतिज्ञावालो थयेलो होवाथी सहाय करवाने योग्य नथी. वनेचर एवाय पण नीतिमार्गने विषे रहेला दशरथ पुत्र सेवा करवा योग्य छे अने परस्त्रीनुं हरण करवामां चित्तवाला त्हारी साथे भाषण करवुं पण योग्य नथी. तें सीतानुं हरण कर्युं ए बहु मूर्खपणुं कर्युं छे, जेथी तुं सर्व प्रकारे पोताना प्राणथी पण रुष्ट थयेलो छे. अरे ! राम तो दूर रह्या; परंतु रुष्ट थयेला लक्ष्मणे प्रहार करवा आरंभेला तने बचाववा कयो मूर्ख आवी शके तेम छे. हजु पण रामने जानकी अर्पण कर तो त्हारो अर्थ नाश थशे नहि. कारण एमणे छोमी दीधेलोज तुं केटलोक काल जीवी शकीश. " आवा हनूमानना वचन सांभली क्रोधथी भ्रकुटीने चमावी नेत्रने पहोला करता रावणे हुंकार शब्द पूर्वक हनूमानने कह्युं. "अरे अधम वानर ! निश्चे तुं मरवानी इच्छाथीज अहिं आव्यो देखाय छे. दुष्ट भाषण करनारा एवा त्हारुं मस्तक हवणां आ म्हारा खड्गवती छेदी नाखुं; परंतु तुं दूत थयो छे. नीतिमां दूतने हणवानी ना केहेली छे, एथीज हे शठ ! हुं तने जीवतो मूकुं छुं."आम हनूमानने कही वली तेणे पोताना सेवकोने कह्युं के,"हे रक्षको ! आने माथुं मुंमवा पूर्वक गधेमा उपर बेसारी लंकानी अंदर फेरवी अने लोकोनी समक्ष रामना पक्षनुं फल देखामी म्हारी नगरीथी बहार काढी मूको. " रावणनां आवां वचनथी अत्यंत क्रोधातुर थयेला पवनंजय राजपुत्र हनूमाने बलथी पोतानुं शरीर कंपावता तत्काल नागपासना बंधनोने तोमी नाख्या अने " अरे! तुं म्हारी आ प्रमाणे विमंबना करे छे ? " एम कही विजलीना गर्जारवनी पेठे आकाशमां उछली महा तेजवाला तेमणे वज्रसमान पोताना पादप्रहारथी रावण मस्तक उपर रहेला मणिवाला मुकुटोने तेना पराक्रमनी साथेज

कुंन्नारना वासणनी पेठे चूर्ण करी नाख्या. " अरे सुन्नटो ! पकमो ! पकमो !! एने मारो ! मारो ! ! " एम रावण कहेवा लाग्यो एटलामां तो हनूमाने पाग आकाशमां ञबली पाटुथी लंकाना किल्लाने, मंदिरोने अने सुन्नटो समूहोने खंम खंम करी नाख्या. पबी तेजना समुद्ररूप अने अखंमीत गतिवाला हनूमान तत्काल रामादिकना जोता ग्तां तुरत रामना सैन्यप्रत्ये आव्या. त्यां तेमणे सीतानो चूमामणि रामना हस्तने विषे मूकी प्रणाम कर्या. रामे तेने हर्षथी पूग्युं. " हे हनूमान ? तमे न्नले आव्या. देवी कुशल गे ? तमने मार्गने विषे कोइए रोक्या तो नथी ? आम रामना पूग्वा ऊपरथी हनूमाने हर्ष पूर्वक तेमने कह्युं.

हे नाथ ! हुं आपना चरणने नमस्कार करी अहिंथी चाल्यो अने अनुक्रमे लंकामां ज्यां देवरमण ऊद्याननें विषे सीता हता त्यां गयो. में तेमने आपनी मुद्रिका आपीने कुशल वार्ता कही; तेथी ते जानकी बहु आनंद पाम्या. तमारा नाम मंत्रना जापथी पवित्र एवा सीताने में ते दिवसे बहु आग्रहथी विंश दहामे पारणुं कराव्युं. हे स्वामिन् ! त्यार पबी तमारा प्रसादथी चूमामणिने लइ, अनेक राक्षसो सहित अक्षपुत्रने हणी, लंकाना किल्लाने तोमी सर्वमे अत्यंत क्रोध्न ऊपजावी हुं अहिं आपना चरणकमलनी पासे कुशलपणे आव्यो ग्रुं. " हनूमंत वीरनां आवां चमत्कारी चरित्रने सांन्नली हर्षित थयेला लक्ष्मण विगेरे तेनी बहु प्रशंसा करवा लाग्या. म्होटी विरह व्यथारूप सर्पणना क्लेशने नाश करवामां समर्थ ते राम जाणे निश्चे पोतानी प्रियना संयोगनी शुद्धिने अर्थे सत्यकारपणुंज होयनी ! एवा जनक राजपुत्रीये मोकलेला चूमामणि रत्नने पोताना हृदयमां धारण करीने दीर्घकाल सुधी बहु आनंद पाम्या.

इति श्री पद्म चरित्रे विरोधादिसंबंधेहनूमद्दूतवादानुवर्णानो नाम षष्टः प्रस्तावः ॥ ६ ॥

पबी रावणनो घात करवाने प्रतिज्ञा करनारा लक्ष्मणे श्री राम सहित सारा दिवसे शुन्न मुहूर्तमां प्रयाण कर्युं. ते वखते रामना सैन्यने विषे विराध सहित सुग्रीव, न्नामंमल, नील, जांबुवान हनूमान अने महेंड विगेरे महा बलवंत विद्याधरो एकग थया हता. बलवंत खेचरोना वाहन हाथीयो, घोमाऊ तेमज पालाऊथी पूर्ण एवा असंख्य सैन्यथी अने तेऊना वैमानना समूहथी

आकाश तथा सूर्यनुं निर्मल प्रतिबिंब आच्छादित थइ गयुं. शीघ्र प्रयाणथी नूमीने उल्लंघन करी महा समुद्रनी उपर विचरता विद्याधरो अनुक्रमे असंख्य सैन्य सहित वेलंधर नामना नगरप्रत्ये आवी पहोच्या. आ नगरमां त्यांना बलवंत समुद्र अने सेन नामना बे राजाउ रामनी साथे युद्ध करवा आव्या; परंतु तेमने तो विद्याधरोना अधिपति एवा नलनीले तत्काल बांधी लीधा. पछी रामनी आज्ञा पालवामां तत्पर थयेला ते नम्र एवा बन्ने राजाउने श्री रामे तेमनां राज्यने विषे स्थाप्या. कह्युं छे के–सत् पुरुषोनो म्होटो प्रसाद तत्काल सफल थाय छे. समुद्र नूपतिये पोतानी उत्तम रूपवती त्रण पुत्रीयो हर्षपूर्वक लक्ष्मणने आपी. कह्युं छे के–सद्गुणथी शोभता पुरुषनुं गौरव कोण नथी करतुं ? अर्थात् सर्व करे छे. पछी ते बन्ने राजाउना अति आग्रहने लीधे अति गौरवथी राम आगल प्रयाण करवामां उत्सुक छतां एक रात्री त्यां रह्या. प्रभाते सकल विश्वने पूरी देनारा प्रयाणना वाजींत्रोना शब्दपूर्वक तेउए प्रयाण कर्युं अने अनुक्रमे सुवेल पर्वत पासे आवी पहोच्या. त्यां श्री रामे सुवेलनाथने पण पोताने स्वाधिन कर्यो. त्यां पण तेना आग्रहथी एक रात्री रही सेना सहित राम आगल चाल्या अने लंकाद्वीपनी पासेना हंसद्वीपनी पासे आवी पहोच्या. त्यांना राजा हंसरथने जीती सर्व विद्याधरोथी सेवन करायेला अने शत्रुरूप अंधकारने नाश करवामां सूर्यरूप श्री राम निर्भयपणे त्यां रह्या. आ वखते लंकाना रहीशो पण पोताना उपर चमाइ करी आवेला दशरथ पुत्र रामने सैन्य सहित जोइ क्षोभ पाम्या तेमज अति बलिष्टताने लीधे गर्व धारण करनारो अने दूर्गमां रहेलो रावण पण क्षोभ पाम्यो. पछी रावणनी सेवा करवामां तत्पर एवा प्रहस्त, हस्त, मारीचि अने सारण प्रमुख अनेक विद्याधर पतियो युद्ध करवाने तैयार थया. महा प्रचंम क्रोधथी सिंहासनने कंपावता एवा अने युद्ध क्रीमामां चपल एवा रावणे पण तत्काल संग्रामनो पट्टह वगमाव्यो. आ वखते विचक्षण अने विवेकवान् बिभीषणे आवीने आदरपूर्वक रावणने कह्युं. "हे भाइ ! फरीथी स्थीर मनवालो थइ पोताना हितने माटे म्हारुं एकवार वचन सांभल. तें प्रथमथीज विचार कर्या विना परस्त्री हरणरूप पापकर्म कर्युं छे एज पोताना वंशने मलीन करनारुं, पोतानो अंत करनारुं अने भवांतरे निश्चे दूर्गति आपनारुं छे. बलवंत राम पोतानी प्राणप्रिया सीताने पाछी

वालवाने अहिं आव्या छे. ते तने थोडा कालमां गरुड जेम सर्पनो नाश करे तेम नाश पमाडशे. जो के देवादिकथी न जीताय एवा अने रघुवंशमां उत्पन्न थयेला ते राम लक्ष्मण वीर तो दूर रह्या; परंतु त्हाराथी तेमनो एक सेवक हनूमान पण जीतावो अशक्य थयो. हे बंधो ! तें पोताना वंशना विनाशने माटे ते जनक राज्यपुत्रीने अहिं लावेली देखाय छे. तुं पोतानी कुबुद्धिथी स्वर्ग समान पृथ्वीनां आभूषणरूप पोताना राज्यने वृथा न हारी जा." ते वखते महा मेघना समान शब्दवालो अने मंदराचलना समान धैर्यवालो मेघनाद बोल्यो. "अरे बिभीषण ! तुं शत्रुना समूहने देखवा मात्रथीज शा माटे बीकणपणुं धारे छे ? कारण तुं देव, दानव अने मनुष्योथी निरंतर न जीती शकाय एवा पिताश्री रावण राजाने जाणता छतां पण नपुंसकपणाथी अमारा सर्वेनुं वृथा जडपणुं देखाडी आपे छे. वली हे मूढ ! अमारा पराक्रमोने जाणता छतां तुं सर्व प्रकारना विद्याबलथी रहित अने वनेचर एवा ए राम लक्ष्मणने वृथा वखाणतो छतो शुं लज्जा नथी पामतो ? निश्चे त्हारा आवा विचारथी धीरजतानो लोप करनारो तुंज प्रथम शत्रुरूप छे." आवां रावणपुत्र मेघनादनां वचन सांभली अत्यंत क्रोध पामेला बिभीषणे कह्युं.

"अरे दुर्मुख ! तुंज शत्रुरूप छे अने पोताना वंशने विषे विनाशनुं कारण थयो छे. कारण जे तुं पोताना बंधुजए कहेलुं हिताहित जाणी शकतो नथी. वली कामातुर एवो त्हारो पिता अने तुं बन्ने जणा मंद छो, माटे मूर्खना शिरोमणि एवा तमे बन्ने जणा दुर्जय एवा शत्रुरूप समुद्रने विषे पडशो." बिभीषणनां आवां वचन सांभली तीव्रकोपरूप अग्निथी तप्त थयेला आत्मावालो रावण सिंहासनथी उठी नीतिना वनरूप बिभीषणने मारवा माटे दोड्यो. पछी क्रोधथी विकराल थयेलो बिभीषण पण एक म्होटा स्तंभने उपाडी तत्काल रावणने मारवा माटे सामो दोड्यो. कह्युं छे के—जे पोताना बंधुने मारवानुं धारे ते बंधु छतां शत्रुज समजवो. आ वखते तत्काल कुंभकर्णे आवीने ते बन्नेने निवार्या. पछी रावणे कठोर वचनथी भयंकर कोपवाला बिभीषणने कह्युं. "अरे शत्रुना पक्षपाति ! तुं म्हारा राज्यथी झट चाल्यो जा ! चाल्यो जा !" आम रावणे तिरस्कार करेलो बिभीषण तत्काल रामना सैन्यप्रत्ये गयो, ज्यारे बिभीषण रामना सैन्यप्रत्ये गयो त्यारे तेनी पा-

उल उग्र एवा विद्याधरोनी अने राक्षसोनी अक्षोहिणी प्रमाण बहु सेना जेम हाथीनी पाछल उत्तम हाथणीयो जाय तेम गइ. आवता एवा विभीषणने जोइ रामना सेवको प्रथम तो क्षोभ पामी गया; परंतु एटलामां तो विभीषणे पोतानुं आववानुं रामने जणाववा माटे सेवक मोकल्यो. सेवके श्री रामने विभीषणना आववानी खबर आपी. आ वखते ते सेवकने जोइ विश्वासपात्र थइ गयेलुं सर्व वानरोनुं सैन्य रामने कहेवा लाग्युं.

"आ क्रूर हृदयवाला राक्षसो दंभयुक्त होय छे, माटे प्रथम तेनी भाषण विगेरे चिन्होथी परीक्षा करीने पछी तेने आपनी पासे बेसारवो." सेवकोनां आवां वचन सांभली दूते कह्युं. "ए विभीषण महा विद्याने धारण करनारो, उत्तम धर्मवान्, नीतिमां कुशल अने विनीत छे. एणे सीताने छोमाववा माटे रावणने बहु बहु कह्युं. ए उपरथी रावणे क्रोध पामी तेने काढी मूक्यो छे, माटे आपना शरणे आवेलो छे." आवां सेवकनां वचन सांभली रामे तेने द्वारपाल मारफते पोतानी सभामां बोलाव्यो. विभीषणे सभामां आवी रामना चरणने विषे नमस्कार कर्या एटले रामे तेने तत्काल बन्ने भुजाथी आलिंगन कर्युं. आ वखते रामना वक्षस्थलने विषे जाणे सुंदर नीति अने तत्वनो मेलाप थयो होयनी ! एम तेउ बन्ने जणा शोभवा लाग्या. पछी विभीषणे हाथ जोमी श्री रामने कह्युं. "हे प्रभो ! अन्यायमार्गे रहेला बंधु रावणने त्यजी दइ न्यायमार्गे रहेला आप महाराजानी सेवा करवाने हुं आवेलो छुं; माटे पोताना सेवकरूप मने अंगीकार करो." विभीषणनां आवां वचनथी अति प्रसन्न थयेला रामे कह्युं. "हुं तने लंकानुं अधिपतिपणुं आपीश." कह्युं छे के–तत्काल प्रसन्न थयेला चित्तवाला म्होटा पुरुषो शुं नथी आपता? अर्थात् सर्व वस्तु आपे छे.

पछी राम ते हंसद्वीपमां आठ दिवस रही बहु धूलथी आकाशने ढांकी देता सैन्य सहित आगल चाल्या. अनुक्रमे तेमणे लंकापुरीना सीमामे आवी विश योजन प्रमाण भूमीने रोकी अगण्य एवा सैन्यना हाथी, घोमा अने पायदलना कोटि शब्दथी दिशाउने पूर्ण करता पमाव कर्यो. आ वखते रावणना सैन्यने विषे पण रोमांचित थयेला हस्त, प्रहस्त, शुक अने सारण विगेरे अनेक मुख्य राजाउ शत्रु भूपतियोनी साथे युद्ध करवा तैयार थया, रावण

पण अति गाढ अंतवर्लथी वज्र समान कवचने धारण करतो दिव्य शस्त्रथी पूर्ण एवा रथ उपर बेठो. महा श्रेष्ट वीर्यना कुंभ समान अने शत्रुनी सेनारूप लतावनने उखेडी नाखवाने कुवाडारूप कुंभकर्ण पण पोताना भाइनी पाछल तैयार थयो. रणसंग्रामरूप महासमुद्रने मथन करवाने मंदराचल समान पराक्रमवालो मेघनाद पोताना न्हानाभाइ मेघवाहन सहित निरंतर रावणना बन्ने पडखाने सेववा लाग्यो. वली सुकुमार देहवाला अने पवित्र एवा रावणना बीजा हजारो पुत्रो युद्धमां पाषाणनी पेठे अति कठोर अंगवाला थइ तत्काल पितानी पाछल चाल्या. जाणे हालता चालता एवा पर्वतोज होयनी ! एवा बखतरवाला हाथी, घोडाउ, शस्त्रथी भरपुर एवा रथो अने सर्व प्रकारनां अस्त्रोने धारण करनारा पालाउ तैयार थया. वृद्धि पामेला शौर्यवालो सेनापति आ प्रमाणे सेना तैयार करी रावणनी पाछल चाल्यो. कह्युं छे के—उत्तम सेवको धणीनी आज्ञानी वाट जोइ रहेता नथी.

पछी विद्याधरोनी अने राक्षसोनी चार हजार [1]अक्षौहिणी सेना सहित युद्धना अर्थी एवा रावणे पोताना नगरथी निकली पच्चास योजन भूमी उपर पडाव कर्यो. बन्ने सैन्यने विषे निर्भय एवा वार्जीत्रोना कोटी शब्दो विश्वने पूरीदेवा लाग्या. पछी प्रभाते उदयाचल पर्वतना शिखर उपर ए बन्ने सैन्यना म्होटा रणसंग्रामने जोवा माटेज होयनी ! एम सुभटरूप नटोने नचाववा माटे पोताना किरणरूप हाथने विस्तार करतो शिघ्रगतिवालो सूर्य उदय पाम्यो. ते वखते बन्ने सैन्यो पोत पोताना भूपतिनी आज्ञाथी परस्पर सन्मुख उभा रही जेम लोकने विषे मेघो जल वर्षावे तेम बाणोनो वर्षाद वरसाववा लाग्या. बन्ने सेनाना अग्रभागने विषे रहेला अने जेमने रोमांच वृद्धि पाम्यो हतो एवा वीर पुरुषोनो समूह, जेम सूक्ष्म बुद्धिवाला नविन अभ्यासकोनो समूह स्वर अने व्यंजनने भणवा तैयार थाय तेम युद्धकरवाने तैयार थयो. तेमां सर्व प्रकारना संग्रामथी विजय मेलवनारा अने न जिती शकाय एवा कपिराजवीरोथी विषम एवुं पण राक्षसोनुं सैन्य जेम वायुथी मेघनी पंक्तिनो नाश थाय एम नाशी गयुं. आम पोताना सैन्यनो पराभव जोइ प्रहस्त अने

---

१ अक्षोहिणी प्रमाण. २१८७० हाथी, २१८७० रथ, ६५६१० घोडा, १०९३५० पुरुष, ए एक अक्षोहिणी कहेवाय छे.

हस्त विगेरे उद्धत पराक्रमवाला राक्षसोना अधिपतियो क्रोधथी तत्काल वानरोना सुभटोने मारवा माटे दोम्या; परंतु नलवानरे हस्तने अने नीलवानरे प्रहस्तने रोकी राख्या, जेथी शत्रुउनो नाश करवामां लक्ष राखनारा बन्ने तरफना सुभटो एकबीजाने प्रहार देवा लाग्या. घणो वखत रणभूमिमां युद्ध कर्या पछी नलवानरे हस्तने अने नीलवानरे प्रहस्तने मारी नाख्या. कारण विजयलक्ष्मी तो पूर्वना पुण्ययोगे मले छे. आ अवसरे देवताउए नलनील उपर दिव्य एवां पुष्पोनी वृष्टी करी ते जाणे सबल एवा शत्रुउना घातथी तेमना उपर प्रसादरूप प्रभुनी दृष्टिज पमी न होय ? एम देखावा लागी. पछी हस्त अने प्रहस्तना नाशथी क्रोधाकुल थयेला बीभत्स, मारीच, शुक, अर्क, सारण अने सिंहरथ प्रमुख विद्याधरो तुरत वानरना सुभटोने मारवा माटे दोम्या. तेमने जोइने सर्व प्रकारनां दिव्य आयुधवाला रथमां बेठेला, संताप अने विघ्नादि महा बलवंत वानर योद्धाउ ते राक्षसोनी साथे युद्ध करवा आव्या. तेउनुं परस्पर युद्ध चाल्युं तेमां वानर सुभटोए केटलाक राक्षसोना सुभटोने जीत्या अने राक्षसोना सुभटोए केटलाक वानरोना सुभटोने जीत्या. आवा तेमना घोर युद्धने जोवा असमर्थ एवो सूर्य आ वखते अस्त पामी गयो; तेथी बन्ने सेना वेला विनाना समुद्रनी पेठे पोते पोताने स्थानके गइ. वीरपुरुषो रणभूमिमां हणायेला पोताना अथवा शत्रुना सुभटोनी शोध करवा लाग्या. फरी बीजे दिवस अति उग्र एवा अंधकारना समूहने नाश करवा माटे उदय पामेला प्रतापवान् सूर्यनी पेठे रणसंग्रामनी क्रीमामां कौतुकी एवो रावण पोते युद्ध करवाने तैयार थयो अने असंख्य सैन्यथी व्याप्त एवो ते क्रोध करी शत्रुना लक्ष जीवोनो घात करवा माटे पोताना महावेगवाला रथमां बेसी तत्काल रणभूमीमां आव्यो. आ वखते कल्पांत कालना समुद्रनी पेठे पोताना सर्व सैन्यथी पृथ्वीने पूरीदेता अने शत्रुना सैन्यनो नाश करवानी इच्छावाला महा बलवंत राम पण रणभूमीमां आव्या. सवारमां प्रथम बन्ने तरफना योद्धाउनुं खरूं युद्ध चाल्युं. कारण वादियोने सद्युक्तिनी श्रेणीरूप बाणना वरसादथी वाद थयो ? आ वखते रावणे कल्पांतकालना अग्नि समान पोतानी दृष्टिथी अने हुंकार शब्दथी शत्रुना सैन्यने मारवा माटे पोताना सुभटोने एवा प्रेर्या के, तेउए रामना सैन्यने क्षणमात्रमां मान विनाना

महा यंत्रथी म्होटा किल्लानी पेठे नाश करी नाख्युं. आम पोतानी सेनानो पराभव जोइ कोपथी कराल नेत्रवालो सुग्रीव जेटलामां पोताना शस्त्रथी पूर्ण एवा रथ उपर बेसी तत्काल जवानी तैयारी करे छे तेटलामां "हे महा उग्र शौर्यवाला कपीश्वर सुग्रीव! हुं विद्यमान छतां आप अहिंज रहो" एम कहीने महा दुःसह पराक्रमवाला अने बुद्धिवान् हनूमान राक्षसनी सेना तरफ चाल्या एटले तेमने अनेक शस्त्रधारी एवा माल नामना दैत्ये रोक्या. ते उपरथी ते बन्नेनुं शस्त्र समूहना वर्षादथी विजलीनी पेठे उद्योत करनारुं घोर युद्ध थयुं. अंते हनूमाने ते माल दानवने युद्धमां शस्त्र रहित करीने कह्युं के, "हे राक्षसपति ! तुं आ रणयुद्धथी चाल्यो जा. कारण फक्त तने हणवाथी म्हारी बहादुरी शी ? अने म्हारा भुजनुं बल शुं ?" आम हनूमान कहेता हता एटलामां तो तेमना सामो वीरमानी एवो वज्रोदर नामे राक्षस आवीने कहेवा लाग्यो. "अरे ! जो त्हारी शक्ति होय तो हवणां म्हारी साथे युद्ध कर; विलंब जवा दे." वज्रोदरनां आवां वचन सांभली अंजनीपुत्र हनूमान तत्काल युद्ध करवा लाग्या. कारण के, निर्भय एवो सिंह शुं हाथीना तिरस्कारने सहन करे खरो ? पछी हनूमाने बहु वखत तेनी साथे युद्धक्रीडा करीने छेवट तेने शस्त्र विनानो करीने मारी नाख्यो. कारण तेवा हनूमान समान सुभटनी आगल बीजो कयो टकी शके ? वज्रोदरनां मृत्युने सांभली क्रोध पामेला अने मदथी अंध थयेला जांबुमाली विगेरे रावणना पुत्रोए कोपांध एवा हनूमानने घेरो घाल्यो. ते वखते हनूमाने भोगलवडे जांबुमालीने एवो मार्यो के, जेथी ते तेवा प्रहारने लीधे व्याकुल बन्यो छतो मूर्छाथी तत्काल वृक्षनी पेठे पृथ्वी उपर पड्यो. तेने पड्यो जोइ महोदरादि अनेक राक्षसो आवी पहोंच्या, पण यमना समान आकृतिवाला हनूमाने तेमने हत प्रहत करी नाख्या. अहो ! पवनंजयपुत्र समान कोइ बलोत्कट सुभट नथी. कारण जे महा बलवंत हनूमान रावणना असंख्य सैन्यने विषे एकलोज युद्ध करवाने समर्थ थयो.

आम हनूमाने निर्दयपणे अनेक मानवंत राक्षसोना सुभटोने हणेला जोइ क्रोधथी आकुल व्याकुल थयेलो कुंभकर्ण स्थूल रूपने धारण करी वानरोने त्रास पमाडतो रणभूमि तरफ दोड्यो. कुंभकर्ण रणभूमिमां आव्यो तेने जोइ वानरो "आ जीतवाने अशक्य छे." एम जाणी रणभूमि मूकी ग-

रूमथी त्रास पामी नासी जता सर्पोनी पेठे नासी जवा लाग्या. कुंनकर्ण पण केटलाकने बन्ने हाथथी, केटलाकने बन्ने पगथी, केटलाकने ढींचण अने कोणीवती तत्काल मारवा लाग्यो. आ वखते तेनुं बल सहन करवाने कोइ समर्थ थयुं नहि. पछी युद्धने विषे कुंनकर्ण गाढ क्रोधथी पोतानी सेनारूप समुद्रने मथन करतो जोइ उत्पन्न थयेला महा कोपवालो सुग्रीव तुरत सर्व शत्रुउनो नाश करवा माटे तैयार थयो. महेंद्र अने नामंमल विगेरे अनेक नूपतियो तथा बहु वानराधिपतियो कुंनकर्णनी साथे युद्ध करवा लाग्या; परंतु ते कोइथी जीतावाने शक्य थयो नहि. हवे कुंनकर्णे पोताना शस्त्रथी शत्रुउने अजय्य मानी अवस्वापिनी विद्या मूकी, तेथी वानरोनी सेना दिवसे पण निद्रायुक्त थइ गइ. आम पोतानी सेनाने निद्रायुक्त जोइ सुग्रीवे तत्काल अवबोधिनी विद्यानुं स्मरण कर्युं; तेथी ते सेना तुरत जागती थइ. "पछी अरे निर्लज कुंनकर्ण! तुं क्यां जाय छे?" एम केहेता अने अवस्वापिनी निद्राथी उत्पन्न थयेला क्रोधवाला वानरो कुंनकर्णनी साथे युद्ध करवा लाग्या. सुनटोमां मुख्य एवा सुग्रीवे गदावती कुंनकर्णना रथने पापमनी पेठे क्षणमात्रमां नागी नाख्यो अने तेना घोमाउने तथा सारथीने मारी नाख्या. आम थवाथी तो अत्यंत क्रोधाकुल थयेलो कुंनकर्ण हाथमां दुःसह एवी नोगल लइ तुरत सुग्रीवने मारवा माटे दोम्यो; परंतु रस्तामां ते बहु वायुथी जेम मेघ रोकाइ जाय एम बहु विद्याधरोथी रोकाइ गयो. अनेक वानरो तेने रोकवा माटे म्होटी शीलाउ फेंकवा लाग्या; पण तेने तो ते कुंनकर्ण पोतानी नोगलवती चूर्ण करी नाखवा लाग्यो. फरी सुग्रीवे विद्युद्दंम नामे महा शस्त्र फेंक्युं, ते कुंनकर्णना मस्तक उपर घोर एवी विजलीनी पेठे पम्युं. आ शस्त्रना प्रहारथी मूर्छाने वश्य थवाने लीधे लोपाइ गयेला चैतन्यवाला अने क्रोधथी रक्त थइ गयेला यमरूप तेणे सुग्रीवना रथनो नाश करवा माटे पोतानी सेनाने आगल चलावी.

हवे अहिं लंकामां कुंनकर्णने मूर्छा पामेलो सांनली अने रावणने युद्ध करवा जतो जोइ पुत्र इंद्रजित रावणने केहेवा लाग्यो के, "हे तात! वानरोने विषे अतुल नुजबलवाला तमारे आ प्रयास शो? हे पिता! आप अहिंज रहो. हुं ए सर्व शत्रुउनो नाश करुं छुं." आम कही मेघनाद सहित ते इंद्रजित क्रोधथी कंपतो छतो तत्काल शत्रुना सैन्य प्रत्ये गयो. संहार करता अने यम-

ना समान कांतिवाला दुर्जय रावणपुत्रने जोइ वानरो युद्धने त्यजी दइ बन्ने बाजुए नाशी जवा लाग्या. पछी रावणपुत्र इंद्रजित नासी जता एवा वानरोने केहेवा लाग्यो के, "अहो ! तमे केम नासी जाओ छो ? हुं युद्ध नहि करनारा एवा तमोने मारीश नहि. कारण तमने मारवाथी म्हारो पुरुषार्थ श्यो ?" जेमणे पोताना भुजबलथी सर्व योद्धाओनो नाश करी नाख्यो छे अने जेमणे अगण्य एवा म्हारा पिताना सैन्यने जेम सिंह हाथीना समूहनो नाश करे तेम क्षणमात्रमां नाश कर्यो छे ते सुग्रीव अने हनूमान विगेरे श्रेष्ठ कपीश्वरो क्यां गया ? " आम बोलता अने सेनानी अंदर प्रवेश करता तेने प्रबल पराक्रमी सुग्रीवे तत्काल आवीने घेरी लीधो तथा भामंडले तेना न्हाना भाइने घेरी लीधो. पछी चारे महा योद्धाओए परस्पर महा दारुण युद्ध कर्यो. तेमां खड्गथी अने बाणोथी युद्धमा अनेक शत्रुओ मार्या गया. आ वखते तेओनुं अनर्गल शौर्य तथा भुजबल जोइ विजय लक्ष्मीने पण "हवे मारे कोने वरवुं ?" एवो शंसय थइ पड्यो. छेवट दीर्घकाल पर्यंत युद्ध करीने पछी इंद्रजिते सुग्रीवने नागपासवडे बांधी लीधो तेमज महाबलवंत एवा मेघनादे भामंडलने पण बंधन कर्यो. वली तेओने पाशथी एवा बंधन कर्या के, तेओ बलवंत छतां पण श्वास लेवाने समर्थ थया नहि. अरे ! हाथ पगने फेरववुं तो दूर रह्युं, पण नेत्रनुं फरकवुं पण बंध कर्युं. आ वखते कुंभकर्णने मूर्छा वली; तेथी ते कोपथी व्याकुल थयो छतो रणभूमिमां आव्यो. पछी तेणे गदावडे हनूमानने एवुं ताडन कर्युं के, जेथी पवनंजयपुत्र हनूमान तत्काल मूर्छा पाम्यो. पछी कुंभकर्णे महा भोगल समान पोताना बन्ने हाथथी तुरत मुर्छित एवा महावीर हनूमानने उपाडी पोतानी वगलमां राख्यो.

आम पोताना सुभटोने शत्रुना हाथमां गयेला जोइ बिभीषणे रामने कह्युं. "हे नाथ ! आ तमारा सुग्रीव, हनूमान अने भामंडल त्रणे समर्थ सुभटोने शत्रुओए पकड्या छे, माटे ज्यांसुधीमां तेओ तेमने लंकाप्रत्ये न लइ जाय त्यांसुधीमां हुं आपनी आज्ञाथी तेओने छोडावुं." एम कहीने बिभीषण तुरत कुंभकर्णनी पासे गयो. पछी ज्यारे कुंभकर्णे युद्ध करवा पोताना हाथ उंचा कर्या, ते वखते चैतन्यवंत एवा हनूमान जेम सिंचाणाना मुखथी चकली पडी जाय तेम नीचे नीकली पड्या. पछी बिभीषणे सुग्रीव तथा भामंडलने

छोमाववा माटे रावणना पुत्र तरफ प्रयाण कर्युं. ते वखते पोतानी तरफ उतावले आवता विभीषणने जोइ रावणपुत्रो विचारवा लाग्या. "जो के शत्रुना पक्षमां गयेलो विभीषण अमारी साथे युद्ध करवा आवे छे, तो पण म्होटा कुलीन एवा अमारे ते पूज्यनी साथे शी रीते युद्ध करवुं? माटे हवणां आपणे युद्ध मार्गथी निवृत्ति पामवुं अने आ शत्रुओ पण मृत्यु पामशे. वली अत्यारे काको अत्यंत रुष्ट थयेला छे, माटे आपणे जता रहीए." आम विचार करी जेटलामां ते बन्ने जणा युद्धथी निवृत्ति पाम्या तेटलामां विभीषण, भामंमल तथा सुग्रीवनी पासे आवी पहोच्यो. राम पण तुरत त्यां आव्या. नागपासना बंधनथी पीमा पामता ते बन्नेने जोइ राम लक्ष्मण बहु खेद पाम्या. पछी जेणे पूर्वे वरदान आप्युं हतुं ते त्रण नेत्रवाला सुपर्ण (गरुम) देवनुं रामे स्मरण कर्युं; तेथी ते देवताए तत्काल त्यां आवीने शत्रुओने त्रास करनारी मृगेंद्रनाद नामनी अपूर्व विद्या तथा हलमुशल रामने आप्यां. वली तेणे लक्ष्मणने पण विद्युन्मुख नामनी म्होटी गदा, गरुमयुक्त ध्वजावालो शस्त्रथी पूर्ण एवो दिव्यरथ, गारुमी विद्या अने देदिप्यमान एवां दिव्य शस्त्रो आप्यां. पछी ते देव राम लक्ष्मणनां चित्तने प्रसन्न करी पोते संतुष्ट थयो छतो पोताने स्थानके गयो. वली लक्ष्मणने देवताए आपेला रथनी ध्वजा उपर रहेला गरुमनी दृष्टि मात्रथी क्षणमात्रमां सुग्रीव तथा भामंमलना तुटी गयेला नागपास बंधनथी श्री रामनी सेनाने विषे जय जय शब्द थवा लाग्यो. पछी जाणे बन्ने सैन्यना सुभटोने विश्रांती आपवा माटेज होयनी! एम सूर्य अस्त थयो एटले बन्ने सैन्य पोतपोताने स्थाने जइ पोतपोताना सुभटोने उपचार करवा लाग्या.

पछी प्रभाते फरी जाणे बन्ने सैन्यनी युद्धक्रीमा जोवाने माटेज होयनी! एम सूर्य उदय पाम्यो एटले वली बन्ने सैन्यनुं दारुण युद्ध चाल्युं. आ वखते ते महा रणसंग्राममां अग्रेसर एवा सुग्रीव अने भामंमल विगेरे मुख्य नृपतियोथी राक्षसोनुं सर्व सैन्य क्षणमात्रमां नाशी गयुं. कारण के, विजय तो पुण्यवाननोज होय छे. पोतानी सेनानो भंग जोइ अत्यंत आकुल थयेलो, सज्ज करेला दिव्य आयुधवालो अने शत्रुनो वध करवा माटे बहु स्पृहा करनारो रावण रणभूमिमां आव्यो. ते वखते काल समान आकृतिवाला रावणना सन्मुख उभो रही युद्ध करे एवो कोइ समर्थ सुभट रामना सैन्यने विषे नहोतो, पोतानी

सेनानो वध करता एवा रावणने जोइ राम तेना सन्मुख चाल्या. ते वखते तेमने पाछा वाली विभीषण रावणना सामो थयो. सन्मुख आवता विभीषणने जोइ रावणे क्रोध करी तेने कह्युं. "अरे मूढ! तुं शत्रुनो आश्रय करी पोतानुं मुख शा माटे देखाडवा आवे छे? हे विभीषण! पोताना जीवितनुं रक्षण करनारा जे राम लक्ष्मण यमराजना मुखसमान म्हारा मुखनी आगल तने हणीने पोताना सैन्यने विषे रहेला छे, तेनो तुं शा माटे आश्रय करे छे? हे अधमबंधु! हजु पण ज्यां सुधी म्हारुं मन त्हारे विषे स्नेहवालुं छे, त्यां सुधी तुं आ वध करवा योग्य रामने त्यजी दइ शीघ्र रणभूमिमांथी नासी जा." पछी विभीषणे निर्भयथी कह्युं. "हे दशमुख! राम लक्ष्मण बन्ने भाइयो पोतेज त्हारी साथे संग्राम करवा तैयार थया हता; परंतु त्हारा हितने माटे तेमने पाछा वाली हुं आव्यो छुं. जो के में राज्यपदवीनी इच्छाथी तेमज मृत्युना भयथी तेमनो आश्रय कर्यो नथी; परंतु आ भवनो अने परभवनो नाश करनारा त्हारा अन्यायने जोइ तेमनो आश्रय करेलो छे. हजु पण जो तुं सती सीताने त्यजी दे तो हुं त्हारो आश्रय करुं. नहि तो आ राम लक्ष्मण तने पुत्र अने बांधवो सहित नाश करशे." विभीषणनां आवां वचन सांभली भृकुटी चडावीने भयंकर बनेला रावणे तेने कह्युं. "अरे वराक! तुं शुं मने ए राम लक्ष्मणथी भय बतावे छे? रणसंग्राममां म्हारी आगल तेओ बीचारा कोण! अने तुं पण कोण!!! जो हुं ते बन्ने भाइयोने युद्धमां न मारुं तो हुं त्हारो भाइ नहि. अरे विभीषण! तुं पण हवणां म्हारी पासेथी चाल्यो जा. नहि तो तने पण यमनो अतिथी करीश." आवुं रावणनुं कहेवुं सांभली कोपथी विकराल मुखवाला विभीषणे तत्काल तेनी साथे युद्ध चलाव्युं. जेमणे धनुष्यनी दोरीना घातथी पर्वतोने गजावी मूक्या हता एवा ते महा पराक्रमवाला बन्ने भाइयो क्रोधवडे परस्पर विषम आयुधथी हाथीयोनी पेठे युद्ध करवा लाग्या. कुंभकर्ण रावणनी आज्ञाथी रामने मारवा माटे दोड्यो अने बीजा राक्षसो रामना सैन्यने मारवा चाल्या; परंतु रामे कुंभकर्णने, लक्ष्मणे मेघनादने, हनूमाने कुंभ समान कानवाला कुंभ दानवने अने सुग्रीवे विरोधी एवा सारणने स्तंभावी राख्या. वली भामंडल विगेरे बीजा विद्याधराधिपतियोए रावणना दुर्मुखादिक राक्षस सुभटोने मेघवृष्टि समान शस्त्र घातथी स्खलना पमाडया.

पछी मेघनादे क्रोध करी लक्ष्मण उपर तामस नामनुं शस्त्र फेंक्युं; परंतु ते शस्त्रने लक्ष्मणे तापन नामना शस्त्रथी व्यर्थ करी नाख्युं. छेवटे क्रोधाकुल थयेला लक्ष्मणे रावणपुत्र मेघनादने महापासथी हाथीनी पेठे बांध्यो, जेथी ते वीर मेघनाद तत्काल पृथ्वी उपर पमी गयो. वली रामे कुंभकर्णने, हनूमाने कौंभने, सुग्रीवे विरोधि एवा सारणने अने भामंमलादिके बीजा दुर्मुखादिकने बंधन कर्या. पछी राम अने लक्ष्मणनी आज्ञाथी हनूमंत विगेरे योद्धाउ दृढ बंधनथी बांधेला ते कुंभकर्णादि राक्षसोने पोतानी सेनाने विषे लइ गया. आम पोताना भाइने, पुत्रने अने बीजा योद्धाउने बंधनमां पमेला जोइ अत्यंत कोप पामेला रावणे रामनो वध करवा माटे तुरत त्रिशुल फेंक्युं; पण ते त्रिशुलने तो रामे पोताना उत्कट बाणथी रस्तामांज नष्ट कर्युं. आम पोताना त्रिशुलनो नाश जोइ रावणे अमोघ एवी विजया शक्ति लीधी. ज्यारे रावणे पोताना हाथने विषे शक्ति लीधी त्यारे रामे लक्ष्मणने कह्युं के, "हे लक्ष्मण! विभीषणे पोताना भाइ रावणनो आश्रय न कर्यो, एज हेतुथी आ रावण हवणां उपारेली शक्तिवती विभीषणने मारशे." रामनां आवां वचन सांभली महा बलवंत एवा लक्ष्मण विभीषणना आमा उभा रह्या अने रावण तरफ अस्त्र फेंकवा लाग्या एटले रावणे कोप करीने लक्ष्मण प्रत्ये कह्युं. "हे लक्ष्मण! में आ शक्ति तने मारवा माटे लीधी नथी, छतां तुं शा माटे मरवा तैयार थायछे? वध करवा योग्य म्हारो बंधु छे, माटे तुं म्हारा बंधुना पदने विषे आजे जीवतो रहे." अमोघ शक्तिवाला रावणे आम तिरस्कार करी अने चारे तरफ ते शक्तिने भमावी लक्ष्मण उपर फेंकी, ते जाणे इंद्रे, पर्वत उपर वज्र फेंक्युं होयनी! एवी देखावा लागी. शक्ति लक्ष्मणनी छातीने विषे वज्रनी पेठे वागी; तेथी ते तेना प्रहारथी अत्यंत पीमा पामता छता मूर्छाने लीधे पृथ्वी उपर पमी गया. आम लक्ष्मणने चेतना रहित थइ पृथ्वी उपर पमता जोइ क्रोधथी राता नेत्रवाला राम, रावणने मारवा माटे तत्काल पंचानन नामना रथ उपर बेठा. पछी बंधुना घातथी उत्पन्न थयेला कोपरूप अग्निथी ज्वाजल्यमान देहवाला रामे, रावणनी साथे देव अने दानवोने क्षोभ करनारुं युद्ध चलाव्युं. रावण पण तत्काल बीजा रथ उपर बेसी युद्ध करवा लाग्यो; परंतु महा पराक्रमवाला रामे क्षणमात्रमां तेनो रथ चूर्ण करी नाख्यो. आ प्रमाणे रामे राव-

णना पांच रथो जागी नाख्या एटले तेणे एक युक्त युक्ति शोधी कहाड्री के, " म्हारी शक्तिना प्रहारथी मूर्छा पामेलो लक्ष्मण सवारे मृत्यु पामशे अने तेना वियोगथी राम पण निश्चे तेज अवस्था अंगीकार करशे. तो पछी हवे म्हारे रामनी साथे मीथ्या युद्ध शा माटे करवुं जोइए ? " आम धारी ते युद्धथी निवृत्त थइ लंकाप्रत्ये जतो रह्यो. राम पण बंधुना दुःखथी आकुल थया छता तत्काल लक्ष्मण पासे आव्या.

हवे पोताना बंधुने मूर्छाथी पृथ्वी उपर पडेला जोइने बहु शोकथी आकुल व्याकुल थयेला मनवाला राम पण मूर्छाथी पृथ्वी उपर पडी गया. पछी ज्यारे सुग्रीव विगेरे नरेंद्रोए करेला शीतल जल अने चंदनादिकना उपचारथी तेमनी मूर्छा वली त्यारे ते आदरपूर्वक पोताना बंधुनुं मुख जोता छता विलाप करवा लाग्या. " हे लघुबंधव लक्ष्मण ! तुं पोतानी स्निग्ध दृष्टिथी आगल बेठेला पोताना म्होटा भाइने केम नथी जोतो ? अथवा केम नथी बोलावतो ? हे वत्स ! तुं कोइ कारणथी म्हारा उपर रुष्ट थयो छे ? जे होय ते मने कहे. अहो ! तें म्हारे माटे वर्णवी न शकाय एवा वनवासना कष्टने मिथ्या सहन कर्युं. अत्यारे घोर कष्टथी मूर्छा पामेला तने जोइ हुं श्वासोश्वास लउ छुं, ए म्हारी छातिनी कठोरताने धिक्कार छे. हे सुबंधो ! हुं रावणना युद्धरूप समुद्रने त्हारा भुजबलरूप वहाणवडे तरवाने समर्थ हतो, तो हवे तुं उठ अने विजयवंत एवा थइने आपणे बन्ने जणा ते समुद्रने लीला मात्रमां तरी जइए. अरे निर्दय अने कठोर हृदयवाला दुष्ट रावण ! तुं म्हारा बंधुने हणीने हवणां क्यां नासी जाय छे ? तुं क्षणमात्र रणांगणमां उभो रहे. हुं तने मारा बाणवती यमराजनो परुणो करुं. " आम विलाप करता अने वाणीथी शत्रुनो तिरस्कार करता राम धनुष्यनो टंकार शब्द करी तत्काल युद्ध करवाने माटे उभा थया. पछी सुग्रीवे रामनी विनंती करी के, " हे नाथ ! हवणां रात्रीनो वखत छे; रावण पोतानी नगरीप्रत्ये जतो रह्यो छे अने लक्ष्मण प्रहारने लीधे मूर्छित थयेला छे, माटे हवणां तमे धिरज धरो अने त्हाना बंधुने तत्काल उपचार करो. " सुग्रीवनां आवां वचन सांभली राम पोतानुं धनुष्य पृथ्वी उपर मूकी खेद करता छता फरी विलाप करवा लाग्या. " अरे हनूमान, नल, नील सुग्रीव विगेरे कपीश्वरो ! तमे सौ म्हारा उपर कृपा करी पोतपोताने

स्थानके चाल्या जाउ. हुं तो पोताना प्राणथी पण अधिक इष्ट एवा आ लघु बांधवने त्यजी जरा पण दूर जवाने समर्थ नथी." वली पण रामे पोतानी प्रियाना हरण अने बंधुना कष्टथी बिन्नीषणने कह्युं के, "हे न्नाइ! हुं आपनुं कृत्य करी शक्यो नथी, एनी आपे म्हारा उपर क्षमा करवी. में जगतूनी समक्ष आपने लंकानुं राज्य आपवानी प्रतिज्ञा करी छे, पण ते आ म्हारा जीवितरूप लक्ष्मणना घातथी पूर्ण थइ नथी. हा! म्हारे नथी काम चक्रवर्त्ती राज्यनुं के, नथी काम प्रियाना मुखने जोवानुं!!! परंतु म्हारे सहचारी एवा पोताना बंधु विना एक क्षण सो वर्ष समान थाय छे." आम वियोगनी पीमाने लीधे विलाप करता रामने जोइ बिन्नीषणे कह्युं. "हे विन्नो! उपचार कस्या विना केवल विलापथी शुं वलवानुं छे? शक्तिना प्रहारथी पीमा पामेलो मनुष्य जे औषधादिकथी फरी जीवतो थाय छे ते मंत्र तंत्र विगेरे मुख्य उपायो लक्ष्मणने माटे करो." बिन्नीषणनुं कहेलुं प्रमाण करी रामे, सुग्रीव विगेरे योद्धाउने लक्ष्मणनी चारे बाजुए बेसारी तेउनी साथे पोते पण नाना प्रकारना उपचारो करवा लाग्या.

हवे आ अवसरे कोइ माणस सीतानी पासे जइने कहेवा लाग्यो के, "हाय हाय! रावणनी शक्तिना प्रहारथी लक्ष्मण मृत्यु पाम्यो अने राम पण लक्ष्मणना वियोगथी थोमा दिवसमां मृत्यु पामशे!!" ते माणसनां आवां वचन सांन्नली अत्यंत दुःखथी तप्त थयेली सीता गाढ मूर्छाने लीधे तुरत पृथ्वी उपर पमी गइ. तेने राक्षसनी स्त्रीयोए शीतल जलना सिंचनथी थोमीवारे मूर्छारहित करी. पछी ते महा दुःखने लीधे विलाप करवा लागी के, "हे गंन्नीर बुद्धिवाला लक्ष्मण! हे धीर! हे वीरमणि! शुं तमे न्नस्म थयेला वृक्षनी उपमा जेवा संन्नलाउ छो? अहो! तमे पोताना म्होटा बंधुने त्यजी दइ शुं एकलाज परलोक गामी थया? तमे पासे हता त्यारे वनवास पण राज्य समान देखातो हतो. हा विदेहराजपुत्री! तुंज मंदपुण्यवाली छे के, जे दीयरने पण कष्टदायी थइ पमी. हवे प्रयाण करवामां तत्पर एवा म्हारा प्राण झट नाश पामो! नाश पामो!!" आम दुःखने लीधे विलाप करती सीताने जोइ कोइ दयालु बलाकिनी नामनी विद्याधरीये सीताने प्रसन्न करवा माटे पोतानी विद्याना बलथी कह्युं. "हे जनकसुता! तुं स्वस्थ था. त्हारा दीयर

सवारे जीवता थशे अने वली मध्यान्हे तारा पति तने हर्ष आपनारा पण थशे. लक्ष्मणना घातथी क्षणमात्र हर्ष पामेलो रावण लंकामां गयो छे, पण ते त्यां पोताना पुत्रने अने बंधुने थयेला नागपासना बंधन संभारी वारंवार आ प्रमाणे विलाप करे छे के, “हे बंधो कुंभकर्ण ! हे सुपुत्र मेघनाद ! अने कुलने विषे आभरणरूप हे बीजा पवित्र पुत्रो ! तमे सौ नागपासना बंधननी पीडाने शीरीते सहन करी सकशो ?” आम वारंवार बहु विलाप करतो रावण तत्काल मूर्छा पाम्यो छे. कह्युं छे के—निरंतर अनितिमार्गे चालनारा माणसोने सुख क्यांथी होय ?”

हवे आ अवसरे कोइ स्वरूपवान् माणस भामंडल पासे आवीने कहेवा लाग्यो. “तुं मने रामनुं दर्शन कराव्य के, जेथी हुं लक्ष्मणने जीवाडवानो उपाय बतावुं.” पछी भामंडल तेने हाथ पकडी राम पासे लाव्यो अने रामने प्रणाम करीने कहेवा लाग्यो. “हे नाथ ! आ पुरुष जे कहे छे ते सांभलो.” पछी पेलो पुरुष कहेवा लाग्यो.

संगीतक देशना राजा शशीमंडलनी सुप्रभा प्रियाथी उत्पन्न थयेलो महा कीर्तिवंत चंद्र नामनो हुं विद्याधराधिपति छुं. एक दिवस हुं प्रिया सहित पृथ्वी उपर क्रीडा करतो हतो एवामां शस्त्रना समूहने धारण करनारा सहस्राधिज्य नामना विद्याधरे मने मार्गमां दीठो. पछी पूर्वना वैरने लीधे तेणे म्हारी साथे बहु युद्ध करीने मने सुदढनामनी शक्तिवडे एवो प्रहार कर्यो के, जेथी हुं आकाशथी नीचे पृथ्वी उपर पडी गयो. त्यांथी साकेत नामना नगरना महेंद्रोदय नामना उद्याननी पासे आलोटता एवा मने दयावंत एवा तमारा भाइश्री भरतराजाए दीठो. पछी परोपकारी एवा तेमणे क्यांइथी सुगंधी जल लावी तेनुं म्हारा उपर सिंचन करी तत्काल म्हारा शरीरमांथी शक्ति दूर करी. आम ते जलथी जेनुं शरीर स्वस्थ बनी गयुं छे एवो हुं ते महाराजाने जलनुं स्वरूप पूछवा लाग्यो एटले तेमणे कह्युं के, कोइ वखते बंध्य नामनो सार्थपति हस्तिनापुर पासेथी जतो हतो. तेनो एक वृषभ बहु भारने लीधे आज नगरमां तुटी पड्यो. पछी सार्थपतिये ते वृषभनी सारसंभाल माटे घणुं द्रव्य आपी तेने गामना माणसोने सोंप्यो अने पोते पोतानी नगरी प्रत्ये गयो. नगरवासी जनोए सार्थपतीनुं द्रव्य लीधुं; पण वृषभनी जरापण सारसंभाल करी नहि,

तेथी ते बीचारो लोकोनी सारसंभाल विना दुःखथी अकाम निर्जरावडे मृत्यु पामीने देवता थयो. पछी ते देवताए पूर्व जन्मना वेरथी म्हारा देशने विषे रोग विकुर्व्यो. हवे म्हारी पासेना म्हारा मामाना देशमां निरोगीपणुं जोइ में तेमने पूछ्युं के, " तमारा देशमां निरोगतानुं शुं कारण छे?" (चंद्र विद्याधर श्री रामने कहे छे के,) पछी द्रोणघन राजाए पोताना भाणेज भरत भूपतिने कह्युं के, " म्हारी प्रियंकरा नामनी जे पत्नी छे ते पूर्वे बहु रोगवाली हती, परंतु तेना गर्भने विषे कोइ पुण्यवान् जीव उत्पन्न थयो; तेना अनुभावथी ते रोग रहित थइ. पछी अनुक्रमे तेणे एक पुत्रीने जन्म आप्यो. में तेनुं विशल्या एवुं नाम पाड्युं. हे भागिनेय ! पूर्वे म्हारो देश पण त्हारा देशनी पेठे बहु रोगवालो हतो; परंतु ए पुत्रीना स्नानजलनुं सींचन करवाथी तत्काल निरोगी थयो छे.

एक दिवस म्हारे त्यां सत्यभूति मुनि आव्या. तेमने में ए विशल्याना अतिशयनुं कारण पूछ्युं एटले तेमणे कह्युं के, "एणे पूर्व भवने विषे अति घोर तप करेल छे, माटे तेना स्नानजलना सिंचन करवाथी अतिदुःसह एवा दुष्ट व्रणनी शांति, महारोगनो नाश अने शल्यनो क्षय थाय छे. तो लक्ष्मणने पण एथीज शांति थवानी छे. " (भरत राजा चंद्र विद्याधरने कहे छे के,) मामानां आवां वचन सांभली में विशल्याना स्नान जलने लावी म्हारा देशने विषे छांट्युं, एथी म्हारा देशनो रोग नाश पामी गयो. (चंद्र विद्याधर श्री रामने कहे छे के,) भरत भूपतिनी एवी वाणी सांभली स्वस्थ थयेला शरीरवालो हुं पिताए करेला उत्सव पूर्वक म्हारा घरने विषे गयो. ते हुं आजे आ लक्ष्मणने प्रबल एवी शक्तिना प्रहारने श्रवण करी तत्काल तेनो उपाय कहेवाने माटे अहिं आव्यो छुं. " हे नरोतम राम ! तमे विशल्याना स्नानजलने शीघ्र अहिं मंगावो अने तेनुं लक्ष्मण उपर सिंचन करो के, जेथी शक्तिनो प्रहार वृथा थाय. "

चंद्र विद्यादरनां आवां वचन सांभलवाथी राम विगेरे सर्वे बहु हर्षित थया. पछी विचार करी रामनी अनुमति लइ भामंडल, हनूमान अने अंगद ए त्रणे जणा शीघ्र गतिवाला विमान उपर बेसी अयोध्यापुरी प्रत्ये आव्या. त्यां तेमणे भरत राजाने पोताना घरनी अंदर सुतेला

जोया एटले तो तेउ गाढ चिंताथी पीमा पामता ठता जेटलामां क्षणवार ऊ-न्ना रह्या तेटलामां पासे रहेला प्रस्तावनी जाण करनारा पुरुषोए तुरी वाजिंत्रना शब्दथी तेमने जगाम्या. पठी साकेतन नृपति एवा जरत राजाए ते जामंमलादिक त्रणेने जोइ तत्काल आदरथी पूछ्युं के, " तमे शा कारण माटे अहिं आव्या गे ? " जामंमले सर्व वात निवेदन करी एटले फरी जरत नृपतिये तेमने कह्युं के, "हे विद्याधरो ! तमे मने म्हारा मामानी पासे लइ जाउ." ते उपरथी ते त्रणे जणाउए जरतने विमानमां बेसारी क्षणमात्रमां कौतुकथी मंगल एवा तेना पुरप्रत्ये पहोचाम्या. त्यां साकेतन नृपतिये पोताना मामा डोणघनने कह्युं के, " आपनी महा जाग्यवती पुत्री विशल्याने लक्ष्मणने वागेली शक्तिना प्रहारना नाशने माटे ऊट मोकलो. " पठी ते वखते महा हर्षवान् एवा डोणघने पोतानी पुत्री विशल्याने हजारो सखीयो सहित तुरत लक्ष्मणनो पाणीग्रहण करवा माटे मोकली. पठी जरत सहित जामंमल विगेरे सौ हजारो सखीयोवाली विशल्याने लइ चाल्या. रस्ते साकेतन पुर आव्युं त्यां जारतने मूकी बाकीना सौ रामनी पासे गया. अत्यंत रूपवती एवी कन्या विशल्याने जोई शोक रहित थयेला राम, वानरोना समूह सहित पोतानुं कार्य सिद्ध करवाने उत्साहवंत थया. पठी रामनी आज्ञाथी विशल्याये कमल समान पोताना कोमल हस्तथी शक्तिना प्रहारवमे व्यथित थयेला लक्ष्मणना शरीरे स्पर्श कर्यो. आ वखते देवीना रूपने धारण करनारी तथा अत्यंत कृष्णवर्णवाली शक्ति लक्ष्मणना शरीरनो त्याग करी तत्काल आकाश मार्गे जवा लागी; परंतु पवनंजय कुमार एवा हनूमाने तेने पोताना वलथी ऊट पकमी लीधी अने कह्युं के, "अरे निर्दय महादुष्ट हृदयवाली रंमे ! तें म्हारा स्वामीने बहु पीमा आपी ठे तो हवे तने हुं गणत्रीमां नहि आवी शके एवी अर्थात् बहु म्होटी शिक्षा आपीश. " पठी जय पामती एवी ते शक्तिये हनूमानने कह्युं. " श्री धरण नृपतिये मने रावणने आपेली ठे. प्रज्ञप्ति विद्या म्हारी व्हेन ठे. म्हारो कांइ दोष नथी. बलीष्ट रावणे लक्ष्मणने हणवा माटे मने मूकी हती; परंतु पूर्व जवने विषे आचरेला घोर तप वाली विशल्याना अमित तेजथी हुं हतप्रजाववाली थइ ठुं; जेथी हवे आ लक्ष्मण पासे क्षणमात्र रहेवाने हुं समर्थ नथी. हे सुजट ! हवे मने ठोमी दे के, जेथी हुं चाली जाउं."

शक्तिनां आवां वचन सांजली दयावंत एवा हनूमाने तेने त्यजी दीधी; तेथी शक्ति पोताने इष्ट स्थाने चाली गइ अने लक्ष्मणने चैतन्य आव्युं. पछी विशल्याये पोताना हाथथी लक्ष्मणनां सर्व अंगने विषे गोशीर्ष चंदननो विलेप कर्यो; जेथी तेमनुं सर्व शरीर तदन घा विनानुं थइ गयुं. पछी पूर्वजवना पुण्यथी पुष्ट एवा लक्ष्मण तत्काल नेत्रने उघामी राम अने जामंमल विगेरे मुख्य अधिपतिना हर्ष सहित उजा थया. ते वखते पोताना नेत्रमांथी हर्षनां आंसुना समूहने वर्षावता एवा अने हर्षथी पूर्ण अंतरात्मावाला राम पोताना बन्ने हाथथी ऊट लक्ष्मणने जेटी पम्या. सुजटो पण नोबत विगेरेना शब्दपूर्वक "हे प्रजो ! आप जयवंता वर्तो ! !" एम आशीष आपवा लाग्या. वली रामनी आज्ञाथी सुग्रीव विगेरे बहु राजाउए एकठा थइ दिव्य एवी हजारो कन्याउ सहित विशल्यानुं लग्न लक्ष्मणनी साथे कर्युं.

हवे आकाशने विषे ठेकाणे ठेकाणे रहेली राक्षसोनी परंपराथी लक्ष्मणने जीवता थयेला जाणी खेदातुर थयेलो रावण विचार करतो उतो पोताना मंत्रीने कहेवा लाग्यो. "अरेरे ! में एम जाण्युं हतुं के, शक्तिना प्रहारथी लक्ष्मण तत्काल मृत्यु पामशे अने तेना वियोगथी दुःख पामेला रामनी पण एज अवस्था थशे. त्यारबाद म्हारुं सारुं थशे. वली सुग्रीव विगेरे पायदल नासी जशे, तेथी कुंजकर्ण अने इंद्रजित विगेरे म्हारा सुजटो बंधनथी मुक्त थइ पोतानी मेले पाछा आवशे. हे सचिव ! लक्ष्मण कया उपायथी जीव्या ? अने हवे रामनुं सैन्य देदिप्यमान थयुं तो म्हारा जाइ, पुत्र विगेरेना बंधनो शी रीते छुटशे ?" आम वारंवार पूछता एवा रावणने तेना मंत्रीयोए स्पष्ट कह्युं के, "सीता पाछी सोंपी रामने प्रसन्न करो के, जेथी तमारा बंधु पुत्रादि मुक्त थाय." मंत्रीयोना कहेवा उपरथी क्रोधातुर थयेला रावणे कोइ एक चतुर गुप्त पुरुषने बोलावी तेने संदेशो कही तत्काल रामनी पासे मोकल्यो. दूत पण तत्काल रामनी पासे आवी कहेवा लाग्यो के, "हे राघव ! तमे म्हारुं कपटरहित वचन सांजलो. रावण आपने कहेवरावे छे के, तमे म्हारा जाइ अने पुत्रोने छोमी मूको तथा आपनी प्रिया जानकी मने अर्पण करो के, जेथी हुं तमने म्हारुं अर्ध राज्य तथा सीताथी अधिक रूपवंती एवी त्रण हजार कन्याउ आपुं." पछी रामे कह्युं. " म्हारे रावणनां राज्यनुं कांइ प्रयोजन नथी तेमज सीता विना

बीजी रूपवंती हजारो कन्यावडे मने प्रीति थाय तेम नथी, माटे हे दूत ! तुं रावणनी पासे जइने म्हारुं वचन कहे के, सीताने मूकी दीधा विना राम त्हारा भाइ तथा पुत्रोने छोडशे नहि." दूते ते वात रावणने कही एटले रावणे फरी कांइ समाचार कही तेने पाछो राम पासे मोकल्यो. साहसीक दूत फरी रामनी पासे आवी कहेवा लाग्यो के, "हे राम ! समृद्धिवंत एवा राज्यथी शामाटे भ्रष्ट थाओ छो. विश्वविजयी एवो रावण फक्त स्त्रीना माटे निश्चे क्रोध करतो नथी. हे राम ! वली जूओ के, आ तमारो भाइ लक्ष्मण ते रावणनी शक्तिना प्रहारथी एकवार जीवतो थयो छे, पण हवे बीजीवार ते जीवी सकशे नहि, माटे महाराजा रावणने प्रसन्न करो." दूतनां आवां वचन सांभली क्रोधथी व्याप्त थयेला लक्ष्मणे कह्युं, " अरे मूढ दूत ! रणभूमिमांथी नासी गयेला ते रावणना उग्र एवा भुज बलने तुं शुं जाणे छे ? तेना केटलाक पुत्रो तो रणभूमिमां हणाइ गया छे, केटलाकने बांधी राख्या छे अने केटलाकने तो घायल करेला छे तो हवे सीताना हरणथी उत्पन्न थयेलो कोपरूप अग्नि रावणना मृत्यु विना शांति पामशे नहि." पछी दूते पोतानी लंका नगरी प्रत्ये आवीने सर्व वात राजा रावणने कही. रावणे पण पोताना सर्व प्रधान मंडलने बोलावीने पूछ्युं के, "हे बुद्धिवंत सचिवो ! हवे शुं करवुं ?" उत्तम प्रधानोए तेने उत्तर आप्यो के, "हे नाथ ! सीताने अर्पण करी रामनी साथे संधि करो अने पछी पोताना बंधु पुत्र विगेरेने छोडावी पोताना कुलनुं अने शीलनुं रक्षण करो." उत्तम प्रधानोनी आवी वाणी सांभलीने रावणनुं चित्त जरापण सीताने त्यजी देवा उत्साहवंत थयुं नहि. अहो ! प्राणीयोना पापीष्ट कठोर चित्तने धिक्कार छे ! धिक्कार छे ! !

पछी रावण पोताना हृदयमां विचार करीने सघली तरफथी शत्रुओने जीतनारी तथा बहु रुपवाली विद्यानुं आराधन करवा माटे सभामांथी उठी नीकल्यो. स्नान करी पवित्र वस्त्रथी सुशोभित देहवालो ते तत्काल श्री शांतिनाथना मंदिर प्रत्ये गयो, त्यां तेणे हरिणना लांछनवाला श्री शांतिनाथ प्रभुनो चंदनथी मिश्रित एवां सुगंधी जलना पूर्ण कलशोवडे स्नात्र महोत्सव कर्यो. कपुरथी मिश्र एवा घणां चंदनथी प्रभुना शरीरने लेपन करीने भक्ति पूर्वक प्रफुल्लित पुष्पोथी पूजन कर्युं. अहा ! रावणनी अरिहंत प्रभुने

विषे अति तात्विकी नक्ति हती !!! पठी रावणे श्री शांतिनाथ प्रनुनी स्तुति करीने पोताना सुन्नटोनी पासे नगरीमां पटह वगमाव्यो के, " हे नगरवासी जनो ! तमे आजथी आठ दिवस पर्यंत उत्तम रीते श्री जिनेश्वर प्रनुनुं पूजन करवामां अने ध्यानमां तत्पर थाउ. जे कोइ आ म्हारी आज्ञाने निष्फल करशे ते चोरतुल्य शिक्षाने पात्र थशे. " आम पटह वगमावीने रावण विद्यानुं आराधन करवा तत्पर थयो.

हवे रावण विद्यानुं साधन करवा बेठो छे, ते वात सुग्रीव विगेरे सुन्नटोए जाणी; तेथी तेमणे श्री रामने कह्युं के, " हे नाथ ! हवणां रावण महा ध्यानमां लीन थइ गयो छे, माटे आप जेम योग्य होय तेम करो. " सुग्रीव विगेरे सुन्नटोनां आवां वचन सांनली रामे हसिने उत्तर आप्यो के, "हुं क्यारे पण दंन करनारो नथी. वली आयुधने त्याग करी जिनमंदिरमां रहेला, ध्यानमां तत्पर अने शांत एवा रावणने जो हुं लंकापुरीनो नंग करी पीमा करुं तो पृथ्वीमां वीर पुरुषोना मध्ये म्हारी उत्तम प्रतिष्ठा शी ?" पठी जेम प्रचंम वायु म्होटा पर्वतने क्षोन्न पमामवा तैयार थाय एम महा पराक्रमवंत एवा अंगद विगेरे सुन्नटो रावणने क्षोन्न पमामवा दोम्या. तेउए विविध प्रकारना उपसर्ग कर्या, परंतु तेथी रावण जरा पण क्षोन्न पाम्यो नहि. वली टंकार शब्द अने अट्टाट्टहासथी पण ते जरा नय पाम्यो नहि.आम क्षोन्न रहित अने निर्नय एवा रावणने जोइ अंगद विगेरे सुन्नटो फरी तेनी पासे आवीने कहेवा लाग्या के, " हे राक्षस ! तें रामना नयथी आ पाखंम शयो आरंन्यो ? जो त्हारुं अतुल बल होय तो युद्ध कर. " आवी रीते क्षोन्न पमाम्यो तो पण रावण तेउनां वचनने सांनलतो नहोतो; तेथी तेउए कठोर वचन कहेवा मांम्या के, " हे दशकंठ ! त्हारी परोक्षमांज राम, सीताने पाठी लइ गया छे अने अमे पण त्हारा नुवनमां पेसीने बहु विलाप करती एवी त्हारी प्रिया मंदोदरीनुं हरण करीए छीए, माटे हवे तुं तेनुं रक्षण कर रक्षण कर. " एकाग्र चित्तवालो अने स्थिर ध्यानवालो रावण आवी रीते पोतानो तिरस्कार करता एवा अंगद विगेरे सुन्नटोने गणकारतो नहोतो; तेथी शीघ्र आसुरी विद्या प्रगट थइ के, जेना प्रनावथी सर्वे कपीयो तत्काल नासी गया. पठी "हुं प्रसन्न थइ छुं ! प्रसन्न थइ छुं !! तुं त्हारा शत्रुउना घातादि इष्ट अर्थरूप वरदान

माग. हुं त्हारुं शुं इष्ट करुं ?" एम देवी आसुरी विद्याना कहेवा उपरथी रावणे कह्युं के, "हे देवी! तुं म्हारुं कार्य साध." पछी रावणनुं कहेलुं सर्व अंगीकार करी आसुरी विद्यादेवी क्षणमात्रमां पोताने स्थानके गइ. पछी जेनी मरण दशा नजीक प्राप्त थइ छे एवो रावण पण अंगद विगेरे सुभटोए कहेलां वचनने सांभळीने फरी बहु क्रोधने धारण करतो छतो क्रीडा करवानी इच्छाथी सीतानी पासे गयो. ते वखते ते जाणे मरण पामवाने उत्साहवंत थयेलो पतंग ज्वालाथी विकराल एवा महा अग्निने विषे पडतो होयनी? एवो देखायो.

पछी रावण सीताने कहेवा लाग्यो के, "अहो! में त्हारा उपर घणा वखतथी बहु प्रसाद कर्यो छे, छतां तुं म्हारुं वचन अंगीकार करती नथी तो आजे युद्धमां राम लक्ष्मणने हणीने हुं त्हारी साथे क्रीडा करीश, माटे हवे तुं त्हारा पोताना अभीष्ट अभिग्रहने झट मूकी दे." रावणनां आवां वचन सांभळी शरण रहित भय पामेली सीता दुःखथी मूर्च्छा पामी गइ. पछी रावणनी आज्ञाथी दासीयोए सीताने शीतल उपचारथी तुरत सचेत बनावी एटले गइ छे कामदेवनी पीडा जेने एवो रावण, पोताना मनमां विवेकदृष्टिथी विचार करवा लाग्यो के, "अहो! पोताना प्रियपति रामने विषे निःकृत्रिम स्नेहवाळी आ सीता मने इच्छती नथी तो में बलवडे एनुं वृथा हरण कर्युं. वळी में म्हारा भाइयो तथा मंत्रियोनुं कहेवुं पण स्वीकार्युं नहि. हवे जो हुं हवणां सीता रामने स्वाधिन करुं तो सर्व सुभटोमां म्हारी अपकीर्तिनो फेलावो थाय, माटे तेम करवुं तो योग्य नथी; पण जो युद्धमां रामने बंधन करीने पछी तेमने सीता अर्पण करुं तो लोकमां म्हारुं अद्भुत पुरुषातन कहेवाय, तेम न्याय अने धर्म पण निर्मल थाय." आम विचार करी सीताने त्यांज मूकी वळीए एवो रावण पोतानी सर्व सेना सहित सर्व प्रकारना शकुनोए निषेध कर्यो छतो दुर्दैवना वशथी तुरत युद्धने विषे गयो. ते वखते कोपरूप अग्निथी प्रज्वलित हृदयवाळा, महा पराक्रमवंत अने महा बलवंत एवा हनुमान विगेरे सुभटोथी चारे तरफ विंटलाइ रहेला राम लक्ष्मण पण तुरत रणभुमिमां आव्या.

पछी बन्ने सैन्यमां घोर युद्ध चाल्युं एटले रावण पोताना क्रोधने लीधे जेम भुख्यो माणस भोजन करवाने प्रवृत्त थाय तेम श्री रामनी सेनाने मारवा

विषे अति तात्विकी ज्नक्ति हती !!! पछी रावणे श्री शांतिनाथ प्रज्नुनी स्तुति करीने पोताना सुज्नटोनी पासे नगरीमां पटह वगमाव्यो के, " हे नगरवासी जनो ! तमे आजथी आठ दिवस पर्यंत उत्तम रीते श्री जिनेश्वर प्रज्नुनुं पूजन करवामां अने ध्यानमां तत्पर थाउ. जे कोइ आ म्हारी आज्ञाने निष्फल करशे ते चोरतुल्य शिक्षाने पात्र थशे. " आम पटह वगमावीने रावण विद्यानुं आराधन करवा तत्पर थयो.

हवे रावण विद्यानुं साधन करवा बेगे छे, ते वात सुग्रीव विगेरे सुज्नटोए जाणी; तेथी तेमणे श्री रामने कह्युं के, " हे नाथ ! हवणां रावण महा ध्यानमां लीन थइ गयो छे, माटे आप जेम योग्य होय तेम करो. " सुग्रीव विगेरे सुज्नटोनां आवां वचन सांज्नली रामे हसिने उत्तर आप्यो के, "हुं क्यारे पण दंज्न करनारो नथी. वली आयुधने त्याग करी जिनमंदिरमां रहेला, ध्यानमां तत्पर अने शांत एवा रावणने जो हुं लंकापुरीनो ज्नंग करी पीमा करुं तो पृथ्वीमां वीर पुरुषोना मध्ये म्हारी उत्तम प्रतिष्टा शी ?" पछी जेम प्रचंम वायु म्होटा पर्वतने क्षोज्न पमामवा तैयार थाय एम महा पराक्रमवंत एवा अंगद विगेरे सुज्नटो रावणने क्षोज्न पमामवा दोम्या. तेउए विविध प्रकारना उपसर्ग कर्या, परंतु तेथी रावण जरा पण क्षोज्न पाम्यो नहि. वली टंकार शब्द अने अट्टाट्टहासथी पण ते जरा ज्नय पाम्यो नहि.आम क्षोज्न रहित अने निर्ज्नय एवा रावणने जोइ अंगद विगेरे सुज्नटो फरी तेनी पासे आवीने कहेवा लाग्या के, " हे राक्षस ! तें रामना ज्नयथी आ पाखंम शयो आरंज्यो ? जो त्हारुं अतुल बल होय तो युद्ध कर. " आवी रीते क्षोज्न पमाम्यो तो पण रावण तेउनां वचनने सांज्नलतो नहोतो; तेथी तेउए कगेर वचन कहेवा मांम्या के, " हे दशकंठ ! त्हारी परोक्षमांज राम, सीताने पाछी लइ गया छे अने अमे पण त्हारा ज्नुवनमां पेसीने बहु विलाप करती एवी त्हारी प्रिया मंदोदरीनुं हरण करीए छीए, माटे हवे तुं तेनुं रक्षण कर रक्षण कर." एकाग्र चित्तवालो अने स्थिर ध्यानवालो रावण आवी रीते पोतानो तिरस्कार करता एवा अंगद विगेरे सुज्नटोने गणकारतो नहोतो; तेथी शीघ्र आसुरी विद्या प्रगट थइ के, जेना प्रज्नावथी सर्वे कपीयो तत्काल नासी गया. पछी "हुं प्रसन्न थइ छुं ! प्रसन्न थइ छुं !! तुं त्हारा शत्रुउना घातादि इष्ट अर्थरूप वरदान

माग. हुं त्हारुं शुं इष्ट करुं ?" एम देवी आसुरी विद्याना कहेवा उपरथी रावणे कह्युं के, "हे देवी! तुं म्हारुं कार्य साध." पछी रावणनुं कहेलुं सर्व अंगीकार करी आसुरी विद्यादेवी क्षणमात्रमां पोताने स्थानके गइ. पछी जेनी मरण दशा नजीक प्राप्त थइ छे एवो रावण पण अंगद विगेरे सुभटोए कहेलां वचनने सांभलीने फरी बहु क्रोधने धारण करतो छतो क्रीडा करवानी इच्छाथी सीतानी पासे गयो. ते वखते ते जाणे मरण पामवाने उत्साहवंत थयेलो पतंग ज्वालाथी विकराल एवा महा अग्निने विषे पडतो होयनी? एवो देखायो.

पछी रावण सीताने कहेवा लाग्यो के, "अहो! में त्हारा उपर घणा वखतथी बहु प्रसाद कर्यो छे, छतां तुं म्हारुं वचन अंगीकार करती नथी तो आजे युद्धमां राम लक्ष्मणने हणीने हुं त्हारी साथे क्रीडा करीश, माटे हवे तुं त्हारा पोताना अभीष्ट अभिग्रहने झट मूकी दे." रावणनां आवां वचन सांभली शरण रहित भय पामेली सीता दुःखथी मूर्छा पामी गइ. पछी रावणनी आज्ञाथी दासीयोए सीताने शीतल उपचारथी तुरत सचेत बनावी एटले गइ छे कामदेवनी पीडा जेने एवो रावण, पोताना मनमां विवेकदृष्टिथी विचार करवा लाग्यो के, "अहो! पोताना प्रियपति रामने विषे निःकृत्रिम स्नेहवाली आ सीता मने इच्छती नथी तो में बलवडे एनुं वृथा हरण कर्युं. वली में म्हारा भाइयो तथा मंत्रियोनुं कहेवुं पण स्वीकार्युं नहि. हवे जो हुं हवणां सीता रामने स्वाधिन करुं तो सर्व सुभटोमां म्हारी अपकीर्तिनो फेलावो थाय, माटे तेम करवुं तो योग्य नथी; पण जो युद्धमां रामने बंधन करीने पछी तेमने सीता अर्पण करुं तो लोकमां म्हारुं अद्भुत पुरुषातन कहेवाय, तेम न्याय अने धर्म पण निर्मल थाय." आम विचार करी सीताने त्यां ज मूकी बलीष्ट एवो रावण पोतानी सर्व सेना सहित सर्व प्रकारना शकुनोए निषेध कर्यो छतो दुर्दैवना वशथी तुरत युद्धने विषे गयो. ते वखते कोपरूप अग्निथी प्रज्वलित हृदयवाला, महा पराक्रमवंत अने महा बलवंत एवा हनुमान विगेरे सुभटोथी चारे तरफ विंटलाइ रहेला राम लक्ष्मण पण तुरत रणभुमिमां आव्या.

पछी बन्ने सैन्यमां घोर युद्ध चाल्युं एटले रावण पोतेज क्रोधने लीधे जेम भुख्यो माणस भोजन करवाने प्रवृत्त थाय तेम श्री रामनी सेनाने मारवा

माटे प्रवर्त्यो. आम यमराजनी पेठे पोतानी सेनानो संहार करता रावणने जोइ तुरत लक्ष्मणे पोताना महादारुण शस्त्रोवडे जेम गरुड पोतानी पांख वडे सर्पने प्रहार करे तेम प्रहार कर्यो. पछी रावणे पोताना शत्रुरूप लक्ष्मणने अति दुर्जय मानीने विद्याना बलथी बहु भयंकर अनेक रूपो धारण कर्यां. लक्ष्मणे रावणनां सर्व रूपोने विषे अनेक तिक्ष्ण शस्त्रोनो प्रहार कर्यो के, जेथी तेना मुख्य रूपने विषे चारे तरफथी अति उग्र पीडा थवा लागी. पछी रावणे पोताना सर्वे रूपोने संहरी लइ चक्रनुं स्मरण करयुं, जेथी तेज वखते ज्वाजल्यमान सूर्यना प्रतिबंब समान चक्र तेनां हस्तने विषे प्राप्त थयुं. पछी सुर अने असुरने पण भय आपनारा ते चक्रने भमावीने रावणे राम विगेरे बहु शोक करता छता लक्ष्मण उपर फेंक्युं. चक्र पण लक्ष्मणनी पासे आवी तेमनी प्रदक्षिणा करवा पूर्वक तेमनी छातीमां प्रहार करी तत्काल बहु पुण्यना योगथी तेमना जमणा हस्त कमलनी उपर बेठुं. आम पोतानुं चक्र पण लक्ष्मणना हाथने विषे प्राप्त थयेलुं जोइ अत्यंत खेद पामता रावणे विचार्युं के, “ हा हा ! बहु कष्टथी मेलवलुं म्हारुं चक्रपण निष्फल गयुं. ” पछी निस्तेज बनी गयेला रावणने जोइ तुरत विभीषण तेने कहेवा लाग्यो के, “ हे भाइ ! तुं सीताने त्यजी दइ पोताना बंधुओ सहित सुखेथी राज्य कर. ” रावणे धैर्यनो आश्रय करी फरी उत्तर आप्यो के, “म्हारा भुजने विषे बहु बल छे, तेथी हुं चक्रसहित ए शत्रुने मुष्टी प्रहारथी हणी नाखीश, ते तुं जो जे. ” आम रावण कहेतो हतो एटलामां लक्ष्मणे चक्र फेंकीने तेनुं मस्तक छेदी नाख्युं. धिक्कार छे रावणना दुष्ट अभिमानने ! ! ! पछी रौद्रध्यानमां परायण एवो प्रतिवासुदेव रावण मृत्यु पामीने अनेक दुःखोथी व्याप्त एवी चोथी नरक प्रत्ये गयो अने आकाशमार्गमां जय जय शब्द करता अने हर्षथी व्याप्त थयेला देवताओए लक्ष्मणना मस्तक उपर उत्तम सुगंधवालां पुष्पोनी वृष्टि करी.

॥ इति पद्मचरित्रे रावणनिग्रहो नाम सप्तमः प्रस्तावः ॥

पछी श्री रामना भयथी नासी जता अने नायक विनाना ते राक्षसोने विभीषणे कह्युं के, “ हे निशाचरो ! तमे उतावलथी श्री रामना चरणकमलनो आश्रय करो. कारण के, हवणां आ भारत भूमिने विषे आठमा बलदेव अ-

ने वासुदेवरूप दशरथ राजाना बलवंत श्री पद्म अने नारायण (राम लक्ष्मण) नामना पुत्रो सेवा करवा योग्य छे." विभीषणनुं आवुं परिणामसुंदर वचन सांभलीने निर्भय बनेला तथा निश्चल भक्तिथी व्याप्त थयेला महा सुभट एवा राक्षसो रामना चरणनो आश्रय करवा लाग्या. पछी पृथ्वीने विषे पडेला रावणने जोइ बंधुना स्नेहना वश्यने लीधे मरवाने तैयार थयेला विभिषणे पोतानुं उदर चीरी नाखवा माटे क्षणमात्रमां शस्त्र लीधुं. आ प्रमाणे मृत्यु पामवाने तैयार थयेला ते विभीषणने रामे नीवारीने कह्युं के, "अरे बंधो! तुं आ सर्व सुभटोने विषे निरंतर लज्जाकारी एवुं शुं कृत्य करे छे? पछी बंधीखानाथी छोडेला कुंभकर्ण मेघनाद विगेरे अनेक सुभटो अने मंदोदरी विगेरे अनेक उत्तम स्त्रीयोनी साथे ते विभीषण रावणनी पासे आवीने रुदन करवा लाग्यो. आम तारस्वरथी रुदन करता अने महाशोकथी पूर्ण थइ गयेला विभीषणने लक्ष्मण सहित श्री राम तुरत मधुरवाणीथी बोध करवा लाग्या.

"हे विभीषण! आ पृथ्वी उपर पूर्वे रावण समान कोइ सुभट थइ गयेलो अथवा हवे पछी थाय एम अत्यारे देखातुं नथी. कारण के, जेनुं आजसुधी प्रबल पराक्रम देव अने दानवोथी निरंतर अस्खलित हतुं. वली जेणे आजसुधी वीर वृत्तिये करीने निश्चे अखंड एवुं त्रण खंडनुं साम्राज्य भोगव्युं छे ते सुभटोमां मुकुटरूप रावण तमारे शुं शोक करवा योग्य छे? शुं कालने लीधे कया कया पुरुषो विनाश नथी पाम्या?" आ प्रमाणे अवसरना जाण एवा रामे ते विभीषणने कुटुंब सहित प्रबोध पमाडीने तुरत तेज वखते रावणना शरीरने अग्नि संस्कार कराव्यो. पछी प्रसन्न मुखकमलवाला रामे लक्ष्मण सहित स्नान करी रावणना वंशनेविषे मुकुटरूप कुंभकर्ण अने इंद्रजीत विगेरे वीर पुरुषोने कह्युं. "हे कुंभकर्णादि सुभटो! तमे सौ म्हारुं वचन सांभलो. हवे तमे निर्भय थइ पूर्वनी पेठे पोतपोतानी राज्यस्थितिने पालो." रामनां आवां वचन सांभली तेउए कह्युं. "हे राम! अमारे नाशवंत स्वभाववाला उत्तम राज्यनुं कांइ प्रयोजन नथी. हवे तो अमे तुरत शाश्वत एवा मोक्ष सुखने मेलववा माटे गुरुनी पासे चारित्र अंगीकार करिशुं."

पछी तेज रात्रीने विषे कुसुमायुध नामना उपवनमां बल नामना मुनि-

ने केवल ज्ञान उत्पन्न थयुं, तेथी तेज अवसरे देवताओए तेमनो केवल महोत्सव कर्यो. प्रभाते हर्षथी व्याप्त अंगवाला राम, लक्ष्मण, सुग्रीव अने विभीषण विगेरे अनेक पुरुषो,परिवार सहित ते केवली मुनीश्वरने वंदना करवा गया. त्यां केवलीये तेमने वैराग्यथी सुशोभित एवी हाथीने बांधवानी शालारूप तथा पुण्यरूप अमृतने झरवानी विशाल शालारूप पापने विनाश करनारी उत्तम धर्मदेशना आपी; तेथी रावणना न्हाना भाइ कुंभकर्ण सहित मेघनाद विगेरे अनेक वीर पुरुषोए तथा रावणनी स्त्री मंदोदरी विगेरे अनेक स्त्रीयोए तुरत सर्व संगनो त्याग करी दीक्षा लीधी. पछी संतुष्ट चित्तवाला, महोत्सवने उत्पन्न करनारा तथा सर्व प्रकारे सुशोभित अंगवाला रामे पण ते केवलीने तथा नव दीक्षित मुनींद्रोने प्रणाम करी लक्ष्मण, हनुमान, सुग्रीव अने भामंमल विगेरे अनेक विद्याधरो सहित विभीषणादि बहु राक्षसोए अलंकृत करेली लंकापुरी प्रत्ये प्रवेश कर्यो. लंकामां प्रवेश कर्या पछी गरीष्ट एवा रामे पुष्पशैल पर्वतना शिखर उपर हनुमंते वर्णवेला शुद्ध शीलगुणवाली सती सीताने दीठी एटले तेमणे तपना आचरणथी दुर्बल थइ गयेली, लज्जाथी नम्र थइ गयेलां मुखकमलवाली अने पोताना पतिना आववाथी संतुष्ट थयेला चित्तवाली सीताने पोताना खोलाने विषे बेसारी. आ वखते आकाशमां सुर, असुर अने सिद्ध नरोए दीर्घकाल पर्यंत चारे तरफथी एवी उदघोषणा करी के, “ पृथ्वीने विषे विशुद्ध शीलवाली, कलंक रहित तथा निष्पाप एवी आ जनकराजपुत्री सीता जयवंती वर्तो. ” राम पण पोताना चित्तरूप चकोरने आनंदित करवामां चंद्ररूप सीताने बहु दिवसे जोता छता ते वखते आरंभ करेला समग्र रणसंग्रामने सफल तथा मननी तुष्टीना कारणरूप मानवा लाग्या. पछी वासुदेव एवा लक्ष्मणे जनकराजपुत्री सीताना चरणकमलने हर्षथी प्रणाम कर्यो एटले सीताये तेमने हर्षथी एवी आशिष आपी के, “ हे वीर ! तमे दीर्घकाल पर्यंत जीवो अने आनंद पामो.” हर्षना आंसुथी पूर्ण नेत्रवाला भामंमले पोतानी व्हेन सीताने प्रणाम कर्या एटले जनकराजसुताये तेने आशीवचनथी बहु संतोष पमाड्यो. हर्षना वशथी सुग्रीव, हनुमान अने विभीषण विगेरे मुख्य नृपतियोए पण पोतपोताना नामना उच्चार पूर्वक सीताना चरणने विषे प्रणाम कर्या. तेथी ते सर्वेने पण तेणे वारंवार आशिषो आपी.

पछी लक्ष्मण सहित राम तुरत पर्वत समान भुवनालंकार नामना हाथी उपर बेसीने परिवारे विंटलाया छता विभीषणादि राक्षसोए करेला विविध प्रकारना उत्सव पूर्वक रावणना मंदीर प्रत्ये गया. त्यां माणिक्य अने सुवर्णमय एवा म्होटा जिनमंदिरमां प्रवेश करीने तेमणे लक्ष्मण सहित श्री शांतिनाथनी प्रतिमाने भक्तिपूर्वक वंदना करी. पछी विभीषणे आणेलां सुगंधी पुष्पोथी रामे श्री शांतिनाथनी पूजा करीने बहु अर्थथी गर्भित एवा पवित्र स्तोत्रवडे स्तुति करी अने नमस्कार कर्यो. पछी विभीषणे बहु आग्रह पूर्वक सुग्रीव भामंडल विगेरे अनेक सेवको सहित राम लक्ष्मणने पोताना घर प्रत्ये तेडी जइ हर्षथी गौरव पूर्वक भोजन कराव्युं. त्यार बाद विशेष जाण एवा विभीषणे रामने म्होटा सिंहासन उपर बेसारीने कह्युं. "हे नाथ ! निश्चे आ सर्व हाथी रथ विगेरे आपनुंज छे अने हुं आपनो सेवक छुं, एम जाणो. वली जो आप म्हारा उपर कृपा करीने मने आज्ञा आपता हो तो हुं आपने आ सर्वे राक्षसोनी समक्ष लंकापुरीना राज्यनो महाभिषेक करुं." पछी संतोषित चित्तवाला रामे कह्युं के, "हे बंधो ! तें कह्युं ते ठीक, परंतु में तने लंकानुं राज्य आपवानुं कह्युं छे, ते तुं शुं भूली गयो ?" पछी रामे अत्यंत विनयवंत एवा विभीषणने राक्षसोनी समक्ष लंकाना राज्यने विषे अभिषेक कर्यो. पछी सिंहोदरादि राजाओए सेवकोने मोकलीने तेडावेली पोतपोतानी अति रूपवाली कन्याओ पोतपोताना बंधुओ सहित त्यां आवी. राम अने लक्ष्मण पण ते उत्तम रूपवाली कन्याओने महोत्सव पूर्वक परण्या. पछी विभिषण अने सुग्रीव विगेरे अनेक भूपतियोए सेवन करेला अने तेथीज उत्तम सुखने लीधे हर्षवंत एवा राम लक्ष्मण, रावणनी राजधानी (लंका) मां छ वर्ष पर्यंत रह्या. आ अवसरे विंध्याचलपर्वतनी उपर तपधारीमां श्रेष्ट एवो मेघनाद पोताना भाइ मेघवाहन सहित सिद्धि पाम्यो. ते उपर त्यां मेघरथ नामनुं तीर्थ लोक प्रसीद्ध थयुं. क्षय कर्या छे सर्व कर्म जेणे एवो कुंभकर्ण पण नर्मदाने विषे सिद्धि पाम्यो, तेथी त्यां आज पर्यंत लोकने विषे "रक्षित" नामनुं लोक प्रसिद्ध तीर्थ थयुं.

हवे ते अवसरने विषे अहिं अयोध्यामां उत्तम शीलधारी एवा रामनी माता कौशल्या तथा कल्याणनां पात्ररूप साध्वी अने विख्यात एवा लक्ष्मणनी माता सुमित्रा ए बन्ने पोतपोताना पुत्र शोकथी आकुल व्याकुल थता

हता. वली तेज पोतपोताना पुत्रना कुशल समाचार न मलवाने लीधे अत्यंत ङुःखित थया ऊता "अमारा पुत्रना कुशल समाचार आजे अथवा काले आवशे." एवी आशाथी निरंतर पोतानुं जीवित धारण करता हता. पछी एक दिवस अधिक महिमावाला नारदरुषि बीजा द्वीपथी आ द्वीपमां आवी चम्या हता, तेमणे ग्लानी पामी गयेली मुखकांतिवाली ते बन्ने राणीयोने तेमना ङुःखनुं कारण पूछ्युं एटले तेउए कह्युं के, "हे नारद! रामलक्ष्मण नामना अमारा पवित्र पुत्रो वनवास गया हता; त्यांथी तेज रावणे हरण करेली महासती सीताने पाछी वालवा माटे लंकापुरी प्रत्ये गया छे. रावणनी शक्तिना प्रहारथी लक्ष्मण मूर्छा पाम्या हता; तेथी ज्ञरत राजाए तुरत पोताना मामानी न्हानी पुत्री विशल्याने त्यां मोकली छे. हवे आगल शुं थयुं हशे? ते अमे नथी जाणता; तेथी अमे बन्ने जणीयो शोकाकुल छीए." आम नारदने कहीने पुत्रवियोगथी विह्वल बनेली कौशल्या अने सुमित्रा ए बन्ने जणीयो बहु रुदन करवा लागी. नारदे कह्युं. "हे सौज्ञाग्यवंत मुखवालीयो! तमे चित्तने विषे खेद न करो, हुं महा ज्ञाग्यकलाना निवासरूप तमारा बन्नेना पुत्रोने थोमा समयमां अहिं लावीश." आम नारदरुषिये मधुर वचनथी ते बन्ने जणीयोने शांत चित्तवाली करी पोते लंकापुरीमां रावणना निवास घरने विषे आव्या. त्यां तेमणे रामलक्ष्मणने दीठा. पछी रामे सत्कार पूर्वक नारदने पूछ्युं के, "हे मुनि! हवणां नवीन शुं छे? अहिं आगमननुं जे कारण होय ते पण कहो?" नारदे कह्युं. "तमे ज्ञाग्यवमे ज्ञोगसमृद्धिना स्थानने पाम्या छो तो हवे माताउनी तुष्टीने माटे अयोध्यापुरी प्रत्ये जवानुं प्रयाण करो. हुं तमने एज कहेवाने माटे अहिं आव्यो छुं." नारदनां आवां वचन सांज्ञली पोतानी माताने मलवाने वृद्धि पामेली उत्कंठवाला लक्ष्मण सहित रामे पोताना सेवक अने विशेष ज्ञक्तिवंत एवा विज्ञीषणने कह्युं के, "हे बुद्धिवंत! त्हारा गौरवपणाथी संतुष्ट चित्तवाला अमे आटला वर्षो अहिं सुखेथी रह्या छीए. हवे जो तुं आज्ञा आपे तो अमे अमारी माताने मलवा माटे जइए." विज्ञीषणे कह्युं "हे नाथ! आप अहिं सोल दिवस रहो के, जेथी हुं म्हारा सेवकोनी पासे आपना प्रवेशने माटे अयोध्यापुरीने सुशोज्ञित करावुं." रामे "एम थाउ." एम कह्युं एटले विज्ञीषणे तेज वखते पोताना

माणसोनी पासे अयोध्यापुरीने लक्ष्मीवडे इंद्रपुरी समान सुशोभित बनावी दीधी. रामे आज्ञा करी एटले तुरत नारदे अयोध्यामां आवीने पुत्रोनुं आगमन कौशल्या तथा सुमित्राने कह्युं; तेथी ते बन्ने जणीयो बहु हर्ष पामी. पछी नविन प्रियाओने साथे लइ लक्ष्मण अने सीता सहित राम तत्काल पुष्पक वैमानमां बेसी सुग्रीवादि नृपतियोनी साथे चाल्या अने थोडा वखतमां चारे तरफथी अनेक वैमाने करी व्याप्त एवुं ते पुष्पक वैमान महासमुद्रने उल्लंघी अयोध्यानी समीपे आवी पहोंच्युं. श्री रामने आव्या जाणी उद्यानमां रहेला नम्र भरत नृपतिये मंत्री, सामंत अने नागरीक लोको सहित म्होटा उत्सवथी सामैयुं कर्युं. भरतने सामा आव्या जोइ राम पुष्पक वैमानथी नीचे उतर्या एटले विनयथी नम्र एवा भरते हाथीथी नीचे उतरी हर्षथी रामने प्रणाम कर्यो. भक्तिथी पोताना चरणने विषे पडेला भरतने रामे पोताना बन्ने हस्त कमलथी आलिंगन कर्युं अने जाणे हर्षना आंसुना मीषथी पूर्वना दुःखने खेंची काढता होयनी? एम मोहने लीधे नेत्रजलथी सिंचन कर्या. वली चरण कमलने विषे वंदन करता एवा शत्रुघ्न बंधुने पण रामे आलिंगन कर्युं. कारण के, इष्ट मनुष्यने मलवाने अवसरे परस्पर आलिंगन करवुं एज मुख्य गरिष्ट फल छे. लक्ष्मणे पण भरत अने शत्रुघ्न ए बन्ने भाइयोने प्रणाम कर्यो. पछी भरतनी विनंतीथी रामे ते पोताना बंधुओ सहित वैमानमां बेसी उत्सवोथी प्रसन्न मनवाला थया छता अयोध्या नगरीप्रत्ये प्रवेश कर्यो. त्यां प्रेमना आंसुने वरसावनारा रामे लक्ष्मण सहित पोतानी माताओना चरणकमलने नमस्कार कर्यो. विनीत एवी सीता अने विशल्या विगेरे वधुओए पण सासुओना चरणनी उत्तम भक्ति करी. हर्षथी विस्मित मनवाली माताओए पण तेमने आशिर्वचन दीधां. ज्यारे रामे अयोध्यामां प्रवेश कर्यो ते वखते सर्वे नगरवासी जनो हर्षथी व्याप्त थइ गया.

पछी श्री रामना प्रवेशोत्सवथी हर्षित चित्तवाला विनीत भरते हाथ जोडी रामनी विनंती करी के, "हे विभो! हवशां म्हारा उपर कृपा करी मने व्रत लेवानी आज्ञा आपो. हुं आटला दिवस आपनी आज्ञाथीज पिताना आचरणने अनुसरतो छतो रह्यो छुं." रामे कह्युं. "कुलमां मुकुटरूप हे भरत बंधो! तुं दीर्घकाल पर्यंत राज्य कर. अमे तो फक्त मलवाने माटे

आव्या छीए पण राज्यने अर्थे आव्या नथी." ज्ञरते फरीथी कह्युं. "हे ई-श ! में आपनी आज्ञाथीज आ राज्यनुं चीरकाल पर्यंत पालन कर्युं छे, पण हवे तो हे ज्ञाइ ! उज्वल एवां पुण्यने खीलारूप आ राज्य लीलाथी म्हारे शर्युं; राम लक्ष्मणे बहु प्रेमथी विनीतापुरीना साम्राज्य पदने धारण करवानो आग्रह कर्यो तो पण ज्ञूपतियोने विषे चूमामणिरूप ज्ञरते तुरत अनेक ज्ञूपालोनी साथे विधिपूर्वक चारित्रने अंगीकार करी तपथी समग्र एवा आठे कर्मोनो क्षय करी अनंत सुखने आपनारा मोक्षपदने स्वीकार्युं. पछी हर्षित एवा विज्ञीषण विगेरे सर्व राजाउए रामने कह्युं के, "हे प्रज्ञो ! जो आप आज्ञा आपो तो अमे म्होटा उत्सवपूर्वक आपने राज्याज्ञिषेक करीए." रामे कह्युं. "हे ज्ञूमिपालो ! तमे सारा दिवसने विषे अनेक एवा म्होटा उत्सवोथी रावणने जीतनारा लक्ष्मणने वासुदेव पदनो अज्ञिषेक करो." रामनी आवी आज्ञाथी राक्षस, विद्याधर अने ज्ञूमिपालोए हर्षवमे वाजींत्रोना नाद पूर्वक म्होटा उत्सवथी प्रतिवासुदेव एवा रावणने मारनार लक्ष्मणने वासुदेव पदनो अज्ञिषेक कर्यो अने रामने बलदेव पदनो अज्ञिषेक कर्यो. त्यार पछी तेउए रामलक्ष्मणनी आगल मुक्ताफलादि अनेकवस्तुउ ज्ञेट तरीके मूकी. आ वखते रामे विज्ञीषणने लंकापुरीना द्वीपनुं अधिपतिपणुं आप्युं अने कपीश्वर एवा सुग्रीवने कपिद्वीपनुं समस्त राज्य सोंप्युं. वली उदार चित्तवाला रामे आश्रितो उपर प्रेमने लीधे ज्ञामंमल विगेरे बहु ज्ञूपतियोने जूदा जूदा इष्टदेशो आप्या. पछी उग्रतेजवाला शत्रुघ्न वीरे पोताना डुर्द्धर बलथी युद्धमां मधुदेशना राजाने जीती मथुरा नगरीना साम्राज्यपदने ग्रहण कर्युं. आम शोल हजार ज्ञूपतियोए सेवन कर्यां छे चरण कमल जेमना एवा राम लक्ष्मणे निष्कंटक एवुं पूर्ण अर्धा ज्ञरतखंमनुं राज्य दीर्घकाल पर्यंत कर्युं. सुमित्राना पुत्र लक्ष्मणने शोल हजार स्त्रीयो थइ. तेमां विशल्या विगेरे आठ पटराणीयो हती. अनुक्रमे तेउने लक्ष्मण समान आकृतीवाला, शत्रुउथी अजय अने साम्राज्यलक्ष्मीने वरवामां उचित अंगवाला श्रीधर विगेरे बसोने पच्चास पुत्रो थया. श्रीरामने पण उत्तम रूपवाली आठ हजार स्त्रीयो हती; तेमां उत्तम रूपवाली सीता विगेरे चार पटराणीयो हती.

कोइ वखते सीताये रात्रीने विषे स्वप्नामां वैमानथी चवेला बे देव-

तानुने पोतानां मुखमां प्रवेश करता जोया. पछी जागीने तेणे ते स्वप्न पोताना पति रामने कह्युं. राम पण विचार करीने प्रसन्न थइ प्रियानी आगल ते स्वप्ननुं फल कहेवा लाग्या के, "हे मनोहरमुखवाली ! तने पवित्र एवा उत्तम प्रतापवाला बे पुत्रो थशे." रामनां आवां वचनथी संतुष्ट थयेली सीता पोताना मंदीरप्रत्ये गइ. त्यारपछी तेणे जेम रोहणाचल पर्वतनी भूमी निर्मल महामुल्यवाला माणिक्यने धारण करे तेम गर्भने धारण कर्यो. जेम निश्चे शरदृरुतुनी चंद्रज्यात्स्नाने विषे कोइ किंचितूमात्र उष्णपणुं देखी शकतो नथी तेम रामनी बीजी स्त्रीयो सीताने विषे क्यारे पण पापरूप दोष देखती नहोती. एक दिवस ते शोक्योए जनकराजपुत्रीने माथे मिथ्या दोष आरोपण करवाना हेतुथी एम कह्युं के, "तुं जगतूने आश्चर्यकारी अने जोवा योग्य एवा रावणनां रूपने आलेखी अमने देखाड." सीताये मुग्ध भावथी उत्तर आप्यो. "हे व्हेनो ! में क्यारे पण रावणनुं संपूर्ण अवयव जोयुं नथी, फक्त में एना पग दीठा छे." सपत्नीयोए कह्युं. "त्यारे तेना बन्ने पग आलेखीने अमने बताव." सरल स्वभाववाली सीताये ते वखते दिव्य एवा रावणना बन्ने पग आलेख्या. आम सीताना कलंकनुं मूल पोताने प्राप्त थयुं; तेथी हर्ष पामेली तथा उत्पन्न थयेला कषायना पूरवाली सर्वे शोक्योए एकांतमां रामनी पासे जइने कह्युं. "हे प्रिय ! आपने सीता बहु व्हाली छे, तोपण ते निरंतर रावणनुंज ध्यान करे छे. कारण जो एम न होय तो ते सीता रावणना बन्ने पगने आलेखी पोतानी पासे शा माटे राखे ?" आम कहीने तेउए रावणना चरणनी छबी रामने देखाडी; परंतु रामे सीता उपर पूर्ण प्यारने लीधे ते स्त्रीयोनुं कहेवुं चित्तने विषे मान्युं नहि. कारण संत पुरुषो क्यारे पण तुच्छ प्रकृतीवाला थता नथी.

पछी ते शोक्योए इर्ष्याने लीधे सीताना अपवादने तुरत लोकमां प्रसिद्ध करवा मांड्यो. कह्युं छे के—अत्यंत क्षुद्र अंतःकरणवाला पापीयो शुं शुं वृथा एवुंय पण अवलुं आचरण नथी करता ? पछी सीताये रामने कह्युं. "हे पूण्यवंत ! आपणां उद्याननां अति सुगंधवालां पुष्पोवडे नगरीमां रहेली अरिहंत प्रभुनी प्रतिमाने पूजन करवानो मने दहोलो उत्पन्न थयो छे." पछी त्यां वसंतरुतुना उत्सवने विषे अयोध्या नगरनी क्रीडाने जोती एवी सीताये महोत्स-

वपूर्वक जैनमंदिरोने विषे अरिहंत प्रभुनी उद्याननां पुष्पवमे पूजा करी. आ वखते जनकराजपुत्री सीतानुं दक्षिणनेत्र बहु फरकवा लाग्युं; तेथी कांइक खेद पामेली तेणे ए वात श्रीरामने कही. रामे कह्युं. "हे प्रिया! ए सारुं नथी." सीताये कह्युं. "म्हारुं रावणे हरण कर्युं, एथी पण बीजुं मने शुं म्होटुं कष्ट प्राप्त थवानुं हशे? हे नाथ! हवणां मने आपनो वियोग न थाओ." खेदथी पूर्ण थयेली सीता आवी रीते वारंवार कहेवा लागी एटले रामे कह्युं. "हे देवी! धीरा थाओ! बहु खेद करवाथी शुं! पूर्वे करेलुं शुभाशुभ कर्म कोइनुं मुधा थतुं नथी, माटे घरप्रत्ये जाओ, देवपूजा करो अने श्रेष्ठ मुनियोने दान आपो." पोताना प्रियनां आवां वचन सांभली धैर्यने धारण करती एवी सीता, पोताना मंदिरप्रत्ये जइने जिनेश्वरनी पूजा, मुनीश्वरोने दान अने तपनुं आचरण करवामां तत्पर थइ.

कोइ वखते अयोध्या नगरीना महाजन लोको एकठा थइ रामनी पासे आव्या एटले रामे संतुष्ट चित्तथी तेमने सत्कार पूर्वक कह्युं के, "हे उत्तम पुरुषो! तमारे जे कांइ कहेवानुं होय ते कहो." महाजन लोकोए कह्युं. "हे विभो! अमे आपनी आगल अमारी विनंती कही शकता नथी." रामे फरीथी कह्युं. "तमे निर्भय अने निःशंक चित्तवाला थइ जे कहेवानुं होय ते कहो." पछी तेओए स्वस्थ चित्तवाला थइने कह्युं के, "हे नृपति! लोको एम कहे छे के, अत्यंत कामातुर चितवाला रावणे सीतानुं हरण कर्युं अने ते सीता रावणना घरप्रत्ये दीर्घकाल पर्यंत रही, तो ते शुद्ध शीलवाली केम रही हशे? आम छे छतां प्रौढ अने बुद्धिमान् एवा श्री रामे पूर्वना प्रेमने लीधे निःशंक थइ सीताने सती मानी पोतानी सर्व स्त्रीयोने विषे मुख्य बनावी. हे नाथ! आवो लोकापवाद तमारी उज्वल कीर्तिरूप वस्त्रने मशना समूहनी पेठे मलिन करे छे. तो हे नरेंद्र! आप ए लोकापवादने महावृद्धि पामेलो न करो. वली "राम परीक्षा कर्या विना सीताने पोताना घरने विषे लाव्या." ए महा अपवाद समस्त राक्षसोना कुलमां उत्पन्न थयेला तमारा यशनो बहु नाश करे छे." आवां महाजनलोकोनां वचन सांभली रामे तेमने कह्युं. "तमे आवुं हित वचन म्हारी आगल कह्युं; तेथी निश्चे तमे म्हारा भक्तजनो छो. हे सुजनो! हुं पोताना जीवितथी पण अधिक एवी सीताने माटे

आवा लोकोपवादने सहन करीश नहि. कारण के, सत् पुरुषोने यश एज सर्व द्रव्य कहेवाय छे." रामे आवो पोतानो अभिप्राय विचारपूर्वक ते सर्व महाजन लोकने जणावी सत्कारथी विदाय कर्या; तेथी तेउ सर्व पोतपोताने स्थानके गया.

पछी राम रात्रीने विषे पण ते अपवादथी शंकित मनवाला थइ पोते नगरीने विषे भमता छता ए अपवादने सांभलवा लाग्या. वली तेमणे ए अपवादन सांभलवा माटे नगरनी बाहार मोकलेला पोताना गुप्त सेवको जे जे सांभलता ते ते सर्व रामनी पासे आवीने निवेदन करता. एक दीवस सुग्रीव, हनुमान अने विभीषण विगेरे अनेक सुभटो सहित सभामां बेठेला रामे कोइ एक पोतानी पासे आवेला सेवकने पूछ्युं एटले तेणे पगले पगले संभलातो ते अपवाद रामने कही संभलाव्यो के, "रावणे पोताना घरने विषे राखेली सीताने नहि भोगवी होय एम केम घटे? छता रामे निःशंक थइ तेने सती मानी पोताना घरने विषे राखी!!!" सेवकना आवां वचन सांभली क्रोधथी कंपित थयेला लक्ष्मणे कह्युं. "अरे लोको! महासती एवी सीताने विषे जे कोइ माणस दोषनुं आरोपण करशे, तेने हुं तुरत यमराजनो परुणो बनावीश." रामे कह्युं. "हे सुकृतवंतबंधो! पूर्वे में आ प्रमाणे अधिकारीयोनां मुखथी सांभल्यु छे. वली एटलुंज नहि पण में पोतानी जाते सांभल्यु छे अने रात्रीने विषे मोकलेला चर लोकोनां मुखथी पण एमज सांभल्युं छे; माटे रावणे हरण करेली सीताने वनमां त्यजी दइश के, जेथी विचित्र बुद्धिवालो लोक म्हारो अपवाद न बोले." आवां वज्रपातसमान रामनां वचन सांभली वासुदेवरूप लक्ष्मणे कह्युं. "हे बंधो! आ महा मुर्ख एवा नागरीक लोकनां कहेवाथी महासती सीताने न त्यजो न त्यजो!! अहो! अत्यंत श्रेष्ट एवां राज्य सुखमां आसक्त थयेला आ नगरवासी लोको बीजा माणसना अपवादने त्यजी दइ राजाना अपवाद बोले छे, माटे दंड करवा योग्य एवा ते नागरीक लोकोने धिक्कार छे!" लक्ष्मणे आम कह्या छतां पण रामे तो कृतांत नामना सेनापतिने आज्ञा करी के, "तुं घोर एवा वनमां सीताने मूकी तुरत अहिं पाछो आव्य, विलंब करीश नहि." कानने पीडा उपजावनारा रामना आवा हुकमने सांभली लक्ष्मणे पगमां पडीने कह्युं. "हे बंधो! म्हारा उपर प्रसन्न थाउ! प्रसन्न थाउ!! अने अपराध विनानी आ महासती सीताने वनमां न-

त्यजी द्यो ! न त्यजी द्यो !! " रामे " तमारे आवुं फरीथी नहि बोलवुं. " एम कही लक्ष्मणने जवानी आज्ञा करी, तेथी अत्यंत खेदातुर थयेला लक्ष्मण पोताना घर प्रत्ये गया. पछी इर्ष्यावंत एवा रामे कृतांत सेनापतिने फरीथी आज्ञा करी के, "त्हारे संमेतशिखर तीर्थनी यात्राना मीषथी सीताने महा अरण्यमां त्यजी देवी. "

पछी सारथीये पोतानो रथ तैयार करी सीतानी पासे आवीने आ प्रमाणे कह्युं. " तमने अयोध्यापतिये उत्तम अने मनने इष्ट एवी संमेतशिखर तीर्थनी यात्रा करवा जवानी आज्ञा आपी छे." पछी अनेक आभुषणोने धारण करी निष्कपट चित्तवाली सीता रथ उपर बेठी एटले अनेक अपशुकन थया छतां पण सेनापतिये रथने आगल चलाव्यो. अनुक्रमे ते गंगासागरना संगमरूप तीर्थने उतरी ज्यां अनेक सिंहो गर्जना करी रह्या हता एवा सिंहनाद नामना महा अरण्यमां आवी पहोच्या. पछी " आ अरण्यमां सीताने केम त्यजी देवाय ? " एवा वीचारथी अत्यंत खेद पामेला अने हृदयमां दुःखथी आकुल व्याकुल थयेला ते सेनापतिये रथने उभो राख्यो एटले सरल स्वभाववाली सीताये तेने कह्युं के, " अरे सारथी ! तुं रथने आगल केम नथी चलावतो ? " सीतानां आवां वचन सांभली जेनां नेत्रमांथी आंसुनी धाराउ वहेवा लागी हती एवा सारथीये उत्तर आप्यो के, " हे मात ! हुं महाराजा रामने वश छुं, तेथी शुं करुं. सांभलो. रामे नगरवासी जनो पासेथी तमारो अपवाद सांभल्यो; तेथी आंसुथी व्याप्त नेत्रवाला लक्ष्मणे ना कह्या छतां पण तेमणे तमने त्यजी दीधां छे. हे स्वामिनी ! अने तेथीज निर्दय चित्तवालो हुं तमने तीर्थयात्राना मीषथी आ महान् अरण्यमां तेडी लाव्यो छुं. हे मात ! वाघ विगेरे हिंसक पशुउथी घोर एवा आ वनमां पोताना शीलवृत्तथी रक्षण करायला तमे पोताना पति रामनी विषम आज्ञाथी रहो. " सारथीनां आवां वचन सांभली सीता मूर्छा पामी एटले कृतांत सारथीये तेने जाणे तुरत मृत्यु पामी गइ होयनी ? एम जाणी अश्रुधाराने वर्षावता छता बहु रुदन करवा मांड्युं. पछी शीतल पवनवडे मूर्छा रहित थयेली सीताये पण धैर्य त्यजी रुदनपूर्वक विलाप करवा मांड्यो के, " हे करुणाना समुद्र ! तमे अपराध विना म्हारो सहसा त्याग केम कर्यो ? आम कहीने फरी ते मूर्छा पामी. वली सचेत थइ

त्यारे वनवासथी भय पामती सीता पोताना पुण्यरहितपणाने तथा विपत्ति-ना समूहने आपनारा दैवने निंदवा लागी. छेवट खेदातुर थयेली जनकराज-पुत्रीये बहु काल धीरपणुं धारण करीने सारथीने पूछ्युं. "हे भद्र! निश्चे अ-हिंथी साकेतपुर केटले दूर छे अने राम क्यां छे? सारथीये उत्तर आप्यो के, "हे सुशीले! अहिंथी साकेतपुर दूर छे तेम तमारे रामने पूछवाथी पण शरयुं. कारण के, जे रामे तमारो अपराध विना त्याग कर्यो छे." सारथी-नां आवां वचन सांभली रामने विषे बहु भक्ति राग धारण करती सीताये तेने कह्युं. "हे सेनापति! त्हारे दूर रहेला रामने म्हारो संदेशो आ प्रमाणे कहेवो. "में पूर्व भवने विषे घणां अशुभ कर्म उपार्जन कर्यां हशे, तेनो आ उदय थयो छे. तो हवे हुं जेम तेम करी ते दुःखने सहन करीश; परंतु सत्कुलमां उत्पन्न थयेला आपे आ योग्य कर्युं नथी. जो कांइ दोष उत्पन्न थाय तो माणस तेनी निश्चे दिव्य परीक्षा करे छे तो पछी विवेकवंत आपे परीक्षा कर्या विना मने शा माटे त्यजी दीधी? हे वल्लभ! म्हारा पूर्व कर्मना योगथीज आपे म्हारी परीक्षा करी नहि. तेमज पोताना बंधु एवा लक्ष्मणनुं वचन पण सांभळ्युं नहि. फक्त वाचाल लोकोए कहेलुंज हृदयमां धारण कर्युं!!" आम पोता-नो संदेशो कहेती एवी सीता फरी मूर्छा पामी. वली सचेत थइ अने कहेवा लागी के, "हाय हाय! म्हारा अत्यंत वियोगथी तप्त थयेला राम केम जीवी शकशे? हे भद्र! म्हारी योग्य आशिषथी रामनुं अने लक्ष्मणनुं कल्याण थाओ. वली त्हारा मार्गो पण कल्याणकारी थाओ. हे भाइ! हवे तुं पाछो वल अने श्री रामनी पासे जा." पछी "अहो! पोताथी अवलां मुखवाला एवाय पण रामने विषे अनुकुल रहेली आ महा सती केवुं बोले छे! एम विचार करतो सेनापति हृदयमां कष्ट पामतो छतो सीताने प्रणाम करी पाछो वल्यो.

पछी रामना वियोगथी अत्यंत दीन अने नम्र एवी सीता मृगलीनी पेठे शून्य वनने विषे एकली भमती छती बहु वृक्षवाला कोइ पर्वतनी मध्य मेखला उपर गइ. त्यां वनना पशुओथी भय पामती अने गाढ दुःखथी पूर्ण ते रुदन करवा लागी एटलामां तेना रुदनना शब्दने सांभली कोइ भूपति त्यां आव्यो. सीताये बहु संभ्रमथी भय पामता छतां पोताना अंगथी देदीप्य-मान कांतिवालां सर्व आभुषणो उतारी ते राजानी आगल मूक्यां. राजाए

हसीने कह्युं. " हे सती ! मननी अंदर शंका न करो अने आ सर्व आभुषणो तमारा अंग उपरज रहेवा द्यो. हे भद्रे ! तमे कोण छो अने तमने आवुं कष्ट क्यांथी ? अने वली आ वनने विषे भमवानुं शुं कारण ? हे सुभगे ! आप पोतानुं मन स्वस्थ करी सर्व शंकाने त्यजी दइ सर्व वात निवेदन करो." ते अवसरे राजानी पासे उभा रहेला सुमती प्रधाने कह्युं. हे भद्रे ! श्री पुंमरीकपुरना राजा अने बंधुमतिना प्राणनाथ एवा गजवाहननो पुत्र आ वज्रजंघ छे. ए परस्त्रीयोनो भाइ, जिनराजनो भक्त अने प्रसिद्ध भुजदंमना बलवालो होवाथी निश्चे तमारी वात पूछे छे.

पछी संतुष्ट थयेला चित्तवाली सीताये तेमनी आगल पोतानो सर्व वृत्तांत कही संभलाव्यो एटले वज्रजंघ राजाए निर्मल शीलवाला वंशना मृडुपणाने जाणीने जनक सुताना कर्मने निंदता छता तथा पोताना हृदयमां रामना जमपणानो वारंवार विचार करता छता सीताने कह्युं. " हे जनकराज पुत्री ! तुं निश्चे म्हारी व्हेन छे. वली जेवी रीते तुं रामना वियोगथी पोताना हृदयने विषे बहु दुःख धारण करे छे तेवीज रीते राम पण त्हारा वियोगथी बहु दुःखी थशे. हे वत्से ! तुं आ भवने विषे म्हारी साधर्मी व्हेन छे, माटे म्हारे घेर चाल." हर्षित हृदयवाली सीताये परिणामे हितकारी एवां तेनां वचनने जाणीने तत्काल अंगीकार कर्युं, पछी वज्रजंघ राजाए ते पोतानी साधर्मी व्हेन सीताने म्होटी पालखीमां बेसारी महोत्सव पूर्वक पोताना पुंमरीक नगरमां प्रवेश कराव्यो अने तेने रहेवा माटे उत्तम मंदीर सोंप्युं. सीता त्यां रही श्रेष्ठ एवा धर्मकार्यने विषे उद्यमवंत थइ. ते वखते तेना गर्भमां रहेला उत्तम बे पुत्रो तत्व अने विवेकनी पेठे वृद्धि पामवा लाग्या.

हवे कृतांत सेनापतिये तुरत रामनी पासे आवीने गद्गद् वाणीथी कह्युं के " हाय हाय ! में व्याघ्रादि अनेक पशुउथी भरपूर एवा सिंहनाद नामना वनने विषे सीताने त्यजी दीधी. हे ईश ! आपे जनकराजपुत्रीने त्यजी दीधां, ए वात सांभली सीता दुःखने लीधे बहुवार मूर्छा पाम्या. पछी सचेत थया एटले दीर्घकाल पर्यंत बहु विलाप करी तेमणे आपने संदेशो मोकल्यो छे के, " हे नीतिज्ञ ! आपनी नीति अने जगत्प्रसिद्ध एवी चातुरी कांइ अलौकिक देखाय छे कारण के, जे आपे फक्त मूर्खजनोनां वचनोने सांभली प-

रीक्षा कर्या विना म्हारो त्याग कर्यो. हे देव! अथवा तो म्हारा पूर्वजवना घोर कर्मनो म्होटो विपाक उदय आव्यो हशे के, जेथी आपे परीक्षा कर्या विना म्हारा उपर अपवाद मूकी आवा जयंकर वनने विषे त्यजी दीधी." (कृतांत सेनापति रामने कहे बे के,) हे नाथ! आ प्रमाणे कहीने सीता फरी मूर्छा पाम्यां. थोडीवारे सचेत थया एटले वली कहेवा लाग्या के, "हाय हाय! म्हारा वियोगथी खेद पामता राम शी रीते पोताना प्राणने धारण करी सकशे?" सीताये कहेला संदेशारूप कृतांत सारथीनां आवां वचन सांजली जनकपुत्रीना वियोगरूप तिव्ररोगथी अत्यंत पीडा पामेला राम मूर्छा पाम्या. पबी शीतल जल विगेरेना उपचारथी सचेत थया एटले गाढ विलाप करवा लाग्या. आम सीताना वियोगथी पीडा पामेला रामने जोइ लक्ष्मणे कह्युं. "हे बांधव! तमारी प्रिया वनने विषे पोताना शीलथी विघ्नोने दूर करती बती जीवती संजवे बे, माटे ज्यां सुधीमां ते तमारा वियोगथी मृत्यु न पामे तेटलामां तेने अहिं तेडी लावो." लक्ष्मण आ प्रमाणे रामने कहे पोतेज कृतांत सेनापतिनी साथे वैमानमां बेसी तुरत ते सिंहनाद वनमां आव्या. त्यां तेमणे बहु यत्नथी सीतानी शोध करी, पण ते जडी नहि; तेथी ते पोताने घरे पाबा आव्या. पबी "निश्चे ते वनमां सीतानुं कोइ वाघ अथवा सिंह जक्षण करी गयो हशे." एम धारी राम लक्ष्मणे सीतानी प्रेत क्रीया (उत्तर क्रीया) करी. जामंडल विगेरे सर्व बंधुवर्ग पण सीताना मृत्युना समाचार सांजली बहु रुदन करवा लाग्या. रामे पण पोताना चित्तने विषे पोताना अविचारी कार्यनी बहु निंदा करी.

हवे अहिं पुंडरीक नगरने विषे सुखेथी रहेला सीताये शुज दिवसे उत्तम समयमां श्रेष्ट लग्नने वखते वाव्य दिशाना गजराज पुष्पदंतना सरखा कांतिथी देदीप्यमान एवा बे पुत्रोने जन्म आप्यो. वज्रजंघ राजाए ते पुत्रोनो जन्मोत्सव करी पहेलानुं अनंगलवण अने बीजानुं मदनांकुश एवां नाम पाड्यां. पबी धावमाताउथी लालन पालन कराता ते बन्ने पुत्रो पोतानी मेले श्री रामना वंशरूप कल्पवृक्षनी उत्तम फल संपत्तिने धारण करता बता अनुक्रमे वृद्धि पामवा लाग्या. एक दिवस प्रसिद्ध गुणवालो, बहु शास्त्रनो जाण, समकीतथी सुशोजित, उत्तम उपासकोना सर्व व्रतने धारण करनारो,

रात्री दिवस सर्व तीर्थयात्रा करवाथी पवित्र आकृतिवालो, शील वृत्तथी सुशोभित अने भाग्यने जाणनारो कोइ सिद्धार्थ नामनो विद्वान् भीक्षा निमित्ते सीताना घरे आव्यो. सीताये हर्ष पामी ते अतिथिने विविध प्रकारनां भोजनथी जमाड्यो अने आदरथी तेना आववानुं स्वरूप पूछ्युं. अतिथिये तुरत पोतानी सर्व वात खरेखरी कहीने पछी सीताने तेनी वात पूछी एटले सीताये पण पोतानुं सर्व वृत्तांत तेने कही संभलाव्युं. पछी त्रीकालवेत्ता एवा ते नैमितिकरूप अतिथिये तेनी आगल प्रगटपणे कह्युं के, "हे सीता! तुं फोगट शा माटे खेद करे छे? आ यौवनावस्थाने पामेला त्हारा पुत्रो पराक्रमवमे इंद्र समान अने सर्व भुपतियोना मुकुटरूप थशे." पछी सीताये हर्षथी ते अतिथिने पोताना घरने विषे राखी बुद्धिवंत एवा पोताना बन्ने पुत्रोने सर्व उत्तम कलाउनो अभ्यास कराववा मांड्यो. अनुक्रमे पुण्यना अर्थी एवा ते अतिथि पासे अभ्यास करता बन्ने पुत्रो पोतानी रूपकांतिथी कामदेवनो तिरस्कार करनारी युवावस्थाने प्राप्त थया छता सर्व कलामां निपुण थया. पछी वज्रजंघ राजाए अनंगलवणकुमारने उत्तमरूपवाली बत्रीश राजकन्याउ परणावी अने पोतानी लक्ष्मीवती राणीना उदरथी उत्पन्न थयेली शशिचुलिका नामनी पुत्री पण आपी. वली तेणे सीताना न्हाना पुत्र मदनांकुशना पाणिगृहणने माटे पृथ्वीपुरना अधिपति एवा पृथुराजानी श्रेष्ठ पुण्यवंत कनकमालानी याचना करी. ते वखते पृथुराजाए दूत मुखथी कहेवराव्युं के, "हुं एवा अजाण्या कुलरूपवालाने म्हारी पुत्री शी रीते आपुं?" पृथुराजानां आवां वचन सांभली अत्यंत कोपायमान थयेलो वज्रजंघ पोताना सैन्यने तैयार करी अनंगलवण तथा मदनांकुश सहित पृथुराजा तरफ चाल्यो. पृथुराजा पण पोतानी सहाय्यने माटे पोतनपुरना भूपतिने बोलावी महाबलवंत एवा वज्रजंघना सैन्य तरफ चाल्यो. पछी बन्ने सैन्यनुं युद्ध चाल्युं, तेमां पृथुराजाना सैन्यथी पोतानुं सैन्य नाश पामेलुं जाणी अनंगलवण तथा मदनांकुश ए बन्ने महा बलवंत वीरो युद्ध करवाने उठ्या. पछी ज्यारे ते बन्ने भाइयो युद्ध करवा लाग्या त्यारे कोइ महा सुभट तेमनी आगल टकी शक्यो नहि. छेवट नासी जता पृथुराजाने जोइ महा भुजाबलवाला ते बन्ने कुमारोए कह्युं. "हे भूमिपाल पृथु! अमने अजाण्या वंशमां उत्पन्न

थयेला जाणीने प्रख्यात वंशमां उत्पन्न थयेलो तुं आ रणसंग्रामथी स्त्रीनी पेठे केम नासी जायछे ?" पछी पृथुराजाए पाछा वली सर्व राजाउनी समक्ष कह्युं के, "हे कुमारो! निश्चे तमारा आ भुजाना पराक्रमथी में तमारो वंश जाण्यो छे." पछी पृथुराजा पूर्वे याचना करेली पोतानी पुत्रीनो मदनांकुशनी साथे संबंध करी तथा वज्रजंघनी साथे संधी करी ते पोताना नगर तरफ गयो. वज्रजंघ पण पोताना सर्व सैन्यने त्यांज पडाव करावीने रह्यो, एवामां नारद ऋषि त्यां आव्या. वज्रजंघे तेमने बहु आदर सत्कार पूर्वक श्री रामना बन्ने पुत्रो सांभलतां छतां सर्व राजाउनी समक्ष कह्युं. "हे मुनि ! पराक्रमथी जाण्यो छे विशालवंश जेनो एवा आ मदनांकुशने पृथुराजा हर्षपूर्वक पोतानी पुत्री आपशे, माटे एमनो समग्रवंश अमने कही सम्भलावो." नारदे कह्युं. "अहो ! विश्वमां प्रसिद्ध एवा आ कुमारोनो वंश कोण नहि जाणतो होय ? के, जेने पूर्वे स्थापन करनार त्रण विश्वना अधिपति श्री रुषभदेव प्रभु हता. वली जेमना वंशने विषे तीर्थंकर, चक्रवर्त्ती अने बलदेव तथा वासुदेव थया छे एवा आ कुमारोना पिता राम के जेमना न्हाना भाइ लक्ष्मण छे, तेमने कोण नहिं जाणतो होय ? अर्थात् सर्वे जाणे छे. ज्यारे राम रणसंग्राममां रावणने मारी अयोध्यामां आव्या त्यारे तेमणे नागरिक लोकोनां मुखथी अपवाद सांभलीने अपयशना भयथी सीताने त्यजी दीधी छे." मदनांकुशे हसीने कह्युं. "हे मुनीश्वर ! रामे ते सारुं कर्युं नथी के, जे फक्त लोकोना कहेवाथी उत्तम शीलवती पोतानी प्रियाने महा भयंकर वनने विषे त्यजी दीधी. हे मुनि ! जो के अपवादने दूर करवाना लोकमां अनेक उपायो छे, छतां हा ! दयालु एवा ते रामे नीच माणसोने योग्य एवुं आ कठोर कृत्य शा माटे कर्युं हशे ?" अनंगलवण कुमारे पूछ्युं "हे मुनि ! अहिंथी कोशलापुरी केटले दूर छे ? मुनिये उत्तर आप्यो. "हे वीर ! ते पुरी अहिंथी एकसो ने साठ योजन छे."

पछी नम्र एवा ते बन्ने भाइयोए वज्रजंघ राजाने कह्युं. "हे प्रभो ! आप जो कृपा करी अमने आज्ञा आपो तो अमे कोशला नगरीने विषे राम लक्ष्मणने जोवा माटे जइए. वज्रजंघे ए वातनी हा कहीने पछी पृथुराजानी पुत्रीने मदनांकुशनी साथे नाना प्रकारना वाजींत्रोना शब्द पूर्वक म्होटा उत्सवथी परणावी. पछी ते बन्ने कुमारो वज्रजंघ अने पृथुराजाना सैन्यने लइ

अनेक देशोना बहु राजाउने जीती गंगानदीने उतरी अने उत्तर दिशामां कैलाश पर्वतनी पासे आव्या. त्यां तेमणे सिंहल विगेरे बहु समृध्धिवंत देशोने पोताना स्वाधिन कस्या.

पछी सिंधुनदीना सामे तीरे जइ त्यांना बहु राजाउने जीती अने पछी तेउनीज साथे महा हर्षवंत एवा ते बन्ने भाइयो पाछा पुंमरीक नगर प्रत्ये आव्या. त्यां वज्रजंघ राजाए तेमनो प्रवेश महोत्सव करयो. बन्ने वीरोए पोताना घरने विषे आवी बहु प्रेमथी सीताने प्रणाम कस्या. महासती सीताये पण प्रसन्न मनथी अनेक देशना अधिपतिपणानी विजय लक्ष्मीने मेलवनारा ते पोताना बन्ने पुत्रोने "श्री रामलक्ष्मणना समान पराक्रमवाला तथा दीर्घ आयुष्यवाला थाउ." एम आशीष आपी.

पछी कोइ दिवसे बन्ने भाइयोए हाथ जोमीने वज्रजंघ राजाने कह्युं. हे विभो! आपे प्रथम अमने कोशला नगरीप्रत्ये जवानुं कह्युं हतुं, माटे हे नरेंइचंइ! आपणी सेना तुरत तैयार करो." वज्रजंघ राजाए तुरत पोतानी सैना तैयार करी एटले विनयथी नम्र एवा रामपुत्रोए पोतानी माता सीताने प्रणाम करीने कह्युं. "हे मात! जो आप अमने आज्ञा आपो तो अमे कोशलापुरी प्रत्ये जइये अने अमारा पिता तथा काकाने क्षणमात्रमां अमारुं भुजाबल देखामीये." सीताये कह्युं. "हे पुत्रो! तमारे पितानी अथवा काकानी साथे उग्र युध्ध करवुं ते योग्य नथी; परंतु पुत्रोए विनय करवो एज वखाणवा योग्य छे." पुत्रोए कह्युं. "अमे तमारा पुत्रो छीए, एवुं लज्जाकारी वचन तेमनी पासे शी रीते कहीए? तेमज अमारा पिता राम पण अमने मलवामां लज्जा पामे छे. तो हे मात! प्रथम अमे अमारुं उग्र भुजाबल पिताने देखामीने पछी पोताना कुलने योग्य एवो विनय करिशुं." छेवट माताए रजा आपी एटले असंख्य सेना सहित ते बन्ने महा बलवंत कुमारो पोताना भुजबलथी रस्तामां अनेक बलीष्ट राजाउने पण पोताने स्वाधिन करता छता अयोध्यापुरी तरफ चाल्या. अनुक्रमे देश देश प्रत्ये पोताना उग्र पराक्रमने विस्तारता छता अखंमित पराक्रमवाला ते बन्ने भाइयो कोशला नगरीनी सीमा समिपे आवी पहोच्या.

हवे अहिं अयोध्यामां धुलथी व्याप्त थइ गयेली सर्व दिशाउने तथा नाना प्रकारना वाजींत्रोना शब्दना पमछंदाथी पूर्ण थयेला आकाशने जोइने रा-

म लक्ष्मण क्रोध करी कहेवा लाग्या के, "अरे ! पतंग समान मरवानी इच्छा करनारो आ कयो शत्रु अस्मात् अहिं आवे छे ?" एम कहीने क्रोधथी प्रभात-ना सूर्य समान लाल नेत्रवाला ते राम लक्ष्मण तुरत युद्ध भूमीमां आव्या.

हवे एम बन्युं के ए वखते विद्याधरोनो अधिपति भामंडल नारद ऋ-षिना कहेवाथी पोतानी ब्हेन सीताना समाचार सांभली हर्षथी तुरत पुंड-रीक नगरप्रत्ये आव्यो. त्यां ते ज्यारे सीतानी पासे आव्यो त्यारे जनकराज-पुत्रीये तेनी आगल रुदन करतां कह्युं के, "हे बंधो ! रामे म्हारा अपराधनी तपास कर्या विना मने घोर वनने विषे तुरत त्यजी दीधी छे. मने वनवास-रूप एक दुःख तो छे. तेमां बीजुं ए थयुं के, आजे थोडा दिवस थया त्हारा भाणेजो में ना कह्या छतां पण पोताना पितानी साथे युद्ध करवा माटे को-शला नगरीप्रत्ये गया छे." भामंडले कह्युं. "हे ब्हेन ! एक तो रामे मूर्ख-लोकोना कहेवाथी तने सहसा वनमां त्यजी दीधी छे. बीजुं युद्धरसमां आकुल थयेला तेओ शत्रुबुद्धिथी त्हारा पुत्रोने हणी नाखशे. तो एम न थवा माटे हुं झट त्यां जाउं छुं. अहिं विलंब करवो ते योग्य नथी." पछी सीताने वैमानमां बेसारी भामंडल तुरत पोताना भाणेजना बलने जोवा माटे तेमना सैन्यप्र-त्ये आवी पहोच्यो. सेनाना अधिपति एवा रामना पुत्रोए अकस्मात् पोतानी माता सीताने जोइ; तेथी क्षोभ पामेला अंतःकरणवाला तथा प्रफुल्लित थयेलां नेत्र अने मुख कमलवाला तेओए ते सीता माताने नमस्कार कर्यो. पछी सीताना कहेवाथी अत्यंत नम्र एवा अनंगलवण अने मदनांकुश एवा ते बन्ने भाइयोए भामंडलने पोतानो मामो जाणी तेने पण नमस्कार कर्यो. पछी प्रसन्न मन-वाला भामंडले तेओनुं धैर्य जोइने कह्युं. "हे वत्सो ! जो के तमे आ समरांग-णमां अत्यंत दुर्जय एवाय पण शत्रुओने जीतवा समर्थ छो, तथापी उत्तम एवा तमारे पोताना पूज्य पितानी साथे युद्ध करवुं योग्य नथी. कारण जेमणे महा बलवंत एवा रावणने पण जीत्यो छे तो पछी तेमनी आगल बीजो कयो पुरुष युद्ध करवा समर्थ थाय." अनंगलवण अने मदनांकुशे कह्युं. "हे मामा ! ए मनी आगल कोइ टकी सकवाने समर्थ नथी ए आपे सत्य कह्युं छे तथापी जो अमे हवणां युद्धथी पाछा फरीये तो ते अमारा पिता लज्जा पामे, माटे हवणां अमारे बन्ने भाइयोने तेमनी साथे युद्ध करवुं एज योग्य छे." आम

तेउ परस्पर वात करे छे तेटलामां तो बन्ने सैन्यने विषे युद्ध चाल्युं. पछी रामलक्ष्मणना सैन्य प्रत्ये कालरूप एवा ते बन्ने वीरो पोताना मामानी पासे युद्ध करवानी रजा मागी पोताना सर्व सैन्यनी साथे तैयार थया. आ वखते रामना सैन्यने विषे एवो कोइ पालो, रथी, अश्वार के हाथी उपर बेसनारो नहोतो के, जे आ बन्ने महारथीयोना सन्मुख युद्ध करवाने तैयार थयो न होय. छेवट पोताना समग्र बलथी रामना सैन्यने मथन करी अनंगलवण कुमार रामनी साथे अने मदनांकुश वासुदेव एवा लक्ष्मणनी साथे युद्ध करवा लाग्या. आ वखते अनंगलवणे रामने तथा मदनांकुशे लक्ष्मणने जूदु जूदु कह्युं के, “तमे पोतानुं जे बल रावणने देखाड्युं होय ते हवणां अमने देखाडो.” रामे पण अत्यंत घोर एवी युद्धक्रीडा करता एवा महा दुर्जय अनंगलवण कुमारने जोइ पोताना सेनापति कृतांत मुखने कह्युं. “हे सारथी! तुं आ म्हारा रथने झट ए शत्रुनी पासे लइ जा के, जेथी हुं तेने तुरत जीती लउं.” सारथीये कह्युं. “हे नाथ! थाकी गयेला आ घोडाउ अहिंथी आगल चालता नथी तेम रथ पण शस्त्रोना प्रहारथी जर्जरीत थइ गयो छे. वली म्हारा बन्ने हाथो धनुष्य खेंचवाथी बहु थाकी गया छे, तो हवे हुं वारंवार अत्यंत तीव्र एवा प्रहारनी वेदनाने सहन करी शकतो नथी.” रामे कह्युं. “हवणां म्हारुं अंग पण एवुं शिथिल थइ जाय छे के, तेवुं पूर्वे रावणना घोर युद्धने विषे पण थयुं नहोतुं. म्हारां हल मुशलादि दिव्य आयुधो पण आ शत्रुनी आगल वृथा थइ पडे छे. पूर्वे में जगत्‌ना मध्ये जे विजयलक्ष्मी मेलवी हती तेनुं शुं हवणां स्थापन करी शकाशे?” राम आ प्रमाणे पोताना सारथीने कहे छे एटलामां युद्ध करता एवा मदनांकुशे लक्ष्मणना वक्षस्थलने विषे बाणनो एवो प्रहार कर्यो के, जेथी लक्ष्मण रथना उपर तुरत मूर्छा पाम्या. पछी वारंवार चंदननां शीतल जलनुं सिंचन करवाथी सचेत थयेला लक्ष्मणे क्रोधथी विकराल मुख करी शत्रुउना समूहने नाश करनारा चक्रनुं स्मरण कर्युं. चक्र तुरत लक्ष्मणनी पासे आव्युं एटले तेमणे तेने क्रोध करीने तत्काल मदनांकुश तरफ फेंक्युं; परंतु ते चक्र तो मदनांकुशनी प्रदक्षिणा करीने फरी लक्ष्मणना हस्त उपर बेठुं. लक्ष्मणे आवी रीते चक्रने बे वार मूक्युं. चक्र पण मदनांकुशनी प्रदक्षिणा करी लक्ष्मणनाज हस्तने विषे प्राप्त थयुं. आम चक्र वारंवार पाछुं

फर्युं, तेथी नाश पाम्युं छे मान जेमनुं एवा राम लक्ष्मण खेद करता छता पोताना मनमां विचार करवा लाग्या. "हा! आ भरतक्षेत्रने विषे निश्चे नवीन एवा आ बलदेव तथा वासुदेव उत्पन्न थया के शुं ? जे एमना उपर वारंवार फेंकेलुं चक्र पण निष्फल गयुं.!!! त्रण लोकमां वीररूप रावणने जीते छते पण आ बन्नेथी पराजय थयो ए महा समुद्रने तर्या छतां पण खाइमां बुडी गयेला वहाणनी पेठे थयेलुं छे." आवी रीते खेदथी पीडा पामेला राम लक्ष्मणने जोइ नारदऋषिये तेमने कह्युं. "हे राघवो! तमे हर्षने स्थानके आवो महान् खेद शा माटे करो छो ? कारण के, अत्यंत उत्कृष्ट एवा भुजमंडलना पराक्रमवाला पुत्रोथी बलीष्ट एवा तमारो पराजय पण लोकने विषे सर्वस्थानके श्रेयकारी छे. सीता सतीना उदररूप गुफाने विषे निवास करनारा अने वीर पुरुषोना मध्ये मुकुटमणि समान अनंगलवण अने मदनांकुश नामना आ बन्ने पुत्रो तमारा छे. एउ तमारा दर्शनने माटे हर्षथी अहिं आव्या छे. तमारे एमने पोताना दुर्धर वैरने पोषण करनारा शत्रु मानवा नहि." पछी नारदे राम लक्ष्मणनी आगल सीताने वनमां त्यजी दीधी त्यारथी आरंभी पुत्रना जन्मपर्यंतनी सर्व वात कही संभलावी, तेथी दशरथ पुत्रो हर्ष अने लज्जाथी महा विस्मय पाम्या. पछी राम रथथी नीचे उतरी अने हर्षथी बन्ने हाथने पहोला करी पुत्रोने आलिंगन करवा माटे तेमना सामा दोड्या. अनंगलवणे अने मदनांकुशे पण पिताने आवता जोइ पोतपोताना रथमांथी तुरत नीचे उतरी तेमना चरणकमलने विषे नमस्कार कर्यो. रामे तेमने महा हर्षथी आलिंगन कर्युं. पछी हर्षित चित्तवाला बन्ने भाइयोए लक्ष्मणना चरणमां नमस्कार कर्यो. लक्ष्मणे पण तेउने आलिंगनपूर्वक बहु प्रीति उपजावी. शत्रुघ्न भूपतिये पण पोतानां चरणने विषे हर्षथी नमन करता अने सर्व ज्ञातिवर्गने आनंद उपजावता ते पोताना बंधुना पुत्रोने प्रेमथी आलिंगन कर्युं. तारुण्य लक्ष्मीथी व्याप्त, सौभाग्य गुणोथी गरीष्ट अने रूपश्रीथी कामदेवने पण जीतनारा ते बन्ने पुत्रोने जोइने राम विगेरे सर्व मनुष्यो अत्यंत संतोष पाम्या. वैमानमां बेठेला सीता सती पण रामादिकने दुर्जय एवुं पोताना पुत्रोनुं शौर्य जोइने हर्ष पामता छता फरी पुंडरीक नगरप्रत्ये आव्या.

पछी लक्ष्मणादि स्वजनो सहित रामे म्होटा महिमाथी मणिना तोर-

णोए करीने सुशोभित एवी विनीता नगरीप्रत्ये पोताना बन्ने पुत्रोने प्रवेश कराव्यो. आ वखते केटलाक नागरीक लोको रामने, केटलाक सीताने, केटलाक ते बन्ने पुत्रोने अने केटलाक तेमना श्रेष्ठ वंशने एम जूदा जूदा वखाणता हता. पछी रामे वज्रजंघ राजाने सत्कार पूर्वक कह्युं के, "हे महानुभाव ! तमे म्हारी उन्नति करनारुं ए बहु सारुं कर्युं छे के, "जे म्हारा पुत्रोने अहिं लाव्या." आ अवसरे बिभीषण, सुग्रीव, हनुमान विगेरे मुख्य नृपतियोथी युक्त एवा लक्ष्मणे हाथ जोमीने हर्षथी तुरत श्री रामनी विनंती करी के, "हे बांधव ! एक तो आपना वियोगथी अत्यंत तप्त थयेली सीता बहु दूर रही छे. हे विवेकी ! तेमां पण बीजुं ए छे के, हवणां ते महा सती पोताना पुत्ररत्नना वियोग दुःखथी बहु आकुलव्याकुल थइ होय एम देखाय छे, माटे हे अधीश ! जो आप आज्ञा करो तो हुं ए महा सतीने अहिं तेमी लाववा माटे जाउं." लक्ष्मणनां आवां वचन सांभली रामे पोताना मनमां विचार करीने लक्ष्मणने योग्य उत्तर आप्यो के, "हे बांधव ! जो के लोकापवाद तद्दन असत्य छे तो पण मूर्ख लोकोना अप्रमाणिक तथा साररहित वचनोथी त्याग करेली सीताने म्हाराथी पोताना घरने विषे केम लावी शकाय ? हुं सीताने शुद्ध शीलवाली जाणुं छुं तो पण ते प्राणप्रियाने अपवादथी निवृत्त करवाने दिव्यपण करावीने पछी घरने विषे लावीश."

पछी "एम थाओ." एम कहीने हनुमान विगेरे नृपतियोए विनीता नगरीनी बहार क्षणमात्रमां उत्तम सिंहासनोथी सुशोभित एवा म्होटा वैमान तुल्य अनेक श्रेष्ठ मंमपो तैयार कराव्या. पछी श्री रामनी आज्ञाथी देदीप्यमान वैमानमां बेसी सुग्रीव नृपतिये पुंमरीक नगर प्रत्ये जइने सीताने प्रणामपूर्वक विनयथी कह्युं के, "हे मात ! निश्चे रामे तमने तेमवा माटे मने अहिं मोकल्यो छे, माटे पोताना प्रिय प्राणनाथना आ पुष्पक वैमानने विषे आप शीघ्र बेसो." सुग्रीवनां आवां वचन सांभळी पूर्वना स्पष्ट पराभवना स्मरणथी खेद पामती सीताये कह्युं. "अहो ! एक तो आज सुधी पण म्हारा मननी अंदर मने वनमां त्यजी दीधानुं दुःख स्फुरायमान छे तेमां वली बीजा दुःखने आपनारा ते रामनी पासे हुं शी रीते आवुं ? में एमना हृदयनो स्नेह जाण्यो छे." सुग्रीवे फरीथी कह्युं. "हे स्वामिनी ! क्रोध त्यजी द्यो. कारण हवणां सुमित्रा-

ना पुत्रसहित श्री राम अनेक नगरवासी जनो अने नृपालोनी साथे तमारी शुद्धिने माटे विनीता नगरीनी बहार तैयार करेला मंडपोमां सिंहासननी उपर बेठेला छे." सीता प्रथमथीज पोतानी शुद्धिनी स्पृहावाली हती, तेथी सुग्रीवनां संतोषकारी वचनथी ते वैमानमां बेठी. वैमान पण क्षणमात्रमां आकाशमार्गे थइ विनीता नगरीनी समीपे आवी पहोच्युं. पछी जनकराजपुत्री सीता महेंद्रोदय नामना उद्यानमां वैमानथी नीचे उतर्यां एटले लक्ष्मणादि समस्त नरेंद्रोए तेमने सन्मानपूर्वक हर्षथी प्रणाम कर्या. लक्ष्मणे बिभीषणादिकनी साथे सीताने फरीथी प्रणाम करीने कह्युं. "हे निर्मल हृदयवालां जनकराजपुत्री ! तमे तुरत पोताना मेहेल प्रत्ये पधारीने अमने पवित्र करो." सीताये कह्युं. "हे वत्स ! हुं पोतानी शुद्धि कर्या विना क्यारे पण अयोध्या नगरीमां आववानी नथी." पछी लक्ष्मणे ए सर्व वात तुरत रामने निवेदन करी एटले रामे पोते त्यां आवी सीताने कह्युं. "हे देवी ! तमे रावणना घरने विषे दीर्घकालपर्यंत रह्यां छतां अत्यंत शुद्ध शीलवालां छो तो हे प्रिया ! तमे सर्व नगरवासी माणसो अने नृपालोनी समक्ष नवीन एवा दीव्यथी सर्व अपवादने नाश करवाना कारणरूप आत्मशुद्धि करी बतावो." सीताये हास्य करीने कह्युं. "हे राम ! तमारुं विचक्षणपणुं कंइ अलौकिक देखाय छे के, जे तमे गर्भवंती एवी मने परीक्षा कर्या विना वृथा वनने विषे त्यजी दीधी. हे प्राणनाथ ! प्रथम मने तीव्र दंड तो आपी चूक्या अने हवे पाछलथी परीक्षा करवानुं कहो छो ए तमे कांइ अलौकिक नीति प्रगट करी होय एम देखाय छे." रामे विलक्ष बनीने कह्युं. "देवी ! हुं तने विशुद्ध शीलवाली जाणुं छुं, तथापी नगरवासी जनोना विश्वासने माटे एम कहुं छुं." सीताये कह्युं. "हे स्वामिन् ! सांभलो. में दुःसह एवां पांच दिव्य अंगीकार कर्यां छे. तेमां १ ज्वालाथी विकराल एवा अग्निमां प्रवेश करुं, २ अत्यंत तपावेला कोशने जीभवती चाटुं, ३ त्राजवामां तोलाउं, ४ मंत्रेला चोखा चावुं अथवा ५ हलनी लोहमय फालने जीभवती ग्रहण करुं. आ पांच दिव्यमांथी जेनी आज्ञा करो ते करुं." आ वखते नारदऋषि अने सर्व नगरवासी लोको श्री रामने कहेवा लाग्या के, "हे रघुराज ! आ सीता सतीज छे; एमां तमारे जरापण शंका करवी नहि." रामे पण सर्व लोकोने कह्युं. "तमारो विचार श्रेष्ठ छे; परंतु

हा ! पूर्वे तमोएज डुष्ट संकल्पना समूहथी आ महासतीने दूषित करेली छे, तो हवे ते दिव्य विना हवणां शुद्ध शीलवाली शी रीते थाय ? हे नागरिको ! हवे तमारी चपल एवी जीह्वा इंडि जेम तेम बोले नहि एटला माटे सीता पण तमारा विश्वासने माटे म्होटुं दिव्य धारण करो." एम कहीने रामे त्रणसो हाथ लांबी अने बे माथोमा उंमी एक खाइ खोदावी. तेमां पोताना सेवको पासे सूकां चंदननां काष्ठो जराव्यां. छेवट तेमां अग्नि मूकीने ते खाइने चारे तरफथी ज्वाजल्यमान करी.

हवे आ अवसरे वैताढ्य पर्वतनी जत्तर श्रेणी जपर रहेनारो अने आठसो स्त्रीयोनो पति श्री जयजूषण नामनो विद्याधर राज्य करतो हतो. एक दिवसे तेणे पोताना मामाना पुत्र हेमशिख साथे पोतानी करमंमल नामनी प्रियाने सूतेली जोइने क्रोधने लीधे तेने पोताना घरमांथी काढी मूकी अने पोते पण वैराग्यना आवेशथी सर्व संगने त्यजी दइ दीक्षा लीधी. पछी धीर एवा ते जयजूषण मुनि पृथ्वी जपर विहार करता हता. एक दिवस ते महात्मा विनीत नामना जद्यानने विषे कायोत्सर्गे जन्ना हता. हवे जे करमंमल स्त्रीने पोते काढी मूकी हती, ते स्त्री पोतानुं बाकीनुं आयुष्य बहु कष्टथी पूर्ण करी बहु पापने लीधे विद्युद्दंष्ट्रा नामनी एक राक्षसीपणे जत्पन्न थइ. आ स्त्री पूर्वना वैरने लीधे पेला कायोत्सर्गे जन्नेला मुनिने घोर जपसर्ग करती हती; परंतु मुनिये तो तेणे करेला बहु घोर जपसर्गने सहन करी अनंत सुखकारी एवा एक केवलज्ञानने प्राप्त कर्युं. मुनिने केवलज्ञान जत्पन्न थयुं, तेथी इंड अनेक देवताजनी साथे त्यां ते मुनिनो केवलज्ञाननो महोत्सव करवाने आव्यो. ते वखते देवताजए इंडने सीताना दिव्यकृत्यनी वात कही संजलावी. पछी इंड जनकराजपुत्रीने सहाय्य करवा माटे पोताना हरिणेगमेषी देवताने आज्ञा करी पोते पेला केवलज्ञानी महात्मा पासे गयो.

हवे अहिं श्री रामनी आज्ञाथी पवित्र देहवाली, परमेष्ठी मंत्रना ध्यानथी निष्पाप अने सर्व प्रकारना जय रहित एवी सीता खाइनी समीपे आवी. राम ज्वालाथी विकराल एवा अग्निने जोइ खेद पामता छता तुरत पोताना मनमां विचार करवा लाग्या के, "हाय हाय ! में आ जनकराजपुत्रीने घोर दुःखमां वृथा पामी छे. अहो दैवनुं केवुं कुचेष्टित छे !" आवी रीते राम

विचार करे छे एटलामां सीता अग्निनी नजीक आवीने श्री वीतरागनुं स्मरण करती छती कहेवा लागी. "हे जिनेन्द्रभक्तो, देवताओ अने सत्पुरुषो ! तमे सौ सांभलो. में क्यारे पण आ राम विना बीजा कोइ पुरुषने चित्तमां पण धार्यो होय तो आ अग्नि म्हारा शरीरने सहसा भस्मरूप करी नाखजो अने जो हुं सती होउं तो आ अग्नि शीतल थइ जजो." आम कहीने ते महा सती सीताये अग्निने विषे झंपापात दीधो. "अहो ! सीता महासतीनुं आ विशाल सत्व छे !!!" एम देवता, विद्याधर, राजा अने बीजा सर्वलोको उंचा स्वरथी कहेवा लाग्या. आ वखते अग्नि बुझाइ गयो अने खाइ तो पगथीयां सुधी उत्तम जलवडे पूर्ण जाणे अद्भुत रत्नरूप वाव्य होयनी ? एवी थइ गइ. अहो ! निश्चे शीलवतीनां शीलनो कोइ अपूर्व उत्तम प्रभाव विजयवंतो वर्त्ते छे ! ! सीता पण वाव्यनां जलना मध्यभागने विषे श्रेष्ठ कमलोनां उपर रहेला सिंहासनमां उत्तम वस्त्राभरणने धारण करी जाणे सौधर्म देवलोकनी अधिष्टायक देवीज होयनी ? एम बेठी. वाव्यनी अंदर रहेलो जलसमूह पोताना म्होटा तरंगोथी आसपास रहेला सिंहासनोने भींजववा लाग्यो. विद्याधरो भींजावाना भयथी तुरत आकाशमार्गे उंचा जवा लाग्या. पछी ते जलना कलोलथी अत्यंत व्याकुल थयेला राजादि सर्वे लोको कहेवा लाग्या के, "हे महासती ! तुंज अमारुं रक्षण कर ! रक्षण कर ! !" आम तेमणे बहु पोकार कर्यो एटले सीताये ते बोली देता एवा जलना समूहने पोताना बन्ने हाथथी स्पर्श कर्यो एटले ते जलसमूह तुरत वाव्य प्रमाण थइ गयो. पछी स्वस्थ थयेला राजादि सर्व लोकोए सीताना शीलवृत्तनो प्रशंसा करी. देवताए पण प्रसन्न थइ ते महासती उपर पुष्पवृष्टी करी. माताना आवा अद्भुत महिमाने जोइ अनंगलवण अने मदनांकुश ए बन्ने भाइयो जाणे वाव्यनां जलना हंसो होयनी ! एम जलने विषे तरता तरता तुरत सीतानी पासे गया.

पोतानां चरणकमलने विषे प्रणाम करता ते महा भाग्यवंत बन्ने पुत्रोने आलिंगन करी महासती सीताये जाणे निश्चे मूर्तिमंत न्याय अने धर्म होयनी ! एम पोतानी बन्ने बाजुए बेसार्या. पछी सुग्रीव, भामंडल विगेरे अनेक भूपालो सहित वासुदेव एवा लक्ष्मणे प्रेमपूर्वक सीतानां चरणने विषे प्रणाम कर्या. रामे पण सीतानी पासे आवी हाथ जोडीने कह्युं. "हे सुग्री-

ले ! लोक वाक्यथी में करेला अपराधनी आप क्षमा करो. हे देवी ! प्रथम तो गर्जना करता सिंह अने हाथीयोना समूहथी अत्यंत घोर एवा भयंकर वनने विषे जे तमे जीवतां रह्या एज तमारुं मुख्य दिव्य शुं अमे नथी जाणता ? हे विदेहराजपुत्री ! तमे म्हारा सर्व अपराधोनी क्षमा करीने घर प्रत्ये चालो अने हे प्रिया ! स्वस्थ मनवाला थइ पूर्वनी पेठे म्हारी साथे अखंडित भोगोने भोगवो." सीताये कह्युं. "हे नाथ ! एमां कांइ आपनो अथवा नगरवासी लोकोने दोष नथी; एतो में पूर्वे उपार्जन करेला अति घोर दुष्ट कर्मनुं फल आवी पड्युं हतुं. हे विभो ! हवे म्हारे आ लोकने विषे तेमज परलोकने विषे बहु दुःख आपनारा विनश्वर एवा संसारना भोगथी शर्युं. हवे तो हुं संसारवासथी मेलवेलां पापने नाश करवामां समर्थ एवा कल्याणकारी महाव्रतने अंगीकार करीश." आ प्रमाणे कहीने एज वखते महा सत्ववाली सीताये पोताना हाथवती पोताना मस्तक उपर रहेला केशनो लोच कर्यो. पछी जेटलामां "अरे प्रिया ! तमे आ शुं करो छो ?" एम कहीने राम मूर्छा पाम्या तेटलामां सीताये जयभूषण केवलीनी पासे जइने तपस्या लीधी. पछी ज्यारे चंदननां जल विगेरे शीतल उपचारथी सिंचन करेला राम सचेत थया त्यारे ते विलाप करवा लाग्या के, "हे प्रिया ! तुं क्यां छे ? अने हवणां क्यां गइ छे ?" वली पोतानी चारे बाजुए विंटलाइने बेठेला भामंडल विगेरेने पण रामे कह्युं के, "अरे धिक्कार छे धिक्कार छे ! ! तमे मने पोताना केशनो लोच करनारी एवी जनकराज पुत्री सीताने हवणां देखाडता नथी." रामे आ प्रमाणे कह्युं, छतां सर्वे भूपतियो मौन धारण करीने बेसी रह्या; तेथी वधारे क्रोधातुर थयेला रामे कह्युं. "अरे ! मरवानी इच्छा करता एवा तमे मने आवुं दुःख प्राप्त थये छते पण केम उदासीपणुं धारण करो छो ?" लक्ष्मणे प्रणाम करीने कह्युं. "हे विभो ! आ सर्वे भूपतियो आपना आज्ञाकारी सेवको छे तेमज हे करुणासागर ! आ सर्व लोको पण आपनाज भक्तो छे. सीता सतीये पोतेज मस्तक उपर लोच करी जयभूषण केवलीनी पासे विधिपूर्वक दिक्षा लीधी छे. जेम पूर्वे ! आपे लोकना दुष्ट वचनथी गर्भवती ते सीताने त्यजी हती तेमज प्राप्त थयेला सत्ववाली ए महासतीये हवणां उत्तम व्रत धारण करी आपने त्यजी दीधा छे. ए महर्षिने चार कर्मनो नाश थवाथी हवणां केवलज्ञान उत्पन्न थयुं

छे, माटे आप सरखाने पण उत्कृष्ट एवा पुण्यने माटे तेमनो केवलमहिमा करवो निश्चे योग्य छे. वली व्रतने धारण करनारी सीता पण त्यां साध्वीयोनी पासे छे" लक्ष्मणनां आवां वचन सांभली पुण्य बुद्धिवाला रामे तुरत सीतानी प्रशंसा करता कह्युं. "अहो ! उत्कृष्ट पुण्यवाली ते म्हारी प्रियाने धन्य छे के, जेणे ते केवली मुनिनी पासे विधिपूर्वक व्रत आदर्युं." आम कहीने राम पोताना परिवार सहित ते केवली मुनिने वंदना करवा गया. त्यां राम केवलीने वंदना करी तेमनी आगल बेठा एटले हितना अभिलाषी तथा तपोधन एवा ते महामुनिये पापनो नाश करनारी अमृत समान धर्म देशना आपी. व्याख्यान पूर्ण थया पछी रामे तेमने पूछ्युं के, "हे मुनि ! हुं भव्य छुं के अभव्य छुं ? आ म्हारा संशयने छेदी मने शंका रहित करो." केवलीये कह्युं "हे नरेंद्रचंद्र! तमे भव्य छो अने वली तमे आज भवने विषे म्होटा उदयने पामशो." उत्तम आचरणथी वखाणवा योग्य एवा रामे फरीथी पूछ्युं. "हे मुनीश्वर ! म्हारे लक्ष्मणने विषे आवो दुःस्त्यज प्रेम शाथी छे ?" मुनिये कह्युं. "हे बलदेव! तमे भोगोने भोगवीने अंते शुद्ध एवा चारित्रने अंगीकार करशो." आ वखते जेने अत्यंत बोध प्राप्त थयो छे एवा रामना सेनापति कृतांते संसारवासथी बहु भय पामता छतां अनेक भव्य पुरुषो सहित दीक्षा लीधी. पछी ते केवलीमुनिये राम, लक्ष्मण, बिभीषण अने सुग्रीव विगेरे अनेक पुरुषोना पूर्वभवो विस्तारथी कहीने तेमने जिनराजना धर्मने विषे दृढ कर्या. पछी बिभीषणे केवलीने पूछ्युं. "हे मुनीश्वर! विशेषे जिनेंद्रना धर्मने विषे स्थिर मनवाला रावणे कया दुष्ट कर्मने लीधे सीतानुं हरण कर्युं ? वली लक्ष्मणे रावणने मार्यो ए पूर्वभवना वैरथी के नविन उपार्जन करेला वैरथी ? तेमज मूर्खलोकोए मिथ्या कलंकथी सीताने शा माटे दूषित करी ?"

केवलीये कह्युं. "हे राजन् ! दक्षिण भरतक्षेत्रमां क्षमावती नामनी नगरीने विषे नयदत्त नामे वणिक् रहेतो हतो. तेने सुनंदा नामनी स्त्री हती. तेउने श्रीदत्त अने धनदत्त नामना बे पुत्रो हता. अनुक्रमे युवावस्थाने प्राप्त थयेला ते बन्ने पुत्रोने याज्ञवल्क्य नामना कोइ ब्राह्मणनी साथे मीत्राइ थइ. हवे एज नगरमां सागरदत्त नामनो कोइ धनवंत वणिक् वसतो हतो. तेने रत्नप्रभा नामनी स्त्री हती. तेउने एक अनुत्तमा नामनी पुत्री हती. ज्यारे आ

पुत्री युवावस्था पामी त्यारे पिताए तेनो संबंध नयदतना म्होटा पुत्र श्रीदत्त साथे कस्यो. पछी माताए पण पोताना लोनथी एज पुत्रीनो संबंध पतिथी छानी रीते कोइ महा धनवंत श्रीकांत नामना वणिकूनी साथे कस्यो. आ वातनी याज्ञवल्क्यने खबर पमवाथी तेणे ते वात श्रीदत्त तथा धनदत्तने कही. पछी श्रीदत्ते रात्रीने विषे क्रोधथी शस्त्रवमे श्रीकांतने मास्यो. श्रीकांते पण तेने तेवोज प्रहार कस्यो. बन्ने जणाउ मृत्यु पाम्या अने विंध्याचल पर्वतनी नूमिने विषे हरणरूपे उत्पन्न थया. पेली अनुत्तमा कन्या पण तेमनेज माटे होयनी ? एम परण्या विना मृत्यु पामीने तेज वनमां मृगी रूपे उत्पन्न थइ. पछी ते बन्ने हरणो मृगलीने माटे महा घोर युद्ध करीने मृत्यु पाम्या. आम वैरने विषे तत्पर एवा ते बन्ने जणाए बहु नव भ्रमण कस्या.

हवे अहिं धनदत्त बंधुरहित थवाथी अत्यंत दुःख पामतो रात्रीने विषे वनमां नटकतो हतो. त्यां तेने नुख लागी एवामां देव इच्छाथी केटलाक साधुउ तेनी नजरे पम्या. धनदत्ते तेउनी पासे जइ खावानुं माग्युं एटले ते साधुउमांथी एक जणे कह्युं. "अरे ! साधुउ दिवसने विषे पण क्यारे गृहस्थियोने अन्न आपता नथी तो पछी रात्रीने विषे तो आपेज केम ? वली साधुउए तो सर्व प्रकारे रात्रीनोजन त्याग कर्युं छे." आ प्रमाणे मुनियोए प्रतिबोध पमामेलो ते धनदत्त धर्म पामी अंते काल करी सौधर्म देवलोके देवतापणे उत्पन्न थयो. त्यां देवतानुं आयुष्य पूर्ण करीने ते कोइ नगरमां मेरुनंदन नामना श्रावकनी स्त्री धारणीने उदरे पद्मरूचि नामनो पुत्र थयो. अनुक्रमे युवावस्था पाम्यो एटले तेणे श्रावकधर्म आदस्यो. एक दिवस घोमा उपर बेसीने बहार जता एवा तेणे रस्तामां कोइ वृद्ध वृषनने मरवानी तैयारीमां दीठो. दयावंत पद्मरूचिये तुरत घोमा उपरथी नीचे उतरी ते वृषनना कानमां पांच परमेष्ठिनो नवकार मंत्र संनलाव्यो. पछी ते वृषन मृत्यु पामीने नवकार मंत्रना प्रनावथी तेज नगरीना नृपतिनी स्त्री श्रीदत्ताने उदरे वृषनध्वज नामना पुत्रपणे उत्पन्न थयो. अनुक्रमे ते युवावस्था पाम्यो.

एक दिवस ते राजकुमार नगरने विषे फरतो फरतो पेला वृषननां मृत्युस्थाने आवी पहोच्यो. त्यां तेने ते स्थानने जोवाथी जाति स्मरण ज्ञान प्राप्त थयुं. पछी तेणे ते जग्या उपर एक जिनालय करावी तेनी नींत उपर मृत्यु

पामवाने तैयार थयेलो एक वृषन्न चितराव्यो. वली तेणे वृषन्नना कानमां नवकारमंत्र संन्नलावनार पुरुषनुं चित्र पण जिनेंद्रनी मूर्ति सहित कराव्युं. पछी तेणे त्यां रहेला पूजारीने कह्युं के, " जे माणस आ चित्रोने यथार्थपणे जोवे तेनी खात्री करी मने तुरत खबर आपवा." वृषन्नध्वजकुमार आ प्रमाणे योग्य बंदोबस्त करी पोताने घेर गयो.

हवे केटलाक दिवस पछी पेलो पद्मरूचि शेठ त्यां चैत्यवंदन करवा आव्यो. तेणे अरिहंत प्रन्नुने नमस्कार करीने न्नींते चितरेलां चित्रो एकी नजरथी जोइने हास्य कर्युं एटले पूजारीये तेने कारण पूछ्युं. पद्मरूचिये कह्युं. " में पूर्वे अश्व नपरथी नीचे नतरी वृद्ध वृषन्नना कानमां परमेष्टी मंत्र संन्नलाव्यो तेनो आ चितार छे. ए कारणथी में हास्य कर्युं छे. " पूजारीये आ वात राजपुत्र वृषन्नध्वजने कही, तेथी ते त्यां आवी पद्मरूचिने प्रणाम करीने कहेवा लाग्यो के, " हे सुश्रावक ! ते वृद्धवृषन्न हुंज हतो. आपे मने अंत वखते नवकारमंत्र संन्नलाव्यो; तेथी हुं राजपुत्र थयो छुं. हे महा नपकार करनारा ! हवे तमे म्हारा गुरू, देव अने प्राणरूप छो." वृषन्नध्वज राजकुमारे, आ प्रमाणे पद्मरूचिना वखाण करी तेने लक्ष्मीथी समृद्धिवान् एवा पोताना घर प्रत्ये तेडी जइ तेनीज साथे नत्तम श्रावकधर्म आदर्यो. पछी ते बन्ने जणाउ कालधर्म पामी ईशान देवलोके महा समृद्धिवंत देवता थया. त्यां तेन दीर्घकाल पर्यंत सुख न्नोगवी तेमांनो पद्मरूचि त्यांथी च्यवीने वैताढ्य पर्वतना नंदावर्त नगरना नंदीश्वर राजानो नयतप्रिय नामना पुत्रपणे नत्पन्न थयो. त्यां ते बहु काल पर्यंत राज्य न्नोगवी अंते दीक्षा लइ कालधर्म पामी माहेंद्र देवलोकमां देवता थयो. त्यांथी चवी महाविदेह क्षेत्रमां क्षेमा नगरीना राजा विपुलवाहननी स्त्री पद्मावतीना नदरे श्रीचंद्र नामना पुत्रपणे नत्पन्न थयो. अनुक्रमे युवावस्था पाम्यो एटले बहु काल पर्यंत राज्य सुख न्नोगवी अंते समाधीगुप्त मुनी पासे चारित्र लइने काल करी ब्रह्मदेवलोकनो देवेंद्र थयो. त्यां तेणे ब्रह्मलोकनां बहु सुखो न्नोगव्यां. पछी त्यांथी चवीने आ पद्म नामे नत्पन्न थयो. वृषन्नध्वज पण ईशान देवलोकमां नाना प्रकारनां सुखोने न्नोगवी अंते त्यांथी चवी बहु प्रकारना न्नवोवडे मेलवेलां पुण्यथी आ सुग्रीव थयो छे.

हवे श्रीकांतनो जीव के, जे मृग थयो हतो ते बहु न्नवो न्रमण करी

मृणालकंद नगरमां वज्रकंद राजानी हेमवती प्रियाना उदरथी महा बलवान् शंनु नामे पुत्र थयो. नयदत्तनो जीव घणां नवो ब्रमण करी शंनू नृपतिना उपाध्याय विजयनी स्त्री रत्नचुमाने उदरे श्रीनूति नामनो पुत्र थयो. अनुक्रमे ते पुरोहित पद पाम्यो. अनुत्तमा पण अनेक नवो नमीने श्रीनूतिनी स्त्री सरस्वतीने पेटे वेगवती नामे कन्या थइ. अनुक्रमे ते युवावस्था पामी. एक दिवस मनुष्योने नक्तिथी स्तुति करवा योग्य सुदर्शन नामना साधुने कायोत्सर्गे उनेला जोइ वेगवतीये हास्य करीने सर्वे लोको सांनलता उतां कह्युं के, “अरे लोको ! पूर्वे आ साधुने में कोइ स्त्रीनी साथे क्रीमा करतो जोयो छे. तो हवे तमे ए साधुनो वेष धारण करनार दंनीने शा माटे वंदना करो छो?” वेगवतीनुं आवुं वचन सांनली मूर्ख पुरुषो अरिहंत धर्ममां तत्पर रहेला ते साधुनी निंदा करवा लाग्या एटले मुनिये एवो घोर अनिग्रह लीधो के, “ ज्यां सुधी हुं कलंकथी निर्मुक्त थइश नहि त्यां सुधी कायोत्सर्गेज रहीश.” पछी जैनधर्मवंत पुरुषोए वेगवतीनो बहु तिरस्कार कर्यो. वेगवती पण बहु उद्वेग पामीने फरीथी साधु पासे जइ सर्वे लोको सांनलतां उतां कहेवा लागी. “ हे यतींइ! आप निरंतर निष्कलंक छो. में ए सर्व कपटथी कह्युं हतुं, तो आप क्षमा करो.” आम कहीने तेणे फरीथी मुनिने नमस्कार कर्यो. सर्वे लोको पण स्वस्थ मनवाला थया. पछी ते दिवसथी वेगवतीये श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो. एक दिवस शंनू राजाए उत्तम रूपवाली वेगवतीने दीठी; तेथी तेणे वेगवतीना पिता पासे तेनी याचना करी. वेगवतीना पिता श्रीनुतिये कह्युं. “ हुं ए कन्या आपने आपनार नथी. पछी राजाए श्रीनूतिने मारी बलात्कारे वेगवतीने नोगवी एटले तेणे नृपतिने क्रोधथी श्राप आप्यो के, “ नवांतरे हुं त्हारा वधने अर्थे उत्पन्न थइश. ” पछी शंनू राजाए वेगवतीने छोमी दीधी एटले ते कन्याये हरिगंता नामनी साध्वी पासे दीक्षा लइ उग्र तप आदर्युं. केटलोक काल पांच महाव्रत पालीने वेगवती अंते काल करी ब्रह्म देवलोकमां देवतापणे उत्पन्न थइ. त्यांथी चवीने ते पूर्वे करेला नियाणाना बलथी जनकराजपुत्री सीता थइ. तेणे पूर्व नवने विषे साधुने मिथ्या कलंकीत कर्या हता, तेथीज तेने माथे लोकोए कलंक चमाव्युं हतुं.

शंनूराजा पण मृत्यु पाम्या पछी अनेक नव ब्रमण करी कुश नामना

ब्राह्मणनी स्त्री सावित्रीने उदरे प्रभास नामे पुत्र थयो. अनुक्रमे युवावस्था पाम्यो एटले तेणे विजयसेन आचार्य पासे दीक्षा लइ उग्र तप करवा मांड्यो. एक दिवस महा समृद्धिथी संमेतशिखरे यात्रा करवा जता विद्याधरोना अधिपति कनकप्रभने जोइ ते प्रभास नामना साधुए नियाणुं कर्युं के, " आ में उत्तम रीते करेलां तीव्र तपना समूहनुं जे कांइ फल होय तेथी हुं आवता भवने विषे आवा वैभववालो अने बहु भूजाबलवालो थाउं." पछी ते प्रभास मुनि काल करी त्रीजा देवलोकमां देवता थया. त्यां बहु सुख भोगव्या पछी चवीने त्हारा बंधुरुप रावण थयो. (श्री जयभूषण केवली बिभीषणने कहे छे के) हे राजन्! श्रीदत्त अने धनदत्तनो मित्र जे याज्ञवल्क्य ब्राह्मण हतो ते घणा भवो भ्रमण करीने आ तुं बिभीषण थयो छुं. हवे वेगवतीनो पिता जे श्रीभूति हतो ते मृत्यु पामी स्वर्गमां गयो. त्यांथी चवीने ते सुप्रतिष्ट नगरमां पुनर्वसु नामे विद्याधर थयो. एक दिवस कामथी पीडित थयेला तेणे पुंडरिक नगरना जगनंदन चक्रवर्त्तीनी पुत्री अनंगसुंदरीनुं हरण कर्युं. कह्युं छे के– कामातुर पुरुषोने चतुराइ (विवेकीपणुं) क्यांथी होय ? पछी जगनंदन चक्रवर्त्तीये पोतानी पुत्रीनी शोधने माटे मोकलेला अनेक विद्याधरोनी साथे युद्ध करता ते पुनर्वसुना वैमानथी अनंगसुंदरीये कोइ महा झाडीमां पडतुं मूक्युं.

पुनर्वसुए पण पोतानुं बल क्षीण थवाने लीधे भय पामतां छतां दीक्षा लइ तपस्या करवा मांडी. पछी मरणना अवसरे अनंगसुंदरीने मलवानुं नियाणुं करी ते पुनर्वसु मुनि कालधर्म पामी देवलोके गया. त्यांथी आयुष्य पूर्ण थये चवीने आ लक्ष्मण थया छे. हवे झाडीमां पडेली अनंगसुंदरी त्यांज तपनुं आचरण करी अंते अनशन लइ कालधर्म पामीने बीजा देवलोकमां देवी थइ. त्यांथी देव सुख भोगवीने पछी चवी आ लक्ष्मणनी स्त्री विशल्या थइ छे. (केवली कहे छे के,) अहो ! परस्पर प्रेम अने द्वेषने धारण करनारा सर्वे जीवो राग अने रोषथी जगत्ने हितकारी एवा अरिहंत धर्मने नहि जाणीने आ संसाररुप महा अरण्यमां भ्रमण करे छे."

पछी राम, जयभूषणकेवलीने नमस्कार करी सीता साध्वीनी पासे आव्या. त्यां ते अत्यंत कोमल अंगवाली सीता साध्वीने जोइ पोताना चित्तमां विचार करवा लाग्या के, " अहो ! आ महासतीनुं शरीर माखणना सरखुं

बहु कोमल ठे. तो ए कठोर देहवाला धीर पुरुषोथीज पाली शकाय एवा व्रतने शीरीते धारण करी सकशे ? हा ! सर्व जगत्ना जनोने क्षोन्नकारी एवो रावण पण जेना चित्तने कंपावी शक्यो नथी, ते महासतीने तपश्या शुं दुःकर थवानी ठे ? कारण निश्चे तपश्याने विषे कठोर थनारा पुरुषो मुक्ति पामनारा थाय ठे." आ प्रमाणे महासती सीताना धैर्य विगेरे उत्कृष्ट गुणोनो पोताना चित्तमां विचार करता राम ते शांत मनवाली अने महाव्रतने धारण करनारी महा साध्वी सीताने नमस्कार करी लक्ष्मण विगेरे पोताना परिवार सहित तेना ते ते गुणोथी हर्षित थया ठतां विनीता नगरीप्रत्ये आव्या. अहो! मनुष्योने विषे सीता समान बीजी कोइ स्त्री सती अने पतिव्रता नथी. कारण के, जेना शीलव्रतना प्रन्नावथी ज्वाजल्यमान एवो विकराल अग्नि पण जलरुप थइ गयो.

इति श्री पद्म चरित्रे सीता प्रवासदिव्यदीक्षावर्णनो नाम
अष्टम प्रस्तावः

पठी लक्ष्मण पोतानां हृदयमां श्री रामनी न्नक्ति करता ठता राज्यनुं पालन करवा लाग्या. आ प्रमाणे राम लक्ष्मण बन्ने न्नाइयो पूर्वना पुण्य योगथी पुत्रपौत्रादिनी परंपराथी वृद्धि पाम्या. महासती जनकराज पुत्री सीता पण घोर एवा तपने आचरी तेत्रीश दीवस अनशन व्रत धारण करी अंते मृत्यु पामीने अच्युत देवलोमां बाविश सागरोपमना आयुष्यवाला देवेंद्रपणे उत्पन्न थइ. कृतांत मुनि पण तीव्र तप करी पोताना पुण्ययोगथी ब्रह्मदेवलोकने विषे गया. आ वखते वैताढ्य पर्वत उपर कनकपुर नगरने विषे कनकरथ नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने चंद्रमुखी अने मंदाकिनी नामनी बे पुत्रीयो हती. राजाए तेमना विवाहने माटे स्वयंवर मंरूप रची राम विगेरे अनेक विद्याधरोने पुत्र सहित त्यां आववानुं आमंत्रण कर्युं. पठी स्वयंवर मंरूपमां अनेक राजाउ आव्ये ठते कनकरथ न्नूपतिनी बन्ने पुत्रीयोए पोतानी इच्छाप्रमाणे सुवर्णसमान कांतिवाला रामना बन्ने पुत्रोना कंठमां वरमाला आरोपी. तेमां मंदाकिनीये अनंगलवणनो पाणी ग्रहण कर्यो अने चंद्रमुखीये मदनांकुशने वर्यो. पठी बलीष्ट एवा श्रीधरादि दोढसो लक्ष्मणना पुत्रो मदथी रामना पुत्रोनी साथे युद्ध करवाने तैयार थया. महा पराक्रमवंत एवा रामना

पुत्रो पण विवेकथी पोताना चित्तने विषे विचार करवा लाग्या के, " आ आपणा पित्राइयोना पुत्रोनी साथे कोण युद्ध करशे ? कारण बंधुउनो वध निश्चे न करवो जोइए. " रामना पुत्रोनो आवो विचार जाणी बहु लज्जायुक्त थयेला तेउ पोतानी युद्ध तैयारीने निंदता छता अल्प कर्मताने लीधे वैराग्य पाम्या. छेवट तेमणे पितानी आज्ञा लइ महाबल मुनिपासे चारित्र लीधुं. राम लक्ष्मण पण बन्ने पुत्रोनो विवाह करी क्षणमात्रमां पोतानी राजधानी प्रत्ये गया.

कोइ वखते विद्याधराधिपति भामंडल पोताना भुजाबलथी वैताढ्य पर्वतना समस्त विद्याधरोने जीतीने पोताना नगरने विषे महा समृद्धिथी रह्यो छतो विचार करतो हतो के, " हुं म्हारी सर्व इच्छाउने पूर्ण करीने पछी अवसरे परलोकनां सुख आपनारी संयमलक्ष्मीने अंगीकार करीश. " आम ते विचार करतो हतो एटलामां आकाशथी अकाले उत्पन्न थयेली विजलीना पम्घाथी ते मृत्यु पाम्यो. अंजनापुत्र (हनुमान) पण सुमेरु पर्वतने विषे जिनवंदन करी बीजे दिवस आकाशमार्गेथी आवतो हतो, एवामां तेणे आकाशमां चंद्रना अस्तने जोइ विचार्युं के, " अहो ! सर्वे वस्तुउ नश्वर देखाय छे. " आवी रीते विचार करता तेणे पोताना नगरने विषे आवीने अने पोताना पुत्रने राज्याभिषेक करीने पोते सातसें मनुष्योनी साथे दीक्षा लीधी. हनुमंतनी स्त्री लक्ष्मीवतीये पण साध्वीयोनी पासे चारित्र लीधुं. अनुक्रमे महामुनि हनुमंत सर्व कर्मनो क्षय करी अनंत सुखवालुं मोक्षपद पाम्या. हवे अयोध्या नगरीने विषे रहेला राम, हनुमाननी दीक्षानी वात सांभलीने मनमां विचार करवा लाग्या. "अहो ! हनुमाने रम्य एवा विषयोने त्याग करी शुं कष्टकारी एवा चारित्रने अंगीकार कर्युं ? " आ प्रमाणे राम विचार करे छे एटलामां अवधि ज्ञानवाला इंद्रे तेमना मननो भाव जाणीने तत्काल पोतानी सभामां सर्व देवताउनी समक्ष कह्युं के, " अहो ! विशेष जाण, विवेकवान, समकितधारी अने आज भवमां मोक्ष जनारा राम अज्ञाननी पेठे विषयोने केम वखाणे छे अने चारित्रने दुःखदायी केम कहे छे ? हा अथवा में एमनुं कारण जाण्युं. ए पोताना बंधु लक्ष्मणनी साथे बहु गाढ स्नेह राखे छे, तेथीज तेमणे लक्ष्मणने वैराग्य पमाडता छता एम कह्युं हशे !! योग्य छे के, म्होटा पुरुषोने पण स्नेह बहु दुस्त्यज होय छे. " सौधर्मेंद्रनां आवां वचन सांभली

तेनी सन्नामां बेठेला कोइ बे देवताउ रामलक्ष्मणना परस्पर स्नेहने जोवा माटे पृथ्वी उपर कोशला नगरीमां आव्या. पठी तेउए मायावमे रामना अंतःपुरनी सर्व स्त्रीयोने "हे नाथ! तमे अमने सर्वने त्यजी दइ एकला क्यां जता रह्या गे ?" एम विलाप पूर्वक रुदन करती लक्ष्मणने देखामी. आ प्रमाणे बंधुनी प्रियाउने तार स्वरथी पोतानी आगल रुदन करती जोइ तुरत उत्पन्न थयेला महा शोकथी तप्त थयेला लक्ष्मण मनमां विचार करवा लाग्या के, "हा ! आजे म्हारा सरखा प्रेमपात्र बंधु जीवता ठतां निष्कारण वैरी एवा कालरूप क्रुरराक्षसे हवणां आ म्हारा प्यारा म्होटा बंधुने ग्रसीत कर्या के शुं ?" आ प्रमाणे महा शोकरूप जोरावर सिंहथी लक्ष्मण मृत्यु पाम्या. लक्ष्मणने दिव्य सिंहासन उपर मृत्यु पामेला जोइ अत्यंत खेद करता पेला बन्ने देवताउ विचार करवा लाग्या के–

हा हा ! केवल परस्पर स्नेहनी परीक्षा करता एवा अमोए आ प्रिय आकृतिवाला, महाबलवाला, पृथ्वीना आधाररुप, उत्कृष्ट संपतिना स्थानरुप अने गुणोथी न्नरपुर एवा लक्ष्मणने हण्या के शुं ?" आ प्रमाणे ते बन्ने देवताउ बहु खेद करीने जाणे रामना न्नयथीज होयनी ? एम कालना वशथी तुरत स्वर्ग प्रत्ये गया. धिक्कार ठे धिक्कार ठे आवा हास्य कार्यने ! ! !

"हे नाथ, हे नाथ ! आ आपने शुं थयुं ?" एम कहीने रुदन करता एवा मंत्री विगेरेना शब्दो सांन्नलीने राम तुरत सर्व न्नूपति अने प्रधानो सहित त्यां आव्या अने तुरत वैद्योने बोलावी औषध तथा मंत्रतंत्र विगेरे उपचार करवा लाग्या; परंतु मृत्युने वश थयेलाने गुण क्यांथी थाय ? अर्थात् नज थाय. ठेवट निराश चित्तवाला राम पृथ्वी उपर आलोटतां ठतां मूर्ठा पाम्या. फरी सचेत थया एटले ते "हे बांधव, हे बांधव !" एम कहीने रुदन करवा लाग्या. शोकथी पीमित चित्तवाली अपराजिता राणी सुमित्रादि माताउ अने बीजी विशल्या विगेरे हजारो स्त्रीयो पण बहु रुदन करवा लागी. आ वखते सुंदर मंदिरोने विषे न्नूपालोनो, अधिकारीयोनो, नगरवासी जनोनो अने बजारोमां वेहेपारीयोनो एम सर्व स्थानके रुदननो अवाज संन्नलावा लाग्यो. पठी उचिंता प्राप्त थयेला अने कोइथी पण नहिं उलंघी शकाय एवा लक्ष्मणना मृत्युने जोइ बोध पामेला अनंगलवण अने मदनांकुश बन्ने पुत्रो

तुरत रामने प्रणाम करीने कहेवा लाग्या. "हे पिता ! सुमित्राना पुत्रनुं मृत्यु जोइने संसार थकी अत्यंत भय पामता एवा अमे बन्ने भाइयो हवणां आपनी आज्ञा लइ सुगुरु पासे दीक्षा अंगीकार करीशुं." आ प्रमाणे पितानी रजा लइ सर्वनो संग त्यजी दइ बन्ने भाइयोए वनमां आवी सुधाघोष मुनि पासे दीक्षा लीधी. अनुक्रमे उग्रभाववाला ते बन्ने बंधुउ मोक्षपदने पाम्या. पछी बंधुना मृत्युना अने पुत्रोनी दीक्षाना शोकथी विह्वलित मनवाला राम वारंवार मूर्छा पामवा पूर्वक विलाप करवा लाग्या. "हे बंधु ! में त्हारो कांइ पण अपराध कर्यो नथी, माटे प्रसन्न थइ म्हारा सामु जो. हे प्रिय ! मने उत्तर आप के, जेथी हुं क्षणमात्र जीवुं. म्हारा कठोरपणानो तुं जरापण विचार करीश नहि. वली हे भाइ ! तुं मौन धारण करीने रहेलो होवाथी अने प्रेमना स्थानरुप पुत्रोए त्यजी दीधेलो होवाथी हुं निश्चे पांखो विनाना पक्षीनी पेठे मृत्यु पामीश." आ प्रमाणे विलाप करता, अत्यंत विह्वल थयेला, पोताना बंधु सामे एक दृष्टीथी जोइ रहेला, दीन बनेला अने शोकथी पीडा पामेला रामने बिभीषणादि सर्वे भूपतियो सद्वचनथी प्रतिबोध देवा लाग्या. "हे प्रभो ! आप सर्वे धीर पुरुषोने विषे धुरंधर अने उत्तम विवेकवंत पुरुषोना मुकुटरुप छो, माटे स्वभावथीज उत्पन्न थयेला शौर्य गुणने धारण करो अने अन्य प्रकृतिनो आश्रय त्यजी द्यो. हे प्रभो ! तमे वृथा खेद शा माटे करो छो ? आ परलोक प्रत्ये गयेला पोताना बंधुनुं ऊर्ध्वदेहिक करो." तेउनां आवां वचनथी कोपव्याप्त नेत्रवाला रामे तेमने कह्युं. "अहो ! आ म्हारो बंधु जीवतां छतां मृत्यु केम पाम्यो कहेवाय ? निश्चे खल एवा तमे जुठुं बोलो छो. अरे ! तमे अग्निमां पेसीने मृत्यु पामो अने आ म्हारा बंधु तो दीर्घायुष्यवाला थाउ." रामे फरीथी लक्ष्मणने कह्युं. "हे बंधो ! चालो आपणे अन्यदेश प्रत्ये जइए. धीर पुरुषोना मध्ये वीररुप हे लक्ष्मण ! हवे हुं खल मनुष्योना जेवा तेवा शब्दोने श्रवण करी शकतो नथी." आम विलाप करता राम, लक्ष्मणने पोताना स्कंध उपर बेसारी अन्यस्थले चाल्या गया. राम क्यारेक लक्ष्मणने सूक्ष्म वस्त्रथी आच्छादित करेली शय्यामां सुवारता, क्यारेक चंदनथी सुवासीत करता, क्यारेक सुगंधी पुष्पोथी सुशोभित करता अने क्यारेक तो मोहथी आकुल व्याकुल थयेला ते सरस एवा स्तोत्रपाठथी स्त-

तेमने मननी शुद्धिथी लोकमां प्रमाणरूप एवुं अवधि ज्ञान उत्पन्न थयुं. पछी तेमणे उपयोग दइने जोयुं तो लक्ष्मणनुं मृत्यु कोइ बे देवताउथी थयेलुं जाएयुं. वली असंख्य एवी गाढ वेदनाउथी पूर्ण चोथी नरकने विषे पोताना प्रतिकुल कर्मथी लक्ष्मणने पमेला जाणी राम पोताना मनमां विचार करवा लाग्या. “ हा लक्ष्मण ! सो वर्ष बाल्यपणामां, त्रणसें वर्ष मंमलिकपणामां, चालीश वर्ष दिग्विजयमां तथा अगीयार हजार पांचसो ने साठ वर्ष राज्य करवामां एम सघलुं मली बार हजार वर्षरुप आपनुं सर्व आयुष्य निष्फल गयुं ? अहो ! तमे निर्दय मनवाला थइ उत्कृष्ट संग्राम करवावमे संसारना थोमा सुखने माटे असंख्य दुःखोने एकठां कर्यां छे. ” आवी रीते विचार करता राम सर्व जीवोने विषे समत्व भाव धारण करीने संवर भावथी पूर्ण थई अखंमित वैराग्यथी शांत चित्तवाला थया.

पछी एक दिवस राम, रथस्थल नामना पुरप्रत्ये गया. त्यां त्रण गुप्ति तथा पांच समिति युक्त निष्क्रोधी एवा ते, छठना पारणे आहारने माटे गृहस्थोनां घरने विषे फरता हता. आवा रूपलावण्यना महा समुद्र मुनीश्वरने आवेला जोइ अत्यंत हर्ष पामेलां स्त्री पुरुषो हाथमां अनेक प्रकारनां दिव्य भोजनो लइ तेमने वहोरावना दोमया; परंतु ते वखते तेमणे “ हुं त्याग कर्या विनानी भिक्षा नहि गृहण करुं. ” एवो अभिग्रह लीधेलो हतो. पछी लोकोए मिष्टान्नना ढगलाउ तेमने अर्पण कर्या; परंतु तेमांथी तेमणे थोमुं पण लीधुं नहि. अनुक्रमे महामुनि राम, पृथ्वी उपर विहार करता करता पोताना घरप्रत्ये आव्या. त्यां तेमणे हर्षित थयेला प्रतिनंदी राजाए त्यजी दिधेला आहारवमे प्रतिलाभ्या. ते वखते देवताउए दिव्य वार्जीत्रोना शब्दपूर्वक सुवर्णवृष्टि विगेरे पंच दिव्यो प्रगट कर्यां. मुनि पण महा ध्यान करवा माटे फरीथी मनुष्य रहित वनने विषे चाल्या गया. अहिं तेमणे एवो निश्चय कर्यो के, “ हुं नगरमां जाउं छुं, तेथी लोकोने क्लेश थाय छे; माटे हवे म्हारे नगरमां जवुं नहि अने तप पूर्ण थये अहिं आवेला कोइ पण मनुष्यो पासेथी निर्दोष आहार ग्रहण करवो. ” आम धारी अत्यंत जितेंद्रिय अने शांत मनवाला रामे वनने विषे निवास कर्यो तथा पक्ष अथवा मासने अंते पारणुं करवा मांमयुं.

एक दिवस अश्वे हरण करेलो प्रतिनंदि राजा उचिंतो ते वनमां आवी

चम्यो. त्यां तृषाथी आकुल थयेलो ते अश्व पाणी पीवा माटे सहसा कादवथी भरेला तलावमां पेठो अने तेमां खूच्यो. ज्यारे अश्व कादवमां खूची गयो त्यारे प्रतिनंदि राजा तेना उपरथी नीचे उतरी तटे आव्यो, एटलामां तेनी सेना पाछल आवी पहोची. पछी सौए भोजननी तैयारी करी. आ वखते ते श्री राम मुनि पारणाने अर्थे त्यां आव्या. प्रतिनंदि भूपतिये तेमने हर्षथी प्रतिलाभ्या, तेथी तेने वन पण नगर समान जणायुं. देवताउये ते वखते यतिदाननां पुण्यथी सुवर्णवृष्टी करी. कह्युं छे के–घरने विषे, वनने विषे, व्हार अथवा अंदर सर्व स्थानके पुण्यनुं फल तो निश्चे मले छे. पछी पारणुं करीने निर्भिमानी महामुनिये संसारनो नाश करनारी धर्म देशना आपी. राजा श्रावकधर्म अंगीकार करी पोताना पुण्यने वखाणतो छतो नगरप्रत्ये आव्यो. पछी महामुनि राम, कोटि भुपतियोने श्रेष्ठ सिद्धि आपनारी कोटिशिलाप्रत्ये गया. त्यां ते तुरत मन, वचन अने कायाने रोकी शुद्ध भावथी ध्यान करवा लाग्या. आ अवसरे सीता सुरेंद्रे अवधिज्ञानथी रामने केवलज्ञान आपनारा ध्यानने विषे तत्पर थयेला जाणी पोताना मनमां विचार्युं के, " आ राम म्हारा पूर्व भवने विषे प्राणनाथ हता, माटे हवे पछी जो ए संसारी थाय तो हुं पण तेमनी साथे रहुं. हवणां पण कामदेवना म्होटा विकारथी एमना उत्कृष्ट ध्याननो नाश करुं." आम धारी सीतेंद्र अनेक देवांगनाउ सहित त्यां आव्यो. पछी तेणे दिव्य विकार उत्पन्न करनारी सीतानी आकृति धारण करीने रामने कह्युं. "हे प्रिय! हुं आपनी प्रिया सीता छुं. में ते वखते सहसात्कारे दीक्षा लीधी हती, परंतु आपनो वियोग सहन न करी शकवाथी दीक्षानो त्याग करी फरीथी आपनी पासे आवी छुं." आम सीतारुप इंद्रे, महामुनि रामने ते ते असंख्य विकारोथी क्षोभ पमाडवा मांड्या; परंतु मेरु पर्वतनी पेठे ध्यानमां लीन थयेला ते मुनिनी आगल ए सर्व कृत्य निष्फल थयुं. एटलुंज नहि पण वळी घातिकर्मनो क्षय थवाथी ते महामुनिने केवलज्ञान प्रगट थयुं. सीतारुप इंद्रे ते वखते उपसर्गने त्यजी दइ पोतानुं खरुं स्वरुप धारण करी सुवर्णना कमल उपर विराजित थयेला महामुनि केवलीने वारंवार पोतानो अपराध खमावता छता भक्तिपूर्वक वंदना करी. पछी सीतेंद्र देवताउ सहित तेमनो केवल महोत्सव करीने धर्मोपदेश श्रवण करवा बेठा. मुनिये धर्म-

देशना आपी. धर्मदेशनाने अंते सीतेंइे मुनिने नमस्कारपूर्वक पूछ्युं के, "हे मुनि ! आप म्हारा उपर कृपा करीने कहो के, रावण तथा लक्ष्मण कइ गतिमां गया छे ?" मुनिये कह्युं, "शंबूक सहित लक्ष्मण अने रावण ए बन्ने जण हाल चोथी नरकने विषे गया छे. पण त्यां तेउ पोतानुं आयुष्य पूर्ण करीने महा विदेह क्षेत्रमां विजयावती नगरीने विषे सुनंद श्रावकनी स्त्री रोहिणीना उदरे जिनदास अने सुदर्शन नामना बे पुत्रो थशे. त्यांथी तेउ मृत्यु पामीने सौधर्म देवलोकमां देवता थशे. त्यांथी चवीने फरी तेउ विजया नगरीमां श्रावकपणे उत्पन्न थशे. त्यांथी मृत्यु पामीने तेउ हरिवर्ष क्षेत्रने विषे युगलियारुपे थशे. त्यांथी मृत्यु पामी तेउ देवता थशे. छेवटे ए विजया नगरीना राजा कुमारवार्तिनी स्त्री श्रीलक्ष्मीना उदरथी जयप्रन्न अने जयकांत नामना बे पुत्रो थशे. त्यां तेउ दीर्घकालपर्यंत चारित्र पालीने मृत्यु पाम्या पछी लांतक देवलोके देवतारुपे उत्पन्न थशे.

(श्री राममुनि सीतेंइने कहे छे के,) ते वखते तुं अच्युत देवलोकमांथी चवीने आ न्नरतक्षेत्रमां महायशवंत रत्नमति नामे चक्रवर्ती थइश अने लांतक देवलोकमांथी बन्ने देवताउ चवीने इंडायुध तथा मेघरथ नामना त्हारा पुत्रो थशे. पछी तुं दीक्षा लइ कालधर्म पामीने वैजयंत देवलोकमां बत्रीश सागरोपमनी आयुष्यवालो महान् देवता थईश. रावणनो जीव इंडायुध पण त्रण न्नव भ्रमण करीने तीर्थंकर गोत्रकर्म उपार्जन करी 'अर' नामना जिनेश्वर थशे. ते वखते तुं वैजयंत देवलोकथी चवीने तेमनो गणधर थइश. पछी तमे बन्ने जणाउ उत्तम धर्मनुं निरुपण करी मोक्षे जशो. हवे लक्ष्मणनो जीव के, जे त्हारो मेघरथ नामनो पुत्र थशे, ते पण मृत्यु पामीने शुन्नगति पाम्या पछी पुष्करद्वीपमां पूर्व विदेहे चित्रा नगरीने विषे चक्रवर्त्ती थशे. अनुक्रमे ते राज्यसंपत्ति न्नोगवीने अंते चारित्र लइ तीर्थंकर नाम गोत्र बांधी बीजा न्नवमां तीर्थंकर थइ थोमा वखतमां मोक्ष पामशे."

आ प्रमाणे रावणनी तथा लक्ष्मणनी सर्व वात सांन्नली हर्षित थयेलो सीतेंइ, त्यांथी उठीने गाढ अनुरागथी महा दुःखित एवा लक्ष्मणने जोवा माटे क्षणमात्रमां चोथी नरकप्रत्ये आव्यो. त्यां तेणे क्रोधाग्निथी ज्वाजल्यमान एवा शंबूक तथा रावणने सिंहादिरुपो करी लक्ष्मणनी साथे युद्ध करता दी-

ठा. परस्पर एक बीजानां तीक्ष्ण आयुधोथी भेदाइ गयेला देहवाला, सेंकडो अने हजारो कककडारूप थइ फरी मली जता, वारंवार विलाप करता अने अत्यंत उग्र ताप, टाढ तथा ते पृथ्वी संबंधी अनेक वेदनाउथी पीडा पामता तेउने जोइने दयावंत थइ गयेला तथा तेउना दुःखने न जोइ शकता ते सीतेंद्रे तेमने कह्युं. "हे लक्ष्मण ! आजपर्यंत नरक भूमीमां रहेलो मूढबुद्धिवालो तुं हजी क्रोधने शामाटे धारण करे छे ? अरे रावण तथा शंबूक ! तमे पण नरक भूमिमां रह्या छतां शामाटे क्षमा गुणने नथी धारण करता ! आम सीतेंद्रे तेमने युद्धथकी निवृत्त करीने पछी राम मुनि पासेथी सांभलेला तेउना भव तेमने कही संभलाव्या. सीतेंद्रनां आवां वचनरूप अमृतनुं पान करता रावण, लक्ष्मण अने शंबूक ए त्रणे जणाए तेने कह्युं. "हे दयावंत ! तें बहु सारुं कर्युं. तें अमारा उपर पोतानो प्रेम देखाडी अमारुं परस्परनुं वेर त्यजावी दीधुं, परंतु अमने अहिं बहु दुःख छे, तेथी असंख्य वर्षोनो काल अहिं शी रीते जशे ? हे भाइ ! जो ह्वारामां शक्ति होय तो अमने अहिंथी दूर लइ जा." दयालु मनवाला सीतेंद्रे कह्युं. "हुं म्हारी दिव्य शक्तिथी तमने स्वर्गप्रत्ये लइ जइश." पछी तेणे ते त्रणे जणाने जेटलामां नरकना एक एक कूवाथी पोताना हाथमां लीधा, तेटलामां तेउनां शरीर गली जवाने लीधे तेउ पाछा नरकमां पड्या. नरकमां पड्या पछी तेउनां शरीर पाछा पारानी पेठे एकठा थइने हाथीना सरखा थया एटले देवताए फरी पोताना हाथमां लीधा. वली पण तेउ गली पड्या. आवी रीते पूर्वे करेलां दुष्टकर्मनां फलरूप तेमने वारंवार नरकमां गली पडवुं पड्युं. कह्युं छे के—पूर्वे संपादन करेलुं कर्म इंद्रादिकथी पण निवारी शकातुं नथी. पछी रावण विगेरे त्रणे जणाए इंद्रने कह्युं. "हे इंद्र ! पोताना दुष्ट कर्मथी बंधनमां पडेला अमोने तुं मूकी दे, मूकी दे. ह्वारा उपाडवाथी अमने बहु दुःख थाय छे, माटे हे कृपालु ! तुं ह्वारा स्वर्गप्रत्ये जा." तेउनां आवां वचन सांभली सीतेंद्रे तेमने त्यां रहेवा दइ, समकितनी शुद्धिने अर्थे जिनपूजनादिनो उपदेश दइ पोते नंदीश्वरादि द्वीपोमां यात्रा करी पोताने स्थानके (अच्युत देवलोके) गयो.

पछी केवलज्ञानी एवा राममुनिये पचीश वर्ष पर्यंत शुद्ध विहार अने कर्मथी अनेक भव्य पुरुषोने प्रतिबोध पमाड्या. आ प्रमाणे पोतानुं पचास

हजार वर्षनुं आयुष्य ज्ञोगवी महामुनि राम सुखना स्थान एवा मोक्षपदने पाम्या. हे ज्ञव्य पुरुषो ! तमे पण आ संपूर्ण एवा राम चरित्रने सांज्ञली प-रस्त्रीनी स्पृहा त्यजी दइ कल्याण लक्ष्मीना स्थानरुप मुक्ति पदने पामो. में आ रामचरित्र फक्त पोताना उपकारने माटे संक्षेपथी रचेलुं छे, माटे तेमां कांइ ज्ञूल आवे तो म्होटा पुरुषोए म्हारा उपर दया करी सुधारी लेवुं.

॥ इति पद्म चरित्रं संपूर्णम् ॥

जेणुगातवं तत्तं, अवराहं दठ्ठु निअयरूवस्स ॥
तुंगिअगिरिवरसिहरे, सो राममुहामणी जयउ ॥ १४ ॥

शब्दार्थ–जेमणे सौज्ञाग्यवंत एवा पोताना स्वरुपना अपराध रूप स्त्रीना व्यामोहने जोइने उंचा श्रेष्ठ पर्वतना शिखर उपर जइ उग्र तप कर्युं, ते श्री बलज्ञद्र बलदेव महामुनि जयवंता वर्तो. १४

रामो तवप्पज्ञावा, सुपत्तदाणाउ ऊत्ति रहकारो ॥
अणुमोअणाइ हरिणो, संपत्ता बंज्ञलोगम्मि ॥ १५ ॥

शब्दार्थ–तपना प्रज्ञावथी बलज्ञद्र बलदेव, सुपात्रदानथी सुतार अने तपनी तथा सुपात्र दाननी अनुमोदनाथी हरिण, एम ए त्रण जणा तुरत ब्रह्म देवलोकने पाम्या छे. १५

॥ श्री बलज्ञद्र बलदेव चरित्रम् ॥

जेमना तपरुप ज्वाजल्यमान अग्निने विषे कामदेवरुप वृक्ष ज्ञस्मीज्ञुत थइ गयो छे एवा मोक्षमार्गना देखामनार श्री शिवा माताना पुत्र श्री नेमिनाथ अमने कल्याणकारी थाउ.

जेणे कृष्ण नामना ज्ञव्यपतिने पामी बीजा कोइ नृपतिने विषे क्षणमात्र पण विलास कर्यो नहोतो एवी सौंदर्य लक्ष्मीये करीने म्होटा पुरुषोने पण आनंद करनारी जाणे कोइ सती स्त्री होयनी ? एवी द्वारका नामे नगरी छे. ते नगरीमां नवमा अर्द्धचक्रवर्त्ती कृष्ण पोताना बंधु सहित राज्य करता हता. एक दिवस ते नगरीना रैवत नामना उद्यानने विषे श्री नेमिनाथ नामना

जिनेश्वर समवसर्या. पापनो नाश करनारा प्रन्नुना आगमनने जाणी अत्यंत हर्षित थयेला कृष्ण परिवार सहित त्यां जइ प्रन्नुने नमस्कार करी योग्य आसने बेठा एटले प्रन्नुए विशेषथी धर्मनुं रहस्य अने वैन्नव यौवनादि संसारिकपणानुं नश्वरपणुं ए विगेरे धर्म देशना आपी. धर्मोपदेश श्रवण कर्या पछी कृष्णे श्री जिनेश्वरने पूछ्युं. " हे प्रन्नो ! स्वर्ग समान आ म्हारी द्वारका नगरी अचल रहेशे के नाश पामशे ? अने म्हारुं मरण कोनाथी थशे ? " त्रीकालज्ञानी एवा जगद्गुरु प्रन्नुए कह्युं. " हे उत्तम ! सांन्नल. मदिराना मदथी आंधला थयेला त्हारा पुत्रोए क्रोध पमाडेला द्वैपायन ऋषिथी आ द्वारकानो नाश थशे. वली त्हारा म्होटा न्नाइ एवा जरा कुमारथी थोडा वखतमां त्हारु मृत्यु पण थशे. हे मुकुंद ! विकट स्वरुपवाली अने अंते महा दुःखकारी आ न्नवनी स्थितिज एवी छे. " प्रन्नु पासेथी आवा न्नविष्यमां थनारा उपद्रवने जाणी कृष्णे द्वारकामां आवीने केटलाक दिवस गया पछी ते उपद्रवने नाश करवा माटे नगरीमां पटह वगडाव्यो के, " हे कुमारो अने बीजा लोको ! तमे सौ सांन्नलो. तमने महाराजा कृष्ण एम आज्ञा करे छे के, तमारे मदिरानी इच्छा त्यजी देवी. कारण के, मदिराना पानथी श्री नेमिनाथ जिनेश्वरे कहेलो म्होटो अनर्थ उत्पन्न थशे. " श्री कृष्णनी आवी आज्ञाथी सर्वे कुमारोए पोते पोतानां मदिरानां पात्रो द्वारका नगरीनी व्हार श्री रैवताचल पर्वतनी गुफामां नांख्या. योग्यज छे राजानी आज्ञा कोइथी उल्लंघी सकाती नथी. पछी जराकुमार " आ यादववंश रूप समुद्रने उल्लास पमाडवामां चंद्र समान श्री कृष्णनुं मृत्यु म्हाराथी न थाउ. " एम कहीने द्वारका नगरी त्यजी दइ तुरत कोइ एक पल्लीमां जइने रह्यो. बलदेवना न्हाना न्नाइ सिद्धार्थे पण व्रत लेवानी इच्छाथी पोताना म्होटा बंधु पासे आज्ञा मागी. कह्युं छे के—विद्वान् पुरुषो धर्मकार्य करवामां विलंब करता नथी. पछी बलदेवे सिद्धार्थने कह्युं. " जो तुं देवता थइ मने बोध पमाडे तो हुं तने दीक्षा लेवानी रजा आपुं. " सिद्धार्थे ए वात कबुल करी अने पछी ते श्री नेमिनाथ पासे चारित्र लइ छ मास पर्यंत चारित्रने श्रेष्ट रीते पाली स्वर्ग गयो. कह्युं छे के—श्रेष्ट पुरुषो पोताना हितकारी अर्थने थोडा दिवसमां साधी ले छे.

हवे ज्यां रैवताचलनी गुफामां कुमारोए मद्यनां पात्रो नाख्यां हतां, त्यां

ते एकठा थयेला मद्यना म्होटा धराउ थइ गया. वली ते पमता एवा फला
कना रसथी अति श्रेष्ठ रसवाला थया. एक दिवस शांवकुमारनो कोइ सेव
फरतो फरतो त्यां जइ चम्यो. तेणे गुफानी अंदर प्रसरी रहेला मद्यना ब
गंधथी आगल जइने जोयुं तो उत्तम एवा धराउ दीठा. पछी तेणे द्वारकाम
आवीने ते वात शांब विगेरे कुमारोनी आगल कही एटले मद्यने विषे अ
लुब्ध थयेला यादवना हजारो कुमारो दोमता दोमता तुरत त्यां आव्या. प
जेम मरुस्थलना तरश्या वटेमार्गु लोको शीतल जलनुं वारंवार पान करे ते
म ते कुमारोए अति स्वादिष्ठ रसवाली मदिरानुं पान करयुं. आवी रीते उ
त्साहथी कंठपर्यंत मदीरानुं पान करीने विकल बनेला ते कुमारो गीतनृत्या
दि करता छता पर्वतनी गुफामां पोतानी मरजी प्रमाणे फरवा लाग्या. एवा
मां त्यां तेमणे अति शांत अने तप करता एवा द्वैपायन नामना तापसने दी
ठा. पछी मदिराने लीधे अति मूढ बनेला ते कुमारो, निवारी सकाय नहि
एवा नुतना बालकोनी पेठे जेम तेम बोलता दोम्या अने तापसनी पासे
जइ "अरे तापस! तुंज अमारी नगरीनो नाश करनार छे? आजे महा क
ठोर अने पापी एवा तने अमेज हणशुं.?" एम कहीने तेउए तेमने मुठ
लाकमी विगेरे विविध प्रहारथी मारया. अहो! मद्यादिने विषे आसक्त थयेल
पुरुषो कोइ पण अनर्थने गणता नथी. "अरे दुष्टबुद्धिवालाउ! तमे निरपराधी
एवा मने तपस्वीने शा माटे मारो छो? जो म्हारुं कांइ पण तप छे तो तेथी हुं
तमारी नगरीने दहन करनारो थइश." आम नियाणुं करता ते मुनिने प्र
हारथी मृत्यु पामेलाना समान करी सर्वे कुमारो द्वारकामां जता रह्या. आ
वात कृष्णबलदेवे सांभली, तेथी तेउ अत्यंत आकुलव्याकुल थया छता ता-
पस्वीयोमां मुख्य एवा द्वैपायनने अमृत समान वचनवमे शांत करवा माटे
त्यां आव्या अने कहेवा लाग्या. "उग्रतपना समुद्ररुप हे मुनि! पूजन करवा
योग्य आपने अमारा उद्धत एवा क्रोधी पुत्रोए हण्या छे; पण आपे प्रसन्न
थइ एकवार ते अमारा अपराधने क्षमा करवो जोइए." आवी रीते कृष्णब-
लदेवे मुनिने बहु शांत करवा मांम्या; परंतु तेमणे पूर्वना क्रोधने त्यजी दी-
धो नहि. कह्युं छे के–तुरत सलगी उठेलो दावानल शुं कोइथी शांत करी श-
काय खरो? ज्यारे अत्यंत क्रोधातुर थयेला मुनिये कोइ पण रीते आपनो

(नियाणानो) अनुग्रह करयो नहि त्यारे स्वभावीक गंभीरगुणे करीने मनोहर एवा रामे कृष्णने कह्युं. "हे जनार्दन ! तुं मोहने लीधे वृथा प्रयत्न शामाटे करे छे ? जरा विचार तो खरो, के जगत्‌मां क्यारे पण जिनराजनी वाणी शुं फोगट थाय खरी ?" द्वैपायने कह्युं. "हे कृष्णबलदेव ! में क्रोधथी द्वारकापुरीने नाश पमाडवानुं नियाणुं करयुं छे. वधारे शुं कहुं, पण हुं तमारा बन्नेजणाना विना बीजा कोइने छोडी देनार नथी."

पछी बलभद्र सहित कृष्णे द्वारका नगरीमां जइने तुरत पोताना सेवको पासे पटह वगडाव्यो के, "हे नगरवासी जनो ! क्रोधातुर थयेला द्वैपायन ऋषिये हवणां द्वारकानो प्रलय करवानुं कह्युं छे, माटे तमे सौ निरंतर परमेष्टी मंत्रना ध्याननें विषे एक चित्तवाला थाओ अने घरने विषे अथवा उद्यानने विषे त्रणे काल जिनराजनुं पूजन करो. वली दुष्कर एवा छठ विगेरे तप करवामां अने नाना प्रकारना नियम धारवामां उद्यमवंत थइ व्यसन, वैर, विलास, निद्रा अने विकथा विगेरे दुर्गुणोने त्यजी द्यो. तेमज बालथी मांडीने वृद्धपर्यंत सर्वे नगरवासी जनो आदरथी श्रेष्ट एवा जिनराजना धर्मनी सेवा करो के, जेना अतुल्य एवा पुण्य प्रभावथी ए द्वैपायन म्हारी नगरीनो नाश करवा समर्थ थाय नहि." कृष्णनी आवी आज्ञाथी सर्वे लोको, ते दिवसथी आरंभीने जिनेन्द्रनी पुजा तथा परमेष्टी मंत्रनुं ध्यान ए विगेरे धर्म कार्य करवा लाग्या.

हवे श्री नेमिनाथ प्रभु पृथ्वी उपर विहार करता करता फरी रैवताचल पर्वत उपर आव्या. कृष्ण विगेरे यादवो पण पोताना परिवार सहित हर्ष पामता छता तेमने वंदना करवा गया. ते वखते भगवाने संध्याना वादलाना रंग समान, हाथीना कान समान, दर्भना अग्र भाग उपर रहेला जलना बिंदु समान, जलना कल्लोल समान अने इन्द्रना धनुष्य समान लक्ष्मीनुं, यौवननुं अने राज्यनुं अस्थिरपणुं दर्शावि धर्मदेशना आपी. प्रभुनी धर्मोपदेशना सांभलीने संसारमां निवास करवाथी अने विलासथी खिन्न थयेला प्रद्युम्न, शांब, निषध, उल्मुक अने सारण विगेरे यादवना कुमारोए कृष्ण बलभद्रनी आज्ञा लइने प्रभुनी पासे दीक्षा लीधी. रुक्मिणीये पण पोताना पति श्री कृष्णने कह्युं. "हे प्रभो ! मने व्रत लेवानी आज्ञा आपो के, जेथीकरीने हुं पण हवणां श्री नेमिनाथ प्रभु पासे मोक्षने माटे चारित्र अंगीकार करुं." कृष्णे

बहु शोकथी रुदन करवापूर्वक आज्ञा आपी; तेथी तेणे बीजी अनेक राणीयोनी साथे संसार समुद्रमां वहाणरुप चारित्र लीधुं. पछी श्री नेमिनाथ प्रभुए बीजे स्थानके विहार कर्यो एटले कृष्णे पण द्वारका नगरीमां आवीने पटह वगमाव्यो के, "हे नगरवासीजनो ! तमारे सर्व प्रकारे पोताना हितने माटे निरंतर धर्मने विषे यत्न करवो.

हवे द्वैपायन नामनो तापस मृत्यु पामीने अग्निकुमार देवताउना मध्ये उत्पन्न थयो, ते पूर्वना क्रोधथी द्वारका नगरीनो नाश करवाने तुरत त्यां आव्यो. वली पर्वतना उपर मृगोने हणवा माटे जेम सिंह तैयार थाय तेम ते धर्म ध्यानमां तत्पर एवा मनुष्योने मारवा तैयार थयो; पण केटलाक मनुष्यो भयथी अने केटलाक स्वभावथी एम सर्वे लोको जिनराजना पवित्र धर्मनुं सेवन करता हता; तेथी जेम पर्वतने विषे खाली गयेली फालवालो सिंह दुष्ट विचारवालो छतां मनुष्योने उपद्रव करी शकतो नथी तेम दुष्ट चित्तवालो ते देव, धर्मनुं उत्कृष्ट ध्यान करवामां चतुर एवा नगरवासीजनोने उपद्रव करवा समर्थ थयो नहि. जो के ते महा विरोधी देव द्वारका नगरीमां रहेनारा मनुष्योने उपद्रव करवा माटे वारंवार आवतो, पण तेम करवाने असमर्थ होवाथी पाछो चाल्यो जतो. आवी रीते बार वर्ष वीती गया. एवामां दुष्ट कर्मना फलोदयथी धर्मने विषे शीथिल थयेला मनवाला सर्वे माणसो विचार करवा लाग्या के, "हवे ते दुष्ट देव क्यांइ जतो रह्यो हशे." आम धारी प्रमादी थयेला सर्वे मनुष्यो धर्मने विषे अत्यंत मंद आदरवाला थया. पछी दुरात्मा अने छलने शोधता एवा ते देवताने अवसर मल्यो एटले तेणे मनुष्योने अति भयकारी एवा दिग्दाह, भूमीकंप अने धुलवृष्टि विगेरे अनेक दिव्य उत्पात प्रगट कर्या, तथा मनुष्योमां परस्पर क्लेश कराव्या. वली तेणे बहु क्रोधने लीधे संवर्त्तक वायुने विकर्वी नगरीमां घास काष्टनो समूह एकठो करीने सलगाव्यो. पछी भयथी बीजा देशप्रत्ये नासी जता एवा सर्व लोकोने पण ते देवताए संवर्त्तक वायुथी उपामी उपामीने पाछा नगरीमां नाख्या. लोको बहु आकुल व्याकुल थया; तेथी तेउ घणां जलथी अग्निने सिंचन करवा लाग्या; परंतु तेम करवाथी अग्नि शांत थवाने बदले उलटो बहु वधवा लाग्यो. अग्निथी त्रण मालनां अने सात मालनां घरो सलगवां लाग्या. अनेक शीलाउ फाटवा लागी. शिखरो

तुटी पडवा लाग्या. मुक्ताफल अने मणियोथी जडित्र एवा चंदुवाउ तथा शाल विगेरे दिव्य वस्तुउ सलगवा लागी. कपूर तथा अगुरुचंदन विगेरे उत्तम वस्तुउनी दुकानोनी पण तेज दशा थवा लागी. वली ते वखते मनुष्योने आंधला करवामां प्रविण एवो धूमाडो सर्व दिशाउमां प्रसरी जवाथी हाथी, घोडा अने बलद विगेरे मुख्य पशुउ तथा स्त्री पुरुष अने बालको पण बलवा लाग्या. ते वखते "हा कृष्ण! हा राम! आ महा अग्निथी पीडा पामेला अने अति दीन चित्तवाला अमने रक्षण करो! रक्षण करो!!" एवो महा भयंकर शब्द चारे बाजुए संभलावा लाग्यो.

ते वखते कृष्ण जेटलामां पोताना दिव्य शस्त्र, मंत्र अने मणि विगेरेथी अग्निने शांत करवा लाग्या तेटलामां तेमना अल्पपुण्यने लीधे चक्र, गदा, शंख, बाण, हल अने मुशल विगेरे सर्व अस्त्रो अदृश्य थइ गयां. पछी मातानें विषे उत्कृष्ट भक्तिवाला कृष्ण बलभद्र, देवकी तथा रोहिणी सहित वसुदेवने द्वारका नगरीथी बहार लइ जवाने रथमां बेसाड्या, परंतु ते वखते रथमां जोडेला घोडाउ, अग्निथी अत्यंत बलता छता जरा पण आगल चाल्या नहि. पछी कृष्ण बलभद्र पोतेज मातृभक्तिने लीधे रथने वलगी खेंचवा लाग्या. जेटलामां तेउ पोताना विशाल मंदिरना दरवाजा पासे आवी पहोच्या तेटलामां दरवाजाना बारणां बंध थयां. जो के बलभद्रे बहार निकलवा माटे ते बंध थयेला कमाडोने भागी नाख्यां, तो पण ते क्षणमात्रमां पाछां एकठां थइ गयां. आ वखते आकाशमां उभेला अने भयंकर आकृतिवाला द्वैपायन देवे कृष्ण बलभद्रने कह्युं. "हे वीर पुरुषो! तमे पोताना बलने फोगट शामाटे गुमावो छो? हुं फक्त तमारा बेने जण विना बीजा कोइ बाल के वृद्धने छोडी देनार नथी. में पूर्वे एकठां करेलां सर्व तपने पण निश्चे तेज माटे मूढ भावथी गुमावी दीधुं छे." पछी माता पिताए कृष्ण बलभद्रने कह्युं. "हे पुत्रो! तमे आ स्थानथी दुर जता रहो. जो तमे जीवता रहेशो तो तमाराथी फरी वंश वृद्धि थशे. तमे माता पितानी भक्तिने लीधे पोतानी पूर्ण शक्ति प्रगट करी; परंतु पूर्व भवमां मेलवेला अमारां दुष्ट कर्मथी ते सफल थइ नहि. जो के पुरुषार्थरहित एवा अमोए श्री नेमिनाथ प्रभु पासे दीक्षा न लीधी तो पछी संसाराभ्यासने अनुसरी रहेली आ विटंबना अमने केम भुगवत न थाय?

हवे अमने श्री जिनेश्वरोनुं शरण थाओ, सिद्ध, साधु अने केवली प्रणित धर्म पण अमारा शरणरूप थाओ. वली आ भवने विषे अमने चार प्रकारना आहारना त्यागरूप अनशन व्रत पण हो. सर्व प्रकारना प्राणीयोना हितकर्ता, राग द्वेषादिकनो संग त्यजी देनारा अने सर्व जगत्‌ना मित्र श्री नेमिनाथ प्रभु अमारा शरण थाओ." आ प्रमाणे परमेष्टी मंत्रना ध्यानमां तत्पर थयेला ते त्रणेजण (देवकी रोहिणी अने वसुदेव) द्वैपायन देवे प्रगट करेला अग्निथी भस्मीभूत थइ पुण्यने लीधे स्वर्गमां गया. आवी रीते सर्व नगरवासी जनो भस्मीभूत थया. कृष्ण बलभद्र पण निश्चे भस्मीभूत थती पोतानी समग्र नगरीने जोता छता बहारना जीर्णोद्यानने विषे गया. त्यां बलता सुवर्णना किल्ला अने महेलोना थता खडखडाट शब्दोथी, भस्मरूप थता मनुष्योना अने तिर्यंचोना कोलाहलथी तथा अग्निनी ज्वालाना तीखाराओमां पडता पक्षीयोना शब्दोथी क्षोभ पामेला कृष्णे दीन वचनथी पोताना भाइ बलभद्रने कह्युं. "हे बंधो! हुं म्हारी पोतानी दृष्टिथी आ नगरीना दाहने जोइ शकतो नथी, तो हवे क्यां जाउं? कारण के, राजाओनुं महा पराक्रमवंत सर्व मंडल आपणाथी विरुद्ध छे." बलभद्रे कह्युं. "हवणां आपणने श्रेष्ट बुद्धिवाला अने संबंधि एवा पांडवोनी नगरी प्रत्ये जवुं योग्य छे; पण बीजा कोइ दुश्मनने घरे जवुं योग्य नथी." कृष्णे कह्युं. "ठीक छे, पण पूर्वे में महा क्रोधथी अने हठथी ते पांडवोने बहु पीडा आपी छे; तेथी हवणां तेमनी नगरीप्रत्ये जतां आपणा मनमां शुं बहु लज्जा नहिं थाय?" बलभद्रे फरीथी कह्युं. "हे मुकुंद! निश्चे तें जेवी रीते एकवार पांडवोनो अपकार कर्यो छे. तेवीज रीते बहुवार उपकार पण कर्यो छे. खरेखर ए पांडवो उत्तम गुणवान् अने कृतज्ञ (करेला गुणने जाणनारा) छे; तेथी तेओ पूर्वे तमे करेला उपकारना स्मरणथी हर्षित चित्तवाला थइने तमारुं बहु गौरव करशे." आ प्रमाणे निश्चय करीने पगवडे चालता ते बन्ने भाइयो पांडवोनी नगरी तरफ चाल्या. अहो! अति म्होटा पुरुषोने पण दुर्दैवथी दुष्ट कर्मना फलरूप आवी दुर्दशा प्राप्त थाय छे!!!

हवे अहिं द्वारका नगरीमां श्री कुब्जवारक नामनो बलभद्रनो पुत्र पोतानी नगरीने दग्ध थती जोइ अत्यंत भय पामतो छतो पोताना महेल उपर चडीने कहेवा लाग्यो के, "हे देवताओ! हुं श्री नेमिनाथ प्रभुनो शिष्य छुं

अने तेथीज श्री जिनेश्वर भगवाने मने आज्ञा करी छे. तो हवे तने मने आ अग्निवर्षा शामाटे वाळो छो ? आम कहेता एवा ते कुब्जवारकने जृंभक नामना देवताए तुरत त्यांथी उपाडी श्री नेमिनाथ प्रभु पासे मूक्यो. योग्यज छे के, तेज भवमां सिद्धिपदने पामनारा पुरुषोने आवी अनर्थनी घटना केम थाय ? अर्थात् नज थाय. आ वखते श्री नेमिनाथ प्रभु दूर रहेला पल्हवि नामना देशमां विहार करता हता, त्यां कुब्जवारक कुमारे आवीने तेमनी पासे दीक्षा लीधी. अनुक्रमे उत्कृष्ट तपस्या करतो ते कुमार मुक्ति पदने पाम्यो. कृष्ण बलभद्रनी बीजी पण हजारो स्त्रीयो आ अति घोर एवा अग्निना संकटने विषे अनशन व्रत धारण करी मृत्यु पामीने भव्य गति पामी. दुःसह अग्निथी दग्ध थयेली केटलीक माताओ तो तुरत उत्पन्न थयेला सुभभावयुक्त थइने तेज वखते घणुं करीने देवतारुपे अथवा म्होटा प्रभाववाळा व्यंतररुपे प्रगट थइ. आवी रीते ते द्वैपायनरुप अग्नि कुमार देवताए द्वारका नगरीने छ मास पर्यंत दग्ध करी. पछी जाणे संकेतज आप्यो होयनी ? एम समुद्रे पोताना उछळता तरंगोथी ए नगरीने चारे तरफथी बोळी दीधी. धिक्कार छे आवा दुष्ट कृत्यने !!!

हवे कृष्ण बलभद्र बन्ने भाइयो हस्ति समान हस्तिनापुरप्रत्ये जवा माटे प्रति दिवस आगळ आगळ प्रयाण करता हता, एवामां एक दिवस कृष्णे बलभद्रने कह्युं के, "हे बंधो ! मने भुख लागवाथी बहु पीडा थाय छे." बलभद्रे कह्युं. "जो तुं अहिं सावधानपणे भलो रहे तो हुं आ पासेना नगरमां जाउं." कृष्णे कह्युं. "परंतु त्यां तमने उपद्रव थाय तेनी खबर अहिं मने कोण कहेशे ?" बलभद्रे कह्युं. "हे राक्षसोना शत्रु ! जो त्यां तम थशे तो हुं सिंहनाद करीश; एथी तमने तुरत जाण थशे. पछी तमारे तत्काल त्यां आववुं." आवो संकेत करीने बलदेव तुरत नगरमां गया. श्रेष्ठरुपवाळा बलभद्रने नगरमां प्रवेश करता जोइ नगरवासी जनो परस्पर कहेवा लाग्या के, "अहो ! आ बलदेव कृष्ण सहित द्वारका नगरीथी निकळी जता हशे के शुं ?" आम नगरना सर्व मनुष्यो विचार करता हता एटलामां बलदेवे नृतन आवेल कंदोइनी दुकानथी मद्य सहित उत्तम स्वादवाळां भोजनने खरीद्युं. पछी ते बलदेवनी ए सर्व हकीकत नगरना रक्षको पासे जइने तेटलामां आकुलव्याकुल मनवाळा

हवे अमने श्री जिनेश्वरोनुं शरण थाओ, सिद्ध, साधु अने केवली प्रणित धर्म पण अमारा शरणरुप थाओ. वली आ नवने विषे अमने चार प्रकारना आहारना त्यागरुप अनशन व्रत पण हो. सर्व प्रकारना प्राणीयोना हितकर्ता, राग द्वेषादिकनो संग त्यजी देनारा अने सर्व जगत्ना मित्र श्री नेमिनाथ प्रनु अमारा शरण थाओ." आ प्रमाणे परमेष्ठी मंत्रना ध्यानमां तत्पर थयेला ते त्रणेजणा (देवकी रोहिणी अने वसुदेव) द्वैपायन देवे प्रगट करेला अग्निथी नस्मीनूत थइ पुण्यने लीधे स्वर्गमां गया. आवी रीते सर्व नगरवासी जनो नस्मीनूत थया. कृष्ण बलनइ पण निश्चे नस्मीनूत थती पोतानी समग्र नगरीने जोता उता बहारना जीर्णोद्यानने विषे गया. त्यां बलता सुवर्णना किल्ला अने महेलोना थता खडखडाट शब्दोथी, नस्मरुप थता मनुष्योना अने तिर्यंचोना कोलाहलथी तथा अग्निनी ज्वालाना तीखाराओमां पमता पक्षीयाना शब्दोथी क्षोन पामेला कृष्णे दीन वचनथी पोताना नाइ बलनद्रने कह्युं. "हे बंधो ! हुं म्हारी पोतानी दृष्टिथी आ नगरीना दाहने जोइ शकतो नथी, तो हवे क्यां जाउं ? कारण के, राजाउनुं महा पराक्रमवंत सर्व मंमल आपणाथी विरुद्ध छे." बलनद्रे कह्युं. "हवणां आपणने श्रेष्ठ बुद्धिवाला अने संबंधि एवा पांमवोनी नगरी प्रत्ये जवुं योग्य छे; पण बीजा कोइ दुश्मनने घेरे जवुं योग्य नथी." कृष्णे कह्युं. "ठीक छे, पण पूर्वे में महा क्रोधथी अने हठथी ते पांमवोने बहु पीमा आपी छे; तेथी हवणां तेमनी नगरीप्रत्ये जतां आपणा मनमां शुं बहु लज्जा नहिं थाय?" बलनद्रे फरीथी कह्युं. "हे मुकुंद! निश्चे तें जेवी रीते एकवार पांमवोनो अपकार कर्यो छे. तेवीज रीते बहुवार उपकार पण कर्यो छे. खरेखर ए पांमवो उत्तम गुणवान् अने कृतज्ञ (करेला गुणने जाणनारा) छे; तेथी तेओ पूर्वे तमे करेला उपकारना स्मरणथी हर्षित चित्तवाला थइने तमारुं बहु गौरव करशे." आ प्रमाणे निश्चय करीने पगवमे चालता ते बन्ने नाइयो पांमवोनी नगरी तरफ चाल्या. अहो ! अति म्होटा पुरुषोने पण दैवथी दुष्ट कर्मना फलरुप आवी दुर्दशा प्राप्त थाय छे!!!

हवे अहिं द्वारका नगरीमां श्री कुब्जवारक नामनो बलनद्रनो पुत्र पोतानी नगरीने दग्ध थती जोइ अत्यंत नय पामतो उतो पोताना महेल उपर चमीने केहवा लाग्यो के, "हे देवताओ ! हुं श्री नेमिनाथ प्रनुनो शिष्य छुं

अने तेथीज श्री जिनेश्वर भगवाने मने आज्ञा करी छे. तो हवे तमे मने आ अग्निवर्षे शामाटे बालो छो? आम कहेता एवा ते कुब्जवारकने जृंभक नामना देवताए तुरत त्यांथी उपाडी श्री नेमिनाथ प्रभु पासे मूक्यो. योग्यज छे के, तेज भवमां सिद्धिपदने पामनारा पुरुषोने आवी अनर्थनी घटना केम थाय? अर्थात् नज थाय. आ वखते श्री नेमिनाथ प्रभु दूर रहेला पल्हवि नामना देशमां विहार करता हता, त्यां कुब्जवारक कुमारे आवीने तेमनी पासे दीक्षा लीधी. अनुक्रमे उत्कृष्ट तपस्या करतो ते कुमार मुक्ति पदने पाम्यो. कृष्ण बलभद्रनी बीजी पण हजारो स्त्रीयो आ अति घोर एवा अग्निना संकटने विषे अनशन व्रत धारण करी मृत्यु पामीने भव्य गति पामी. दुःसह अग्निथी दग्ध थयेली केटलीक माताओ तो तुरत उत्पन्न थयेला शुभभावयुक्त थइने तेज वखते घणुं करीने देवतारुपे अथवा म्होटा प्रभाववाला व्यंतररुपे प्रगट थइ. आवी रीते ते द्वैपायनरुप अग्नि कुमार देवताए द्वारका नगरीने छ मास पर्यंत दग्ध करी. पछी जाणे संकेतज आप्यो होयनी? एम समुद्रे पोताना उछलता तरंगोथी ए नगरीने चारे तरफथी बोली दीधी. धिक्कार छे आवा दुष्ट कृत्यने !!!

हवे कृष्ण बलभद्र बन्ने भाइयो हस्ति समान हस्तिनापुरप्रत्ये जवा माटे प्रति दिवस आगल आगल प्रयाण करता हता, एवामां एक दिवस कृष्णे बलभद्रने कह्युं के, "हे बंधो! मने भुख लागवाथी बहु पीडा थाय छे." बलभद्रे कह्युं. "जो तुं अहिं सावधानपणे उभो रहे तो हुं आ पासेना नगरमां जाउं." कृष्णे कह्युं. "परंतु त्यां तमने उपद्रव थाय तेनी खबर अहिं मने कोण कहेशे?" बलभद्रे कह्युं. "हे राक्षसोना शत्रु! जो त्यां तेम थशे तो हुं सिंहनाद करीश; एथी तमने तुरत जाण थशे. पछी तमारे तत्काल त्यां आववुं." आवो संकेत करीने बलदेव तुरत नगरमां गया. श्रेष्ठरुपवाला बलभद्रने नगरमां प्रवेश करता जोइ नगरवासी जनो परस्पर कहेवा लाग्या के, "अहो! आ बलदेव दग्ध थती द्वारका नगरीथी निकली आव्या छे के शुं?" आम नगरना सर्वे मनुष्यो विचार करता हता एटलामां बलदेवे मूल्य आपीने बजारमांथी मद्य सहित उत्तम रसवाला भोजनने खरिद्युं. पछी ते जेटलामां ए सर्व वस्तुओने लइ नगरना दरवाजा पासे आव्या तेटलामां आकुलव्याकुल मनवाला

रक्षक पुरुषे पांमुना पुत्र ठदंतक नृपतिने खबर आपी के, "हे महाराजा ! दिव्य रुपवंत कोइ पुरुष हवणां नगरीमां आवीने बहु मूल्यथी मदिरा तथा जोजन खरीद करी चाल्यो जाय बे. हुं आपने खबर कहेवा ऊट अहिं आव्यो बुं, तो हवे म्हारो दोष नथी." रक्षकनां आवां वचन सांजली तुरत सेना सहित तैयार थयेला ठदंतक नृपतिये नगरीनो दरवाजो बंध कराव्यो. आम पोताने हणवा माटे तैयार थयेला ठदंतक नृपतिने जाणी बलदेवे तुरत सिंहनाद करीने एक म्होटा आलान स्तंजने उखेमी पोताना हाथमां लीधो. सिंहना समान पराक्रमवाला अने महा बलवंत एवा कृष्ण पण सिंहनादने सांजली तुरत फाल मारता त्यां आव्या अने नगरीना दरवाजाना बन्ने कमामने पाटुना प्रहारथी तोमी नांख्या.

पठी कृष्णे तुरत ठदंतक नृपतिने बांधीने कह्युं. " अरे मूर्ख ! मरवानी इछा करता तें द्वारकानी लायमां शुं अमारा जुजाना बलने पण दग्ध थइ गयुं जाण्युं ? धिक्कार बे तने !!! निश्चे हुं रांक एवा तने हणीने शुं करुं !" कृष्णे आ प्रमाणे ठदंतक राजाने तिरस्कार करी ठोमी मूक्यो. पठी कृष्णे बलजड सहित मद्यपान पूर्वक जोजन कर्युं. त्यार बाद तेजए पूर्व दिशामां पर्याण कर्युं. अनुक्रमे पूर्वे उपार्जन करेला कर्मना उदयथी ते बन्ने जाइयो, प्रसन्न एवा असंख्य जंतुउथी पूर्ण एवा कौशांब नामना अरण्यप्रत्ये आवी पहोच्या. ते वनने विषे चालता एवा कृष्णने मदिराना पानथी, लवणना जक्षणथी, मार्गना श्रमथी, उग्र तापथी अने पूर्व जन्मना पुण्यना क्षयथी वर्णवी सकाय नहि एवी बहु तरश लागी. कृष्ण तरशने लीधे एक पगलुं पण आगल चालवाने समर्थ थया नहि; तेथी तेमणे पोताना जाइने कह्युं के, " हे बंधो ! तरशने लीधे म्हारुं तालवुं सूकाइ जाय बे." विशाल बुद्धिवाला बलजद्रे महा प्रेमथी कह्युं. " हे मुकुंद ! तुं स्वस्थपणे आ वृक्षनी नीचे बेस. हुं जल लइने आवुं बुं." पठी मार्गे चालवाने लीधे बहु खिन्न थयेला कृष्ण म्होटा वमवृक्षनी नीचे पोतानुं वस्त्र मुखपद्म उपर उढी तथा ढींचण उपर बीजो पग मूकीने उंघी गया अने बलदेव तेमना माटे जल लेवा बहु दूर गया.

ठल तेज वनमां रहेनारो, वाघना चामकाने उढनारो, निरंतर धनुष्य उपर बाणने चमावी राखनारो, पाप संपत्ति मेलववामां शंका वगरनो अने दूर रहेली

झीणी वस्तुने पण विंधी नांखवामां चतुर एवो जराकुमार, दैवयोगथी फरतो फरतो त्यां आवी चड्यो. त्यां तेणे वडवृक्षनी नीचे सूई गयेला कृष्णना देदीप्यमान कमलना चिन्हवाला चरण कमलने जोइ मृगनी भ्रांतिथी तुरत यमराजना दूतरुप बाण मार्युं. पछी बाणथी पगना मर्म स्थानने विषे विंधायेला अने तेज प्रहारथी पीडित थयेला मनवाला वली सूकाइ गयुं छे तालवुं जेमनुं एवा कृष्णे उठीने कह्युं. "अरे! पोतानुं नाम अने वैरनुं कारण दर्शाव्या विना मने बाणथी कोणे विंध्यो छे? कारण के, क्षत्रीय पुरुषो तो प्रबल वैर छतां पण सूतेला माणस उपर प्रहार करता नथी." कृष्णनां आवां वचन सांभली जराकुमार अति खेद पामीने कह्युं. "अहो! में कोइ पुरुषने प्रहार कर्यो!!" पछी कृष्णे "तुं कोण छुं?" एम पूछवाथी तेणे उत्तर आप्यो के, "राज्यने त्यजी दइ आ वनमां निवास करवा आवेलो हुं जराकुमार नामे वसुदेवनो पुत्र छुं. दयावंत चित्तवाला श्री नेमिनाथ प्रभुए मने श्रीकृष्णनो घात करनार कह्यो हतो, तेथी हुं कृष्णनुं रक्षण करवा माटे अर्थात् म्हारा हाथथी एवुं बंधुवधरुप कुकृत्य न थाय एवा हेतुथी द्वारका नगरी त्यजी दइ अहिं रह्यो छुं. केवल पापसंपत्तिने एकठी करनारा मने अहिं निवास करता बार वर्ष वीती गया छे. अहो! तेमां में आजे मनुष्यरुप तमने दीठा छे. हे भाइ! तमे कोण छो? ते मने झट निवेदन करो." कृष्णे कह्युं. "जेना माटे तमे स्वर्ग समान द्वारका नगरीने त्यजी दइ आ वनमां निवास करो छो तेज हुं तमारो न्हानो भाइ कृष्ण छुं. हुं अहिंयां आ वडवृक्षनी नीचे सूतो हतो एटला तमारा बाणथी विंधाणो छुं." कृष्णनां आवां वचन सांभली दूर उभेलो जराकुमार व्याकुल मनवालो थइने तत्काल तेमनी पासे आव्यो अने पोताना बाणथी विंधायेला पोताना बंधु श्री कृष्णने जाणीने ते तुरत मूर्छा पाम्यो. पछी ज्यारे मूर्छा निवृत्त थइ त्यारे ते दुःखथी बहु विलाप करवा लाग्यो. तेणे गद्गद् स्वरथी कृष्णने कह्युं. "हे बंधो! मने श्री नेमिनाथ प्रभुए कह्युं हतुं ते प्रमाणे द्वैपायन नामना तापसे आपणी द्वारका नगरीने अने यादवोना समग्र वंशने शुं दग्ध कर्या? हे भाइ अर्ध भरतखंडनी राज्य लक्ष्मीने भोगवनारा तमारी आजे आ शी दशा थइ!!!" पछी अत्यंत पीडायुक्त थयेला कृष्णे जराकुमारनी आगल सर्व वात कही. पोताना कुकृत्यथी खेद पामेला जराकुमारे पण फरीथी कृष्णने कह्युं. "धिक्कार छे

मने के, जे हुं बधुडनो घात करनार पुरुषोना मध्ये आ प्रथम रेखा पाम्यो हुं!! अहो! वसुदेवनो पुत्र थइ अने संसार समुद्रने तारनारा श्री नेमिनाथनी निरंतर सेवा करीने में आवुं कुकर्म कर्युं तो निश्चे हुं धिक्कारवा योग्य हुं. आ अरण्य क्यां, म्हारो निवास क्यां, तमारा सरखा अतिथियोनुं आववुं क्यां अने म्हारा बाणथी तमारुं विधाववुं क्यां? श्री नेमिनाथ प्रनुनुं कहेवुं सर्व सत्य थयुं छे. आहा! बलवंत पुरुषोने पण दैवयोग क्यारे बीजीरीते थतो नथी." आम वारंवार शोक करता जराकुमारने कृष्णे कह्युं. "हे बंधो! तुं वृथा खेद शा माटे करे छे, ? हे विवेकी! कोइनुं नावी मिथ्या थतुं नथी. ज्यारे मनुष्योनो पूर्वे संपादन करेलो पुण्यसमूह क्षय पामे अने पापसमूह उदय आवे त्यारे महात्मा पुरुषोए करेली दुःसह विघ्नोनी रक्षा पण निष्फल थाय छे. हे बंधो! आ एक नावीज छे एमां त्हारो अथवा बीजा कोइनो दोष नथी; परंतु में पूर्वे करेलां उग्र दुष्ट कर्मनुं ए पाप मनेज अति पीमाकारी थइ पम्युं छे, माटे हे बंधो! तुं शोकने त्यजी दइ अने म्हारी आ अवस्था थइ एवी पांमवोने खबर कहेवा माटे आ म्हारा हृदयना कौस्तुनरत्नने लइ पांमवोना राज्यमां जा. यादवकुलमां फक्त एक बाकी रहेला अने पांमवो थकी प्राप्त थयेला सुराज्य पदने सेवन करनारा तने पांमवो वृद्धि पमामशे, तेमज त्हाराथी फरी वंशनी वृद्धि पण थाओ. वली हे बंधो! त्हारे पांमवोनी आगल आ सर्व वात निवेदन करीने पछी में अति क्रोधने लीधे ते महा नक्तिवालाओने देशमांथी काढी मूक्या हता तेनी मधुर वाणीथी क्षमा मागवी. अरे नाइ! हवे तुं अहिंथी नठ अने ऊट चाल्यो जा, कारण के, म्हारे माटे जल लेवा गयेला बलनद्र आवशे अने ते त्हाराथी थयेला म्हारा वधने जाणशे तो निश्चे पोताना चित्तमां गोत्रक्षयने नहिं गणता त्हारो वध करशे. वली त्हारे अहिंथी अवला पगथी अर्थात् म्हारा सामुं मुख राखीने चाल्युं जवुं के, जेथी म्हारे विषे अति प्रेम नक्तिवाला बलनद्र त्हारो वध करवा माटे त्हारी पाछल न आवी शके." अति स्नेहने धारण करनारा कृष्णे आवी रीते बहु बहु वार कह्युं एटले दीन थयेलो जराकुमार कृष्णनी पासेथी कौस्तुनमणिने लइ चाल्यो गयो.

हवे अहिं कृष्ण पोतानो मृत्युकाल पासे आव्यो जाणी दुःखथी अति पीमा पामता छता पण उत्तम धर्मपालना राखीने तेमज शुन्न चित्तवाला थ-

इने दर्जना आसन उपर बेसी क्षणमात्र आ प्रमाणे आराधना करवा लाग्या. " अरिहंत सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने साधुउने हुं प्रणाम करुं छुं. निश्चे पोताना शरणे प्राप्त थयेला मने तेउ सर्व काल रक्षण करनारा थाउ. देवाधिदेव, महोदय लक्ष्मीना आपनारा, विश्वना आन्नूषण अने केवलज्ञानथी सर्व प्राणीयोना न्नावने जाणनारा श्री नेमिनाथ प्रन्नुने हुं निरंतर नमस्कार करुं छुं. में आ न्नवमां महा कषायना योगथी चतुर्गतिने विषे रहेला सर्व जंतुउनी जे कांइ विराधना करी होय अथवा बीजा न्नवोमां जे कांइ विराधना करी होय ते सर्वनी क्षमा मागुं छुं. में बाल्यावस्थाथी मांडीने आज पर्यंत दिव्य आयुधोथी क्षत्रियरसवडे (शूररसवडे) कंस मैद विगेरे शत्रुउनो जे वध कर्यो छे ते सर्व पापने धिक्कारवापूर्वक क्षमा मागुं छुं. म्हारुं कोइ नथी तेम हुं पण कोइनो नथी. में सर्व संग त्यजी दीधो छे. तेमज मने आ न्नवमां क्षायक समकितरूप रत्न प्राप्त थाउ. वली समुद्रविजय विगेरे दशार्हो, त्रण जगतना प्राणीयोने पूजन करवा योग्य गजसुकुमाल विगेरे म्हारा बंधुउ अने शांबादि म्हारा पुत्रो ए सर्वे निश्चे पुण्यवंता छे. कारण के, जेउ दुःखनां स्थानरुप गृहवासने त्यजी दइ श्री नेमिनाथ प्रन्नु पासे दीक्षा लइ अने तीव्र तपस्या करी मुक्तिपदने पामशे. खरेखर उत्तम शीलवाली रुक्मिणी विगेरे म्हारी स्त्रीयो पण प्रशंसा करवा योग्यज छे. केमके तेउ पण प्राप्त थयेला अवसरे श्री नेमिनाथ जिनेश्वर पासे दीक्षा लइने पोताना म्होटा उदयवाला अर्थनुं साधन करे छे. " आ प्रमाणे चडता न्नावथी शुद्ध ध्यानने विषे प्रवृत्त थयेला कृष्णना न्नावने विषे, पूर्वे बंधायेला नरक आयुष्यने लीधे आवी रीते फेरफार थयो. " हा ! पूर्वे अति बलवंत शत्रुउथी पण म्हारो परान्नव थयो नथी, ते आजे म्हारा जोता छता दुष्ट चित्तवाला द्वैपायने म्हारी नगरी, प्रजा, माता, पिता, बंधु, वधु अने व्हेनो विगेरे सर्वने दग्ध करी मने आवी विषम दशाने पहोचाड्यो छे. बलन्नद्र सहित बलवंत एवा मने धिक्कार छे ! ! ! जो हवणां ए म्हारा माता पितादिनो नाश करनार शत्रुने हुं जाणुं अथवा देखुं तो निश्चे ते दुष्ट हृदयवालाने म्हारा पोताना हाथवती शीक्षा करुं. " आवी रीते वृद्धि पामेला गाढ रौद्र ध्यानमांज आयुष्य पूर्ण थवाने लीधे मृत्यु पामेला कृष्ण महा दुःसह क्लेशना स्थानरुप त्रीजी नरकने विषे उत्पन्न थया.

पछी वनने विषे ज्ञमीने कमलपत्रमां जल लइ पोताना बंधु कृष्णने जोवा माटे पहोलां करेलां नेत्रवाला बलज्ञद्र ते वमनी पासे आव्या, तो त्यां तेमणे प्रफुल्लीत पण वस्त्रथी ढांकी राखेला मुखवाला अने सूइ रहेला कृष्णने जोइ विचार्युं के, "बहु श्रमथी थाकी गयेलो आ म्हारो बंधु सुखे सूइ रह्यो छे." आम धारी ते वमवृक्षनी नीचे कृष्णनी पासे ज्ञ्ना रह्या. वली "आ म्हारो ज्ञाइ पोतानुं शरीर केम नथी हलावतो अथवा तेनां मुख जपर मांखीयो शा माटे ज्ञमे छे ?" एवी शंकाथी तेमणे कृष्णनां मुख जपरनुं वस्त्र दूर कर्युं एटले मृत्यु पामवाने लीधे चेष्टा रहित थयेला शरीरवाला पोताना बंधुने जोइ बलज्ञद्र तुरत मूर्छा पाम्या. पछी शीतल पवनथी सचेत थया एटले बंधु वियोगने लीधे अति आकुलव्याकुल थयेला तेमणे पोताना ज्ञाइना चरणने विषे थयेलो बाणप्रहार जोइ तुरत वनना जीवोने त्रास करनारो तथा ज्ञयंकर एवो सिंहनाद कर्यो. वली ते बलज्ञद्रे तारस्वर करीने कह्युं के, "अरे ! मृत्यु पामवाने इच्छता कया दुष्ट पुरुषे आ सुखे सूइ रहेला म्हारा बधुने हण्यो ? जेणे आवुं कुकृत्य कर्युं होय ते ऊट म्हारी पासे आवीने कही द्यो. जे पुरुष पोताना सर्व बलथी बालकने, स्त्रीने, गांमाने, मंदने, मूर्छा पामेलाने, सूइ गयेलाने, रोगीने अने अस्त्र विनाने हणे छे तेने सर्व माणसो अधममां पण अधम कहे छे." पछी विह्वल थयेला बलज्ञद्र, कोप अने शोकथी ते महा अरण्यमां सर्व ठेकाणे ज्ञम्या पण कोइ स्थानके पोताना बंधुनो घात करनार पुरुषने दीठो नहि. पछी मननी अंदर थयेला बहु शोकने लीधे बहु वखत सुधी शोक करीने बलज्ञद्र पोताना खंज्ञा जपर कृष्णना शरीरने धारण करी ते वननी अंदर फरवा लाग्या. जो के बलज्ञद्र पोते जाण तथा वखाणवा योग्य गुणवाला हता, तो पण ते क्यारेक कृष्णना शरीरने पुष्प तथा फलवमे बहु सुशोज्ञित करता. क्यारेक शय्यामां सूवारता अने क्यारेक पोते जलवमे स्नान करावता. आ प्रमाणे कृष्णना शरिरने पोताना खंज्ञा जपर जचकी प्रतिदिवस विविध प्रकारनी चेष्टा करता बलज्ञद्रने छ मास थया. हाहा! महात्माजने पण आवी मोहविटंबना थाय छे.

हवे बलज्ञद्रनो न्हानो ज्ञाइ सिद्धार्थ के, जे चारित्र लइने देवता थयो हतो, तेणे अवधिज्ञानथी बलज्ञद्रनी आवी अत्यंत दुर्दशा दीठी, तेथी ते पो-[illegible]ी प्रतिज्ञा पालवाने माटे मोहथी अत्यंत मूढ बनी गयेला पोताना बंधुने

बोध पमाडवाने माटे तुरत त्यां आव्यो. पछी ते देवताए बलभद्र जोता छता पर्वतना विषम प्रदेश उपरथी साजा उतारेला अने पृथ्वीना सरल रस्ता उपर भागी गयेला रथने फरीथी साजो करवा मांड्यो. तेनी आवी चेष्टा जोईने बलभद्रे कह्युं. "अरे मूर्ख! विषम मार्गथी सुखे उतारेला अने सरल रस्ते भागी गयेला रथने हवे शा माटे साजो करवा बेठो छे?" देवताए कह्युं. "हे बलदेव! युद्ध विना मृत्यु पामेलो आ त्हारो बंधु ज्यारे जीवतो थशे त्यारे आ भागी गयेलो म्हारो रथ पण साजो थशे, एम धारी हुं तेने सांधु छुं." देवतानां आवां वचन सांभली विशेष दुःख पामेला बलदेव तत्काल आगल चाल्या. देवता पण तेमने प्रतिबोध पमाडवा माटे खेडुतनुं रूप धारण करी पथ्थर उपर कमल वाववा लाग्यो. बलभद्रे तेनुं आवुं कृत्य जोइ हसीने पूछ्युं. "अरे! आ त्हारां कमलो क्यारे उगशे?" देवताए उत्तर आप्यो. "त्हारा खंभा उपर रहेलुं शब ज्यारे जीवतुं थशे त्यारे ए कमलो उगशे." बलदेव फरीथी आगल चाल्या एटले देवता पण मनुष्यनुं रूप धारण करीने तेज मार्गमां एक बली गयेला वृक्षने जलसिंचन करवा लाग्यो. बलदेवे तेने हास्यपूर्वक कह्युं. "हे मूढ! आ बली गयेलुं वृक्ष त्हारा सिंचन करवाथी क्यारे पल्लवित थशे?" देवताए कह्युं. "ज्यारे आ त्हारा खभा उपर रहेलुं शब जीवतुं थशे त्यारे आ वृक्ष पण पल्लवित थशे." देवतानां आवां वचनथी बलभद्र आगल चाल्या. देवता पण तुरत गोवालनुं रूप धारण करी तेज मार्गमां एक मृत्यु पामेली गायना मुखमां लीला घासना कोलीया प्रयत्नथी देवा लाग्यो. बलदेवे तेने कह्युं. "अहो! आ मृत्यु पामेली गाय शुं घासने खाशे?" देवताए कह्युं. "हे मूढ! त्यारे आ शब पण शुं जीवतुं थाशे?" देवतानी आवी समान प्रत्युत्तरवाली वाणी सांभलीने श्री बलदेव विचार करवा लाग्या. "शुं म्हारो बंधु निश्चे मृत्यु पाम्यो छे के, जेथी सर्वे माणसो आवी रीते कहे छे?" आम बलदेव पोताना चित्तमां विचार करे छे एटलामां सिद्धार्थदेवे पोतानुं खरुं स्वरूप धारण करीने तेमने कह्युं. "हे बलदेव! आप बंधुना स्नेहथी केम मोह पामो छो? हुं तमारो भाई सिद्धार्थ छुं. आपे मने प्रतिज्ञा करावी हती के, त्हारे अवसरे आवीने मने प्रतिबोध पमाडवो." एज कारणथी हुं स्वर्गनुं सुख छोडी दइ तमने प्रतिबोध करवा अहिं आव्यो छुं. हे बलभद्र! सांभलो.

तमे ज्यारे कृष्णना माटे जल लेवा दूर गया त्यारे कृष्ण मार्गना श्रमथी पीम पामवाने लीधे वमवृक्षनी नीचे महा निद्राथी उंघी गया. पाछल एज अरएयमां भ्रमतो जराकुमार त्यां आव्यो अने तेणे मृगनी भ्रांतिथी कृष्णना चरणकमलने विषे बाण मार्युं. पछी कृष्णे पोतानो कौस्तुभमणि आपीने तेने पांमवोनी राजधानी प्रत्ये मोकल्यो. प्रथम शुभ ध्यानमां तत्पर रही अने पाछलथी पोताना पूर्व भवना निकाचित कर्मथी अत्यंत रौड़ ध्यानमां तत्पर थयेला कृष्ण मृत्यु पामीने त्रीजी नरकप्रत्ये गया." बलभद्रे कह्युं. "हे बांधव ! तें बहु सारुं कर्युं ! बहु सारुं कर्युं ! ! जे अवसरे आवीने मने प्रतिबोध पमाड्यो. हे उपकारी बंधो ! हवे म्हारे शुं करवुं ते तुं मने झट कहे." देवताए कह्युं. "हे पुएयवंत ! हवे तुं श्री नेमिनाथ प्रभु पासे दीक्षा गृहण कर." पछी विवेकी एवा बलभद्रे तुरत चंदनना काष्टथी कृष्णना शरीरने अग्नि संस्कार कर्यो; एटलामां श्री नेमिनाथ प्रभुए चारण मुनिने त्यां मोकल्या; तेथी बलभद्रे अवसर जाणीने कृष्णनो शोक त्यजी दइ स्नेहपूर्वक तेमनी पासे दीक्षा अंगीकार करी. पछी सिद्धार्थ देवता अने चारणमुनि पोतपोताना स्थानके गये छते श्री बलभद्र मुनि विहार करता करता तुंगिक नामना पर्वतने विषे गया. त्यां तेमणे शांत चित्तथी तपश्या करवा मांमी.

एक दिवस मासखमणने पारणे बलदेव मुनि, ते पर्वतनी पासेना गाममां भिक्षा माटे जता हता एवामां बालकने साथे लइ जल भरवा आवेली कोइ स्त्रीये कूवाना कांठ उपर उभा उभा तेमने दीठा. बलदेवना रूपथी मोह पामेली ते स्त्रीये जल भरवा माटे घमाने बदले पोताना पुत्रना कंठे दोरमुं बांधी कूवामां सिंचवा मांड्यो. तेनां आवां विलोम कृत्यने जोइ पोतानी रूपलक्ष्मीनी निंदा करता बलदेव मुनिये ते स्त्रीने कह्युं. "हाहा! तुं आ अनार्यलोकने पण निंदा करवा योग्य, शोक तथा आपत्तिने आपनारुं अने महा दुःखना कारणरुप शुं कृत्य करे छे ?" आवी रीते ते स्त्रीने प्रबोध पमाडी बलभद्र मुनि पोताना चितमां विचार करवा लाग्या. "निश्चे में आ बालकने मृत्युथी मूकाव्यो. हवे पछी म्हारां रूपथी आवुं कुकृत्य न थाय एटला माटे म्हारे नगरी विगेरेमां क्यारे पण भिक्षा लेवा जवुं नहि. फक्त आ पर्वत उपरज रही अवसरे काष्ट विगेरेनोज आहार करवो." आ प्रमाणे घोर अभिग्रह

लइ विधिने जाणनारा मुनि बलभद्र त्यां रह्या. त्रण रत्ननुं आराधन करवामां सावधान, त्रण गुप्ति अने चार समितीनुं रक्षण करनार, शमभावना समुद्र अने मोक्ष सुखना अभिलाषी ते महामुनि, पक्षक्षमण अने मासक्षमणना पारणाने विषे काष्ट जल विगेरेनुं भक्षण करता तप करवा लाग्या. पछी एक दिवसे ते पर्वत उपर काष्ट लेवा आवनारा माणसे पोताना राजानी पासे आवीने कह्युं के, "आ पर्वतना शिखर उपर कोइ तपस्वी अति घोर एवुं तप करे छे. सर्वे राजाउ पण ए वात सांभलीने क्षोभ पामता छता विचार करवा लाग्या के, " निश्चे ए आपणुं राज्य लेवाने अर्थेज घोर तप करे छे, माटे एनो हवणां वध करवो योग्य छे. " आम धारी सर्वे भूपतियो बखतर पहेरीने बलदेव मुनिने हणवा माटे त्यां आव्या. धिक्कार छे धिक्कार छे महामोहने सेवन करनारा मनुष्योनां आवां अयोग्य स्थानने विषे आरंभेला युद्धनां कृत्यने !!! सिद्धार्थ देव पण आ वखते पोतानी उत्कृष्ट भक्तिने लीधे पुंछ अने केशवालीथी पृथ्वीना भागने कंपावता एवा विकराल मूर्तिवाला सिंहो श्री बलदेव मुनिनी पासे विकूर्व्या. देवतानां आवां कृत्यथी भय पामेला सर्वे राजाउ श्री बलदेव मुनिने प्रणाम करी पोतपोताने स्थानके जता रह्या. कह्युं छे के—लोकने विषे तीव्र तपस्वी लोकोनां तपनो प्रभाव अचिंत्य होय छे. ए महा मुनिना मधुर स्वरवाला स्वाध्यायने सांभलीने व्याघ्रादि हिंसक जीवो पण परस्पर वैर त्यजीने उपशम भावने पाम्या हता.

हवे श्री बलभद्र मुनिनो कोइ पूर्व जन्मनो मित्र लघुकर्मी जीव, उत्पन्न थयेला जाति स्मरण ज्ञानवालो अने विशुद्ध श्रद्धारुपी गुणवालो ते वनमां मृग थयो हतो. ते ज्यारे बलदेव मुनि बेसता त्यारे बेसतो, उभा रहेता त्यारे उभो रहेतो अने कोइ स्थानके जता त्यारे तेमनी पाछल जतो. परंतु शुद्ध चित्तवालो ते मृग क्यारे पण तेमनुं पडखुं मूकतो नहि. विवेकवंत एवा ते हरिणे "आ वनमां सार्थ विगेरेनो योग होय छे त्यारे तेमनी पासेथी आहार पाणी लावीने आ मुनि भोजन करे छे. नहितो नथी करता." एवा मुनिना घोर अभिग्रहने जाण्यो. पछी ते मृग हमेशां सवारे मुनिनी सेवा करी अने तेमने नमस्कार करी पर्वतना वननी अंदर सार्थ विगेरेना आश्रमने शोधतो शोधतो दूर भमे अने ज्यारे ते कोइ सार्थ विगेरेने देखे त्यारे ते मुनिने

शुद्ध आहार वहोरवा माटे जगाडवाने पोताना शींगडा वडे मुनिने खजवाले. अनुक्रमे बलदेव मुनि तेनो संकेत जाणे एटले पोताना स्थिर ध्यानने मूकी आगल चालतां हरिणे बतावेला मार्गने विषे दातारना आश्रमे जाय. पछी शुद्ध भावथी वहोरावेला निर्दोष आहारथी पारणुं करी ते महामुनि फरी पोताना आश्रमे जइ अति उग्र तप करे. आ प्रमाणे ए महामुनिने व्रतनुं पालन करता एकसो वर्ष वीती गयां.

एक दिवस ते अरण्यने विषे केटलाक सुतारो लाकडां कापवा आव्या अने पोताना तीक्ष्ण कुवाडावती पांशरा अने गांठे विनाना म्होटा वृक्षोने कापवा लाग्या. मध्यान्हनो वखत थयो एटले तेओ अर्द्ध कापी नाखेलां मूलवाला ते म्होटा वृक्षनी नींचे भोजन करवा बेठा एटलामां पेलो हरिण फरतो फरतो त्यां आवी पहोच्यो. त्यां तेमने भोजन करता जोइ तुरत संकेत करवा माटे मुनिनी पासे गयो. बलदेवमुनि पण ध्यानने त्यजी दइ इर्यापथिकीनुं स्मरण करता संतुष्ट चित्तवाला मृगे बतावेला मार्गेथी त्यां आवी पहोच्या. जाणे हालतुं चालतुं कल्पवृक्षज होयनी ? अथवा तो जाणे मूर्त्तिमंत पुण्यनो प्रकाशज होयनी ? एवा अने उचिंता आवेला ते जोवा योग्य मुखवाला अतिथिने जोइने विवेकी एवो मुख्य सुतार विचार करवा लाग्यो. "आजे म्हारा आंगणामां अमृतवृष्टि थइ अथवा तो कल्पवृक्ष प्रगट थयो !" आवी रीते हर्षथी अनुमोदना करतो सुतार उत्तम भक्तिथी मानरहित एवा बलभद्रमुनिने दोषरहित एवुं पोतानुं भातुं वहोराववा लाग्यो. पासे उभेलो मृग पण आ प्रमाणे शुद्ध भावना भाववा लाग्यो के, "निश्चे दातार एवो आ सुतार जगत्मां धन्य, कृतार्थ, पुण्यवान् अने त्रणलोकमां मान्य छे. कारण के, जे एणे उत्तम, एषणीय अने अगण्य एवा पोताना भाताथी आ मुनिने प्रतिलाभ्या. खरेखर अभागी तो हुंज रह्यो के, आ दुष्ट पशुजातिपणाथी पात्रदान रहित रह्यो. बलदेव मुनिये पण तुरत पोतानी तपोवृद्धीने माटे लोलुपीपणुं दूर करी सुतारे वहोरावेलो एषणीय आहार गृहण कर्यो. आ वखते प्रचंडवायु उत्पन्न थयो; तेथी पेलुं मूलमांथी अर्द्धुं कापी नाखेलुं वृक्ष ते त्रणेजण उपर पड्युं, जेथी तेओ तुरत मृत्यु पाम्या. महातप, अतुल्य पात्रदान अने अनुमोदना ए त्रणना पुण्यथी पवित्र थयेला अंगवाला श्री बलदेवमुनि, सुतार अने

मृग ए त्रणेजणा ब्रह्म देवलोकने विषे महा समृद्धिवंत देवता थया. निरंतर मोक्ष आपवायोग्य एवा ब्रह्मचर्य व्रतने धारण करनारा अने तीव्र तप करनारा श्री बलदेव मुनि स्वर्गमां गया ए एक त्हारा चित्तमां आश्चर्यरुप जणाय छे. तेमज मोक्ष लक्ष्मीना एक मुख्य कारणरुप सुपात्रदान आपतो एवो सुतार पण ब्रह्मदेवलोक प्रत्ये गयो ए पण आश्चर्यरुप छे. वली तिर्यंच जातिवालो मृग पण दान, शील अने तपक्रिया रहित छतां केवल जद्रलता जावयोगथी ब्रह्मदेवलोकमां देवता थयो ए पण म्हारा चित्तने विषे आश्चर्य छे.

हवे ब्रह्म देवलोकने विषे उत्पन्न थयेला बलभद्र देवताने त्यां तुरत अवधिज्ञान उत्पन्न थयुं; तेथी तेमणे प्रेमना स्थानरुप पोताना पूर्वभवना बंधु कृष्णने दुःसह वेदनाथी पीडा पामता त्रीजी नरकने विषे दीठा. पछी नरकथी कृष्णनो उद्धार करवाने इच्छतो ते देव तुरत स्वर्गथकी त्यां गयो अने कृष्णने प्रेमपूर्वक आलिंगन करी कहेवा लाग्यो के, “ हे बंधो ! हुं त्हारा पूर्वजन्मनो राम (बलभद्र) नामनो बंधु छुं. हुं दीक्षा लइ पांचमा देवलोकमां देवतापणे उत्पन्न थयो छुं; परंतु प्रेमने लीधे अहिं त्हारी पासे आव्यो छुं. ” आम कहीने बलभद्र देवताए पोतानी अप्रमाण एवी दिव्य शक्तिथी कृष्णना जीवनो नरकमांथी उद्धार करवा मांड्यो; परंतु ते सूर्यथी गली पडता बरफनी पेठे तुरत गलीने पाछो नरकमांज पडवा लाग्यो. कृष्णे कह्युं. “ हे बंधो ! हवे तुं मने मूकी दे. कारण एम करवाथी मने बहु पीडा थाय छे. ” पछी खेदयुक्त चित्तवाला देवताए महा वेदनाथी पीडा पामता कृष्णने मूकी दइने कह्युं. “ हे भाइ ! त्हारा घोर कर्मने लीधेज हुं तने बीजे स्थानके लइ जवा समर्थ थयो नहि; परंतु जो तुं कहे तो हुं त्हारी प्रसन्नताने अर्थे निरंतर अहिं रहुं. ” कृष्णे कह्युं. “ म्हारा दुष्ट कर्मने लीधे प्राप्त थयेली आ नरकपीडा तुं म्हारी पासे रहीश, तेथी क्यारे पण दूर थवानी नथी, माटे हे भाइ ! बीजी एक वात कहुं ते सांभल अने ते म्हारा चित्तनी प्रसन्नताने माटे झट कर. आपणी घोर अवस्थाने सांभली तथा अग्निथी द्वारकाना नाशने सांभली सर्व स्थानके सर्वे खल पुरुषो हर्ष पाम्या छे. परंतु श्रेष्ठ पुरुषोने तो दुःख उत्पन्न थयुं छे, माटे तुं श्रेष्ठ पुरुषोने हर्ष करवा माटे अने खल पुरुषोने खेद करवा

माटे चक्र गदा विगेरे शस्त्रयुक्त हाथवालुं, छातिमां लक्ष्मीना चिन्हवालुं, गरुड उपर विराजीत थयेलुं, पीला वस्त्रवालुं म्हारुं स्वरुप तेमज वैमान उपर बेठेलुं, श्याम वस्त्रवालुं, हल मुशल विगेरे शस्त्रथी सुशोभित हाथवालुं त्हारु स्वरुप पण आकाशमां राखी आ सर्व भरतक्षेत्रने विषे देखाड के, जेथी करीने सज्जनोने विषे आपणो अपवाद नाश पामे. वली लोकने विषे एवो पण उद्घोष करवो के, "देवरुपने धारण करनारा, निरंतर स्थितिवाला, नित्य सुखवाला अने पोतानी इच्छा प्रमाणे विहार करनारा श्री रामकृष्ण निरंतर जयवंता वर्त्ते छे." आ सर्व वात अंगीकार करी बलभद्र देवे तुरत दक्षिण भरतक्षेत्रमां आवीने कृष्णना कहेवा प्रमाणे वैमानमां बेठेला बन्ने स्वरुपो आकाशमां राखी सर्व लोकने देखाड्या. वली दिव्य देहकांतिवाला तेणे स्पष्ट एवो उद्घोष कर्यो के, "हे प्राणीयो! तमे सौ सांभलो. आ विश्वनी उत्पति अने संहार करनारा अमे छीए. अमे सुखने माटे आ द्वारका नगरीने क्षणमात्रमां उत्पन्न करी हती, पण हवे अमारी बीजे स्थानके जवानी इच्छाथी अमे ते द्वारका नगरीनुं हरण कर्युं छे." बलभद्र देवनी आवी वाणी सांभली हर्ष पामेला सर्वे माणसो आ लोक संबंधी अनेक प्रकारना सुखनी इच्छाथी ठेकाणे ठेकाणे म्होटा देवालयोने विषे एवाज स्वरुपवाली रामकृष्णनी मूर्त्तिनुं स्थापन करी तेमना भक्त थया. आ प्रमाणे उद्यानोने विषे अने गृहोने विषे रामकृष्णनी महा मूल्यवाली अनेक मूर्त्तियोनुं महोत्सवपूर्वक स्थापन करीने आ लोक संबंधी अनेक भोग संगना अभिलाषी एवा अर्द्ध भरतखंडना मनुष्यो तेमनुं पूजन करवा लाग्या. बलभद्र देव पण ते मूर्त्तियोनुं पूजन करनारने हर्षपूर्वक सर्व प्रकारनी संपत्ति आपवा लाग्यो. अहो! शुद्ध सम्यक्त्वधारी एवा बलभद्र देवताए केवल बंधुना प्रेमथी मिथ्यात्वपणुं विस्तार्युं. अनुक्रमे ते देव स्वर्गलोकना सुखोने भोगवी आयुष्य पूर्ण थये त्यांथी चवी आवती अवसर्पिणीमां सारा विशाल कुलमां अवतरशे. पछी कृष्णनो जीव के, जे श्रीमम नामना तीर्थंकर थवाना छे तेमना वारामां ए बलभद्रनो जीव महोदयवाली दीक्षा लइ अनुक्रमे अंते अनंत सुख पामशे. हे मोक्षार्थी भव्यजनो! तमे सर्व प्रकारना पापने नाश करनारा, काम, क्रोध, मद विगेरेनो उच्छेद करनारा अने पुण्यनी वृद्धि करनारा आ बलदेव मुनिना चरित्रने सांभलीने वैराग्यथी उत्कृ-

ष्ट एवा पोताना बंधुसंबंधी मोहने त्यजी दइ केवल सुखकारी एवा जैनधर्मनुं सेवन करो.

॥ इति नवमबलदेवमुनिसंबंधकथनरूपो द्वितीयः प्रस्तावः ॥

इरकागरायवसहो, पडिबुद्धीनाम कोसलासामी ॥
तह नेआ अंगाए, चंदछाए निरुवमाए ॥ १६ ॥
संखेवकासिराया, कुणालदेसाहिवो तहा रूप्पी ॥
कुरुवइ अदीणसत्तु, पंचालपहु अ जीअसत्तू ॥१७॥
संजायजाइसरणा, पवइआ उप्पि मल्लिजिणपासे ॥
चउदसपुव्वी एए, जयंतु अपुणप्पवं पत्ता ॥ १८ ॥

अर्थ—इक्ष्वाकुवंशना राजाउमां श्रेष्ठ एवो कोशलादेशनो अधिपति प्रतिबुद्धि, निरुपम एवी अंगा नगरीनो महाराजा चंद्रछाय, काशीनो नृपति शंख, कुणालदेशनो अधिपति रुक्मी, कुरुदेशनो जूपाल अदीनशत्रु अने कांपिल्यपुरनो जूपति जितशत्रु. ए उत्पन्न थयेला जातिस्मरण ज्ञानने लीधे श्री मल्लिनाथ प्रजु पासे दीक्षा लइ अने चौद पूर्वना धारणहार थइ मोक्षपदने प्राप्त करनारा (उपर कहेला) उए महाराजाउ जयवंता वर्तो.

॥ श्री मल्लिनाथ चरित्रम् ॥

पूर्व विदेहक्षेत्रने विषे सलिलावती नामनी महा विजयमां लोकोने आश्चर्य करनारी वीतशोका नामे नगरी छे. त्यां शत्रुना सैन्यने मर्दन करवामां समर्थ जुजा दंमवालो महा बलवंत बल नामनो राजा राज्य करतो हतो. तेने मनोहर स्वरुपवाली धारणी विगेरे एक हजार स्त्रीयो हती. एक दीवस ए धारणीये सिंह स्वप्नसूचित एवा एक पुत्रने जन्म आप्यो. राजाए हर्षपूर्वक ते पोताना पुत्रनो जन्म महोत्सव कर्यो. बारमे दिवसे विविध प्रकारना महोत्सवथी स्वजनोने संतोष पमामी बल राजाए पोताना पुत्रनुं "महाबल" नाम पाम्युं. पछी पांच धावमाताउथी वृद्धि पामतो ते कुमार अनुक्रमे सर्व कलाउनो अन्यास करतो स्त्रीयोनां चित्तने संतोष करनारी यौवनावस्था पाम्यो

एटले बलराजाए तेने कमलश्री प्रमुख पांचसो राजकन्याउ परणावी अ तेउने रहेवा माटे ऽव्यथी पूर्ण एवां मंदिरो आप्यां. महाबलकुमार ते पोतानी पांचसो स्त्रीयोनी साथे अनेक प्रकारनी जोगसंपत्तिने जोगवतो छतो पिताए आपेला मंदिरप्रत्ये रहेवा लाग्यो.

कोइ वखते उत्तम चारित्रने धारण करनारा केटलाक स्थविर साधुउ ते नगरीना इंऽकुंज नामना उद्यानमां आव्या एटले बलजूपतिये ते उद्यानमां जइ अने गुरुना चरणने विषे प्रणाम करीने मोक्षसुख आपनारी निर्मल धर्मोपदेशना सांजली. पछी वैराग्यथी जावित चित्तवालो बलराजा, गुरुने प्रणाम करी नगरीप्रत्ये गयो. त्यां तेणे महाबल कुमारने राज्याजिषेक कस्यो. पछी बलजूपतिये ते स्थविर साधुउनी पासे दीक्षा लइ अनुक्रमे एकादशांगीनो अज्यास कस्यो. अनुक्रमे दीर्घकाल पर्यंत पवित्र एवा चारित्रने पाली अने चारु नामना पर्वतने विषे एक मासना उपवासथी संलेखना करीने ते महामुनि मोक्षपद पाम्या. पछी पोताना राज्यपदने जोगवता श्रीमान् महाबल जूपतिने, कमलश्री पट्टराणीथी एक सिंहस्वप्नसूचित पुत्र थयो. महाबले तेनुं "बलजऽ" नाम पाड्युं. अनुक्रमे ते कुमार यौवनावस्था पाम्यो.

हवे महाबल राजाने बाल्यावस्थाथीज अचल, धरण, पूरण, वसु, अजिचंऽ अने वैश्रमण नामना महा संपत्तिवाला छ मित्रो हता. जाणे पोतानो एक आत्माज होयनी ? एम ए छ मित्रोनी साथे महाराजा महाबल, निरंतर स्नान, विविध प्रकारना जोजन अने क्रीमा विगेरे करतो. आम ते राजानो सर्वकाल सुखमांज निर्गमन थतो. एवामां केटलाक उत्तम स्थविर साधुउ विहार करता करता ते नगरीमां आव्या. महाबल पोताना छ मित्रो सहित धर्म श्रवण करवा गयो. त्यां मुनियोए आपेला धर्मोपदेशरूप अमृतरसनुं कंठपर्यंत पान करी उत्कृष्ट जावबलवाला महाबल राजाए दीक्षा लेवानी इछा करी. पछी ते साधुउने प्रणाम करी पोतानी नगरीप्रत्ये आवीने मित्रोने कहेवा लाग्यो. "हे मित्रो ! हुं म्हारा पूर्वजोना अनुक्रमथी प्राप्त थयेली दीक्षा लइश. तमे तपश्यानो अंगीकार करशो ? तमे तमारो जे विचार होय ते कहो." मित्रोए कह्युं. "अमे पण तमारीज साथे दीक्षा लइशुं." पछी राजाए कह्युं. "हे मित्रो ! निश्चे आपणे सौ यशस्वी अने पुण्यवंत छीए. हवे तमे सौ पोतपो-

ताने घेरे जइ पोतपोताना बंधुउने तथा कुटुंबने आ वात निवेदन करी अने पोताना म्होटा पुत्रने घरबार सोंपीने पछी चारित्र लेवा माटे पालखीमां बेसीने अहिं आवो." आम पोताना छ मित्रोने आज्ञा करी अने गुणोए करीने उत्तम एवा पोताना पुत्र बलभद्रने राज्याभिषेक करी महाबल राजा पोते चारित्र लेवाने तैयार थयो. छए मित्रो पण त्यां आव्या एटले पछी हजारो मनुष्योए उपाडेली पालखीमां बेसी वाजींत्रोना शब्दोथी दिशाउने गजावी देतो महाबल राजा हर्षथी पोताना छ मित्रो सहित नगरीथी बहार नीकली उद्यानमां स्थविर साधुउनी पासे आव्यो. त्यां ते सर्वे जणाये तपस्या लीधी. पछी परस्पर धर्मरागने धारण करनारा ते सर्वे साधुउ, विधि सहित एकादशांगीनो अभ्यास करी बहुश्रुत थया. वली तेउए "जे साधु छठ, अठम, दशम विगेरे घोर एवा तपनुं आचरण करे ते बीजाए पण करवुं." एवी परस्पर प्रतीज्ञा करी. ते सर्वेमां म्होटा अने उपशमना समुद्ररुप महाबल मुनि पोताना चित्तमां विचार करवा लाग्या के, "तपमां समान रीते रहेनारा एवा अमारी कीर्ति पण लोकमां सरखी रीतेज थशे. वली अमारामां कोइ पण मुख्य अमुख्यनुं ज्ञान धरावतो नथी, माटे आ सर्वे साधुउथी हुं वधारे तप करुं के, जेथी लोकमां ते सर्वे करतां म्हारी प्रशंसा वधारे थाय." आवी रीते वीचार करीने इंद्रियोने वश्य राखवामां तत्पर एवा ए महाबल मुनिये अधिक अधिक तपश्चर्या करवा मांडी. अहो ! धिक्कार छे के, जे म्होटा पुरुषोने पण निश्चे मोह थाय छे!! निरंतर उत्तम रीते मोक्ष सुखना साधनरूप अति निर्मल चारित्रने विषे पण ए शमभाववाला महाबल मुनिने मायाकलंक थयुं. जो के सर्व आगमने जाणनारा अने ममता रहित ए महाबल राजर्षिये तीर्थंकर भक्ति विगेरे विश स्थानकथी प्रकट जिन नाम कर्म उपार्जन कर्युं, तो पण तेमणे ते वखते मायातप करवाथी स्त्रीनामकर्म बांध्युं. साधुउने अनुक्रमे बार पडिमा आराधन करवानुं कह्युं छे ते पण त्रण गुप्ति अने चार समितिमां आसक्त चित्तवाला ते साते मुनीश्वरोए आराधी. तेमज लघुवृत्ति अने सिंहनिक्रीडित नामनुं तीव्र तप कर्युं. वली तेउए बीजा पण तीव्र तप कर्यां. पछी दुर्बल थइ गयेला अंगवाला ते साते साधुउ पोताना आयुष्यना अंतने जाणी तथा न पाली शकाय तेवा चारित्रने जाणी शमभावने धारण करवा पूर्वक

परिवार सहित सर्वे स्थविर साधुउने वंदना करी चारु नामना पर्वत उपर गया. त्यां उत्कृष्ट एवा चारित्रने पालवामां तत्पर एवा ते साते साधुउ भूमीनुं शोधन करी संलेखनामां तत्पर थइ शिलातल उपर बेठा. पछी ते सर्वे मुनीश्वरो बे मास पर्यंत अनशन व्रत पाली मृत्यु पामीने जयंत नामना अनुत्तर देवलोकमां देवतापणे उत्पन्न थया. त्यां महाबल देवतानुं बत्रीस सागरोपमनुं पूर्ण आयुष्य हतुं अने बाकीना छ देवतानुं बत्रीश सागरोपमथी कांइक उछुं आयुष्य हतुं; तेथी ते छए देवताउ, पोतानुं आयुष्य पूर्ण थये महाबल देवने त्यांज मूकी जंबुद्वीपना आ भरतक्षेत्रने विषे राजपुत्र तरिके जूदा जूदा उत्पन्न थया. अनुक्रमे तेउ साम्राज्य लक्ष्मीने योग्य एवी यौवनावस्था पाम्या. तेउमां एक कोशला नगरीनो राजा प्रतिबुद्धि नामे थयो हतो, बीजो अंगापुरीनो महाराजा चंद्रछाय थयो, त्रीजो काशीनो भूपाल शंख थयो हतो, चोथो शंखना सरखी उज्वल कीर्त्तिवालो कुणाल देशनो अधिपति रुक्मी थयो हतो. पांचमो कुरुदेशनो अदीनशत्रु नामे नृपति थयो हतो अने छठो पंचालदेशनो महाराजा यथार्थ नामवालो जितशत्रु थयो हतो. आ प्रमाणे ए छए राजाउ, विशाल संपत्तिथी समृद्धिवंत एवां पोताना विस्तारवंत राज्योनुं पालन करता छता पूर्वना पुण्यथी स्वर्ग समान सुख भोगवता हता.

॥ इति श्री मल्लिचरित्रे पूर्वभवस्वरूपवर्णनोनाम प्रथमः सर्गः ॥

पूर्व भवना छ मित्रोरुप भूपतियोना छिद्रमां रहेला कामदेवरुप सिंहने जेणे एकज बाणथी जीत्यो छे, ते व्याधोमां सुभटरूप श्री मल्लिनाथ जिनेश्वर जयवंता वर्तो.

आ जंबूद्वीपना दक्षिण भरतक्षेत्रने विषे समृद्धिथी स्वर्गपुरी समान मिथिला नामनी नगरी छे. त्यां त्रणभुवनमां प्रसिद्ध यशवालो तथा शंकरना समान पराक्रमवालो कुंभ राजा राज्य करतो हतो. तेने उत्तम शीलवाली, दयावंत अने यथार्थ नामने धारण करनारी प्रभावती नामनी स्त्री हती. हवे जयंत नामना देवलोकमां महासुखनो अनुभव करतो महाबल देवता अवधिज्ञानथी पोतानुं आयुष्य पूर्ण थयुं जाणी चैत्र मासनी शुकल चोथनी रात्रीये अश्विनी नक्षत्रमां चंद्रयोग प्राप्त थये छते ते पांचमा देवलोकथी चवीने प्र-

भावतीना उदरने विषे अवतर्या. ते वखते प्रभावती राणीये स्पष्ट एवां चौद स्वप्न जोयां. पछी जाग्रत थइने तेणे ते स्वप्नोने अनुक्रमे स्मरण कर्यां. त्यार पछी ए राणी स्वप्नोनुं फल पूछवा माटे हंसीनी पेठे तुरत त्यांथी उठीने पोताना पतिनी पासे गइ. त्यां "हे महाराज! आप विजयवंता वर्तो, विजयवंता वर्तो," एम प्रबोध पमाडीने ते महाराणी भद्रासन उपर बेठी. जाण एवा सेवको पण तेनी आज्ञाथी त्यां बेठा. पछी भूपतिये तेने पोतानी पासे आववानुं कारण पूछ्युं एटले ते पट्टराणीये अनुक्रमे चौद महास्वप्न कह्यां. वली तेणे हाथ जोडीने पोताना पतिने विनंती पूर्वक कह्युं के, "हे नाथ! आ स्वप्नोनुं सारुं नरसुं जे फल होय ते मने कहो?" राजाए ते सर्व स्वप्नानो पोताना मनमां विचार करीने कह्युं के, "हे प्रिये! वखाणवा योग्य आ स्वप्नो महाफलने आपनारां छे. सामान्य रीते तो एउनुं फल अमित भोग अने राज्यसुखादि छे; परंतु हे भद्रे! विशेषे ए स्वप्नोनुं जे फल छे ते कहुं छुं. सांभल. आजथी नवमास अने साडासात दिवस गये छते तुं पोताना कुलमां उत्तम आभरणरुप पुत्ररत्नने जन्म आपीश. वली बाल्यावस्थाने त्यजी यौवनास्थावस्थाने प्राप्त थयेलो ते त्हारो पुत्र अद्भुत बलवान्, गुणवान् अने पृथ्वीने विषे चक्रवर्ती थशे." राजानां आवां वचन सांभलीने अत्यंत हर्ष पामेली चंद्र समान मुखवाली राणीये कह्युं. "हे प्राणप्रिय! निश्चे आपनुं कहेवुं सत्य सफल थाउ." पछी राजानी साथे भोगसुख भोगवी अने तेनी आज्ञा लइने पोताना मंदीर प्रत्ये गयेली ते प्रभावतीये धर्मजागरणा करी.

पछी प्रभाते कुंभराजा, प्रभातसंबंधी धर्मक्रीया करीने अनेक सामंतोनी साथे सभामां आव्या. त्यां सेवकोनी पासे स्वप्न पाठकोने बोलावी तेमणे हाथमां फल राखी तेमने स्वप्नानुं फल पूछ्युं. स्वप्नपाठकोए पण हृदयमां विचार करीने पछी अनुक्रमे हर्षपूर्वक राजाने कह्युं. "हे महाराज! निश्चे सर्व प्रकारे आवां स्वप्नो भाग्यथीज प्राप्त थाय छे. खरेखर स्वप्नना प्रभावथी प्रभावती राणी पूर्णमासे तीर्थंकर अथवा तो चक्रवर्ती एवा पुत्रने जन्म आपशे." राजाए ते सर्व वात सत्य मानीने स्वप्न पाठकोने आभूषण वस्त्र, फल अने पुष्पथी सत्कार करीने तथा उदार मनथी बहु द्रव्य आपीने विदाय कर्या. पछी राणी प्रभावतीने त्रीजे मासे सुखकारी अने सर्व संप-

त्तिना कारणरुप एवो दोहद उत्पन्न थयो के, "जाणे हुं जल अने स्थलमां उत्पन्न थयेलां तेमज सुगंधिवाळां पुष्पोथी आछादित करेली, महा मूल्यवाली तेमज जाइ, चंपक, पाटल, पुंनाग, अशोक अने मल्लिका विगेरे दश वर्णनां पुष्पोना हारोवाली शय्यामां ते ते पुष्पोनी सुगंध लेती उती उत्तम लावण्यवाली लक्ष्मीनी पेठे पोतानी सखीयोनी साथे पोताना भुवनमां हर्षथी विलास करुं." प्रभावती राणीने आवो दोहद उत्पन्न थयो तेज वखते व्यंतर देवताउए तत्काल श्री कुंभराजाना मंदिर उपर पोताना सुगंधथी क्षणमात्रमां सर्व दिशाउने सुगंधमय करनारां पुष्पोनो वरसाद वरसाव्यो. वली अखंमित एवी पुष्पोनी मालाउथी प्रभावती राणीनी शय्याने आछादित करी, जेथी ते महाराणीये पुष्पोनी सुगंधी लेता शय्यामां वेसी पोताना पवित्र दोहदने पूर्ण कर्यो. योग्यज छे, पुण्यवंत जीव गर्भमां आव्ये उते मनुष्योने शुं असाध्य होय छे ? अर्थात् कांइ होतु नथी. पछी पूर्ण थइ छे आशा जेनी एवी ते महाराणी प्रभावतीये मागशर सुदी अगीयारसने दिवसे अश्विनी नक्षत्रमां चंद्रनो योग उते निर्मल दिशाउ, सुभिक्षथी सुंदर एवुं पृथ्वीतल तेमज सुखकारी वायु अने सर्व ग्रहोनुं उच्चस्थानके रहेवुं इत्यादि उत्तम जन्मकाल प्राप्त थये उते देहनी कांतिना समूहथी सूतिकागृहने प्रकाश करनारा अने कर्मथी आश्चर्यकारी रूपवाला श्रीजिनेश्वरने जन्म आप्यो. ते वखते त्रणलोकमां तुरत म्होटो उद्योत थयो. नारकी जीवोने पण ते वखते क्षणमात्र सुख उपन्युं. आसन कंपने लीधे उपयोगथी श्री जिनराजना जन्मने जाणी छप्पन्न दिगूकन्याउए बहु हर्षथी त्यां आवीने पुत्री सहित श्री प्रभावती देवीनुं सुखकारी सुतिका कर्म कर्युं. इंद्रोए पण तीर्थंकरनो जन्म महोत्सव कर्यो. पछी तेउ श्री जिनराजने माता प्रभावतीनी पासे मूकी नंदीश्वर द्वीपमां अठाइ महोत्सव करीने स्वर्गे गया. वली ते वखते कुबेरना आज्ञाकारी देवोए, कुंभराजाना मंदिर उपर सुवर्ण रत्नादिकनी बहु वृष्टि करी. तेमज ते हर्षित चित्तवाला देवताउए पुष्प, वस्त्र, चूर्ण, पत्र, आभूषण अने विविध प्रकारनां फलोनो वर्षाद पण कर्यो. कुंभराजाए पण हर्षथी पोताने पुत्रीना जन्मनी वधामणी आपनाराने इछाथी अधिक अधिक सुवर्ण रत्नादिकनुं दान आप्युं. जेवी रीते उत्तम पुत्र माता पिताने महाहर्ष उत्पन्न करे छे तेथी पण अधि-

क एवो हर्ष आ पुत्रीये पोताना माता पिताने उत्पन्न कर्यो. कुंजराजाए पुत्रीना जन्म महोत्सव वखते कोटवाल विगेरे पुरुषोने आज्ञा करीने बंधीवान पुरुषोने छोडावी मूक्या. दरवाजे दरवाजे विविध प्रकारनां मणिमय तोरणोनी रचना करावी. निर्मल अने विशाल एवा उंचे बांधेला चंदुवाथी जाणे अत्यंत मनोहर विलासवाली स्त्री होयनी? एवी बजार शणगारी. ठेकाणे ठेकाणे संगीत, गीत, वाद्य अने विविध प्रकारना मनोहर नाटकथी राजमार्गने पण बहु सुशोभित कर्यो. आम उत्तर उत्तर म्होटा दानवाला महोत्सवनी वृद्धि करतां उत्तम एवो नाम पाडवानो दशमो दिवस आव्यो. ते दिवसे हर्षित मनवाला कुंभराजाए पोताना बंधुजनो साथे प्रथम भोजन लइ पछी वस्त्रोना दानपूर्वक तेमने कह्युं के, "हे स्वजनो! ज्यारे आ कन्या पोतानी माताना उदरने विषे आवी हती ते वखते तेनी माताने पुष्पथी सुशोभित एवी शय्यामां शयन करवानो शुभ दोहद उत्पन्न थयो हतो, तेथी धन्य मनुष्योमां पण उत्तम एवी आ कन्यानुं 'मल्लि' एवुं नाम पाडुं छुं." पछी निरंतर स्वर्गमांथी आवती इंद्राणीयोए पोताना खोलामां धारण करीने लाड लडावेली अने सौभाग्यना पात्ररुप ते कन्या, शुक्लपक्षना चंद्रनी कलानी पेठे वृद्धि पामवा लागी. जाणे मूर्त्तिमति लक्ष्मीज होयनी? अथवा तो अमृत समान मधुर वाणीवाली सरस्वतीज होयनी? एवी ते महा भाग्यवाली मल्लिकुमारीने जोइ सर्वे लोको तेनी प्रशंसा करता हता. विश्वना सामान्य बालकनी पेठे क्रीडा करवामां तत्पर एवी ते कुमारी अनुक्रमे बाल्यावस्थाने उल्लंघन करी यौवनावस्था पामी. देदीप्यमान मरकतमणी, प्रियंगु अने नीलोत्पल समान अंगनी कांतिवाली ए मल्लिकुमारीये पोताने जोनारा कया मनुष्यनी दृष्टीने निर्मल नथी करी? पचविश धनुष्य प्रमाण देहवाली अने कामदेवने जीतनारी ए कुमारीये विश्वने जीतनारी रूपसंपत्तिने धारण करी. त्रण ज्ञानथी सर्व शास्त्रार्थने जाणनारी अने कुशास्त्रने तिरस्कार करनारी ए मल्लिकुमारीये सरस्वतीनी पेठे सर्व कलाओनो अभ्यास कर्यो. वली तेणे अवधिज्ञानथी पोताना पूर्व भवना छ मित्रोने ते ते देशने विषे इंद्रनी पेठे राज्यपद भोगवता जोया एटले ते कुमारीये तेओने प्रतिबोध आपवाने माटे कांइ उपायनो विचार करीने पछी सुतारोने आ प्रमाणे आज्ञा करी के, "हे सुत्रधारो! तमे

आ म्हारा निवासगृहना अशोकवननी मध्ये पुतलीयोथी सुशोन्नित एवा मणिमय स्तंन्नोथी देदीप्यमान, नाना प्रकारना रत्नोथी जम्त्रि न्नूपीठवालुं अने जाणे गाढ चंडोदयथी मनोहर एवुं वैमानज होयनी ? एवो अन्नुत एक मंम्प करो. तेना मध्ये ठ दिशाउमां विविध प्रकारनी रचनाथी चित्तने आश्चर्य करनारा अने मनोहर मध्यन्नागवाला ठ घरो बनावो अने ते ठ घरोना मध्य न्नागमां मणिमय जालीयोथी सुंदर एक देदीप्यमान मंदिर तैयार करो. वली ते मंदिरनी अंदर मध्य न्नागमां किरणोना समूहरुप एक म्होटी अने निर्मल एवी मणिपीठिका करो." श्री मल्लिकुमारीये आज्ञा करेला अतिगरिष्ट शिल्प शास्त्रीयोए ते सर्व थोमा दिवसनी अंदर तैयार कर्युं. पठी मल्लिकुमारीये पोताना समान आकृतीवाली, मस्तक उपर सुवर्णनां पद्मथी ढांकी दीधेलां ठिद्रवाली अने सत्पुरुषोने पण न्रम करनारी पोतानी सुवर्णनी पोली मूर्त्ति करावीने ते मंम्पमध्येनी मणिपीठिका उपर मूकी. वली हमेशां पोताना आहारमांथी गलता रसवालो कोलीयो ते सुवर्णनी मूर्त्तिना मस्तकना ठिद्रमां नाखवा लागी. अनुक्रमे ए गलता रसवाला एकठा थयेला आहारनो महा दुःसह एवो नासीकाने न्नेदी नाखनारो गंध जाणे मरी गयेला कुतरा, सर्प अने बलदना चुंथायेला शरीरथीज नीकलतो होयनी ? एम पुतलीना मस्तक उपर रहेला सुवर्णपद्मना ढांकणाने उघामी नाखवाथी निकलवा लाग्यो. यौवनावस्था प्राप्त थया ठतां पण निरंतर संसारना न्नोगनी इछा रहित एवी तथा चारित्रमां केवी रीते वर्तवुं तेनो प्रथमथी अन्न्यास करती वली पोताना दर्शनथी माता, पिता, न्नाइ विगेरे सर्व स्वजन मनुष्योने अधिक अधिक प्रसन्न करती ए मल्लिकुमारी प्रतिदिन असंख्य एवां सुखने न्नोगवती हती.

हवे सर्व संपत्तिना निवास स्थानरुप कोशल नामना देशने विषे इंद्रपुरी समान साकेतपुर नामे नगर ठे. त्यां इक्ष्वाकुवंशना आन्नूषणरूप, वैरीयोना समूहने दावानल समान प्रतिबुद्धि नामे राजा लक्ष्मीथी उत्कृष्ट एवां राज्यनुं पालन करतो हतो. तेने रूपसंपतिये करीने लक्ष्मीना सरखी पद्मावती नामनी सती स्त्री हती. ते नगरमां एक म्होटुं अतिशयवालुं नागमंदिर हतुं. एक दिवस पद्मावती देवीये महा हर्ष प्रगट करनारा श्री नागदेवनी पूजाना महोत्सवने विषे जता एवा लोकोना समूहने जोइ हर्षथी विनयपूर्वक प्र-

तिबुद्धि नृपतिने कह्युं. " हे प्रजानाथ ! आजे श्री नागदेवनी पूजानो म्होटो उत्सव छे; तेथी जो आप रजा आपो तो हुं त्यां जाउं. आपे पण म्हारा उपर प्रसन्न थइने त्यां आववुं. " राजाए ते वात कबुल करी एटले हर्षयुक्त चित्तवाली पद्मावती राणीये मधुर वचनथी आज्ञाकारी सेवकोने कह्युं के, " हे सेवकजनो ! तमे आजे नागमंदिर प्रत्ये जइ विविध प्रकारना अति सुगंधवालां पुष्पोथी एक म्होटो पुष्पनो विशाल मंडप तैयार करो अने तेना मध्ये झुलती विचित्र पुष्पोनी मालाउथी गुंथेलुं जाणे उत्कृष्ट एवी शोभानुं निधान होयनी ? एवुं सुगंधीनी संपत्तिवालुं " श्री दाम " नामनुं मंदिर बनावो. वली वाजींत्र, गीत, धूप, वासक्षेप विगेरे विविध प्रकारनो पूजानो सामान प्रयत्नथी तैयार करीने म्हारी वाट जोता उभा रहो." आ प्रमाणे महाराणीये आज्ञा करेला सेवको ते सर्व तैयार करी पद्मावती राणीनी राह जोता उभा रह्या.

पद्मावती राणी पण स्नान करी, सर्व प्रकारनां अलंकारोने धारण करी अने पोताना समान सखीयोनी साथे श्रेष्ठ एवा रथमां बेसीने बहु वाजींत्रोना तथा धवलगीतना मधुर शब्दथी व्याप्त अने देशांतरोथी आवेला अनेक लोकोथी भरपूर एवा ते महोत्सववाला नागमंदिर प्रत्ये आवी. त्यां ते महाराणी पुष्प विगेरेथी नागदेवनुं पूजन करी दिव्य महोत्सवने वृद्धि पमाडती भूपालना आववानी वाट जोती बेठी. महाराजा प्रतिबुद्धि पण राणीना स्नेहने लीधे उत्तम शृंगारने धारण करी, पट्ट हस्ति उपर बेसीने असंख्य सेना सहित त्यां आव्यो. त्यां ते गंध, पुष्प, नैवेद्य विगेरे सामग्रीथी नागदेवनुं विधिपूर्वक पूजन करीने श्रेष्ठ एवां पुष्पोना मंडपमां रहेला सिंहासन उपर बेठो. क्षणमात्र मंडपनी शोभाने जोइने पछी ए राजानी दृष्टिरूप मयुरीये जाणे थाकी जवाने लीधेज होयनी ? एम मंडपनी अंदर रहेला झुलती पुष्पोनी मालाना मंदिरने विषे (श्री दामने विषे) निवास कर्यो. पछी आश्चर्य पामेला भूपाले, पोतानी आगल बेठेला, वृद्ध, बुद्धिना निधान अने सुबुद्ध नामना पोताना मंत्रीने पूछ्युं. " हे मंत्री ! तमे म्हारी आज्ञाथी निरंतर घणा राजभुवनो प्रत्ये गया छो. त्यां तमे कोइ स्थानके आवुं श्रीदाम जोयुं होय तो कहो. " मंत्रीये कांइक हास्य करीने कह्युं. " महाराज ! स्थिर चित्त करीने सांभलो. "

आ म्हारा निवासगृहना अशोकवननी मध्ये पुतलीयोथी सुशोभित एवा मणिमय स्तंभोथी देदीप्यमान, नाना प्रकारना रत्नोथी जमित्र भूपीठवालुं अने जाणे गाढ चंद्रोदयथी मनोहर एवुं वैमानज होयनी ? एवो अद्भुत एक मंमप करो. तेना मध्ये ठ दिशाउमां विविध प्रकारनी रचनाथी चित्तने आश्चर्य करनारा अने मनोहर मध्यभागवाला ठ घरो बनावो अने ते ठ घरोना मध्य भागमां मणिमय जालीयोथी सुंदर एक देदीप्यमान मंदिर तैयार करो. वली ते मंदिरनी अंदर मध्य भागमां किरणोना समूहरुप एक म्होटी अने निर्मल एवी मणिपीठिका करो." श्री मल्लिकुमारीये आज्ञा करेला अतिगरिष्ट शिल्प शास्त्रीयोए ते सर्व थोमा दिवसनी अंदर तैयार कर्युं. पठी मल्लिकुमारीये पोताना समान आकृतीवाली, मस्तक उपर सुवर्णनां पद्मथी ढांकी दीधेलां छिद्रवाली अने सत्पुरुषोने पण भ्रम करनारी पोतानी सुवर्णनी पोली मूर्त्ति करावीने ते मंमपमध्येनी मणिपीठिका उपर मूकी. वली हमेशां पोताना आहारमांथी गलता रसवालो कोलीयो ते सुवर्णनी मूर्त्तिना मस्तकना छिद्रमां नाखवा लागी. अनुक्रमे ए गलता रसवाला एकठा थयेला आहारनो महा दुःसह एवो नासीकाने भेदी नाखनारो गंध जाणे मरी गयेला कुतरा, सर्प अने बलदना चुंथायेला शरीरथीज नीकलतो होयनी ? एम पुतलीना मस्तक उपर रहेला सुवर्णपद्मना ढांकणाने उघाममी नाखवाथी निकलवा लाग्यो. यौवनावस्था प्राप्त थया ठतां पण निरंतर संसारना भोगनी इच्छा रहित एवी तथा चारित्रमां केवी रीते वर्तवुं तेनो प्रथमथी अभ्यास करती वली पोताना दर्शनथी माता, पिता, भाइ विगेरे सर्व स्वजन मनुष्योने अधिक अधिक प्रसन्न करती ए मल्लिकुमारी प्रतिदिन असंख्य एवां सुखने भोगवती हती.

हवे सर्व संपत्तिना निवास स्थानरुप कोशल नामना देशने विषे इंद्रपुरी समान साकेतपुर नामे नगर ठे. त्यां इक्ष्वाकुवंशना आभूषणरूप, वैरीयोना समूहने दावानल समान प्रतिबुद्धि नामे राजा लक्ष्मीथी उत्कृष्ट एवां राज्यनुं पालन करतो हतो. तेने रूपसंपतिये करीने लक्ष्मीना सरखी पद्मावती नामनी सती स्त्री हती. ते नगरमां एक म्होटुं अतिशयवालुं नागमंदिर हतुं. एक दिवस पद्मावती देवीये महा हर्ष प्रगट करनारा श्री नागदेवनी पुजाना महोत्सवने विषे जता एवा लोकोना समूहने जोइ हर्षथी विनयपूर्वक प्र-

तिबुद्धि नृपतिने कह्युं. " हे प्रजानाथ ! आजे श्री नागदेवनी पूजानो म्होटो उत्सव छे; तेथी जो आप रजा आपो तो हुं त्यां जाउं. आपे पण म्हारा उपर प्रसन्न थइने त्यां आववुं. " राजाए ते वात कबुल करी एटले हर्षयुक्त चित्तवाली पद्मावती राणीये मधुर वचनथी आज्ञाकारी सेवकोने कह्युं के, " हे सेवकजनो ! तमे आजे नागमंदिर प्रत्ये जइ विविध प्रकारना अति सुगंधवालां पुष्पोथी एक म्होटो पुष्पनो विशाल मंडप तैयार करो अने तेना मध्ये फुलती विचित्र पुष्पोनी मालाउथी गुंथेलुं जाणे उत्कृष्ट एवी शोभानुं निधान होयनी ? एवुं सुगंधीनी संपत्तिवालुं " श्री दाम " नामनुं मंदिर बनावो. वली वाजींत्र, गीत, धूप, वासक्षेप विगेरे विविध प्रकारनो पूजानो सामान प्रयत्नथी तैयार करीने म्हारी वाट जोता उभा रहो." आ प्रमाणे महाराणीये आज्ञा करेला सेवको ते सर्व तैयार करी पद्मावती राणीनी राह जोता उभा रह्या.

पद्मावती राणी पण स्नान करी, सर्व प्रकारनां अलंकारोने धारण करी अने पोताना समान सखीयोनी साथे श्रेष्ठ एवा रथमां बेसीने बहु वाजींत्रोना तथा धवलगीतना मधुर शब्दथी व्याप्त अने देशांतरोथी आवेला अनेक लोकोथी भरपूर एवा ते महोत्सववाला नागमंदिर प्रत्ये आवी. त्यां ते महाराणी पुष्प विगेरेथी नागदेवनुं पूजन करी दिव्य महोत्सवने वृद्धि पमाडती भूपालना आववानी वाट जोती बेठी. महाराजा प्रतिबुद्धि पण राणीना स्नेहने लीधे उत्तम शृंगारने धारण करी, पट्ट हस्ति उपर बेसीने असंख्य सेना सहित त्यां आव्यो. त्यां ते गंध, पुष्प, नैवेद्य विगेरे सामग्रीथी नागदेवनुं विधिपूर्वक पूजन करीने श्रेष्ठ एवां पुष्पोना मंडपमां रहेला सिंहासन उपर बेठो. क्षणमात्र मंडपनी शोभाने जोइने पछी ए राजानी दृष्टिरुप मयुरीये जाणे थाकी जवाने लीधेज होयनी ? एम मंडपनी अंदर रहेला फुलती पुष्पोनी मालाना मंदिरने विषे (श्री दामने विषे) निवास कर्यो. पछी आश्चर्य पामेला भूपाले, पोतानी आगल बेठेला, वृद्ध, बुद्धिना निधान अने सुबुद्ध नामना पोताना मंत्रीने पूछ्युं. " हे मंत्री ! तमे म्हारी आज्ञाथी निरंतर घणा राजभुवनो प्रत्ये गया छो. त्यां तमे कोइ स्थानके आवुं श्रीदाम जोयुं होय तो कहो. " मंत्रीये कांइक हास्य करीने कह्युं. " महाराज ! स्थिर चित्त करीने सांभलो, "

एक दिवस हुं आपनी आज्ञाथी मिथिला नगरी प्रत्ये गयो हतो. त्यां ते दिवसे कुंन्नराजानी महेलपताका समान, धन्य अने पुएयवंत एवी मल्लिकुमारीनो प्रसिद्ध जन्म दिवस हतो. ए मनोहर उत्सवमां नृपतिये मंदार पुष्पोनी मालाथी एक म्होटो पुष्पमंमप तैयार कराव्यो हतो. तेनी अंदर दिव्यसुगंधी वालुं एक श्रीदाम बांध्युं हतुं. महाराज ! ए श्रीदामनी में जे शोन्ना जोइ हती तेनी आगल आ शोन्ना निश्चे कांइ नथी. " मंत्रीनां आवां वचन सांन्नली प्रतिबुद्धि नृपतिने श्रीदामने विषे जे आश्चर्य थयुं हतुं ते उतरी गयुं; परंतु ए नूपालनुं चित्त, कानने सुखकारी एवां श्री मल्लिकुमारीनां नामने सांन्नलतां मात्रमांज तेने विषे आसक्त थयुं; तेथी तेणे पूर्वना मोहने लीधेज मंत्रीने फरीथी आदरपूर्वक पूछ्युं के, " हे मंत्री ! ए मल्लिकुमारीनुं केवुं रूप छे ते मने कहो ? " प्रधाने कह्युं. " हे नूपाल ! जेनां स्वरुपनुं वर्णन करवाने सर्व विश्वने जाणनारा पुरुषो पण समर्थ थता नथी, तो पछी हुं ते राजकुमारीनां स्वरुपने शीरीते वर्णवी शकुं ? महाराज ! वधारे कहेवाथी शुं ? परंतु त्रण जगत्नी अंदर बीजा कोइने एनी उपमा आपी शकाय तेम नथी. फक्त मोक्ष सुखनी पेठे ए निरुपमज छे. " प्रधाननां आवां वचनथी तो नूपतिनुं चित्त, मल्लिकुमारीने विषे बहुज आसक्त थयुं. एटलुंज नहि, पण तुरत ते नूपति मल्लिकुमारीनो पाणीग्रहण करवाने बहुज उत्साहवंत थयो. पछी प्रतिबुद्धि राजाए पोतानुं इष्टकार्य साधवाने माटे एक जाण दूतने कुंन्नराजाने अर्थे योग्य न्नेट आपीने मल्लिकुमारीनो विवाह पोतानी साथे करावववानी न्नलामण करी मिथिला नगरी प्रत्ये कुंन्नराजा पासे मोकल्यो. दूत पण पोताना राजानी आज्ञा अंगीकार करी पोताने घेर गयो. पछी ते रथमां बेसी केटलाक माणसोनी साथे शीघ्र मिथिला नगरी प्रत्ये जवा निकल्यो.[१]

हवे अंगदेशमां जाणे पूर्ण लक्ष्मीना निवास स्थानरुप क्षीरसागरज होयनी ? एवी अने बहु शत्रुउथी पण निष्कंप रहेली चंपा नगरी नामे प्रख्यात पुरी छे. त्यां चंद्रछाय नामनो राजा, पोताना कुलक्रमथी प्राप्त थयेला उत्कृष्ट न्नोग समृद्धिवाला साम्राज्य पदने न्नोगवतो हतो. ते नगरीमां श्री ऋषन्न प्रन्नुना न्नक्त अने जेमनो वेपार समुद्र रस्ते अनेक देशोमां चालतो हतो. एवा अर्हन्नक विगेरे अनेक श्रावको वसता हता. सर्व श्रावकोमां अर्हन्नक श्रा-

वक जिनधर्मने विषे वधारे प्रीतिवालो हतो. ए श्रावक दृढ समकितवालो होवाथी सुर अने असुरोथी पण क्षोभ पामतो नहि. एक दिवस अर्हन्नक विगेरे केटलाक श्रावकोए समुद्र रस्ते थइ बीजा देशमां वेपार करवा जवानो विचार करीने विविध प्रकारनी बहु वस्तुओना वहाणो भरी प्रयाण कर्युं. अनुक्रमे केटलाक दिवस सुधी समुद्रनी मध्ये जता एवा तेओने एक दिवस नाना प्रकारना क्लेशने उत्पन्न करनारा वायु विगेरे बहु दुष्ट चिन्हो देखावा लाग्या. ते वखते सर्व लोकोनां हृदयने विषे दुःखरुप अंधकारने बहु वृद्धि पमाडतुं अने सूर्यना किरणोने ढांकी देतुं घोर अंधकार प्रगट थयुं. चारे तरफ विजलीना झबकारा अने अति भयानक मेघना कडाका थवा लाग्या. वली वहाणना सर्व माणसोने बहु दुःखकारी एवी घाढ काजलना समूह समान अंधकारनी जाल सर्व दिशामां फेलाइ गइ. आ वखते राता नेत्रवाला, चूलाना समान आकृतिवाली नासिकावाला, लांबा हाथवाला, वांकी डोकवाला, जाडा उंचा करेला बे हाथथी विकराल मूर्त्तिवाला, अंधारा कुवाना समान नाभिवाला, बहु न्हाना पेटवाला, दुष्ट स्वभावाला, शुष्क वृक्ष समान गतिवाला, झाडनी शाखानी पेठे उंचा करेला हाथवाला अने जाणे साक्षात् यमराजनो सगो भाइ होयनी? एवा स्वरूपवाला कोइ पोतानी पासे आवता एवा वैतालने जोइ वहाणना सर्वे माणसो आकुलव्याकुल थवा लाग्या. एक अर्हन्नक श्रावक विना बीजा सर्वे वणिको दुःखथी अति विह्वल थया छता पोतपोताना गोत्रदेवनुं स्मरण करीने तुरत आपत्तिनी निवृत्तिने माटे पोतपोताना इष्टदेवतानी यात्रा, पूजा, नैवेद्य विगेरेनी मानता करवा लाग्या. केटलाक नवीन परणेली स्त्रीना अनुरागथी मोह पामता छता तेनुं ध्यान करवा लाग्या. केटलाक पुत्रना, केटलाक बंधुजनोना, केटलाक द्रव्यना अने केटलाक पोताना वृद्ध मातापितानो निर्वाह चलाववाना ध्यानमां तत्पर थया. वली केटलाक तो मृत्युथी भय पामीने पोताना नवा बनावेला घरोनोज विचार करवा लाग्या. आम निरंतर महारौद्र ध्यानने वश थयेला ते सर्वे वणिको "हवे शुं करवुं?" तेनो कांइ विचार न सुझवाथी मूढनी पेठे पोतपोताने स्थाने बेसी रह्या. फक्त अरिहंतना धर्मने जाणनारा श्रावक शिरोमणि अर्हन्नके, लोकमां आवा कालना समान विघ्न करनारा वैतालने जाण्यो; तेथी ते " आवी दुःखी अवस्थामां श्री अरिहंत प्रभुनो धर्म एकज

आधाररुप छे." एवो पोताना चित्तमां निश्चय करीने वहाणना एकांत प्रदेशमां गयो. त्यां तेणे विधिथी ढींचणवमे उन्ना रहीने मस्तक उपर हाथ जोमी श्री अरिहंत प्रनुने स्तुतिपूर्वक नमस्कार कर्यो. पछी ते अर्हन्नक श्रावके आराधना करीने विधिथी सागारीक अनशन कर्युं के, " जो आ उपसर्गथी नियमे करीने म्हारुं मरण थाय तो में बाह्य अने अंतरंगरुप सर्व संग त्यजी दीधा छे तथा आ म्हारो कायोत्सर्ग विशेष नावथी आ जन्मपर्यंत थाउ. में धन कुटुंबादिकने विषे सर्व आसक्ति त्यजी दीधी छे. वली म्हारे आ जन्मने विषे सर्व जीवोने विषे मैत्रीनाव हो."

पछी कालना समान कोपथी नयंकर आकृतिवाला वैताले अर्हन्नक श्रावक पासे आवीने नृकुटी चमावीने कह्युं. "अरे दुष्ट आत्मावाला कुमति! तुं आ वृथा पाखंम शामाटे करे छे? जैनधर्म त्यजी दे अने प्रयत्नथी मिथ्यात्वने अंगीकार कर. अरे! जो तुं म्हारुं कह्युं नहि करे तो आ त्हारा वहाणने म्हारी आंगलीना तीव्र प्रहारथी समुद्रमां फेंकी पापमनी पेठे चूर्ण करी नाखीश. हे जम! तुं खरेखर पोताना जीवितथी अने आवा वैनवथी भ्रष्ट थवाने लीधे अति दुःखी थइ अकाले आ समुद्रमांज मृत्यु पामीश, माटे जम बुद्धिवालो तुं पोताना हितने माटे म्हारुं कहेवुं कबुल कर के, जेथी तने आ समुद्रमां पण जरा नय न थाय." अर्हन्नक श्रावके मौन धारण कर्युं हतुं; तेथी ते पोतानां मनथीज तेने कहेवा लाग्यो के, "हे देव! तुं मने अहिं नय देखामे छे; परंतु तेथी हुं मरी जवानो नथी. म्हारुं धनधान्यादि सर्व नले नाश पामो, पण हुं जैनधर्म त्यजनार नथी." अर्हन्नक श्रावके आ प्रमाणे कह्ये छते अत्यंत कोपायमान थयेला ते वैताले पोतानी बे आंगलीना प्रहारथी ते वहाणने क्षणमात्रमां जलने विषे फेंकी दीधुं. जो के वैतालना प्रहारथी ए वहाण बहु कंपवा लाग्युं. तोपण अर्हन्नक शेठनुं मन जैनधर्मथी मेरुपर्वतनी पेठे जरा पण चलायमान थयुं नहि. वली कल्लोलना अग्रनागथी वहाणने उछालता अने नीचे पामता ते वैताले अर्हन्नक शेठने बीकण पुरुषोना प्राणने नाश करनारी बहु नीति देखामी. आ प्रमाणे बहु नय देखामवाथी पण मेरु पर्वतनी पेठे ते अर्हन्नक शेठना धर्म ध्यानने निश्चल जोइ देवताए वैतालनुं नयंकर रुप त्यजी दइ पोतानुं स्वानाविक स्वरूप धारण कर्युं. पछी अग्नि स-

मान देदीप्यमान आभूषणोने धारण करनारो, कल्पवृक्षना पुष्पोथी गुंथेला चोटलावालो, उत्तम वेशने धारण करनारो, दुंदुभिना दिव्य शब्दथी दिशाउने बेहेरी करी नाखतो, चंचल कुंमलथी सुशोभित आकृतिवालो, विश्वने आश्चर्यकारी रूपलक्ष्मीवालो अने सर्व लोकने विस्मय पमामनारो ते देव जयजय शब्दपूर्वक चारे तरफ पुष्पवृष्टि करतो उतो प्रगट थयो. क्षणमात्रमां सर्व दुर्निमित्त शांत थइ गयुं अने "हवे वहाणोने जरा पण भय नथी." एम धारीने सर्वे माणसो पण स्वस्थ थया. पछी देवताए गंभीर एवी मधुर वाणीथी कह्युं. "हे श्रद्धारुप अमृतना समुद्र अर्हन्नक श्रावक ! तुं जयवंतो वर्ते छे. त्हारो अवतार श्रेयकारी छे अने त्हारुं आ मनुष्यभवमां जीवित पण वखाणवा योग्य छे. कारण के, मेरुपर्वतनी चूलिकानी पेठे जिनधर्मने विषे त्हारी दृढ श्रद्धा छे. हे अर्हन्नक! सांभल. सौधर्म देवलोकना इंद्र सुविक्रमे हर्षथी पोतानी सभामां त्हारी प्रशंसा करी हती अने एम कह्युं हतुं के, "हे देवताउ ! सांभलो. जंबुद्वीपना भरतक्षेत्रने विषे चंपानगरीमां अर्हन्नक नामनो श्रावक श्री अरिहंत धर्मरुप संपत्तिनुं स्थान छे. जेम वायुथी मेरुपर्वत कंपायमान थतो नथी तेम कोइ पण सुर, असुर, रक्ष के यक्ष पोतानी दिव्य शक्तिवमे ए श्रावकने जैनधर्मथी क्षोभ पमामवा समर्थ नथी." (देवता अर्हन्नक श्रावकने कहे छे के,) हे श्रावक! इंद्रनां आवां वचन सर्वे सभासदोए प्रमाण मान्यां; परंतु में ते न स्वीकारता विचार्युं जे, जो आ परम ऐश्वर्यने धारण करनारो इंद्र जे जे असत्य बोले छे ते ते मीठुं मीठुं बोलनारा तेना सेवको देवता प्रमाण करे छे. अहो ! देवतानी आगल म्होटा शक्तिवालानी पण गणत्री थती नथी तो पछी फक्त दृढताना वर्णनने विषे आ मनुष्यमात्रनी प्रशंसा शा हिशाबमां छे. बहु दृढ एवा मनुष्यनी पण धर्मने विषे स्थिरता त्यांज सुधी रहे छे के, ज्यां सुधी कोइ देवता तेने चलावनार मल्यो न होय ? माटे चाल, हुं त्यां जइने ते जैन धर्मीनी परीक्षा करुं." आम धारीने में अहिं आवीने बहु माया प्रगट करी. परंतु हे महाभाग ! इंद्रे पोतानी सभामां जेवी त्हारी धर्मस्थिरता वखाणी छे, तेथी पण अधिक में त्हारी धर्मने विषे स्थिरता जोइ छे. हे महाभाग ! में जे जे त्हारा अपराधो कर्या होय ते ते क्षमा कर." एम कहीने देवताए अर्हन्नक श्रावकने बे जोम कुंमलो आप्यां. पछी ते विजलीनी पेठे अंत-

ध्यान थइ गयो एटले अर्हन्नके पोतानुं पच्चखाण पुरुं कर्युं. वहाणमां बेठेला सर्वे माणसो पण अर्हन्नक श्रावकना आवा अद्भुत महिमाने जोइ जैनधर्मने विषे दृढ आदरवाला थया. ठीकज छे प्रत्यक्ष देखेला गुणने कयो पुरुष न माने? अर्थात् सर्वे माने.

पछी अनुकुल पवनना योगथी सर्वे वहाणो कुशलपणे गंभीरपोतपुर प्रत्ये आवी पहोच्या. त्यां अर्हन्नक विगेरे सर्वे वेपारीयो पोतानां करीआणां वहाणथी गामामां भरी थोमा दिवसमां मिथिला नगरी प्रत्ये आव्या. त्यां बहारना उद्याननेविषे सर्व वस्तुउना गामाने राखी राजाने योग्य एवी कुंमल विगेरे उत्तम वस्तुउनी भेट लइ अर्हन्नक विगेरे सर्व श्रावको कुंभराजा पासे गया. त्यां राजानी आगल भेटनी वस्तुउ मूकीने सर्वे शेठोए प्रणाम कर्या. कुंभराजाए पण बहुमान आपवा पूर्वक स्नेह दृष्टिथी तेमना सामुं जोइ कुशल समाचार अने लाभादिकनी वात पूछी संतोष पमाम्या. पछी कुंभराजाए साम्राज्यपदथी पण अधिक स्नेहवाली अने महा सौभाग्यवाली मल्लिकुमारीने कन्याना अंतःपुरथी पोतानी पासे सभामां बोलावी. स्वभावथीज मनोहर कांतिवाली अने दिव्य अलंकारोने धारण करनारी मल्लिकुमारी पण पोतानी अनेक सखीयोनी साथे सभामां आवी. पछी कुंभराजाए पोताना हाथथी नम्र एवी मल्लिकुमारीने कुंमलो पहेराव्यां. ते वखते ए राजकुमारीना कानने विषे पहेरावेलां ते बंने कुंमलो पोतानी दिव्य कांतिथी जाणे जंबूद्वीपनी अंदर रहेला बे सूर्यज होयनी? एवा शोभवां लाग्यां. अर्हन्नक विगेरे श्रावको पण मल्लिकुमारीनां स्वरुपने जोइ पोतानी मुसाफरी सफल मानवा लाग्या. पछी भूपतिये रजा आपेली मल्लिकुमारी पोताना अंतःपुर प्रत्ये गइ. कुंभराजाए वेपारीयोना संतोषने माटे ते वखते पोताना देशमां तेमनुं दाण माफ कर्युं. पछी सर्वे वेपारीयोए पोतानुं करीआणुं बहु लाभथी वेची दइ तुरत परदेशनुं योग्य करीआणुं खरीद कर्युं. जूदी जूदी जातनी वस्तुउथी अने वासणोथी गामाउ भरी तेओ समुद्रने कांठे आव्या. त्यां इष्टलाभथी हर्ष पामेला तेउ सर्व माल वहाणमां भरीने अनुकुल पवनथी पोतानी नगरी तरफ जवाने विदाय थया. अनुक्रमे ते वणिक् पुत्रो थोमा वखतमां चंपानगरी प्रत्ये आव्या. त्यां तेमणे हर्षथी पोतानी सर्व वस्तुउ वहाणमांथी उतारी ना-

खी. पछी अर्हन्नक विगेरे मुख्य श्रावको कुंमलादि योग्य भेट लइने राजानी सभामां गया. त्यां तेमणे चंद्रछाय भूपतिने प्रणाम करी सर्व मनोहर वस्तुउ अर्पण करी. पछी संतोष पामेला चंद्रछाय भूपाले कुशल समाचार पूछीने कह्युं के, "हे शेठो ! तमे कोइ स्थानके कांइ अपूर्व आश्चर्य जोयुं होय तो ते मने कहो ?" राजाना आवा प्रश्नथी तेउए कह्युं. "स्वामिन् ! आपनी आज्ञाथी अमे दीर्घकाल पर्यंत वहाणो वमे समुद्रनुं उल्लंघन करता अनुक्रमे मिथिला नगरीये पहोच्या. त्यां कुंभराजाने मलवा माटे सभामां गयेला अमोए तेमनी रत्नरुप मल्लिकुमारी पुत्रीने दीठी. महाराज ! तेना समान त्रण जगत्ने विषे बीजा कोइनुं स्वरुप नथी एज अमे म्होटुं अपूर्व कौतुक दीठुं छे." एछी पूर्वभवना संबंधथी उत्पन्न थयेला प्रेमथी उछलता स्नेहवाला चंद्रछाय राजाए मल्लिकुमारीनुं स्वरुप पूछ्युं, ते उपरथी तेमणे मल्लिकुमारीनुं यथार्थ स्वरुप वर्णव्युं. पछी हर्ष पामेला विवेकी राजाए गौरवताथी तेमनुं दाण माफ करी सर्वे शेठोने रजा आपीने ए चंद्रछाय राजाए पण पोतानुं पाणीग्रहण मल्लिकुमारीनी साथे करवानी इछाथी एक चतुर दूतने भेट आपीने मिथिला नगरी प्रत्ये कुंभराजा पासे मोकल्यो.२

हवे निरंतर महालक्ष्मीना निरवद्य स्थानरुप वाणारसी नगरीने विषे शंखना सरखी उज्वल कीर्तिवालो श्री शंखराजा राज्य करतो हतो. हवे एकदा मिथिला नगरीमां श्री मल्लिकुमारीनां पेला अर्हन्नक श्रावके आपेलां बे दिव्य कुंमलो भागी गयां; तेथी कुंभराजाए चतुर सोनीयोने बोलावी ते बन्ने कुंमलो तेमने सांधवा माटे आप्यां. सोनीयोए बहु उपायथी ते बन्ने कुंमलोने सांधवा मांम्यां; परंतु ते देवताए आपेलां (दिव्य) होवाथी संधाणां नहि. छेवट तेउ थाक्या; तेथी ते सर्वे सोनीयो कुंभराजा पासे जइने विनंती करवा लाग्या के, "हे नरेश्वर ! अमे बहु यत्न कस्यो, पण आ कुंमलो संधातां नथी. जो आपनी आज्ञा होय तो एमे तेनाज सरखां बीजां नवां कुंमलो बनावी आपीये." सोनी लोकनां आवां वचन सांभली अग्निनी पेठे अत्यंत क्रोधातुर थयेला कुंभराजाए कह्युं. "अरे जनो ! पोताना कार्यमां पण अकुशल एवा तमे सोनी शेना ? के, जे एक सांधो करवाने पण समर्थ थया नहि. अरे मूर्खो ! माटे तमे म्हारो देश त्यजी बीजा दूर देशमां जाउ." शंखराजानी आवी

आज्ञाथी सर्वे सोनीयो पोतपोताना घरना सार सार उपकरणथी गामान्तरी जयने लीधे तुरत मिथिला नगरीनी बहार निकली गया. अनुक्रमे तेउ मिथिलापतिना देशने उल्लंघन करी क्षेमकुशलथी वाणारसी नगरीना उपवनने विषे आवी पहोच्या. पछी सर्वे सोनीयो पोतपोताना कुटुंब सहित गामाउने ते उद्यानमांज राखी भूपालने योग्य एवी भेटो साथे लइ हर्षपूर्वक शंखराजानी सभामां गया. त्यां तेउए सर्व भेट शंखभूपतिनी आगल मूकीने तेने प्रणाम कर्या. शंखराजाए पण प्रसन्न दृष्टिथी तेउना सामुं जोइ तेमने पोतानी नगरीप्रत्ये आववानुं, निवास स्थाननुं अने आ जीविकाविगेरेनुं कारण पूछ्युं. पछी हर्षित मनवाला सोनीयोए, पोतानुं काशी नगरीमां आववुं थयुं त्यां सुधीनी सर्व वात निवेदन करी. ए उपरथी शंखभूपाल मल्लिकुमारीने विषे बहु आसक्त थयो. पछी उदार मनवाला ए राजाए हर्षथी सर्वे सोनीयोने रहेवा माटे पोतानी नगरीमां मनोहर घरो करावी आप्यां. त्यारबाद मल्लिकुमारीनी साथे लग्न करवाने उत्साहवंत थयेला ते अचल धैर्यवाला शंखभूपाले कोइ एक चतुर दूतने मिथिला नगरी प्रत्ये कुंभराजा पासे मल्लिकुमारीनुं मागुं करवा मोकल्यो.[३]

जाणे पोताना देदीप्यमान स्थानोनी कांतिना मीषथी अमरावतीनी लक्ष्मीने पण हसती होयनी ? एवी उत्तम गुणवाली कुणाल नामे नगरी छे. त्यां सुवर्ण समान देदीप्यमान कांतिवालो रुक्मी नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने शीलरुप सौभाग्यने धारण करनारी धारिणी नामे स्त्री हती. तेउने पोताना माता पिताना चित्तरुप सरोवरने विषे राजहंसी समान, उज्वल गुणवाली अने उत्तम रूपवाली सुबहुला नामे पुत्री हती. एक दिवस ते कन्यानो चातुर्मासिक नामे स्नानोत्सव (न्हावण करवाना उत्सवनो दिवस) आव्यो. ते दिवसे राजानी आज्ञाथी मालीये राजमार्गमां पंचवर्णनां मनोहर सुगंधीवालां पुष्पोथी स्वर्गना उद्यान समान एक म्होटो मंमप बनाव्यो. तेनां मध्य भागने विषे सोनी लोकोए भूपतिना हुकमथी पंचरंगी चोखावमे नगरी आलेखीने तेनी मध्यमां सुवर्णनो एक अद्भुत बाजोठ मूक्यो. त्यार पछी अलंकारोथी सुशोभित अंगवालो रुक्मीराजा, पट्टहस्ति उपर बेसीने ते मंमपमां आव्यो अने तेणे ते वखते पोतानी सुबहुला कन्याने त्यां बोलाववा माटे

सेवकोने आज्ञा करी. लोकोने जोवा योग्य शोभावाली सुबहुला पण सुखासनमां बेसी अनेक सखीयोनी साथे त्यां आवी. पछी ते राजकुमारीने मंरूपनी अंदर रहेला सुवर्णना बाजोठ उपर बेसारीने रुक्मी राजाना अंतःपुरनी स्त्रीयोए मांगलिक घमाना मंत्रित जलवमे अभिषेक कर्यो. ते वखते कुलस्त्रीयो मांगलिक धवलगीत गावा लागी. वाजींत्रो वागवा लाग्यां. वृद्ध पुरुषो आशिष आपवा लाग्या अने ब्राह्मणो हर्षथी वेदोच्चार करवा लाग्या. वली ते वखते बीजा आश्चर्यकारी बहु उत्सवो थवा लाग्या. पछी दिव्य वस्त्र तथा दिव्य आभूषणोने धारण करी दूषणरहित अने पोताना चरणमां प्रणाम करती एवी ते राजकुमारीने रुक्मी राजाए पोताना खोलामां बेसारी. आ वखते सुबहुला कन्याना औदार्यथी सुशोभित एवा तथा उत्तम पुरुषोने वखाणवा योग्य रम्यपणावाला निरुपम रुपे करीने वली मंरूपनी अति मनोहर एवी विचित्र रचनावमे करीने चारे तरफथी उत्सवसहित आवेला मनुष्योनां जोवाथी तथा अत्यंत आनंद पामेला बंधुजनी बहु शोभाए करीने अने वागतां एवा महा वाजींत्रोना शब्दे करीने आकाशमां बहु गर्जना थवा लागी हती.

पछी हर्षथी उत्साहवंत हृदयवाला अने अत्यंत प्रसन्न थयेला रुक्मिराजाए पोतानी आगल बेठेला मुख्य कंचुकीने कंइक हास्ययुक्त मुख करीने पूछ्युं के, " तुं निरंतर दूतसंबंधी कार्यने माटे अनेक राज्योने विषे गयो छे तो तें कोइ स्थानके आवो मज्जनोत्सव दीठो होय तो कहे ?" राजाना आवा आदेशथी कंचुकीये पोताना मस्तकने विषे हाथ जोमीने कह्युं. " हे नाथ ! एक दिवस हुं आपनी आज्ञाथी मिथिला नगरीप्रत्ये गयो हतो. त्यां में कुंभराजाना घरने विषे तेमनी पुत्री श्रीमल्लिकुमारीनो आथी सोगुणो मज्जनोत्सव जोयो हतो." कंचुकीनां मुखथी श्रीमल्लिकुमारीनुं नाम सांभलतांज रुक्मीराजा तेने विषे आसक्त थयो, तेथी तेणे कंचुकीने श्रीमल्लिकुमारीना गुणोनुं वर्णन करवानुं कह्युं. कंचुकीये तेम करवाथी तो ते रुक्मीराजा मल्लिकुमारीने विषे बहु आसक्त थयो. पछी श्रीमल्लिकुमारीनो पाणीग्रहण करवाने माटे बहु रागवंत थइने तेणे पण एक वाचाल दूतने मिथिला नगरी प्रत्ये कुंभराजा पासे मल्लिकुमारीनुं मागुं करवा माटे मोकल्यो.[४]

हवे कुरुदेशने विषे लक्ष्मीने क्रीमा करवाना कमलरुप, वेपारीजनोथी

पूर्ण अने झरता मदवाला हाथीनी पेठे दान आपवामां प्रवीण एवुं गजपुर नामे नगर छे. ते नगरमां शत्रुओने अति दीन बनावनारो अदीनशत्रु नामनो राजा बलिराजाने बंधन करवामां प्रविण एवा कृष्णनी पेठे उत्कृष्ट संपत्तिवालुं राज्य करतो हतो.

आ वखते श्रेष्ठ एवी मिथिला नगरीने विषे श्री कुंभराजानो पुत्र जे मल्लिकुमारीनो न्हानो भाइ थतो हतो ते मल्लदिन्नवरकुमार उत्कृष्टपणे वर्ततो हतो. एक दिवस ते राजकुमारे चित्रशाला बनाववा माटे अद्भुत चिताराओने पोताना सेवको मोकलीने बोलाव्या. पछी तुरत आवेला ए चिताराओने मल्लदिन्नवर कुमारे चित्रशालाना जूदा जूदा भागो चितरवा माटे सोंप्या. सर्वे चिताराओ, पोतपोताने सोंपेला चित्रशालाना भागोने सुवर्णनी सूक्ष्म रेखावाला मनोहर स्वरूपथी चितरवा लाग्या. तेओमां कोइ एक चितारानो युवान पुत्र देवताथी प्राप्त थयेला वरदानने लीधे चित्रकलामां एवो प्रवीण हतो के, ते कोइ पण स्त्री विगेरेना थोडा अंगने जोइने सर्व मूर्त्ति चितरी शकतो हतो. एक दिवस ते चिताराना पुत्रे, पडदानी अंदर रहेली श्री मल्लिकुमारीनो माणिक्य रत्नना सरखो सुशोभित एवो पगनो अंगुठो दीठो. पछी तेणे पगना अंगुठाने जोवा उपरथी तुरत श्री मल्लिकुमारीनुं अद्भुत रूप यथार्थपणे उत्तम रंगोथी चित्तर्युं. पछी चिताराओए सर्व चित्रशालाने चितरीने हर्षथी मल्लदिन्नवर कुमारने जाहेर कर्युं. राजकुमारे पण ते जोवाथी प्रसन्न थइने तेओने वहु द्रव्य आपी संतोष पमाड्या.

एक दिवस मल्लदिनवर कुमार प्रातःकृत्य करी वस्त्राभूषणोने धारण करवा पूर्वक पोतानी धावमाता अने प्राणप्रियानी साथे चित्रशालामां आव्यो. त्यां तेणे वाव्य, कूवा, सरोवर, समुद्र, पर्वत, नगर, हाथी, घोडा, वन, म्होटी सेना, रथ, पद्म, अने स्त्री पुरुषोनां जोडलां, इत्यादि नेत्रने आश्चर्य करनारां अनेक चित्रो जोतां जोतां दूरथी श्रीमल्लिकुमारीना चित्ररुपने जोयुं. ते ते रंगना योगथी खेरखर मल्लिकुमारीना समान ते चित्रने जोइने मल्लदिनवर कुमारने ते वखते "आ मल्लिकुमारी पोते उभी छे" एम भ्रांति थइ. राजकुमार लज्जाने लीधे तुरत पाछो वल्यो एटले प्रेमपूर्वक धावमाताये मधुर वचनथी कह्युं; "हे वत्स! जेम कायर माणस भयने लीधे रणभूमिने जोइ दूरथी नासी

जाय छे तेम तुं पण आ चित्रशालाने परिपूर्ण जोया विना केम पाछो वली जाय छे ?" राजकुमारे कह्युं. "हे मात! देव अने गुरुनी पेठे पूजवा योग्य श्री मल्लिकुमारी नामनी म्हारी म्होटी ब्हेन पोते आगल उभी छे, तो हुं निर्लज्ज थइ तेमनी आगल आ म्हारी प्राणप्रिया सहित शी रीते जइ शकुं?" आम राजकुमारे कह्युं एटले धावमाताये हसीने तेने कह्युं. "हे निर्मल बुद्धिवाला पुत्र ! ए श्री मल्लिकुमारी पोते नथी; परंतु चित्रकारोए चितरेलुं तेनुं अपूर्व रूप छे." धावमातानां आवां वचन सांभली कोपथी आकुल व्याकुल थयेला राजकुमारे कह्युं. "जे अधमपुरुषे आ ठेकाणे देव तथा गुरुरूप म्हारी म्होटी ब्हेननुं आवुं सुरतलीलानी आकृती योग्य स्वरुप चितर्युं छे ते दुष्ट बुद्धिवाला चित्रकार उपर निश्चे यमराजाए पोतेज कटाक्ष कर्यो छे." पछी क्रोधातुर थयेला ते राजपुत्रे पोताना सेवकोने आज्ञा करी के, "जेणे आवुं रूप चितर्युं छे ते चितारानें तुरत मारी नाखो." राजकुमारनी आवी आज्ञाथी राजसेवकोए तत्काल ते चितारानां पुत्रने पकड्यो अने कंपता शरीरवाला तेने वध करवा माटे तेउ वधस्थानके लइ गया. आ वात सर्वे चिताराउए सांभली; तेथी तेउ एकठा थइ वधस्थानके गया. त्यां तेउए राजसेवकोने बहु द्रव्य आपी क्षणमात्र अटकाव्या. पछी तेउए तुरत राजकुमारनी पासे आवी श्रेष्ठ नजराणा मूकी, उत्तम आशिषोथी वृद्धि पमाडी अने हाथ जोडीने मधुर वाणीथी कह्युं. "हे नाथ! जे चिताराए श्री मल्लिकुमारीनुं स्वरुप चितर्युं छे, तेने देवताए वरदान आपेलुं छे, जेथी ए चितारो जेनुं थोडुं पण रूप देखे तेनुं चिन्ह अने लक्षणयुक्त सर्व रूप चितरी शके छे. महाराज! ए चिताराए पडदानी अंदर उभेला श्री मल्लिकुमारीना पगनो अंगुठो दीठो हतो, माटे तेणे स्वभावथीज तेमनुं यथार्थ स्वरुप चितरेलुं छे. हे देव! आपे तेने वध करवानो दंड आपेलो छे ते मूकी दइ बीजो दंड करवो जोइए. कारण अमे आपना प्रसादथी तेनी चित्रकलाथीज जीविए छीए." चिताराउनां आवां कोमल वचनथी कांइक शांत थयेला राजकुमारे मल्लिकुमारीनुं स्वरूप चितरनार चितारानां फक्त जमणा हाथनो अंगुठो कपावीने तेने पोताना देशमांथी काढी मूक्यो, तेथी ते चितारानो पुत्र पण पोतानो नवीन जन्म मानतो छतो घरनी सार सार वस्तुने लइ कुटुंब सहित तुरत चाली

निकळ्यो. अनुक्रमे थोमा दिवसमां ते श्री गजपुर प्रत्ये आवी पहोच्यो. पछी फलनी इच्छावाला ते चिताराए पोताना माबा हाथना अंगुठाथी श्री मल्लिकुमारीना उत्तम स्वरुपवालो चित्रपट चितर्यो. त्यारबाद ते चित्रपट्टने लई चित्रकार गुप्त रीते राजसभामां गयो. त्यां तेणे योग्य भेट मूकी नृपतिने प्रणाम कर्यो. अदीनशत्रु राजाए पण तेने जन्मस्थान अने आववा विगेरेनुं कारण पूछ्युं, ते उपरथी ए चिताराए मूलथी आरंभीने पोतानुं सर्व वृत्तांत कह्युं. आ वखते मल्लिकुमारीनुं सुखकारी नाम सांभलवाथी अदीनशत्रु राजा, ते राजपुत्री उपर अति राग धारण करवा लाग्यो; तेथी तेणे चितारोने श्री मल्लिकुमारीनी रूप गुण विगेरेनी सर्व वात पूछी. आ अवसरे चितारायें श्री मल्लिकुमारीनो पट प्रगट करीने नृपतिनां हाथमां आप्यो; तेथी अदीनशत्रु महाराजा श्री मल्लिकुमारीनां रूपने जोइ विस्मय पामीने कहेवा लाग्यो के, “हे महाभाग! तें आ शुं विद्याधरीनुं स्वरूप चितर्युं छे के किंन्नरीनुं? अथवा तो कोइ देवीनुं? खरे लोकमां आवुं स्वरूप कोइ मनुष्यस्त्रीनुं तो नथीज!!!” राजानां आवां वचनथी चिताराए कह्युं. “हे राजन्! में आ श्री मल्लिकुमारीनी फक्त आकृति चितरेली छे. कारण तेनुं खरुं स्वरूपतो कोइथी चितरी शकाय तेम नथी.” चित्रकारनां आवां वचनथी अत्यंत प्रसन्न थयेला अदीनशत्रु राजाए पोताना मनमां वारंवार प्रशंसा करता मल्लिकुमारीनुं स्वरुप बहुवार जोयुं. पछी तेणे चित्रकारने प्रीतिदानथी संतोष पमाम्री अने रहेवा माटे योग्य घर करावी आपीने पोताना नगरमां राख्यो. त्यार पछी ते राजाए पण मल्लिकुमारीनी साथे पाणीगृहण करवानी इच्छाथी एक चतुर दूतने झट मिथिला नगरी प्रत्ये कुंभराजा पासे मल्लिकुमारीनुं मागुं करवा मोकल्यो.५

हवे पंचाल देशमां कांपील्यपुर नगरने विषे जितशत्रु नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने बहु सौभाग्यथी देदीप्यमान अने श्रेष्ठ गुणवाली धारणी विगेरे हजारो स्त्रीयो हती. आ वखते दिव्य संपत्तिथी श्रेष्ठ एवी मिथिला नगरीने विषे मनुष्योने वहाली कोइ एक परिव्राजिका रहेती हती. ते हमेशां मनुष्योनी आगल पोताना पवित्र धर्मनुं स्थापन करती राजाना अने प्रधान विगेरेनां मुख्य घरोने विषे फरती हती. एक दिवस दंमकमंमलने धारण करनारी ते परिव्राजिका, ज्यां पोतानी सखियोनी साथे श्रीमल्लिकुमारी

सुखे बेठी हती त्यां तेना घरप्रत्ये आवी अने त्यां ते कमंडलमां रहेलां जलथी पृथ्वीने छांटी ते उपर पोतानु दर्भासन नाखीने तत्काल बेठी अने जेम लोकोनी आगल पोताना धर्मने निवेदन करती हती तेम श्रीमल्लिकुमारीनी आगल पण ते परिव्राजिका आदरपूर्वक पोतानो धर्मोपदेश कहेवा लागी. आ वखते त्रण ज्ञानने धारण करनारी मल्लिकुमारीये तेने पूछ्युं. "हे सुभागे ! तुं कहे जोइ, स्वर्गादि सुखआपनारो कयो धर्म लोकमां कहेवाय छे ?" मूढात्मा परिव्राजिकाए कह्युं. "पवित्रतारूप मूलवालो, श्रेष्ठ युक्तिवालो, दानादिगुणोने शोभा आपनारो अने स्थापनाने योग्य एवो अमारोज धर्म स्वर्गादि सुख आपनारो छे. जेम कोइ मलिन वस्तुने मृतिकानुं लेपन करीने पछी धोइ नाखीये तो ते निर्मल थाय छे तेम स्नानादि शौचथी पापरूप कादवनो समूह धोवाइ जवाने लीधे जीव निर्मल थाय छे." मल्लिकुमारये कह्युं. "हे शुभे ! कांइ म्हारुं वचन सांभल. रुधीरथी खरडायेलां मलिन वस्त्रने फरी रुधीरथीज धोइये तो ते शीरीते उज्वल थाय ? एम हिंसादिकृत्यथी मलिन थयेलो जीव, जल विगेरेना स्नानथी शीरीते पवित्र थाय ? उलटो ते सावद्य योगथी वधारे मलीन थाय छे." श्रीमल्लिकुमारीनां आवां युक्तिवालां वचन सांभलीने परिव्राजिका तुरत मौन थइ गइ, तेथी ते कांइ पण बोलवाने समर्थ थइ नहि. पछी मल्लिकुमारीनी चतुर सखीयोए परस्पर मुखमरडीने पेली नीचुं मुखघालीने रहेली परिव्राजिकाने धिक्कार करता कह्युं. "अरे जड ! मूर्तिवंत सरस्वतीना सरखी अमारी स्वामिनीनी साथे वाद करवामां तुं केम समर्थ था ? आम राजकुमारीनी सखीयोए परस्पर बहु हास्य कर्युं; तेथी लज्जावंत थयेली परिव्राजिका तुरत त्यांथी बहार चाली गइ. वली ते जडहृदयवाली परिव्राजिका, श्रीमल्लिकुमारी उपर द्वेष धारण करती छती पोताना मनमां विचार करवा लागी के, "पोताना ज्ञानथी बहु गर्व धारती ए राजकुमारीये म्हारी मश्करी करी छे. तो हवे हुं तेनो शीरीते बदलो वालुं ?" आम ते विचार करती पोताना चित्तमां बहु खेद पामी. पछी ते परिव्राजिका पोताना परिवार सहित मिथिला नगरीथी चाली नीकली अने पृथ्वी उपर भमती भमती कांपील्यपुर नगरे आवी पहोची. पापमां प्रीतिवाली अने बीजा मनुष्योने आनंद पमाडवामां तत्पर एवी ते केटलेक दिवसे जितशत्रु राजाना

मंदीरप्रत्ये गइ. त्यां पोतानी हजारो स्त्रीयो सहित नृपतिये तेनो सत्कार कर्यो एटले ते हर्षथी विधिपूर्वक पोताना आसन्न उपर बेठी. पछी जितशत्रुराजाए तेने मधुर वचनथी संतोष पमामीने पूछ्युं के, “ हे आर्ये ! तमे निरंतर राजकुल प्रत्ये फरोछो, तो आजे म्हारी आगल सत्य कहो के, आवी रूपसंपत्तिथी वखाणवा योग कया कया राजानां अंतःपुरो छे ? ” राजानां आवां वचन सांभलीने कांइक हास्य करी गर्व सहीत परिव्राजिकाए कह्युं. “ हे नृपति ! खरेखर तमे कूवाना देमका समान देखाउ छो. सांभलो.

कोइ एक कूवामां रहेनारो देमको पोताना स्थानने अगाधपणाथी निरंतर बहु म्होटुं मानतो हतो. एवामां कोइ एक समुद्रनो देमको ते कूवाना कांठा उपर आव्यो एटले कूवाना देमके तेने हर्षथी झट पूछ्युं के, “ हे मित्र! तुं क्यांथी आव्यो ? ” तेणे उत्तर आप्यो. “ महासमुद्रथी. ” कूवाने देमके फरी पूछ्युं “ हे भाइ ! ते समुद्र केटलो म्होटो छे, ते तुं मने झट कहे ? ” समुद्रना देमकाए “ ए बहु म्होटो छे. ” एम कह्युं एटले कूवाना देमकाए पोताना पगवती पाणीमां एक लीटी दोरीने कह्युं. “ हे भाइ ! ते महासमुद्र शुं आवमो म्होटो छे ?” समुद्रना देमकाए कह्युं. “ एथी पण बहु म्होटो छे.” समुद्रना देमकानां आवां वचन सांभली कूवानो देमको बहु क्रोध करीने ते कूवाना एक कांठा उपरथी बीजा कांठा उपर जइने बोल्यो. “ हे दुर्दर! कहे, शुं ए आवमो म्होटो छे ? ” समुद्रना देमकाए फरी कह्युं. “ अरे ! तरंगोनी मालावालो, वाणीथी न वर्णवि शकाय तेवो अने आ त्हारा कूवाथी पण बहूज म्होटो छे. ” कूवाना देमकाए बहु क्रोध करीने कह्युं. “अरे दुष्ट निर्लज्ज! तुं मिथ्या शा माटे बोले छे ? आ म्हारा कूवाथी बीजुं कांइ पण म्होटुं नथी.”

(परिव्राजिका जितशत्रुराजाने कहे छे के,) हे राजन् ! एम तमे पण बीजा राजाउनी अत्यंत रूपवाली अने प्रेमवाली व्हेन पुत्रीयोने जोया विना फक्त अभिमानने लीधेज पोताना सामान्य रूपवाला अंतःपुरनेज वखाणया करो छो. हे महाराज ! सांभलो. हवणां मिथिलानगरीने विषे श्री कुंभराजानी प्रख्यात एवी मल्लिकुमारी नामे पुत्री छे. हे पृथ्वीनाथ ! एनां अंगनी मनोहरता आगल आ तमारी सेंकमो स्त्रीयोनी रम्यता केवल सुवर्ण आगल माटीना ढेफानी समान देखाय छे. ” वली ते परिव्राजिकाए पोताना मनमां “ ए मल्लि-

कुमारीने शोक्यना दुःखमां नाखुं." एवो विचार करीने इर्ष्याथी जितशत्रुराजा पासे तेना बहु वखाण कर्यां. पछी नृपतिये सत्कार करीने ते परिव्राजिकाने रजा आपी; तेथी ते पोतानी कार्यसिद्धि मानती छती त्यांथी चाली गइ. जितशत्रुराजाए पण मल्लिकुमारीनी साथे पाणीगृहण करवानी इच्छाथी एक चतुर दूतने श्री मिथिला नगरी प्रत्ये कुंभराजा पासे मल्लिकुमारीनुं मागुं करवा मोकल्यो.[६]

जेम तीर्थंकरना समवसरवाथी दैवी प्रभावने लीधे उद्यानमां एकज दिवसे अत्यंत प्रीय एवी छ ऋतुनां फलादिकनी संपत्ति प्राप्त थाय छे तेम पोताना स्वजनोनी साथे ते छए दूतो रथमां बेसीने दैवना योगथी एकज दिवसे श्री मिथिला नगरीना उद्यानने विषे आवी पहोंच्या.

॥ इति श्री मल्लिनाथख्याने षट्दूतागमो नाम द्वितीयः सर्गः ॥

पछी उद्यानने विषे पोतपोताना रथ विगेरे परिवारने मूकी छए दूतो मिथिला नगरीमां आवीने एकीज वखते श्री कुंभराजाना द्वार पासे उभा रह्या. नृपतिनी आज्ञाथी प्रतिहारी तेओने सभामां लाव्यो एटले ते छए दूतोए हाथ जोडीने राजतेजथी देदीप्यमान एवा कुंभराजाने प्रणाम कर्या अने मल्लिकुमारीनी याचनारूप पोतपोताना राजाना संदेशा श्री कुंभराजाने एकीज वखते कह्या. पछी कुंभराजाए "आ म्हारी कन्या कोने आपुं अने कोने न आपुं?" एवा विचारथी क्रोधातुर थइने ते सर्वे दूतोने कह्युं के, "विवेकरूप रत्न विनाना तमारा छए राजाओनी याचना केवल हास्यरुप छे, माटे हुं म्हारी पुत्री मल्लिकुमारीने तेओमांना कोइनी साथे परणाववानो नथी." आ प्रमाणे कुंभराजाए ते सर्वे दूतोने अपमान पमाडी पोतानी नगरीथी काढी मूक्या; तेथी ते सर्वे उत्साह रहित थइने तुरत पोतपोताने उतारे आव्या. त्यांथी तेओए थोडा दिवसमां पाछा पोतपोताना राजाओनी पासे आवीने पोतानुं अपमान तथा मल्लिकुमारीना विवाहनी कहेली ना ए सर्व समाचार तेमने कह्या. पछी क्रोधातुर थयेला ते छए राजाओए परस्पर एक बीजाने दूत मोकलीने कहेवराव्युं के, "हे नृपतियो! साम्राज्यपदने भोगवनारो अने बलीष्ठ एवो कुंभराजा आपणी मश्करी करे छे, तो आपणा बलीष्टपणाने धिक्कार छे. निश्चे आपणे

सर्वे एकठा थइने तेने आपणा स्वाधिन करवो जाइए, माटे सौ एकठा थइ कुंजराजा उपर चमाइ करो." आ प्रमाणे सर्वे राजाउ निश्चय करीने पोतपोताना सैन्यनी तैयारी करवा लाग्या. पछी घोर वार्जीत्रोना शब्दथी आकाशने जर्जरीत करता छता ते छ राजाउए पट्टहस्ति उपर बेसी पोतपोताना नगरथी शुन्न दिवसे प्रयाण कर्युं. पछी ठरावेला संकेत स्थले ते छए राजाउ जाणे समान्नाइउज होयनी ? एम एकठा थइने परस्पर एक बीजा उपर निःकृत्रिम एवा स्नेहनी वृध्धि करवा लाग्या. पछी सर्व सैन्यने एकठुं करी छए राजाउए अति वेगथी मिथिलादेश प्रत्ये प्रयाण कर्युं.

हवे मिथिला देशनी अंदर फरता एवा कुंन्नराजाना अनुचरोए राज्यन्नक्तिथी पोताना नृपतिनी पासे आवीने विनंती करी के," हे स्वामिन् ! सांन्नलो. जाणे समुद्रना कल्लोल होयनी ? एवा पोताना म्होटा सैन्यथी पृथ्वीने चारे तरफथी आक्रमण करता छ देशना महा बलवंत राजाउ हवणां तमारी साथे युध्ध करवाने अहिं आवे छे." सेवकोनां आवां वचन सांन्नलीने पोताना नुजबलथी गर्वित अने मननी अंदर अत्यंत कोप पामेला कुंन्नराजाए तुरत पोताना सेवकोनी पासे युध्धनो पट्टह वगमाव्यो. पछी महाशक्तिवालो कुंन्नराजा युध्धनी सर्व सामग्री तैयार करीने चाल्यो अने मिथिला नगरीना सिमामे आवीने उन्नो रह्यो. छ राजाउनुं सैन्य पण तुरत कुंन्नराजाना सैन्यनी पासे आवीने उन्नुं रह्युं. त्यां ते राजाउए पोतपोतानी म्होटाइथी कोइ पण रीते संधी करी नहिं; तेथी धीर पुरुषो तुरत तैयार थइने रणन्नूमिमां आवीने उन्ना रह्या. कवचधारी दुर्ध्धर एवा सर्वे राजाउ पण सवारमां म्होटा सैन्यनी साथे युध्धन्नूमिमां आव्या. पछी जेम न्नूख्यो माणस न्नोजन करवामां प्रवृत्त थाय तेम सेनानी अग्रन्नागमां रहेला सूरवीर पुरुषोए खड्ग अने बाणोथी युध्ध चलाव्युं. आ वखते अल्पसैन्यने लीधे रणसंग्राममां टकी शकवाने असमर्थ तथा अवसरनो जाण कुंन्नराजा पाछो वलीने तुरत पोतानी नगरी प्रत्ये आवतो रह्यो. आम कुंन्नराजा नासी आवीने मिथिला नगरीना किल्लामां न्नराइ पेठो एटले पेला छए राजाउए तेनी पाछल आवीने मिथिलानगरीने घेरो घाल्यो. बहु शत्रुउनी सेनावमे चारे तरफथी घेरायली मिथिलानगरीने जोइ नगरवासीजनो बहु आकुलव्याकुल थवा लाग्या. तेमज बहु शत्रुउथी घेरायला कुंन्नराजए पण

पोतानी नगरीना रक्षण माटे बहु दुःसह उपायो रच्या. पछी किल्लाना कांगराने विषे बहु सुभटोने राखी चिंताथी आकुलव्याकुल थयेलो कुंभराजा सभामां आवीने बेठो. आ अवसरे सखियोनी साथे मल्लिकुमारी, पोताना पिताना चरणने नमन करवा माटे सभामां आवी. त्यां तेणे पिताना चरणमां प्रणाम कर्या; परंतु व्याकुल चित्तवाला पिताए तेने प्रेमदृष्टिथी जोइ नहि तेम मधुरवाणथी बोलावी पण नहि. पछी ज्ञानातिशयने लीधे पिताना मनना संतापने जाणी मल्लिकुमारीये गौरवपूर्वक कोमल वचनथी पिताने कह्युं. "हे तात! तमारे एवी कांइ चिंता नथी, छता तमारुं चित्त आम केम बहु संताप पामे छे जे तमे पूर्वनी पेठे स्नेहदृष्टिथी म्हारा सामुं जोता नथी तेम मौननी पेठे प्रेम वचनथी बोलावता पण नथी? तमारा मनमां शी चींता छे, जे होय ते मने कहो?" कुंभराजाए आवां वचन सांभली नेत्र उघाडीने जोयुं तो पोतानी आगल उभेली श्री मल्लिकुमारीने दीठी. पछी तेमणे बहु स्नेहथी सत्कार करीने कह्युं. "पोताना वंशरूप समुद्रने उल्लास आपवामां चंद्रज्योत्स्ना समान अने हर्ष आपनारी हे वत्से! छ शत्रुओना सैन्यथी घेराइ रहेली आपणी मिथिलापुरीने तुं शुं नथी जाणती? हे वत्से! प्रबल शत्रुओए म्हारी सर्व सेनानो नाश करी नाख्यो छे; माटे हवे म्हारे शुं करवुं? तेनी मने बहु चिंता थाय छे अने तेज चिंताना कारणथी अहिं आवेली तने हुं जाणी शक्यो नहि." पितानां आवां वचन सांभली विश्वमां विख्यात गुणवाली मल्लिकुमारीये कह्युं. "हे तात! तमे बीकण पुरुषनो योग्य एवी चितारूप चिंता त्यजी द्यो अने शत्रुओनी साथे संधी करनारी म्हारी वाणी सांभलो. हे तात! तमे अकेका राजा पासे गुप्त दूत मोकलावीने मधुर वचनथी एम कहेवरावो के, "हे नृप! रात्रीने वखते तमारे एकलाएज कोइने कह्या विना किल्लाना नालाने रस्ते थइने नगरीमां आववुं. कारण तमे गुणोए करीने मल्लिकुमारीने योग्य छो, माटे हुं तमारीज साथे तेनो विवाह करीश." (श्री मल्लिकुमारी पोताना पिताने कहे छे के,) हे तात! आवा समाचारथी ते छए राजाओने अहिं बोलावीने तेमने आपणा अशोकवननां देदीप्यमान मोहगृहना मध्यभागना छ गृहोने विषे एक बीजा न जाणे तेवी रीते राखो. हे तात! वली आपे नगरीना दरवाजा बंध राखीने सज्ज थइने रहेवुं. पछी जे थवानुं हशे ते थशे."

पछी कुंभराजाए पुत्रीनां वचनरुप अमृतथी संतोष पामीने तुरत सर्व ते प्रमाणे कर्युं. कारण एवो कयो पुरुष होय के, पोताना हितने विषे विलंब करे ? अर्थात् कोइ न करे. पछी जाणे साक्षात् सरस्वतीज होयनी ? एम लोकोने भ्रांति पमाडती श्री मल्लिकुमारी, सखीयो सहित पितानी आज्ञाथी पोताना मंदिरप्रत्ये गइ. पेला छए राजाउ पण दूतनां वचनथी रात्रीये अशोकवननी अंदरनां दिव्य मोहगृहप्रत्ये आवीने " निश्चे अमे सवारे मल्लिकुमारीने परणिशुं." एवा वीचारथी पोतपोताना गृहोने विषे पलंगमां सूता. अहो ! रागी पुरुषोनी स्थिति आवीज होय छे. " ज्यारे मंगलमय एवो दिनमणि (सूर्य) उदय पामशे त्यारे अमे पूर्वना पुण्यथी सुखकारी एवो मल्लिकुमारीनो पाणिग्रहण करीने सर्व भूपतियोथी अधिक गुणवाला थइशुं." एम ते छए राजाउए पोतपोताना चित्तनी अंदर विचार करता ते रात्री महा कष्टथी निवृत करी.

॥इति श्री मल्लिज्ञानाधिकारे षट्पूर्वमित्रनृपागमोनाम तृतीयसर्गः॥

पछी देदीप्यमान कांतिवालो सूर्य, उदयाचल प्रर्वत उपर उदय पाम्यो एटले ते सर्वे राजाउनी आशाउनी साथे दशे दिशाउ प्रफुल्लित थवा लागी. आ वखते एक तरफ मिथिला नगरीनी बहार रहेलुं राजमंडल पोतपोताना राजाने न जोवाथी निस्तेज बनवा लाग्युं तो बीजी तरफ श्री मल्लिकुमारीना मोहगृहमां रहेलुं ते छए राजाउनुं मंडल, पोताना उत्कृष्ट उत्साहथी देदीप्यमान देखावा लाग्युं. जो के ते छए राजाउना गृहोना बारणां बंध हतां तो पण सूर्यनी कांति रत्ननी जालीयोना छिद्रना समूहने लीधे ते गृहोनी अंदर बहु प्रकाश करती हती. पछी ते छ राजाउ पोतपोतानी शय्यामांथी उठी मणिजडित भूमि उपर धीमे धीमे चालता हता एवामां तेउए जालिनी अंदरथी आवता दिव्य तेजना समूहथी सुशोभित अने मध्यगृहनी वचमां रहेली श्री मल्लिकुमारीनी पेली सुवर्णप्रतिमा दीठी. पुण्यरुप लावण्यथी परिपूर्ण देवांगनाउना समान सौभाग्यवाली अने देदीप्यमान कांतिवाली ते सुवर्णमय प्रतिमाने प्रफुल्लित नेत्रथी जोता एवा ते सर्वे जड राजाउ खरेखरी मल्लिकुमारीज मानवा लाग्या. वली तेउ सुवर्णनी प्रतिमारुप मल्लिकुमारीनी अद्भुत आश्चर्यकारी कांति, रुप अने सौभाग्यथी मनमां बहु संतोष

पामता छता तेना वारंवार वखाण करवा लाग्या. आ अवसरे त्रण ज्ञानने धारण करनारी अने बहु आभूषणोथी सुशोभित एवी मल्लिकुमारीये पोतानी सेंकडो सखीयोनी साथे त्यां आवीने सुवर्णनी प्रतिमाना मस्तकना छीद्र उपर ढांकी राखेलुं कमल उपाडी लीधुं एटले तेमांथी बहु दुर्गंध निकलवा लाग्यो. पछी सर्वे राजाओ, ते महा दुर्गंधथी आकुलव्याकुल थइने वारंवार पोतपोतानी नासिकाने ढांकवा लाग्या एटले श्री मल्लिकुमारीये नीचुं मुख राखीने बेसी रहेला ते छए राजाओने बोध पमाडवा माटे निर्मल प्रेमने लीधे कह्युं. "हे भूपतियो! प्रेमवशथी आ प्रतिमाने जोता एवा तमे, निश्चे विरक्त बुद्धिवाला अने भग्नोत्साहवाला केम देखाओ छो?" राजाओए कह्युं. "हे सुभगे! खरेखर एनो दुर्गंध अमे सहन करी सकता नथी, माटे अमे मुख तथा नासिकाने ढांकीने बेठा छीए." मल्लिकुमारीये कह्युं. "अरे भूपालो! जरा तत्त्वबुद्धिथी हृदयमां विचार करो तो खरा के, आ सुवर्णमय प्रतिमामां आवो दुर्गंध क्यांथी होय? परंतु हे क्षितींद्रो! में दररोज भोजन करती वखते बहुज रसवालो अन्ननो एक एक कोलीयो ए प्रतिमाना मुखमां नाख्यो छे. अहो! ए एकठा थयेला अन्नना कोलीयानो महा दुःसह गंध उत्पन्न थयो के, जे तमाराथी सहन करायो नहि तो पछी केवल अन्नना आहारथीज वृद्धि पामेला रुधिर, मज्जा अने अस्थिने धारण करनारा, अशुभ पुद्गलोथी निरंतर अपवित्रतानां स्थानरुप, जीर्णवृक्षनां पत्र समान नाशवंत अने शाश्वत सुखथी भ्रष्ट करनारां स्त्रीयोनां शरीर उपर अनंत सुखनी इच्छा करनारो कयो पुरुष राग करे? अहो भूपालो! माटे तत्त्वबुद्धिथी विचार करीने नाशवंत स्वभाववाला कामभोगने विषे वृथा मोह न पामो तेमज आसक्ति पण न करो. सांभलो. हुं आथी त्रीजा भवने विषे महाविदेहमां महाबल नामे राजा हतो अने तमे छए जणा म्हारा मित्रो हता." आ प्रमाणे निरुपम बुद्धिवाली श्री मल्लिकुमारीये ते सर्वे राजाओ पासे पूर्वना बे भवनुं यथार्थ वृत्तांत तेज वखते कही संभलाव्युं. वली ते राजपुत्रीये कह्युं के, "हे मित्रो! जयंत नामना वैमानने विषे तमे देवभवमां असंख्य सुखो भोगव्यां छे, ते सुखो शुं आ मनुष्यजन्मने विषे तमे विसरी गया? तेमज कल्याणना स्थानरुप पूर्वनी देवजाति पण तमने नथी सांभरती?" श्री मल्लिकुमारीनी

आवी संसार समुद्रने तारवामां नाव समान अमृतमय वाणीथी प्रतिबुद्धि वि-गेरे उए राजाउ प्रतिबोध पाम्या. पछी श्रेष्ठ परिणामथी अने शुद्ध लेश्याथी क्षणमात्र इहापोह करतां ते सर्वे राजाउने पूर्वनो जव सांजस्यो. मल्लिकुमा-रीये पण अवधिज्ञानथी ते सर्व राजाउने उत्पन्न थयेलुं जातिस्मरण ज्ञान जाणीने तेमना निवासगृहो उघमाव्यां. पछी सर्वे राजाउ पूर्वना बन्ने जवना उत्पन्न थयेला बहु स्नेहने धारण करता हर्षथी श्रीमल्लिकुमारीनी पासे आवीने तेने प्रणाम करवा लाग्या. श्री मल्लिकुमारीये पण कोमल वचनथी तेमने कह्युं के, "हे पूर्वजन्मना मित्र जूपालो! तमे हर्षथी सांजलो. संसारवास-थी उद्वेग पामेली हुं महाव्रतने अंगीकार करीश, तमे शुं करशो? पोतानां राज्यने विषे रहेशो के व्रत गृहण करशो? जे मरजी होय ते कहो."

श्री मल्लिकुमारीनां आवां वचन सांजली सर्वे राजाउए स्पष्ट कह्युं. "हे मल्लि! सांजलो. तमे जेवी रीते पूर्वजवने विषे श्री महाबल नामे अमारा स्वामी हता तेवी रीते आ जवने विषे पण अमारा अधिपति तमेज थाउ. जो तमे संसार समुद्रने तारनार दीक्षा गृहण करशो तो अमे पण निश्चे साम्राज्यपदने त्यजी दइ संयम लेशुं." सर्वे जूपतियोए निर्मल चित्तथी आ प्रमाणे उत्तर आप्यो एटले तेउनां सत्वथी हर्षित थयेली मल्लिकुमारीये तुरत तेउने कह्युं. "हे नरेश्वरो! जो तमे म्हारीज साथे व्रत गृहण करवाना हो तो तमे सौ पोतपोता-नां राज्यने विषे पोतपोताना पुत्रोने स्थापन करी तुरत अहिं आवो." आ वात सर्वे राजाउए अंगीकार करी एटले मनुष्योनां कर्मने जेदनारी श्री म-ल्लिकुमारी, ते सर्वे जूपालोने पोताना पितानी पासे सजामां तेमी लावी. त्यां "मल्लिकुमारीये आ सर्वे राजाउने प्रतिबोध पमाम्या." एवी वात सांज-लीने अत्यंत हर्ष पामेला कुंजराजाए ते सर्वे राजाउने स्नेहपूर्वक आलिंगन करीने आजूषण तथा उत्तम जोजनवमे विवेकथी संतोष पमाम्या. पछी ते सर्वे राजाउ पोतपोताना देशप्रत्ये चाल्या. आ वखते जेम दुष्ट रोगथी निर्मु-क्त थयेला मनुष्यनुं शरीर शोजे तेम शत्रुउना रोधथी मुक्त थयेली मिथिला नगरी अत्यंत शोजवा लागी.

पछी ब्रह्मदेवलोकथी लोकांतिक देवताउए तुरत त्यां आवीने जक्तिथी श्री मल्लिनाथ जिनेश्वरने दीक्षानो काल निवेदन कस्यो. श्री मल्लिनाथे पण

अवधिज्ञानथी दीक्षाकालने एक वर्षनुं अंतर जाणी मानसिक सांवत्सरीक दान आपवा मांड्युं. सौधर्मेंद्रे पण ज्ञानोपयोगी श्री अरिहंत प्रभुने दाननो अवसर जाणीने यक्षेश्वर (कुबेर)ने आज्ञा करी एटले तेणे पोताना अनुचर जृंभक देवताउने भूमिमां रहेला असंख्य निधि श्री मल्लिनाथना घरे लाववानुं कह्युं. देवताउए ते प्रमाणे असंख्य निधि श्री मल्लिनाथना घरे आण्या. त्यार पछी श्री मल्लिनाथ प्रभुए, जेम अशाढ मासमां आकाश जलवृष्टि करे तेम सवारने विषे सांवत्सरीक दान आपवा मांड्युं. वली तेमणे गाम, पुर, बजार अने नगरने विषे तेमज मिथिला नगरीमां पडह वगडाव्यो के, "भुख्या, दरिद्री, देवाथी पीडायला तथा रोगी एवा सर्वे पुरुषोए जेने जेवी इच्छा होय तेवी वस्तु अमारी पासेथी मागी लेवी."

आ प्रमाणे श्री मल्लिनाथे दररोज एक पोरसीमां एक करोड अने आठ लाखथी कंइक वधुं एटलुं द्रव्य आपवा मांड्युं. तेमज दीन, दुखी, भिक्षुक अने याचकोने ठेकाणे ठेकणे इच्छित भोजन करावववा मांड्युं. आ वखते श्रीमल्लिनाथ प्रभु दान कर्मने विषे कल्पवृक्षथी पण अधिक थया. कारण के, जगत्‌मां कल्पवृक्ष तो याचकजनोने इच्छा प्रमाणे आपे छे अने श्री मल्लिनाथ प्रभु तो याचकजनोनी इच्छाथी पण अधिक अधिक आपता हता. आवी रीते दानकर्मथी एक वर्ष पूर्ण थयुं अने जीवलोक संतोष पाम्यो एटले श्री मल्लिनाथे प्रणामपूर्वक पोताना मातापिताने कह्युं. "हे मातपिता ! हुं तमारी आज्ञाथी संसार समुद्रने तारनारी दीक्षा गृहण करीश." पुत्रीनां आवां वचन सांभली प्रेमाश्रुथी व्याप्त थयेलां नेत्रवाला मातापिताए प्रीतिथी तेमने युक्तिवालुं वचन कह्युं. "देदीप्यमान गुणमणिनी खाणरुप हे पुत्री ! तमे जेवी रीते दानकर्मथी विश्वनो उद्धार कर्यो छे तेवी रीते तुरत चारित्रवडे पोताना आत्मानो उद्धार करो." पछी कुंभराजाए पोताना चतुर सेवकोने आज्ञा करी के, "अहो अनुचरो ! श्री मल्लिकुमारीने दीक्षानो अभिषेक करवा माटे माटीना, रुपाना, सोनाना अने रत्नोना अनेक कुंभो तैयार करी तेमां झट सुगंधिवालुं जल भरो." राजाना आदेश सेवकोए हर्षपूर्वक तुरत ते सर्व तैयार कर्युं एटलामां इंद्रनुं आसन कंपायमान थयुं. तेणे अवधिज्ञानथी जोयुं तो श्री मल्लिनाथना चारित्रनो अवसर जाण्यो. पछी सर्वे देवेंद्रो, पोतपोताना वैमानमां बेसीने को-

टिदेवताउनी साथे त्यां आव्या. जेटलामां कुंज्नराजादि अनेक मनुष्यो श्री मल्लिनाथना दीक्षाज्निषेकनी सुवर्णकुंज्नादि सर्व सामग्री तैयार करे ढे तेटलामां देवेंड्रोए, पोतानी शक्तिथी ते सर्व सामग्री तैयार करी. पढी कुंज्नराजाए श्री मल्लिनाथने बोलावीने एक म्होटा रत्नना मंमपमां सुशोज्नित सिंहासन उपर हर्षथी बेसाड्या. त्यारबाद कुंज्नराजानी साथे सर्वे इंड्रोए ते कुंज्नोना जलवमे श्री मल्लिनाथ उपर ज्नक्तिपूर्वक अज्निषेक कस्यो. आ वखते केटलाक प्रज्नुनी आगल नाटक करता हता, केटलाक मधुर स्वरथी गायन करता हता, केटलाक आकाशने गजाववा पूर्वक श्रेष्ठ वाजींत्रो वगामता हता अने केटलाक तो बहु ज्नक्तिथी पुष्पवृष्टि करता हता. पढी श्री मल्लिनाथने उत्तराज्निमुखे बेसारीने दिव्य वस्त्रालंकारो पहेराव्यां. आ प्रमाणे अज्निषेकनुं कृत्य पूर्ण थया पढी कुंज्नराजाए पोताना निपुण कारीगरोने आज्ञा करी के, “हे शिल्पियो! तमे श्री मल्लिनाथने बेसवा योग्य एवी पालखी तैयार करो.” पढी शिल्पज्ञानमां चतुर एवा ते कारीगरोए मणिमय स्तंज्नोवाली, अनेक प्रकारना रत्नजमित्र ज्नुतलवाली, पेमलीयोवाली, आनंदयुक्त नृत्य करती एवी सुवर्णनी पुतलीयोवाली, मंमपना मध्य ज्नागमां सुशोज्नित तोरणोथी मनोहर बनावेली, धजाउ तथा कलशोथी वैमानोनी शोज्नाने तिरस्कार करनारी, सूर्य समान कांतिवाला मणिजमीत्र पगथिआवाली, अतिपवित्र अने मनोहर एवी पालखी तैयार करी. इंड्रनी आज्ञाथी देवताउए पण एक बीजी पालखी तैयार करी. देवताउए तैयार करेली ते पालखी बीजी पालखीयोनी अंदर अतिमनोहरपणाने लीधे तेल पूरवाथी दीवानी कलानी पेठे बहु शोज्नती हती.

पढी लक्ष्मीथी सुशोज्नित एवा श्री मल्लिनाथ प्रज्नु, पितानी आज्ञाथी तुरत प्रदक्षिणा करीने पालखीने विषे आसन उपर पूर्वाज्निमुखे बेठा. ते वखते इंड्रोए ढत्र चामरादिक सर्व वैज्नव प्रगट कस्यो. पढी कुंज्नराजाए महा समृद्धिवाला, दिव्य अलंकारोने धारण करनारा अने संतुष्ट मनवाला पोताना सेवकोने आज्ञा करी के, “हे सौम्य आकृतिवंत पुरुषो! पुण्यना अर्थी एवा तमे, पापने दूर करवामाटे आ पालखीने उपामो.” कुंज्नराजानी आवी आज्ञाथी हर्षित मुखवाला, उत्तम वेशने धारण करनारा अने प्रसन्न थयेला ते सर्वे सेवको, “हुं पेलो, हुं पेलो” एम उच्चार करवापूर्वक ते पालखीने उपामवा ला-

ग्या. आ अवसरे देव मनुष्योनां अखंडित वाजींत्रो वागवा लाग्या, रंभादि देवांगनाउ नृत्य करवा लागी, देवताउना बंदिजनो गायन करवा लाग्या अने सर्वे मनुष्यो अष्ट प्रकारना स्पष्ट मंगलिक शब्द करवा पूर्वक मंगलिक गीतो गावा लाग्या.

पछी हाथी उपर बेठेला कुंभराजाए, स्वजनोए अने परिवारसहित पालखीमां बेठेली प्रभावती माताए आनंदपूर्वक जोयेली ते प्रभुनी पालखी जेटलामां पोताना महेलथी विस्तारवंत एवा राजमार्गने विषे आवी पहोची तेटलामां देदीप्यमान आभूषणोवाला तथा अति आदरवंत एवा सुरेंडोए अने असुरेंडोए हर्षथी ते पालखीने उपाडवा मांडी. वली ते वखते पुष्पनो वर्षाद करता अने नाना प्रकारनी नाटय क्रीया करता एवा ते देवताउए पोतानां तेजथी मिथिलापुरी अने स्वर्गपुरी एकज करी दीधी. अति संतुष्ट थयेला लोकोए पण पोताना प्रफुल्लित एवां नेत्रोथी जेनुं लावण्य पान करातुं हतुं एवा श्री मल्लिनाथ प्रभु मिथिला नगरीने त्यजी अनुक्रमे सहस्राम्रवनमां अशोकवृक्षनी नीचे आव्या. त्यां शीलरुप आभूषणोथी सुशोभित एवा तेमणे पालखीमांथी नीचे उतरी प्रयत्न वडे सर्व बाह्य आभूषणो त्याग कर्यां. पछी ज्यारे प्रभुए लोच कर्यो त्यारे तेमना सर्व केशने इंडे पोताना वस्त्रमां लइ क्षीरसमुद्रमां नाख्या. इंडनी आज्ञाथी देव अने मनुष्योए करेलो वाजींत्रोनो शब्द शांत थयो एटले प्रभुए सिद्धोने नमस्कार करीने सर्व सावद्ययोगना त्यागपूर्वक जैनी दीक्षा लीधी. आ वखते जाणे आगमने विषे श्रीमान् केवलज्ञानरुप भूपतिनो प्रतिहारज होयनी? एम श्री मल्लिनाथ प्रभुने चोथुं ज्ञान प्रगट थयुं. श्री मल्लिनाथे ज्यारे पोश सुदी अगीयारसने दिवसे अश्विनी नक्षत्रमां चंडमानो योग प्राप्त थये छते अठम तप करीने दीक्षा लीधी त्यारे व्रतने धारण करनारी त्रणसो स्त्रीयोनी अंतःपर्षदा अने व्रत अंगीकार करनारा त्रणसो पुरुषोनी बाह्य पर्षदा थइ. वली वलिमित्र, सुमित्र, नंदमित्र, नंदक, अमरपति, भानुमित्र, अमरसेनिक अने महासेन ए आठ प्रसिद्ध राजपुत्रोए तेमनी साथे तेज वखते चारित्र अंगीकार करयुं. श्री मल्लिनाथ भगवाने, जे दिवसे चारित्र अंगीकार कर्युं तेज दिवसे सांजे तेमने विशुद्ध एवा ध्यानना योगथी निर्मल एवुं केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. आ अवसरे चार निकायना देवताउए, बहु भक्तिथी तुरत रुपाना सोनाना अने मणिना किल्लाउ बनावीने

समवसरणनी रचना करी.

पछी इंद्रनी विनंती उपरथी श्री मल्लिनाथ प्रभु अनेक देवताओथी परवस्था छता पूर्वद्वारे थइने समवसरणमां आव्या. त्यां परिवार सहित इंद्रोए सेवन करेला प्रभु, नाना प्रकारनां रत्नोथी निर्माण करेलां सिंहासन उपर बिराज्या. उद्यानपालके तुरत मिथिला नगरीमां आवीने प्रभुना केवलज्ञाननी वधामणि कुंभराजाने आपी. कुंभराजा पण तेने प्रीतिदानमां बहु लक्ष सुवर्ण आपीने हर्षपूर्वक परिवार सहित समवसरणमां आव्या. त्यां विधिथी मल्लिनाथ प्रभुने भक्तिवमे नमस्कार करीने ते श्री जिनेश्वरना सन्मुख योग्य आसने बेठा. संसारथी उद्वेग पामेला प्रतिबुद्धि विगेरे छ राजाउ पण चारित्र लेवानी इच्छाथी त्यां आव्या अने व्याख्याना स्थानप्रत्ये दाखल थइने विधिथी प्रभुने नमस्कार करी हर्ष पामता छता श्री कुंभराजा पासे बेठा. पछी सर्व पर्षदा भराइ एटले त्रण जगत्ना प्रभु एवा श्री मल्लिनाथे, परोपकारने माटेज पुण्यरुप अमृतने वर्षावनारी देशनानो आरंभ कस्यो. जेम मेघवृष्टिथी भूमिमां रहेला अंकुरा वृद्धि पामे तेम श्री मल्लिनाथ प्रभुनी ते देशनाथी भव्यपुरुषोने संसारनो वैराग्य वृद्धि पाम्यो. शुद्ध श्रद्धावाला कुंभराजाए पण ते धर्मदेशना सांभलीने प्रभावती सहित श्रावकधर्म आदस्यो. आ वखते प्रतिबुद्धि विगेरे छ राजाउए हाथ जोमीने ज्ञानि पुरुषोने पण स्तवन करवा योग्य एवा श्री जिनेश्वरनी आदर सहित विनंती करी के, “ हे प्रभो ! संसार समुद्रने तारवामां वहाण समान दीक्षा आपीने अमने तुरत तारो. ” तेउनी आवी विनंतीथी “ हे भूपालो ! तमने जेम सुख थाय तेम करो. ” एवी प्रभुए आज्ञा करी एटले ते छए राजाउए पोताना अंगना आभूषणो त्यजी दइने तुरत लोच कस्यो. पछी साधुनो वेष धारण करी अने श्री मल्लिनाथ प्रभुनां मुखथी महाव्रत उचरी ते छए साधुउए बीजा साधु पासेथी विविध प्रकारनी शिक्षा उत्तमरीते जाणी. ते वखते मोक्षना अर्थी एवा बीजा मनुष्योए पण लघुकर्मीपणाने लीधे वैराग्यवंत थइ श्री जिनेश्वर पासे महाव्रत अंगीकार कर्युं. पछी बुद्धिवंत पुरुषोनी रेखाने प्राप्त थयेला, सर्व लब्धिने पामेला, निर्मल बुद्धिवाला अठाविश श्रेष्ठ साधुउ, श्री जिनेंद्रनां मुखथी केवल त्रिपदीने पामीने ते महाशयोए एक मुहूर्त्तनी अंदर द्वादशांगीनी

रचना करी. ज्ञानवंत एवा प्रभुए द्वादशांगीने निर्दूषण जाणी तेउने उत्सव पूर्वक गणधरोनां पदे स्थाप्या. श्री जिनेश्वर त्यां चार प्रकारना संघनी रचना करीने पछी परिवार सहित पृथ्वी उपर विहार करवा लाग्या.

पछी ते महाराजर्षियो, पोतानी बुद्धिना योगथी संसारनो अंत करनारी द्वादशांगीनो अभ्यास करवा लाग्या. पवित्र चारित्रनुं पालन करनारा, आश्रवोने क्षय करनारा तथा सर्व दुःखनो उच्छेद करनारा ते महामुनियो, तीव्र तपथी सर्व प्रकारनां कर्मनो क्षय करीने अनुक्रमे केवलज्ञान पामीने सिद्धिपुरप्रत्ये गया. श्री मल्लिनाथ प्रभुने गृहावासमां एक सो वर्ष तथा केवलीपणामां पंचावन हजार वर्ष निर्गमन थया. त्यारपछी पोतानो निर्वाण समय नजीक आव्यो जाणी प्रभु, उत्तम तीर्थरुप संमेत शिखर उपर गया. त्यां तेमणे पांचसो साधु अने पांचसो साध्वीयोनी साथे एक मासनुं अनशन लीधुं. चैत्रमासनी शुक्ल चोथने दिवसे भरणी नक्षत्रनो चंद्रमा छते स्थिरशरीरवाला जगत्गुरुए कार्योत्सर्ग कर्यो. पछी ते शैलेशी करवापूर्वक सर्व कर्मने संहारीने अनंत दर्शन, अनंत ज्ञान, अनंत आनंद अने अनंत वीर्यवाला मोक्ष प्रत्ये गया. शुद्ध चारित्रथी पवित्र एवा श्री मल्लिनाथना सर्वमलीने साधुउनी चालीश हजारनी संख्या हती. ए जिनेश्वरनी संयमनुं आराधन करवामां उद्यमवंत तथा क्रीयामां तत्पर एवी बंधुमती विगेरे पंचावन हजार साध्वीयो हती, जिनेश्वरनी आज्ञानुं आराधन करनार एक लाख ने चोराशी हजार श्रावको तथा त्रण लाख पांसठ हजार श्राविकाउ हती. वली छसो चोदपूर्वधारीयो, बे हजार अवधिज्ञानीयो, त्रण हजार ने छसो केवलज्ञानीयो, त्रण हजार ने पांचसो वैक्रीयलब्धिवाला, आठसो मनःपर्यवज्ञानवाला, एक हजार ने चारसो वादलब्धिवाला अने बे हजार अनुत्तरलब्धिवाला आ प्रमाणे ए श्री मल्लिनाथप्रभुनो परिवार हतो. श्री मल्लिनाथ प्रभुनी बे प्रकारनी अंतकृत भूमि हती के, जेमां एक युगांतकृत् भूमि अने बीजी पर्यायांकृत् भूमि हती. देहप्रभाना समूहे करीने इंद्रनील मणिनी कांतिने जीतनार अने कामरुप दावानलने समन करवामां मेघ समान एवा उगणीशमा तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ प्रभु, तमारी मोक्ष संपत्तिने अर्थे थाउ. जेम श्री मल्लिनाथ प्रभुनां मुखथी निकलेलां वचनरुप अमृतनुं पान करीने अत्यंत प्रसन्न थयला, उज्वल

गुणवाला, गणधरपदने पामेला, वैराग्यवंत थयेला अने श्रुतधर कहेवायेल प्रतिबुद्धि विगेरे ब राजाउ श्रेष्ठ मुक्तिमार्गने पाम्या तेम संसारनो पार पाम वानी इच्छा करनारा श्रेष्ठ बुद्धिवंत पुरुषोए आ दिक्षारुप मार्गने सेववो.

॥ इति श्री मल्लिनाथ चरित्रम् ॥

सहिं वाससयाइं, जेणं बठेण नाविउ अप्पा ॥
बहुविहलद्धिसमिद्धं, विह्नुं वंदामि अणगारं ॥ १ए ॥

अर्थ–जेमणे ब हजार वर्षपर्यंत बठ्ना तपथी पोताना आत्माने तपोम कर्यो बे ते बहु प्रकारनी समृद्धिथी प्रधानरुप एवा यतीश्वर श्री विष्णुकुमारने हुं वंदना करुं बुं. ॥ १ए ॥

जो तिह्नस्सपन्नावणमकासि वेउव्विदेहलद्धीए ॥
तं विह्नुं गयतिह्नं, नमामि पत्तं सिवपुरम्मि ॥ २० ॥

अर्थ–जेमणे वैक्रियदेहलब्धिथी तीर्थ प्रन्नावना करी बे ते निर्लोन्नि अने मोक्षपुरने पामेला श्री विष्णुकुमारने हुं नमस्कार करुं बुं. ॥ २० ॥

आ विष्णुकुमारनो संबंध महापद्म चक्रवर्त्तीनां चरित्रमां कह्यो बे, माटे त्यांथी जाणी लेवो.

एगूणे पंचसए, खंदगसीसाण कुंन्नकारकम्मे ॥
पालयकयउवसग्गे, पत्ते पणमामि अपवग्गे ॥ २१ ॥

अर्थ–कुंन्नकार नगरने विषे पालक पुरोहिते, जेमने प्राणांत उपसर्ग कर्यो हतो, ते श्री स्कंदकाचार्यना मोक्ष पामेला चारसो ने नवाणुं शिष्योने हुं प्रणाम करुं बुं. ॥ २१ ॥

॥ श्री स्कंदकसूरिनी कथा ॥

जेमां मणिमय अनेक प्रासादो झलहली रह्या हता एवी श्रावस्ती नामे नगरी बे. त्यां प्रख्यात यशवालो जितशत्रु नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने शीलव्रत धारण करनारी यथार्थ नामवाली धारिणी नामे स्त्री हती. तेउने महा पराक्रमवंत स्कंदक नामनो चतुर कुमार हतो, ते युवराजपद न्नो-

गवतो छतो जैनधर्मने विषे बहु प्रीतिवालो थयो हतो. स्कंदकने चोसठ गुणवाली अने रूपसौभाग्यथी सुशोभित पुरंदरयशा नामे नानी व्हेन हती. तेने कुंभकार नगरना राजा दंडकाग्नि वेरे परणावी हती. त्यां ते सौभाग्यनी भाग्यनी भूमि छती पट्टराणी पदने पामी हती. दंडकाग्नि राजाने मिथ्यादृष्टि, जैनधर्मनो द्वेषी अने विद्याना अभिमानने धारण करनारो पालक नामे पुरोहित हतो.

एक दिवस दंडकाग्नि भूपाले कोइ राजकार्यने माटे ते पुरोहितने श्रावस्ती नगरी प्रत्ये मोकल्यो. त्यां ते राजसभामां गयो. बीजे दिवस ते मलीन बुद्धिवाला पुरोहिते स्कंदकराजकुमार सांभलतां छतां राजानी आगल जिनधर्मनी निंदा करी एटले स्कंदककुमारे कुतीर्थि मनुष्यनां वचनरूप वहाणने तोडी पाडवामां महा वायुसमान युक्तिवचनोवडे ते पुरोहितना पक्षने छेदी नाख्यो. पछी अंदरथी क्रोधातुर थयेलो, परंतु उत्तर आपवाने असमर्थ होवाने लीधे, उपरथी हास्य करतो ते पुरोहित कुमारनां वचनने वखाणवा लाग्यो. पछी ते पालक पुरोहित राज्यकार्य करीने पोताने नगरे गयो एटले पाछलथी तत्त्वने जाणनार स्कंदककुमारे विचार कर्यो के, "हा ! दक्षिणावर्त्त शंखनी पेठे इष्टफल आपनारो आ दुर्लभ मनुष्यजन्म म्हाराथी फक्त प्रमादने लीधेज हारी जवाय छे. वली आरंभमां फक्त अल्प सुख आपनारा परंतु पाछलथी महादुःखदायी आ भोगो किंपाक फलनी पेठे साररहितज देखाय छे. निश्चे आ संसार असार छे, माटे तेने त्याग करीने हुं श्रीसुव्रतस्वामी पासे अनंत सुख आपनारां चारित्रने गृहण करीश." स्कंदककुमार आ प्रमाणे पवित्र मनोरथ धारतो हतो तेवामां श्री मुनिसुव्रतस्वामी पृथ्वी उपर विहार करता करता सवारे श्रावस्ती नगरी प्रत्ये आव्या. त्यां महा हर्षवंत देवताओए क्रीडा उद्यानमां मुक्तिगामी प्रभुना माटे समवसरणनी रचना करी.आ वखते वनपालके तुरत जितशत्रु राजाने प्रभुना आगमननी वधामणी आपी. भक्तिमान् एवो ते भुपति पण वधामणी सांभलीने अत्यंत हर्ष पामतो छतो पुत्र परिवारने साथे लइ क्रीडोद्यानमां प्रभुने वंदना करवा माटे गयो. स्कंदककुमार सहित जितशत्रु राजाए त्यां विधिथी प्रभुने वंदना करीने तेमनी मोक्ष सुख आपनारी देशना सांभली. प्रभुनी देशना सांभलीने उत्पन्न थयेला वैराग्यवालो स्कंदककुमार ते दिवसथी व्रत लेवा माटे वधारे स्पृहावंत थयो. पछी श्रीजि-

नेश्वर ज्ञगवानने नमस्कार करी पितानी साथे पोताना घेर जइ व्रत लेवाने उत्साहवंत थयेला स्कंदके मातापिताने पूछ्युं, ते उपरथी तेउए कह्युं के, "हे वत्स ! हवणां तुं युवावस्थावालो छे, माटे अमारां राज्यने ग्रहण कर अने व्रत लेवुं तो अमने योग्य छे" माता पिताए आम कह्या छतां पण संसारना ज्ञयथी अति उद्वेग पामेला, मोक्षना अर्थी अने चारित्रने विषे स्थिरवासवाला स्कंदककुमारे, पितानी आज्ञा मानी नहि. छेवट तेणे पितानी आज्ञा लइ पांचसो मित्रोनी साथे श्रीसुव्रतस्वामी पासे चारित्र लीधुं. सर्व सिद्धांतनो अज्ञ्यास करी अने जिनेश्वर प्रज्ञु पासेथी आचार्यपद पामी स्कंदकमुनिये केटलाक वर्ष सुधी प्रज्ञुनी साथेज विहार कर्यो.

कोइ वखते पूर्वना कर्मे प्रेरेला स्कंदक मुनि, पोतानी व्हेनना पति दंरुकाग्निने वंदन कराववा माटे कुंज्ञकार नगरप्रत्ये जवानी इछाथी प्रज्ञुनी आज्ञा मागवा लाग्या. ते वखते त्रिकालना जाण एवा प्रज्ञुए तेमने कह्युं. "हे सौम्य ! त्यां तमने प्राणांत उपसर्ग थवानो छे, माटे ते क्लेशकारी स्थानके जवानुं त्यजी द्यो." प्रज्ञुए आम कह्युं तो पण तेमणे फरीथी पूछ्युं. "हे विज्ञो ! अमे ते उपसर्ग प्राप्त थये छते आराधक रहीशुं के विराधक ?" प्रज्ञुए कह्युं. "तमे सौ आराधक छो; परंतु त्यां जवुं मूकी द्यो." जिनेश्वरे आवी रीते बहु कह्युं तोपण तेमणे पोतानो कदाग्रह छोम्यो नहि. पछी "जो आ अमे सौ आराधक छीए तो अमने विरतिनुं फल थयुं." एम कहीने तथा जिनेश्वरने वंदना करीने स्कंदकसूरि बीजा अनेक साधुउ सहित चाल्या. ज्यारे स्कंदकसूरि कुंज्ञकार नगरनी पासेना गाममां आव्या त्यारे ते कुंज्ञकार नगरमां पण सूरिना आववानी वात फेलाइ गइ. स्कंदकसूरिनुं आववुं पालक पुरोहिते सांज्ञल्युं; तेथी ते अग्निना गोलानी पेठे हृदयमां पूर्वनो तिरस्कार संज्ञारतो छतो विचारवा लाग्यो. "ते वखते पोताना स्थानबलने पामीने एणे मने बहु विगोव्यो छे, ते हुं ज्ञूली गयो नथी; जेथी तेने हुं ते पोतानां कृत्यनुं फल देखामीश." पछी जाणे कालेज आकर्षण कर्या होयनी ! एम सूरि ते नगरना उद्यानने विषे आव्या एटले "हवे हुं एनो कंइ नाशकारी अनर्थ करीश." एवो विचार करीने ते डुष्टात्मा पुरोहिते पोताना पुरुषो पासे, जे उद्यानने स्कंदकसूरिये पोताना निवासथी सुशोज्ञित कर्यो हतो ते उद्यानने विषे गुप्तरीते अनेक शस्त्रो दटा-

त्यां. सवारे सूरिना आगमनने सांभली नगरवासी सर्वे जनो बहु भक्तिथी तेमने वंदन करवा माटे उद्यानमां जवा लाग्या. उद्यान पालकथी सूरिनुं आगमन जाणी दंडकाग्नि राजा पण स्त्री सहित गुरुने वंदन करवा माटे उद्यानमां गयो. त्यां सूरिये तेमने मधुर वचनथी तेवी रीते जिनोक्त धर्म संभलाव्यो के, जेथी तेउ सर्वे बहु संतोष पाम्या. देशना पूर्ण थया पछी राजा पोताना मंदिर प्रत्ये जइने हर्ष पामतो छतो स्कंदक गुरुनी वारंवार प्रशंसा करवा लाग्यो. अवसर मलवाथी दुष्ट बुद्धिनो पात्र अने दुरात्मा पालक पुरोहित रात्रीने वखते भूपतिने एकांतमां लइ जइने कहेवा लाग्यो. "हे राजन्! आ कुसाधुउ छे. हुं तेउनुं वारंवार शुं वर्णन करुं? महाराज! आप तेउना दुष्ट हार्दने नथी जाणता. सांभलो. घोर एवा कष्टकारी व्रतने पालवामां असमर्थ एवो ए सूरि कोइ राजा छे, ते तमारां राज्यने ग्रहण करवानी इच्छाथी अहिं आवेलो छे. वली तेनी पासे रहेला शिष्यो रात्रीये एकांतमां छत्रिश प्रकारनां आयुधने धारण करनारा अने हजारो पुरुषोनी साथे युद्ध करनारा महासुभट छे. ज्यारे त्यारे अवकाश मलशे ते वखते गुणोथी विश्वास पामेला तमने मारीने तेउ तमारां राज्यने लइ लेवानो निश्चय करी रह्या छे." राजाए पुरोहितने कह्युं. "ए केवल धर्मनो म्होटो आडंबर देखाय छे; परंतु अस्त्रनो परिग्रह तो लागतो नथी." पुरोहिते कह्युं. "स्वामिन्! जो आपने म्हारां वचननो विश्वास न होय तो त्यां आपनांज माणसोने मोकलीने तुरत तपास करावो." राजाए मनमां कंइक आश्चर्य पामीने पुरोहितनां वचननी प्रतीतिने माटे पोताना केटलाक सेवकोने एकांतमां शिखामण आपीने तुरत त्यां मोकल्या. साधुउ अर्द्धपोरसी करीने निद्रा लेता हता एटलामां ते राजपुरुषो आम तेम शस्त्रनी खोल करवा लाग्या. पछी पृथ्वीने खोदीने नाना प्रकारनां शस्त्रोने लइ तेउए पुरोहितनी साथे राजसभामां आवी राजानी आगल सर्व शस्त्रो मूक्यां. भूपति शस्त्रोने जोइ पुरोहितनां वचनने विषे विश्वास पाम्यो अने क्षणमात्रमां अति क्रोधथी राता नेत्रवालो बनी गयो. "हं हं! ए क्रूर पाखंडियो मने मारशे अने म्हारां राज्यने लइ लेशे? अहो! आ एमनी कांइ म्होटी वात देखाय छे!" दावानल अग्निनी पेठे बलता दंडकाग्निये आम बोलता छता विचार कर्या विनाज दुरात्मा पुरोहितने आदेश कर्यो के, "आ दु-

रात्मा मुनियो हवणां में तनेज सोंप्या छे, माटे ए डुष्टोने तुं त्हारी मरजीमुजब शिक्षा कर." पछी "पूर्वे म्हारां हृदयने फेमी नाखनारा मुनियोनो हुं नाश करी नाखुं." एम विचार करतो ते डुष्ट मनवालो अने परम अधर्मी पालक पुरोहित, त्रण जगत्‌ने पूज्य एवा निरपराधी सर्वे मुनियोने वध स्थानके लाव्यो. वली विपरीत आत्मावालो ते त्रण जगत्‌ना सुहृद् एवा मुनियोने शत्रु मानतो छतो जेम जेम तेज पीमा पामे तेम तेम उपायो करवा लाग्यो.

अधम एवा पालक पुरोहिते स्कंदकाचार्यने कह्युं. "ते अवसरे जे तें पोतानी सजामां म्हारो तिरस्कार कस्यो हतो तो आजे हुं त्हारो नाश करीश." पालके आवां कठोर वचन कह्यां तो पण सूरितो क्षमा धारण करी बेसी रह्या. पछी पापी पुरुषोमां अग्रेसर एवा पालके अनुक्रमे ते सर्वे मुनियोने घोर एवा तिलयंत्र (घाणी)मां नाख्या. अरे ! आवी घोर निर्दयताने धिक्कार थाउ धिक्कार थाउ !! पछी "जिनेश्वरनुं वचन मिथ्या न होय." एम विचार करता एवा स्कंदकाचार्ये पोताना सर्वे शिष्योने आ प्रमाणे क्षमानो प्रतिबोध कस्यो के, "अहो ! धीर तपस्वीयो ! तमे सौ श्रेष्ठ एवा क्षत्रिय कुलमां उत्पन्न थया छो, माटे आज तमे जावशत्रुनी साथे युद्ध करो. आ डुष्ट पालके करेली बहु घोर वेदनाने खमावो. कारण के, नरक जवने विषे आथी अनंतगणी वेदनाउ सहन करी छे. अहो ! तमे एक मुहूर्त मात्रना कष्टथी अनंत सुख संपत्तिमय सर्वोत्कृष्ट मुक्तिने मेलवो." गुरुनी आवी शिक्षा सांजलीने अधिक मनोबलवाला सर्वे मुनियो यंत्रमां पीलावाथी थयेली पीमाने सहन करवा समर्थ थया. अनुक्रमे मुक्तिरूप मंदिरनी निसरणीरूप क्षपकश्रेणी प्रत्ये आरुढ थयेला ते सर्वे मुनियो अंतकर केवली थया. आम सर्वे मुनींडो जावथी सिद्धिपद पाम्ये छते फक्त एक क्षुल्लक शिष्य अने स्कंदकसूरि पोते ए बे जण बाकी रह्या. पछी पुरोहिते ते क्षुल्लक शिष्यने यंत्रमां पीलवा माटे लीधा एटले क्षुल्लकना मोहथी खेंचायेला सूरिये पालक पुरोहितने कह्युं. "तुं पहेलो मने पील. कारण के, हुं तेनी पीमाने म्हारी दृष्टीथी जोवा समर्थ नथी." मुनिनां आवां वचन सांजलीने पछी "एनी आगल आ बालकनो घात करवाथी तेने बहु डुःख थशे." एम धारी पालक पुरोहित ते क्षुल्लकने प्रथमज घाणीमां नाखीने पील्यो एटले उत्पन्न थयेली आत्मधैर्यने लीधे जेणे पोताना सर्व कर्म-

नो क्षय कर्यो हतो एवो ते बालमुनि केवल ज्ञान पामीने तत्काल मोक्षपदने पाम्यो. अहो ! लोकमां जेमना अर्थो सिद्ध थया छे एवा पुरुषो पीडा पामीने खलरूप बनी जाय छे अने पीडा पामेला ते म्होटा सिद्ध अर्थवाला पुरुषो आश्चर्य उत्पन्न करे छे. " अहो ! आ दूरात्मा ते केवो ? के, जेणे एक बालमुनिने पण छोडी दीधो नहि. " आवा कोपथी ते महान् आचार्यने अशुभ परिणाम उपन्यो. पछी पीडा पामेला ते सूरीश्वरे बहु कोपथी देश, पुर अने नृपति सहित पालक पुरोहितने बाली नाखवानुं नियाणुं कर्युं. कुंभकार नगरमां आवुं दुष्टकर्म थवाथी सवारे जाणे जगत्‌ना स्वामी एवा सूर्ये ते नगरने न जोवानी इच्छाथी पोतानां नेत्रने बंध कर्या होयनी ? एम सर्वे दिशाउ रजथी बहुज मलीन थइ गइ अने मांसनो आहार करनारा पक्षियो आकाशमां उडवा लाग्या.

हवे आकाशमां उडती कोइ एक समलीये, पृथ्वी उपर पडेला अने रुधिरथी खरडायेला श्री स्कंदकसूरिना रजोहरणने मनुष्यना हस्तनी भ्रांतिथी आदरपूर्वक उपाड्यो. अनुक्रमे ते समली उडती उडती जेटलामां दंडकाग्नि राजानी स्त्री पुरंदरयशा के, जे स्कंदकसूरिनी व्हेन थती हती तेना मंदिर उपर गइ तेटलामां तेनां मुखथी ते रजोहरण पडी गयो. प्रथमथीज उद्वेग पामेला मनवाली ते पुरंदरयशा पोतानी आगलज पडेला वज्रसमान रजोहरणने तुरत हाथमां लइने बोली के, " अहो ! मेंज आपेला रत्नकंबलथी विंटालेलो आ म्हारा भाइनो रजोहरण अहिं क्यांथी आव्यो ? अरे ! ते लोहिथी खरडाएलो केम ? अने वली आकाशमांथी क्यांथी पड्यो ?" पछी पुरंदरयशाए सूरिनी शोध करावी तो तेणे दूतनां मुखथी तुरत सर्व वात जाणी एटले तो ते दुःखने लीधे पोतानी छातिने कूटती मूर्छा पामी गइ. मूर्छा निवृत्त थइ त्यारे पृथ्वी उपर आलोटती, रुदन करती अने वारंवार निशासा मूकती गद्गद् वचनवडे राजाने कहेवा लागी. " अरे ! तमे आवुं घोर पापकर्म शा माटे आचर्युं के, जे पवित्र एवा साधुउ पुरोहितने मारवा माटे सोंप्या. " राजाए रात्रीनुं सर्व वृत्तांत कह्युं एटले पुरंदरयशाए कह्युं के, " हा हा नरेंद्र ! जिनधर्मना द्वेषी एवा पुरोहिते तमने छेतर्या छे. निरंतर उत्तम साधुउने विषे द्वेष राखनारा ते पुरोहितेज आ सर्व कपट कर्युं छे एम जाणो. हे नृपति ! पिताए आ-

रात्मा मुनियो हवणां में तनेज सोंप्या ठे, माटे ए डुष्टोने तुं त्हारी मरजीमुजब शिक्षा कर." पठी "पूर्वे म्हारां हृदयने फेमी नाखनारा मुनियोनो हुं नाश करी नाखुं." एम विचार करतो ते डुष्ट मनवालो अने परम अधर्मी पालक पुरोहित, त्रण जगतूने पूज्य एवा निरपराधी सर्वे मुनियोने वध स्थानके लाव्यो. वली विपरीत आत्मावालो ते त्रण जगतूना सुहृद् एवा मुनियोने शत्रु मानतो ठतो जेम जेम तेउ पीमा पामे तेम तेम उपायो करवा लाग्यो.

अधम एवा पालक पुरोहिते स्कंदकाचार्यने कह्युं. "ते अवसरे जे तें पोतानी सन्नामां म्हारो तिरस्कार कस्यो हतो तो आजे हुं त्हारो नाश करीश." पालके आवां कठोर वचन कह्यां तो पण सूरितो क्षमा धारण करी वेसी रह्या. पठी पापी पुरुषोमां अग्रेसर एवा पालके अनुक्रमे ते सर्वे मुनियोने घोर एवा तिलयंत्र (घाणी)मां नाख्या. अरे ! आवी घोर निर्दयताने धिक्कार थाउ धिक्कार थाउ !! पठी "जिनेश्वरनुं वचन मिथ्या न होय." एम विचार करता एवा स्कंदकाचार्ये पोताना सर्वे शिष्योने आ प्रमाणे क्षमानो प्रतिबोध कस्यो के, "अहो ! धीर तपस्वीयो ! तमे सौ श्रेष्ठ एवा क्षत्रिय कुलमां उत्पन्न थया ठो, माटे आज तमे न्नावशत्रुनी साथे युद्ध करो. आ डुष्ट पालके करेली बहु घोर वेदनाने खमावो. कारण के, नरक न्नवने विषे आथी अनंतगणी वेदनाउ सहन करी ठे. अहो ! तमे एक मुहूर्त मात्रना कष्टथी अनंत सुख संपत्तिमय सर्वोत्कृष्ट मुक्तिने मेलवो." गुरुनी आवी शिक्षा सांन्नलीने अधिक मनोबलवाला सर्वे मुनियो यंत्रमां पीलावाथी थयेली पीमाने सहन करवा समर्थ थया. अनुक्रमे मुक्तिरूप मंदिरनी निसरणीरूप क्षपकश्रेणी प्रत्ये आरुढ थयेला ते सर्वे मुनियो अंतकर केवली थया. आम सर्वे मुनींडो न्नावथी सिद्धिपद पाम्ये ठते फक्त एक क्षुल्लक शिष्य अने स्कंदकसूरि पोते ए बे जण बाकी रह्या. पठी पुरोहिते ते क्षुल्लक शिष्यने यंत्रमां पीलवा माटे लीधा एटले क्षुल्लकना मोहथी खेंचायेला सूरिये पालक पुरोहितने कह्युं. "तुं पहेलो मने पील. कारण के, हुं तेनी पीमाने म्हारी दृष्टीथी जोवा समर्थ नथी." मुनिनां आवां वचन सांन्नलीने पठी "एनी आगल आ बालकनो घात करवाथी तेने बहु डुःख थशे." एम धारी पालक पुरोहित ते क्षुल्लकने प्रथमज घाणीमां नाखीने पील्यो एटले उत्पन्न थयेली आत्मधैर्यने लीधे जेणे पोताना सर्व कर्म-

नो क्षय कर्यो हतो एवो ते बालमुनि केवल ज्ञान पामीने तत्काल मोक्षपदने पाम्यो. अहो ! लोकमां जेमना अर्थो सिद्ध थया छे एवा पुरुषो पीडा पामीने खलरूप बनी जाय छे अने पीडा पामेला ते म्होटा सिद्ध अर्थवाला पुरुषो आश्चर्य उत्पन्न करे छे. " अहो ! आ दूरात्मा ते केवो ? के, जेणे एक बालमुनिने पण छोडी दीधो नहि. " आवा कोपथी ते महान् आचार्यने अशुभ परिणाम उपन्यो. पछी पीडा पामेला ते सूरीश्वरे बहु कोपथी देश, पुर अने भूपति सहित पालक पुरोहितने बाली नाखवानुं नियाणुं कर्युं. कुंभकार नगरमां आवुं दुष्टकर्म थवाथी सवारे जाणे जगत्ना स्वामी एवा सूर्ये ते नगरने न जोवानी इच्छाथी पोतानां नेत्रने बंध कर्या होयनी ? एम सर्वे दिशाउ रजथी बहुज मलीन थइ गइ अने मांसनो आहार करनारा पक्षियो आकाशमां उडवा लाग्या.

हवे आकाशमां उडती कोइ एक समलीये, पृथ्वी उपर पडेला अने रुधिरथी खरडायेला श्री स्कंदकसूरिना रजोहरणने मनुष्यना हस्तनी भ्रांतिथी आदरपूर्वक उपाड्यो. अनुक्रमे ते समली उडती उडती जेटलामां दंडकाग्नि राजानी स्त्री पुरंदरयशा के, जे स्कंदकसूरिनी ब्हेन थती हती तेना मंदिर उपर गइ तेटलामां तेनां मुखथी ते रजोहरण पडी गयो. प्रथमथीज उद्वेग पामेला मनवाली ते पुरंदरयशा पोतानी आगलज पडेला वज्रसमान रजोहरणने तुरत हाथमां लइने बोली के, " अहो ! मेंज आपेला रत्नकंबलथी विंटालेलो आ म्हारा भाइनो रजोहरण अहिं क्यांथी आव्यो ? अरे ! ते लोहिथी खरडाएलो केम ? अने वली आकाशमांथी क्यांथी पड्यो ?" पछी पुरंदरयशाए सूरिनी शोध करावी तो तेणे दूतनां मुखथी तुरत सर्व वात जाणी एटले तो ते दुःखने लीधे पोतानी छातिने कूटती मूर्छा पामी गइ. मूर्छा निवृत्त थइ त्यारे पृथ्वी उपर आलोटती, रुदन करती अने वारंवार निशासा मूकती गद्गद् वचनवडे राजाने कहेवा लागी. " अरे ! तमे आवुं घोर पापकर्म शा माटे आचर्युं के, जे पवित्र एवा साधुउ पुरोहितने मारवा माटे सोंप्या. " राजाए रात्रीनुं सर्व वृत्तांत कह्युं एटले पुरंदरयशाए कह्युं के, " हा हा नरेंद्र ! जिनधर्मना द्वेषी एवा पुरोहिते तमने छेतर्या छे. निरंतर उत्तम साधुउने विषे द्वेष राखनारा ते पुरोहितेज आ सर्व कपट कर्युं छे एम जाणो. हे भूपति ! पिताए आ-

पेलुं पोतानुं राज्य पण त्यजी दइ जेणे शीघ्र चारित्र अंगीकार कर्युं छे, ते तमारां राज्यने शा माटे लेशे? धिक्कार छे धिक्कार छे तमारा शून्यचित्तपणाने!! अने धिक्कार छे धिक्कार छे तमारा दुर्बल एवा कानने!!! जे तमे क्रूर आदेशथी ए पुरोहितनी पासे साधुउने मराव्या. अरे! जेणे अग्निहोत्रनी पेठे दयारुपी गुणोने अग्निमां बाली नाख्या छे ते पापी पुरोहितनुं नाम पण केम लेवाय? हे नृप! वधारे शुं कहुं जे थवानुं हतुं ते थयुं; परंतु निश्चे देश सहित तमारो थोमा वखतमां नाश थशे. अरे! पोताना बंधु स्कंदकनो व्यर्थ वध सांजलीने पोताना मंदिरमां जीवती रहेली पुरंदरयशाने (मने) धिक्कार छे धिक्कार छे!!" आ प्रमाणे शोक करती एवी ते राणीने श्री अरिहंत प्रजुनी मान्यकारी एवी शाशनदेवीये त्यांथी उपामीने तुरत श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेश्वर पासे मूकी. त्यां ते विरक्त चित्तवाली राणीये अरिहंत प्रजु पासे व्रत अंगीकार कर्युं. योग्यज छे, सत्पुरुषोने केवल संसारना त्यागने माटेज वैराग्य उत्पन्न थाय छे.

हवे स्कंदक मुनि, पोते करेला नियाणाथी अग्निकुमार देवताउने विषे संपूर्ण पर्याप्तिवालो एक मूहुर्त्तने अंतरे देवता थयो. दिव्य पलंगथी उठेला ते देवताए अवधिज्ञानथी पोतानो पूर्वजव जोयो, तेथी ते बहु क्रोधातुर थयो. पछी क्रोधरुप अग्निथी प्रलयकालना अग्निनी पेठे अति ज्वाजल्यमान एवा ते देवताए तुरत कुंजकार नगरप्रत्ये आवीने मेघनी पेठे खेरना अंगारानी वृष्टि करी, जेथी देश तथा नगर सहित दंमकाग्नि राजा जस्मरुप थयो. अहो! अधर्मी पुरुषोना कुसंगथी म्होटा पुरुषोनो पण नाश थाय छे. वराक एवो पालक पुरोहित अग्निवमे जस्मीजूत थइ नरके गयो. आहा! पाप वृत्तिवाला जीवो पोताना अने परना मृत्युने अर्थे थाय छे. अहो! जेम स्कंदकसूरि आपत्तिने विषे पण पोताना शिष्यो सहित क्षमाधारी थया, तेम उत्कृष्ट मोक्ष सुखनी स्पृहा करनारा बीजा श्रेष्ठ साधुउए पण तेवाज (क्षमाधारी) थवुं.

॥ इति स्कंदकसूरिनी कथा ॥

दठुण अन्नतित्थिअ-पराज्ञवं ज्ञवज्ञयाउ उव्विग्गो ॥
नेगमअठसहस्से-ण पमिवुमो कित्तिउसिठी ॥ ११ ॥
पव्वईउ मुणिसुव्वय-सामिसगासम्मि बारसंगविऊ ॥
बारससमपरिआउं, सोहम्मे सुरवई जाउ ॥ १३ ॥

अर्थ-अन्यतीर्थियोथी थयेला पोताना पराज्ञवने जोइ संसारना ज्ञयथी उद्वेग पामेलो, एक हजारने आठ वणिक् पुत्रो सहित श्रीमुनिसुव्रत स्वामी पासे दीक्षा लेनारो, द्वादशांगीनो अज्यास करनारो अने बारवर्ष पर्यंत दीक्षा पर्यायवालो कार्तिक शेठ, सौधर्म देवलोकने विषे सुरपति (इंद्र) थयो. १२-१३

पृश्न-चौदपूर्वधारीनो जघन्यथी पण लांतक देवलोकने विषे अवतार थवो जोइए जेने माटे " लंतमिव चजदपुव्विस्स " एवुं प्रमाण आपेलुं ठे ठता आ कार्तिक शेठ, सौ धर्म देवलोकने विषे इंद्र केम थयो ?

उत्तर-चौद पूर्वीना अज्यासीउने पण प्रमादथी कांइक विसरी जवाथी परिकर्म, सूत्र, पूर्वानुयोग, पूर्वगत अने चूलिका ए पांच दृष्टिवादना ज्ञेदो तो होयज ठे. कारण पूर्वगतमां चौद पूर्व रहेला ठे माटे, एम बन्ने स्थाननां अध्ययनने विषे पण दृष्टिवादना पाठथी दश पूर्वना अध्ययनने विषे पण चौद पूर्वीपणानो संज्ञव थाय ठे. एमां कांइ विरोध नथी.

॥ कार्त्तिक शेठनी कथा ॥

पुण्ये करीने पवित्र तथा कल्याणकारी हस्तिना पुरी नामे नगरी ठे. त्यां श्रेष्ठ समकितनां पात्ररुप, एक हजार अने आठ श्रावक पुत्रोए सेवन करेलो, राजाने तथा वीजा वेपारीने वहु मान्य एवो कार्त्तिक शेठ नामे वेपारी वसतो हतो. वली ते नगरमां वीजो कोइ गंगदत्त नामे महा धनवान् शेठ रहेतो हतो. तेणे अवसर मलवाथी श्री मुनिसुव्रतस्वामी पासे दीक्षा लीधी हती.

हवे ते नगरमां गैरिक नामे कोइ तपस्वी आव्यो. ते निरंतर मासक्षपणने अंते पारणुं करतो हतो. नगरवासी लोको पण ज्ञक्तिपूर्वक पोताना घेरथी आवीने मासक्षमणना पारणाने अवसरे " हुं पेलो हुं पेलो " एवा आग्रहथी तेनुं निमंत्रण करता. पारणाने वखते नगरमां आवेला ते तापसने

जोइने नगरवासी लोको तेने आदरथी बहु वखाणता. लोको तेनी आ प्रमाणे ज्ञक्ति करता; परंतु कार्त्तिक शेठ तो ते मिथ्यादृष्टि अज्ञान तपवालो होवाथी तेना सामुं पण जोतो नहि. पछी ते तापस, पोताने नहि नमता एवा कार्त्तिक शेठने जाणीने बहु क्रोध पाम्यो. कह्युं छे के—जैनसाधुज्ञ विना बीजाने विषे क्षमा गुण क्यांथी होय ? एक दिवस ते तपस्वीये पोतानी तपोशक्तिथी त्यांना राजाने वश कर्यो; तेथी ते पोते पारणाने अवसरे तपस्वीने ज्ञोजनने वास्ते आमंत्रण करवा आव्यो. तपस्वये कह्युं "हे पृथ्वीनाथ ! हुं त्यारेज तमारा घरने विषे पारणुं करीश के, ज्यारे कार्त्तिक शेठ मने पीरसवा आवे." राजाए ते वात कबुल करी तत्काल कार्त्तिक शेठना घरने विषे आवीने तापसनो अज्ञिग्रह तेने कही बताव्यो. पछी तत्त्वने जाणनार अने विशेष बुद्धिवंत एवा शेठे ज्ञूपतिने कह्युं. "हे स्वामिन् ! अन्यतीर्थियोने विषे सत्क्रिया करवी योग्य नथी, तोपण हे राजन् ! हुं आपना नगरने विषे रहुं छुं, माटे आप जे आज्ञा करो ते म्हारे करवीज जोइए. कारण के, राजानो आदेश बलवान् होय छे." शेठे राजानुं वचन मान्य कर्युं एटले प्रसन्न थयेलो ज्ञूपति सेनासहित तुरत पोताने घेर आव्यो. पछी मध्यान्हने वखते तपस्वी, राजाना घेरे पारणुं करवा आव्यो त... समयनो जाण एवो शेठ पण त्यां आव्यो. राजाए मूकेला आसन उपर तापस बेठो एटले राजानी आज्ञाथी शेठे तेने मिष्ट ज्ञोजन पीरस्यां. ज्यारे आ शेठ पीरसतो हतो त्यारे ते तापसे "में तने नमाव्यो छे." एम उंची आंगली करीने तेनो तिरस्कार कर्यो एटले शेठ विचारवा लाग्यो. "धिक्कार छे धिक्कार छे म्हारा जन्मने तथा जीवितने के, जे में आ कुलिंगिनो सत्कार करीने म्हारा समकितने मलिन कर्युं. एणे जे म्हारो पराज्ञव कर्यो ते मने दुःखकारी नथी; परंतु ए जे अरिहंत धर्मनी निंदा करे छे ते मने बहु साले छे. अहो ! धन्य अने पुण्यवंत तो गंगदत्त शेठज छे के, जेणे गृहस्थधर्म त्यजीने अवसरे दीक्षा ग्रहण करी छे. जो में पण संसार ज्ञयने नाश करनारी दीक्षा आगलथी लीधी होत तो हुं आ अधम तापसथी पराज्ञव पामत नहि. हवे म्हारे आ परस्वाधिन अने अपवित्र एवा गृहवासथी सर्युं." आ प्रमाणे कार्त्तिक शेठ बहु वैराग्य पाम्यो. पछी तापस जमीने गयो एटले शेठे राजानी विनंती करी के, "हे स्वामिन् ! मने

आज्ञा आपो के, जेथी करीने हुं संयम लउं." बहु आग्रहथी राजानी आज्ञा लइ संसारथी निस्पृह थयेला ते कार्त्तिक शेठे जैनमंदिरोने विषे अठाइ महोत्सव कराव्या. चार प्रकारना संघने नाना प्रकारनां दानथी सर्व प्रकारे संतोष पमाडी दीनजनोने पण कृतार्थ कर्या. वली सातक्षेत्रने विषे पण पुष्कल द्रव्य वापर्युं. एवामां तेना भाग्ययोगथी त्यां श्री मुनिसुव्रतस्वामी समवसर्या एटले एक हजारने आठ वणिक्पुत्रोनी साथे तेणे प्रभु पासे चारित्र अंगीकार कर्युं. अनुक्रमे ते स्थविरसाधुउ पासे द्वादशांगीनो अभ्यास करतो गीतार्थ थइ अने बार वर्ष पर्यंत उत्तरगुण चारित्रने पाली सौधर्म देवलोकने विषे ऐश्वर्यनां पात्र रुप इंद्र थयो. हवे पेलो तापस पण द्वेषथी आभियोगिक कर्मने उपार्जन करी तेज सौधर्म देवलोकमां ऐरावत नामे आभियोगिक देव थयो. कोइ एक दिवसे इंद्रे "हे देव ! तुं म्हारे बेसवा योग्य अति श्वेत कांतिवालुं हाथीनुं रूप कर." एम ते ऐरावतने आज्ञा करी; परंतु ते देवताए अवधिज्ञानथी पोतानो तापसरुप पूर्वभव तथा इंद्रनो शेठरूप पूर्वभव जाण्यो; तेथी तेणे गर्वने लीधे हाथीनुं रूप न कर्युं. इंद्रे वारंवार कह्युं एटले ते देवताए इंद्रना पराक्रमने न जाणता हाथीनां बे रूप विकुर्व्यां. पछी इंद्र पण तुरत पोतानां बे मनोहर रूप करी तेना उपर बेठो. वली ते देवताए इंद्रने छेतरवा माटे पोतानां चार रूप कर्यां. तो इंद्र पण उत्तम एवां तेटलांज रूपो करीने तेना उपर बेठो. देवताए वारंवार पोतानां रूपो वधारवा मांड्या एटले इंद्र, क्रोधथी विचारवा लाग्यो के, "मृत्यु पामवाने इच्छतो आ हाथी शुं मने छेतरे छे ?" पछी अवधिज्ञानना उपयोगथी जोयुं तो इंद्रे हाथीने पूर्वभवनो तापस जाण्यो एटले तेणे पोताने छेतरवानी इच्छा करता ते हाथीने हणवा माटे हाथमां वज्र लीधुं. "तुं छल करे छे, माटे हवणां आ वज्रथी तने मारुं छुं." एम इंद्रे कह्युं एटले ते ऐरावत देवताए पोतानी कपट क्रीया त्यजी दीधी. पछी ते ऐरावत महा हाथी सरलगतिवडे निरंतर इंद्रना क्रीडाविहारना कौतुकने पूर्ण करवा लाग्यो. प्रथम गृहवासमां सम्यक्त्व पूर्वक देशचारित्रने सारी रीते पाली अने पछी हर्षपूर्वक चारित्रने पालतो ते कार्त्तिक शेठ इंद्र पदने पाम्यो.

॥ इतिश्री कार्त्तिक शेठनी कथा ॥

मग्गिल्लगिरिंमि सुको–सलेण वग्घीकउवसग्गेण ॥
पत्तं परमं ठाणं, कित्तिधरेणवि वरं नाणं ॥ ९४ ॥

अर्थ–मौग्गिल पर्वतने विषे सुकोशल नामना मुनि, वाघेणे करेला उपसर्गथी मोक्षपद पाम्या अने तेमना पिता कीर्त्तिधरे पण श्रेष्ठ एवा केवलज्ञानने उपार्जन कर्युं. ॥ ९४ ॥

॥ अथ कीर्त्तिधर तथा सुकोशल मुनिनी कथा ॥

आ भरतक्षेत्रने विषे लक्ष्मीना निवास स्थानरुप साकेतपुर नगरमां सर्व स्थानके विजय मेलवनारो विजय नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने मेरु पर्वतनी चूलिका समान स्थिर बुद्धिवाली, निर्मल शीलरुप गुणलक्ष्मीथी मनोहर तथा प्रेमनां पात्ररुप हिमचूला नामे स्त्री हती. तेउने काले करीने वज्रबाहु अने पुरंदर नामना श्रेष्ठ कांतीवाला अनुक्रमे बे पुत्रो थया.

आ वखते नागपुरमां प्रतापथी विख्यात एवो दधिवाहन नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने चूमामणि नामे प्रिया हती. तेउने रूपलक्ष्मीये करीने मनोहर एवी मनोरमा नामे पुत्री हती. मातापिताए ते कुमारिकानो संबंध साकेतपुरना महाराजा विजयना पुत्र वज्रबाहुनी साथे कर्यो हतो. पितानी आज्ञाथी कुमार वज्रबाहु, म्होटी सैना सहित नागपुर प्रत्ये जइने म्होटा उत्सवपूर्वक मनोरमाने परण्यो. त्यां सासराना आग्रहथी केटलाक दिवस रहिने पछी ते कुमार प्रिया सहित पोताना नगर तरफ चाल्यो. दधिवाहन भूपाले पोताना उदयसुंदर कुमारने परिवार सहित मनोरमानी साथे मोकल्यो. पछी आनंदी तथा गुणी एवा सालानी, पोताना मंत्री तथा मित्रोनी तेमज मनोहर एवी प्रियानी साथे पोताना नगर प्रत्ये जतो एवो वज्रबाहु कुमार वसंत ऋतुना अवसरे कोइक पर्वतना उद्यान प्रत्ये आवी पहोच्यो. त्यां ते पोतानी सेनाने पमाव करावी पोते सालानी तथा प्रियानी साथे वसंत क्रीमा करवाने वनमां गयो. मधुरस्वरे स्पष्ट गीतगान करवाथी, अखंमित वेणुवाद्य वागवाथी, अति रूपवंत गणिकाउ विनयवमे नाचवाथी, स्त्रीउ मंमलाकारे गीत गावामां आसक्त थवाथी वाध्यक्रीमा, जलक्रीमा अने पुष्पादिकनी

क्रीमाथी अत्यंत रमतो एवो वज्रबाहु कुमार बहु रागवंत थयो. आ प्रमाणे वनमां पोतानी मरजी मुजब क्रीमा करता एवा वज्रकुमारे अशोक वृक्षनी नीचे कायोत्सर्गे रहेला एक जीतेंद्रिय मुनिने दीठा. आम मुनिने देखवाथी वसंत क्रीमाने जुली गयेलो ते राजकुमार खरेखर मुनिनी ध्यानमुद्राने ज जोवा लाग्यो. निर्जय एवो उदयसुंदर कुमार मरजी प्रमाणे दीर्घकाल पर्यंत वनमां क्रीमा करी अने मुनिने वंदना करी पोताना आश्रम प्रत्ये जवाने पाछो वळ्यो; परंतु ते मुनिनी सामुं जोइ रहेला वज्रबाहु कुमारने आ प्रमाणे केहवा लाग्यो. " हे कुमार ! चालो. स्थिरनेत्र करी ए मुनिसामुं शुं जोइ रह्या छो ? तमे पण मुनीश्वर थवाना छो के शुं ? अहो ! तमे चारित्र लेवाना हो तो मने पण कहेजो के, जेथी हुं पोताना पराक्रमथीज तमारो सहाय्यकारी (तमारी साथे व्रत लेनारो) थाउं. " उदयसुंदरनां आवां वचन सांजली तत्त्वनो जाण वज्रबाहु कुमार " अरे जऽ ! व्रत विना बीजुं शुं रम्य छे ? " एम कहीने परिवार सहित मुनिने नमस्कार करी त्यां बेठो. मुनिये पण तेमना उपर अनुग्रह करवाने माटेज कायोत्सर्गने पूर्ण करीने क्लेशनो नाश करनारी धर्म देशना आपी. " हे मनुष्यो ! जन्ममरणादि क्लेशे करीने पूर्ण एवा आ संसाररुप समुद्रमां वसता छतां तमे वसंतक्रीमा करवामां केम प्रीति पामो छो ? जे मनुष्यो आ दुर्लज एवा मनुष्यजवने पामीने धर्मने विषे प्रीति राखता नथी अने केवल क्रीमा करवामांज तत्पर रहे छे तेउ निश्चे नरकने विषेज जाय छे. अरे जव्यजनो ! तमे मनुष्यजव न हारी जाउ अने ऊट बोध पामो. वली सर्व विकारोने त्यजी दइ फक्त मुक्तिने माटेज उत्तम एवा व्रतने ग्रहण करो. " मुनिनी आवी धर्मोपदेशना सांजली अति वैराग्यवंत थयेला वज्रबाहु कुमारे पोताना शालाने कह्युं. " हे उदयसुंदर ! हुं प्रव्रज्या लइश, माटे तुं ऊट म्हारो सहाय्यकारी था. " उदयसुंदर कुमारे कह्युं. " में तो हास्य कर्युं छे, माटे तमे हवणां चारित्र लेशो नहि. " आम शालाए कह्युं एटले वज्रबाहु कुमारे फरीथी कह्युं के, " जेम खाधेलुं औषध रोगनो नाश करनारुं थाय छे तेम हास्यथी अंगीकार करेलुं अने उत्तम रीते पालेलुं व्रत पण मुक्तिने अर्थेज थाय छे. " नवोढा एवी मनोरमाए पण तपस्यानो निषेध करवारुप बहु वचन कह्यां; परंतु उत्तम एवा वज्रकुमारनी पेठे वज्रबाहुनुं मन

जरा पण खेद पाम्युं नहि. पछी उदयसुंदर विगेरे छत्रीश श्रेष्ठ पुरुषोना समूहनी साथे नवी स्त्री सहित वज्रबाहु कुमारे दीक्षा लीधी. पछी मंत्रीयोए साकेतनपुरमां आवीने कुमारनी दीक्षाग्रहण संबंधी सर्व वात विजयनृपतिने कही, तेथी ते नृपाल पोताना चित्तमां विचारवा लाग्यो के, " धन्य छे ते वज्रबाहुकुमारने के, जेणे युवावस्थामां पण व्रत अंगीकार कर्युं. अमेज मूर्ख छीआ के, अति वृद्धावस्था प्राप्त थया छतां पण भोगने विषे स्थिर रह्या. " विजयनृपतिये मनमां आवो विचार करीने अने पछी पोतानां राज्यने विषे पुरंदर पुत्रने स्थापीने पोते संसार समुद्रने तारवामां नाव समान चारित्र अंगीकार कर्युं.

हवे पुरंदर राजाने पृथिवी नामे अति मनोहर स्त्री हती. तेणीने काले करीने एक कीर्तिधर नामे पुत्र थयो. अनुक्रमे ते पुत्र यौवनावस्था पाम्यो एटले ते पुरंदर पितानी आज्ञाथी हर्षपूर्वक कुभ्रादेशना राजानी सहदेवी नामे युवान पुत्रीने परण्यो. पुरंदर नृपतिये पण कीर्तिधर पुत्रने राज्य सोंपी दीक्षा लीधी. कह्युं छे के–कल्याणनी इच्छा करनारा पुरुषोने तो पूर्वना पुरुषोए आचरेलो मार्ग श्रेयकारी छे. कोइ वखते राज्यनुं पालन करता एवा यशवंत कीर्तिधर राजाए दिवसने विषे सूर्यनुं ग्रहण दीठुं; तेथी ते नृपतिये पोताना सर्व मित्र, सामंत अने मंत्रीयोनी पासे " निश्चे आ सर्व संसारिक वस्तु नाशवंत छे. " एम कह्युं. पछी नित्य सुख आपनारां चारित्रने ग्रहण करवाने तैयार थयेला ते राजाने सामंत तथा मंत्री विगेरे मुख्य माणसो एकठा थइने कहेवा लाग्या के, " हे नरेश्वर ! हमणां तमारे व्रत लेवानो विचार करवो ते योग्य नथी. कारण के, राजा विना आ विशाल एवो देश तथा राज्य क्षणमात्रमां नाश पामशे. वली राज्यना नाशथी लोकमां म्होटा अनर्थो पण बहु थाय छे, माटे हे नाथ ! तमारे पुत्र विना हमणां व्रत लेवुं योग्य नथी. " पछी भोगथकी अति वैराग्यवंत थयेलो ते कीर्तिधर राजा, " हुं क्यारे चारित्र लइश. " एम चिंतवन करतो छतो राज्यनुं पालन करवा लाग्यो. अवसरे सहदेवी राणीये एक पुत्रने जन्म आप्यो; परंतु मंत्रीयोए ते गोपवी राखवाथी राजाए पुत्रजन्म जाण्यो नहि. पछी कोइ वखते कोइ पुरुषे राजाने पुत्रजन्मनी वात कही; तेथी एक पखवाम्हीयुं पूर्ण थये राजाए तेने हर्षथी बहु प्रीतिदान आ-

प्युं. पछी पंदर दिवसना थयेला ते पोताना पुत्रने सन्नामां लावी राजाए "सुकोशल" एवुं नाम पाडवा पूर्वक तेने पोतानुं राज्य आप्युं अने लघुकर्मी एवा पोते बहु न्नारे एवा आश्चर्यकारी चारित्रने अंगीकार कर्युं. पछी सहदेवी राणी पोताना सुकोशल पुत्रने प्रेमपूर्वक पालवा लागी अने नगरवासी जनो पण तेने (सुकोशलने) राजा मानीने नमवा लाग्या. ज्यारे सुकोशल कुमार बाल अवस्थाने उल्लंघन करी युवावस्था पाम्यो त्यारे ते गुणे करीने सुशोन्नित एवी कोइ महाराजानी पुत्रीने परण्यो. पछी सहदेवी विचार करवा लागी के, "आ म्हारा पुत्रना बापवाउए युवावस्थामांज राज्यने त्यजी दइ दीक्षा लीधी छे तो आ म्हारो पुत्र पण मालाधर्मनी पेठे युवावस्थामांज संयम लक्ष्मीने अंगीकार करशे. कारण श्रद्धा जोवाथी वधे छे. हवे हुं निश्चे लिंगधारी मुनियोने तथा बीजा साधुउने पण नगरमां आववानुं बंध करुं के, जेथी करी म्हारो पुत्र कांइपण धर्म न सांन्नले." आ प्रमाणे विचार करीने सहदेवी राणीये नगर रक्षकोनी पासे प्रथमज नगरमां रहेला धर्म कहेनारा सर्व साधुउ काढी मूक्या तेमज बीजा नवा आवनाराउने पण नगरमां आववानुं बंध कर्युं. कह्युं छे के—मोहरुप मदिरा मनुष्यनी पासे शुं शुं नथी करावती? अर्थात् बहु खराब कामो पण करावे छे.

हवे कोइ वखते पृथ्वी उपर विहार करता करता कीर्त्तिधर मुनि (सहदेवीना पति अने सुकोशलनो पिता) साकेत नगरप्रत्ये आव्या. त्यां नगरीमां प्रवेश करी मध्यान्हने वखते पारणाने माटे मार्गमां जता एवा ते मुनिने गोखमां बेठेली सहदेवीये दीठा एटले तो ते राणी सद्गुणोथी सुशोन्नित अने विश्वना प्राणीयो उपर दया राखनार ते मुनि उपर मत्सर धरवा लागी. वली "म्हारो पुत्र एने न मलो" एवा विचारथी ते राणीये पोताना सेवको पासे ते मुनिने प्रहार करावी तुरत नगरमांथी काढी मूक्या. "आ विटंबना सहदेवीये करावी छे." एम जाणता छता पण मुनि क्षमाथी ते सर्व सहन करीने वनमां जइ रह्या. हवे अहिं सहदेवीये पोताना सेवको पासे मुनिने प्रहार देवराव्यो ते सुकोशलनी धावमाताए दीठुं; तेथी ते कीर्तिधर राजाथीना पूर्वना उपकारने स्मरण करती बहु रोवा लागी. स्नेहवंत सुकोशले ते धावमाताने रोवानुं कारण पूछ्युं एटले धावमाताए तेने कह्युं. "हे वत्स! कीर्ति-

घर मुनीश्वर त्हारा वहाला पिता थाय छे. ते मासक्षमणने पारणे नगरमां भिक्षा लेवा आव्या हता. तुं तेमनी साथे न जतो रहे एवी इच्छाथी आ त्हारी माता सहदेवीये ते महामुनिने मारी काढी मूक्या छे. हे वत्स ! हुं तेमना गुणोनुं स्मरण करती छती रुदन करुं छुं. हे कुमार ! ज्यारे तमे पंदर दिवसना हता त्यारेज तेमणे तमने राज्यासन उपर बेसारी दीक्षा लीधी छे अने ते दिवसथी ते मुनीश्वर आजेज आ नगरमां आव्या हता." लघुकर्मी अने विवेकमान् सुकोशल भूपति धावमातानां आवां वचन सांभलीने तुरत पोताना श्रेष्ठ परिवार सहित वनप्रत्ये गयो. त्यां जेना शरीरे पुलकावली थइ हती एवो ते भूपति पोताना पितारुप साधुने प्रदक्षिणापूर्वक भक्तिथी नमस्कार करी तेमनी आगल बेठो. पछी कीर्तिधर राजर्षिये आदरथी धर्मनो उल्लास करनारी वाणी कही. "हे भव्यपुरुषो ! जन्म मरणादि कल्लोले करीने भरपुर एवा आ संसाररुप समुद्रमां असार एवा भोगोए करीने माणस जरापण तृप्ति पामता नथी; तेमां पण दक्षिणावर्त्तशंखनी पेठे मनुष्य जन्म दुर्लभ छे अने तेमां विषयसुख विजलीना समान चंचल छे. आ संसारमां प्राणीयोने जन्ममरणादि घोर दुःखो प्राप्त थाय छे; माटे तत्त्वने जाणनारा पुरुषोए सर्व प्रकारे संसारनो त्याग करवो." मुनिनी आवी धर्मोपदेशना सांभलीने प्रसन्न थयेला सुकोशल भूपतिये कह्युं. "हे तात ! तमारा दर्शनथी आजे म्हारो जन्म सफल थयो. मने बालकने संसार संबंधी दुःख आपनारां साम्राज्यपदने विषे मूकी शुं तमे पोतेज हितकारी एवा व्रतने अंगीकार कर्युं ? हे पिता ! हुं बहु तरछयो छुं, माटे हवणांज मने पोताना चारित्ररुप अमृतनुं पान करावो." आ वखते दीक्षा लेवाने तैयार थयेला सुकोशल पुत्रने जाणी सहदेवी तुरत त्यां आवीने तेने कदाग्रह करी ना पाडवा लागी; परंतु सुकोशल भूपतिये कह्युं. "जो हुं त्हारो वहालो पुत्र छुं तो तुं मने पवित्र एवा चारित्र लेवा माटे झट रजा आप." वली ते पोतानी स्त्रीने कहेवा लाग्यो. "हे कृशोदरी ! तने गर्भ छे, माटे पुत्र थाय त्यारे तेने मारां राज्यने विषे स्थापन करजे. अत्यारे तुं मने विघ्नकारी थइश नहि." आ प्रमाणे मातानी, स्त्रीनी, सामंतोनी अने मंत्रीयोनी सुखेकरीने रजा लइ तत्त्वने जाणनार ए सुकोशल राजाए तेज वखते उत्सवथी चारित्र लीधुं. पछी मोहरुप निद्राए त्यजी दीधेला ते पिता पुत्ररूप बन्ने मुनी-

श्वरो निरंतर शुभ ध्यान अने क्रीया करवामां उद्यमवंत थया. कोइ वखते श्रेष्ठ एवा ते बन्ने मुनीश्वरो, वर्षाकालने विषे मौङ्गिल्य पर्वतना शिखर उपर कनकावली विगेरे बहु तप अने यवमध्यादि पडिमा करता छता चातुर्मास रह्या. पछी कार्तिक मासनी पूनमना पारणाने विषे चातुर्मासिक व्रत पूर्ण करी गुणोथी गरिष्ट एवा ते बन्ने साधुउ ते महा पर्वतथी नीचे उतरवा लाग्या.

हवे आ वखते सुकोशल पुत्रना वियोगनी पीडाने नहि सहन करवाथी तेनी माता सहदेवी मृत्यु पामीने वाघेण थइ हती. वली दुष्ट चित्तवाली, भयंकर मुखवाली अने अनेक जीवोनो संहार करती ते, आ मौङ्गिल्य पर्वतने विषेज रहेती हती. पर्वतना शिखरथी उतरता ते दयावंत बन्ने मुनींडेने पर्वतनी मेखलामां मध्यमां भमती एवी वाघेणे दूरथी दीठा. पछी पहोलुं करयुं छे म्हाडुं जेणे एवी ते वाघेण भूखने लीधे बन्ने मुनियोने भक्षण करवा दोडी. आ वखते तत्त्वनो जाण अने गुणी एवो सुकोशल मुनि सुभटनी पेठे कीर्तिधर पिताए वारंवार ना कह्या छतां पण वाघेणना परीसहने सहन करवा माटे पोतानी मेलेज आगल थयो. पछी रातांनेत्रे करीने अति भयंकर वाघेण फाल देती त्यां आवीने मुनिने पाडी नाखी तेना उपर चडी बेठी. वली ते मुनिना साथलना अतिकोमल मांसने खावा लागी. अहो ! अज्ञानथी मूढ आत्मावालो जीव शुं पाप नथी करतो ? धिक्कार छे आवा क्रूर कार्यने ! ! ! पछी पासे उभेला कीर्त्तिधर मुनिये आवां अति मधुर वचनथी सुकोशल पुत्रने उत्साहवंत कर्यो. " हे वत्स ! पूर्वकर्मना योगथीज आ तने दुःसह विपत्ति प्राप्त थइ छे. तो हवे तुं ए विपत्तिने सहन करवामां पोतानुं सर्व पराक्रम फोरव. " धीरजवान सुकोशल मुनिये पण पोताना दृढ एवां अंतरमां प्रीयकारी ते भावनाने वज्रनी पेठे स्थापन करी. वली कीर्त्तिधर मुनि कहेवा लाग्या के, " अनेक भवने विषे भमता सनद्दवंत एवा तें बहु एकेंद्रि जीवोना समूहने भक्षण कर्या छे. वली तें नरकने विषे एवां घोर दुःखोने सहन कर्या छे के, जेनी आगल आ दुःख कोण मात्र छे ? " महा मुनीश्वर सुकोशल आपत्तिमां पण एज प्रकारनी भावनाने भावतो छतो अज्ञानने नाश करनारी क्षपकश्रेणी प्रत्ये चड्यो. अनुक्रमे ते तुरत निर्मल एवा केवलज्ञानने पामी अने जगतमां उत्तम एवी मुक्तिरमणीने पाम्यो. वा-

घेणे पण सुकोशल मुनिना साथलनुं मांस ज्नक्षण करी अने पछी पेटनुं, हाथनुं, खंज्नानुं अने मस्तक विगेरेनुं एम सर्व अंगोनां मांसनुं ज्नक्षण कर्युं. त्यार पछी ते वाघेणे, म्होढुं पहोलुं करीने बगासुं खाता सुवर्णथी जम्त्रि पोताना दांतनी पंक्ति दीठी. मांस ज्नक्षणथी निवृत्त थयेली वाघेण, सुवर्णजम्त्रि दंत पंक्तिने जोती "निश्चे में कांइक दीठुं." एम वारंवार पोताना चित्तमां विचार करवा लागी. जहापोह करता तेने पूर्वनो ज्नव सांज्नस्यो एटले कीर्त्तिधरमुनि, तेने आदरथी केहेवा लाग्या के, "हा सहदेवी! तुं वाघेण थइ जपशमवाला अने इष्ट एवा पोताना पुत्रना मांसने ज्नक्षण करती छती शुं हर्ष पामे छे? कीर्त्तिधरमुनिनां आवां वचन सांज्नली वाघेण, सुकोशल पुत्रनो जाणे अत्यंत शोक करती होयनी? एम पृथ्वी जपर आलोटवा लागी. "हा! आ पुत्रने लालन पालन करी मेंज म्होटो कर्यो छे. वली निश्चे तेनाज वियोगथी हुं मृत्यु पामीने वाघेण थइ छुं. आ पवित्र बुद्धिवाला प्राणप्रिय पुत्रनुं में ज्नक्षण कर्युं. धिक्कार छे धिक्कार छे बे ज्नवना विनाशकारी आ दुष्टजातिना कर्मने!!! जो के हिंसक जीवो निरंतर बीजाउने ज्नक्षण करे छे; परंतु पोतेज पुत्रनो नाश करनारी म्हारा समान बीजी पापीणी जगत्मां कोण हशे?" आ प्रमाणे वाघेण पोताना मनमां खेद करती हती. एवामां कीर्त्तिधरमुनिये तेने कह्युं के, "हे ज्नद्रे! आ त्हारो ज्नवज विषम छे के, जेमां पोतानुं होय ते पण शत्रुरूप समजाय छे. अखंमित एवा धर्मथी मनुष्यपणुं मले छे. तुं धर्म-विना आवी नीच गति पामी छुं. वली नाना प्रकारना जीवोना घातथी खरेखर तुं नरकगतिनेज पामीश. हवणां तुं सर्व जीवो जपर दया करवारुप धर्म अंगीकार कर के, जेथी अरिहंतधर्म अने स्वर्ग ए बन्ने वस्तुज तने प्राप्त थशे." मुनिनां आवां वचन सांज्नली वाघेण बोध पामी, तेथी तेणे निर्मल बुद्धिथी स्वर्गसंपत्ति आपनारुं अनशन लीधुं. आ वखते सुकोशलमुनिनुं सत्त्व बहुज रह्युं हतुं के, जेनी मोक्षप्राप्तिनी पण कीर्त्तिधरमुनिये अनुमोदना करी के, "अहो ज्नव्य पुरुषो! ए सुकोशलमुनिनुं न वर्णवी सकाय तेवुं आराधकपणुं जूज के, जे प्रथमथी दीक्षा लेनारा पितानी पण पहेलां मोक्ष पाम्यो." कीर्त्तिधरमुनीश्वर आ प्रमाणे मनमां शुद्ध ज्नावना ज्नावतां छतां मोक्षपुरना मार्गरूप केवलज्ञान पाम्या. ते वखते देवताउए तेमनी पासे आवीने हर्षथी लोकने आश्चर्यकारी

म्होटो केवल महोत्सव कर्यो. त्यां कीर्तिधरमुनिये उत्तम धर्मदेशना आपीने पछी बहु कालपर्यंत पृथ्वी उपर विहार कर्यो. नाना प्रकारना उपदेश समूहथी अनेक भव्यजीवोने प्रबोध पमाडी आयुष्यनो क्षय थये ते विशुद्ध आत्मावाला कीर्त्तिधर मुनि मोक्षपदने पाम्या. जेवी रीते सुकोशल राजर्षिसहित कीर्त्तिधर महामुनिये म्होटो उपसर्ग सहन कर्यो तेवी रीते बीजा श्रेष्ठ साधुउए पण पोताना देहथीज म्होटा उपसर्गो सहन करवा.

॥ इति कीर्तिधर तथा सुकोशल मुनीश्वरनी कथा ॥

काउं गुणरयणतवं, अठ्ठ अरकोहसागरप्पमुहा ॥
वण्हिसुआ संपत्ता, सिद्धं इक्कारसंगधरा ॥ २५ ॥

अर्थ—अंधकवृष्णि राजाना अगीयार अंगने धारण करनारा अक्षोभ्य सागर विगेरे आठ पुत्रो गुणरत्न संवत्सर नामनुं तप करीने सिद्धिपद पाम्या.॥२५॥

अंधकवृष्णि राजाना आठ पुत्रोनी कथा.

शौर्यपुरमां हरिवंशना मुकुटमणिरुप अंधकवृष्णि नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने धारिणी नामे स्त्री हती. तेउने विश्वमां प्रख्यात यशवाला श्रेष्ठ दश पुत्रो हतो. ते आ प्रमाणे १ समुद्रविजय, २ अक्षोभ्य, ३ स्तिमित, ४ हिमवान्, ५ सागर, ६ अचल, ७ धरण, ८ पूरण, ९ चंद्र, १० वसुदेव. अंधकवृष्णि राजाना आ दशे पुत्रो पोताना कुलने आनंद करनारा, जगत्मां विख्यात पुरुपार्थवाला अने दशार्ह एवा नामथी प्रसिद्ध हता.

एक दिवस श्री नेमिनाथ प्रभु पृथ्वी उपर विहार करता करता द्वारका नगरी प्रत्ये आव्या. त्यां तेमनी देशना सांभलीने बोध पामेला अक्षोभ्यादि आठ दशार्होए दीक्षा लीधी. पछी ते गुणवंत मुनियो आदरथी अगीयार अंगनो अभ्यास करवा लाग्या. अनुक्रमे तेउ गुणरत्न संवत्सर महा तप अने बीजां पण तप मोक्षने माटे करवा लाग्या. सोल वर्ष पर्यंत दीक्षा पर्याय पाली कपटरहित मनवाला ते मुनीश्वरो शत्रुंजय पर्वत उपर जइ, त्यां मासपर्यंत अनशन व्रत लइ, केवल ज्ञान [illegible] सर्व कर्मनो क्षय करी मोक्ष पाम्या.

॥ इति [illegible] कथा ॥

तं वंदे रहनेमिं, चउरोवच्छरसयाइ जस्स गिहे ॥
जो वरिसं छउमच्छो, पंचसए केवलीजाउ ॥ ए६ ॥

अर्थ–जे चारसो वर्ष गृहस्थावासमां अने एक वर्ष छद्मस्थपणे रह्या तेमज जेमणे पांचसो वर्ष केवलपर्याय पाळ्यो ते श्री रथनेमीने हुं वंदना करुं छुं. ए६

श्री रथनेमिनी कथा.

पश्चिम समुद्रना तीरे द्वारका नगरीमां बलज्रद्र सहित कृष्ण राज्य करता हता. त्यां दशार्होमां मुख्य श्री समुद्रविजय राजा रहेता हता. तेमने मोक्षलक्ष्मी छे हस्तकमलमां जेने एवी शीलने धारण करनारी शिवादेवी नामे स्त्री हती. तेउने विश्वने आनंद करनारा, कुलने वंदन करवा योग्य, संसार समुद्रना ज्रयने दूर करनारा अरिष्टनेमि नामना महा ज्राग्यवंत पुत्र हता. शंखना लांछनवाला, त्रण ज्ञानने धारण करनारा स्नेहवंत अने गाढ मेघना समान अथवा तो अंजनना समान कांतिवाला ए बाविशमा जिनेश्वर हता. बाल अवस्थामां पण क्रीमा मात्रवमे वृद्धावस्थाना ज्रयंकर ज्रयने जीती यादवकुमारोनी साथे प्रज्रु पोतानी मरजी प्रमाणे रमता हता.

एक दिवस महा तेजवंत एवा प्रज्रु यादवना कुमारोनी साथे द्वारकामां क्रीमा करता छता कृष्णनी आयुधशालाप्रत्ये गया. त्यां द्वारपालोए सत्कार करेला तेमणे अंदर जइने सिंहासन उपर गोठवी राखेलां कृष्णनां सर्व आयुधो जोयां. पछी जिनेश्वर प्रज्रुए, ते शस्त्रो मांहेथी त्रण खंममां न वारी शकाय एवा म्होटा शत्रुउना समूहना मदने नाश करनारा सुदर्शन नामनां चक्रने पोताना हाथमां लीधुं अने तेने कुंज्रारना चाकनी पेठे लीलामात्रमां फेरव्युं. कौमोदकी गदाने पण सामान्य लाकमीनी पेठे उपामी. जाणे महा मंत्रशक्तिवाला वादीये रामफामांथी सर्पनेज खेंची काढ्यो होयनी ? एम प्रज्रुए नंदक नामना खड्गने म्यानमांथी बहार खेंची काढ्यो. त्यारपछी कमलनालनी पेठे शार्ङ्ग धनुष्यना दंमने सज्ज करी ब्रह्मांमने फोमी नाखनारो प्रत्यंचानो शब्द कर्यो. छेवट जिनेश्वरे लीलाथी पांचजन्य नामना शंखने पोतानां मुखने विषे धारण करी गाढ स्वरथी वगामयो. आ वखते शंखना ज्रयंकर शब्दथी

समुद्रे मर्यादा त्यजी दीधी; उत्पन्न थयेला भयथी आकुलव्याकुल बनेला दिशाओना हाथीयो त्रास पामवा लाग्या; शेषनाग कंपवा लाग्यो; सकल ब्रह्मांड शब्दमय थइ गयुं अने ब्रह्मा पोतानी ध्यानकलाने त्यजी दइ "आ शुं थयुं?" एम कहीने विस्मयथी विचारवा लाग्या. वली त्रास पामेला मदांध हाथीयो तुरत वेगथी आलान स्तंभोने उखेडी नाखी आम तेम नासवा लाग्या अने भय पामेला उत्तम घोडाओ पण पक्षीयोनी पेठे चारे तरफ फालो देवा लाग्या. कृष्ण अने बलभद्र विना बीजा सर्वे राजाओ, शंखना शब्दथी अत्यंत भयभीत थइने महा मूर्छा पाम्या. भय पामेला कृष्ण पण पोताना बंधु एवा बलभद्रने कहेवा लाग्या के, "हे बंधो! देवताओथी पण अस्पृश्य एवा आ म्हारा शंखने सहसा कोणे वगाड्यो?" बलभद्रे कह्युं. "ए शंख श्री नेमिकुमारे वगाड्यो छे." पछी शंका पामेला कृष्णे फरीथी कह्युं. "ए शिवामातानो पुत्र खरेखर चक्रवर्त्ती अथवा तो अर्द्धचक्रवर्त्ती देखाय छे तो आपणे महा कष्टथी मेलवेलुं राज्य ए लइ लेशे!" बलभद्रे कह्युं. "हे कृष्ण! तुं जरा पण एवी शंका न कर. कारण ए चक्रवर्त्ती तेम अर्द्धचक्रवर्त्ती नथी; परंतु ते धर्मचक्रवर्त्ती छे. हे बंधो! शुं ए नेमिनाथनुं आवुं अल्प पराक्रम छे? ना ना कारण के, एतो क्षणमात्रमां पृथ्वीने छत्ररुप अने मेरुपर्वतने दंडरुप बनावी दे तेवा बलवंत छे. अरे! ए एवा बलवान् छे छतां निस्पृहीपणाए करीने कोइनां राज्यने लइ लेवानी इच्छा करता नथी. एटलुंज नहि पण ए एक स्त्रीना पण परिग्रहने स्वीकारता नथी." पछी कांइक स्वस्थ थयेला कृष्णे नेमिनाथने आदरपूर्वक पोतानी पासे बोलावीने कह्युं के, "हवणां आपणे बन्ने जणा पोतपोताना भुजबलनी परीक्षा करीए." नेमिनाथे कांइक हसीने कह्युं. "हे कृष्ण! ठीक छे चालो तेम करीए." पछी बन्ने जणा मल्लयुद्ध करवाना स्थानके गया. आ अवसरे श्री नेमिनाथ प्रभुए मनमां विचार्युं जे, "आ कृष्ण म्हारा हाथना प्रहारने शी रीते सहन करी सकशे? आम धारीने तेमणे कृष्णने कह्युं के, "मल्लयुद्ध करवाथी सारुं न थाय, माटे आपणे बन्ने जणा एकबीजाना हाथने वालवाथी बलपरीक्षा करीए." कृष्णे ए वात कबुल करीने पछी भोगलना समान पोताना जमणा हाथने लांबो कर्यो एटले विश्वना नाथ एवा श्री नेमिनाथे ते हाथने लीलामात्रमां वाली दीधो. ठीकज छे. अनंत भुजब-

लवाला अरिहंतोनुं एवुं बल होय तेमां शुं आश्चर्य ? पछी कृष्णे पोताना हाथने श्री नेमिनाथे वालेलो जोइने कह्युं, "हे बंधो ! हवे तमे पोताना हाथने लांबो करो." कृष्णनां आवां वचन सांभली जिनेश्वरे वज्र समान दुर्भेद्य अने स्वर्गदंम समान विस्तारवंत पोतानो हाथ लांबो कर्यो. पछी कृष्णे श्री नेमिनाथना हाथने नमावा माटे एक हाथ लगाम्यो; पण तेथी प्रभुनो हाथ जरा पण नम्यो नहि एटले तेमणे बन्ने हाथ तेज काममां लगाम्या. तो पण प्रभुनो हाथ किंचित्मात्र नम्यो नहि. पछी श्री नेमिनाथ प्रभुए कुतुहलथी तमालनां सरखी कांतिवालो पोतानो हाथ जरा उंचो कर्यो एटले चपल अंगवाला कृष्ण, वृक्ष उपर वांदरानी पेठे नेमिनाथना हाथ उपर लटक्या. श्री नेमिनाथ प्रभुना हाथनुं आवुं बल जोइ संतोष पामेला देवताउए प्रसन्न थइने तुरत तेमना उपर पुष्पवृष्टि करी. पछी श्री नेमिनाथना आवा भुजबलनो अनुभव करीने मनमां अत्यंत आश्चर्य पामेला बुद्धिवंत कृष्णे विचार्युं जे, "अहो ! त्रण जगत्ना मदने नाश करनारुं आवुं भुजाबल छतां श्री नेमिकुमारनुं निस्पृहपणुं पण तेवुंज छे के, जे ए एक स्त्रीने पण मनथी इच्छता नथी तो पछी तेमनुं भुजवीर्य वनना फुलनी पेठे निष्फल जाणवुं. जो के ए सर्व प्रकारे निस्पृह छे तो पण हुं छलथी अथवा तो बलथी तेमने एक श्रेष्ठ कन्या साथे पाणीग्रहण करावीश." आवो विचार करीने पछी कृष्णे नेमिनाथने कह्युं. "हे वत्स ! तमे म्हारी साथे जलक्रीमानो उत्सव करो." जिनेश्वरे ते वात अंगीकार करी एटले हर्ष पामेला कृष्णे पोताना माणसो पासे उत्तम एक क्रीमावाव्य करावी. पछी अंतःपुरसहित श्री कृष्ण नेमिकुमारनी साथे हर्षपूर्वक जलक्रीमा करवा लाग्या. दीर्घकालपर्यंत जलक्रीमा करीने पछी अंतःपुरनी मध्ये आसन उपर बेठेला कृष्णे पवित्र चंदनथी पोतानां शरीरने विलेपन कर्युं. पछी कृष्णना अभिप्रायने जाणी सत्यभामादि आठ पट्टराणीयो मधुर वचनथी श्री नेमिनाथने वारंवार कहेवा लागी. "हे दियर ! गुणोनी खाणरुप तमे समर्थ छतां असमर्थ देखाउ छो के, जे तमे एक एवी पण कोइ सारी कन्याने परणता नथी. आ निर्दुषण एवुं तमारुं रूप अने मनोहर तारुण्य स्त्री विना खरेखर वनना कमलनी पेठे निष्फल जाय छे. ऋषभादि जिनेश्वरोए पण प्रथम भोगोने भोगवी चारित्र लीधुं छे. तो हे नेमिनाथ !

तमे पण झट तेमनी पेठेज आचरो. अरे दियर! तमे युवान छतां आज सुधी मातानी पासेथी मागी खानारा छो कारण तमे कांइ पण वस्तु जोइती होय तो शिवामातानां मुख सामुं जूउ छो. तमे असाध्य एवा अमारा संकटने विषे पमेला छो, माटे पाणीग्रहण कर्या विना छुटवाना नथी. भाग्य अने सौभाग्यवालो म्होटो श्रीमान् माणस पण श्रेष्ठ गुणवाली स्त्री विना प्रतिष्ठाने पामतो नथी. सर्व लक्षणथी पूर्ण कलावंत, स्त्री प्रिय अने गुणवंत छतां हे दियर! तमे भोगथी केम अवला मुखवाला थया छो? तमे नगरीमां हमेशां स्याद्वादी कहेवाउ छो छतां हवणां आ एकांतमां स्त्रीना हस्तने ग्रहण केम करो छो? अने प्रसिद्धिमां एक कन्याना हस्तने शा माटे आदरपूर्वक ग्रहण करता नथी? हे म्होटा मनवाला! तमे एक श्रेष्ठ रुपवंती कन्यानो पाणीग्रहण करीने वृद्ध एवा मातापिताने शा माटे आनंद नथी उपजावता?"

आ प्रमाणे कहेतीयो अने जेमना केश पृथ्वी उपर पथराइ रहेला हता एवी ते श्रीकृष्णनी पट्टराणीयो श्री नेमिनाथना चरणकमलने विषे पमी. आ अवसरे कृष्णे आदरपूर्वक कह्युं. "हे बंधो! हवे तमारे कदाग्रह करवो योग्य नथी." पछी बलभद्र कहेवा लाग्या के, "भाइ! जूउतो खरा आ तमारा म्होटा भाइ कृष्ण, बीजी हजारो स्त्रीयोनी साथे क्रीमा करे छे अने तमे तो स्त्रीथी अवला मुखवाला थयो छो. पूर्वे अनंत एवा तीर्थंकरो पण प्रथम स्त्रीनुं पाणीग्रहण करीने पछी चारित्रलक्ष्मीने अंगीकार करनारा थया छे. हे वत्स! बीजा कुमारोने पाणिग्रहणथी प्रतिष्ठा पामेला जोइ तमारा मातापिताने तेमना मनमां बहु खेद थाय छे माटे हे विश्वने वहाला! तमे एक वखते स्त्रीना पाणिग्रहणनो म्होटो उत्सव करी पोताना मातापिताने आनंद पमामो." बलभद्र कही रह्या एटले कृष्णे पण फरी तेमज कह्युं. आम कृष्ण अने बलभद्र बन्ने जणा श्रीनेमिनाथने बहु आग्रहथी कहेवा लाग्या एटले दाक्षिण्यरूप रत्नना समुद्र अने इच्छित सुख आपनारा श्री अरिहंत प्रभुये, कृष्ण बलभद्रना वचनने अंगीकार कर्युं. पछी आनंद पामेला कृष्ण परिवार सहित श्री नेमिनाथने साथे लइ द्वारका नगरी प्रत्ये आव्या. त्यां तेमणे पोताना पितराइ समुद्रविजय राजाने "नेमिनाथे विवाह करवानुं कबुल कर्युं छे." ते सर्व निवेदन कर्युं. कृष्णनां आवां वचनथी समुद्रविजय राजा म-

नोहर एवी पोतानी स्त्री सहित बहु हर्ष पामीने कृष्णने आ प्रमाणे कहेवा लाग्या. "तें अमारो सर्व मनोरथ पूर्ण करयो छे; जेथी तुं अमारा कुलनो आधाररुप छे. तुं पोतेज विष्णु छे तो हवे अमे त्हारुं केटलुंक गुणवर्णन करीए. पछी समुद्रविजय राजाए रजा आपवाथी कृष्ण परिवार सहित पोताना घर प्रत्ये गया. त्यां ते अंतःपुरमां जइने सर्व स्त्रीयोने पूछवा लाग्या के, "श्री नेमिनाथने योग्य एवी कोइने कन्या होय तो कहो?" सत्यन्नामाए कह्युं. "हवणां रम्यगुणवाली, सती अने राजीमती नामनी उग्रसेन राजानी पुत्री श्री नेमिनाथने योग्य छे. कारण ए सर्व लक्षणयुक्त, सुंदर सर्व अंगवाली अने सती होवाथी नेमिकुमारनेज योग्य छे; परंतु बीजा कोइने योग्य होय एम नथी." पछी कृष्ण "आ योग्य संबंध छे." एम जाणीने हर्ष पामता परिवारने साथे लइ उग्रसेनना घर प्रत्ये गया. पछी पोताने घेर आवेला कृष्णने सुवर्णना सिंहासन उपर बेसारी बहु प्रसन्न थयेला उग्रसेन न्नूपतिये तेमने मणि मुक्ताफलनी बहु न्नेटो आपीने संतोष पमारुवा पूर्वक हाथ जोमीने स्नेहथी विनंती करी के, "हे नाथ! आजे म्हारो मंगलकारी दिवस थयो तेम आजे हुं कृतार्थ थयो कारण के, जे आप पोतेज प्रसन्न थइने म्हारा घेर पधारया छो. हे देव! कांइ कार्य होय तो मने आज्ञा आपो." उग्रसेननां आवां वचनथी संतोष पामेला कृष्णे कह्युं. "अहो! नेमिकुमारने माटे तमारी अति मनोहर राजीमती पुत्रीनी याचना करवा हुं अहिं आव्यो छुं. हे न्नूप! आ योग्य संबंध तमे कबुल करो. वली तेम करवाथी विधात्रानो तेमने (नेमिकुमार तथा राजीमतीने) बनाववारुप थयेलो श्रम सफल थशे." कृष्णनां आवां वचन सांन्नली अति प्रसन्न थयेला उग्रसेन न्नूपतिये निर्मल विवेकने प्रगट करता छता कृष्ण प्रत्ये कह्युं.

"हे यदुनायक! तमे आम मध्यस्थनी पेठे केम कहो छो? शुं म्हारा संतान (पुत्रपौत्रादि) अने इत्यादि तमारुं न कहेवाय? पोतानी वस्तु स्वीकारता तमारे म्हारी प्रार्थना शी करवी होय? हे नाथ! जेम आपनी मरजी होय ते प्रमाणे शीघ्र करो. एक तो लोकोत्तर गुणवाला श्री नेमिनाथ म्हारी पुत्रीना पति थशे अने बीजुं आप म्हारा घर प्रत्ये आव्या तेथी हुं जाणुं छुं के, निश्चे म्हारी पुत्रीनुं पूर्वना शुन्न पुण्योथी न्नाग्य जागतुं थयुं." आम विज्ञानथी

सुशोभित वचन कहेतां एवा उग्रसेन नृपतिने संतोष पमाडीने कृष्ण समुद्रविजय राजाना घर प्रत्ये आव्या. त्यां अति प्रसन्न एवा कृष्णे श्री नेमिनाथना विवाहने माटे राजीमतीनुं मागुं कर्यानी सर्व वात समुद्रविजय राजाने कही. पछी हर्ष पामेला समुद्रविजय राजाए कृष्णने कह्युं के, " हे वत्स ! निरंतर अमारी चिंता तने देखाय छे. हुं हमेशां स्वजनोमां जेवुं त्हारुं सौजन्यपणुं देखुं छुं तेवुं बीजाउनुं खरेखर स्वप्नामां पण देखतो नथी. मने श्री नेमिकुमारना विवाह संबंधि जे मनोरथ हतो ते आजे तेंज सफल कर्यो छे. " पछी कृष्ण ते कार्य निवेदन करीने पोताने मंदिरे गया एटले समुद्रविजय नृपतिये दैवज्ञ एवा क्रोष्टुकी निमित्तियाने बोलावीने लग्न पूछ्युं. कोष्टुकिये कह्युं. " हे राजन् ! हवणां सर्वदा श्रेष्ठ एवा लग्नोज छे. कारण के, विवाहादि लग्न कार्य फक्त चोमासामां थता नथी. पुण्यवंत म्होटा पुरुषोए पोताना कल्याणने माटे फक्त चोमासामां विवाहादि महोत्सवो न आरंभवा. वर्षाऋतु वित्या पछी लग्न उत्कृष्ट गणाय छे, माटे तेमां (शियालामां) करेलुं विवाहादि कार्य सुख आपनारुं थाय छे. " समुद्रविजय राजाए कह्युं. " हे कोष्टुकि ! तमे कहो छो ते सत्य छे, परंतु अमारुं उतावलनुं कारण सांभलो. श्री नेमिकुमारे विवाह न करवा संबंधि लीधेलो कदाग्रह हवणां कृष्णे स्नेहने लीधे छोडावी दीधो छे; परंतु जो ते योगीनी पेठे विरक्त थइने ब्रह्मचर्यादि क्रियानो आश्रय करशे तो पछी कोण छोडावशे ? माटे हे क्रौष्टुकि ! विलंब न करतां हवणांज लग्न जूउ. वली विद्वान पुरुषोए पण सारा काममां बहु विघ्नो कह्यां छे." पछी कोष्टुकिये तुरत राजाना आ देशनुं कारण ध्यानमां लइ वर्षाऋतुमां लग्न मात्ररूप दिनशुद्धिने जोइ कह्युं के, " श्रावण मासनी अजवाली छठने दिवसे सूर्योदय वखते सुखकारी श्री नेमिनाथनुं विवाहकार्य करो. " समुद्रविजय राजाए नैमित्तिक कहेलुं लग्न प्रमाण करीने पछी ते कोष्टुकिनो वस्त्राभूषण फलादिक करीने बहु सत्कार कर्यो. पछी तेमणे उग्रसेन राजाने पण लग्नना खबर आप्या. त्यारबाद ते बन्ने घरोने विषे विवाहना उत्सवो चालवा लाग्या. मांडवाउ, स्वर्गनी देवांगना समान नृत्यो, मणिमय भूमियो, स्तंभना अग्रभागमां सुशोभित पुतलीयो, चंडुवाउ अने आनंद आपनारा विचित्र दर्पणोथी दीप्यमान तोरणो इत्यादि अनेक प्रकारनी रचनाथी मनुष्योए ए बन्ने राजाना

घरोने शणगार्यां. नृपतियो आदरथी चित्तने प्रियकारी साकरना लाफु तेमज सरस रसोइ तथा शाक विगेरे अनेक नोजनना पदार्थो बनावी कुटुंबना माणसोने जमाफ्वा लाग्या. विविध प्रकारना वार्जीत्रो पण प्रियकारी मधुर स्वरथी वागवा लाग्या. आ वखते चित्रवालां सर्वे घरो चारे तरफथी अनेक प्रकारना अतुल मंगलोने विस्तारता हता. दशार्ह, दाशार्ह, बलन्नज्ञादि यादवोना घरोने विषे अत्ति आनंदमय धवल शब्दो संन्नलाता हता. रात्रि दिवस पगले पगले नाटको थता हता. मधुर शब्दवाला गंधर्वलोको पण उत्तम गायनो करता हता. तेमज स्वान्नाविक रीते नगरीने बहु मनोहर बनावी हती. सर्वे दरवाजाउने पण जूदी जूदी जातना रंगोथी अने सुशोन्नित आन्नूषणोथी देदीप्यमान बनाव्या हता.

पछी नेमिनाथनो लग्न दिवस पासे आव्यो एटले महाहर्षना न्नारथी सुशोन्नित श्री शिवादिमाताउ, देवकी विगेरे दाशार्होनी हजारो स्त्रीयो, हर्षित चित्तवाली रेवती विगेरे बलन्नज्नी स्त्रीयो, बहु प्रेमथी सुशोन्नित अने जगत्‌मां उत्तम एवी रुक्मिणी तथा सत्यन्नामादि कृष्णनी स्त्रीयो, धावमाताउ अने बीजी अनेक स्त्रीयो, महा मुल्यवालां आन्नूषणोने धारण करी मंगलगीतोने गाती छती श्री नेमिनाथने पूर्वान्निमुखे बाजोठ उपर बेसारीने पवित्र जलथी अन्निषेक करवा लागी. पछी बलन्नज, कृष्ण अने पांफवो श्री नेमिनाथना हस्त कमलने विषे उत्तम बाणो आपता छता आ प्रमाणे कहेवा लाग्या के, “हे विन्नो! खरेखर तमेज पुष्परुप आयुधवाला अने रूपलावण्यना सौन्नाग्यनी संपत्तिथी त्रण जगत्‌मां विजय मेलवनार पंचबाण[१] कामदेव छो.” पछी कृष्ण पोतेज श्री नेमिनाथना कंठने विषे हस्त बांध्यो ते एम सूचववाने के, राग रहित पुरुषने विषे शुं मूर्त्तिमंत एवो संसारनो राग प्रवेश करे खरो? अर्थात् नज करे. तेवीज रीते कृष्णे उग्रसेनना घरे जइने राजीमतिने पण स्पष्ट निमित्तनो अर्थ कही संन्नलाव्यो.

पछी लग्नने दिवस चंदननां लेपथी श्रेष्ठ शरीरवाला, कल्पवृक्षनां पुष्पोथी मनोहर, दिव्य आन्नूषणोथी सुशोन्नित अने उत्तम कोमल वस्त्रोने धारण करनारा श्री नेमिनाथने समुज्रविजय राजाए पोताना पट्टहस्ति उपर

१ उच्चाटन, मोहन, आकर्षण, वसिकरण अने स्तंभन ए पांच कामदेवनां बाणो छे.

बेसाख्या. पछी पृथ्वी उपर चालता परिवार सहित दाशार्हनी, बलभद्र तथा कृष्णनी, कोटी कुमारोनी अने बीजा अनेक राजाउनी साथे तथा आकाशमां चालता देवताउनी साथे श्री नेमिनाथ उग्रसेन राजाना घर तरफ चाल्या. पाछल दशार्ह, बलभद्र अने कृष्णनी उत्तम सुशोभित आभूषणोने धारण करनारी तथा सुखासनमां बेठेली लाखो स्त्रीयो मधुर शब्दथी धवलमंगल गीतोने गाती छती चालवा लागी. श्रीजिनेश्वरनां मस्तक उपर स्पष्ट मुक्ताफलोथी सुशोभित नविन छत्र धारण कर्युं. जाणे श्री नेमिनाथना शरीरनी अंदरथीज साक्षात् गुणोनी पंक्ति निकली होयनी? एम प्रभुना बन्ने पासे चंचल चामरोनी पंक्ति शोभती हती. प्रभुनी आगल सुखकारी वाजींत्रो वागता हता. तेमज गंधर्व अने मागध लोको दिव्य गायन करवामां तत्पर थया हता. वली "अखंडित सौभाग्यरूप अमृतना समुद्र, त्रण जगतूनां नेत्रने आनंद पमाडवामां चंद्ररूप अने उज्वल एवा आ श्री नेमिनाथरूप चंद्रमा हवणां जेनो पति थशे, ते कन्या सर्व स्त्रीयोनी मध्ये धन्य अने त्रण जगत्ने मान्य छे. वली निश्चे आथी तेनां पूर्वनां तपनुं फल प्रगट थयुं एम जाणवुं." आम नगरवासी लोको वातो करता हता. आ वखते पृथ्वी उपर माणसो अने आकाशमां देवताउ माता नहोता. आ प्रमाणे म्होटी समृद्धिथी हाथी उपर बेठेला श्री नेमिनाथ प्रभु, उत्तम तोरणोथी सुशोभित एवा उग्रसेन भूपतिना घरप्रत्ये आव्या. पछी जेटलामां पूर्वना आठ भवना मोहथी श्री नेमिनाथने जोवा माटे उत्साहवंत थयेली, शृंगारथी सुशोभित आकृतिवाली, उत्तम आभूषणोने धारण करनारी वली प्रभुने आववाना रस्तामां वारंवार दृष्टि फेंकती अने हृदयमां वारंवार "श्री नेमि श्री नेमि" एम स्मरण करती राजीमती पोतानी सखीयोनी साथे गोखमां उभी हती तेटलामां म्होटा हाथी उपर बेठेला, पृथ्वी उपर कोटि यादवोथी अने आकाशमां कोटि देवताउथी विंटलायला श्री नेमिनाथ प्रभु तोरणे आव्या. श्री नेमिनाथ प्रभुने वारंवार जोइने राजीमतीने उत्कृष्ट आनंदनी संपत्तिथी रोमांच थवा लाग्यो. उग्रसेन पुत्री बहु कालपर्यंत रूपसंपत्तिथी अधिक एवा पोताना भविष्यना पतिने जोइने बहु हर्ष पामती छती मनमां विचारवा लागी. "उत्तम आचरणथी पवित्र एवा अने जगत्मां श्रेष्ठ कहेवाता आ पति पोते आनंदथी लघु एवी मने

परणवा माटे अहिं आवे छे; परंतु म्हारुं पूर्वनुं पुण्य एवुं नथी के, जे ए भाग्यवंत पुरुष मने परणीने तत्काल क्षेमकुशल पोताने घेरे जाय. देव दानवोए प्रशंसा करेला अने स्वर्गाधिपतियोए पूजेला आ वर क्यां? अने धान्यना कीमारुप अल्पगुणवाली तथा हीनलक्षणवाली हुं क्यां?" आ प्रमाणे उग्रसेन पुत्री राजीमती जेटलामां विचार करे छे, तेटलामां तेनुं माबुं अंग अने जमणुं नेत्र फरक्युं. पछी ते राजकुमारीने पोताना शरीरने विषे क्रोध अने उद्वेग उत्पन्न थयो. वली रुंवामे रुंवामे परशेवो पण तेवोज थयो. राजीमतीनी आवी अवस्था अने निरुत्साहपणुं जोइ तेनी सखीयो कहेवा लागी के, "हे सखी! अमंगल शांत शांत थइ गयुं. वली हे शुभे! बहु दुष्ट विकल्पोथी तुं आवी केम देखाय छे?" राजीमतीये कह्युं. "हे सखीयो! म्हारुं माबुं अंग अने जमणुं नेत्र फरक्युं छे; तेथी हुं जाणुं छुं के, मने आ शुभ अवसरे कांइ म्होटुं अमंगल थशे. हे स्नेहवंत सखीयो! एज कारणथी हुं आवी अवस्थावाली थइ छुं."

हवे आ वखते धर्मचक्रवर्त्ती एवा श्री नेमिनाथ जिनेश्वरे रस्तामां अनेक पशुउने जोइने तुरत सारथीने पूछ्युं के, "अरे! रस्तामां आ पशुउने शा माटे बांध्या छे? के, जेउ दया उपजे एवा दीन अने अदीन एवा शब्दो करे छे." सारथीये उत्तर आप्यो के, "ए पशुउनां मांसथी तमारुं गौरव करशे, एटलाज माटे ते शशलां विगेरे पशुउने अहिं एकठां कर्यां छे." सारथीनां आवां वचन सांभलीने दयामय नेत्रवाला प्रभुए, करुणारसने सूचवनारी पोतानी दृष्टि फेंकीने सारथीने कह्युं के, "अरे! कयो दुष्टबुद्धिवालो पापी माणस, प्राणीयोने पीमा उपजाववारुप पाणीग्रहण करे?" पछी दयाना समुद्ररुप जिनेश्वरे, ते मार्गमां बांधेलां जीवोने छोमी मूकीने अने आषाढ मासना मेघनी पेठे सांवत्सरी दान आपीने कृष्णे तथा इंद्रोए करेला महोत्सवपूर्वक त्रणसो राजकुमारो सहित चारित्र लीधुं. प्रभुनी चारित्र लीधानी वात सांभली उत्पन्न थयेलां हृदयदुःखथी पीमा पामेली सती राजीमती मूर्छाथी पृथ्वी उपर पमी गइ. पछी शीतल उपचारथी सचेत थइ एटले ते राजपुत्री, महा दुःखथी पूर्ण थइ छती करुणस्वरथी विलाप करवा लागी. पोताना आत्मानी नींदा करती, आनंदरहित अने प्रभुना वियोगथी आकुलव्याकुल थयेली ते महासती "नेमि नेमि," एम बोलती वारंवार मूर्छा पामवा लागी. पछी उग्र-

सेन नृपतिये त्यां आवीने मधुर वाणीथी कह्युं के, "हे पुत्री ! तुं नेमिनाथनी दीक्षाथी शामाटे खेद करे छे ? हुं यादवोना बीजा राजानी साथे महोत्सवपूर्वक त्हारो पाणिग्रहण करावीश." राजीमतीये कह्युं. "हे तात ! हवे फरीथी तमे मने एवुं कहेशो नहि. म्होटो अथवा न्हानो नृपति श्री नेमिनाथ समान क्यांथी होय ? हे पिता ! जे त्रणलोकना पति छे अने जेमने देव, दानव तथा मनुष्यो पूजे छे तेमनी तुल्यता बीजो म्होटो पण कयो नृपति पामी शके तेम छे ? जो के हवणां नेमिनाथे पोतानो जमणो हाथ मने आप्यो नथी, तो पण ते हुं ज्यारे व्रत अंगीकार करीश त्यारे खेरखर तेज पोतानो हाथ मने आपशे. सती राजीमतीनां आवां व्रतने योग्य वचन सांभली उग्रसेन राजा पोताना चित्तमां बहु हर्ष पाम्यो. पछी संसारना भोगथी विरक्त थयेली, खेदने नहि करती अने प्रभुना नामनो जप करती ते शुद्ध शीलवाली राजीमती पोताना घरने विषे रहेवा लागी.

हवे नेमिनाथनो न्हानो भाइ रथनेमि के, जे युवराज हतो ते राजीमती उपर स्पष्ट बहु राग धरतो हतो, तेथी ते निरंतर वस्त्र, आभूषण अने पुष्पादि मनोहर भेट तेने मोकलतो हतो. राजीमती पण दियरबुद्धिथी रथनेमिये मोकलेली वस्तुने हर्षथी स्वीकारती हती. आथी तो ए रथनेमिकुमार राजीमती उपर वृथा बहु राग धरवा लाग्यो. एक दिवस नेमिनाथनो भाइ रथनेमि राजीमतीने घेर गयो; त्यां ते हास्य वचन बोलवा लाग्यो; परंतु तेणे राजीमतीनी कांइ रुचि जाणी नहि. वली ते फरीथी पण हर्षथी राजीमतीना घेरे आव्यो. आ वखते तेना विना बीजुं कोइ घरमां न होवाथी ते, राजीमतीने कहेवा लाग्यो. "हे सुंदरी ! त्हारा अति सौभाग्यपणाना गुणथी वश्य थयेलो हुं खेरखर त्हारा उपर बहु प्रीतिवालो थयो छुं; माटे साक्षात् कल्पवेल समान तुं शीघ्र प्रसन्न थइने पाणिग्रहण कार्यथी म्हारी आशा पूर्ण कर. आवी समृद्धि, नविन यौवन, इष्टरूप अने सर्व गुणवाली तथा प्रेमवाली त्हारा समान प्रिया ए सर्व त्यजी देनारो म्हारो बंधु निश्चे अवलि बुद्धिवालो थयेलो देखाय छे. कारण बहु पुण्योथी भोगादि मले छे. हे राजपुत्री ! हुं ते श्री नेमिनाथनो बंधु अने गुणना समुद्ररूप छुं, माटे प्रेमनां पात्ररूप म्हारे विषे त्हारुं मन झट स्थापन कर." रथनेमिनी आवी वाणी सांभलीने सती रा-

जीमतीये, तेनुं कामदेवना हेतुरुप पूर्वनुं सर्व गौरवपणुं जाएयुं. पछी मेरुपर्वतनी चूलिकानी पेठे व्रतने विषे निश्चल एवी ते राजीमती जाणे साक्षात् सरस्वतीज होयनी ? एम कहेवा लागी. " हे कपटि ! तुं विद्वान् पुरुषोमां निश्चे छेतराएलो देखाय छे ? हे अज्ञानि ! कारण के, हुं प्रथमथीज धारेला पतिने वरी चूकी छुं ते तुं शुं नथी जाणतो ? आ नवमां तो म्हारे त्हारो म्होटो बंधुज पतिरुप छे. माटे हे महाशय ! तुं आ सर्व दुष्ट विकल्पोने त्यजी दे ! त्यजी दे ! !" राजीमतीये आ प्रमाणे वहु कह्युं; पण कामथी पीमा पामता ते रथनेमीये पूर्वना पापकर्मनी पेठे तेने विषे राग त्यजी दीधो नहि. छेवट राजीमतीये मदनफलना नक्षणथी सुवर्णना पात्रमां नलटी करीने कह्युं के, " हे रथनेमि ! तुं झट हर्षथी आ वस्तुने नक्षण कर. " तेणे कह्युं. " हे सुंदर मुखवाली ! तुं आ शोक करवा योग्य शुं बोले छे ? " राजीमतीये कांइक हसीने ते रथनेमिने कह्युं. " अरे राजपुत्र ! जे तुं पोताना बंधुए त्यजी दीधेली नीरस एवी मने इच्छे छे तो तुं शुं वमेली वस्तुने इच्छनारो नथी ? " राजीमतीनां आवां वचनथी बोध पामेलो रथनेमि, तुरत तेनी साथे पाणिग्रहणनी इच्छाने त्यजी दइ पोताने घरे चाल्यो गयो.

" हवे बीजा दिवसे वरदत्तना घरने विषे श्री नेमिनाथे पारणुं कर्युं. ते वखते त्यां आकाशमां दिव्य वाजींत्रोना शब्दपूर्वक देवताओए सामाबार क्रोम सोनैयानी वृष्टि करी. त्यार पछी प्रमाद रहित एवा प्रभु चोपन दिवस सुधी विहार करीने रेवताचलना नद्यानने विषे गया. त्यां तेमने आसो मासनी अमासने दिवसे सवारमां चित्रा नक्षत्रना चंद्र छते अठम तपना अवसरे वेतसवृक्षनी नीचे शुक्ल ध्यान ध्यातां त्रण जगत्ना मनुष्यना नावानावने प्रकाश करनारुं केवलज्ञान नत्पन्न थयुं. प्रभुना सर्वे कल्याणकोने विषे दुःखथी वली रहेला नारकी जीवोने पण क्षणमात्र लोकोत्तर सुख प्राप्त थाय छे. पछी पोतपोताना आसन कंपवाथी चोसठ इंडोए त्यां आवीने जिनेश्वर प्रभुनुं समवरण रच्युं. सौधर्मेंद्र पण त्यां आवी जगत्गुरुने नमस्कार करवा पूर्वक आदरथी आ प्रमाणे विनंती करवा लाग्यो. " हे नाथ ! आप आ समवसरणने सुखे करीने पवित्र करो के, जेमां नव्यजनो तमारां मुखथी धर्मरूप अमृतनुं पान करे. " सौधर्मेंद्रनी विनंतीनो स्वीकार करीने नविन एवा सुवर्णनां क-

मलने विषे चरणकमलने मूकता तथा देवेंद्रोए " हुं पेलो हुं पेलो, " एवा आग्रहथी आगल तथा पाछल सेवन करेला प्रभु पूर्वद्वारे थइने समवसरणमां आव्या. त्यां ते त्रण प्रदक्षिणा करी तथा तीर्थपतिने नमस्कार करी सिंहासन उपर बेठा. ते वखते आश्चर्यकारी रीते प्रभुनुं मुख्य रूप पूर्व दिशा तरफ अने बीजा त्रण अदृश्य रूप बीजी दिशाउमां प्रभुना प्रभावथी आश्चर्यकारीपणे शोभतां हतां. पछी रेवताचलना उद्यानपालके तुरत द्वारकामां आवीने प्रभुने केवलज्ञान उत्पन्न थयानी वधामणी कृष्णने आपी. कृष्णे वधामणीमां तेने साडावार क्रोड रुपाम्होर आपी. योग्यज छे. बीजाउने तुष्टिदान आपवामां कृष्णनी रीत एवीज छे. पछी कृष्ण, बलभद्रनी, दशार्होनी, बीजा हजारो राजाउनी अने कोटिकुमारोनी साथे समवसरण प्रत्ये गया. त्यां कृष्णादि तेउ सर्वे, जगत्गुरुने प्रणाम करीने पोतपोताना योग्य आसने बेठा. पछी श्री नेमिनाथ प्रभुए एवी रीते धर्मदेशना आपी के, जेथी अनेक भव्यजनो धर्मकार्यमां तत्पर थया. वली तेउमां वरदत्त भूपतिये तो बहु वैराग्यने लीधे बीजा अनेक राजाउ सहित श्री जिनेश्वर पासे दीक्षा लीधी. उग्रसेनादि दाशार्होए तथा बीजा भूपतियोए श्रावकधर्म आदर्यो अने कृष्ण विगेरे आदरथी समकित पालवा लाग्या. राजपुत्री दक्षिणाये बीजी बहु स्त्रीयो सहित निर्मल भावथी श्री तीर्थंकर प्रभु पासे चारित्र लीधुं. अदीन वाणिवाला अने शुद्ध आत्मावाला वरदत्त मुनीश्वरे दश साधुउ सहित प्रभुनां मुखकमलथी त्रिपदीने पामी बहु अर्थवाली द्वादशांगी रची. पछी वरदत्तनी विनंती उपरथी प्रभुए ते द्वादशांगीने शुद्ध मानीने सूत्र तथा अर्थथी शुद्ध एवी ते द्वादशांगीने प्रमाण करी. पछी देवेंद्रोए करेला महोत्सवपूर्वक प्रभुए वरदत्तादि अग्यार मुनीश्वरोने गणधर पद्वी आपी. त्यारबाद अवसर मलवाथी कृष्णे, त्रण जगत्ना गुरु एवा श्री नेमिनाथ प्रभुने पूछ्युं के, " हे प्रभो! राजीमती तमारे विषे बहु राग शा माटे धारण करे छे? " पछी प्रभुए धन अने धनवतीथी आरंभीने पोताना पूर्वना आठ भवनुं वृत्तांत कहीने कृष्णनो संदेह दूर कर्यो. पछी चार प्रकारना संघनी स्थापना करी धर्ममय जलवृष्टि करता छता जिनेश्वर प्रभु बीजा देशमां विहार करवा लाग्या.

केटला वर्षो सुधी पृथ्वी उपर विहार करीने फरी प्रभु देवताउए परवर्या छता फरी द्वारका नगरी प्रत्ये आव्या. प्रभुनुं आगमन सांभली कृष्ण

विगेरे सर्वे यादवो जिनेश्वर प्रभुनी पासे आवी आदरथी देशनारुप अमृतनुं पान करवा लाग्या. आ वखते एक फक्त वासुदेव विना सर्वे दाशार्होए, रथनेमि विगेरे समुद्रविजय राजाना पुत्रोए, बहु एवी कृष्णनी स्त्रीयोए अने कोटि कुमारोए वैराग्यथी प्रभु पासे चारित्र लीधुं. संसारथी वैराग्य पामेली राजीमतीये पण पोताना बंधुवर्गनी रजा लइ अनेक स्त्रीयोनी साथे हर्षथी दीक्षा अंगीकार करी. पछी रथनेमि मुनीश्वर पण वृद्धि पामती श्रद्धावमे स्थविर मुनिनी पासे सर्व क्रिया करवा लाग्या. तेमज सिद्धांत जाणवामां आसक्त थयेली साध्वी राजीमती पण प्रवर्त्तिनीयोनी पासे शुद्धक्रिया करवा लागी.

हवे कोइ वखते रथनेमि मुनि, कांइ कार्य प्रसंगे बहार जता हता एवामां रस्ते वर्षाद वरसवा लाग्यो एटले सचित्त जलना भयथी ते महा मुनीश्वर एक गुफामां पेठा. आ वखते राजीमती पण केटलीक साध्वीयो सहित श्री नेमिनाथ प्रभुने वांदवा माटे आवती हती. पोताना शरीर उपर वर्षादना छांटा पमवा लाग्याथी सर्वे साध्वीयो अपकाय जीवोनुं रक्षण करवा माटे जूदी जूदी गुफाउमां जइ रही. राजीमती पण बहु अंधाराने लीधे गुफानी अंदर रहेला रथनेमिने नहि जाणती छती दैवयोगथी तेज महा गुफा प्रत्ये गइ. गुफा अंदर बहु विस्तारवाली होवाथी तेमां पोतानां भींनां थयेलां वस्त्रोने सूकवती तथा सुवर्ण समान उज्वल देहकांतिने विस्तारती राजीमतीने जोइ गुफानी अंदर रहेला, शरीरनी अंदर स्फुरी रहेला पूर्वना रागवाला अने कामबाणथी पीमा पामेला रथनेमि बहु निर्लज्ज बनी गया. अनुक्रमे त्यां गुफामां प्रकाश थयो एटले राजीमतीये चारित्रने नाश करवामां उत्साहवंत थयेला ते श्रेष्ठ मुनिने दीठा एटले लज्जाथी नम्र मुखवाली ते महासती झट वस्त्रो पहेरी तथा सर्व अंगने संवरी बहार वरसाद वर्षतो होवाथी त्यां गुफामांज उभी रही. पछी वृद्धि पामती कलाक्रिमाथी व्याकुल थयेला रथनेमि मुनि, पोतानी चतुराइने प्रगट करता छता राजीमतीने आ प्रमाणे केहेवा लाग्या.

" सौभाग्यना साररुप, सफल अवतारवाली अने श्रेष्ठ मुखवाली हे राजीमती! त्हारे विषे प्रेम धारण करनारो ते हुं रथनेमि छुं. हे भद्रे! मने भज, पूर्वनी पेठे म्हारी याचनाने वृथा न कर. संतुष्ट मनवाला आपणे बन्ने जणा प्रथम महा भोगथी आ युवावस्थाने कृतार्थ करीए अने पछी वृद्धाव-

स्थामां जिनेश्वरे कहेला धर्मने शुद्ध ज्ञावथी पालिशुं. " रथनेमिनां आवां कानने विषे शूल समान वचन सांज्ञलीने पण मेरुपर्वतना शिखरनी पेठे स्थिर रहेली राजीमतीये कह्युं. " अरे मूढ ! तुं श्री अरिष्टनेमिनो बंधु तेमज शिष्य थइने निर्लज्जनी पेठे म्हारी आगल सर्व प्रकारे कुल, शील तथा व्रतने विरोध करनारुं, मुक्तिमार्गने रोकनारुं तथा नरकमार्गने देखाम्नारुं आ शुं बोले ठे ? ज्ञोगो फक्त आरंज्ञमांज मधुर, परंतु अंते तो वहुज कम्वा लागे ठे; माटे जो तुं आत्माने विषे स्पृहा राखतो होय तो तेथी विराम पाम. जो के तुं रूपथी कामने जीतनारो ठे, यौवनथी पण तेवोज ठे. वली त्हारी क्रीमा कृष्णथी अधिक ठे तो पण हुं त्हारे विषे रुचि करती नथी. आ जीव नाशवंत स्वज्ञाववाला, अति तुछ अने अंते महा दुःखकारी एवा असंख्य ज्ञोगोने ज्ञोगवीने पण तृप्ति पाम्यो नथी. जन्म जरा अने मृत्य रहित एवा शाश्वत सुख इछनारा संत पुरुषो तो निरंतर पोताना आत्माने विषे शीलव्रतने पाले ठे. हे साधो ! जरा विचार तो कर के, पूर्वे बे प्रकारना विषम रागोने त्यजी देनारा पुरुषो शीलव्रत लोपवाथी आ संसारने विषे ज्ञम्या ठे. अरे सौम्य ! तुं पोताने स्वाधिन एवा जे जे ज्ञोगो जूए ठे तेने तेने विषे जो आवी रीते हठथी प्रीति करीश तो तने धीरज क्यांथी थशे, माटे एक एकांत सुखना स्थानरुप मोक्षनेज स्वीकारी बीजा कोइने विषे अनुरागवालुं मन न कर. "

राजीमतीनां आवां अमृतमय हितकारी वचन सांज्ञलीने रथनेमिये पोतानुं मन ज्ञूमिनी पेठे चारित्रने विषे स्थिर कर्युं. पठी कामक्लेशने नाश करता ठता ते महामुनि, पोताना शीलमय तेजथी सूर्यनी पेठे शोज्ञवा लाग्या. वली ते रथनेमिये " मने मिथ्या दुष्कृत हो. " एम राजीमतीनी क्षमा मागीने चारित्रने विषे धीरजपणुं धारण कर्युं. पठी वैराग्यने पामेला ते बन्ने जणा उत्तमज्ञावने लीधे एक वर्षमां केवलज्ञान पाम्या. अनुक्रमे गुणना समुद्ररुप ते बन्ने जणा पांचसो वर्ष सुधी केवलज्ञान संपत्तिने ज्ञोगवी कर्मक्षयथी मोक्षपद पाम्या. राजीमती अने रथनेमिये चारसो वर्ष गृहावास, एक वर्ष चारित्र अने पांचसो वर्ष केवलीपणे निर्गमन कर्या. हे ज्ञव्यजनो ! त्रण जगतने विषे ब्रह्मचर्य व्रतने प्रसिद्ध करनारुं अने श्री नेमिनाथ तथा राजीमतीना संबंधथी पवित्र थयेलुं आ रथनेमि मुनिनुं चरित्र सांज्ञली तमे विषया-

शक्ति त्यजी दइ निरंतर मोक्ष लक्ष्मीना कारणरुप अने संसारने नाश करनारा ब्रह्मचर्य व्रतने विषे आदर करो.

॥ इति श्री नेमिचरित्रगर्भित राजिमती तथा रथनेमिनी कथा ॥

जालिमयालिउवयालि, पुरिससेणो अ वारिसेणोय ॥
पज्जुन्न संबअनिरुद्ध, सच्चनेमि अ दढनेमि ॥ १० ॥
पन्नासंपन्ना सं-त्तजा चइत्तु बारसंगधरा ॥
सोलससमपरिआया, सिद्धा सेत्तुजए दसवि ॥ १ए ॥

अर्थ—जालि, मयालि, उपजालि, पुरुषसेन, वारिषेण, प्रद्युम्न, शांब, अनिरुद्ध सत्यनेमि अने दृढनेमि ए दशे यदुकुमारो, पोतपोतानी पांचसो पांचसो स्त्रीयोने त्यजी दइने दीक्षा लइ अनुक्रमे द्वादशांगीने धारण करनारा थइ शोल वर्ष पर्यंत दीक्षा पर्याय पालता उता श्री शत्रुंजय पर्वत उपर सिद्ध थया. ॥ १०–१ए ॥

जालि विगेरे कुमारोनी कथा.

द्वारका नगरीमां वसुदेव नृपतिनी स्त्री धारिणीने जालि, मयालि, उपजालि, पुरुषसेन अने वारिषेण नामना पांच पुत्रो हता. कृष्णने रुक्मिणी थकी उत्पन्न थयेलो, शांत अने सर्व पुत्रोमां मुख्य एवो प्रद्युम्न नामे पुत्र हतो. तेमने वीजो जांबुवतीथी जन्मेलो महापराक्रमी शांब पुत्र पण हतो. प्रद्युम्नने वैदर्भीथी उत्पन्न थयेलो अनिरुद्ध नामे पुत्र हतो. समुद्रविजय राजाने सत्यनेमि अने दृढनेमि नामे पुत्रो हता. आ सर्व पुत्रोने पिताए आदरथी महोत्सव पूर्वक यौवनावस्थामां पांचसो पांचसो स्त्रीयो परणावी हती. वली ते कुमारो हस्तमेलाप वखते कोटी प्रमाण धन अने दासीयो पाम्या हता. तेमज तेउ पोतपोताना पराक्रमथी वीजी अनेक स्त्रीयो परण्या हता. तेमां सांब अगीयारसो कन्या परण्यो हतो.

एक दिवस श्री नेमिनाथ प्रभुनो अखंडित उपदेश सांभली ते दशे पुत्रो नोगनो योग उतां पण चारित्रवासना पाम्या, पठी मातापितानी तेमज

स्त्रीयोनी रजा लइ ते दशे पुत्रो श्रीजिनेश्वर पासे व्रत अंगीकार करी अनुक्रमे द्वादशांगीना जाण थया. शोल वर्ष पर्यंत निर्दूषण एवां चारित्रने पाली शत्रुंजय नामना तीर्थने विषे तेन सिद्धिसुख पाम्या. अहो ! युद्धमां सुरवीर, क्रीडामां प्रीतिवाला, महाबलवंत अने क्षीण थयां छे कर्म जेमना एवा ते सर्वे कुमारो कोने प्रशंसा करवा योग्य न थया ? अर्थात् सर्वने वखाणवा योग्य थया छे.

॥ इति जालि प्रमुख कुमारोनी कथा ॥

बत्तीसपुरंधिवई, देवइपूत्ता अणीइजसपमुहा ॥
छप्पिअ नेमिसुसीसा, चउदसपूव्वी गया सिद्धिं ॥ ९ए ॥

अर्थ—गृहावासमां बत्रीश बत्रीश स्त्रीयोना पति एवा अनीकयश विगेरे देवकीना छए पुत्रो, श्री नेमिनाथ प्रभुना शिष्य थइ चौद पूर्वधारी थया छता मोक्षगति पाम्या ॥ ९ए ॥

देवकीना ठ पुत्रोनी कथा.

अमरावती नगरीनी समृद्धिरुप लक्ष्मीनुं स्थान, भरतक्षेत्रनी भूमिनुं आभरण अने उत्तम धर्मनुं मंदिर एवुं भद्दिलपुरनामे नगर छे. त्यां जेनी कीर्तिरुप हंस जगतरूप कमलमां क्रीडा करी रह्यो छे एवो जितशत्रु नामे राजा अखंडित साम्राज्यने भोगवतो हतो. ते नगरमां गुणलक्ष्मीये करीने श्रेष्ठ एवो पुंनाग नामे शेठ वसतो हतो. तेने निर्मल शीलरुप गुणवाली अने स्त्रीयोमां मुख्य एवी सुलसा नामे प्रिया हती. तेनने चंद्रसमान उज्वल कीर्तिने धारण करनारा, न्याय विनय युक्त अने भूपतिनां लक्षणोवाला तिलकयश, श्री अजितसेन, अजितसेन, अनिहतरिपु, सुदेवसेन अने शत्रुसेन एवा नामना अनुक्रमे छ पुत्रो थया. पछी जेटलामां तेन स्त्रीयोनां मनने विनोदकारी यौवनावस्था पाम्या तेटलामां मातापिताए तेमने एक एकने बत्रीश बत्रीश कन्यान परणावी. हस्तमेलाप वखते ते छए कुमारो, पोतपोताना सासरान पासेथी बत्रीश बत्रीश क्रोड रुपामहोर अने सोना म्होर पाम्या. उत्तम बुद्धिवाला ते दरेक कुमार, वैमानने पण जीतनारा एवा बत्रीश बत्रीश मंदिरोमां तरुणी-

ज संख्यावाली स्त्रीयोनी साथे विलास करता हता. आ अवसरने विषे श्री नेमिनाथ प्रनु ते नगरीना उद्याननेविषे समवसस्या. जितशत्रु राजा परिवार सहित तेमने वंदन करवा गयो. तिलकयशादि व पुत्रो पण श्रीजिनेश्वरना आगमनने सांनली बांधवोनी साथे हर्षित थया बतां पोतपोतानी म्होटी संपत्तिथी उद्याननेविषे समवरणमां गया. त्यां शुद्ध नाववाला तेज पवित्र विधिथी जिनेश्वरने प्रणाम करीने प्रनुना सन्मुख दृष्टि राखी योग्य आसने बेठा. प्रनुए पर्षदामां अमृत समान वाणीवमे धर्मोपदेश आप्यो. पढी लोको धर्मने अंगीकार करी पोतपोताने घरे गया. तिलकयशादि व कुमारो पण जिनेश्वरनी देशनाथी वैराग्यने पाम्या बता प्रनुने नमस्कार करी चारित्र लेवानी बुद्धिथी पोताने घेर गया. पढी पोतानो संकल्प पार पामवामां तत्पर एवा ते बए पुत्रोए विषयसुख, लक्ष्मी, स्त्री अने प्रेमादि सर्वने अति कष्टकारी जाणीने महा आग्रहथी मातापिताने प्रबोध पमामी अने पोताना पगनां रजनी पेठे कोटि ड्रव्यने पण क्रीमामात्रमां त्यजी दइ श्री नेमिनाथ प्रनु पासे नावथी दीक्षा लीधी. वली तेजए तेज दिवसे प्रनु पासे एवो घोर अनिग्रह लीधो के, "अमारे जीवित पर्यंत अखंमितरीते बठनो तप करवो." पढी उपशम रसथी पूर्ण हृदयवाला ते ब मुनियो अनुक्रमे बार पूर्वनो अन्यास करी निरंतर श्री नेमिनाथ प्रनु साथे विहार करवा लाग्या.

कोइ वखते कोटि देवताउ जेमनां चरणकमलने वंदना करी रह्या बे एवा श्री नेमिनाथ जिनेश्वर तिलकयशादि ब मुनियोनी साथे विहार करता करता श्री गिरनार पर्वतना म्होटा उद्यानमां समवसस्या. वनपालनां मुखथी श्री नेमिनाथनां आगमनने सांनली बलनद्र सहित कृष्ण आनंदथी त्यां समवसरणमां आव्या. कृष्ण जिनेश्वरनां मुखथी संसारना नयने नाश करनारी देशना सांनलीने धर्ममां अधिक श्रद्धावंत थया बतां फरी पोतानी नगरी द्वारका प्रत्ये गया. पढी बठना पारणे तिलकयशादि ब मुनियो, बे पोरसी पूर्ण थया पढी पमिलेहण करेलां वस्त्र पात्रने लइ हाथ जोमी अने श्री नेमिनाथने नमस्कार करीने कहेवा लाग्या. "हे प्रनो! अमे बबे जणा एकवा थइने द्वारका नगरीमां गोचरी माटे जइए बीए." पढी "तमारे सावधानपणाथी जवुं." एवां प्रनुनां वचनमंत्रने अंगीकार करी तेज विधिपूर्वक

नाना प्रकारनां कुलोथी ज्ञरपूर एवी द्वारका प्रत्ये चाल्या. हवे ते छ मुनियो मांहेना वे मुनियो ज्ञावथी उंचनीच घरो प्रत्ये फरता फरता ज्ञाग्यवशथी तत्काल देवकीनां घरनां आंगणामां आवी पहोच्या. विवेकना जाण, ज्ञद्रासन उपर बेठेला अने पोतानी सखीयोथी परवरेला देवकी ते वे मुनियोने जोइ तुरत ज्ञक्तिथी तेमनी पासे गया अने प्रदक्षिणापूर्वक वंदना करी तेमणे हर्षथी तेमने स्निग्ध मोदको वहोराव्या. पछी ते मुनियो गया अने तेमना समान आकृतिवाला बीजा वे मुनियो तेज वखते देवकीनां आंगणामां आव्या. तेमने पण कृष्णमाताए ज्ञावथी मनोहर मोदकनां ज्ञोजनवमे प्रतिलाज्ञ्या. तेउ गया अने पछी त्रीजा वे मुनियो पण फरता फरता त्यां आवी चम्या. तेमने पण ज्ञावथी तेवाज ज्ञोजनवमे प्रतिलाज्ञीने शंकायुक्त थयेला देवकीये पूछ्युं. "हे ज्ञगवंतो! आ अमरावती समान द्वारका नगरीमां श्रेष्ठ मुनियो, शुं तेना तेज घरो प्रत्ये वारंवार फरता हशे? अर्थात् तमे एकना एक वारंवार म्हारे घेर केम आवो छो?" मुनियो देवकीना ज्ञावने जाणीने कहेवा लाग्या.

"हे कृष्णमाता? श्रेष्ठ साधुउ निर्दोष आहारने माटे मधुकर (ज्रमर) वृत्तिये करीने नाना प्रकारनां घरो प्रत्ये फरे छे. महा मुनियो क्यारे पण एक गृहस्थनां घरप्रत्ये वारंवार जता नथी. हे शुज्ञे! तमने अमारा विषे जे ज्रांति थइ छे, तेनुं कारण सांज्ञलो. ज्ञद्दिलपुरमां महा धनवंत एवा पुंनाग अने सुलसाना अमे छ पुत्रो छीए. यौवनावस्थाने पामेला, विवाह करेला अने उत्तम ज्ञोगलक्ष्मीना वहु विलासने ज्ञोगवता अमे छए ज्ञाइयो श्री नेमिनाथ जिनेश्वरना उपदेशथी प्रतिबोध पामीने दीक्षा लइ तेमनीज साथे विहार करीए छीए. आजे छठना पारणे आ द्वारका नगरीमां आव्या छीए. अमे छए साधुउ वबे वबेना जथाथी तमारा घरने विषे आव्या हइशुं; परंतु एकना एकज वे साधुउ त्रण वखत आवीए एम वने नहि." आ प्रमाणे ते वन्ने साधुउ देवकीनी ज्रांति निवृत्त करी चाल्या गया. पछी देवकी पोताना मनमां विचार करवा लागी के, "ते सुलसा लोकने विषे शाथी पुत्रवाली कहेवाणी? निश्चे हुंज पुत्रवाली छुं, एवो जे हुं वहु गर्व धारती हती तेतो वृथा देखाय छे. सुलसाना छए पुत्रो रूपादिगुणे करीने जेवा देखाय छे तेवा लोकने विषे बीजी कोइ स्त्रीना देखाता नथी. माटे चाल प्रज्ञु पासे जइने हुं म्हारो पोतानो संदेह टालुं."

आ प्रमाणे विचार करीने सखीयो सहित देवकी तुरत पोताना सज्ज करेला रथ उपर बेसीने समवसरणमां आवी. त्यां ते जिनेश्वरने वंदना करी वारंवार कहेवा लागी के, “ हे स्वामिन् ! म्हारो संशय टालो. ” आ प्रमाणे देवकीना वारंवार पूछवा उपरथी प्रभुए साक्षात् दराखना समान मधुर वाणीथी कह्युं. “ भद्दिलपुरमां पुंनागशेठनी सुलसा नामे स्त्री छे. ते हमेशां भावथी हरिनैगमेषि देवतानुं आराधन करती हती. जो के एक चित्तथी आराधन करती सुलसा उपर ते देवता बहु प्रसन्न हतो; परंतु ते तेना पूर्वभवना पापथी मृत्यु पामता पुत्रोने जीवाडी सकवाने समर्थ थतो नहि. आ वखते एम बन्युं हतुं के, मथुरा नगरीमां क्रूर अने अति दुष्ट चित्तवाला कंसे त्हारा सात गर्भोने नाश करवानो निश्चय कर्यो हतो. देवताना प्रभावने लीधेज तुं अने सुलसा साथेज गर्भवती थइ हती. कह्युं छे के–देवतानी कांइ पण शक्ति कोइ नाश करवा समर्थ नथी. पछी तें अने सुलसाए साथेज पुत्रने जन्म आप्यो एटले ते हरिनैगमेषि देवताए त्हारा तुरतनां जन्मेलां बालकने सुलसानी पासे मूक्यो अने तेनो मृत्यु पामेलो पुत्र त्हारा घरने विषे आण्यो. आ फेरफार कोइए क्यारे पण जाण्यो नहोतो. हे देवकी ! मेघ समान कांतिवाला अने दिव्य रूपवाला ते त्हारा छए पुत्रो सुलसाना घरने विषे वृद्धि पाम्या. पछी युवावस्था पाम्या एटले मातापिताए ते एक एकने बत्रीश बत्रीश कन्याउ परणावी तथा तेटलीज कोटि सुवर्ण आप्युं. पछी म्हारी देशनाथी अधिक विवेकवंत थयेला अने संसारथी वैराग्य पामेला ते छए पुत्रोए तृणनी पेठे विषय तृष्णाने त्यजी दइ दीक्षा लीधी. हे कृष्णमाता ! निरंतर हर्षथी छठना अभिग्रहने धारण करनारा, द्वादशांगीना जाण अने निर्मल चरण करणना धारणहार आ छए मुनियो त्हारा पुत्रो छे. ” जिनेश्वरनां आवां वचन सांभलीने देवकी, समवसरणने विषे साधुउनी पंक्तिमां बेठेला अने महा तीव्र तपवाला ते पोताना पुत्रोने जोवा लागी. पछी उत्पन्न थयेला महा स्नेहथी झरता स्तनवाली तथा अत्यंत संतोषित मनवाली देवकी, तुरत ते पोताना पुत्ररूप मुनियोनी पासे आवी. त्यां ते बहु वखत सुधी एक दृष्टिथी तेमने नीहाली तथा जिनेश्वर प्रभुने नमस्कार करीने तुरत रथमां बेसी जेटलामां पोताना घर प्रत्ये गइ तेटलामां तेना चित्तने विषे अति दुःखकारी चिं-

ता उत्पन्न थइ के, " हा ! में ० पुत्रोने जन्म आप्यो; परंतु एकेने लालन पालन कर्यो नहि. ए ० पुत्रोना उपर आ अर्द्ध भरतक्षेत्रनो अधिपति कृष्ण थयो ते पण यसोदाना घरने विषे वृद्धि पाम्यो. हा धिक्कार छे मने !!! सर्व स्त्रीयोमां तेनेज धन्य छे के, जे पोताथी उत्पन्न थयेला पुत्रोने हर्षथी पोतेज लाड लडावे छे. खरेखर स्त्रीयोमां भाग्यहिन हुंज छुं के, जे में एके पुत्रने लाड लडाव्यो नहि. " आ प्रमाणे खेदयुक्त चित्तवाली अने झरतां नेत्रवाली देवकी, शोक करती हती ते वखते परिवारथी विंटलायेला कृष्ण, पोतानी माताने वंदन करवा माटे उत्साहथी त्यां आव्या. ज्यारे अर्द्ध भरतक्षेत्रना अधिपति एवा कृष्णे, पोतानी मातानां चरणमां नमस्कार कर्यो ते वखते तेमणे देवकीने वहु दुःखथी पीडा पामेला जाण्या, तेथी तेमणे हाथ जोडीने कह्युं के, " हे माता ! हुं राज्य भोगवता छतां तमने कोणे दुःख दीधुं ?" कृष्णे वहु आग्रह कर्यो एटले देवकीये पोतानां दुःखनुं कारण कही संभलाव्युं. ते उपरथी सर्व अर्थने विषे सामर्थ्यपणुं धारण करनारा कृष्णे कह्युं. " हे मात ! तमे हृदयमां वहु दुःख न पामो. हुं तेवुं करीश के, जेथी म्हारो न्हानो वंधु तमारा हर्षने पूर्ण करनारो थशे. " आवां प्रिय वचनथी पोतानी माताने हर्ष पमाडीने कार्यसिद्धिनो विचार करता एवा यशधारी कृष्ण पोताना मंदिर प्रत्ये आव्या. पछी प्रातःस्नान करीने पोताना मध्य गृहमां दर्भना पवित्र आसन उपर वेसी हरिनैगमेषी देवताने उद्देशी अठमनो तप करता छता ब्रह्मचर्यने विषे चित्तने धारण करनारा अने पद्मासने वेठेला कृष्णे अखंडित एवा ध्याननो आरंभ कर्यो. पछी कृष्णना तपोभाग्यथी खेंचायेलो हरिनैगमेषी देव, त्रीजा दिवसनी रात्रीये प्रगट थइने कृष्णने कहेवा लाग्यो. " हे विष्णो ! तमे मने केम संभार्यो छे ? अने तमारे म्हारुं शुं काम छे ? हे जनार्दन ! जे होय ते झट कहो के, जेथी हुं ते शीघ्र करी आपुं." पछी कृष्णे ध्यान मूकी दइ विधिथी सत्कार करीने तेने कह्युं. " मने न्हानो वंधव आप. " देवताए ज्ञानोपयोगथी विचारीने कह्युं. " हे शौरी ! तमने थोडा वखतमां एक न्हानो वंधव प्राप्त थशे; परंतु ते युवावस्थामां वैराग्यवंत थइने तत्काल दीक्षा लेशे. " देवतानां आवां मधुर वचनथी कृष्ण वहु संतोष पाम्या. पछी कृष्णे वहु मान पूर्वक देवताने रजा आपी अने देवतानां वचन

पोतानी माता देवकीने कहीने तेमने परिवार सहित बहु संतोष पमाम्या.

पछी जेम सिंह पोताना निवासथी पर्वतनी गुफाने सुशोभित बनावे तेम तेज दिवसे स्वर्गथी चवेलो कोइ पुण्यवान् जीव, देवकीना उदररुप गुफाने शोभाववा लाग्यो. देवकीये स्वप्नमां सिंह दीठो ते वात तेणे पोताना पति वसुदेवने कही एटले तेमणे पण कह्युं के, " हे देवी ! निश्चे तने सर्व गुणवालो एक पुत्र थशे. " पछी पूर्ण अवसरे शुभ लग्नमां देवकीये हाथीना तालवा समान अति कोमल अने श्रेष्ठ लावण्यथी रसाल एवा एक पुत्रने जन्म आप्यो. आ वखते कृष्णे तथा वसुदेवे बहु मणि अने कोटि सुवर्णना दानथी द्वारका नगरीमां म्होटो जन्म महोत्सव कर्यो. अगीयारमे दिवसे सूतक निवृत्त करीने बारमे दिवसे हर्षित एवा मातापिताए तथा कृष्णे, सर्व बंधुजनोने संतोष पमामीने हस्तिना तालवानी पेठे अति कोमलपणाने लीधे ते पुत्रनुं विविध प्रकारना महोत्सव पूर्वक " गजसुकुमाल " एवुं यथार्थ नाम पाम्युं. बालक अवस्थामां पांच धाव माताउथी पालन कराता अने उत्कृष्ट वृद्धि पामतो ते कुमार मातापिताने बहु हर्ष पमामवा लाग्यो.

अनुक्रमे कमल समान देहवालो ते कुमारे सद्गुरु पासेथी सर्व कलानो अभ्यास कर्यो. आ अवसरे रेवताचल (गिरनार) पर्वत उपर श्री नेमिनाथ समवसर्या. उद्यानपालके कृष्णने वधामणि आपी एटले बहु हर्ष पामेला कृष्ण पण पोताना लघु भाइनी साथे स्नानथी शरीर पवित्र करी अने सुशोभित आभूषणो धारण करी श्रेष्ठ पट्टहस्ति उपर बेठा. पछी श्री नेमिनाथने वंदना करवाने उत्साहवंत थयेला कृष्ण म्होटी सेनाथी परवर्या छता महा समृद्धिथी राजमार्गे आवी पहोच्या.

हवे द्वारकामां सर्व वेदनो जाण सोमिल नामे ब्राह्मण वसतो हतो. तेने सोमा नामनी स्त्रीथी उत्पन्न थयेली सोमश्री नामनी एक पुत्री हती. जगत्मां सर्वोत्कृष्ट रूपने धारण करती यौवनावस्थाने पामेली अने शृंगार धारण करवापूर्वक सखीयोनी साथे क्रीमा करती ते महा रूपवती सोमश्रीने जोइ बंधुना हितेच्छु एवा कृष्ण विचार करवा लाग्या.

" निश्चे गजसुकुमाल बंधुने रूपगुणे समान आज स्त्री योग्य छे. " पछी कृष्णे सोमश्रीना मातापिता जाति विगेरे जाणी लइने पछी पोताना सेवको-

कह्युं के, "हे प्रभो! तमे सोमिल ब्राह्मण पासे जइ तेने कोटि द्रव्यथी
तोष पमाडीने आ म्हारा बंधुना विवाहने माटे तेनी पुत्री सोमश्रीनुं मागुं
करो अने ते विप्रनी आज्ञाथी उत्तम आभूषणोने धारण करनारी ते कन्याने
विश्वास पमाडीने सखीयोनी साथे कन्याओना अंतःपुरमां राखो." कृष्ण आ-
रीते कन्या संबंधि पोताना सेवकोने शीखामण आपीने पछी समवसरण-
मां जइ श्री जिनेश्वरे कहेलो धर्मोपदेश आ प्रमाणे सांभलवा लाग्या. "हे
भव्यजनो! कडवा फले करीने नरकगति आपनारा, विषयरूप खारा जल-
वाला, मोहरूप महा कादवथी परिपूर्ण, संकल्परूप म्होटा उछलता कल्लोल-
वाला आ संसाररूप समुद्रमां पडता एवा मनुष्योने चारित्ररूप वहाण विना
शरण नथी थतुं. विषयो किंपाकफलनी उपमावाला छे, शरीरकांति नाशवंत
स्वभाववाली अने लक्ष्मी चपल छे. वली स्वजनोनो समागम तथा वियोग
पण हमेशां मल्या करे छे. अहो! संसारने विषे बहु विषम भ्रांतियो छे, माटे
हे भव्यजनो! तमे मोक्षसुखने माटे प्रकट उद्यम आचरो." जिनेश्वर प्रभु-
ना आवा श्रेष्ठ उपदेशथी भावित चित्तवाला सर्वे सभाजनो संसार उपर वि-
रागपणुं देखाडता छता पोतपोताने घेर गया. पछी चारित्रमोहनी कर्मनो
क्षय थवाथी विशेष प्रबोध पामेला गजसुकुमाले अरिहंत प्रभुने नमस्कार क-
रीने विनंती करी के, "हे स्वामिन्! हुं म्हारा मातापिता अने कृष्ण विगेरे
स्वजनोनी रजा लइ जेटलामां व्रत अंगीकार करवा अहिं आवुं त्यां सुधी
आप अहिंज रहेजो." आ प्रमाणे गजसुकुमार प्रभुने विनंतीपूर्वक नमस्कार
करी घेर आव्यो. त्यां ते हाथ जोडीने वंदनपूर्वक पोताना मातापिताने कहे-
वा लाग्यो के, "हे मातापिता! तमे म्हारा उपर प्रसन्न थइ झट आज्ञा आ-
पो के, जेथी हुं नेमिनाथ प्रभु पासे चारित्र लउं." आवां वियोग वनने वृद्धि
पमाडवामां मेघ समान पुत्रनां वचनने सांभली मनमां बहु खेद पामती दे-
वकीये कह्युं. "गुणना समुद्ररूप, पोताना कुलरूप कमलने प्रफुल्लित करवामां
सूर्य समान अने श्रेष्ठ रूपना समूहवाला हे पुत्र! तुं मातापितानो भक्त छतां
आवां कठोर वचन शा माटे कहे छे? हे पुत्र! तुं खरेखर म्हारुं जीवित, आ-
भरण तथा जीवरूप छे. वली वधारे शुं कहुं, परंतु प्रेमनो समुद्र अने तीर्थ
पण तुंज छे. पोतानां घरनां श्रेष्ठ आभूषणरूप तुं भोगोने भोगवते छते पुत्रवाली

स्त्रीयो मध्ये हुं पोताने धन्य तथा कृतकृत्य मानुं छुं, माटे हे सुत ! तुं पोतानी माता उपर कृपा करीने युवावस्थापर्यंत विषयसुख भोगव अने वृद्धावस्था प्राप्त थये तुं निश्चे चारित्र अंगीकार करजे." आ प्रमाणे आकुलव्याकुल चित्तवाली मातानां वचन सांभलीने स्थिर बुद्धिवाला गजसुकुमाल कुमारे तुरत मधुर वचनथी कह्युं. " हे मात ! सांभलो, आयुष्य शरदृऋतुना मेघ समान चपल छे. लक्ष्मी पण तेवाज स्वभाववाली छे. वली यौवन पण मदोन्मत्त हाथीना बे कान जेवुंज चपल छे तो हे मात ! हितेछु एवा महर्षि पुरुषोए केवल दुःखना मंदिररूप आ संसारमां सुखना अर्थियोने रहेवुं अयोग्य कहेलुं छे."

आ प्रमाणे माताने समजावी अने पछी व्रतना अर्थी एवा गजसुकुमाले कृष्णनी पासे जइने तेमने पोतानी चारित्र अंगीकार करवानी वात जणावी एटले कृष्णे प्रेमपूर्वक आलिंगन करी उंचा आसने बेसारीने पोताना न्हाना भाइने तुरत कह्युं के, " त्हारी व्रतनी वार्ताथी स्वजनादि सर्वे बहु दुःखी थशे, माटे हे वत्स ! तुं हवणां व्रतनी वात त्यजी दइ आ युवावस्थाने विषे श्रेष्ठ एवां राज्यने अंगीकार करी उत्तम भोगाने भोगव." आम स्नेहथी कृष्णे बहु कह्युं; परंतु दृढचित्तवाला तेणे व्रतनो भाव त्यजी दीधो नहि. पछी झरतां नेत्रवाला कृष्णे फरीथी कह्युं. " हे वत्स ! अमे त्हारा एक दिवसना राज्यभोगने जोवा इछिए छीए, माटे तुं एक वखत झट राज्यने अंगीकार कर." पछी गजसुकुमाल " मने थोमा विलंबथी सरयुं; अर्थात् म्हारे थोमा विलंबथी कांइ हरकत नथी; परंतु आ सौ प्रसन्न थाओ." एम धारी मौन रह्या एटले प्रसन्न थयेला कृष्णे तुरत स्वजनोने बोलावी अभिषेकविधि करीने वाजींत्रोना नाद पूर्वक म्होटा उत्सवथी पोताना न्हाना बंधुने राज्यासने बेसाड्या. पछी बीजे दिवस सवारे गजसुकुमाल सर्व बंधुजनोने संतोष पमामी कृष्णे करेला महोत्सवपूर्वक श्रीनेमिनाथप्रभु पासे गया. त्यां तेमणे पंचमुष्टी लोच करीने विधिथी व्रत लीधुं. पछी कृष्ण अनुमोदना करता छता पोताना घर प्रत्ये गया तेमज वसुदेवपिता विगेरे बीजा सर्वे मनुष्यो पण श्रीनेमिनाथने तथा गजसुकुमालने नमस्कार करी हर्ष पामता छता पोतपोताने स्थाने गया.

पछी गजसुकुमाल, चारित्र लीधुं तेज दिवसे श्रीनेमिनाथने नमस्कार

करी हाथ जोमीने आ प्रमाणे विनंती करवा लाग्यो. "हे प्रन्नो ! हुं आपनी आज्ञाथी पूर्वजन्मना कर्मने क्षय करवा माटे श्मसानमां जइ शुन्न न्नावथी कार्योत्सर्ग करीश." प्रन्नुए "हे साधो ! मरजी प्रमाणे आचरण कर." एम आज्ञा करी एटले ते महामुनि तुरत प्रन्नुने नमस्कार करी समवसरणथी चाली निकळ्या. अनुक्रमे ते पगले पगले बलती चीताउना समूहवाला, क्रीमा करी रहेला न्नुत प्रेतवाला अने बहु शबवाला श्मसानमां आवी पहोच्या. त्यां क्षमाना धारणहार ते महामुनि, न्नुमीने पमिलेही तुरत मेरु पर्वतना शिखरनी पेठे स्थिरचित्त करीने कार्योत्सर्गे रह्या. जेटलामां ते मुनिराज, पोतानी नासिका सन्मुख नेत्र राखीने, ढींचणनी जोममां बे लांबा हाथ राखीने अने आत्माने विषे स्थिर मन राखीने उन्ना रह्या तेटलामां प्रथमथी तेज मार्गे अकाले डुर्वा तथा दर्न्न लेवा माटे गयेला महाक्रोधी सोमिल न्नट्टे ते गजसुकुमाल मुनिने तेवी रीते कार्योत्सर्गे उन्नेला दूरथी दीठा. पठी मनमां बहु क्रोध पामीने ते विचारवा लाग्यो के, "हा ! आ डुष्टे नवी परणेली म्हारी निर्दोष पुत्रीने त्यजी दीधी बे, माटे ए डुष्टनुं मस्तक हवणां फामी नाखुं !" आम विचार करीने पठी चारे तरफ जोइ कोइने न देखवाथी ए विप्रे तलावमांथी लीली माटी लइ गजसुकुमालना मस्तक उपर गोलाकार पाल करी अने पठी तेमां खेरना अंगारा न्नरया. पठी ते क्रूर महा न्नय पामतो बतो त्यांथी नाशी गयो. कह्युं ठे के–महापापी पुरुषो पोतानाथीज सर्व स्थानके त्रास पामे बे.

पठी खेरना अंगारावमे जगसुकुमालनुं मस्तक सलगवा लाग्युं एटले स्थिर संवेगवाला ते महामुनि आ प्रमाणे विचारवा लाग्या. "हे जीव ! तें पूर्वे करेलां डुष्ट कर्मथी आवी महा कायाना संयोगने लीधे नरक गतिमां बहु अग्निना संतापो सहन कस्या ठे. हे जीव ! तपावेला कथीररूप जलपानथी तथा अग्निमय पुतलीयोना आलिंगनथी तुं बहु तपेलो ठुं के, जेनी आगल आ कांइ हिसाबमां नथी. जो के पाठलथी मलमूत्रे करीने मलीन तथा दाहने योग्य एवा आ देहे करीने कर्मना समूहथी संसारनुं कारण थवुं पमे ते करतां अत्यारे न्नस्मीन्नूत थवुं ते वधारे वखाणवा जेवुं ठे. हे जीव ! तुं आ शरीरने विषे ममतापणुं त्यजी दे, पोताना हृदयमां उपशम धारण कर अने

कायोत्सर्गे रह्यो हतो धर्मध्यानमां उत्कृष्ट दृढता पाम." आ प्रमाणे वृद्धि पामता धर्मध्यानथी नाश पामी गयो छे पोताना कर्ममलनो समूह जेमनो एवा ते गजसुकुमालमुनि केवलज्ञान पामीने मोक्षस्थान प्रत्ये गया. देवताना समूहे त्यां तेमनो पूष्पना वर्षाद अने वाजींत्रोना नादथी महोत्सव कर्यो.

हवे बीजे दिवस सवारे गजसुकुमाल मुनीश्वरने वंदन करवा माटे बहु उत्साहवंत थयेला कृष्ण हर्षथी परिवार सहित समवसरण प्रत्ये चाल्या. रस्तामां तेमणे जरावस्थाथी जीर्ण थयेला, अति दुर्बल शरीरवाला अने म्होटी ईंटोना भारथी श्वासोश्वास लेता कोइ वृद्ध पुरुषने दीठो. ते पुरुष एक एक ईंट लइने महा कष्टथी कोइना चणाता माल उपर मूकतो हतो. कृष्णने तेना उपर दया आवी, तेथी तेमणे पोताना हाथथी एक ईंट लइने तुरत ते माल उपरथी मूकी. पछी हर्ष पामेला सर्वे राजाउए पण एक एक ईंट लइने माल उपर मूकी. आम एक एक ईंट मूकी तो पण माल उपर बहु ईंटोनो जथो एकठो थइ गयो. पछी हर्ष पाम्यो छे आत्मा जेमनो एवा श्रीकृष्ण समवसरणमां आवीने श्री जिनेश्वर प्रभुने नमस्कार करी श्रेष्ठ साधुउनी पंक्तिमां जोवा लाग्या; परंतु पोताना बंधु एवा श्री गजसुकुमाल मुनीश्वरने न दीठा; तेथी ते चित्तमां कांइक आश्चर्य पामीने हाथ जोडी श्री जिनेश्वर प्रभुने पूछवा लाग्या. "हे स्वामिन्! जेणे कालेज दीक्षा लीधी छे एवा तथा सर्व साधुउमां मुकुटमणि समान म्हारो भाइ क्यां छे?" कृष्णे आम पूछ्युं एटले संदेहरूप वनने भस्मीभूत करवामां अग्नि समान एवा श्री नेमिनाथ प्रभुए कह्युं. "हे कृष्ण! सांभलो. ए साधु म्हारी आज्ञाथी काले सांजे महा घोर एवा श्मसानमां जइ कायोत्सर्गे रह्यो हतो. त्यां तेने जोइने कोइ पुरुष बहु कोप पाम्यो हतो." जिनेश्वर प्रभुए आ प्रमाणे गजसुकुमाल मुनीश्वरनी प्रथमथी आरंभीने मोक्ष पर्यंत सुधीनी वात कही. वली तेमणे एम पण जणाव्युं के, "भावशत्रुउनी साथे युद्ध करता ए महामुनिये शुद्ध भावथी थोडा वखतमां पोतानो अर्थ साध्यो छे." प्रभुनां आवां बन्ने कानने विषे कडवां वचन सांभली कृष्णे ललाटमां विकराल भृकुटि चडावीने प्रभुने पूछ्युं. "हे अरिहंत प्रभो! पापी पुरुषोनी मध्ये अधम एवो ते कयो माणस हतो के, जेणे म्हारा बंधुरूप मुनीने हण्या. खरेखर ए पण थोडा वखतमां

यमराजानो अतिथि थशे." प्रभुए कह्युं. "हे कृष्ण! दयालु एवा ते पुरुष उपर क्रोध न कर. कारण के, मुक्तिपद प्रत्ये जता एवा त्हारा बंधुने एणे झट सहाय्य करी छे. अनेक भवोमां संपादन करेलां जे कर्मो महा उग्रतपथी पण बहु काले क्षय थाय तेवा कर्मोने तमारा बंधुए ते पुरुषना समीपपणाथी एक मूहूर्तमां क्षय करी नाख्यां छे." कृष्णे कह्युं. "अहो! जिनेश्वरो तो अपराधीयोना पण गुणोनेज ग्रहण करता देखाय छे. ठीकज छे. साकर पोतानो विनाश थता पण सर्व जलने मधुर करे छे." वली कृष्णे "हे जगन्नाथ! म्हारे ते पापीने शी रीते ओलखवो?" एम पूछ्युं एटले जिनेश्वरे स्पष्ट कह्युं के, "हे विष्णु! सांभल. तने नगरीमां पेसता जोइने जे भयने लीधे मुस्तक फाटी जवाथी भभा भभाज मृत्यु पामे तेने त्हारे पोताना बंधुने उपद्रव करनारो जाणवो; परंतु तेना उपर त्हारे क्रोध करवो नहि." प्रभुनां आवां वचन सांभली तेने खरेखर मानता छतां कृष्णे प्रभुने नमस्कार करी तुरत पोतानी नगरी तरफ जवाने प्रयाण कर्युं.

हवे अहिं सोमिलभट्ट पोताने घेर आवीने विचार करवा लाग्यो के, "हा! कृष्ण श्री नेमिनाथने वंदन करवा गया छे, त्यां ते केवलज्ञानी प्रभुए कहेलुं आ म्हारुं निंद्यकर्म जाणशे, तो हुं नथी जाणतो के, कोप पामेला कृष्ण मने केवो प्रहार करशे? माटे चाल दीन एवो हुं अहिंथी झट नाशी जाउं. हा हा! परंतु हुं क्यां नाशी जइश?" आ प्रमाणे मनमां खेद करतो ते सोमिलभट्ट पोताना पापकर्मथी क्यांइ पण धीरज पाम्यो नहि. पछी ते मूढ जेटलामां पोताना घरथी निकली चोरनी पेठे चंचल दृष्टिवडे आडी नजरथी लोकोने जोतो छतो बहु भय पामी राजमार्गमां चालवा लाग्यो तेटलामां सामेथी सेना सहित कृष्ण आवता हता. विप्र कृष्णने देखवामात्रथीज बहु भयभ्रांत बनी गयो. पछी जाणे पोतानुं चेष्टीतज होयनी? एम क्रोध पामेला सुभटोने मानता छता ते ब्राह्मण तुरत मस्तक फाटी जवाथी मृत्यु पाम्यो. पृथ्वी उपर पडता एवा ते विप्रने दूरथी जोइ कृष्णे तुरत निश्चय कर्यो के, "निश्चे मुनीश्वरनो घात करनारो आज पापी छे." पछी "श्रेष्ठ पुरुषोए आ अतिघोर पापीनुं मुख पण न जोवुं जोइए." एम कही कृष्ण तुरत बीजा रस्तेथी पोताना घर प्रत्ये आव्या अने "आ ऋषिहत्या करनारो

बे." एवी उद्घोषणा पूर्वक तेने नीचलोक पासे केशथी पकमावी मरी गयेला कुतरानी पेठे नगरीनी बहार घसमावी काढयो. त्यारबाद " गजसुकुमाल महर्षिनुं उपसर्गने सहन करवामां आ म्होटुं धैर्य ? " एम निरंतर अनुमोदना करता कृष्णे निर्मल पुण्यरुप बहु धन उपार्जन कर्युं. कषाय रहित एवा तिलकयशादि ब मुनीश्वरो पण वीश वर्ष पर्यंत शुद्ध चारित्र पाली अंते विमलाचल महातीर्थ उपर एक मासनुं अनशन लइ केवलज्ञान प्राप्त करीने सिद्धिवधुना पति थया. जेवी रीते महाशय एवा कृष्णना म्होटा ब बंधुए तथा न्हाना गजसुकुमाल मुनिये महासत्वथी निश्चे पोतानो अर्थ साध्यो तेवी रीते मुनीश्वरोए खरेखर पोतानो अर्थ साधवो जोइये.

॥ इति देवकीना ब पुत्रनी कथा ॥

वंदामि नेमिसीसं, वयदिनगहिएगरायवरपमिमं ॥
सोमिलकयउवसग्गं, पत्तं पणामामि अपवग्गं॥ ११ ॥

अर्थ–व्रत लेवाने दिवसेज एकरात्री संबंधी पमिमाने धारण करनारा अने सोमिल ब्राह्मणे करेला उपसर्गथी मोक्ष पामेला श्री नेमिनाथना शिष्य (गजसुकुमाल) ने हुं वंदना करुं बुं ॥ २ए ॥

जो गेविज्जाउ चुउ, आयाउ तह कुले विसालंमि ॥
तं देवईअवच्चं, गयसुकुमालं नमंसामि ॥ ३० ॥

अर्थ–जे ग्रैवेयकथी चवीने यादवोना विशाल कुलमां उत्पन्न थया बे, ते देवकीपुत्र गजसुकुमाल मुनिने हुं नमस्कार करुं बुं. ॥ २ए ॥

जो वासुदेवपुरउ, पसंसिउ उक्करंकरेउत्ति ॥
सिरिनेमिजिनवरेणं, तं ढंढणमहारिसिं वंदे ॥ ३१ ॥

अर्थ–श्री नेमिनाथ जिनेश्वरे कृष्णनी पासे जेमनी " आ दुःकर करे बे " एम कहीने प्रशंसा करी हती, ते श्रीढंढण महामुनिने हुं वंदना करुं बुं. ॥३१॥

॥ श्री ढंढण मुनिनी कथा ॥

द्वारका नगरीमां श्री कृष्णने ढंढणा नामनी स्त्रीथी श्रेष्ठ राजलक्षणवालो एक ढंढण नामे कुमार थयो हतो. अनुक्रमे युवावस्था पामेला ते कृष्णपुत्रे, श्री नेमिनाथ जिनेश्वरनी पासे भावथी दीक्षा लीधी. कर्मनो विनाश करवा माटे विविध प्रकारनां तप करता अने द्वादशांगी विगेरे सिद्धांतोनो अभ्यास करता ते मुनीश्वर, हमेशां श्री नेमिनाथ प्रभुनी पासे रहेता हता.

कोइ वखते भिक्षा माटे नाना प्रकारना नगर तथा ग्रामादिकने विषे उंचनीच श्रावकना कुलमां फरता एवा ते मुनिने लाभांतराय दुष्टकर्मना उदयथी अन्न प्राप्त थयुं नहि. वली ते महासत्ववान् मुनि, बीजानी लब्धिथी प्राप्त थयेलुं अन्न लेता पण नहि. ज्यारे कृष्णना पुत्रपणाथी प्रसिद्ध एवाय पण ते मुनिने अन्न प्राप्त थयुं नहि त्यारे तो ते विचारवा लाग्या के, " द्वारका नगरीमां हजारो मुनीश्वरो, निर्दोष तथा एषणा समितियुक्त भिक्षा पामे छे अने हुं नथी पामतो, तेनुं शुं कारण हशे ! चाल, ए संदेह श्री जिनेश्वरने पूछुं. " आम धारी ते मुनिये प्रभु पासे जइ तेमने नमस्कार करी पोतानो संशय पूछ्यो एटले प्रभुए कह्युं.

" पूर्वे पारासर गाममां कोइ कणबी रहेतो हतो. त्यां बीजा पण घणां कणबीयो वसता हता. खेतिना काममां आ कणबी सर्वथी अधिक हतो; तेथी ते पारासर एवा नामथी गाममां प्रसिद्ध थयो. पछी खेतिना कामनो उपरी एवो ते कणबी हंमेशां छसो हलोथी राजाना खेतरमां ववरावतो एटले हंमेशां बारसे बलदो ते काममां रोकाता. भात आव्ये छते पण ते कणबी बलदोने छोडतो नहि अने खेडुतोने कहेतो के, " म्हारा खेतरमां एक हल दीधा विना भुख्या एवाय पण तमने हुं छोडवानो नथी. " क्षुधाथी आकुल थयेला चित्तवाला बलदोने तथा खेडुतोने बलात्कारे एक हल पोताना खेतरमां देवराव्युं. आ उपरथी तेणें बहु दुःखकारी लाभांतराकर्म उपार्जन कर्युं. पछी अनेक भवोने भ्रमण करता पूर्वनां करेलां कोइ कर्मथी कृष्णनी ढंढणा नामे राणीथी गुणवान् पुत्रपणे उत्पन्न थयो तेज तुं. (श्री नेमिनाथ प्रभु, ढंढण कुमारने कहे छे के,) ए पूर्वे करेलां कर्मथी तने निर्दोष आहार मल्यो नहि."
पछी ढंढणकुमार मुनिये, प्रभुने नमस्कार करीने एवो अभिग्रह लीधो के, " हुं

म्हारी पोतानी लब्धिये करीनेज शुद्धअन्नपाणी ग्रहण करीश." पछी दररोज भिक्षाना काले द्वारका नगरीमां भमता एवा ते मुनि, नगरवासीजनो भक्तिवंत छता निर्दोष आहार पाम्या नहि. आम निर्दोष आहार नहि मलतां छतां पण खेद रहित, उपवासवाला अने धीरजवंत ते मुनिनो बहु काल निर्गमन थयो.

कोइ वखते श्री नेमिनाथ प्रभुनी प्रौढ पर्षदामां श्रेष्ठ गुणवाला उत्तम साधुउनी पंक्ति जोइने कृष्णे जगन्नाथने पूछ्युं के, "हे भगवन्! आ साधुउनी पंक्तिमां विशेष तप क्रियावमे कया साधु दुःकरकारक छे?" प्रभुए कह्युं. "ढंढणा राणीना उदरथी उत्पन्न थयेलो ढंढण कुमार नामे साधु के, जे तमारो पुत्र थाय छे ते बहु दुःकरकारक छे. कारण जे परीषहने विषे अलाभ नामना परीषहने बहु सहन करे छे." कृष्णे कह्युं. "गुणोना मंदिररूप ते अणगार क्यां छे?" जिनेश्वरे कह्युं. "हे सौम्य! हवणां नगरीमां जतां तमने ए भीक्षाने अर्थे भमता मुनि मलशे." पछी श्री नेमिनाथने नमस्कार करी श्रीकृष्ण पोतानी नगरी तरफ पाछा फर्या एवामां तेमणे महेलोनी पंक्तिने विषे फरता, फक्त हामकां अने चामकामय शरीरवाला, लावण्यना समूह विनाना, देखाती नामियोना समूहवाला अने अति दुर्बल एवा ढंढण कुमार मुनिने पोतानी आगल जता जोइ श्री नेमिनाथनां वचनथी तेमने उलख्या; परंतु तेमना उपर पुत्रभाव लाव्या नहि. पछी हर्षथी पूर्ण नेत्रवाला कृष्ण, तुरत हाथी उपरथी नीचे उतरी त्रण प्रदक्षिणा करी, पोताना मस्तकथी तेमनां चरणमां नमस्कार करी अने हाथ जोमीने सामा उभा रही प्रसन्न चित्तथी आ प्रमाणे केहवा लाग्या. हे मुनि! संवरथी व्याप्त मनवाला तमने धन्य छे. कारण श्रीनेमिनाथ प्रभुए पण दुःकर क्रियावाला तमने वखाण्या छे. श्रेष्ठ गुणोना समुद्ररूप हे मुनि! तमेज म्हारुं कुल सफल कर्युं के, जे तमने साक्षात् जिनेश्वर पण बहु वखाणे छे." आ प्रमाणे मुनिनी बहु भक्तिथी स्तुति करता एवा कृष्णने जोई गोखमां बेठेला कोइ शेठे विचार्युं जे, निश्चे आ महात्मा बहु गुणवाला देखाय छे के, जेमनी श्रीमान् कृष्ण पोते पण आनंदथी स्तुति करे छे." पछी कृष्ण तेमने नमस्कार करी पोताने घेर गया एटले ते मुनि भिक्षाने अर्थे फरता फरता दैवयोगथी पेला शेठना घर प्रत्ये आवी पहोच्या. कृष्णने पण पूज्यपणाथी ते मुनिने भक्तियोग्य मानी शेठ तुरत गोखथी नीचे उतर्यो अने आदरथी नमस्कार करी

पोताना घर प्रत्ये तेम्ही गयो. त्यां महा स्नेहवालो ते, मुनिने लाम्वा वहोरावा तैयार थयो. पछी संतोषना समुद्ररूप ढंढण मुनि विचार करवा लाग्या के, "पूर्वे में उपार्जन करेलुं अंतराय कर्म शुं क्षय थइ गयुं?" पछी भिक्षादोषथी रहित एवा ते लाम्वाने लइने ढंढण मुनि श्रीजिनेश्वर प्रभुनी पासे आव्या. त्यां ते भगवानने पूछवा लाग्या के, "हे प्रभो! आजे म्हारुं सर्व लाभांतराय कर्म शुं क्षय पामी गयुं के, जे मने पोतानी लब्धिथीज निर्दूषण एवुं मोदकान्न मल्युं?" अरिहंते कह्युं. "हे मुनि! हजुं तमारुं अंतराय कर्म बाकी छे, माटे आ पोतानी लब्धिथी थयेलो लाभ नथी; परंतु कृष्णनी लब्धिथी छे. कारण कृष्णे तमने भक्तिथी वंदना करी ते ए शेठे दीठी, ए उपरथी तेणे तमने मोदकवमे प्रतिलाभ्या छे." प्रभुनां आवां वचन सांभली ढंढण मुनि विचारवा लाग्या के, "बीजानी लब्धिथी प्राप्त थयेला मोदको मने निश्चे कल्पता नथी." पछी प्रभुने नमस्कार करी शुद्ध भूमि प्रत्ये गयेला ते मुनि, त्यागनी इच्छाथी ते मोदकोने चूर्ण करवा लाग्या. एकज उपवासना पारणाने दिवसे जे कांइ प्राप्त थयेला अन्नने तुरत भक्षण करवामां उत्साहवंत थयेला बीजा बहु माणसो होय छे; परंतु घणा कालना तपने अंते आवा मोदकोने त्यजी देवामां ते एक ढंढण कुमारज समर्थ छे, बीजा नथी. पछी विधिपूर्वक बन्ने हाथवमे मोदकानो चूर्ण करता ए मुनिये तत्काल पोताना सर्व घाति कर्मोने पण चूर्ण करी नाख्यां. आज वखते ते महामुनिने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं; तेथी संतोष पामेला देवताउए तेमनो केवल महोत्सव कर्यो. जेवी रीते ढंढण मुनिये बहु धीरजथी पोतानुं तप निर्वहन करी उत्तम केवलज्ञान प्राप्त कर्युं तेवी रीते बीजा साधुउए पण पापनो छेद करवा माटे तप करवुं.

॥ इति ढंढण मुनिनी कथा. ॥

इप्रकुलवालियाउ, सुपरिच्चताउ जेण वत्तीसं ॥
जस्स य निरकमणमहं, दसारकुलनंदणोकासी ॥ ३१ ॥
जो पुरिससहस्संजुउ, पवइउ नेमिपायमूलम्मि ॥
सो थावच्चापुत्तो, चउदसपुव्वी सिवं पत्तो ॥ ३२ ॥

अर्थ–जेमणे महासमृद्धिवंत एवा व्यवहारियानी बत्रीश पुत्रीयोने परणीने त्यजी दीधी अने जेमनो दीक्षामहोत्सव श्रीकृष्ण वासुदेवे कर्यो. वली जेमणे एक हजार पुरुषोनी साथे श्री नेमिनाथनी पासे दीक्षा लीधी; एवा चौद पूर्वना धारणहार ते थावच्चा पुत्र मुनि मोक्ष प्रत्ये प्राप्त थया. ॥३२, ३३॥

सहसजुउ तस्सीसो, चउदसपुव्वी सुउ गउ सिद्धिं ॥
इक्कारसंगिसुयसीस, सेलउ तसहपंचउ ॥ ३४ ॥

अर्थ–ते थावच्चा पुत्रनो शिष्य अने चौद पूर्वधारी एवो शुक, एक हजार शिष्यनी साथे मोक्ष पाम्यो छे. वली एकादशांगीनो जाण एवो शुकशिष्य सैलक पण पांचसो शिष्यो सहित सिद्धि पाम्यो छे. ॥ ३४ ॥

थावच्चा पुत्रनी कथा.

सौराष्ट्र देशना आभूषणरूप द्वारका नगरीमां नवमा वासुदेव कृष्ण राज्य करता हता. त्यां थावच्चा नामनी कोइ प्रसिद्ध व्यवहारीनी स्त्री वसती हती. तेने थावच्चा पुत्र नामे पवित्र अंगवालो पुत्र हतो. ए कुमारे बाल्य अवस्थामांज कलाधर नामना गुरुनी पासे कलाधरनी निर्मल एवी सर्व कलाउ क्रीमा मात्रमां ग्रहण करी लीधी हती. युवावस्था पामेला ते पुत्रने माताए, म्होटा आमंबर पूर्वक मंगल आचारथी म्होटा शेठीयाउनी बत्रीश कन्याउ परणावी. पुण्यवान् थावच्चा पुत्रे, हस्त मेलापनने वखते कन्याउना पिता पासेथी तेटलीज कोटी प्रमाण (बत्रीह क्रोम) सोनाम्होर प्राप्त करी. पछी असंख्य दिव्य वस्तुउथी भरपुर अने देवगृह समान पोताना निवास भुवनमां ते थावच्चा पुत्र हर्षथी पोतानी बत्रीश कन्याउनी साथे भोग भोगववा लाग्यो.

हवे कोइ वखते अनेक देवताउए सेवन करेला श्री नेमिनाथ जिनेश्वर गिरनार पर्वतना नंदनवनमां समवसर्या. प्रभुनुं आगमन सांभली तत्काल हर्षना समूहथी पूर्ण एवा कृष्णादि नगरवासी जनो पोताने धन्य मानता छता तेमने वंदन करवा चाल्या. पोताना मित्रमंमलथी शोभता अने राजमार्गे जता एवा श्रेष्ठ अलंकारवाला लोकोने जोइने थावच्चापुत्रे, पोताना मित्रोने इछ्युं के, "आजे सर्व नगरवासी उत्साहवंत थइने आम केम जाय

छे ? शुं नगरीमां इंद्र अथवा कार्तिक स्वामी विगेरे कोइ देवतानो महोत्सव छे ? जेथी आ असंख्य माणसो उत्तम वस्त्रालंकारने धारण करता छता उता-वला चालता गाडीघोडा विगेरे वाहनोथी रेवताचल पर्वतना शिखर उपर जाय छे." मित्रोए संतोषथी कह्युं. "हे मित्र ! कानने सुखकारी वचन सांभल. मनुष्योने उत्साहवंत थइने जवाना कारणरुप श्री नेमिनाथ प्रभु अहिं समवसर्या छे." मित्रोनां आवां वचन सांभली अति निर्मल भाव-वालो थावच्चा पुत्र, पोतानी समान वयवाला मित्रोनी साथे म्होटी समृद्धिथी श्री जिनेश्वर पासे गयो. त्यां तेणे विधिथी नेमिनाथने प्रदक्षिणापूर्वक नमस्कार करी योग्य आसने वेसीने धर्मोपदेश सांभळ्यो. ते आ प्रमाणे.

"निश्चे आ संसार जन्ममरणादिकनुं कारणज छे, ए खरेखर लोकरु-ढी छे. कारण जे संसारमां सुखनी उत्पत्तिने नाश करनारा असंख्य भवो थाय छे. अनंत दुःखथी भरपुर एवा आ संसारमां परिणामे सुंदर मतिवालो सुखार्थी पुरुषज वहु श्रेयने इच्छे छे, माटे हे भव्यजनो ! तमे भावथी झट जैन दीक्षा-रूप वहाण उपर चडी संसारनो निस्तार करवामां उद्यम करो." जिनेश्वरनां मुखथी आवो सत्य धर्मोपदेश सांभली थावच्चा पुत्र पोताना मनमां व्रतनी उत्कंठा धारवा लाग्यो. सभा उठ्या पछी तेणे पोतानो चारित्र लेवानो निर्मल परिणाम श्री जिनेश्वरनी आगल कही संभलाव्यो. वली तेणे कह्युं के, "त्रण लोकना हितकारी हे प्रभु ! हुं ज्यां सुधीमां म्हारी मातानी रजा लइ अहिं आवुं त्यां सुधी आपे अहिंज रहेवुं." प्रभुए कह्युं. "हे पुण्यवंत ! विलंव करीश नहि. कारण के, पोतानुं कल्याण करनारा पुरुषो, धर्मकार्यमां विलंव करता नथी." आवी जिनेश्वरनां मुखरूप धराथी शिक्षारूप अमृतनुं पान करीने थावच्चा पुत्र तुरत अरिहंत प्रभुने नमस्कार करी रथमां वेसीने पोताना घरप्रत्ये गयो. त्यां ते मधुर वचनथी पोतानी माताने एवी रीते प्रबोध पमाडवा लाग्यो के, तेणे तुरत पोताना पुत्रने दीक्षा लेवानी रजा आपी. पछी पोताना पुत्रने म्होटा उ-त्सवथी दिक्षा अपाववाने उत्साहवंत थयेली थावच्चा, श्री कृष्णनी पासे जइने सभा समक्ष आ प्रमाणे कहेवा लागी. "हे स्वामिन् ! अति श्रेष्ठ ऐश्वर्य लक्ष्मीवालो म्हारो थावच्चा पुत्र नामनो पुत्र महोत्सवथी वत्रीश दिव्य क-न्याउने परण्यो छे, ते हवणां सांभलवा योग्य श्री नेमिनाथ प्रभुना धर्मोपदे-

शने सांजली व्रत लेवानी इच्छा करे छे. में बहु आग्रह कर्यो तोपण ते पोताना घरने विषे रहेतो नथी; तो हवे हुं पण ते म्हारा पुत्रने दीक्षा अपाववानी इच्छा करुं छुं; जेथी हे देव ! आप म्हारा उपर प्रसन्न थइ मने छत्र, चामर अने मुकुट ए त्रण वस्तुउ आपो." थावच्चानां आवां वचन सांजली क्षायक समकितने धारण करनारा अने हर्षमां व्याप्त थयेला कृष्ण पोताना प्रफुल्लित नेत्रथी थावच्चाने जोता छता कहेवा लाग्यो के, "हे मात ! हुं पोतेज तमारा घरने विषे आवीने म्हारा बंधुरूप तमारा पुत्रनो स्नेहपूर्वक म्होटो दीक्षा महोत्सव करीश." कृष्णनां आ प्रकारनां वचनथी न वर्णवी शकाय एवा संतोषने पोताना हृदयमां धारण करती तेमज कृष्णथी सत्कार पामेली अने लोकोए वखाणेली ते थावच्चा पोताना घरप्रत्ये आवी. पछी थोमा परीवार सहित श्रीमान् कृष्ण तुरत थावच्चा पुत्रना घरे आव्या. थावच्चा पण पोताना घरने विषे चारे बाजुए तोरणो बंधावीने तेजवंत मुक्ताफलोथी साथियाउनी हारोने रचाववा लागी. तेमज कुसुंबी दिव्य वस्त्रोथी युक्त एवा जल जरेला घमाउने पण महा राजरुद्धिथी बारणानी पेमलीयो उपर मूकाववा लागी. वली हाथमां जारीयोवाली कुमारीकाउ पासे गीत गवराववापूर्वक मणि मुक्ताफलथी श्री कृष्णने वधाववा लागी.

पछी कुलबालाउए वधावेला कृष्ण परिवार सहित आनंदपूर्वक थावच्चाना घरनी अंदर गया. त्यां ते मणिजमित्र सुवर्णना सिंहासन उपर बेसी प्रसन्न नेत्रथी तेनां सर्व घरने जोवा लाग्या. आ वखते पोताना पुत्रनी बत्रीश स्त्रीयोने आगल करी थावच्चाये तुरत कृष्णने हर्षथी नमस्कार कर्यो. पछी नमस्कार करता एवा थावच्चा पुत्रने कृष्णे पोताना हाथथी पकमीने सुमित्रनी पेठे पोताना सिंहासन उपर बेसार्यो अने सौजाग्यनी समृद्धिथी कामदेवसमान तेने स्नेह दृष्टिथी जोता छता अमृत वचनवमे कहेवा लाग्या के, "हे वत्स ! म्हारुं हितकारी वचन सांजल. आ पृथ्वीने विषे रूप संपत्तिये करीने निरुपम अर्थात् कोइनी उपमा न आपी सकाय तेवुं, जोगोने योग्य अने लक्ष्मीने पण प्रार्थना करवा जेवुं आ त्हारुं नव यौवन छे. माता सर्व प्रकारे हितकारी अने स्त्रीयो पण उत्तम गुणोथी अति मनोहर छे. हे विशेष जाण! कहे, आवो गृहवास छतां तेने तुं शा माटे त्यजी दे छे ? तने जे वस्तु इष्ट

होय ते आपीने हुं त्हारो मनोरथ पूर्ण करुं; परंतु म्हारां वचनथी हवणां तुं देवतानी पेठे ज्ञोगोने ज्ञोगव. वली म्हारा हस्तनी गयामां निवास करता एवा तने दीर्घकाल पर्यंत कोइ पण ज्ञय थवानो नथी तेमज त्हारी माता अने स्त्रीयो पण तेथी हर्ष पामशे, माटे हे महाज्ञाग! हवणां तुं व्रत कष्टनी वात त्यजी दइ निःशंकपणे पोतानी स्त्रीयोनी साथे ज्ञोगोने ज्ञोगव." श्री कृष्णनां आवां वचन सांज्ञली थावच्चा पुत्रे कह्युं. "हे नरेंड! जो आप म्हारी जरावस्थारूप पिचाशणीने गली जवामां मंत्रवादी हो अने सन्मुख आवती एवी मृत्युरूप महाघाटीने उलंगाववाने समर्थ हो तो हुं तमारा हस्तनी गयामां सुखेकरीने निवास करुं." थावच्चा पुत्रनां आवां वचनथी विस्मय पामेलां चित्तवाला कृष्णे कह्युं. "हे वत्स! त्रण जगत्मां देव, दैत्य, इंड, महा चक्रवर्ती अथवा तो वीजो कोइ पण ते बन्नेथी (जरावस्था अने मरणथी) रक्षण करवाने समर्थ नथी. फक्त ए बन्नेने दलन करवामां स्वकर्मना नाशथी आत्मा एकज समर्थ छे." कृष्णनां आवां तत्त्व वचन सांज्ञली थावच्चा पुत्रे फरीथी कह्युं. "जो एम छे तो हुं व्रत लइ निश्चे जरावस्थाने तथा मृत्युने नाश करीश."

पछी चारित्र अंगीकार करवामां दृढ इच्छावाला थावच्चापुत्रने जाणीने अति हर्ष पामेला कृष्णे पोताना सेवकोने कह्युं. "हे अनुचरो! तमे द्वारका नगरीमां चारेतरफ स्पष्ट पमह वगमावो के, थावच्चापुत्र व्रत अंगीकार करे छे; तेनी साथे महासत्ववाला वीजा जे पुरुषो वैराग्यथी दीक्षा लेशे, तेमना घरनो सर्व ज्ञार कृष्ण पोते चलावशे अने तेनो बहु विधिथी दीक्षा महोत्सव पण कृष्ण पोतेज करशे." कृष्णे आ प्रमाणे आज्ञा करेला सेवकोए तेज प्रमाणे पटह वगाड्यो एटले विशालकुलमां उत्पन्न थयेला एक सहस्र पुरुषो बहु वैराग्यथी दीक्षा लेवाने तैयार थया. पछी अज्ञुत महोत्सवमां मंगलाचार पूर्वक दीक्षा अज्ञिषेकने अंगीकार करी उत्तम चंदनथी लिंपाएला शरीरवालो अने सर्व प्रकारनां आज्ञूषणोने धारनारो थावच्चा पुत्र पोतानी माता अने धावमातानी साथे तुरत हजारो पुरुषोए उपामेली उत्तम पालखीमां बेठो. आ वखते पेला सहस्र पुरुषो पण ऊट पोताना बंधुजननी रजा लइ चंडनी पाछल नक्षत्रोनी पेठे थावच्चा पुत्रनी पाछल चाल्या. कृष्णे पोतानो मुकुट थावच्चापुत्रना मस्तक उपर बांधी चामरो सहित छत्र तेना उपर धारण

करयुं. पछी हृदयने हर्षकारी गाढ वागतां एवां वाजींत्रोना शब्दोथी दिशाउने व्हेरी करी देतो, उत्तम स्वरवाला श्रेष्ठ गंधर्वोना समूहोए गायन करायेला गुणवालो, कृष्णे हर्षथी स्थाने स्थाने करावेला प्रस्ताविक नाटकोमां याचकजनोने हर्षथी मणि, मुक्ताफल, सोनाम्होर रुपाम्होर अने वस्त्रना समूहोने आपतो, पालखीमां बेठेलो, हजारो राजाउना परिवारथी वृद्धि पामेला उत्साहवालो, सुवासिनी स्त्रीयोनां उत्तम धवलगीतथी अद्भुत शोभावालो अने समृद्धिये करीने लोकमां प्रत्यक्ष पुण्यना फलने स्थापन करतो पुण्यवान् थावच्चापुत्र श्री नेमिनाथ प्रभुना समवसरणमां आव्यो. त्यां पालखीमांथी नीचे उतरेला, कृष्णादि मुख्य पुरुषोए प्रवेश करावेला अने पालखीमांथी उतरेला हजार पुरुषोए बन्ने बाजुए सेवन करेला ते थावच्चापुत्रे श्री नेमिनाथ जिनेश्वरने त्रण प्रदक्षिणा करीने नमस्कार कर्या. आ अवसरे थावच्चाये, पोताना पुत्रने दीक्षा अपाववा माटे प्रभुनी विनंती करी के, " हे स्वामिन् ! पोताना कुलनो आधार, सर्वने प्रिय अने नाशवंत एवा आ लोकना बहु सुख समूहना भोगमां उद्वेग बुद्धिवालो आ म्हारो एकनो एक पुत्र, अविनाशी सुखनी इच्छाथी तमारी पासे चारित्र लेवानी इच्छा करे छे, माटे हे स्वामीन् ! म्हारा उपर प्रसन्न थइ ए कुमारने झट संसार समुद्रथी तारो.

पछी थावच्चा पुत्रे, पोताना मुकुट कुंमलादि सर्व आभरणो तुरत माताये झाली राखेला वस्त्रमां मूक्यां अने अधिकभावथी एक हजार पुरुषो सहित पंचमुष्टी लोच करीने श्री नेमिनाथ प्रभु पासे दीक्षा लीधी. त्यार पछी उग्र बुद्धिवाला ए थावच्चा पुत्रे प्रभुनी आज्ञाथी स्थविर साधु पासे चौद पूर्वनो अभ्यास कर्यो. जिनेश्वरे तेने योग्य जाणी श्रेष्ठ एवा सूरिपदे स्थाप्यो अने तेने एक हजार साधु सोंप्या एटले ते पोताना परिवार सहित श्री जिनेश्वरनी आज्ञाथी पृथ्वी उपर विहार करवा लाग्या. अनुक्रमे पोताना परिवार सहित ते सूरि चंपकादि श्रेष्ठ वृक्षोना समूहथी रमणीय एवा गणी नामना उद्यानने विषे आव्या. ए उद्याननी पासे चारे तरफ पर्वतथी विंटालायेलुं सेलक नामनुं नगर हतुं. त्यां सेलक नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने पद्मावती अने सुभगा नामे बे स्त्रीयो हती. तेमां पद्मावती राजाने प्रिय हती. ए राजाने भद्रक प्रकृतिवालो मडुक नामे महातेजवंत पुत्र हतो. वली उत्तम बुद्धिवाला पंथक-

विगेरे पांचसो प्रधान हता. थावच्चा सूरि अनुक्रमे विहार करता ते नगरमा आव्या; वनपालकनां वचनथी गुरुना आगमनने जाणीने सेलक नृपति पोताना स्त्री, पुत्र, मंत्री विगेरे परिवार सहित सुगुरु पासे आव्यो. त्यां तेणे श्रद्धाथी साकरना रस समान मधुर देशनानुं पान करी साधुनी सेवारूप श्रेष्ठ धर्मने अंगीकार कर्यो. गुणनी खाणरूप थावच्चासूरि पण ते नृपतिने केटलाक दिवसमां धर्माधर्मनो जाण करी अन्यस्थले विहार करी गया. अनुक्रमे ते महामुनि सौगंधिका नामनी नगरी प्रत्ये आवी पहोच्या. त्यां तेमणे परिवार सहित नीलअशोक नामना उद्यानमां निवास कर्यो. पछी नगरवासी सर्वे लोको सूरिनी धर्मोपदेशनाने सांभली जिनेंद्रना धर्मने विषे गाढ वासनावाला थया.

आ वखते चार वेदरूप समुद्रने मथन करवामां प्रविण, विशेषे सांख्य मतनां सर्व शास्त्रनो जाण, सर्व संन्यासीयोमां मुख्य अने मनुष्योने मान्य एवो शुक नामे प्रसिद्ध संन्यासी एक हजार शीष्यना परीवारथी सर्व पृथ्वी उपर फरतो हतो. सौगंधिका नगरीमां ते संन्यासीनो भक्त सुदर्शन नामे एक शेठ रहेतो हतो. तेणे थावच्चा पुत्र मुनिना सत्य गुणो सांभळ्या, तेथी ते विचार करवा लाग्यो. " जो के हुं गुणना समुद्ररूप शुक गुरुनो निरंतर भक्त छुं. तो पण म्हारे म्होटा अतिथियोनुं दर्शन करवुं जोइए. " आम विचार करीने पोताना परिवार सहित ते सुदर्शन शेठे परिणामे सुंदर बुद्धिवमे उद्यानमां थावच्चा पुत्र सूरि पासे जइ तेमने नमस्कार कर्या. पछी देशनाने अंते शेठे विनयथी सूरिने पूछ्युं के, " हे भगवंतो ! तमे कया धर्मने सुखदातार कहो छो ?" सूरिये कह्युं. " हे महाशय ! अमे तो सर्व लोकमां अति शुद्ध एवो विनय मूल धर्म सर्व प्रकारनां सुखनो दातार मानीए छीए. हे बुद्धिवंत ! ते विनय श्रावक विनय अने साधुविनय एवा भेदथी मुख्य बे प्रकारनो छे. तेमां पहेला विनयमां निर्मल एवां पांच अणुव्रत, त्रण गुणव्रत, चार शिक्षाव्रत अने अगीयार पडिमा कहेली छे. आ प्रमाणेना पहेला विनयने उत्कृष्ट रीते पालनारो पुरुष अच्युत देवलोक प्रत्ये जाय छे. वली श्री जिनेश्वर एवा नेमिनाथ प्रभुए कहेला पंच महाव्रतरूप बीजा विनयने पालनारा पुरुषो थोमा कालमां सिद्धि पामे छे. " पछी सूरिये ते सुदर्शन शेठने पूछ्युं. " हे शेठ ! तमने कयो धर्म इष्ट छे. ते

कहो.?" शेठे कह्युं. "आप बोल्या विना सांजलो. शुक गुरुए अमने सांख्य मत जाणनाराउने पवित्रतारूप मूलवालो धर्म करवो कह्यो ने. कुंम, नदी, धरा, तलाव अने परबने विषे वली समुद्रना तीरने विषे जे बहु जलथी स्नान कराय तेज गुरुउए पवित्रता कही ने." थावच्चा पुत्र सूरिये कह्युं. "सांजल, जो एम ने तो रुधिरथी खरमाएलुं उत्तम वस्त्र रुधिरथीज पवित्र केम थाय. हे महाजाग! एज प्रमाणे प्राणीयोना विनाशादि आरंजोथी पापी बनेलो प्राणी फरी शास्त्रमां कहेलां पाप आरंजथी निश्चे पवित्र केम थाय? जो जीवमय जलथी बहु स्नान करवाने लीधे पवित्र थयेला आत्माउ स्वर्ग प्रत्ये जाय तो मांबला विगेरेने तो स्वर्गमां गयेलाज समजवा. जेम रुधिरथी खरमाएलुं वस्त्र, प्रथम खाराथी लींपीने पनी उना शुद्ध जलवमे धोवाथी स्वच्छ थाय ने तेमज सावद्य आरंजोथी कलुषित (पापी) थयेलो जीव, उपशम अने अहिंसादिक शुद्ध हेतुथी पवित्र थाय ने." सुगुरुना आवा श्रेष्ठ उपदेशरूप अमृतना पानथी सुदर्शन शेठनां चित्तने मोहकारी अखंमित मिथ्यात्वरूप विष नाश पाम्युं. पनी हर्षित आत्मावाला तेणे श्री थावच्चा पुत्र मुनिने नमस्कार करी समकित मूलरूप श्रावक धर्म अंगीकार कर्यो अने दररोज अति आदरथी सूरिनी सेवा करवाथी शुद्ध जिनशासननुं सर्व जाणपणुं प्राप्त कर्युं.

हवे पोताना जक्त एवा सुदर्शन शेठे जिनमतनो अंगीकार कर्यानी अने सांख्यमत त्यजी दीधानी वात शुक गुरुए सांजली, तेथी ते पोतानां मनमां विचार करवा लाग्यो के, "हुं सौगंधिक नगरीमां जइ म्हारा जक्त सुदर्शनने जैनमत त्यजी देवरावी फरी म्हारा मतमां स्थापन करुं." आम धारी ते पोताना परिवार सहित त्रण दंम तथा कमंमलादि चिन्होने धारण करी सौगंधिक नगरी प्रत्ये गयो. त्यां ते संन्यासीयोना मठमां उतरी अने दंम कमंमल विगेरे मूकी पोते थोमा परिवार सहित सुदर्शन शेठने घेर गयो. सुदर्शन शेठ पण सम्यक्त्वनां अतिचार अने अन्य तीर्थिना स्तवनथी जयज्रांत थयो हतो शुक गुरुने आवता जोइ दृष्टिथी तेमने निरखवापूर्वक उन्नो पण थयो नहि. ज्यारे दीर्घकाल पर्यंत पूर्वना परिचयवाला ते शुक गुरुने शेठे वंदना पण करी नहि त्यारे तो निर्मल बुद्धिवाला शुक गुरुए पोतेज तेने कह्युं के, "हे सु-

दर्शन ! पूर्वे तुं बहु विनयवालो म्हारो जक्त हतो तो हवणां मने देखीने तुं केम उन्नो थतो नथी तेम वंदना पण करतो नथी ? वली आसन पण आपतो नथी, तो हे महाजाग ! तें आवो कया गुरु पासेथी अविनय मूलरूप धर्म अंगीकार कर्यो छे ? " आ प्रमाणे शुक गुरु कहेता हता एटलामां अवसरनो जाण सुदर्शन शेठ आसनथी उन्नो थइ आदरसत्कार करी तेमने आसने बेसारीने आनंदथी कहेवा लाग्यो के, " हे गुणज्ञ ! मने धर्मप्राप्तिनुं स्वरुप सांजलो. हवणां इच्छित फल आपवामां कल्पवृक्ष समान श्री नेमिनाथ जिनेश्वर जयवंता वर्ते छे. तेमना थावच्चा पुत्र नामे विनयवंत शिष्य, पृथ्वी उपर विहार करता करता अहिं नीलोद्यानमां समवसर्या छे, तेमनी पासेथी हुं आ विनयधर्म पाम्यो छुं. " जावि विवेकवाला अने परिणामे सुंदर मतिवाला शुक गुरुए कह्युं. " हे शेठ ! आजे त्हारा गुरु पासे जइए ते जो म्हारा प्रश्नना उत्तर आपे तो हुं निश्चे तेने जक्तिथी वंदना करीश तेम तेनुं वचन पण मान्य राखीश. नहिं तो हुंज तेने प्रश्नथी निरुत्तर करी नाखीश. " आम कहीने शुक गुरु सुदर्शन शेठ सहित थावच्चा पुत्र सूरिनी पासे जवा निकल्या.

नीलोद्यानमां गुरुनी पासे जइ तेमने नमस्कार कर्या विनाज आसन उपर बेसी शुक गुरुए ते महासूरिने आ प्रमाणे पूछ्युं. " हे पूज्यो ! तमारी यात्रा सुखे निर्विघ्न थाय छे ? यापनिय पण तेमज छे ? वली अव्याबाधपणुं तेमज प्राशुक विहार तेवोज छे.?" थावच्चा पुत्र सूरिये कह्युं. " हे महाशय ! मने ए चारे वस्तुउ बाध करती नथी." शुक गुरुए " ए कइ ? " एम फरी पूछ्युं एटले थावच्चा पुत्रसूरिये आ प्रमाणे विस्तारथी कह्युं. " ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप अने संयमादिके करीने जे यतनारूप प्रवृत्ति कराय छे तेने जिनेश्वरोए यात्रा मानी छे. वली इंद्रिय अने नोइंद्रिय एवा जेदथी यापनीय बे प्रकारे मान्युं छे. वली ते पांच प्रकारे पण कहेल छे. तेमां इंद्रिय यापनीय आ प्रकारे. म्हारी नेत्रादि बाह्य इंद्रियो कोइथी नहिं हणाएली तेमज वश्य वर्ते छे, ते इंद्रिय यापनीय कहेवाय छे. क्षीण अने शांत थयेला क्रोधादिके करीने जे चित्त तपीजतुं नथी तेमज अति निवृत्तिवालुं रहे छे, ते नोइंद्रिय यापनीय कहेवाय छे. तमे म्हारा शरीरने विषे अव्याबाध—कुशलपणुं, पूछ्युं तेना उत्तरमां कहुं छुं के, म्हारा शरीरने विषे वायु संबंधि, पीत संबंधी अने कफ सं-

बंधी सर्वे प्रकारना रोगो उदय आवता नथी. वली हुं, स्त्री पशु पिंमकादिथी रहित एवा गाम, नगर, खाण, देवालय, वन अने पर्वतनी गुफा विगेरे स्थानोमां वसु छुं. जेथी म्हारो विहार पण तमारा कहेवा प्रमाणे प्राशुक छे. तमे साधुउनो जे प्राशुक विहार कह्यो, ते आ में कही बताव्यो तेज छे." आवा थावच्चा पुत्र सूरिये आपेला प्रश्नोतरथी शुक गुरु बहु आनंद पाम्यो. वली ते शुक गुरुए छठा अंगना मध्यमां रहेला सेलक अध्ययनना प्रसिद्ध प्रश्नो पूछ्या, ते पण ते महासूरिये क्षणमात्रमां कही बताव्या. पछी मोहनीय कर्मना क्षयथी प्रबोध पामेला शुक संन्यासीये नक्तिथी श्री थावच्चा पुत्रने नमस्कार करी बन्ने हाथ जोमीने कह्युं के, "हे नगवन् ! म्हारा उपर प्रसन्न थइने आप मने संसार समुद्रने तारवामां वहाण समान जैनधर्मनो उपदेश करो." पछी थावच्चा पुत्र सूरिये, संसारना नयथी वैराग्य प्रगट करनारी नव तत्त्वमय उत्तम धर्मदेशना आपी अने संसार समुद्रमां वहाण समान यति धर्मनुं संक्षेपथी निरुपण कर्युं. तेने सांनलीने गलि गयो छे मोह जेनो एवा शुक संन्यासीये थावच्चा पुत्र गुरुने कह्युं. "मने उत्तम ज्ञान विना आवा संन्यासि थवाना कष्टथी सिद्धि थइ नहि. खरुं छे, जेवा तेवा रसथी सुवर्ण सिद्धि क्यांथी होय ? अर्थात् नज होय. हे गुरो ! हुं आपनीज पासे जैनव्रत आदरवानी इच्छा करुं छुं. कारण पुण्यना समूहथी प्राप्त थयेला उत्तम मार्गने कयो पुरुष न अंगीकार करे ?" गुरुए कह्युं. "हे तपस्वी ! जेम सुख उपजे तेम कर." पछी पुण्यात्मा शुक गुरुए पोताना हजार शिष्य सहित ईशान दिशामां जइ गेरुथी रंगेला राता वस्त्रने त्यजी दइ शीखा विगेरे कढावी नाखी. पछी शासन देवीये आपेला वेशने धारण करनारा तथा परिवार सहित एवा ते शुक गुरुने श्री थावच्चा पुत्र सूरिये दीक्षा आपी अने साधुउने योग्य एवो आचार शिखव्यो. शुक मुनि पण दर्जना अग्रनागथी पण सुक्ष्म बुद्धिवमे महा स्मृतिने लीधे दृष्टिवादमय सर्व सिद्धांत थोमा वखतमां नणी गया. पछी थावच्चा पुत्र सूरिये सद्गुणोथी शुकमुनिने योग्य जाणी तेमने आचार्यपदे स्थाप्या. शुकमुनिना पूर्वना हजार शिष्योए पण दीक्षा लीधी; तेथी शुक मुनि पोताना पूर्वना परिवार सहित श्री थावच्चा पुत्र सूरिनी साथे विहार करवा लाग्या.

हवे नव्यजनोना समूहने प्रबोध करवामां तत्पर एवा शुक मुनि

पृथ्वी उपर विहार करता करता सेलकपुरना उद्यानमां आव्या. सूरिना आगमनने जाणी उत्तम साधुना गुणमां आसक्त थयेला सेलक राजाए परिवार सहित त्यां जइ तेमने वंदना करी. पछी सुगुरुना उपदेशरूप अमृतनुं पान करीने वैराग्यना रंगथी पूर्ण थयेला ए राजाए मंगलकारी दीक्षानी इच्छा करी. पछी नगरमां आवी उत्तम स्वभाववाला ते भूपतिये तुरत पोताना पांचसो प्रधानोने बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं. "हे सचिवो ! तमे सौ आदरथी म्हारां वचनने सांभलो. "हुं हवणां शुक गुरु पासे चारित्र लेवानी इच्छा करुं छुं, कहो, तमारो शुं विचार छे?" आम राजाए पूछ्युं एटले ते प्रधानोए तेने प्रणाम करीने हितकारी आवी वाणी कही. "हे स्वामिन् ! अमने गृहावासमां तमेज कल्पवृक्षनी पेठे इष्ट फल आपनारा छो तो दिक्षाग्रहणमां पण तमेज अमारुं इष्ट करनारा थाओ. हे नराधिश ! निश्चे तमाराथी अमारो जूदो विचार शो होय ? अमे पण आपनीज साथे संसार समुद्रने तारनारी दीक्षा लइशं." तेओए आ प्रमाणे कह्युं एटले भूपतिये फरीथी कह्युं. "हे महाप्रधानो ! जो तमारो एवोज विचार होय तो हवणां तमे सौ पोतपोताना घरे जइ म्होटा पुत्रने घरनो भार सोंपी सर्व सामग्रीथी अहिं आवो के, जेथी आपणे चारित्र लइए." आ प्रमाणे मंत्रीयोने कही संसारथी विरक्त मनवाला सेलक भूपतिये पोताना मंडुक नामना पुत्रने विविध प्रकारना महोत्सवथी आनंदपूर्वक राज्यासने बेसाड्यो अने पोते पांचसो प्रधानोनी साथे तैयार थइ उद्यानमां आवी महोत्सवथी शुकसूरि पासे दीक्षा लीधी. पछी सेलक राजर्षिये उत्तम बुद्धिवडे भक्तिथी शुक गुरुनी पासे एकादशांगीनो अभ्यास कर्यो. शुकाचार्ये तेमने योग्य जाणी पोताना सूरिपदे स्थाप्या अने पांचसो साधुओ सोंप्या. पछी पृथ्वी उपर बहु कालपर्यंत विधिथी विहार करता अने पुण्यथी मनोहर एवी धर्मदेशनावडे अनेक भव्यजीवोने प्रतिबोध पमाडता शुक गुरु पोतानुं आयुष्य पूर्ण थयुं जाणी विमलाचल उपर गया. त्यां पोताना परिवार सहित ए महामुनि एक मासना अनशनथी सर्व कर्मनो क्षय करी मोक्ष पाम्या.

हवे सिद्धांतना समुद्ररूप श्री सेलक महासूरि पोताना पांचसो साधुओ सहित निरंतर निर्मल चारित्रने पालता छता पृथ्वी उपर विहार करवा लाग्या. लुखा आहारथी, उत्तपना आचरणथी, महा विहारथी तेमज उत्पन्न थयेला

अति विषम पित्तज्वरादि रोगथी पोताना शरीरने बहु पीमा पामतुं जाणता छता ए महामुनि विहार करता करता परिवार सहित सेलकपुरना उद्यानमा आवी पहोच्या. मंमुक नृपति पोताना पितारूप सेलकसूरिने उपवनमां आवेला जाणीने बहु भक्तिथी सामंत तथा प्रधानोने साथे लइ तेमने वंदना करवा माटे गयो. त्यां ते पोताना पिता सेलकसूरिने वंदना करी धर्मदेशना सांभली अने पछी तेमने रोगथी पीमा पामेला जाणी विनंती करवा लाग्यो के, "हे भगवन् ! तमे आ नगरमां एक निवास स्थानने पमिलेही तेमां आवतुं चोमासुं रहो. अमे श्रेष्ठ वैद्योए बतावेल निर्दुषण औषधोथी तमारी सेवा करीशुं के, जेथी तमारे स्वस्थ थया पछी पोतानुं चारित्र पाली शकाय." राजाना बहु आग्रहथी सूरिये तेमनुं कहेवुं मान्य कर्युं. पछी मंमुक नृपति पोताना घरे गयो अने गुरु पण म्होटी यानशालाप्रत्ये आव्या. त्यां पांचसो श्रेष्ठ मुनियोए पमिलेहन करेला पाट पाटलावाला स्थानमां सूरिये निवास कर्यो. नृपति पण तेमनी विवेकवमे सेवा करवा लाग्यो. वली राजानी आज्ञाथी वैद्यो पण निर्दुषण औषधोवमे भक्तिथी सेलक गुरुनी सेवा करवा लाग्या.

एकदा वैद्योए गुरुने कह्युं के, "हे भगवन् ! आवा महा रोगोने अमोए मदीरापानरूप अमृतथी दूर कर्या छे." वैद्योनुं आवुं वचन सांभली सेलक सूरिये पोतानां शास्त्रनी विस्मृतिनां मुख्य कारणरूप मदीरापानने रोगोनी निवृत्तिनुं अवलंबन धारी गीतार्थपणाथी कबुल कर्युं. ए प्रमाणे केटला दिवसे विविध प्रकारनी चिकित्साथी सेलक गुरुना शरीरने विषे सर्वे विषम रोगो शांति पामी गया. निश्चे सर्वे इंद्रियोमां रसना इंद्रियना दुर्जय एवा बलीष्टपणाथी तेमज सर्व कर्ममां मोहनीय कर्मना तेमज प्रमादना अति गहनपणाथी गीतार्थपति अने संविग्नमनवाला सेलकाचार्ये निरंतर भक्तपानमां बहु आसक्ति धारण करी, तेथी ए महामुनि सूत्रार्थना भणवा भणाववामां, विचार करवामां, शुद्धक्रियादिक कार्यमां अने षट्आवश्यकमां हमेशां शिथिल बनी गया.

कोइ वखते एक पंथक विना तपमां आसक्त थयेला चारसो नवाणुं शिष्योने तर्क थयो के, "आपणा सेलकगुरु चतुर छे छतां सरस भक्तपानमां अति आसक्त थयेला ए प्रमादथी बीजे विहार करवानी इच्छा करता नथी, माटे मोहने धिक्कार छे ! ! चारित्र पालवामां तत्पर अने त्यजी दीधो छे ममतानो

भार जेमणे एवा आपणे सौ फक्त गुरुना दृढ भक्त एवा एक पंथकने अहिं गुरु पासे राखी बीजे विहार करीए. " आम विचार करीने तेमज पंथकनी रजा लइने ते चारसोंने नवाणुं साधुओ बीजे दिवस सवारमां पाट पाटलादि पाछुं सोंपीने सेलकसूरिथी जूदा विहार करवा लाग्या. पाछल विनीत अने शुद्ध परिणामवालो पंथक मुनि पोताना चित्तमां विचार करवा लाग्यो के, " जो के सेलकगुरु पोताना कर्म वशथी शिथिल आत्मावाला थया छे, तो पण जेमनी पासे आलोक तथा परलोकनुं हितकारी व्रत अंगीकार कर्युं छे ते गुरुने सुशिष्योए त्यजी देवा जोइए नहि. सर्व शास्त्र समूहने जाणनारा तथा वखाणवा योग्य गुणवाला ए महात्मा गुरु पोतेज चारित्रना आचरणनो नाश थये छते चेती जशे. " आ प्रमाणे साधुओने हितकारी तथा अति श्रेष्ठ एवो विचार करीने ते विनीत एवो पंथक, भक्तिथी तेवा गुरुनी पण सेवा करवा लाग्यो. वली एकलो छता आलस त्यजी अवसर प्रमाणे सर्व क्रीया ते पोतेज करतो अने चंद्रनी पेठे निर्मल चारित्रने पालतो हतो. चारित्रनुं आचरण करता एवा सेलक गुरु पण लोढानी सांकलोना समूहथी हाथीनी पेठे प्रमादादि शत्रुओना समूहोथी बहु बाधा पाम्या, ते एटले सुधी के, कार्त्तिक चातुर्मासिनी पर्वणीने दिवसे पण ए महामुनि मीष्ट एवा भक्तपानने मरजी मुजब जमी अने सुइ रह्या. शुद्ध क्रियामां तत्पर अने चारित्र पालवामां निपुण बुद्धिवालो पंथकमुनि पण ते दिवस उपवास करी अने गुरुनी भक्ति करी, प्रतिक्रमण करवा लाग्यो. पछी क्षमासण करती वखते स्वभावथी सरल बुद्धिवाला ए पंथक यतीश्वरे पोताना मस्तकथी गुरुना चरणने विषे स्पर्श कर्यो. आ वखते तेमना मस्तकना संघटाथी जागी गयेला गुरु क्रोधथी आ प्रमाणे कहेवा लाग्या के, " अरे! कया जडपुरुषे अवसर विना म्हारी निद्रानो भंग कर्यो ? " पछी शंकायुक्त चित्तवाला अने पोताना आत्माने गुरुना अपराधथी मलिन थयेला जाणता छता पंथक मुनिये सरलगुणोवडे पोताना गुरुने मधुर वचनथी आ प्रमाणे कह्युं. " हे प्रभो! हुं आपनो पंथक नामनो आज्ञाकारी शिष्य, आजे कार्त्तिकीनो दिवस होवाथी हमणां चातुर्मासिक क्षमासमण करुं छुं. म्हारा पोतानां मस्तकना स्पर्शथी आपनी निद्रानो भंग थयो छे. आ अपराधनो हुं आपनी पासे क्षमा मागुं छुं अने हवे फरीथी एवो

अपराध नहि करुं." अतिविनयवंत पंथक शिष्यनां आवां वचन सांभलीने अति गाढ मोह निद्रानो नाश थवाथी ते सेलक गुरु बोध पाम्या, तेथी ते विचार करवा लाग्या. "हा हा ! उद्धत एवा मोहरूप भूतपतिने वश्य थयेला मने धिक्कार छे! धिक्कार छे!! जे में संसारना भयने दूर करनारुं चारित्र हारी दीधुं. अहो ? में म्होटां राज्यने त्यजी दइ निर्मल चारित्र आदर्युं हतुं अने बहु प्रयासथी सर्व शास्त्रनो अभ्यास कर्यो हतो छतां लोभथी लोपाइ गयेला बोधवालो हुं कांइ करी शक्यो नहि. हा! इंद्रियोनो मार्ग नाश पामवाथी हवे ते सामर्थ्य क्यांथी होय ? साधुउ एक अतिचारनी आलोचना न ले तो निश्चे बोधीबीज दुर्लभ थाय एटलुं नहि; परंतु बहुकाल पर्यंत संसारमां भमवुं पमे. में रसना इंद्रियना लोभथी बहु काल पर्यंत निश्चे असंख्य अतिचारो सेवन कर्या छे. तो हुं तेमनाथी शीरीते छूटीश. ? हा मने धिक्कार थाउ! धिक्कार थाउ !! हवणां हुं पोतेज म्हारा आत्माने संसारनां मूल रूप पापोना समूहथी उद्धारुं अने शास्त्रमां कहेली युक्तिथी आलोचना लइ ऊट आवा दुराचारथी निवृत्ती पामुं." अहो ! बहु विनीत एवा सर्वे शिष्योमां पण आ पंथक मुनिने धन्य छे. कारण के, अति प्रमत एवा मने ते बहु भक्तिथी सेवे छे. वली चारित्र पालवानी बुद्धिवालो अने सावधान एवो ते पंथकमुनि निरंतर व्रत पालतो छतो म्हारी पासे रहे छे." आम विचार करीने सेलक गुरुए पंथकने कह्युं. "हे सुसाधु पंथक ! महा मोहनिद्राने नाश करनारा त्हारां वचनथी हुं प्रबोध पाम्यो छुं."

पछी सेलक सूरि सर्व क्रीया करी भूपतिनी रजा लइ बीजे स्थानके विहार करी गया. त्यां बीजा बहुश्रुत साधु पासे पोताना सर्व दोषनी आलोचना लइ ते महामुनि, पंथक साधुनी साथे व्रत पालवा लाग्या. विशुद्ध चारित्रवाला सेलक सूरिने मोहनिद्राथी निर्मुक्त थयेला जाणी सर्वे विनीत शिष्यो तुरत तेमनी सेवा करवा लाग्या. परस्पर धर्मानुरागमां प्रीतिवाला ए मुनीश्वरोनी साथे सेलकसूरिये प्रमाद त्यजी दइ बहुकाल विहार कर्यो. पछी अंत समये गुणोथी गरीष्ट एवा ते गुरु, मोक्ष सुखनी इच्छा करता छता पोताना सर्व परिवार सहित शत्रुंजय पर्वत उपर गया. त्यां एक मासनुं अनशन करी श्री सेलक महामुनि, सर्व साधुउ सहित निरंतर आनंदमय एवा मोक्षसुख-

ने पाम्या. हे भव्यजनो ! तमे एकाग्रचित्तवाला थइने आत्म बोधरूप कमल-ना समूहने प्रकाश करवामां सूर्यबिंब समान अने पुण्यरूप अमृतनां पात्र रूप आ थावच्चा पुत्र मुनिनां उत्तम चरित्रने सांभलीने कामक्रोधादि शत्रुउ-नो क्षय करनार अने काल्याणकारी एवा शुक तथा सेलक मुनीश्वरोनां श्रेष्ठ व्रतनो आश्रय करो.

॥ इति थावच्चा पुत्रनी कथा ॥

सुच्ची जिणंदवयणं, सच्चं सोअंति पन्नणिउ हरिणा ॥
किंसच्चंति पवुत्ता, चिंततो जाइसरणाउ ॥ ३५ ॥
संवुद्धो जो पढमं, अध्ययणं सच्चमेव पन्नवइ ॥
कच्छुलनारयरिसिं, तं वंदे सुगइमणुपत्तं ॥ ३६ ॥

श्री कृष्णना पूछवा उपरथी 'सत्य एज शोच' ए जिनेश्वरनुं वचन सत्य छे, परंतु सत्य शुं? एम विचार करवाथी जेमने जाति स्मरण ज्ञान प्राप्त थयुं अने जेमणे केवलज्ञान मेलवी सत्य ए नामनुं प्रथम अध्ययन रच्युं. वली जे मोक्षगति पाम्या, ते कच्छुल (नारद) रुषिने हुं नमस्कार करुं छुं. ॥ ३५-३६ ॥

नारद ऋषिनी कथा.

कुशाग्र देशमां शौर्यपुर नामे म्होटुं नगर छे त्यां धनंजय नामनो शेठ वसतो हतो, तेने सुभद्रा नामे स्त्री हती. पुत्र रहित अने मिथ्या दृष्टि एवा ते बन्ने जणा देव देवीयोनी पासे पुत्रनी याचना करता छता निरंतर व्यग्र मनवाला रहेता हता. ते नगरमां लोकने विषे प्रत्यक्ष महिमावालो सुरंवर नामे यक्ष वसतो हतो, तेथी आ स्त्री पुरुषे, तेने सो पाडा चडाववानी मानता करी. कोइ वखते अनंत महिमाना स्थानरूप श्री महावीर स्वामी परिवार सहित भव्यजीवोने प्रबोध पमाडता छता त्यां समवसर्या. पछी श्रद्धावंत धनंजय शेठे नगरवासी जनोनी साथे समवसरणमां जइ जिनेश्वरने वंदना करीने अमृतरस समान धर्म देशना सांभली. त्यार पछी तेणे तुरत त्यांज हर्षथी देश विरतिने अंगीकार करी.

पछी कोइ वखते ते शेठनी स्त्री सुन्नद्राए पवित्र कांतिवाला पुत्रने जन्म आप्यो. अहो ! पूर्वे करेलां पोतानां कर्मो निश्चे अवसरे फले छे. पछी तो पेलो यक्ष, आनंदथी धनंजय शेठनीपासे पोतानां बलिदान (पूर्वे मानेला सो पाम्रा) ने मागवा लाग्यो. अहो ! देवताउ पण कारणविना हिंसामां आसक्त थयेला देखाय छे. पछी पर प्राणी उपर दयालु एवा धनंजय शेठे यक्षपासे जइने पोतानाज शरीरने केटलाक न्नागमां छेदी सो कक्रमा करीने तेने निवेदन कस्या. शेठनां आवां सत्वथी प्रसन्न थयेलो यक्षेंइ तेने कहेवा लाग्यो के, "हे धनंजय ! तुं सर्व शेठोमां मुख्य छे, माटे वरदान माग ! वरदान माग !!" धनंजये तेनी पासे हिंसा न करवारूप वरदान माग्यो. यक्षे वरदान आप्यो एटले प्रसिद्ध यशवाला अने साजा थइ गयेला अंगवाला धनंजये श्री जिनेश्वर प्रन्नुनी आज्ञाथी बहुकाल पर्यंत श्रावकधर्म पाळ्यो. हवे कोइ वखते श्री वर्द्धमान स्वामी त्यां समवसस्या. ते वखत प्रन्नुना धर्मघोष अने धर्मयश नामना बे विनीत शिष्यो, अशोक वृक्षनी नीचे सक्राय करवा लाग्या. बहु वखत थयो; परंतु वृक्षनी छाया दूर गइ नहि एटले विनीत एवा ते बन्ने साधुउ परस्पर कहेवा लाग्या के, "हे महामुनि ! निश्चे तमारा प्रन्नावथी आ वृक्षनी छाया स्थिर थइ छे." बन्नेमांथी एक साधु दूर गया तो पण वृक्षनी छाया बीजा उन्नेला साधु उपर स्थिर रही. ज्यारे ते दूर गया; तो पण छाया तो तेमनी तेमज स्थिर रही. पछी ते आश्चर्यने जोइ बन्ने मुनियोए श्री वीरप्रन्नु पासे जइने हितनी इच्छाथी वृक्ष छायाना स्तंन्ननचुं कारण पूछ्युं. प्रन्नुए कह्युं.

"पूर्वे आ नगरमां राजाउना मुकुटमणिरूप समुद्रविजय नामनो न्नूपति राज्य करतो हतो. तेने सोमामित्रा नामनी प्रियावालो यज्ञयश नामनो पुरोहित हतो. तेने यज्ञदत्त नामे पुत्र हतो. तेने सोमयशा नामे स्त्री हती. यज्ञदत्त अने सोमयशाने लोकमां प्रसिद्ध कीर्तिवालो नारद नामे पुत्र हतो. उपर कहेला चारे स्त्री पुरुषो निरंतर तप करवामां कुशल हता. तेथी तेउ नारदने अशोकवृक्षनी नीचे मूकी हंमेशां पोतानी आजीविका माटे खेतरमांथी दाणा विणी लावता हता. कोइ वखते जृंन्नक देवताउ त्यां ते बालकने जोइ प्रसन्न थया. पछी तेउए उत्पन्न थयेली दयाने लीधे तुरत ते वृक्षनी छायाने स्तंन्नावीने बालकने वैताढय पर्वत उपर लइ गया. त्यां तेउए तेने प्रज्ञप्ति

आदि बहु विद्याउ शिखवी. अनुक्रमे ते महा सत्ववान् नारद नामनो तापस थयो.

हवे कोइ एक दिवस सभाने विषे बलभद्र सहित श्री कृष्ण, तत्त्वज्ञ पुरुषोनी साथे तत्त्व संबंधी विचार करता हता. तेवामां त्यां नारद गया. कृष्णे तेमने सामा उठी आसन उपर बेसारीने स्पष्ट पूछ्युं के, "हे नारद! जलस्नानादिके करीने पोताना पापरूप कादवनो नाश थतो नथी, तो तेने तात्त्वीक शौच (पवित्रपणुं) शी रीते कहेवाय?" कृष्णनां आ प्रश्ननो नारदऋषि बहु बहु विचार करवा लाग्या, परंतु तेनो खरेखरो अर्थ जाणी शक्या नहि, तेथी ते तुरत आकाश मार्गे थइने पूर्व विदेहक्षेत्रमां श्री सीमंधरस्वामी पासे गया. त्यां तेमणे जिनेश्वरने पूछ्युं के, "हे नाथ! शौच (पवित्रपणुं) शुं कहेवाय? प्रभुए उत्तर आप्यो के, सत्य एज शौच कहेवाय छे." पछी नारदऋषि त्यांथी उठीने अपर महाविदेहक्षेत्रमां श्री युगंधर जिनेश्वरनी मनोहरपणाथी हर्षकारी सभामां गया. त्यां पण तेमणे प्रभुने हर्षथी शौच शब्दनो अर्थ पूछ्यो. प्रभुए पण निश्चे पूर्वना जिनेश्वरनी पेठे शौचनो अर्थ सत्य कह्यो. पछी नारदऋषि बन्ने जिनेश्वरोए कहेला शौचना अर्थने जाणी तुरत बहु उत्साह धरता द्वारका नगरीमां आवीने श्री कृष्णप्रत्ये कहेवा लाग्या. "हे कृष्ण! सांभलो. निश्चे शौचनो अर्थ सत्य छे." कृष्णे फरी पूछ्युं "हे साधु! सत्य कोने कहेवुं ते कहो?" वली कृष्णे हसीने कह्युं. "हे मुनि! आपे कहेलो शौचनो अर्थ खरो नथी छतां तमे जेने शौचनो अर्थ पूछ्यो होय तेने सत्यनो अर्थ पण पूछो." नारदऋषि "ए ज्ञान विना जाणी शकातुं नथी." एम विचार करता हता एवामां तेमने कर्मना क्षयथी जातिस्मरण ज्ञान थयुं. अनुक्रमे उज्वल एवा संवरनुं ध्यान करता ए महामुनिने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. पछी देवताए आपेला साधु वेशने धारण करी सुवर्णना कमल उपर बेठेला ते केवलीये कृष्णादिकनी आगल धर्मदेशना आपता प्रथम सत्य अर्थने प्रगट करनारुं सत्य नामनुं अध्ययन करी बताव्युं. सर्व प्राणियोने हितकारी अने महा व्रतथी उत्पन्न एवा सत्य अध्ययनने तथा बीजी उत्तम धर्मदेशनाने सांभली बहु भव्य जनो प्रबोध पाम्या. पछी ते कृतार्थ नारदऋषि, केवलीपणामां बहु कालपर्यंत पृथ्वी उपर विहार करी अनुक्रमे मोक्षपद पाम्या."

श्री महावीर प्रभुए पोताना धर्मघोष अने धर्मयश नामना बन्ने शिष्यो-

ने आ नारदनुं वृत्तांत कहीने पछी कह्युं के, "ते दिवसथी ए वृक्षनी छाया क्यारे पण नमती नथी. हे भव्यजनो ! तमे पूर्व जन्मने विषे संपादन करेलां कर्मरूप पापना समूहनो नाश करवा माटे आ पवित्र अने तत्त्वार्थ प्रगट करनारा नारदऋषिना चारित्रने सांभली निरंतर श्रद्धाथी पवित्र मनवाला अने ऊट संयमरूप भाव शौचने करवामां बांधेला आदरवाला थाउ.

॥ इति नारदऋषिनी कथा ॥

जो अ परमकइ तवं, छिन्नं लूहं च कायमगणितो ॥
सिद्धं विहुअरयमलं, सेलगपुत्तं तयं वंदे ॥ ३७ ॥

अर्थ–कोइए छेदीनाखेला अने मलिनपणाथी रुक्ष एवा पोताना देहने नहि गणता छतां जेमणे बार प्रकारनो तप कर्यो छे एवा ते कर्मना मलने धोइ नाखनारा सेलक पुत्र (मंडुकराजऋषि) ने हुं वंदना करुं छुं. ॥ ३७ ॥

असुरसुरपन्नगिंदा, जंतं पडिमागयं नमंसंति ॥
उज्जिंतसेलसिहरे, तं सिरसा सारणं वंदे ॥ ॥ ३८ ॥

अर्थ–गिरनार पर्वतना शिखर उपर कायोत्सर्गे रहेला जे मुनिने देव, दानव अने भुवनपतियो नमस्कार करे छे ते सारणमुनिने हुं मस्तकवडे वंदना करुं छुं. ॥ ३ ॥

वली पण ग्रंथकार बे गाथाए करीने सारणमुनिनी स्तुति करे छे. ॥

बारसभिक्खूपडिमा, जेणाणुचिन्ना महाणुभावेण ॥
वाससया निअमेणं, अछमछाणि जो कासी ॥ ३९ ॥
तं खविअपेमदोसं, वंदे जरमरणरोगमुत्तिन्नं ॥
अउलसुहसागरगयं, निव्वाणमनुत्तरं पत्तं ॥ ४० ॥

अर्थ–जे महानुभावे, बार भिक्षुपडिमा करी अने सो वर्षना अभिग्रहथी छछअछमादि तपो कर्यां ते रागद्वेषने खपावनारा, जरामरणना रोगथी

निर्मुक्त थयेला, अतुल्य सुखसमुद्रने पामेला अने उत्कृष्ट एवा मोक्षपदने अंगीकार करेला सारणमुनिने हुं वंदना करुं छुं. ॥ ३ए–४० ॥

नारयरिसिपामुक्खे, वीसं सिरिनेमिनाहतित्थंमि ॥
पन्नरस पासतित्थे, दश सिरिवीरस्स तित्थंमि ॥ ४१ ॥
पत्तेअबुद्धसाहू, नमिमो जे भासिन्ज सिवं पत्ता ॥
पणयालीसं रिसिभा–सि आइं अप्रयण पवराइं ॥ ४२ ॥

अर्थ–श्री नेमिनाथना तीर्थमां वीश, पार्श्वनाथना तीर्थमां पंदर अने वीर प्रनुना तीर्थमां दश एम नारद रुषि विगेरे पीशतालीश प्रत्येक बुद्ध साधुन के, जेन पीस्तालीश रुषियोए कहेला श्रेष्ठ अध्ययनो प्रकाशीने मोक्ष पाम्या छे. तेमने हुं नमस्कार करुं छुं.

ते पीस्तालीश रुषियोनां नाम आ प्रमाणे–

१ नारद, २ वज्जित, ३ पुण्यासीत, ४ अंगरुषि, ५ पुष्पशाल, ६ वल्कली, ७ कुंकुम, ८ केतली ए कास्यप, १० तेतलीश्रुत, ११ मंखली, १२ जगन्नपाली, १३ मयाली, १४ वहुमधु, १५ सौरिय, १६ विंडु, १७ उतरशैल, १८ कृष्ण, १ए आर, २० उत्कलवादी, २१ शरणकर, २२ गर्दन्न, २३ राम, २४ हिमगिरि, २५ अखंरू, २६ मयंग, २७ रक्त, २८ आर्द्द, २ए वर्द्धमान, ३० वायु, ३१ शश, ३२ पींग, ३३ अरुण, ३४ श्रीगिरि, ३५ अद्दाल, ३६ चित्रक, ३७ श्रीगिरि, ३८ सति, ३ए पुत्रन्नाज, ४० द्वीपायन, ४१ इंद्रनाग, ४२ सोम, ४३ सोमयश, ४४ वसान, ४५ वैश्रमण.

पहरिझंतो डुज्जो–हणेण तह पंमवेहिं थुवंतो ॥
समसत्तुमित्तन्नावो, दमदंतमहारिसी जयउ ॥ ४४ ॥

अर्थ–डुर्योधने प्रहार करेला तेमज पांमवोए स्तुति करेला छता शत्रुमित्रने विषे समान न्नाववाला दमदंत महामुनि जयवंता वर्तो.

॥ दमदंत महामुनिनी कथा ॥

आ न्नरत क्षेत्रमां कल्याणना स्थानरूप हस्तिशीर्ष नामे महानगर छे.

त्यां निर्दूषण एवो दमदंत नामे राजा राज्य करतो हतो. आ वखते हस्तिनापुर नगरमां शत्रुजना जुजबलने नाश करनारा पांच पांम्वो, कौरव सहित राज्य करता हता. केटलोक काल गया पछी कोइ कारणथी दमदंत नृपतिनी साथे पांम्वोने वैर वधी पम्युं; ते एटले सुधी के, बहु शत्रुजना समूहने त्रास पमाम्वामां निपुण एवा पाम्वो कौरवोए उत्साह पमाम्या छता बहु सैन्य लइ दमदंत नृपतिनी साथे प्रतिवर्षे महा जयंकर युद्ध करता. जो के कौरवोना पक्कथी पांम्वो बहु बलवंत हता तो पण सिंहनी पेठे युद्ध करता ते महा बलवंत दमदंत नृपतिथी तेज हार पामता. कल्पांतकालना समान महाजयंकर एवो ते राजा ज्यारे युद्धजुमि प्रत्ये आवतो त्यारे कौरवो सहित बलवंत एवाय पण पांम्वो दीन बनी जता. जो के विजय लक्ष्मीने मेलववामां आश्चर्यकारी एवो ते दमदंत जुपाल थोमा सैन्यवालो हतो तो पण पोतानाज जुजबलथी दुर्जय एवा ते राजाए बहुवार पांम्वोने जीत्या हता.

कोइ वखते प्रतिवासुदेव जरासंधनी सेवा करवा माटे दमदंत जुपति राजगृह नगर प्रत्ये गयो. पाछल छल जोइ रहेला पांम्वोने अवसर मल्यो तेथी तेज सेना लइ तुरत दमदंत राजाना देशनो नाश करवा त्यां गया. त्यां तेज गाम, नगर, आकर विगेरेने लुंटता लुंटता राजधानीमां आवी लुंट करवा लाग्या अने पोतानी मरजी मुजब बहु सुवर्ण रत्न विगेरे लइ तथा घणा एवा गायोना धणोने वाली संपूर्ण मनोरथवाला पांम्वो कौरवो सहित पाछा वल्या. अहिं तुरत उपराउपर आवेला बहु दुतोथी पांम्वोनां आगमनने सांजलवा मात्रथी बहु कोपायमान थयेलो दमदंत राजा पोताने छेतराएलो मानी तुरत जरासंधनी आज्ञा लइ पाछो वल्यो. राजधानी अने देशजंगना दुःखने मनमां लावी पोतानुं सैन्य सज्ज करीने महा कोपथी दुर्द्धर तथा धारण करेला खड्गथी जयंकर आकृतिवालो ए राजा जेम सींचाणो चकलीने मारवा तैयार थाय तेम शत्रुना सैन्यने मारवानी इच्छाथी जेटलामां पांम्वो अखंम प्रयाणथी पोताने सीमाम्मे आवी पहोच्या तेटलामां ते तेमनी पाछल आवी पहोच्यो. पछी पांम्वोनुं सैन्य पुरुषार्थ त्यजी दइ कष्टथी जीव लेइने नाठुं अने हस्तिनापुरमां पेसी गयुं. पाछल पशुनी पेठे पांम्वोना सैन्यने दोमावतो महासुजट दमदंत जुपति हस्तिनापुरने घेरो घालीने रह्यो. पांम्वो

पण कील्लाने सज्ज करी अने दरवाजा बंध करी शीयालनी पेठे रह्या. पछी दमदंत राजाए दूतनां मुखथी पांडवोने केहवराव्युं के, "अरे जडो! तमे शशलानी पेठे किल्लामां पेसीने केम रह्या छो? बीलाडानी पेठे तमे म्हारा निर्धणीया देशने तथा राजधानीने लुटी शुं पौरषार्थपणुं मेलव्युं? जो तमारुं कुल क्षत्रियनुं होय, तमे क्षत्रिय हो, तमारा पूर्वजो पण क्षत्रिय होय तेमज तमारी माता वीरपुत्रने जन्म आपनारी होय तो हवणां तमे मारी साथे युद्ध करो. अरे बीकणो! जो तमे युद्धने माटे नहि आवो तो हवे पछी जीवता छतां पण मूवानी पेठे आ नगरमांज बहुकाल पर्यंत रहो." राजतेजथी प्रगल्भ एवा दूते तुरत सभामां आवीने ते सर्व पांडवोनी आगल कह्युं; परंतु क्षत्रिय कुलमां उत्पन्न थयेला बलवंत अने कौरवो सहित एवा पांडवो वाणीने नियममां राखनारा मुनिनी पेठे मौनज रह्या. वली दमदंत भूपतिना पौरुषार्थने सहन करवा असमर्थ एवा पांडवो ते वखते दूतने उत्तर आपवाने पण समर्थ थया नहि. दूत पाछो आव्यो एटले बलवंत एवा दमदंत भूपतिये तुरत सर्व स्थानके पोताना विजयनो पटह वगडाव्यो के, "हे नगरवासी लोको! तमे सौ सांभलो. में आ प्रचंड एवाय पण पांडवोने जीत्या छे." पछी सर्व राजमंडलमां पांडवोनी लज्जाने वृद्धि पमाडतो ते राजमुकुटमणिरूप दमदंत भूपति पोतानी राजधानी प्रत्ये गयो. त्यां ते पोतानां तेजथी पूर्वे नाश थइ गयेली सर्व लक्ष्मी पुण्य प्रभावने लीधे पाम्यो. दीर्घकाल पर्यंत पोतानां राज्यने पालीने अवसरे उत्पन्न थयेला वैराग्यवाला ए दमदंत भूपतिये चारित्र लीधुं. कषायना छद्म रहित एवा ए राजर्षि पोतानी पूर्व कर्मनी क्रूर घाटीने जीतवा माटे बहु तप करवा लाग्या.

हवे कोइ वखते परिग्रह रहित अने पंच समिति तथा त्रण गुप्ति युक्त एवा ए मुनिये पृथ्वी उपर विहार करता करता हस्तिनापुरना उद्यानने विषे कायोत्सर्ग कर्यो. आ वखते परिवार सहित महाबलवंत एवा पांडवो कौरवोनी साथे क्रीडा करवाने नगरनी बहार गया. त्यां पुण्यथी पवित्र आत्मावाला युधिष्ठिर राजाए, शांत तथा इंद्रियोने जीतनारा ए महामुनिने दीठा. तुरतज जेमना शरीरने विषे पुलकावली उत्पन्न थइ छे एवा महाराजा युधिष्ठिरे पोताना चारे बंधुओ सहित हस्ति उपरथी नीचे उतरी त्रण प्रदक्षिणा पूर्वक नमस्कार करी

आनंदथी ए महामुनिनी बहु स्तुति करी. ते आ प्रमाणे. " धन्य पुरुषोमां मुकुटरूप, सत्वगुणना समुद्ररूप अने पराक्रमथी बाह्यन्नावरूप शत्रुने जीतनारा हे साधो ! तमे जयवंता वर्तो. तमे प्रथम अमारा सरखा बाह्य शत्रुउने जीतीने पढी अंतरंग शत्रुने जीतवा माटे सज्ज थयेला गे. न्नावशत्रुने जीतवाथी त्रण जगत्‌ना प्राणीयो जेमना सद्गुणोनी स्तुति करे ढे तथा त्रण जगत्‌मां पूज्यपणुं पाम्या ढे एवा हे मुनिराज ! तमे जयवंता वर्तो. " आ प्रमाणे मुनिना चरणनी रजने वारंवार स्पर्श करीने स्तुति करता एवा युधिष्ठिर नृपति अत्यंत प्रसन्न थइ पोताना बंधुउ सहित चाल्या गया. पढी दुष्ट बुद्धिवालो दुर्योधन त्यां आव्यो. तेने पोताना क्रूर सेवकोए पेला मुनीश्वरने नामथी उलखाव्या एटले तो ते कहेवा लाग्यो के, " अरे ! अमारा देशनो न्नंग करी अने वली आवुं पाखंम करी तुं अहिं आव्यो ढे ? ठीकज थयुं जे आज तुं म्हारा हाथे चम्यो. " वीर पुरुषोमां अधम अने क्रोधथी आकुल एवा दुर्योधने आवी रीते मुनिने तिरस्कार करी ए मुनिराजने एक बीजोराना फलथी प्रहार कस्यो. दुर्योधननी आवी चेष्टा जोइ परस्पर स्पर्धावंत एवा बीजा दोमता आवेला सेवकोए तुरत उपराउपर पथ्थरना वर्षादथी मुनिने रुधिरमय बनावी दीधा. जोके पांमवोए स्तुति करी अने कौरवोए प्रहार कस्यो तोपण ए मुनींड़े एके उपर जरा पण संतोष तेम क्रोध दर्शाव्यो नहि. आ प्रमाणे उत्कृष्ट रीते शमताने न्नावता ए मुनि अनुक्रमे महा उदयवाला केवलज्ञानने पाम्या. मोक्षसुखना स्वादना अर्थी एवा हे श्रेष्ठ साधुउ ! जेवीरीते शरीर बलवाला दमदंत राजर्षिये जाण तथा अजाण पुरुषोए करेला मान अपमानने विषे समतापणुं धारण कस्युं तेवी रीते तमे पण निरंतर संसाररसना न्नोगने नाश करवामां समर्थ एवा समतारसने सेवो.

॥ इति दमदंत राजर्षि कथा ॥

जलणाउ नेमिसीसुत्ति न्नणंतो जंन्नगेहिं उक्खितो ॥
सिरिकूअवारकमुणी, रामसुउ जयउ सिद्धिगउ ॥ ४५ ॥

अर्थ–द्वारका नगरी बलवाथी " हुं श्री नेमिनाथनो शिष्य बुं. " एम

कहेता एवा जे पुरुषने जृंभक देवताए आकाशमां उगाड्यो, पछी जे श्री नेमिनाथ प्रभु पासे दीक्षा लइ मोक्षपद पाम्यो, ते श्री नवमा बलदेवना पुत्र श्री कुब्जवारक मुनि जयवंता वर्तो ॥ ४५ ॥ आ कुब्जवारक मुनिनो अधिकार रामना अधिकारमां कहेलो छे. त्यांथी जाणी लेवो.

पंचवि निवपंमुसुआ, चउदशपुव्वी जुहिठ्ठलप्पमुहा ॥
दोमासी संलेहणापुव्वि सत्तुजये सिद्धा ॥ ४६ ॥

अर्थ—चौद पूर्वना धारणहार युधिष्ठिरादि पांच पाम्वो शत्रुंजय तीर्थने विषे बे मासनी संलेखना करीने मोक्षगति पाम्या छे. ॥ ४६ ॥

प्रकरणने विषे पांम्वचरित्र बहु म्होटुं छे; परंतु आ ठेकाणे तो कांइक रहस्य युक्त संक्षेपथीज कहीए छीए.

॥ पांम्व चरित्र. ॥

जेमणे यौवनावस्थामां रहीने पण त्रण जगत्‌ने जीतवामां मलरूप कलाक्रीमाना सुभट एवा कामदेवने जीत्यो छे; ते त्रण लोकना जनोए पूजेलां चरणकमलवाला श्री नेमिनाथ प्रभु तमारा कल्याणोने वृद्धि पमामो. त्रण जगत्‌मां प्रसिद्धयशना समूहवाला अने एज भवमां दीक्षाथी प्राप्त थयेला महोदयवाला श्री पांम्वोनुं पवित्र चरित्र फक्त पोताना बोधने अर्थे करुं छुं.

ज्यां श्री शांतिनाथ, कुंथुनाथ अने अजितनाथ ए त्रणे जिनेश्वरोनां म्होटां श्रेष्ठ चैत्यो निरंतर शोभी रह्यां छे एवुं कुरुदेशना आभुषणरूप अने सर्व वस्तुसमूहना निवास स्थानरूप हस्तिनापुर नामे नगर छे. त्यां श्रीऋषभदेव प्रभुना पुत्र कुरुराजाना असंख्य पूर्वजोथी सुशोभित एवा वंशने विषे उत्पन्न थयेलो, शांत आकृतिवालो अने चंद्रसमान यशना समूहवालो श्रीशांतनु नामे राजा राज्य करतो हतो. संपूर्ण मंमलवाला चंद्रनी पेठे कलाउथी पूर्ण एवा ते राजामां निश्चे चंद्रमां कलंकनी पेठे मृगयाना व्यसनरूप एक म्होटो दोष हतो. एक दिवस चपल एवा म्होटा अश्व उपर बेठेलो अने हाथमां धनुष्य बाण धारण करवाथी अनेक जीवोने त्रास पमाम्तो ए राजा हरिणादि अनेक जीवोथी भरपुर एवा वनमां मृगया करवाने माटे गयो. त्यां अत्यंत मृगयाना विनोदमां प्रवृत्त थयेला भूपतिये चारे तरफ अनेक बाणो

फेंक्यां, जेथी श्रेष्ठ मृगोनां टोलाउ नासवा लाग्या; शशलाउ बहु ज्ञयथी त्रास पामवा लाग्या, सुवरो (ज्रूंमो) घुरूघुरू शब्द करवा लाग्या; शबरो नासी जवा लाग्या, हाथीयो ऊामीमां पेसवा लाग्या अने चित्रको (एक जातना मृगो) पण आम तेम दूर जवा लाग्या. पढी हरिणीने आगल करीने ऊामीमां नासी जता एवा कोइ हरणने जोइ ज्रूपति तुरत तेनी पाढल चाल्यो. त्यां ऊामीनी अंदर वेगथी जता एवा तेणे स्वर्गथी पण अधिक शोज्ञावालो एक महेल दीठो. पढी आश्चर्य पामेलो ते महाराजा, तुरत अश्व उपरथी नीचे उतरी पगले पगले विविध प्रकारना कौतुकोने प्रफुल्लित दृष्टीथी जोतो ढतो ते सात मालना महेल उपर चम्यो. जेटलामां ते लक्ष्मीना निवास स्थानरूप सातमा माल उपर आवी पहोच्यो तेटलामां तेणे त्यां उत्तमरूपथी शोज्ञती, प्रफुल्लित मुखवाली अने जाणे लक्ष्मीनी न्हानी खाणज होयनी? एवी एक कन्याने दीठी. कन्याए पण राजाने तुरत पोतानी सखी पासे आदरसत्कार करावी तेने आसन उपर बेसाम्यो. पढी प्रसन्न थयेला अने आश्चर्य पामेला राजाए ते कन्याने पूढ्युं के, "हे कल्याणि! तुं कोण ढुं? अने आ महावनमां सुखकारी महेलने विषे शा कारणथी रहे ढे." राजाना आवा पृश्नथी प्रफुल्लित थयेला अंगवाली कन्याये कटाक्षथी ज्रूपतिने उत्तर आपवानुं पोतानी सखीने सूचव्युं एटले सखीये कह्युं. "हे राजन्! आप सांज्ञलो.

वैताढ्य पर्वत उपर रत्नपुर नगरमां सर्व विद्याधरोना मुकुटमणिरूप जन्हु नामे राजा राज्य करे ढे. तेने गुणोए करीने श्रेष्ठ अने सर्व कलामां प्रवीण गंगा नामनी पुत्री ढे. अनुक्रमे तप्त सुवर्णना सरखा देहवाली ए पुत्री मनोहर एवी यौवनावस्थामां आवी पहोची. एक दिवस पोताना खोलामां बेठेली ते पुत्रीने पिताए पूढ्युं के, "हे निर्मल मनवाली पुत्री! तने कयो वर रुचे ढे ते तुं हवणां मने कहे?" पुत्रीये कह्युं. "हे तात! जे पुरुष म्हारां वचनने जरा पण उल्लंघन नहि करे तेज म्हारे वरवा योग्य ढे, बीजो गुणवान् होय तो पण नहि." पढी जन्हु राजाए पोतानी पुत्रीने वरवा माटे अनेक युवान राजपुत्रोने बोलाव्या; परंतु पुत्रीनी प्रतिज्ञा कहेवाथी स्त्रीनी परतंत्रताने लीधे ज्ञय पामेला ते राजपुत्रोमांथी कोइ गुण समूहथी प्रसिद्ध एवी ते कन्याने परण्यो नहि. हे राजन्! ते दिवसथी आरंज्ञीने पोतानी वि-

थाथी सिद्ध थयेला आ गृहने विषे निर्ज्ञयपणे रहेती, नवकार मंत्रनुं ध्यान करती, गुरुनी ज्ञक्ति तेमज जिनेश्वरनी पूजामां आसक्त एवी आ राजपुत्री निरंतर जिनेश्वर प्रज्नुना धर्मने सेवे ठे. वली निश्चे आजे प्रज्नुनी सेवा फलीज्नूत थइ ठे. कारण आज सवारे कोइ श्रेष्ठ नैमित्तिकनी साथे जन्हु राजाए अहिं आवीने हर्षथी आ कन्याने आ प्रमाणे कह्युं हतुं. “ हे वत्से ! निश्चे मृगयामां आसक्त थयेलो महा तेजवंत शांतनु राजा आजे अहिं आवशे अने ते त्हारा पूर्व ज्नवना पुण्ययोगथी खरेखर त्हारो पति थशे. ” आ प्रमाणे इष्ट वचन कहीने पिता जन्हु महाराजा गया पठी तुरत आ विवेकवाली राजपुत्री गंगा, विविध प्रकारना उपचारथी विशेषे श्री जिनराजनी पूजा करवा लागी. सौज्नाग्य गुणना समुद्ररुप हे महाराजा ! तमे आ पुण्यना समूहथी प्रेरायला ठताज अहिं प्राप्त थया ठो. ” पठी हर्ष पामेला शांतनु राजाए कह्युं. “ म्हारे पण एनाथीज इच्छित कार्यनी सिद्धि ठे; माटे अद्भुत रूपनी खाण समान ए कन्यानुं वचन हुं क्यारे पण उल्लंघन करीश नहि. कारण एवो कयो पुरुष होय के, पोताने घरे आवेली लक्ष्मीनो वाणीवमे तिरस्कार करे ? अर्थात् कोइ न करे. वली हे शुज्न मनवाली ! ज्यारे हुं अजाणपणाथी कोइ वखत ए राजकन्यानुं वचन न मानुं त्यारे तेणे मने निश्चे त्यजी देवो. एज म्हारो दंम हो. ” आ प्रमाणे तेओ परस्पर बहु हर्षथी वात करे ठे एटलामां शांतनुं राजानुं सर्व सैन्य तेनी पाठल आवी पहोच्युं. पठी पोतानी पुत्रीनी सखीनी विनंती उपरथी तुरत जन्हुराजा त्यां आवीने आदर पूर्वक बहु हर्षथी शांतनु राजाने मळ्यो. त्यारबाद ए ज्नूपतिये, तेज वखते कामदेवने निवास करवाना मंदिररूप शृंगारने धारण करनारी अने बहु पुण्यथी महा देहकांतिवाली पोतानी पुत्री गंगाने महा उत्सव पूर्वक शांतनुं राजानी साथे परणावी. त्यार पठी ते ज्नूपाल पोताना सासराथकी वैताढ्य पर्वतनी संपत्तिने तेमज गौरवपणाने पामी गंगाने साथे लइने महोत्सव पूर्वक सेना सहित लक्ष्मीथी श्रेष्ठ एवा पोताना नगर प्रत्ये आव्यो. त्यां गंगानी साथे बहु प्रेमथी ज्नोग ज्नोगवता ए राजानो शंकरनी पेठे केटलोक सुखमयकाल निर्गमन थयो. अवसर प्राप्त थये गंगाये उत्तम ठीपनी पेठे पूर्व पूण्यथी पवित्र एवा श्रेष्ठ गर्ज्नने धारण कर्यो अने दश मास पूर्ण थये उत्तम दिवसे श्रेष्ठ लक्षणोथी शोज्नता एक पूत्रने जन्म

आप्यो. पछी शांतनु राजाए विविध प्रकारना महोत्सवो करावी अने सर्व नगरवासी जनोने संतोष्य पमामी तुरत बहु हर्षथी पोताना पुत्रनुं " गांगेय " एवुं नाम पाम्युं. जेम मन, सर्व इंद्रियो अने बुद्धि अनेक श्रेष्ठ भावोथी आत्माने लालन पालन करे तेम भाग्यकलाथी मनोहर एवा ते बालकने चतुर एवी पांच धावमाताउ लालन पालन करवा लागी.

एकदा मृगया रमवाने तैयार थयेला शांतनु राजाने जोइ दयालु चित्तवाली गंगाये तेने पोतानी पासे बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं. " हे नाथ ! तमे नीतिवंत पुरुषोमां अने शौर्यवंत पुरुषोमां अग्रेसर गणाउ छो छतां मृगयाना विनोदथी मृगादि जीवोने हणता तमे उत्तम पुरुषोना कया निर्मल गुणने प्राप्त कर्यो ? हे राजन् ! प्राणीयोनो नाश करनारी मृगया मनुष्योने बीजा भवमां निश्चे नरक आपनारी थाय छे, एम विचार करीने हे आर्य ! तमारे तेनो त्याग करवो जोइए. " राणी आ प्रमाणे विनंती करीने पछी मौन रही एटले भूपतिये कह्युं. " हे प्रिये ! सांभल. जोके सत्य अने हितकारी एवुं त्हारुं वचन शीघ्र नीतिमार्ग प्रत्येज गति करे छे. वली हुं पण दयारूप एक मूलवाला धर्मने जाणुं छुं, तोपण मृगयानी इच्छाने त्यजी देवा समर्थ थतो नथी, माटे हुं पोतेज हृदयमां विचार करीने तेने त्यजी दउ त्यां पर्यंत तुं मने ना नहि पाम. वली हे मृगाक्षी ! आ व्यसनो महा दोषने लीधे आ लोकमां तेमज परलोकमां बहु दुःखकारीज थाय छे, एम हुं जाणुं छुं. तथापी खरजनी पेठे तेने त्यजी देवाने हुं असमर्थ छुं. हे भद्रे ! निश्चे हंमेशा हिंसारूप अधर्मने सारी रीते जाणतो तथा ते अहिंसारूप (दयामय) आश्रवने स्मरण करतो हुं मृगयाने अर्थे जाउं छुं. कारण ते विना हुं रहि शकतो नथी. हाहा ! ! हवे शुं करुं ? " आ प्रमाणे शांतनुराजा पोतानी प्रियाने कहीने अनेक सुभटो सहित मृगया करवा गयो. पाछल पोतानां वचनना अपमानथी खेद पामती गंगा पण पुत्र सहित वैताढ्य पर्वत उपर पोताना पिताने घेर गइ. बहु काले शांतनु भूपति मृगया करीने पोताना घर प्रत्ये आव्यो. त्यां ते पुत्र सहित राणीने पोताना पिताने घेर गयेली सांभली बहु खेद पाम्यो. वली वारंवार गंगाना गुणसमूहने हृदयमां संभारतो तेमज पोताना पुत्रने पण फरी फरी याद लावतो ते महाराजा, स्मरण करवा योग्य भोगथी उत्पन्न थयेली काम

सुख संपत्तिने क्यारे पण नहि पामतो बतो बहु शोक करवा लाग्यो. पबी स्त्री पुत्रना बहु वियोग डुःखथी शांतनु राजाए मृगयानुं व्यसन त्यजी दइ चोविश वर्ष पर्यंत घरने विषेज निवास कस्यो. त्यारबाद स्वन्नावथीज नस्केरायेला ते महिपतिये स्त्री पुत्रना वियोगने न्नुली जइ तुरत पूर्वनी पेठे रसथी मृगया विनोद करवानो आरंन्न कस्यो.

एक वखते मृगया करवाने वनमां गयेला ते न्नूपतिने हाथमां धनुष्यबाण धारण करनारा, शरणे आवेलानुं रक्षण करनारा, आन्नूषणोथी सुशोन्नित अंगवाला अने श्रेष्ठ आकृतिवाला कोइ युवान् कुमारे आ प्रमाणे स्पष्ट कह्युं. "अरे! अहिं सर्व जीवोनुं रक्षण करनार हुं विद्यमान बता तुं पारधिनी पेठे निर्दयमनथी मृगादि जीवोने नाश करनारी मृगया केम करे बे? आ स्थानके संसारना मूलरूप अने अपवित्र एवी मृगया त्यजी दे, नहि तो हुं तने तुरत आ बाणवमे मारी नाखीश." कुमारनां आवां वचनथी शांतनु राजाए हसीने कह्युं. "हे बाल! हुं त्हारां आवां वचनथी न्नय पामुं तेवो नथी, अहो! मृगना बालकनो शब्द सांन्नलीने शुं केशरीसिंह नाशी जाय खरो? पबी बन्ने जणानुं बाणादि शस्त्रोवमे महा घोर युद्ध चाल्युं, तेमां न्नूपतिनां सर्व बाणो कुमारे बेदी नाख्यां; परंतु दयाने लीधे तेणे राजाने मास्यो नहि. न्नूपतिये क्रोध करीने कुमारनो नाश करवा माटे बहु बाणो मूक्यां, पण जेम वायुनी आगल बीजा साधारण शब्दो निष्फल थाय तेम कुमारनी विद्याना बलथी निष्फल थया. पबी पोताना सर्व सैन्यसहित शांतनु राजा कुमारनी संगाथे युद्धकरतो बतो विचारवा लाग्यो के, "आ कोइ देवता म्हारी परीक्षा करवा आव्यो बे के शुं?" आ अवसरे युद्धना न्नयंकर शब्द सांन्नली रणन्नूमिमां आवेली गंगाए पोताना पतिने तथा पुत्रने जोइ बहु हर्ष पामता बता आ प्रमाणे कह्युं. "पोताना वंशमां मुक्ताफलरूप अने सद्गुणोथी मनोहर एवा हे पुत्र गांगेय! त्हारा सरखाने क्यारे पण पोताना पितानी संगाथे युद्ध करवुं योग्य नथी, माटे तुं ऊट युद्धने त्यजी दइ न्नक्तिथी पोताना पितानां चरणकमलने प्रणाम कर. कारण के, कुलीन पवित्र पुत्रो क्यारेय पितानुं मनवमे करीने पण अपमान करता नथी." पोतानी मातानां आवां वचन सांन्नली प्रबोध पामेला श्रेष्ठ गांगेय कुमारे, युद्ध त्यजी दइ न्नक्तिथी पोताना पितानां चरणकमलने

विषे प्रणाम कर्या. शांतनु राजाए पण ते पोताना पुत्रने मूकी दइ अने ते पोतानी प्राणप्रिया गंगाने जोइ मनमां बहु आनंदथी विचार करता तेने उल-खी. पछी तेणे गाढ स्नेहथी ते पोताना पुत्रने आलिंगन करी प्रेमपूर्वक अति-सारवालां मधुर वचनथी प्रियाने कह्युं. “हे प्रिये! तुं वेगथी पोताना पिताने घेर गइ; तेथी जेम कमल विनानुं म्होटुं तलाव शोभारहित देखाय तेम म्हा-रुं सर्व घर पण तेवुंज मालम पमे छे. हे कमलाक्षी! जेम प्रद्युम्नयुक्त लक्ष्मी विना कृष्ण क्यारे पण प्रीति न पामे तेम पुत्रयुक्त त्हारा विना म्हारुं मन क्यारे पण धीरज नथी पामतुं, माटे हे प्रिये! कुलमां आभूषणरूप पुत्रस-हित तुं पोताना मंदिरने सुशोभित कर. कारण हे मृगाक्षी! कुलकन्याउ निश्चे पोताना घरने विषे शोभा पामे छे.” पतिनां आवां वचन सांभलीने तेज वखते चंद्रसमान मनोहर मुखवाली गंगाए कह्युं. “हे प्रिय! संसाररूप वनने वृद्धि पमामवामां मेघसमान आ भोगो मने प्रीति करता नथी, माटे हुं तो अहिंज रहिने श्री जिनेश्वर प्रभुए कहेला निर्मल धर्मनुं आचरण करी-श. हे भूपति! आपनुं कल्याण थाउ अने तमे पुत्रसहित पोताना नगरमां जइने दीर्घकालपर्यंत राज्य करो.” पछी प्रियाना महा घोर कदाग्रहने जाणी खेद पामेलो राजा तेजथी देदीप्यमान एवा पोताना पुत्र गांगेयने साथे लही पोताना नगर प्रत्ये गयो.

पछी कोइ वखते वनमां क्रीमा करवाने गयेला शांतनु राजाए कोइ ठे-काणे नदीना कांठे उभेली कोइ महारूपवती कन्याने दीठी. “तुं कोण छुं, कोनी पुत्री छुं अने अहिं केम उभी छु?” एम भूपतिये पूछ्युं एटले कन्याये कह्युं के, “मनुष्योमां रत्नरूप हे महाराजा! हुं नावीकनी पुत्री छुं अने आ नदीना कांठे नावने चलाववा माटे उभी छुं. वली लोकोमां सत्यवती नामथी हुं प्रसिद्ध छुं.” कन्यानां आवां वचन सांभलीने तेनां रूपथी उत्पन्न थयेला गाढ अनुरागना समूहथी शांतनुराजा तेना पिता पासे जइने आ प्रमाणे कहेवा ला-ग्यो. “हे नाविक! रूपपात्र पोतानी पुत्री मने राजाने आपीने अने म्हारा-पासेथी असंख्य लक्ष्मी पामीने तुं पोताना स्वजनोनी साथे दीर्घकाल पर्यंत असंख्य सुखोने भोगव. भूपतिनां आवां वचनथी अति प्रसन्न थयेला नाविके कह्युं. “हे भूमिपति! हुं म्हारी पुत्री आपने नहि आपुं. कारण के, तमारे

गांगेय नामनो महा बलवंत पुत्र बे, तेथी राज्यन्नारने धारण करवामां समर्थ एवा ते पुत्र बता म्हारी पुत्रीना पुत्रने राज्य क्यांथी मले ? माटे खरेखर उत्तम रूपवाली म्हारी पुत्री हुं आपने नहिज आपुं." पबी इच्छित कार्यनी सिद्धि नहि थवाने लीधे अति खेद पामेलो शांतनुराजा पोताना घर प्रत्ये आव्यो. त्यां आ सर्व वात जाणीने मनमां अत्यंत खेद पामेलो गांगेय कुमार विचार करवा लाग्यो. "निश्चे जेउए अतिपूज्य अने देवरूप पोताना मातापितानी आज्ञा पूर्ण करी नथी ते अधम पुरुषोना जीवितने धिक्कार थाउ अने तेमनुं ज्जुज विर्य पण वृथा बे, माटे ज्यारे हुं साध्य अथवा असाध्य विविध प्रकारना उपायथी ते कन्या म्हारा पिताने अपावुं त्यारे हुं निरंतर मनुष्योमां उत्तमपणुं पामुं." आ प्रमाणे विचार करीने गुणोथी गरीष्ट एवो गांगेय कुमार पोताना स्वजनोने साथे लइ नाविक पासे आवीने अमृतथी पण अधिक रसवाली वाणीवमे करीने कहेवा लाग्यो. "हे नाविक ! अनुरक्त चित्तवाला अने योग्य एवा श्री शांतनु राजाने तुं पोतानी पुत्री शा कारणथी नथी आपतो ? ते हवणां कहे ?" नाविके कह्युं. "हे कुमार ! हुं म्हारी पुत्री तमारा पिताने शीरीते आपुं ? कारण तमे तेमनां राज्यने धारण करो तेवा पुत्र बो तो पबी म्हारी पुत्रीना पुत्रोए करीने शुं ? अर्थात् तमे बता म्हारी पुत्रीना पुत्रोने राज्य मले नहि. एज कारणथी हुं म्हारी पुत्री तेमने आपतो नथी."

गांगेये कह्युं. "आजथी म्हारे आ ज्जवमां राज्यासने बेसवानो नियम बे; माटे हुं त्हारी पासे याचना करुं बुं के, तुं पोतानी पुत्री ऊट म्हारा पिताने आप. कारण शीघ्र आवी पमेला हितकार्यमां कयो पुरुष विलंब करे ? अर्थात् कोइ न करे." पबी नाविके कांइक हसीने कह्युं. "राजकुमार ! तमे राज्यनो निषेध कस्यो, परंतु तमने तमारा जेवा बलवंत पुत्रो थाय तो तेउ राज्यना अधिकारी कहेवाय माटे हुं म्हारी पुत्री तो नहिज आपुं." पबी पितानी ज्जक्तिने विषे आसक्त चित्तवाला कुमारे नाविकने कह्युं. "जो त्हारां चित्तने विषे एम बे तो मने आ ज्जवने विषे महाघोर एवुं ब्रह्मचर्य व्रत हो." गांगेयनां आवां वचनथी अति हर्षित थयेला नाविके कह्युं. "हे उत्तम राजपुत्र ! त्यारे तो हवे आ म्हारी पुत्रीने लइ जइने तमे ऊट पोताना पितानी साथे परणावो." पबी पोतानी कार्यसिद्धिथी अति हर्षित चित्तवाला गांगेय कुमारे ते कन्याने

साथे लइ जइ तुरत पोताना पिता शांतनु राजानो मनोरथ पूर्ण कर्यो. पछी उत्तम लोकोत्तर गुणवाला अने महाभक्त एवा गांगेय कुमारने विषे पोताना सर्व राज्यनो भार मूकीने शांतनु राजा सत्यवतीनी साथे भोग भोगववा लाग्यो. अनुक्रमे भूपतिनी साथे इच्छा प्रमाणे भोग भोगवता सत्यवतीने महाभुजबलवाला चित्रवीर्य अने विचित्रवीर्य एवा नामना बे पुत्रो थया. केटलोक काल गया पछी शांतनु राजा काल धर्म पाम्यो एटले गांगेय तुरत राज्यने विषे चित्रवीर्यने बेसार्यो अने विचित्रवीर्यने युवराज पद्वी आपी.

कोइ वखत गांगेय कोइ महायुद्धमां गया हता, एवामां पाछलथी शत्रुभए आवीने विचित्रवीर्यने मारी नाख्यो. ते वातनी खबर सेवकोए गांगेयने कही; तेथी तेमणे ते पोताना बंधुने मारनार शत्रुने मारी नाख्यो. पछी गांगेये हर्षथी विचित्रवीर्यने राज्यसन उपर बेसारी अने तेने अंबा, अंबाला अने अंबीका नामनी त्रण उत्तम राज्य कन्याउ परणावी. विचित्रवीर्य पण बहु कामासक्तिने लीधे थयेला क्षयथी मृत्यु पाम्यो अने तेनी त्रण स्त्रीयोने अनुक्रमे जाणे सज्जन पुरुषोने मान्य एवा साक्षात् पुरुषार्थज होयनी ? एवा सुगुणोथी शोभता धृतराष्ट्र पांमु अने विदुर एवा नामना त्रण पुत्रो थया. पछी दृढ ब्रह्मचर्य व्रतवाला गांगेये, धृतराष्ट्र पुत्रने उत्तम रूपवती गांधारी विगेरे श्रेष्ठ आठ राजकन्याउ म्होटा उत्सवथी परणावी. अनुक्रमे ते स्त्रीयोने न्यायना जाण एवा दुर्योधनादि सो पुत्रो थया के, जेउ कुरुराजाना वंशने विषे उत्पन्न थवाथी कौरवो कहेवाया. दुर्योधनना जन्मना त्रीशमे मासे एवी आकाश वाणी थइ के, " मद्यना समान पीलां नेत्रवालो आ दुर्योधन, फक्त पोताना कुलनो नहि पण सर्व क्षत्रियोनो नाश करनारो थशे. "

एक दिवस सुरपुरना अंधकवृष्णि राजानी पुत्री कुंतीनी कोइ पुरुषे वर्णन करेली रूपलक्ष्मीने सांभली पांमुकुमार तेने विषे बहु अनुराग धरवा लाग्यो. सभामां बेठेला अंधक वृष्णिराजाना खोलामां बेठेली कुंतीये पण कोइ पुरुषे वर्णन करेला पांमु कुमारना गुणो सांभल्या, ते उपरथी पांमुने विषे बहु अनुराग धरती ते कुंतीये एवी प्रतिज्ञा करी के, " आ भवने विषे म्हारो भर्ता पांमुराजा हो, नहि तो म्हारे संयम लेवो योग्य छे. " त्यारपछी जेम मुनियो पोतानुं मन आत्माने विषेज आरोपण करे तेम कुंतीये पण

क्रीम्रावन, पोतानी सखीयोनी वार्ता अने कुतुहल इत्यादि अनेक स्थानोथी पोतानां मनने खेंची लइ फक्त पांमुराजाने विषेज धारण कर्युं. कह्युं छे के-पूर्वभवमां जे माणसने जेनी साथे शुभ अथवा अशुभ जेवो मेलाप थयो होय ते माणसने आ भवमां तेना दर्शनथी अथवा तो तेने सांभलवाथी बहु प्रीति थाय छे.

हवे पांमुकुमार कुंतीना वियोगथी पोताने घरने विषे सुख न पम्वाने लीधे वनमां फरतो हतो, एवामां तेणे लोहमयबाणथी विंधायेला अने मूर्छा पामेला कोइ पुरुषने दीठो. वली तेणे ते पुरुषनी पासे पम्ेलुं एक खम्ग दीठुं. पछी तो दयाथी भींजाइ गयेला चित्तवाला अने कुंतीना वियोगदुःखने भूली गयेला पांमुकुमारे ते पुरुषने देखवा मात्रथीज पोताना चित्तमां "आ कोण छे ?" एम विचार करवा मांम्यो. वली ते खम्गनी उपर पम्ेली बे औषधोउने जोइ अने तेना महिमाने जाणी दयावंत पांमुकुमारे ते पुरुषने एक औषधी-वम्े शल्यरहित अने बीजीवम्े घा रहितकस्यो. पछी "तुं कोण छे अने त्हारी आवी अवस्था केम थइ ?" एम पांमुकुमारे पुछयुं एटले ते पुरुषे कह्युं के, "हे सुभग ! हुं अनिलगति नामे विद्याधरोनो प्रौढ समृद्धिवालो तथा महा प्रताप-वालो राजा छुं. कामदेवने वश थयेला अशनीवत विद्याधरे बलथी म्हारी प्रा-णप्रियानुं हरण कर्युं. हुं तेनी पाछल जवा लाग्यो एटले महाकोपथी भरपुर थयेला ए विद्याधरे तुरत मने आवी अवस्था प्रत्ये पहोचाम्यो. हे महाभाग! एज वखते निष्कारण उपकारी एवा तमे म्हारा भाग्ययोगथी अहिं आवी पहोच्या. जे दयाथी भींजायेला चित्तवाला तमोए मने आ मरणांत दुःखका-री कष्टथी मूकाव्यो. हे भाइ ! जीवितदान आपनारा तमोने हुं शुं ऊट प्रत्यु-पकार करुं ? हे राजन् ! आ बे औषधी अने आ मुद्रा ए बन्ने वस्तुउने गृहण करो. हे बंधो ! तमे आ मुद्राना योगथी इष्टस्थाने शीघ्र पहोची शकशो. वली तमे ज्यारे मने संभारशो त्यारे हुं आपनी पासे हाजर थइश." आ प्र-माणे ते विद्याधर पांमुकुमारने कहीने पोताने स्थानके गयो अने विद्याधरना गुणथी हर्ष पामेलो पांमुकुमार पण ते विद्याधरने तथा कुंतीने पोतानां चि-त्तमां वारंवार स्मरण करतो तुरत पोताना नगरप्रत्ये आव्यो.

हवे कोइ एक दिवस पांमुना वियोगदुःखथी आकुलव्याकुल थयेली अने

ते राजकुमारनी प्राप्तिने दुर्लभ मानवाथी अति खेद पामेली कुंती मृत्यु पामवानी इच्छाथी ऊट क्रीमावनमां गइ. त्यां ते राजकुमारी हाथ जोमीने "हे कुलदेवता ! दुर्लभ पतिवाली अने शरणरहित एवी हुं तमारी प्रार्थना करीने आजे मरण पामुं बुं." एम कहीने तेणे पोताना कंठने विषे पास बांध्यो. पढी जेटलामां भ्रमथी पीमा पामती कुंती पोतानां चित्तमां पांमुराजानुं स्मरण करती बती लटकी तेटलामां मुद्राना प्रभावथी पांमुकुमार "हे प्रिये ! तुं बलात्कार न कर ! न कर ! ! त्हारा पुण्यने लीधे हुं पांमुकुमार पोतेज अहिं आवी पहोच्यो बुं." आ प्रमाणे कहेतो एवो पांमु त्यां आवी पहोच्यो अने तत्काल तेणे पोताना हाथथी कुंतीना कंठपाशने बेदी नाख्यो. पोताने वहालो पति पांमुकुमार प्राप्त थयेलो जाणी परसेवा अने रोमांचादिकथी पोताना शरीरने विषे बहु भावने वृद्धि पमामती कुंती अत्यंत हर्ष पामी. पढी सतीपणाने इच्छती एवी हर्षवंती कुंतीये सखीयोए आणेला योग्य उपचारथी गांधर्वविवाहवमे पांमुराजानो पाणीग्रहण कर्यो. पढी तेज वखते त्यां संभोग करवाथी ऋतुस्नानवाली कुंतीये दैवयोगथी गर्भ धारण कर्यो अने ते वात अवतंसिकानामनी दासीये पांमुराजाने कही. पढी पोतानुं कार्य सिद्ध थयुं एटले पांमुकुमार मुद्राना योगथी पोताना देशमां गयो अने गर्भ धारण करती एवी कुंतीने तेनी सखीयोए गुप्तरीते राखी. जेम रोहणाचल पर्वतनी भूमि गोपवी राखेलां रत्नने वेगथी प्रगट करे तेम निरंतर धावमाता अने सखीयोए गोपवी राखेली कुंतीये अवसरे एक पुत्रने जन्म आप्यो. लज्जाथी मन विना ते पुत्रने कुंतीये एक कांसानी पेटीमां मूकीने पोतानी सखीयोनी पासे ते पेटीने गंगाना महा प्रवाहमां तणाती मूकावी. अनुक्रमे गंगाना महा प्रवाहमां तणाती ते पेटी हस्तिनापुरनी पासे आवी पहोंची. त्यां सवारे स्नान करवा गयेला नागसारथीये ते पेटी लइ लीधी. पढी जेम वादलाथी निर्मुक्त थयेला सूर्यने जोइ चकलो हर्ष पामे तेम पेटी उघामवाथी बालकने जोइ हर्ष पामेला सारथीये ते कुमारने पोताना पुत्रनी पेठे मानी पोतानी स्त्री राधाने सोंप्यो. मातापिताए तेनुं "कर्ण" नाम पाम्युं. अनुक्रमे वृद्धि पामेलो अने गुणोना स्थानरूप ए नागसारथीनो पुत्र [कर्ण] धृतराष्ट्र भूपतिने बहु वहालो थइ पम्यो.

पछी अंधकवृष्णि नृपतिये, धात्रमाता पासेथी कुंतीना चित्तना अभिप्रायने जाणी जेम रात्रीने चंद्रनी साथे परणावे तेम तेने म्होटा उत्सवथी पांडु कुमारनी साथे परणावी. मद्रक राजानी पवित्र पुत्री माद्रकी पण गुणोथी आसक्त थवाने लीधे स्वयंवरमां पांडुने परणी; तेथी पांडुने कुंती अने माद्रकी एवी बे स्त्रीयो थइ. जेम कामदेव रति अने प्रीतिनी साथे क्रीडा करे तेम महा शक्तिवंत अने प्रसरता प्रतापवालो पांडुराजा पण ते पोतानी बन्ने स्त्रीयो साथे भोगोने भोगवतो हतो. पछी कोइ एक दिवसे रात्रीना वखते बहु भाग्यवाली कुंतीये स्वप्नामां मेरु पर्वत, क्षीर समुद्र, सूर्य चंद्रनुं प्रतिबिंब अने लक्ष्मी एटली वस्तुउ दीठी. स्वप्नप्रभावथी रत्नगर्भा (पृथ्वी) नी पेठे उत्तम गर्भने धारण करती कुंती निरंतर दिवस दिवसने विषे श्रेष्ठ धर्मकार्यरूप मनोरथोनो विचार करती हती. पछी जेटलामां शुभ लग्ने सारा दिवसे अने सूर्यादि पांच ग्रहो उच्चस्थाने रह्ये छते कुंतीये पुत्रीने जन्म आप्यो तेटलामां आकाशथी पांडुराजाना घरने विषे पुष्पवृष्टि थइ. “ उज्वलता दया दान दमादि सर्व गुणोए करीने शोभतो आ राजकुमार निश्चे धर्मपुत्र छे. ” एम उच्चार करता देवताउ ते वखते महा हर्षथी पांडुना घरने विषे आव्या. सारो दिवस, देववाणी अने महोत्सवोए करीने युधिष्टिर एवा नामथी प्रसीद्ध थयेलो ते कुमार प्रशंसा करता एवा मनुष्योनी मध्ये सत्य गुणोथी वखाणवा योग्य अने कलाधारी थयो. कुंतीये बीजी वखत रात्रीने विषे स्वप्नामां पोताना आंगणे वायु देवताए वावेला कल्पवृक्षने फलीभूत थयेलुं जोइने पछी जागी गयेली ते बहु हर्ष पामी. जेम छीप मोतीने धारण करे तेम कुंतीये स्वप्नना प्रभावथी जगत्ने विषे उत्तम एवा गर्भने धारण कर्यो. आ वात पांडुराजाए जाणी; तेथी ते विश्वमां बहु हर्ष अने संतोष पाम्यो. पछी ज्यारे गांधारीये दुर्योधनने जन्म आप्यो, तेनी पाछल त्रण पहोरे कुंतीये बीजा पुत्रने जन्म आप्यो. ते वखते आकाशमां “ आ पुत्र वज्र समान शरीरवालो, श्रेष्ट धर्मने विषे धीरजवंत अने म्होटा बंधुनी सेवा करवा तत्पर अने भीम (भयंकर) बलवालो थशे. ” एम आकाशवाणी थइ. आ उपरथी लोकमां ए पुत्रनुं भीम नाम पड्युं.

कोइ वखत पांडुराजा, पोतानी प्रियाउ सहित कोइ पर्वतने विषे क्रीडा

करवा गयो हतो, एवामां त्यां कुंतीना हस्तकमलथी महा वज्र समान देह-वालो ज्ञीमसेन बालक, पृथ्वी उपर पमी गयो. जाणे इंद्रे वज्र मुक्युं होयनी? एवा ज्ञीमसेनना पमवाथी नीचे रहेली सर्व शिलाउ घंटीना योगथी कोमल चोखानी पेठे तत्काल चूर्णरूप थइ गइ. "आ कुमार महावज्रकाय छे." एम कहेता एवा देवताउए, अक्षतांग (जेना शरीरने विषे जरा पण नथी वाग्युं.) एवा ते बालकने लइने कुंतीने आप्यो; जेथी ते अंधकवृष्णि राजानी पुत्री कुंती, पांमुराजा सहित बहु हर्ष पामी. पछी कुंतीये महा पुण्ययोगथी अवसरे त्रीजा गर्ज्ञने धारण कर्यो. आ वखते तेणे स्वप्नामां ऐरावतहस्ति उपर बेठेला इंद्रने जोयो. "शुं हुं ते हाथमां धनुष्य धारण करीने अनेक दैत्यने दली नांखुं अथवा तो शत्रुउना वक्षस्थलने चूर्ण करी नाखुं" आ प्रमाणे तेणे दोहन उत्पन्न थयो हतो. पछी पूर्ण अवसरे कुंतीये, विश्वमां उत्कृष्ट अने सूर्य समान देदिव्य अंगवाला एक पुत्रने जन्म आप्यो. आ वखते आकाशमां देवताउए "आ इंद्रपुत्र अर्जुन छे" एम म्होटो ध्वनी करीने अप्सराउना नाच अने वार्जीत्रोना शब्द पूर्वक पुष्पनो वर्षाद वरसाव्यो. पांमुराजाए पण पुत्र जन्मनो म्होटो उत्सव कर्यो. माद्रीने पण कुलरूप समुद्रने उल्लास पमामवामां चंद्ररूप नकुल अने सहदेव नामना बे पुत्रो थया. महाराजा पांमु आ पांच पुत्रोए करीने पृथ्वीने विषे बहु शोज्ञतो हतो. धृतराष्ट्र राजाने पण अनुक्रमे शत्रुउनो नाश करवानी इछावाला सो पुत्रो थया. ते सर्वे शास्त्रमां कहेली कलाउना समूहना जाण अने कुलने आनंद आपवामां चंदनवृक्ष समान थया. सो पुत्रोए करीने धृतराष्ट्र राजा संपूर्णपणाने पामेला कौरवपक्षीने प्रबोध पमामनारा अने ताराउथी विंटलाएला चंद्रनी पेठे बहु शोज्ञतो हतो.

हवे एक दिवस पांमुराजासहित कुंती यात्राने माटे नासीकपुरप्रत्ये गइ. त्यां तेणे चंद्रप्रज्ञ तीर्थंकरनुं म्होटुं नवीन चैत्य कराव्युं. जिनेश्वरनी पूजा, आरती, नृत्य, दानादि सर्व क्रीया करीने पुण्यथी पवित्र अंगवाली ते पोताना पतिनी साथे पोताना नगर प्रत्ये आवी. जे मनुष्य आ नासीक नगरने विषे रहेला श्री चंद्रप्रज्ञ तीर्थंकरने ज्ञक्तिथी प्रणाम करे छे, ते आवता ज्ञवने विषे बोधी बीजने पामी अंते उत्तमगतिने पामे छे. सत्यवाणीवालो अने पो-

तानी मेले प्रसिद्धि पामेलो श्री धर्मपुत्र युधिष्ठिर, पवनना सरखा महा ज्जुजबलवालो पवन पुत्र ज्नीम, त्रणलोकमां विजय मेलवनार इंड पुत्र अर्जुन अने महाज्जुज पराक्रमवाला सहदेव तथा नकुल ए पांच पांम्वो कहेवाय बे.

॥ इति पांम्वचरित्रे पांम्वोत्पत्तिनामा प्रथमोधिकारः ॥ १ ॥

त्रण जगतूनुं रक्षण करनारा बे चरणकमलवाला, सत्पुरुषोने स्मरण करवा योग्य बे नाम जेमनुं एवा, इंडादि देवताउए नमस्कार करेला अने श्रेष्ठ मुक्तिरूप स्त्रीना पति एवा श्री नेमिनाथ नामना अरिहंत प्रज्जुने हुं नमस्कार करुं बुं.

हवे धृतराष्ट्रना डुर्योधनादि सो पुत्रो, पांमुराजाना युधिष्ठिरादि पांच पुत्रो अने नागसारथीनो पुत्र कर्ण ए सर्वे निरंतर एकठा मलीने क्रीमा करता हता. तेमां क्षुड बुद्धिवालो अने बल करवामां तत्पर एवो बंधुसहित डुर्योधन पोतानी क्रीमाथी सरल स्वज्जाववाला पांम्वोने निरंतर बहु बेतरतो हतो. हमेशां स्वज्जावथीज उद्धत आत्मावालो ज्नीम, सो कौरवोनी मायाने जाणीने तुरत तेउने पोताना बलवमे कुटतो अने ज्जुज पराक्रमथी काढी पण मूकतो. एक दिवस उंघी गयेला ज्नीमसेनने डुष्ट बुद्धिवाला कौरवोए बलथी बांधीने पाणीमां फेंकी दीधो. त्यां क्षणमात्रमां जागी गयेला तेणे पोताना पराक्रमथी बांधेली दोरीने त्रोमी नाखी. आ प्रमाणे हमेशां धृतराष्ट्रना पुत्रो [कौरवो] वायुकुमार [ज्नीमसेन] ने तिरस्कार करता. ज्नीमसेन पण ते सर्वेने जेम विष्णु, दैत्योने पराज्जव पमामे तेम पराज्जव पमामतो. डुष्ट बुद्धिवाला डुर्योधने ज्नीमसेनने ज्जोजनमां विष आप्युं; परंतु ते तो तेने पुर्वपूण्यना योगथी अमृतरूपे परिणम्युं. आ एक अमने म्होटुं आश्चर्यकारी थयुं. ए डुर्योधन क्रोधथी ज्नीमसेनने मारवा माटे जे जे प्रयत्न करतो, ते ते अपात्रने विषे आपेला दाननी पेठे निष्फल थता. पढी धृतराष्ट्रना डुर्योधनादि पुत्रो, पांमुना युधिष्ठिरादि पुत्रो अने नागसारथीनो पुत्र कर्ण ए सर्वे कृपाचार्य गुरुनी पासे अज्यास करवा लाग्या. अनुक्रमे अज्यास करता ए सर्वे कुमारोमां बुद्धिना गुणथी कर्ण अने अर्जुन ए बन्नेजणा अधिकपणुं पाम्या. ते उपरथी कपट चित्तवालो डुर्योधन, ते बन्ने उपर निशंकपणे निरंतर द्वेष राखवा लाग्यो.

कोइ वखते अनाध्यायना दिवसे क्रीमा करता ते कुमारोनो दमो कूवामां

पमि गयो. पछी तेने काढवा माटे बहु महेनत करी; परंतु प्रयास निष्फल थयो, तेथी ते सर्वे कुमारो कूवाना कांठे जमवा लाग्या. एवामां अश्वस्थामा नामना पुत्रसहित द्रोण नामे कोइ सर्व धनुर्वेदने जाणनारो ब्राह्मण त्यां आवी पहोच्यो. तेणे सर्वे कुमारोने कह्युं के, "अरे कुमारो! पिताना धनमांथी जाग नहि पामेलानी पेठे खेद पामेला तमे आ कूवाने कांठे निरुद्यमी थइ केम बेठा छो?" कुमारोए "अमारो दमो आ कूवामां पमि गयो छे." एम तेनी आगल कह्युं एटले ते ब्राह्मणे परस्पर संधामेला बाणोथी ते दमाने बहार काढी दीधो. पछी गांगेये लोकमां आश्चर्यकारी द्रोणनी आवी धनुर्वेदनी कला जाणीने श्री कृपाचार्य गुरुनी आज्ञाथी ते सर्वे कुमारोने धनुर्वेदनो अभ्यास कराववा माटे ते द्रोण विप्रने सोंप्या. पछी जेम ताराने विषे चंद्रमा शोभे तेम सर्वे कुमारोमां निरंतर कांतिथी कर्ण शोभवा लाग्यो अने अर्जुन तो तेथी पण अधिक एटले जाणे साक्षात् सूर्यज होयनी एम देखावा लाग्यो.

पछी सर्वे कुमारोमां ऊट बाणने धनुष्य उपर चमाववुं, धारी राखवुं, पाछुं खेंची लेवुं, दूर फेंकवुं अने दृढ प्रहार करवो. ए सर्व कलाउने विषे अर्जुन अधिक गणायो. जो के द्रोण गुरु पोतानी दृष्टी बलवंत एवा सर्वे कुमारोने विषे सरखी राखता हता तो पण ते, नम्रपणामां, जुज पराक्रममां अने शौर्यमां अर्जुनने बहु वखाणता. एक दिवस द्रोणगुरु, सर्व शिष्योनी साथे यमुना नदीमां क्रीमा करता हता एवामां कोइ जलचर जीव, तेमनो एक पग पकमीने खेंचवा लाग्यो. जो के गुरु पोतेज पोतानो पग छोमाववाने समर्थ हता तो पण तेमणे शिष्योनुं विनयपणुं जोवाने माटे म्होटो पोकार कर्यो एटले सर्व शिष्यो त्यां आव्या; परंतु कोइ तेमने छोमाववाने समर्थ थयो नहि. पछी अर्जुने तुरत पोतानां धनुष्यना रणत्कार शब्दवमे करीने ए क्षुद्र जंतुथी गुरुने क्षणमात्रमां छोमाव्या. अर्जुननी आवी गुरुजक्ति अने आ प्रकारनुं बल जोइ गुणज्ञ गुरु बहु हर्ष पाम्या; परंतु "जो हुं तेनी प्रशंसा करीश तो आ बीजा सर्वे शिष्यो तेना उपर द्वेष करशे अने ते अर्जुनने पोताने पण मद थशे." एम धारी गुरुए तेने वखाण्यो नहि. कोइ वखते एकांते अर्जुननी पासे द्रोण गुरुए एवी प्रतिज्ञा करी के, "हे श्रेष्ठ! हुं त्हारा विना बीजा कोइने क्यारे पण धनुर्वेदनी सर्व कलाउ नहि शीखवुं." पछी कोइ दिवस एक लक्ष्य

नामनो न्नील्ल, डोण गुरु पासे धनुर्वेदकलाउ शिखवा आव्यो; परंतु डोणे तो तेने एम कह्युं के, " नीच कुलमां उत्पन्न थयेला तने हुं धनुर्वेद नहि शिखवुं." पठी ते न्नील्ल वनमां जइ गुरुना अन्नावथी एक वृक्षनी नीचे डोणगुरुनी मृत्तिकामय मूर्त्ति बनावीने न्नक्तिथी तेमनुं पूजन करतो ठतो निरंतर तेमने साक्षी राखीने धनुर्कलानो अन्न्यास करवा लाग्यो. आ प्रमाणे गुरु न्नक्तिथी निरंतर अन्न्यास करता ते न्नील्लने बाणोए करीने सूक्ष्म पांदमाने पण ठेदी नाखवामां विश्वने आश्चर्यकारी अति तीव्रपणुं प्राप्त थयुं. पठी एक दिवस डोणगुरु सहित कलावंत अर्जुन फरता फरता जे वनमां न्नील्ल रेहतो हतो त्यां आवी पहोच्या. त्यां ते न्निल्ल करेला पत्र ठेदादि जोइने अर्जुन पोताना गुरु प्रत्ये केहेवा लाग्यो. "हे गुरु! आपे म्हारा विना बीजा कोइने धनुर्वेद नहि शीखववा माटे जे प्रतिज्ञा करी हती, ते आ पांदमां विगेरेना ठेदावा उपरथी निश्चे फोगट थइ होय एम देखाय ठे." गुरुए आश्चर्य पामीने कह्युं. "हे पार्थ ! म्हारुं वचन क्यारे पण वृथा न होय. हुं जाणुं ढुं के, मनुष्य अथवा देवताने विषे आ कोइ नवीन धनुष्यधारी थयो होय ? के, जेणे आवो आ वनमां रहीने अन्न्यास कस्यो ठे." एम कहीने वली तेमणे कह्युं के, " आ वनमां जे कोइ धनुर्कलाना जाण देव, दानव, विद्याधर के मनुष्य होय ते तुरत प्रगट थइने पोतानुं चातुर्यपणुं देखामो." डोणनां आवां वचन सांन्नलीने धनुष्य बाणने धारण करनारा ए लव्य न्नील्ल वनमांथी तुरत त्यां आवीने पोतानुं नाम प्रगट ठतां डोणगुरुने प्रणाम कस्यो. " तने आ कला कोणे शीखवी ?" एम डोणगुरुए पूछ्युं एटले न्नील्ले कह्युं के, " म्हारा गुरु डोण ठे. कारण तेमना विना बीजो कयो पुरुष मने आवी श्रेष्ठ कलाउ शीखवे ? " एम कहीने ते न्नील्ले पोतानुं पूर्वनुं सर्व वृत्तांत कही संन्नलाव्युं अने पोते अखंमित पुष्पोथी पूजन करेली डोणगुरुनी मृत्तिकामय मूर्त्ति पण ते बन्ने जणाने देखामी. उत्तम रीते पूजन करेली पोतानी मृत्तिकामय मूति जोइने डोणगुरुए " आ धनुर्वेद कलामां अर्जुन समान न थाउ." एम धारीने ते न्नील्लने कह्युं के, " तुं पोताना जमणा हाथनो अंगुठो गुरुने अर्पण कर." गुरुनां आवां वचनथी न्नील्ले तुरत पोतानो अंगुठो कापीने गुरुने अर्पण करवापूर्वक न्नक्तिथी प्रणाम कस्या. पठी केवल अंगुलीथीज न्नक्तिवमे अन्न्यास करता एवा ते न्नील्लने धनुर्कलाउ प्राप्त थइ.

चतुर बुद्धिवाला गुणज्ञ द्रोणगुरूए हर्षथी अर्जुनने राधावेध शीखव्यो अने ज्जीम तथा डुर्योधनने गदाज्यास कराव्यो. युधिष्ठिर, नकुल अने सहदेव ए त्रण वीर पुरुषो पण शस्त्र विद्यामां प्रवीण थया. अश्वत्थामा (द्रोणना पुत्र) पण प्रज्जावथी अने ज्जुजबलथी कर्ण तथा अर्जुन समान थया. एक दिवस द्रोणगुरुनी आज्ञाथी गांगेये पोताना महा सुन्नट पुत्रोनो युद्धारंज्ज जोवानी इछाथी हर्षवमे रंगमंमप रचाव्यो. तेमां द्रोण, पांमु, धृतराष्ट्र, अने समर्थ एवा गंगापुत्र (गांगेय) हर्षथी बेठे ठते सर्व प्रकारनां शस्त्रोने धारण करनारा अने महा पराक्रमवंत एवा युधिष्ठिरादि सर्वे कुमारो आव्या. तुरत सन्नामां युद्धरंगने धारण करता अने पोताना शस्त्राज्यासने देखामता ते सर्वे कुमारोए सर्वे ज्जूपतिनां चित्तमां एवो विस्मय उत्पन्न कस्यो के, जेने सर्वज्ञ पुरुषज जाणी शके. अवसर मलवाथी वीरपुरुषोमां श्रेष्ठ एवा ज्जीम अने डुर्योधन परस्पर युद्ध करवा लाग्या; परंतु पोताना गुरुनी आज्ञाथी बलवंत अश्वत्थामाए तेमने निवृत्त कस्या. पठी पोताना गुरुनी ज्रकुटीनी संज्ञाथी आज्ञा करायेला अर्जुने उज्जा थइ पोतानी ज्जुजाना तामनना शब्दथी सर्वे राजाउना मनने बहु क्षोज्ज पमाम्युं. अर्जुने ठोमेलां बाणना समूहनां पींठाना वायुथी कंपता पर्वतोए करीने नाश पामी गया ठे ग्रह अने ताराउ जेमां तथा त्रास पाम्या ठे सूर्यना रथना चंचल अश्वो जेमां एवुं आकाश थइ गयुं. अर्जुननी आश्चर्यकारी कला अने राधावेधने जोइ ते वखते कया कया ज्जूपतिये उत्पन्न थयेला हर्षथी मस्तक नथी धुणाव्युं? अर्थात् सर्वे राजाउ हर्ष पामीने पोतपोतानुं मस्तक धुणाववा लाग्या. पठी डुर्योधने आज्ञा करेला कर्णे पोताना सिंहासन उपरथी कोपवमे नीचे उतरीने खज्जाने आस्फोटन करता उन्नत मेघनी पेठे महा गर्जना करी. तेनुं तेवुं धनुर्धारिपणुं अने ज्जुजाबल जोइ संतोष पामेला डुर्योधने कर्णने स्वर्गपुरी समान चंपापुरी इनाम तरीके आपी. आ वखते सूतसारथी त्यां आव्यो. कर्णे ते आवेला पोताना पिताने प्रणाम करीने बहु मानपूर्वक सर्वे राजाउनी आगल बेसास्यो. पठी महा डुर्द्धर एवा ज्जीम सहित कोप पामेला अर्जुने डुर्योधनने कह्युं के, अरे ! तें नीच कुलमां उत्पन्न थयेला कर्णने चंपापुरी शा माटे आपी दीधी? अरे कुलाचाररहित ! हुं त्हारा आवा अन्यायने सहन नहि करुं." आ प्रमाणे कहीने पठी ते बन्नेजणा पोतपोताना धनुष्यनो टंकार करीने तत्काल युद्ध

करवाने तैयार थया. उबलता वीर रसवालो कर्ण अने बीजा महा बलवंत भूपालो पण युद्ध करवाने माटे पोतपोताना सिंहासन उपरथी उतरीने तैयार थया. आ वखते तेउना भुजना आस्फोटनथी अने चारे तरफ थता एवा महा भयंकर सिंहनादोथी त्रास पाम्या छे अश्व जेना एवो सूर्य जाणे पर्वतोना शिखरोनी पछवामे संताइ पेठो होयनी ? एम अस्त पाम्यो. पछी महा रणारंभथी त्रण जगत्ने कोभ पमामवाने तैयार थयेला ए सर्वे सुभटोने गुरुए पोते उठीने गरिष्ठपणाथी निवृत्ती पमामया. आ अवसरे धृतराष्ट्रना पूठवा उपरथी सूतसारथी हर्षथी कर्णनुं कुलादिक कहेवा लाग्यो के, " स्नान निमित्ते गंगा प्रत्ये गयेला मने प्रवाहमां तणाती आवती पेटीमांथी आ पुत्र मळ्यो छे. वली अद्भुत देहकांतिथी अने मुद्रामां रहेला रत्नाकरथी में तेने कुंतीनो पुत्र जाण्यो छे. मने ए संबंधी सूर्ये स्वप्न आप्युं हतुं, माटे में ए महा पराक्रमवंत पुत्रने ग्रहण कर्यो छे. " पछी अति हर्ष पामेलो धृतराष्ट्र राजा पोताना पुत्रोसहित कर्णने साथे लइ पांमुना पुत्रो उपर चित्तमां बहु मत्सर धरतो छतो पोताना घरप्रत्ये गयो. जेवी रीते लोको उत्पन्न थयेला गुणोथी पांमवो उपर प्रीति राखवा लाग्या तेवीज रीते तेउ अन्यायादि दोषथी दुर्योधनादिकने विषे निस्पृह थया. स्पष्ट धर्मवंत एवा पांमुराजाए पोताना बंधु धृतराष्ट्रना पुत्रोने जूदा रहेवा माटे देशरहित कुशस्थल नामनुं नगर आप्युं. आ प्रमाणे जाण एवा पांमु, धृतराष्ट्र, भीष्म अने द्रोण गुरु तेमज बीजा सभासदो पांमुपुत्रोना तथा धृतराष्ट्रपुत्रोना भुजबलनी विविध प्रकारे परीक्षा करीने बहु हर्ष पामता छता तत्काल पोतपोताना घरप्रत्ये गया.

इति ऋषिमंमलवृतौ पांमवचरित्रे विद्याभ्यासबलपरीक्षा वर्णनाख्यो द्वितीयोधिकारः

कोइ वखते द्रुपद राजाना प्रसन्न मनवाला प्रतिहारी दूते दिव्य सभामां बेठेला पांमुराजाने प्रणाम करीने कह्युं के, " हे महाराजा ! श्री द्रुपराजाने चुलनी स्त्रीना उदरथी उत्पन्न थयेली, विश्वना मनुष्योने आश्चर्यकारी अने मनोहर रूपवाली द्रोपदी नामे पुत्री छे. द्रुपद भूपाले ते पोतानी पुत्रीनो स्वयंवर मंमप रच्यो छे, तेमां तेमणे कृष्ण तथा बलभद्रसहित सर्वे दशार्होने,

रुक्मीने, शिशुपालने, कर्णने, *सुयोधनने, दमदंतने अने बीजा महा तेजवंत राजपुत्रोने दूत मोकलीने तेडाव्या छे; तेथी तेउ सर्वे तत्काल आवी पहोंच्या छे. आप पण आ पुत्रो सहित स्वयंवर मंडपमां झट पधारी तेने सुशोभित करो." दूतनां आवां वचन सांभली पांडुराजा, पोताना पांच पुत्रो सहित असंख्य सैन्यथी परवर्यो छतो बहु वार्जीत्रोना नादपूर्वक कांपीलपुरप्रत्ये गयो. पांडुराजाने आवेला सांभली पोतानां चित्तमां बहु हर्ष पामेला अने स्थिर मनवाला द्रुपद भूपतिये तेमने महोत्सवथी नगरप्रवेश कराव्यो. त्यार पछी द्रुपद राजाए तुरत अगुरु चंदननां काष्ट, रत्न, माणिक्य, सुवर्ण अने बीजी अनेक मनोहर धातुउथी तैयार करावेला सिंहासनोना समूहवालो अने पोतानी दिव्य कांतिथी वैमानोना अभिमानने जीतनारो स्वयंवर मंडप रचाव्यो. तेमां जूदा जूदा द्वारोमां सुशोभित एवा सिंहासनो उपर शोभतां सुंदर तोरणो जाणे त्रण जगत्ने ज़ीतवा माटे कामदेवे सज्ज करेलां धनुष्यो होयनी एवा शोभतां हतां. त्यां सुवर्णना सिंहासनो उपर बेठेला राजपुत्रो जाणे वैमानमां बेठेला देदीप्यमान कांतिवाला इंद्रोज होयनी ? एम शोभवा लाग्या. सर्वे राजकुमारोमां पोताना उत्तम एवा पांच पुत्रोसहित पांडुराजा, जाणे पांच बाणोए युक्त एवो साक्षात् कामदेवज होयनी शुं ? एम बहु शोभवा लाग्यो. आ अवसरे स्नान करेली, क्षीर समुद्रना जल समान वस्त्र धारण करनारी, उत्तम आभूषणोथी सुशोभित अंगवाली, पूर्ण चंद्र समान मुखवाली, हस्तिना सरखी गतिवाली अने रूपसपंतिये करीने रतिने पण जीतनारी द्रौपदी हाथमां वरमाला लइ अनेक सखीयोनी साथे त्यां स्वयंवर मंडपमां आवीने पोताना पितानी आगल राधावेधना स्तंभनी पासे बेठी. पछी द्रुपद भूपतिनी आज्ञाथी प्रतिहारीये वेगवडे एक धनुष्य लावी अने राधावेधना स्तंभनी पासे उभा रहीने सर्वे राजाउ प्रत्ये आ प्रमाणे कह्युं. "हे भूपतियो! सांभलो. आ स्तंभनी उपर जे बार आरावालुं चक्र फरे छे, तेना उपर डावी बाजुए रहेली राधा [पुतली]ने जे कोइ बलवंत धनुर्धारि राजपुत्र आ नीचे रहेली घीनी कडाइमां जोइने पोताना बाणवडे करीने विंधशे ते वीरपुरुष सर्व राजकन्याउमां मुकुटमणिरूप, महासती अने राधावेधना पण वाली आ

* दुर्योधननुं बीजुं नाम सुयोधन छे.

द्रौपदीने परणशे." प्रतिहारीनां आवां वचन सांजली राधावेध करवाने तैयार थयेला राजपुत्रो मांहेना केटलाक तो धनुष्यने धारण करवाज समर्थ थया नहि; केटलाक धनुष्य उपर बाण चमावया समर्थ थया नहि अने केटलाक तो पोतानुं बल मनमां समजीने सिंहासन उपरथी उठया पण नहि. पछी सर्व धनुर्धारिमां मुख्य एवा अर्जुने, सिंहनी पेठे जुज पराक्रमवाला जीमसेनसहित पोताना सिंहासनथी नीचे उतरी हर्षवमे सर्व क्षत्रीयोने नमस्कार कर्यो. त्यार बाद तेणे लज्जाथी सर्व जूपालोना जोता छतां पोताना वज्रसमान हाथ वमे ते राजाउना मानसहित धनुष्य गृहण कर्युं. आ वखत जीमसेन, उंचा हाथ करीने सर्व दिशाउना अधिपतियोने केहेवा लाग्यो के, "हे शेषनाग! तमे समस्त पृथ्वीनो जार धारण करवामां अति निश्चल थइ रहो. सर्व विश्वने पालन करवामां तत्पर एवा इंद्र, अग्नि, यम, वायु अने ब्रह्मा विगेरे हे लोकपालो! तमे पण सर्वे स्थिर थइ जुउ के, आ म्हारो न्हानो बंधु, उत्कृष्ट एवा धनुर्धारिउना पादन्यासे करीने सर्व जूपतियोना गर्वसहित आ दृढ धनुष्यने निश्चे नमावशे." पछी नीचे छे दृष्टि जेनी एवा अर्जुने, बलवमे धनुष्य चमावीने सर्व राजाउना जोता छता अति लाघवपणाथी पोतानुं बाण उंचुं खेंच्युं. बन्ने कानने बेहेरा करी देनारा, तत्काल कायर पुरुषोने पृथ्वी उपर सुवारी देनारा अने बीकण जनोने त्रास पमामनारा धनुष्यना अति कठोर शब्दवमे करीने उना घीनी कमामां दृष्टि राखनारा अर्जुने, वेगथी फरतां चक्र उपर देखाती राधा (पुतली)ने जोइने तुरत पोताना छोमेला बाणवमे सजासमक्ष ते पुतलीने वींधी नाखी. आ वखते आकाशमां जयजय शब्दपूर्वक देव डुंडुजी वागवा लाग्या अने देवताउए करेली चारे तरफ पुष्पवृष्टि थइ. जो के आ वखते उत्पन्न थयेला अनुरागवाली द्रौपदीये क्यारे पण निःपुण्य पुरुषोए नहि मेलवी शकाय एवी पोताना हाथमां रहेली वरमाला अति वेगथी अर्जुनना कंठने विषे आरोपण करी; परंतु ते वरमाला तो तुरत पांच रूपे थइने जेम मनशक्ति पांच इंद्रिउने विषे आरोपण थाय तेम पांचे पांमवोना कंठने विषे आरोपीत थइ. जेम पांच विषयो आदरथी उत्तम बुद्धिनो आश्रय करे तेम पांमु राजाना पांच पुत्रोए सर्वे राजाउ जोता छतां प्रिय एवी द्रौपदीनो आश्रय कर्यो. आवा आश्चर्यथी गांगेय पोतानां चित्तमां बहु लज्जा पाम्या,

डुपदराजा निस्तेज बनी गया अने बीजा लोको पण विस्मय पाम्या. एवामां त्यां कोइ ज्ञानी मुनि आव्या. पछी "हे जगवन्! आ डौपदीना मुख्य पांच पतियो केम थया ?" एम कृष्णादि जूपालोए ते चारण मुनिने वेगथी पूछ्युं एटले ते महात्माए केवल परोपकारने माटे आ प्रमाणे कह्युं.

"हे जूपालो! पूर्व जन्मने विषे बांधेला कुकर्मथी आ डौपदी पांच जर्तारवाली थशे, एमां तमने अति आश्चर्य केम थाय छे ? कारण कुकर्मोनी तो विषमगति होय छे. चंपानगरीने विषे सागरदत्त शेठने सुजज्ञा नामनी स्त्रीथी उत्पन्न थयेली सुकुमारीका नामे एक कन्या थइ. परंतु ते निरंतर दौर्जाग्यना स्थानरूप हती. ज्यारे पुत्री यौवनावस्था पामी त्यारे पिताए तेने हर्षथी जिनदत्त नामना शेठना पुत्र सागरनी साथे परणावी. पछी बहु शोजावाली शय्यामां सूतेली ते कन्यानो स्पर्श करवाथी जिनदत्तने तेनुं शरीर पूर्वकर्मना वशथी अंगारा सरखुं लाग्युं. जो के ते सागर क्षणमात्र तो पोतानुं शरीर बलता छता पण तेनी साथे क्षणमात्र रह्यो; परंतु ज्यारे ते सुकुमारीका निडावश थइ त्यारे तो ते तेने त्यांज मूकी पोताने घेर नाशी गयो. पछी निडाथी जागी गयेली सुकुमारीकाए पोताना पतिने दीठो नहि त्यारे ते बहु रुदन करवा लागी. पोतानी डुर्गंध देहवाली पुत्रीने त्यजी दइ सागर पोताने घेर चाल्यो गयो, ए वात जाणीने सागरदत्तशेठे ते सुकुमारीकाने पोताने घेर दानशाला मंमावीने राखी. अनुक्रमे तेणे बहु वैराग्यथी गोपालिका साध्वी पासे दीक्षा लीधी. त्यारपछी ते निरंतर छठ अठमादि तप करवा लागी.

कोइ वखते उनालानी ऋतुमां प्रवर्तिनीयोए निवार्या छता पण ते सुकुमारीका साध्वी परीषहने सहन करवा माटे उद्यानमां जइने वैराग्यथी नित्य आतापना करवा लागी. एक दिवस आतापना करती एवी ते सुकुमारीका साध्वीये कामातुर एवा पांच पुरुषोए नम्रतापूर्वक सेवन करेली अने रूपसंपत्तिये करीने रतिने पण जीतनारी देवदत्ता नामनी वेश्याने जोइ. पछी कोइ दिवस जेनो पतिसंबंधि मनोरथ पूर्ण नथी थयो एवी ते सुकुमारीये एवुं नित्राणुं कर्युं के, "में आ करेलां तपथी हुं आवता जवने विषे पांच पतिवाली थाउं." पछी आठ मासपर्यंत अतिचाररहित अने कर्मने जेदी नाखनारी संलेखना करीने आलोचना लीधा विना मृत्यु पामेली ते सुकुमारीका पहेला दे-

वलोकने विषे नवपल्योपमनां आयुष्यवाली देवी थइ. [चारणमुनि, कृष्णादि नूपालोने कहे ठे के,] पठी पहेला देवलोकथी चवीने ते देवी आ डुपदराजानी पुत्री थइ ठे. पूर्वनवने विषे करेलां कर्मथी तेने पांच नर्तार थया एमां तमे शा माटे विस्मय पामो ठो ?" मुनिनां आवां वचनथी आकाशने विषे "बहु सारुं थयुं, बहु सारुं थयुं" एम शब्द थयो. कृष्णादिक पण तेननी प्रशंशा करवा लाग्या. पठी स्वयंवरमां आवेला राजान तथा स्वजनोनी समक्ष पांमुराजानी आज्ञाथी ते पांचे पांमवो डुपद राजकन्याने नत्सवपूर्वक परण्या. त्यारबाद डुपद राजाए, स्वयंवरमां आवेला दशार्होने तथा कृष्णादि बीजा नूपतियोने गौरवपूर्वक पोतपोताना नगर प्रत्ये विदाय कस्या. डुपद नरेश्वरे सत्कार करेला पांमुराजा पण पोताना पांच पुत्रो सहित बहु नत्सवोवाला हस्तिनापुर प्रत्ये आव्या.

हवे एक दिवस युधिष्ठिर डुपदीना मंदिरमां बेठा हता एवामां त्यां विश्वमां मरजी प्रमाणे फरनारा नारद आव्या. युधिष्ठिरे तेमनुं पूजन कर्युं. पठी प्रसन्न थयेला नारदे तुरत बीजा नीमसेनादि चारे नाइनने त्यां बोलावी "तमारे आ पंचाली (डोपदी) ने योग्य अवसरे सेवन करवी." एम कहीने योग्य व्यवस्था करी आपी. वली तेमणे एवो प्रतिबंध कस्यो के, "आ डौपदीना घरने विषे एक नाइ विद्यमान ठतां जो बीजो नाइ अनुरागथी प्रवेश करशे तो तेने बार वर्षपर्यंत तीर्थयात्रा करवा जवुं." एक दिवस युधिष्ठिर डौपदीना घरने विषे हता एवामां अर्जुने त्यां अजाणतां प्रवेश कस्यो. पठी युधिष्ठिरादि बंधुनए ना कह्या ठतां पण सत्य प्रतिज्ञावालो अर्जुन तीर्थयात्रा माटे चाली निकल्यो. सर्व तीर्थोने विषे जिनेश्वरोनी प्रतिमाने हर्षथी नमस्कार करतो ते वैताढ्य पर्वत नपर आवी पहोच्यो. त्यां तेणे श्री आदिनाथ प्रनुने नमस्कार कस्या. एवामां त्यां नयथी नासी जता एवा कोइ विद्याधरने तेणे पूठ्युं के, "हे खेचर ! तुं आवो शोकयुक्त केम देखाय ठे ?" विद्याधरे कह्युं. "आ वैताढ्य पर्वतनी नत्तरश्रेणीनो राजा हुं मणिचूम ठुं. हेमांगद नामना वलवंत विद्याधरे म्हारी सर्व लक्ष्मी लइ मने राज्यथी काढी मूक्यो ठे." विद्याधरनां आवां वचन सांनली महा धनुर्धारि अर्जुन, मणिचूम विद्याधरे प्रगट करेला वैमानमां वेसीने त्यां गयो. त्यां तेणे बलथी हेमांगदने काढी मूकी फरी मणि-

चूमने पोतानां राज्यने विषे स्थापन कर्यो. पछी हेमांगद अने मणिचूम विगेरे अनेक विद्याधरोए सेवा करेलो अर्जुन त्यां केटलोक काल रहीने पछी दिव्य विमानमां बेसीने मणिचूम सहित आगल चाल्यो. अष्टापदादि पवित्र तीर्थोने विषे रहेला जिनेश्वरोने नमस्कार करतो अने संतुष्ट चित्तवालो अर्जुन रेवताचल (गिरनार) पर्वत प्रत्ये आवी पहोच्यो.

हवे एम बन्युं के, श्रीपुर नगरने विषे पृथु नामना कोइ क्षत्रियने स्त्री थकी एक पुत्री थइ; परंतु ते पुत्रीने पूर्वकर्मना दोषथी शरीरे दुर्गंध थवाने लीधे ते दुर्गंधा एवा नामथीज लोकमां प्रसिद्ध थइ. अनुक्रमे युवावस्था पामेली ते पुत्रीने, पिताए हर्षथी सोमदेवने आपी; परंतु तेना दुर्गंधथी विरक्त बनेलो सोमदेव तो तेने त्यजी दइ तत्काल रात्रीने विषे गुप्त रीते नासी गयो, पतिये त्यजी दीधी, तेथी तो ए दुर्गंधा पोताना पिताने द्वेषनुं स्थान थइ पमी अने बंधुजए पण त्याग करी. कह्युं छे के—स्त्रीयो, पोताना स्वामीनी प्रीतिवमे सर्व स्थानके पूजाय छे. पछी सर्व स्थानकेथी पराजव पामेली ते दुर्गंधा पोतानुं घर त्यजी दइने तुरत रात्रीने विषे नासी गइ. अनुक्रमे उद्यमवाली ते पोतानां दुष्टकर्मनो क्षय करवा माटे सर्व तीर्थोने विषे जमवा लागी. “ जाणे आ तीर्थोने विषे पूर्व जवनुं कर्म क्षय थशे नहि.” एम धारीनेज होयनी ? एम अत्यंत दुःखथी खेद पामेली ते दीन दुर्गंधाए समुद्रमां झंपापात करवानो पण निश्चय कर्यो. शुं प्राणीयो पीमाने लीधे तुरत मृत्यु पामवानी इच्छा करता नथी ?” अर्थात् पीमा पामेला मनुष्यो तत्काल मृत्यु पामवाने पण तैयार थायछे.

पछी एक दिवस वनमां जमती एवी ते दुर्गंधाए कोइ जटाधारी अने वल्कल वस्त्रवाली साधुने जोइने बहु प्रेमथी नमस्कार कर्यो; परंतु ते साधुए तो तेनी दुर्गंधथी तुरत अवलुं मुख कर्युं. मुनिनी आवी चेष्टा जोइने दुर्गंधाए कह्युं. “ हे जगवन् ! परिग्रह रहित एवा तमे म्हारो शामाटे तिरस्कार करो छो ? शुं आजे तमारा विना त्रणलोकमां बीजुं कोइ म्हारुं रक्षण करनार छे खरुं ? ” तपस्वीये फरीथी कह्युं. “ हे वत्से ! अहिं म्हारा त्रिकालज्ञानी गुरु छे, तेमनी पासे जइने जक्तिथी तुं पोतानुं वृत्तांत कहे; जेथी ते त्हारा दुःखनी निवृत्तिनो उपाय बतावशे. ” मुनिनां आवां वचन सांजली साधुजनां चरणनी सेवा करवामां तत्पर एवी ते दुर्गंधाए वननी अंदर श्री ऋषज्ज जिनेश्वरनुं

ध्यान करता एवा ते जटाधर महामुनिने प्रणाम कर्या. पापनो नाश करनार गुरुए पण तेना डुर्गंधथी कांइक पोतानुं नाक वांकु करीने दर्जना आसन उपर विनयथी बेठेली ते डुर्गंधा प्रत्ये आ प्रमाणे कह्युं. "हे वत्से! डुर्गंधना दोषथी व्याकुल बनेली तुं, आ वनने विषे केम आवी बुं ? त्हारा देहथी उत्पन्न थयेलो आ मनुष्योने डुःखकारी डुर्गंधनो समूह केम उल्लास पामे बे?" मुनिनां आवां वचन सांजलीने डुःखथी पीमा पामेली डुर्गंधा रोती बती कहेवा लागी. "हे मुनि ! हुं जाणुं बुं के, पूर्वकर्मने लीधेज आ म्हारा शरीरथी डुर्गंध प्रसरे बे. हुं बाव्यावस्थाथीज डुःखवमे तपायमान थइ बुं. आ डुर्गंधने लीधे पतिये पण मने त्यजी दीधी बे. बहु तीर्थने विषे ज्रमण करता बता पण मारा आ डुर्गंधनो क्षय थयो नहि. हे मुनिश्वर ! तमे धर्मदानथी निश्चे सर्व मनुष्योना निरंतर आधाररूप बो, माटे पूर्वजन्मनां पापथी बोमावीने मने क्षणमात्रमां आ संसार समुडथी तारो." मुनिये फरीथी कह्युं. "हे वत्से ! मने तेवुं ज्ञान तो नथी; परंतु तुं शत्रुंजयना मध्यप्रदेशने विषे रहेला श्रीरैवताचल पर्वत उपर जा. त्यां निरंतर सतीपणाने धारण करती अने जिनेश्वरनी जक्तियुक्त तुं, श्रेष्ट मुनिये बतावेली विधि प्रमाणे गजपदकुंमथी जल लावीने स्नान करजे के, जेथी तुं रोगरहित थइश." मुनीश्वरनां आवां वचन सांजलीने डुर्गंधा तेमनां चरणने नमस्कार करी हर्षवमे गिरनार पर्वतनुं मनमां स्मरण करती बती शत्रुंजय तरफ चाली. निरंतर प्रयाण करती एवी ते अनुक्रमे केटलाक दिवसे श्रीशत्रुंजय तीर्थ प्रत्ये आवी पहोची. त्यां विश्वे सेवन करेला श्रीआदिनाथने जोइ हर्ष पामेली डुर्गंधाए जक्तिथी प्रजुने वंदना करी. पबी प्रदक्षिणा करीने ते, श्रीनेमिनाथ प्रजुने नमस्कार करवा माटे तथा पोतानां पूर्वकर्मनां पापसमूहोनो नाश करवा माटे श्री गिरनार तरफ जवा निकली.

अति पवित्र स्वजाववाली डुर्गंधा अनुक्रमे गिरनार पर्वत उपर जइ अने गजेंडपद कुंमने जोइ हर्ष पामी. श्री अरिहंत प्रजुना मंदिरने विषे अने गजपदकुंमने विषे प्रवेश करवाने असमर्थ एवी ते डुर्गंधा प्रथम बहार रहीने गजपदकुंमनुं जल मगावी स्नान करवा लागी. अनुक्रमे सात दिवसमां ते डुर्गंधा पोतानां शरीरनो डुर्गंध नाश पामवाथी सुगंध देहवाली थइ. पबी हृदयमां उत्पन्न थयेली जक्तिवाली ते श्री जिनेश्वरनुं पूजन करवा माटे जिनमंदि-

रमां गइ. प्रभुनुं पूजन करी रह्या पछी तेणे त्यां बेठेला कोइ ज्ञानी गुरुने पोतानो पूर्वभव पूछ्यो. आ अवसरे त्यां अर्जुन पण बेठा हता; तेथी ते पण मुनिये वर्णन करेला डुर्गंधाना पूर्वभवने सांभलवा लाग्या. मुनिये कह्युं के, "हे शुभे! तुं पूर्वजन्मने विषे कोइ श्रेष्ठ ब्राह्मणना कुलने विषे उत्पन्न थइ हती. एक दिवस जैनधर्म रहित एवी तें, एक जैन मुनिने उद्देशीने द्वेषथी हास्य पूर्वक सखीनी आगल एम कह्युं के, "हा निरंतर जलस्नान रहित अने केवल वनमां रहेनारो आ यतीश्वर, निश्चे पोतानां उज्वल वस्त्रने बहु मलीन करे छे." एम कहीने तें पोतानो हाथ केड उपर मूकीने म्होंं मचकोड्युं. हे वत्से! आम करवाथी तें जे कुकर्म उपार्जन कर्युं, तेनुं फल सांभल. पछी तुं मृत्यु पामीने नरकने विषे उत्पन्न थइ. त्यांथी चंडालना कुलमां जनमी. त्यांथी भुंडणी थइ. अनुक्रमे छेवट आ मनुष्य भवने पामी. तेमां पण नामथी अने परिणामथी त्हारुं डुर्गंधवालुं शरीर थयुं, तेथी आ भवमां पण तुं विपदीना स्थानरूप डुर्गंधा थइ. कह्युं छे के–जीव पूर्वे करेलां कर्मने शुं नथी भोगवतो? अर्थात् पूर्व कर्मने निश्चे भोगवे छे. जे जिनेश्वर प्रभु, योगी पुरुषोने पूज्य छे अने जे त्रण लोकमां निवास करनारा प्राणीयोथी श्रेष्ठ छे, तेमनी मुद्राने धारण करनारा निःपरीग्रही साधुउ शुं निंदा करवा योग्य छे? जेउ महामिथ्यात्वनो नाश करनारा छे, जेउ महाव्रतरूप लक्ष्मीने धारण करवामां समर्थ छे अने जेउ श्री अरिहंत प्रभुना धर्मरूप कमलने प्रफुल्लित करवामां सूर्यरूप छे एवा मुनियो त्रण लोकमां निंदा करवा योग्य केम होय? तुं तीर्थ प्रभावथी सर्व कुकर्मनो नाश करी सौभाग्यवाली थइश. वली तुं निरंतर तीर्थ सेवा कर के, जेथी करीने तुं तत्काल बोधीबीज पामीश." आ प्रमाणे मुनीश्वरे कह्युं एटले डुर्गंधा तथा अर्जुन ए बन्ने जणाए तीर्थ प्रभावने जाणीने हर्ष पूर्वक श्री तीर्थंकर प्रभुने तथा गुरुने प्रणाम कर्या.

पछी थोडा कालमां पोताना आत्माने धन्य मानतो अर्जुन, मणिचूड मित्र सहित ते तीर्थने विषे हर्षथी त्रण दिवस रह्यो. पछी श्री कृष्णे अर्जुनने निपुण जाणी पोतानी द्वारका नगरी प्रत्ये बोलाव्यो. त्यां तेमणे परस्पर एक बीजानी प्रीतिनी वृद्धिने माटे पोतानी ब्हेन सुभद्रा हर्षथी अर्जुनने आपी. अन्य तीर्थने विषे पवित्र देहवालो अर्जुन, पोतानां कर्मनो नाश करवा माटे

शत्रुंजय तथा अष्टापद तीर्थ नपर वारवर्ष पर्यंत रह्यो. पढी पोतानी प्रतिज्ञा पूर्ण करीने अनेक विद्याधरोनी साथे पोताना असंख्य वैमानोथी आकाशने पूरी देतो बतो अर्जुन पोताना हस्तिनापुरनगर प्रत्ये आव्यो. स्त्री सहित आवता एवा अर्जुनने सांजली चार पुत्रो सहित अति नत्साहवंत थयेला पांमु राजाए पोताना नगरने विषे अर्जुनने म्होटो नवीन प्रवेशोत्सव कराव्यो. आ वखते बीजा कोइ विद्याधरे पोतानी व्हेनने हरण करवाना समाचार मणिचूम विद्याधर पासेथी अर्जुने सांजल्या. ते नपरथी ते, पोताना मित्र मणिचूम विद्याधरने साथे लइ तत्काल शत्रुनी पाबल जइ तेने मारी पोतानी व्हेन प्रज्ञावतीने पाबी वाली लाव्यो.

जेवी रीते सूर्यनी कांतिये करीने आकाश शोजे अने ध्वजावमे करीने श्रेष्ठ देवालय शोजे तेवीज रीते यशथी पवित्र एवा महात्मा युधिष्ठिरवमे आ सर्व विश्व बहु शोजतुं हतुं. युधिष्ठिरनी आज्ञाने अनुसरी रहेला जीमसेनादि बीजा चार बंधुन सैन्य सहित सर्व दिशाननें जीती अनेक नृपतिनी साथे महोत्सव पूर्वक पोताना नगरमां आव्या. युधिष्ठिरादि पांच पांमवोथी डोपदीने विषे अनुक्रमे बले करीने शंकरना समान पवित्र पांच पुत्रो थया. जेवी रीते नत्तम बंधु, सेवक, पुत्र, मित्र अने पोतानुं अंग (हाथ पग विगेरे) आज्ञा प्रमाणे चाले ठे, तेवी रीते जीमसेनादि चारे बंधुन पण युधिष्ठिरनी आज्ञा प्रमाणे चालता हता. आ नपरथी प्रसन्न थयेला विद्याधरोना अधिपति मणिचूमे पोतानी विद्याना बलथी तेमने तुरत इंडनी सजाना समान एक मनोहर सजा बनावी आपी. तेमां अत्यंत निर्मल अने आश्चर्यकारी शोजा वाला महा मणिना स्तंजो शोजी रह्या हता तथा दिव्य स्वरूपवाली पुतलीयो जाणे नत्तम रत्नमय अप्सरान होयनी ? एम दीपी रही हती. मणिचूम विद्याधरे जाणे स्नेहथीज होयनी ? एम ते सजामां सुवर्णनां सिंहासन उपर बंधुन सहित युधिष्ठिरने बेसारीने पोतानी मैत्री सफल करी. पढी युधिष्ठिरे पोतानां कल्याण माटे नगरमां श्री शांतिनाथ प्रजुनुं नत्तम नवीन मंदिर करावीने तेमां तेज प्रजुनी महा मूल्यवाली अने मणियोए करीने वखाणवा योग्य सुवर्ण मूर्तिनुं स्थापन कर्युं. कारण के, तेज नगरमां श्री शांतिनाथ प्रजुना त्रण कल्याणको थया हता. वली दिग्विजयथी पोताना बंधुनए सं-

पादन करेली बहु लक्ष्मीनुं उत्तम फल मानता एवा तेणे त्यां त्रण विश्वने पुण्यना कारणरूप हस्तिनाग्न नामे तीर्थनुं स्थापन करीने म्होटो महोत्सव कर्यो. युधिष्ठिरे प्रभुनी प्रतिष्ठाना उत्सवमां बोलावेला दशार्ह बलदेव कृष्ण अने बीजा डुपदादि अनेक राजाउ आव्या हता.

कोइ वखते मणिमय स्तंभोने विषे प्रसरी रहेला प्रतिबिंबवाला ते सर्व राजाउ सभामां बेठा हता. एवामां भूपतिये बोलावेलो डुर्योधन पोताना बंधुउ सहित बहु परिवारथी परवर्यो थको त्यां आव्यो. बहु देदीप्यमानपणाथी जाणे आकाशमांज स्थिर रह्या होयनी ? एम रत्ननां सिंहासन उपर बेठेला यादवोने तथा पांमवोने जोइ ते मनमां बहु आश्चर्य पाम्यो. पछी बंधुउ सहित डुर्योधने नीलमणिनी भींतो तथा भूमिवाला स्थानने विषे जलनी शंकाथी पोतानां वस्त्रो उंचां लीधां अने स्फाटिकमणिनां स्थानने आकाशनी शंकाथी ठेकवा लाग्या. तेनी आवी चेष्टा जोइने बीजा राजाउने बहु हसवुं आव्युं. वली स्फाटिकमणिनी भींतोमां प्रसरी रहेला प्रतिबिंबवाला राजाउने जोइ ते तरफ जतो एवो डुर्योधन ते भींतनी साथे अथमायो. आ प्रमाणे सभामां प्रवेश करवामां भ्रांति पामेला डुर्योधनने जोइ कया कया भूपतियोए हास्य नहि कर्युं होय ? अर्थात् डुर्योधननां आवां चरित्रथी सर्वे राजाउ बहु हास्य करता हता. पछी बहारथी तो सूर्यकांतमणिनी पेठे शीतल पण अंदरथी तो अरणीना काष्टनी पेठे ज्वाजल्यमान थइ रहेला, क्रोधरूप दावानलवाला डुर्योधने त्यां उत्सव कर्यो. आ वखते युधिष्ठिर राजाना प्रमाण रहित एवा दानशौर्यने जोइ बहु लज्जा पामेला कल्पवृक्षादि सर्वे तुरत मेरुपर्वतना शिखर उपर नाशी गयां. " सर्व धर्मनुं मूल दया छे " एम जाणता एवा युधिष्ठिरे सर्व प्रकारनां दानथी चारणमुनि विगेरे साधुउने तथा नृपादि अनेक जनोने संतोष पमामीने विदाय कर्या. उत्तम वस्त्र रत्नादिकथी संतोष पमामेलो बंधु सहित डुर्योधन पण पोताना पिता (धृतराष्ट्र) अने मामानी साथे पोताना नगर प्रत्ये आवीने गुप्त रीते आ प्रमाणे विचार करवा लाग्यो. "आ पांमुराजाना पुत्रो बाल्यावस्थाथी मांमीने कपट करवामां चतुर, पोतानां घरने विषे सूरा, हृदयमां डुष्ट अने उपरथी बहु मीठुं बोलनारा छे. हे पूज्यो ! निश्चे कृष्ण बलभद्रथी प्राप्त थयेला साम्राज्यपदे करीने मदोन्मत्त थयेला अने गर्व-

वाला ए पांम्वोए, त्यां पोतानी सन्नामां म्हारुं जे हास्युं कर्युं ठे, ते मने हृदयमां वाणनी पेठे साले ठे. लोकमां एवो न्याय ठे के, बलथी अथवा ठलथी शत्रुने पोताना स्वाधीन करवा; माटे हुं पोताना क्रोधनी शांतिने माटे ए पांम्वोनां सर्व राज्यने हरण करीश." आम पांम्वोनी स्पर्धामां बांध्युं ठे मन जेणे एवा गर्वधारी डुर्योधने आ प्रमाणे कहीने पठी तुरत अनेक कारीगरो पासे कोटी ड्व्यथी एक मनोहर सन्ना करावी. पठी ते सन्नाने जोवा माटे तेणे अनेक दूतो मोकलीने दशार्होने, पांमुपुत्रोने रामकृष्णने अने बीजा अनेक न्रूपतियोने तेम्राव्या. विश्वने आश्चर्यकारी तीर्थस्थापना, पात्रपोषण, उत्सव, दान अने प्रितिदानादिके करीने वली महा आश्चर्यकारी एवा श्रीजिनेश्वरना प्रतिष्ठा उत्सवे करीने बहु हर्ष पामेला अने डुर्योधने अनुचरो मोकलीने तेम्रावेला पांम्वो म्होटा उत्सवपूर्वक डुर्योधनना नगरने विषे आव्या.

इति पांम्वचरित्रे डौपदीस्वयंवरमंम्पागमनार्जुनराधावेधसाधनपाणिग्रहणादिवर्णननामा तृतियोधिकारः ॥ ३ ॥

पठी पोताना बंधुउ सहित हर्ष पामेला अने कृत्रिम मान आपनारा डुर्योधने चमत्कारी एवां बहु दान तथा न्नक्ति विगेरेथी कृष्णादि सर्वे न्रूपतियोने पूर्ण रीते संतोष पमाड्या. त्यारबाद दंन्नवाला तेणे न्नोज्यादि उत्तम न्नक्तिथी, महावननी क्रीमाथी अने बीजा अनेक कुतुहलथी पांम्वोने पोताना वश करीने पठी द्यूत रमवाने माटे आमंत्रण मोकल्युं. जो के धर्मकार्यमां प्रवीण एवा विडुरे पांम्वोना गुणना प्रेमथी पांम्वोने द्यूत रमवानी ना पाम्री; परंतु पोतानां कर्मना दोषथीज अज्ञानि बनी गयेलो धर्मपुत्र युधिष्ठिर द्यूतथी निवृत्ति पाम्यो नहि. सर्व कलामां प्रवीण अने शुद्ध न्नाववाला एवाय पण पांम्वोए अत्यंत पोताना न्नाग्यना अवलापणाथी डुर्योधनने कपटवालो जाणी शक्या नहि. अनुक्रमे युधिष्ठिर पोतानां पूर्व कर्मना योगथीज अश्वोनो समूह, हस्तियोनो समूह, रथनो समूह, सर्व गाम, नगर अने राज्य एम सर्व वस्तु ड्व्यादिकनी पेठे हारी गयो. द्यूतरसमां बुमि गयेला युधिष्ठिरे जयनी आशाथी जे जे पण कर्युं ते ते बहु तरशथी पीमायला पुरुषने ऊांऊवाना जलनी पेठे निष्फलज देखायुं. ठेवट द्यूतमां वृद्धि पामेली तृष्णावाला तेणे पणमां पोता-

नी प्राण प्यारी द्रौपदीने मूकी, तेने पण ते सत्य प्रतिज्ञावालो क्षण मात्रमां हारी बेठो. धिक्कार छे दैवना आवा दुष्ट विलासने ! ! ! पछी बहु दुष्ट स्वन्नाववाला दुर्योधने राज्यादि सर्व पोताने स्वाधिन करी छेवट द्रौपदीने तेम्वा माटे दुःशासनने मोकल्यो. दुःशासन पण "अरे द्रौपदी ! तने पांम्वो हारी गया छे, माटे हवणां तुं म्हारा खोलामां बेस अने ते विम्बना पामेला पांम्वोने त्यजी दे." एम कहेतो छतो पांम्वोनां घर प्रत्ये गयो. तप्त थयेला कथीरना समान तेनां आवां वचन सांन्नलीने बहु न्नय पामेली द्रौपदीने केशे पकम्हीने महा दुष्ट दुःशासन सन्नामां लाव्यो. जो के सन्नामां न्नीम, कर्ण, द्रोण विगेरे बेठा हता तो पण बहु अपमानथी लज्जा पामेली महासती द्रौपदीये क्रोधथी दुःशासनने आ प्रमाणे कठोर वचन कह्यां. "कुलने विषे अंगारारूप अने निर्लज्ज एवा हे पापी दुःशासन ! आ प्रमाणे मने अपमान पमाम्तो तुं निश्चे निष्फल थयेला शस्त्र पराक्रमवालो थइने महा घोर एवा दुःखने पामीश." पछी दुष्ट एवा दुःशासने जेम जेम द्रौपदीनां अंग उपरथी वस्त्रो उतारी लेवां मांम्यां तेम तेम निर्मल शील लक्ष्मीना प्रन्नावथी तेनां शरीरने विषे नवां नवां वस्त्रो थवा लाग्यां. छेवट एकसोने आठ वस्त्रो खेंचवाथी खेद पामेलो, न्नील समान अने महा दुष्ट स्वन्नाववालो दुःशासन छेवट हारीने सन्नामां पोताने आसने बेठो. जो के आ वखते दुर्योधनना उपर न्नीमसेन महा कोपाग्निथी ज्वाजल्यमान थइ रह्यो हतो, तो पण ते पोताना म्होटा न्नाइ युधिष्ठिरनां वचनरूप जलथी शीतलपणुं धारतो छतो फक्त वाणीवम्हे आ प्रमाणे कहेवा लाग्यो.

"जो मने आ म्हारा म्होटा बंधुनी वाणीये अटकाव्यो नहोत तो हुं क्रोधवम्हे आ म्हारी गदाथी ए दुष्टने बंधु सहित तुरत चूर्णचूर्ण करी नाखत." आ प्रमाणे गर्जना करता एवा बलवंत न्नीमसेनने जाणी बहु त्रास पामता केटलाक राजाउ दुःखथी अवलुं मुख करवा लाग्या. पछी बहु क्रोधथी न्नयंकर एवा न्नीष्मपिताए दुःशासनना कुकृत्यने जोइ तेने कह्युं. "अरे पापी ! इंद्रने पण पूजवा योग्य आ महासतीने तें आ शी विटंबना केम पमाम्ही ? हे दुरात्मन् ! जो के न्नीमसेन अने अर्जुनादि बलवंत पुरुषो तने मारवा तैयार थइ रह्या छे; परंतु तेउने श्रीधर्मपुत्र युधिष्ठिरे वारी राख्या छे. कह्युं छे के–सत् पु-

रुषोनो विनय एज तेमनुं पराक्रम समजवुं. कुलमां अंगारारूप अरे डुर्योधन ! त्हारां कुलने नाश करवामां कालरात्रीरूप आ पतिव्रता डौपदीने तुं त्यजीदे. अरे ! आ त्हारो पिता तो व्हारथी आंधलो देखाय बे; परंतु पापी एवो तुं तो व्हार अने अंदर वन्ने रीते आंधलो देखाय बे." न्नीष्म पितानां आवां वचन सांन्नली डुर्योधने तेमने कह्युं. " आ युधिष्ठिरादि पांच पांभवो वार वर्ष पर्यंत वनवास जाउ अने एक वर्ष गुप्त रीते रहो; परंतु तेरमा वर्षने विषे तेउ क्यां गुप्त रीते रह्या बे, तेनी शोध करवा माटे अनुचरो मोकलीश. तेमां जो तेउ जणाइ आवशे तो तेउने फरीथी वार वर्ष पर्यंत वनवास जवुं पभशे." युधिष्ठिर आ सर्व वात अंगीकार करी तथा गुरुने प्रणाम करी तुरत स्त्री अने वंधुउ सहित पोताना हस्तिनापुर प्रत्ये गयो. त्यां तेणे मनमां जरा पण खेद नहि धरता पोताना पिता पांभु राजानी आगल डुर्योधननुं सर्व चरित्र कही वताव्युं. जेने हृदयमां वहु पीभा उत्पन्न थइ बे एवा पांभुराजा ए सर्व सांन्नलीने मुहूर्तमात्र मौन रह्या एटले सत्य प्रतिज्ञावाला युधिष्ठिरे तेमने फरीथी कह्युं के, " हुं म्हारी प्रतिज्ञा शीघ्र पूर्ण करीश. गमे तो धैर्यवास सहित साम्राज्य पदनो नाश थाय अथवा तो सर्व वस्तुनो नाश थवाथी वनवास करवो पभे; परंतु निरंतर पोतानुं कहेलुं पालनारा पुरुषोने आ लोकमां सर्व प्रकारनी समृद्धि प्राप्त थाय बे. हे पिता ! तमे धिर अने वीर बो, माटे क्षत्रियना कुलने योग्य एवी धीरज धारण करीने पोतानी प्रतिज्ञा पालवाने एकचित्त थयेला अमोने वन प्रत्ये जवानी आज्ञा आपो." आ प्रमाणे युधिष्ठिर वहु आग्रहथी पितानी आज्ञा लइ अने मधुर वचनवभे माताने प्रसन्न करी तुरत माता, वंधु, डौपदी अने सुन्नज्ञ सहित वन प्रत्ये जवा निकल्या. पबी मार्गने विषे डुर्योधननी आज्ञाथी क्रूर एवा कर्मीर अने महापलाद ए वन्ने जणा निष्पाप एवी डौपदीने न्नय पमाभवा लाग्या, परंतु ते वन्ने जणाने न्नीमसेने प्रहार करीने काढी मूक्या.

विडुरे पण पांभवोनी पाबल जइ तेमने सर्वने विद्यादान पूर्वक शीखामण आपी. त्यार पबी पांभवोए सत्कार करेला विडुर पोताना नगर प्रत्ये आव्या. पांभवो वनमां गया, ए वात डौपदीना वंधु धृष्टद्युम्ने सांन्नली; तेथी ते त्यां आवीने पांचे पांभवोने पंचालदेशना आन्नरणरूप पोताना कांपिल्यपुर

नगरमां तेमी गयो. समुद्रविजय राजानी आज्ञाथी कोटी सुन्नटो सहित सिंह समान पराक्रमवाला कृष्ण पण पोतानी फोइ कुंताने प्रणाम करवा माटे हर्षपूर्वक त्यां गया. तेमने पांमवोए अर्जुननी विद्याथी संपादन करेला न्नोजनवमे विस्मय पूर्वक जमाम्या. पठी कृष्णे पांमवोने कह्युं. "अहो! हुं जाणुं बुं के, दंन्नी एवा कौरवोए कपटथीज बेतरीने तमने पोतानां राज्यथी काढी मूक्या बे; माटे हवे तमे तमारा राज्य प्रत्ये जान अने हुं तमारा शत्रु एवा ते कौरवोने मारी नाखुं. कारण डुष्ट चित्तवालाने अकाले नपायवमे मारवाथी नियमनो न्नंग थतो नथी." कृष्णनां आवां गर्व वचन सांन्नलीने हर्ष पामेला युधिष्ठिरे कह्युं. "हे मुकुंद ! सिंहना समान पराक्रमवंत एवा तमारे विषे आ सर्व संन्नवे बे; परंतु तेर वरस वनमां रहीने पठी अमो आपनी सहायथीज ए शत्रुनने मारीशुं. आपना प्रसादथी अमारुं शुन्न थशे; परंतु हवणां आप पधारो." युधिष्ठिरे आ प्रमाणे कहीने तुरत कृष्णने रजा आपी; तेथी ते पोतानी सुपुत्रवाली बेन सुन्नडाने रथमां बेसारी अनुक्रमे पोतानी नगरी प्रत्ये आव्या.

पठी माता अने प्रिया सहित पांच पांमवो बीजा देश प्रत्ये जवा लाग्या; एवामां डुर्योधननो पुरोधन नामनो पुरोहित तुरत तेननी पासे आवीने आ प्रमाणे कहेवा लाग्यो. "हे पांमवो ! बहु न्नक्तिथी नमस्कार करवा पूर्वक महाराजा डुर्योधन, पोताना बंधुन सहित म्हारी मारफत तमारी आ प्रमाणे विनंती करे बे के, हे धर्मपुत्र ! तमे गुणोए करीने तेमज अवस्थाए करीने पण म्होटा बो तो में अज्ञानथी जे कांइ विरुद्ध आचरण कर्युं होय ते तमे म्हारा अपराधने क्षमा करजो. वली निरंतर पोतानां हृदयने विषे अनुताप पामता एवा म्हारा नपर दया करीने तमे इंद्रप्रस्थना राजा तरीके त्यां रहो." हृदयमां बहु डुष्ट परंतु नपरथी सौम्य देखाता एवा ते अनुचरनां आवां वचन सांन्नलीने सरल बुद्धिवाला युधिष्ठिर, पोताना बंधुन सहित इंद्रप्रस्थपुर प्रत्ये गया. डुर्योधनना आ कपटनी विडुरने खबर पमी, तेथी पांमवोनुं हित करवामां तत्पर एवा तेमणे तुरत एक गुप्त पत्र लखीने कुलमां मुकुटमणिरूप युधिष्ठिरने खबर आपी के, "डुर्योधने तमारा निवासने माटे एक नवुं लाखनुं घर बनावेलुं बे; माटे तेमां रहेला तमोने ए डुष्ट चित्तवालो

जलदी अग्निवम्हे बाली नाखशे. वली दुष्ट एवा तेणे फागण मासनी अंधारी चौदसने दिवस तमारा नाश करवानो निश्चय कस्यो छे." विदुरना आवा समाचार सांन्नलीने तेज वखते कोइथी न निवारी सकाय एवा वीर न्नीमसेन बहु कोपथी पोताना म्होटा न्नाइ युधिष्ठिरने कहेवा लाग्यो के, "हे बंधो ! खरेखर तमारी क्षमा बहु कष्ट आपनारी छे. हुं एकलोज तमारी आज्ञाथी ए कुलमां कलंकरूप अने अपराधी एवा दुर्योधनने गदाना वेगथी मारी नाखुं." आ वखते युधिष्ठिरे दुष्ट पुरोहितने छेतरता छता न्नीमसेनना कोपाग्निने पोतानां वचनरूप अमृतथी शांत कस्यो. पुरोहिते पण कृत्रिम न्नक्तिथी बहु मान दान वम्हे पांम्वोने लाक्षाग्रहमां निवास कराव्यो.

हवे एम बन्युं के, कोइ एक दिवस एक वृद्ध स्त्री, पोताना पांच पुत्र अने एक वधु (पुत्र स्त्री) सहित त्यां आवी चम्ही. कुंताये कृपाथी तेने ते पोताना लाक्षागृहमां निवास कराव्यो. पछी रात्रीने विषे पेला पुरोहित पुरोचने गुप्त रीते अग्निवम्हे लाक्षागृहने सलगावी मूक्युं. आ वखते पोताना पूर्वन्नवनां पुण्यथी पांम्वोने हाथ बारणुं आववाथी तेन्र, कुंता अने डौपदी सहित नासी गया; परंतु महा प्रतापवालो न्नीमसेन पाछल रह्यो. तेणे पेला पुरोहितने अग्निमां फेंकी दीधो. त्यार बाद ते, तुरत दोम्हीने पोताना बंधुन्नने मळ्यो. पाछल सवारे पेला सात बली मूवेला माणसोने जोइ सर्वे लोक शोक करवा पूर्वक महा पापी एवा दुर्योधननी निंदा करवा लाग्या. पछी ते शत्रुन्न (कोरवो)नी शंकाथी महा बलवंत एवाय पण पांम्वो सर्व प्रकारनां सुखने त्यजी दइ केवल पोतानी सत्य प्रतिज्ञा पालवा माटे चाली निकळ्या. हवे रस्तामां बहु श्रमथी थाकी गयेला अने चालवाने असमर्थ एवा कुंता माताए भीमसेनने कह्युं के, "हे वत्स ! हवे आपणे केटलेक दूर जवानुं छे ? हुं अने आ डौपदी एक पगलुं पण आगल चालवा समर्थ नथी. वली आ त्हारा न्हाना बे बंधुन्न पण फक्त लाजथीज चाले छे." मातानां आवां वचन सांन्नलीने न्नीमसेने माताने तथा डौपदीने पोताना खन्ना उपर बेसास्या. नकुल तथा सहदेवने केम्ह उपर बेसास्या अने युधिष्ठिर तथा अर्जुनने बन्ने हाथ उपर लीधा. आ प्रमाणे छए जणने उपाम्ही अति वेगथी जतो एवो ते महाबलवंत न्नीमसेन, एक रात्रीमां तो बहु दूर कोइ एक महावनमां जतो रह्यो. पछी

ते महावनमां बहु श्रम थवाथी ऊंघी गयेला पोताना सर्व परिवारने मूकी जलनी शोधने माटे फरता एवा भीमसेने शीतल जलथी भरपुर एवुं एक महा सरोवर दीठुं. स्नानादि करी अने क्षणमात्र त्यां विश्राम करीने पछी जेटलामां ते, जल लइने पाछो वळ्यो तेटलामां तेणे पाछुं वली जोयुं तो कोइ एक मनोहर स्त्री दीठी. आ स्त्री प्रथम तो क्रूर देहवाली अने " अरे ! ऊभो रहे ऊभो रहे " एम बहु आग्रहथी केहेती हती, परंतु ते भीमसेनने जोइ पाछलथी दिव्यरूपवाली अने मधुरवाणीवाली बनी गइ. कामदेवथी बहुज आकुल व्याकुल बनी गयेली ते स्त्री, लीलाथी भीमसेननी पासे आवी अने जाणे कटाक्षवडे तेने प्रहार करती होयनी ? एम मधुरवचनथी केहेवा लागी. " रूपलक्ष्मीए करीने पंचबाण (कामदेव) ने जीतनारा हे उत्तम पुरुष ! सांभलो. आ पासेना पर्वतने विषे हिडंब नामनो म्हारो भाइ रहे छे. हुं तेनी व्हेन छुं. अने म्हारुं नाम हिडिंबिका छे. हे दयावंत ! हुं कामदेवरूप महासमुद्रमां बुडि गयेली छुं, माटे आप म्हारा उपर कृपा करीने मने आपना पाणिग्रहणरूप वहाणने विषे उद्धरी जीवितदान आपो. हे विवेकी ! आ वनमां निवास करता एवा तमोने हुं भक्तिथी म्होटो उपकार करीश, माटे दया करीने म्हारो उद्धार करो. " आ प्रमाणे विनंती करती एवी ते स्त्री प्रत्ये भीमसेने कह्युं के, " हे चपल नेत्रवाली ! हवणां आ वनने विषे निवास करता एवा अमोने ए घटे नहि. " आवी रीते तेओ तत्वथी परस्पर विवाद करता हता एवामां भयंकर अंगवाला अने विकराल नेत्रवाला हिडंब राक्षसे तुरत त्यां आवीने पोतानी व्हेनने हाथवती प्रहार कर्यो. आ वखते प्रहार करेली ते स्त्रीने जोइने भीमसेने हिडंबने कह्युं के, " अरे राक्षस ! निर्दय एवो तुं, युद्ध करवाने तैयार थइ रहेला अने त्हारी सन्मुख ऊभेला मने जीत्या विना आ बालाने केम प्रहार करे छे ? " भीमसेननां आवां वचनथी क्रोध पामेला भयंकर रूपधारी अने पीलां नेत्रवाला ते राक्षसे एक वृक्ष उपाडीने भीमसेनने मारवा माटे घोर गर्जना पूर्वक फेंक्युं. भयंकर एवा भीमसेने पण जाणे छत्रज होयनी ? एवा एक म्होटा वृक्षने उपाडीने सिंहनाद करता छता ते दारुण दैत्य तरफ फेंक्युं, त्यारबाद ते तेना तरफ युद्ध करवा दोड्यो. परस्पर एक बीजाना संघट्टनथी अने पाद प्रहारथी म्होटा पर्वतोने बहु कंपायमान

करती पृथ्वी पण समुद्र सहित कंपवा लागी. आ प्रमाणे तेउना भयंकर युद्धथी तुरत जागी गयेला युधिष्ठिरादिकने अने कुंतीने प्रणाम करीने हिडंबा कहेवा लागी. “ हे मात ! निश्चे तमारा पुत्रने आ दैत्य मारे छे, माटे तेमनी सहायने माटे बीजा कोइने झट मोकलो, मोकलो !! हुं तेमना निर्मल गुण समूहथी वेचायली छुं, जेथी तेमनी दासी थइ छुं. ” पछी दैत्यना बहु प्रहारथी जर्जर अंगवाला भीमसेनने जोइ युधिष्ठिर तुरत हाथमां खड्ग लइ तेनो तिरस्कार करता छता दोड्या. आ वखते फरी भीमसेने सज्ज थइ गदावडे दैत्यने एवो प्रहार कर्यो के, जेथी ते जाणे भयथीज होयनी एम प्राणरहित थइने पृथ्वी उपर पड्यो. हिडंब मराया पछी भीमसेनना रूपथी मोह पामेली हिडंबिका जाणे साधी राखेली देवता होयनी ? एम सेवा करवामां तत्पर थइने तेउनी पाछल पाछल फरवा लागी.

हवे कोइ वखते वनने विषे जती एवी द्रौपदी पांडवोथी जूदी पडी, तेथी ते जाणे यूथथी भूली पडेली मृगली होयनी ? एम भयथी आकुल व्याकुल थती अने भुख तरसथी पीडा पामती भमवा लागी. जो के आ वनने विषे सिंह, हाथी, भुंड अने अजगरादि बहु हिंसक जीवो वसता हता. तो पण तेउ शीलव्रतरूप बखतरथी रक्षण करायली द्रौपदीनो पराभव करवाने जरापण समर्थ थता नहि. चित्तमां बहु खेद पामता एवा पांडवोए पण महावनमां, पर्वतोनी गुफामां अने सरोवरादि बीजा अनेक स्थानोमां द्रौपदीनी बहु सोध करी; परंतु जेम कल्पवेली न जडे तेम ते तेउने मली नहि. पांडवो थाकीने बेठा, पछी भीमसेननी आज्ञा लइने हिडंबिका, द्रौपदीनी शोध करवा चाली. थोडो वखत थया पछी जाणे शक्ति, लक्ष्मीनेज लइ आवती होयनी ? एम ते, द्रौपदीने लइ आवी. पछी हमेंशा कुंतीने अने द्रौपदीने पोताना खंभा उपर बेसारती तथा सौने इच्छित वस्त्र अने अन्नपाणी आपती ते हिडंबिका मार्गने विषे पांडवोनी आगल चालवा लागी. पछी हर्ष पामेला कुंती अने युधिष्ठिरे, सहदेव तथा अर्जुनादि पुरुषोए वृद्धि पमाडेला महोत्सव पूर्वक जेम रात्रीनो चंद्रनी साथे विवाह करे तेम हिडंबिकाने भीमसेननी साथे परणावी. हवे तो बहु अनुराग धरती हिडंबिका मार्गने विषे विविध प्रकारना महेलनी रचना करती तथा तेउने इच्छित पदार्थो आपती छती अनेक

रूप धारण करीने ञीमसेननी साथे बहु प्रकारना ञोग ञोगववा पूर्वक क्रीमा करवा लागी. आ प्रमाणे हिमंबिकाए प्राप्त करेला अन्न, जल अने वस्त्रे करीने चिंता रहित तथा श्रमरहित अने ब्राह्मणना वेशवाला ते पांमवो, अनुक्रमे चक्र नामना रम्य गाममां आवी पहोच्या. त्यां तेउए देवशर्म नामना ब्राह्मणना घरने विषे निवास कर्यो.

एक दिवस युधिष्ठिरे बहु प्रिय एवी हिमंबिकाने बहु मानपूर्वक आ प्रमाणे कह्युं. " हे वधु ! पोतानी प्रतिज्ञा पालवा माटे अमारे बार वर्षपर्यंत बहु डुःख सहन करवानुं छे, माटे तुं पोताना घरप्रत्ये जा. " श्री धर्मपुत्र युधिष्ठिरनी आ प्रमाणे आज्ञा मलवाथी हिमिंबिका पोताने ञीमसेनथी प्राप्त थयेला गर्ञनी वात कुंतीने कहीने तेमज " ज्यारे तमे मने संञारशो त्यारे हुं हाजर थइश. " एम प्रतिज्ञा पण करीने तुरत अंतर्ध्यान थइ.

हवे कोइ वखते त्यां निवास करता एवा सौम्यदृष्टिवाला पांमवोए पोतानी पासेना घरमां माणसोने रोता, कुटता अने "हाय हाय" एवा कठोर शब्द बोलता सांञल्या. पछी निश्चे तेउना डुःखथी महा डुःखी थयेला ञीमसेने तुरत त्यां जइने देवशर्मा ब्राह्मणने पूछ्युं के, " हे द्विज ! त्हारुं आ कुटुंब शोकरूप समुद्रमां मुबी गयेलुं केम देखाय छे ?" देवशर्मा ब्राह्मणे लमणे हाथ मूकीने " हे देव ! हे देव !" एम शब्द करीने तथा "हाय हाय !" एवा उच्चारपूर्वक रुदन करीने कह्युं के, " निश्चे हुं अञाग्यवाननुं कारण छुं, एम जाणो. हे निशरण्य ! जो के तमेज डुःखवंत प्राणीउ छो, तो पछी हुं आ उचींती प्राप्त थयेली म्हारी विटंबना तमने शी रीते कहुं ? तो पण हे वत्सल ! तमे ऊट सांञलो.

पूर्वे सिद्ध थयेली विद्यावालो, महा ञयंकर अंगवालो अने ज्रुष्ट चित्तवालो कोइ वक नामे राक्षसराज आकाशमां म्होटी शीला विकुर्वीने लोकनो संहार करवा माटे अहिं आव्यो. आ वखते लोक सहित राजा पण बहु ञय पाम्यो; तेथी तेणे सर्व प्रजानी साथे गाढ एवा परमेष्टी मंत्रनो जप करता छता धर्मकार्यमां तत्पर थइने शुद्ध चित्ते कार्योत्सर्ग कर्यो. तेना प्रञावथी मनुष्योने पीमा करवा समर्थ नहि थयेला राक्षसे राजाने आ प्रमाणे कह्युं के, " हे नृप ! हुं मनुष्योने मारवा माटे तैयार थयेलो हतो; परंतु जिनञ-

क्तिथी त्हारा उपर प्रसन्न थयो छुं, माटे हवे हुं लोकोने मारीश नहि; परंतु तुं एक म्हारुं इच्छितकार्य कर अने ते एज के, तुं हमेशां मने एक एक माणस आपीने पछी तुं प्रजासहित दीर्घकालपर्यंत सुखी थयो छतो रहे." आ वात राजाए अंगीकार करी एटले ते दैत्य शीलाने संहरी चाल्यो गयो. (देवशर्मा भीमसेनने कहे छे के,) ते दिवसथी मांमीने हमेशां कुंभाकुमारीना हाथथी लखायला नामवाला माणसने राक्तस पासे पोतानो वारो आपवा जवुं पमे छे. हे उत्तम पुरुष! पूर्वभवना पापयोगथी आजे म्हारा नामनी पत्रीका (चीठी) आवेली छे अने आ राजपुरुषो पण मने तेम्रवा माटेज आवेला छे. अरे भाइ! एक दिवस राजाए कोइ केवलीने ए राक्षसना नाश संबंधी पूछ्युं हतुं, ते उपरथी ए महात्माए पांम्वोथी ए राक्षसनो नाश थवानुं कह्युं छे; परंतु ते पांम्वो तो हजु अहिं आव्या नहि अने आ म्हारुं मृत्यु तो आवी पहोंच्युं." देवशर्मानां आवां वचन सांभली तथा तेने भयातुर जोइने तेनां दुःखथी बहु दुःखी थयेला तथा दयावंत चित्तवाला भीमसेने मनमां विचार कर्यो के, धिक्कार छे! धिक्कार छे!! आ म्हारा शरीरने अने पौरुषार्थने के जेना वमे में बीजा जीवोनी रक्षा पण करी नहि." पछी भीमसेने देवशर्माने कह्युं के, "अरे! तुं आजे अहिं रहे हुं त्हारा बदले जाउं छुं." भीमसेनना आवा सत्वथी हर्ष पामेला विप्रे कह्युं. "निश्चे तमने आ घटे छे, कारण परोपकार करवामां प्रीतिवंत पुरुषोने देहादि सर्व तृणसमान छे; परंतु हे सुंदर! सौने मनुष्यपणुं तो सरखुं छे, तेमां हुं राक्षस पासे तमारुं भक्षण करावुं अने म्हारां जीवितनुं रक्षण करुं तो तेथी करीने पण हुं कांइ चीरंजीवी थवानो नथी." आम कहेता एवा ब्राह्मणने आग्रहथी घरे राखी विश्वना मनुष्यो उपर उपकार करनारो भीमसेन राजपुरुषोनी साथे राक्षसना घर प्रत्ये गयो अने त्यां शीला उपर सूतो.

हवे पेलो राक्तसराज अनेक दैत्योनी साथे त्यां आव्यो अने शिला उपर सूतेला महाकायवाला भीमसेनने जोइ हर्ष पामतो छतो पोताना सेवतीयोने कहेवा लाग्यो. "अहो! आजे आ कोइ महा शरीरवालो पुरुष आव्यो देखाय छे. निश्चे क्षुधातुर एवा आपणने आ एकथीज बहु तृप्ति थशे." आ प्रमाणे कहीने पछी क्षुधाथी भमी गयां छे नेत्र जेनां एवो तथा आक्र-

तीथी महा ज्ञयंकर एवो ते दैत्य पोताना करवत समान दांतोने वारंवार पीसतो, मुखमां जीज्ञने फेरवतो, बीजा राक्षसोने लोज्ञ पमामतो अने नाना प्रकारना महा ज्ञयंकर अट्टाटहास करतो जेटलामां ज्ञीमसेननी पासे आव्यो. तेटलामां चतुर अने ज्ञयंकर आकृतिवालो ज्ञीमसेन पण तुरत लोढानी गदाने हाथमां धारण करतो उतो कोपथी शेष नागनी पेठे उज्ञो थयो. पठी मनुष्योने भक्षण करवाथी बहु पापवाला ते दैत्यने ज्ञीमसेने तिरस्कार पूर्वक कह्युं के, “ अरे डुष्ट ! तुं त्हारा दैवने स्मरण करच. कारण के, हुं हवणां तने निश्चे मारी नाखीश. ” ज्ञीमसेननां आवां तिरस्कार वचनथी नाश पामेला धैर्यवालो ते दैत्य तुरत क्रोधथी पोतानो दंम उंचो करीने बीजा अनेक दैत्यो सहित डुर्जय एवा ज्ञीमसेनने मारवा माटे दोम्यो. आ अवसरे परस्पर युद्ध करता एवा ज्ञीमसेन अने दैत्यना पग प्रहारथी पृथ्वीने विषे चारे तरफ क्षोज्ञ थवा लाग्यो अने तेथी समुद्रथी उछलवा लागेला जलो जाणे फुवारा उुटेला होयनी ? एम देखावा लाग्या. पठी युद्धने विषे श्रम जीतनारा ज्ञीमसेने युद्ध करतां महा बलवमे गदाना प्रहारथी ते दैत्यनुं मस्तक जाणे माटीनो घमो होयनी ? एम फोमी नाख्युं. आवा महा प्रहारथी ते दैत्याधिपतिये ज्ञूमि उपर पमता पमता चारे तरफ अनेक वृक्षोने पामी नाखवा पूर्वक सर्व पृथ्वीने कंपावी. आ वखते देवताउए ज्ञीमसेननां मस्तक उपर पुष्पनो वर्षाद वर्षावी जयजय शब्द कर्यो. प्रजा सहित राजाए पण देवताउना शब्द सांज्ञलीने हर्षथी ज्ञीमसेनने वधाव्यो. त्यार पठी तेणे ज्ञीमसेनना पुरुषार्थथी अने ज्ञानीनी वाणीथी “ आ पांमवो ठे ” एम जाणीने पांमवोने प्रगट कर्या अने नाना प्रकारना उत्सवोथी सर्व लोक समक्ष तेमनुं पूजन कर्युं. अत्यंत गरिष्ट एवो ते दैत्य ज्ञीमसेनथी नाश पाम्यो एटले नगरवासी सर्वे लोको सर्व जिन मंदिरोमां प्रज्ञुनुं पूजन अने स्तवन करवा लाग्या. पठी अति दृढ प्रतिज्ञावाला पांमवो शत्रुना ज्ञयथी रात्रीने विषे ते नगरने तुरत त्यजी दइने द्वैत वनमां गया. त्यां तेउ ऊंपमी बांधीने गुप्त रीते रह्या.

हवे अहिं डुर्योधने ज्ञीमसेनथी राक्षसनो नाश तथा पांमवोनुं द्वैतवन प्रत्ये जवानुं वृत्तांत सांज्ञल्युं, तेथी ते मनमां बहु खेद पामतो उतो उपरथी बहु हर्ष देखामवा लाग्यो. पठी विडुरे डुर्योधननो पांमवोने नाश करवानो वि-

चार जाणीने तुरत एक प्रियंवद नामना प्रवीण दूतने पांम्वो पासे मोकल्यो. दूत पण ऊट द्वैतवनमां जइने अने पांम्वोने नमस्कार करीने विदूरना दीर्घकाल पर्यंत कुशलकारी एवा सर्व समाचार कह्या. ते आ प्रमाणे. " तमे द्वैतवनमां ऊुपम्नी वांधीने रह्या गे, ते वात ड्रुर्योधने जाणी ठे. तेथी ते कर्ण सहित तमारी पासे आवशे, माटे तमारे सावधानपणे रहेवुं. " दूतनां आवां वचन सांज्ञली जेने मनमां वहु क्रोध उत्पन्न थयो ठे एवी द्रौपदीये पांम्वोने कह्युं. " अरे ! हजु पण ते पापीयो आपणुं कांइ नवुं अशुज्ञ करशे खरा ? खरे अमे सत्यवचनथी देश, धन अने सैन्य सहित राज्य त्यजी दीधुं तो पण ते धरायो नहि, जेथी फरीने अमारी पासे शुं लेवा आवे ठे ? धिक्कार ठे मने ! जे हुं पांमु राजाना न्यायवंत एवा पुत्रोरूप तमने वरी !! धिक्कार ठे! धिक्कार ठे!! तमारा क्षत्रियना पराक्रमने ! अने धिक्कार ठे ! धिक्कार ठे !! तमारा शस्त्रना प्रवीणपणाने !!! अरे माता कुंती ! वीर प्रीया एवा तमे आ नपुंसक एवा पुत्रोने शामाटे जन्म आप्यो ? के, जेजना समक्ष अधम एवा धृतराष्ट्रना पुत्रोए मने नीच जनोने योग्य एवी विटंवना पमाम्ी !!! निर्लज्ज एवा ते ड्रुष्टोना जपसर्गने में सहन कस्या. वली राज्य त्यजी दइ आ वनमां आव्या तो पण हा हा !! ए आंधला धृतराष्ट्रना पुत्रो हजु वैरथी विराम पामता नथी." द्रौपदीनां आवां वचन सांज्ञली क्रोधथी कंपतो एवो ज्ञीमसेन, जाणे ए साक्षात् वीररस होयनी ? एम पृथ्वी जपर वन्ने हाथ पठाम्तो ठतो ऊट जज्ञो थयो. मेघनी पेठे गर्जना करता अने कपायरूप अग्निने वृद्धि पमाम्ता अर्जुने पण क्षोज्ञ पामेला अष्टापद केसरीसिंहनी पेठे जन्ना थइने धनुष्यनो टंकार शब्द कस्यो. शुं आते प्रतिविंवरूप ठे के मूर्तिमंत ठे ? एम रातां नेत्र अने मुखवाला तथा शत्रुना कालरूप नकुल अने सहदेव पण युद्ध करवाने वहु जल्लासवंत थया. वैरीरूप हस्तियोने नाश करवामां सिंह समान क्षोज्ञ पामेला ते सर्व वंधुजने जोइ म्होटा युधिष्ठिरे कह्युं के, " हे वीरो ! तमे हवणां विराम पामो. कारण के, हुं शत्रुजनुं हृदय अने तमारुं वल सारी पेठे जाणुं ठुं. हे विनयवंतो ! युद्ध करवा तैयार थयेला तमारा वमे म्हारी प्रतिज्ञा मिथ्या न थाउ, माटे आपणो वखत आवे तेटलो काल वाट जुउ. " युधिष्ठिरनी आवी आज्ञाथी ज्ञीमसेनादि चारे वंधुउ पोतानी स्वाज्ञाविक प्रकृतिने पामी गया. पठी

तीथी महा ज्ञयंकर एवो ते दैत्य पोताना करवत समान दांतोने वारंवार पीसतो, मुखमां जीज्ञने फेरवतो, बीजा राक्षसोने लोज्ञ पमाडतो अने नाना प्रकारना महा ज्ञयंकर अट्टाटहास करतो जेटलामां ज्ञीमसेननी पासे आव्यो. तेटलामां चतुर अने ज्ञयंकर आकृतिवालो ज्ञीमसेन पण तुरत लोढानी गदाने हाथमां धारण करतो ठतो कोपथी शेष नागनी पेठे जज्ञो थयो. पठी मनुष्योने भक्षण करवाथी बहु पापवाला ते दैत्यने ज्ञीमसेने तिरस्कार पूर्वक कह्युं के, “ अरे दुष्ट ! तुं त्हारा देवने स्मरण करय. कारण के, हुं हवणां तने निश्चे मारी नाखीश. ” ज्ञीमसेननां आवां तिरस्कार वचनथी नाश पामेला धैर्यवालो ते दैत्य तुरत क्रोधथी पोतानो दंड जंचो करीने बीजा अनेक दैत्यो सहित दुर्जय एवा ज्ञीमसेनने मारवा माटे दोड्यो. आ अवसरे परस्पर युद्ध करता एवा ज्ञीमसेन अने दैत्यना पग प्रहारथी पृथ्वीने विषे चारे तरफ क्षोज्ञ थवा लाग्यो अने तेथी समुद्रथी जबलवा लागेला जलो जाणे फुवारा ठुटेला होयनी ? एम देखावा लाग्या. पठी युद्धने विषे श्रम जीतनारा ज्ञीमसेने युद्ध करतां महा बलवड गदाना प्रहारथी ते दैत्यनुं मस्तक जाणे माटीनो घडो होयनी ? एम फोडी नाख्युं. आवा महा प्रहारथी ते दैत्याधिपतिये ज्ञूमि जपर पडता पडता चारे तरफ अनेक वृक्षोने पाडी नाखवा पूर्वक सर्व पृथ्वीने कंपावी. आ वखते देवताउए ज्ञीमसेननां मस्तक जपर पुष्पनो वर्षाद वर्षावी जयजय शब्द कर्यो. प्रजा सहित राजाए पण देवताउना शब्द सांज्ञलीने हर्षथी ज्ञीमसेनने वधाव्यो. त्यार पठी तेणे ज्ञीमसेनना पुरुषार्थथी अने ज्ञानीनी वाणीथी “ आ पांडवो ठे ” एम जाणीने पांडवोने प्रगट कर्या अने नाना प्रकारना उत्सवोथी सर्व लोक समक्ष तेमनुं पूजन कर्युं. अत्यंत गरिष्ट एवो ते दैत्य ज्ञीमसेनथी नाश पाम्यो एटले नगरवासी सर्वे लोको सर्व जिन मंदिरोमां प्रज्ञुनुं पूजन अने स्तवन करवा लाग्या. पठी अति दृढ प्रतिज्ञावाला पांडवो शत्रुना ज्ञयथी रात्रीने विषे ते नगरने तुरत त्यजी दइने द्वैत वनमां गया. त्यां तेज झुंपडी बांधीने गुप्त रीते रह्या.

हवे अहिं दुर्योधने ज्ञीमसेनथी राक्षसनो नाश तथा पांडवोनुं द्वैतवन प्रत्ये जवानुं वृत्तांत सांज्ञल्युं, तेथी ते मनमां बहु खेद पामतो ठतो जपरथी बहु हर्ष देखाडवा लाग्यो. पठी विदुरे दुर्योधननो पांडवोने नाश करवानो वि-

चार जाणीने तुरत एक प्रियंवद नामना प्रवीण दूतने पांम्वो पासे मोकल्यो. दूत पण ऊट द्वैतवनमां जइने अने पांम्वोने नमस्कार करीने विदूरना दीर्घकाल पर्यंत कुशलकारी एवा सर्व समाचार कह्या. ते आ प्रमाणे. “ तमे द्वैतवनमां ऊुपम्ी बांधीने रह्या गे, ते वात ड्डुर्योधने जाणी ठे. तेथी ते कर्ण सहित तमारी पासे आवशे, माटे तमारे सावधानपणे रहेवुं. ” दूतनां आवां वचन सांज्ञली जेने मनमां बहु क्रोध उत्पन्न थयो ठे एवी ड्रौपदीये पांम्वोने कह्युं. “ अरे ! हजु पण ते पापीयो आपणुं कांइ नवुं अशुन्न करशे खरा? खरे अमे सत्यवचनथी देश, धन अने सैन्य सहित राज्य त्यजी दीधुं तो पण ते धरायो नहि, जेथी फरीने अमारी पासे शुं लेवा आवे ठे? धिक्कार ठे मने ! जे हुं पांमु राजाना न्यायवंत एवा पुत्रोरूप तमने वरी !! धिक्कार ठे! धिक्कार ठे!! तमारा क्षत्रियना पराक्रमने ! अने धिक्कार ठे ! धिक्कार ठे !! तमारा शस्त्रना प्रवीणपणाने !!! अरे माता कुंती ! वीर प्रीया एवा तमे आ नपुंसक एवा पुत्रोने शामाटे जन्म आप्यो ? के, जेउना समक्ष अधम एवा धृतराष्ट्रना पुत्रोए मने नीच जनोने योग्य एवी विटंबना पमाम्ी !!! निर्लज्ज एवा ते ड्डुष्टोना उपसर्गने में सहन कस्या. वली राज्य त्यजी दइ आ वनमां आव्या तो पण हा हा !! ए आंधला धृतराष्ट्रना पुत्रो हजु वैरथी विराम पामता नथी.” ड्रौपदीनां आवां वचन सांज्ञली क्रोधथी कंपतो एवो ज्ञीमसेन, जाणे ए साक्षात् वीररस होयनी ? एम पृथ्वी उपर बन्ने हाथ पगाम्तो ठतो ऊट उज्ञो थयो. मेघनी पेठे गर्जना करता अने कषायरूप अग्निने वृद्धि पमाम्ता अर्जुने पण क्रोज्ञ पामेला अष्टापद केसरीसिंहनी पेठे उज्ञा थइने धनुष्यनो टंकार शब्द कस्यो. शुं आते प्रतिबिंबरूप ठे के मूर्तिमंत ठे ? एम रातां नेत्र अने मुखवाला तथा शत्रुना कालरूप नकुल अने सहदेव पण युद्ध करवाने बहु उल्लासवंत थया. वैरीरूप हस्तियोने नाश करवामां सिंह समान क्रोज्ञ पामेला ते सर्व बंधुउने जोइ म्होटा युधिष्ठिरे कह्युं के, “हे वीरो ! तमे हवणां विराम पामो. कारण के, हुं शत्रुउनुं हृदय अने तमारूं बल सारी पेठे जाणुं ठुं. हे विनयवंतो ! युद्ध करवा तैयार थयेला तमारा वमे म्हारी प्रतिज्ञा मिथ्या न थाउ, माटे आपणो वखत आवे तेटलो काल वाट जुउ. ” युधिष्ठिरनी आवी आज्ञाथी ज्ञीमसेनादि चारे बंधुउ पोतानी स्वाज्ञाविक प्रकृतिने पामी गया. पठी

युधिष्ठिरे विदुरना समाचारनुं मनमां स्मरण करता छतां तुरत दूतने रजा आपी. पछी ते देश त्यजी दइने पांमवो गंधमादन पर्वत उपर गया. त्यां पण तेमणे पोतानी नजीकमां अद्भुत शोभावाला इंद्रकील नामना पर्वतने दीठो. पछी समय मळ्यो जाणीने अर्जुन पोताना म्होटा बंधु युधिष्ठिरनी आज्ञा लइ ते पर्वत उपर विद्या साधवा माटे गयो. त्यां ते श्री रुषन्न देव प्रजुने नमस्कार करी कमलासन उपर बेसी अने मेरु पर्वतनी पेठे पोताना ध्यानमां स्थिर थइने श्रीमणिचूम विगेरे विद्याधरोए आपेली विद्या साधवा लाग्यो. आ वखते नूत, सिंह, हस्ति विगेरे वहु जीवो तेने चलाववा आव्या; परंतु दृढ चित्तवालो ते जरा पण चलायमान थयो नहि. पछी प्रसन्न थयेली विद्याउ तेनी आगल प्रगट थइने कहेवा लागी के, "हे वत्स ! अमे प्रसन्न छीए, माटे वरदान माग." पछी नमन करता एवा अर्जुने तुरत उन्ना थइने ते विद्याउने नक्तिथी प्रणाम कस्या. विद्याउए अर्जुननां शरीर उपर हाथ फेरव्या एटले ते सिद्ध विद्यावालो थयो. त्यारवाद हर्ष पामेला अर्जुने ते पर्वतना शिखर उपर नूंमने मारता एवा एक पारधीने दीठो. दयाथी अर्जुने वारंवार तेने ना पामता छतां कह्युं के, "अहो आ तीर्थने विषे उद्धत एवो तुं म्हारा जोतां छतां नूंमोने केम मारे छे? तुं जेनुं कोइ रक्षण करनार नथी एवा आ निरपराधी जीवोने मारे छे; परंतु निर्दय एवा पुरुषोनुं कुल, वल अने उत्कृष्ट जाणपणुं ए सर्व वृथा होय छे." आ प्रमाणे तिरस्कार करेला पारधीये अर्जुनने कह्युं. "अरे वटेमार्गु ! पोतानी मरजी प्रमाणे आ वनने विषे फरता एवा गाढ पराक्रमवाला मने तुं फोगट केम ना पामे छे ? हुं क्रोधना वशथी प्रवृत्त छते आ वनवासी जीवोनुं रक्षण करनार कोण छे ? छतां जो तुं पोतानां क्षत्रिय वलथी समर्थ होय तो आ जीवनुं रक्षण कर ! रक्षण कर ! !" पछी पापीष्ट शत्रुना समूहवाला अर्जुने उग्र एवा धनुष्यने यमदंमनी पेठे हाथमां धारण करी क्रोधथी बाणोवमे सर्व आकाशने पूरी दीधुं. पारधीये पण तुरत पोतानुं धनुष्य युद्धनिमित्ते हाथमां लइने लाघवपणाथी फल आपनारा वहु बाणो अर्जुन तरफ फेंक्यां. बन्ने सुन्नटोना आकाशमां उछलता बाणोए करीने जाणे उष्ट राजाउना असंख्य अन्यायथीज होयनी ? एम सूर्य ढंकाइ गयो. पछी मायामय पारधीये अर्जुननुं धनुष्य हरी लीधुं एटले ते क्रोधथी पोतानुं खमग लइने पारधी सामो दोमयो. पारधीये

खड्ग पण हरी लीधुं. पछी तो भयंकर अर्जुन द्वंद्व युद्ध करवाने सिंहनाद करतो छतो तेना सामो दोड्यो. बन्ने जणा बलथी परस्पर अंगपीडन करता छता द्वंद्व युद्ध करवा लाग्या. तेमां अर्जुने भीलने पग पकडीने बलथी वस्त्र नी पेठे आकाशमां फेंक्यो. आ वखते आकाशथी पुष्पवृष्टि थइ अने अर्जुने पोतानी आगल ते पुरुषने बदले कोइ बीजा पुरुषने दीठो. "आ शुं !" एम बहु आश्चर्य पामेला अर्जुनने हर्ष पामेला पेला पुरुषे कह्युं. "हे पार्थ! हुं त्हारा गुणोथी प्रसन्न थयो छुं; माटे तुं इष्ट वरदान माग." अर्जुने कह्युं. "हे विद्याधर ! हुं अवसरे ते वरदान मागीश; परंतु आप कोण छो ? ते हुं जाणवानी इच्छा करुं छुं. तो ते मने झट कहो" अर्जुननां आवां वचनथी हर्ष पामेला ते पुरुषे कह्युं. "हे अर्जुन ! सांभल.

वैताढ्य पर्वतने विषे रथनूपुर नगरमां जाणे दिशाना अधिपतियोए सेवन करेलो इंद्रज होयनी ? एवो इंद्रमालि नामे विद्याधरोनो राजा राज्य करे छे. तेने विद्युन्माली नामनो बंधु छे. ए बहु चंचल मनवालो होवाथी प्रजावर्गने बहु दुःखकारी हतो, तेथी महाराजा इंद्रमालीये बहु क्रोध करी तेने पोताना नगरमांथी काढी मूक्यो. विद्युन्माली पण बहु कोप धरतो छतो तत्काल राक्षसना नगर प्रत्ये गयो. त्यां तेना संगथी लुंटवामां अने बंधन करवामां चतुर एवा तल अने ताल नामना दैत्यो अचिंता महेंद्र देशमां आवीने लोकोने बहु क्लेश करावा लाग्या. पछी इंद्रे कोइ केवलज्ञानीनां वचनथी तेमनो पराभव तमाराथी जाणीने मने तमारा माटे धनुष्य, कवच, उत्तम रथ अने मुकुट आपीने अहिं तमने तेडवा माटे मोकल्यो छे, माटे आ सर्व वस्तु ग्रहण करो अने त्यां चालो." महा पराक्रमवालो अर्जुन पण धनुष्य, बाण, मुकुट अने कवच धारण करी तुरत राक्षसना पुर प्रत्ये गयो. कह्युं छे के—महा पुण्यवंतने शुं दुर्लभ होय छे ? अर्जुने त्यां महा घोर संग्राम करी अने ते सर्व दैत्योने मारी नाखीने विजय मेलव्यो. पछी विजयथी देदिप्यमान एवा तेणे वैताढ्य पर्वत उपर आवीने हर्षथी इंद्रना चरण प्रत्ये नमस्कार कर्यो. इंद्रे पण सामा जइ मलीने तेने पोताना अर्द्ध आसन उपर बेसाड्यो. इंद्रनी आज्ञाथी सर्वे लोकपालोए पण विजयवंत एवा अर्जुनने नमस्कार कर्या. पछी बहु प्रसन्न थयेला इंद्रे पोताना पुत्ररूप अर्जुनने दिव्य आयुधो आ-

त्यां. अर्जुने पण परस्पर प्रतिनी वृद्धिने माटे पोतानी धनुष्यकला चित्रांगद नामना विद्याधरने आपी. पछी पोतानी माता अने जाइयोने मलवाने उत्साहवंत थयेलो अर्जुन, इंद्रनी आज्ञा लइ वैमानमां बेसीने आकाश मार्गे थइ तुरत पोतानां आश्रमप्रत्ये आव्यो. त्यां तेणे माताने तथा पोताना बे म्होटा बंधुउने प्रणाम करीने तथा न्हाना बे बंधुउने जेटीने तथा डौपदीने दृष्टिथी मलीने बहु प्रसन्न कर्या. चित्रांगद विद्याधर पण युधिष्ठिरादिकनी पासे अर्जुनना पराक्रमनी वात करीने पछी तेउए रजा आपवाथी पोताने स्थाने चाल्यो गयो.

हवे कोइ वखते बहु हर्षवाला पांमवो बेठा हता एवामां तेमनी वच्चे आकाशमांथी एक सुवर्ण कमल पम्युं. डौपदीये तेने पोताना हाथमां लइ सुंघी अने पछी जीमसेनने कह्युं के, “हे नाथ! आवां कमलो मने बहु वहालां छे, माटे तमे कोइ पण म्होटी नदीथी, सरोवरथी अथवा तो धराथी लावीने मने ऊट आपो.” डौपदीनां आवां वचन सांजली जीमसेन, पंचनवकारनुं स्मरण करतो छतो वनमां कमलोनी शोध करवा गयो. पाछल धर्मपुत्र युधिष्ठिरनुं विघ्नकारी माबुं नेत्र फरकवा लाग्युं. तेथी ते मनमां अरिष्टनी शंका लावी पोताना न्हाना बंधुउने कहेवा लाग्या के, “अहिं एवो कोइ नथी के, जे जीमजाइनो पराजव करवाने पूर्ण समर्थ थाय!!! छतां आ म्हारुं माबुं नेत्र जीमने विषेज खरेखर घोर अने अति जयंकर अमंगल सूचवे छे; तो हे बंधुउ! तमे ऊट उठो अने आपण सौ तेनी पाछल जइए.” पछी तेउ महा वृक्षोना गाढ प्रदेशने विषे चारे तरफ शोध करवा लाग्या; परंतु जेम जाग्यहिन माणसने निधि प्राप्त न थाय तेम तेउने कोइ स्थानके जीमसेन मल्यो नहि. छेवट तेउ मोहवशे मूर्छाथी पृथ्वी उपर पमवा लाग्या एटले तेउए तुरत हिमंबिकानां वचनने याद लावी तेनुं स्मरण कर्युं. फक्त नाम मात्रना स्मरणथी तुरत त्यां आवेली हिमंबिकाए कह्युं के, “हे पूज्यो! म्हारुं शुं कार्य छे, जे होय ते कहो.” युधिष्ठिरे जीमसेन संबंधी वात करी एटले हीतकार्य करनारी तेणे सर्वने पोतानां मस्तक उपर बेसारीने जीमसेन पासे लावी बहु हर्ष पमाम्या. आ वखते जीमसेन पद्म सरोवरना कांठे उजो हतो; तेथी ते पण पोताना बंधुउने मार्गना विषमपणानी वात करीने बहु हर्ष पाम्यो.

पछी सुवर्ण पद्मोवम्हे डुपदराजपुत्रीनो इच्छा पूरी करवा माटे जेटलामां ज्ञीमसेने सरोवरमां प्रवेश कर्यो तेटलामां ते तुरत अंतर्ध्यान थइ गयो. अर्जुन तेनी पाछल गयो तो ते पण तेनीज पेठे अदृश्य थयो. ठीकज छे, माणसोनां बन्ने नेत्रमांनुं एक नेत्र ज्यारे निद्राथी बंध थाय त्यारे बीजुं पण तुरतज तेनी पाछल बंध थाय छे. ज्यारे बन्ने ज्ञाइयोनी पाछल युधिष्ठिर अंतर्ध्यान थया त्यारे न्हाना बे बंधुउ पण तुरत मोहथी तेमनी पछवाम्हे तेवीज स्थिति पाम्या. पछी पांम्वोने नहि देखवाथी ते महा वनमां कुंती अने द्रौपदी बन्ने बहु ज्ञय पामवा लागी, तेथी ते बन्ने महासतीयोए पोतानी शांतिने माटे विघ्नो नाश करवामां निपुण एवा परमेष्ठी मंत्रनुं ध्यान करवा पूर्वक एकाग्र चित्तथी तुरत कायोत्सर्ग कर्यो. पछी ध्यानमां रहेली अने स्थिर चित्तवाली ते बन्ने महा सतीयोने आठ प्रहार (एक रात दिवस) निवृत्त थयो एटलामां बीजे दिवसे सवारे पांचे पांम्वोए आकाशमांथी उतरीने पोतानी माताने प्रणाम कर्या. संतुष्ट चित्तवाली कुंतीये पण तुरत कायोत्सर्ग पारी हर्षथी नमन करता एवा पोताना पुत्रोने नेत्रनां कंइक उनां एवां बहु जलथी सिंचन कर्या. आ वखते हाथमां सुवर्णदंम्हने धारण करनारो कोइ पुरुष कुंतीने प्रणाम करी पांम्वोनां ते ते सर्व चरित्रथी तेमने (कुंतीने) विस्मय पमाम्तो उतो कहेवा लाग्यो के.

“हे मात ! तमे सांज्ञलो. हवणां कोइ मुनिने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं छे; तेथी तेमनो केवलोत्सव करवा जता एवा इंद्रनुं वैमान जेटलामां आकाशमार्गे अहिं तमारा उपर आव्युं तेटलामां ते तमारा आश्चर्यकारी शीलने लीधे स्तंज्ञित थइ गयुं. पछी इंद्रे तेनुं कारण जाणवा माटे प्रहित नामना मने अहिं मोकल्यो. हुं पण तमने बन्ने सतीयोने जोइ तुरत इंद्र पासे गयो. इंद्र पण दुःसह विघ्नने हणनारी तमारी परमेष्ठीमंत्रनी ध्यान क्रीयाने जाणीने पोताना वैमानना स्खलननुं कारण मनमां विचारवा लाग्यो. पछी तेणे मने कह्युं के, “द्रोपदीनां वचनथी आ पांचे पांम्वो सुवर्णकमल लेवा माटे स्फुरणायमान महासर्पना समूहवाला विशाल सरोवरमां पेठा छे; परंतु ते सरोवरनो अधिपति शंखचूम्ह तेउने नागपाशवम्हे दृढ बांधीने पोताना ज्ञुवन प्रत्ये लइ गयो छे. धिक्कार छे ! धिक्कार छे ! ! के एने एवुं कृत्य करता

कोइए निवास्थो नहि. हे सुंदर ! पछी ते बन्ने महा सतीयोए तेज कारण माटे श्री परमेष्टीमंत्रनुं ध्यान आरम्भ्युं छे अने तेथीज आ म्हारुं वैमान स्खलन पाम्युं छे. आज म्हारुं वैमान स्खलन पामवानुं खरुं कारण तत्त्वथी जाणी ले, माटे हे विधिज्ञ ! हवे तुं शंखचूम पासे जइ अने म्हारी आज्ञाथी पांचे पांमवोने छोमावीने तेउने ते महासत्यो पासे तेमी जा. पछी तेमनुं ध्यान मूकावीने बहु हर्ष पमाम." इंद्रनां आवां वचनथी में पाताल लोकप्रत्ये जइने इंद्रनां वचनथी बहु तिरस्कार करता छता शंखचूमने कह्युं के, "अरे सर्पाधिप ! तें आ निरपराधी अने आयुध रहित एवा पांमवोने शा माटे बांध्या छे ?" पछी तेणे "म्हारा सरोवरनां कमलोने लेवानी इच्छा करवाथी में तेउने बांध्या छे." एम कह्युं एटले में ते सर्पाधिराजने श्री इंद्रनी आज्ञा कही. इंद्रनी आवी आज्ञा जाणी शंखचूमे ते पांच पांमवोने पोतानां राज्यने विषे स्थापन कस्या. कह्युं छे के–इंद्रनी आज्ञा निरंतर मनुष्य, देवता अने असुरोने मान्य होय छे. पछी राज्यनां सुखने विषे स्पृहा रहित तथा तमारां चरणकमलने सेवन करवामां भ्रमररूप आ पांमवोए तेनां राज्यने अंगीकार कस्युं नहि. वली सर्पराजे प्रसन्न थइने युद्धना अवसरे अर्जुनने सहाय्य करवानुं कह्युं छे. आ वचन अंगीकार करीने सर्पराजे अर्जुनने एक आश्चर्यकारी हार अने बीजा चारेने बाजु, मुकुट, कुंमल अने महाविद्या आपीने पछी हे मात ! ते तमारा न्यायवंत पुत्रोने म्हारी साथे अहिं मोकल्या छे; माटे हवे तमे मने तुरत इंद्रनुं वैमान चलावानी आज्ञा आपी त्यां मोकलो." प्रहितनां आवां वचन सांभली द्रौपदी सहित हर्ष पामेली कुंतीये ते देवने आनंदकारी वचनथी जवानी आज्ञा आपी अने पोते पोतानां हस्त कमलथी युधिष्ठिरादि पुत्रोने स्पर्श कस्यो. युधिष्ठिरादि पुत्रोए पण विनयथी भक्तिवमे माताना चरणमां नमस्कार कस्या.

इति पांमवचरित्रे पांमवद्यूतक्रीमावनवासादिवर्णननामा चतुर्थोऽधिकारः ॥ ४ ॥

निरंतर लोकमां सुखकारी अने पोताना भक्त जनोना सर्व विघ्नने नाश करनारा वली महोदयरूप लक्ष्मीने प्राप्त करवामां प्रवीण एवा श्री अजितनाथ जिनेश्वरने हुं हर्षथी नमस्कार करुं छुं.

हवे उत्तम पराक्रमथी प्रसिद्ध एवा ते पांचे पांडवो आ प्रमाणे वनवासमां छ वर्ष पूरा करीने पछी न्यायलक्ष्मीथी शोभता एवा तेउ फरी सुखे निवास करवा माटे द्वैतवनमां गया. अहिं हस्तिनापुरमां दुर्योधने पांडवो द्वैतवनमां आव्यानी वात सांभली; तेथी तेणे वेगवडे बहु सैन्यथी त्यां आवी द्वैतवनना सरोवरने तीरे पडाव कर्यो. जो के चित्रांगद विद्याधरे आ वखते त्यां आवी तेने बहु ना पाडी तो पण सेवक समूहथी अनुसरायेला दुर्योधने सहसा ते सरोवरमां प्रवेश कर्यो.पछी कोप पामेला ते विद्याधरे अनुचरो सहित दुर्योधननुं हरण कर्युं. आ वातनी दुर्योधनादिकनी स्त्रीयोने खबर पडी; तेथी तेउ तुरत युधिष्ठिरनी पासे आवीके बहु रुदन करती छती केहेवा लागी. "हे जेठ ? जो के धृतराष्ट्रना पुत्रोए तमारे विषे बहु अपराध कर्यो छे, तोपण तमे ज्येष्ठ धर्मना उद्भवथी अने विशेषे वृद्धि पामेला भावथी अमारा उपर कृपा करो." तेउनां आवां वचन सांभली दयाथी भिंजाइ गयेला चित्तवाला अने त्यजी दीधो छे क्रोध जेणे एवा युधिष्ठिरे युद्ध कार्यमां समर्थ एवा अर्जुनने ते दुर्योधनने छोडाववाना काममां आज्ञा करी.पछी अर्जुने विद्याधरनी पासे जइने हठथी युद्धनी याचना करी.विद्याधर पण क्रोधथी रातां नेत्रवालो थयो छतो बीजा अनेक विद्याधरोनी साथे त्यां रणभूमिमां आव्यो. अर्जुने पण क्रोधथी मेघनी पेठे गर्जना करीने बाणोनो एवो वरसाद वरसाव्यो के, जेथी रातां नेत्रवालो चित्रांगद बीजा अनेक विद्याधरो सहित अर्जुननी साथे युद्ध करवा लाग्यो. पछी नाश पाम्युं छे बल जेनुं एवा ते विद्याधरे असमर्थपणाने लीधे उदासपणुं पामता छता बंधु सहित दुर्योधनने छोडी दइ अने तुरत अर्जुननी पासे आवीने नमस्कार कर्यो. अर्जुने पण तुरत निर्मल नीतिथी हाथ जोडीने उभेला विद्याधरने कह्युं के, "हे सखे ! फक्त गुरुरूप म्होटा बंधुनां वचनथी बंधायेला में त्हारी साथे युद्ध कर्युं छे, हवे तुं आ दुर्योधन सहित सत्य प्रतिज्ञावाला म्हारा म्होटा बंधु पासे आवीने तेमने नमस्कार करतो छतो प्रीतिनी वृद्धिने माटे पोतानुं निरपराधीपणुं दर्शावी आप." अर्जुने आ प्रमाणे कह्युं एटले प्रसन्न चित्तवालो ते विद्याधर अर्जुनने आगल करी वैमानमां बेसीने म्होटा उत्सवथी युधिष्ठिर पासे आव्यो. बंधुउ सहित युधिष्ठिरने जोवा मात्रथी जेने मांथामां शूल अने शरीरमां पीडा उत्पन्न थइ छे एवो तथा मनमां स्फुरणायमान थयेला क्रोध

समूहवालो डुर्योधन खीलानी पेठे तेमने जरा पण नम्यो नहि. चित्रांगदे जेमनां चरणने विषे नमन करयुं छे एवा धर्मपुत्र युधिष्ठिर पोतानां स्नेहवंत नेत्रथी डुर्योधनने वारंवार जोवा लाग्या. कारण सत्पुरुषोनुं एवुं चरित्र होय छे. पछी "हे मूढ ! अपराध सहन करनारो जे त्हारो गुरु छे अने जे तने जीवितदान आपवामां समर्थ छे. तेने तुं नमस्कार कर के, जेथी करीने त्हारुं कुशल थाय" एम कहेवा पछी नमस्कार करता एवा डुर्योधनने युधिष्ठिरे आलिंगन करीने सर्व कुटुंबनुं कुशल पूछ्युं एटले तेणे तुरत प्रसन्न थइने पोतानां चित्तमां रहेलुं सर्व युधिष्ठिरने कह्युं. "हे धर्मपुत्र ! तमने नमन करतां मने जे डुःसह लज्जा थाय छे, ते लज्जा स्वराज्यनो नाश अने वैरीथी थयेली पीमावमे करीने पण मने थती नथी." डुर्योधननां आवां वचन सांजली नाश पाम्यो छे क्रोध जेमनो एवा युधिष्ठिरे तेने तेना नगर प्रत्ये मोकली दीधो. कह्युं छे के–संत पुरुषो पोतानुं अहित चिंतवनारा उपर पण हित चिंतवे छे. पछी गांगेय अने डोण विगेरे उत्तम पुरुषोए डुर्योधनने कह्युं के, "तें लेशमात्र अर्जुननुं बल जोयुं? माटे हे मूर्ख ! हवे तुं मनमां विचार करीने ते महात्मा पुरुषोनी साथे ऊट संधी कर." आ प्रमाणे गांगेये बहु कह्युं; पण जेम त्रिदोष (वात, पित्त अने कफ) थी उत्पन्न थयेलो व्याधी विविध प्रकारना औषधोने गणे नहि तेम डुष्टजावने आश्रय करी रहेला डुर्योधने गांगेयादिकनां हित वचनने गण्युं नहि.

हवे जे द्वैतवनमां पांमवो रहेता हता त्यां थइने डुःशल्यानो पति जयड्रथ जतो हतो. तेने कुंतीये पोतानी पुत्रीनो पति जाणीने स्नेहथी आमंत्रण करयुं. जयड्रथ पण हर्ष पामतो छतो त्यां रह्यो. पछी अर्जुने पोतानी दिव्य शक्तिथी अमृत समान जोजन लावीने तेने जमाम्यो. कह्युं छे के–निश्चे जोजन एज प्रीतिनुं प्रथम फल छे. पछी डुपदराज (डौपदी) पुत्रीनां मुखकमलने जोता एवा जयड्रथ राजानो मनरुपी हंस ते डौपदीना लावणरूप सरोवरने विषे क्रीमा करवाने उत्साहवंत थयो; तेथी ते अवसर जोइ पांमवोने छेतरीने जाणे मूर्तिमान लक्ष्मीज होयनी ? एम डौपदीने रथमां बेसारी तत्काल चाल्यो. आ वातनी जीम तथा अर्जुनने खबर पमी एटले तेओ बहु कोप करता छता तेनी पाछल जवा लाग्या. आ वखते कुंतीये तेमने कह्युं के,

" हे पुत्रो ! ए तमारी व्हेनननो पति थाय छे, माटे ते महा अपराधीने तमे मारशो नहि. पछी अर्जुने धनुष्यनो घोर शब्द करी, असंख्य बाणोथी जयद्रथनी महासेनाने अवले रस्ते जती करी दीधी. भीमसेने पण उछली उछलीने मुशलनी पेठे गदाना प्रहारथी जयद्रथनी सेनाना हस्तियोना समूहने रुधिरमय बनावी दीधी. जो के अर्जुन, जयद्रथनां जीवितने हरण करवामां समर्थ हतो; परंतु तेणे मातानां वचन स्मरणमां लावीने अर्द्धचंद्र बाणना समूहथी तेना (जयद्रथना) रथनी ध्वजा तथा तेनी दाढी मूछ अने केश कापी नाख्या. पछी अर्जुन अने भीम ए बन्ने उग्रबलवाला सुभटोए द्रोपदीने रथमां बेसारी पाछी लावीने हर्षथी मातानां चरणकमलमां प्रणाम कर्या. महा हर्षवती कुंतीये पण प्रेमवशे पोताना हस्तथी युद्धश्रमना परसेवाथी ऊरता कोमल अंगवाला भीम तथा अर्जुनने स्पर्श कर्यो.

हवे कोइ वखते महा संतोषवाला ते सर्वे पांम्रवो पोतानी माता अने द्रौपदी सहित बेठा हता एवामां नारदऋषि आकाशथी उतरीने तेमनी पासे आव्या. पांम्रवोए बहु भक्तिथी तेमनुं पूजन कर्युं. पछी नारदमुनि तेमने एकांतमां लइ जइ हितवचन कहेवा लाग्या के, " हे पांम्रवो ! तमे स्वस्थचित्तवाला थइने दुर्योधनना सर्व अभिलाषने सांभलो. तमोए शंखचूमना पासथी छोम्रावेलो दुष्ट बुद्धिवालो दुर्योधन पोतानी नगरी प्रत्ये आवीने तमारो नाश करवा माटे बहु प्रयत्न करवा लाग्यो; परंतु पापने लीधे तेना सर्व प्रयासो निष्फल थया छे. ज्यारे ए पोते नाना प्रकारनां बहु कपटोथी तमने मारवा माटे समर्थ थयो नहि, त्यारे तेणे हवणां पोतानां नगरमां एवी उद्घोषणा करावी छे के, "जे कोइ उत्तम पुरुष, कपटथी अथवा तो बाहुबलथी पांम्रवोने मारी नाखे तेने हुं म्हारुं अर्धुं राज्य आपीश." दुर्योधननां आवां वचन सांभलीने पोताना पिताना विनाशना वैरथी पुरोधन पुरोहितना पुत्रे विनंतीपूर्वक कह्युं के, "हे नरेंद्र ! आवा अल्पकार्यमां आपे पोते शा माटे प्रयास करवो जोइए. म्हारी पासे सर्वकार्य पूर्ण करवामां समर्थ एवी अने वरदान आपनारी कृत्या नामे विद्या छे, तेना प्रभावथी हुं त्रण जगत्ना जनोने क्षोभ पमारुं तो पछी ए पांम्रवोने क्षोभ पमाम्रवा एमां तो शुं छे ? पोतानुं कार्य करवामां उद्यमवंत थयेला ते द्विजने जोइ हर्ष पामेला पापबुद्धिवाला दुर्योधने तेने श्रेष्ठ

दिव्य वस्त्र तथा आभूषणोथी सत्कार करी बहु वखाण्यो. हवे ते दुष्ट बुद्धिवाला विप्र निष्कपट बुद्धिवाला तमारे विषे विद्यासाधन करवा बेठो छे. ए पोतानी अमोघ विद्याथी सर्व विश्वनो नाश करवा समर्थ छे. हे पांमवो ! हुं साधर्मिक प्रेमवशथी आ वात तमने जणावा माटे आव्यो छुं, माटे तमे तेनो कोइ पण रीते उपाय करो."

पछी युधिष्ठिरे, "अमारा हितने माटे तमे आ सारुं कह्युं. अमे जो ए न जाण्युं होत तो ते अमारो पराभव करत." एम कहीने दानमानादिकथी नारदने विदाय कस्या. पछी कृत्याना बलने निवारण करवा माटे तपनुं प्रमाण मानता एवा पांमवोए, कुंती तथा द्रौपदीनी साथे विचार करीने अत्यंत हर्ष धरता छता कार्योत्सर्ग कस्यो. फक्त सूर्य सामां नेत्र राखीने एक पगे उभा रहेला ते धैर्यवंत पांमवो, श्री परमेष्टि मंत्रनुं ध्यान करवा लाग्या. जो के पांमवो ताढ, तमको, वायु विगेरेना क्लेशने सहन करता हता तोपण श्री जिनेश्वर प्रभुना ध्यानरूप समाधिमां लीन थयेला आत्मावाला तेउए सुखेथी सात दिवस निर्गमन कस्या. पछी आठमे दिवसे पर्वतोना शिखरोने तोमी पामनारो भयंकर वायु जेम जेम वृद्धि पामवा लाग्यो तेम तेम पांमवोनो ध्यानरूप दिवो स्थिरपणुं पामवा लाग्यो. आ वखते रथना शब्दोथी, गजेंद्रोना गर्जारवथी, अने अश्वोना खोंखाराथी जाणे दश दिशाउना पतियोने बोलावतुं होयनी ? एम अकस्मात् कोइ म्होटुं सैन्य त्यां आवी पहोच्युं. पछी कोइ पुरुष कुंती उपर स्नेह धरतो छतो त्यां आवी कुंतीने तथा द्रौपदीने पोताना खभा उपर बेसारी तुरत मदोन्मत्त एवा हस्तियोना समूहथी भयंकर एवा पोताना सैन्यमां चाल्यो गयो. त्यां तेउए बन्ने सतीयोने प्रहार करवा मांम्यो एटले कुंतीये "महा भयंकर एवा शत्रुउना कालरूप हे अर्जुन ! रणसंग्राममां शूर एवा हे वत्स भीम ! तमे माताना भक्त छो, माटे आ पुरुषोथी अमारुं रक्षण करो ! रक्षण करो !!" आ प्रमाणे शत्रुउए चाबकना प्रहारथी तामन करेली द्रौपदी सहित कुंती करुण स्वरे पुत्रोनां नाम लेती छती बहु विलाप करवा लागी. पछी पोतानी मातानुं रुदन सांभलीने त्यजी दीधुं छे शुद्ध ध्यान जेमणे एवा पांमवो, दिव्यशस्त्र ग्रहण करीने प्रलय समुद्रनी पेठे सिंहनादथी गर्जना करता तुरत सैन्य तरफ दोमया. त्यां अर्जुने असंख्य बाणो-

थी शत्रुना सैन्यने भिन्नभिन्न करी नाख्युं. भीमसेने गदाना प्रहारथी पडता हस्तियोवाळुं अने नासी जता सुभटोवाळुं कर्युं. प्रसरी रहेला महा संग्रामना रसवाळा युधिष्ठिर पण हाथमां खड्ग धारण करीने ऊंची करेली फणावाळा क्रोधवंत काळ सर्पनी पेठे देखावा लाग्या. अस्खलित एवा नकुल अने सहदेव पण असंख्य बाणोनो वर्षाद वरसावता अने सैन्यमां क्रोधथी चारे तरफ फरता बहु दुःसह देखाता हता. अर्जुनना बाण अने भीमसेननी गदाना प्रहारथी बहु दीन बनेली सेना तुरत चारे तरफ नासी गइ. पछी कृणदृष्टभावनी पेठे सेना नासी गइ एवामां त्यां जाणे बीजी कृत्या होयनी ? एवी तृषा (तरस), ताळवाने तथा होठने सुकवी देती पांडवोने बहु पीडा करवा लागी. तरसथी आकुल व्याकुल थयेला पांडवो जळनी शोध माटे वनमां फरता हता तेवामां तेमणे कमळोथी सुशोभित मध्यभागवाळुं एक तळाव दीठुं. जेटलामां पांडवोए ते तळावमांथी पाणी पीधुं तेटलामां तेउ जाणे मूर्छा पाम्या होयनी ? एम संसारी जीवनी पेठे अकस्मात् पृथ्वी उपर आळोटवा लाग्या. कह्युं छे के, आ लोकमां बळवंत एवाय पण संसारी जीवोनुं पूर्वभव निर्मित कुकर्म भोगव्या विना क्यारे पण छुटतुं नथी. द्रौपदी पण भमती छती त्यां आवी पहोची अने ते पोताना पतियोने दुःखथी पृथ्वी उपर आळोटता जोइ बहु खेद पामीने चारे तरफ जोवा लागी. आ वखते वननी वेलथी बांध्या छे पोतानां माथानां केश जेणे एवी तथा सुंदर वल्कल वस्त्रने धारण करनारी कोइ वनचर स्त्री (भील स्त्री) त्यां उचिंती आवी. पछी जरा धिरज पामेली द्रौपदी जेटलामां ते भील स्त्री पासे आवीने कांइ कहेवा जाय छे तेटलामां जाणे धूमाडानो समूह होयनी ? एवी दावानळसमान पीळा केश समूहने धारण करनारी, हाथमां कपाळवाळी, भयंकर नेत्र अने मुखवाळी, म्होटा ललाटवाळी अने महा अट्टाट हास्यथी अति भयंकर एवी कृत्या नामनी राक्षसी, त्रण लोकने क्षोभ पमाडती आकाश मार्गेथी त्यां आवी पहोची. पोतानुं कार्य करवा माटे केड बांधीने तैयार थइ रहेली अने मुखकमळमां चारे तरफ चंचळ जीभने फेरवती ते कृत्या, पृथ्वी उपर बहु आळोटता एवा पांडवोने जोइने तेमनी चारे तरफ भमवा लागी. पछी तेने देखवा मात्रथी बहु भयने लीधे आकुल व्याकुल थयेली द्रौपदीने तुरत पोतानी

पासे राखी न्नीलस्त्रीये अकृत्य करवामां तैयार थयेली कृत्याने मधुर वचनथी आ प्रमाणे कह्युं. “ हे देवी ! तमारा आववाथी नत्पन्न थयेला नत्कट वायुवमे आकुल व्याकुल थयेला आ प्राणीयो, नयथी मूर्छा पाम्या छे. वली तेनए ह-वणां प्राणोने पण त्यजी दीधा छे. हे देवी ! त्रण लोकने विषे देव, दैत्य के मनुष्योमां एवो कोइ पुरुष नथी के, जे इंद्रना वज्रनी पेठे त्हारा महाकोपने सहन करी शके ? हे कृत्या देवी ! आ पोतानी मेलेज मृत्यु पामेलाने तुं फ-रीथी शा माटे मारे छे ? कारण एमां त्रण जगत्ने क्षोनकारी एवुं त्हारुं प-राक्रम जरा पण गणाय नहि. ” आ प्रमाणे न्नीलस्त्रीये बहु नक्तियुक्त वच-नथी कृत्याने कह्युं एटले ते निष्फल प्रयासवाली कृत्या पोताने बहु कृतकृत्य मानती छती हसीने क्यांइ चाली गइ.

पछी द्रौपदी, मृत्यु पामेलाना समान पोताना पतियोने जोइ मूर्छा पामी. थोमा वखत पछी सावधान थइ एटले ते पोताना पतिना वियोगथी बहु दुःख पामती छती विलाप करवा लागी एटले न्नीलस्त्रीये तेनां आंसु लुही नाखीने हर्ष पामता छता कह्युं के, “ हे शुद्धशीलवती बाला ! महा अरण्यमां रहेली तुं वृथा शा माटे रुवे छे ? हे सुंदरी ! तुं मूर्छा पामेला तेन पासे न जा. प-रंतु आ मणिकालका नदीना पवित्र जलथी अमृतनी पेठे पोताना पतियोने सिंचिने तेनने क्षणमात्रमां जीवाम. ” न्नीलस्त्रीनां कहेवा नपरथी द्रौपदीये तेम कर्युं एटले जाणे सुतेला होयनी ? एम सर्वे पांमवो नठ्या. पछी तेन द्रौपदीनां वचनथी पोतपोताना चित्तमां विचार करवा लाग्या के, “जे पोताना असंख्य सैन्यथी अहिं आव्यो हतो ते कोण राजा हतो ? द्रौपदीनुं कोणे हरण कर्युं हतुं? विषमय जलनुं सरोवर क्यां? अने आपणने मूर्छा शा माटे थइ? वली प्राणप्रिया द्रौपदीये पोते अहिं आवीने आ न्नीलस्त्रीनां वचनथी मणिका लका नदीना जलवमे सिंचन करीने आपणने जीवाम्या ए शुं !!! शुं आते आपणां चित्तमां खरेखरो विभ्रम थयो छे के, कोइ महा दैवनुं विचेष्टित छे? जाणे सारा स्वप्नामां दीठेला अर्थवालुं अद्भुत लक्ष्मीनुं कारणज होयनी ? एवुं आते शुं हशे ? ” आ प्रमाणे पांमवो विचार करता हता एवामां पोतानां तेजथी दिशानने प्रकाश करतो कोइ देवता तेमनी पासे आवीने स्पष्ट वा-णीथी आ प्रमाणे कहेवा लाग्यो.

"हे धर्मपुत्र! तुं आ कार्यने विषे चित्तमां केम आश्चर्य पामे छे? कारण के, कृत्याना असंख्य कार्यनो नाश करवामां प्रवीण एवी ए सर्व में माया करी हती. तमारा परमेष्ठी मंत्रना ध्यानथी प्रसन्न थयेला में इंद्रना सेनापतिये आ माया प्रगट करीने कृत्याने छेतरी छे." पछी ते महा ऋद्धिवालो देवता "तमे अवसरे म्हारुं स्मरण करजो." एम कहीने तथा बहु आभूषणो आपीने पांडवोए रजा आपवाथी देवलोक प्रत्ये गयो. पछी पूर्व पुण्यना योगथी जेमना सर्व विघ्न नाश पाम्या छे एवा ते पांडवो निरंतर विशेषे श्रीजिनेश्वर प्रभुनुं ध्यान करवामां आसक्त चित्तवाला तथा उत्तम समाधिवंत थया,

एकदा बपोरने वखते भोजन तैयार थयुं एवामां निरंतर पुण्यथी पवित्र शरीरवाला महात्मा साधु तपने अंते त्यां पारणा माटे आव्या. जाणे प्रत्यक्ष धर्मज होयनी? एवा क्षमारूप अमृतना स्थान एवा मुनिने जोइ हर्षना उत्कृष्टथी विशुद्ध भाववाला पांडवोए तेमने प्रदक्षिणा पूर्वक नमस्कार कर्यो. पछी पुलकावलीये करीने देदीप्यमान शरीरवाला अने पापना समूहने नाश करवामां उद्यमवंत थयेला पांडवोए भक्ति पूर्वक आनंदे करीने ए महामुनिने शुद्ध अन्न वहोराव्युं. आ वखते आकाशमां वाजींत्रो वागवा लाग्यां तेमज सुवर्णनी अने वस्त्रोनी वृष्टी थवा लागी. वली देवताउए पापनो नाश करवामां खड्गरूप जयजय वाणीनो अमोघ शब्द कर्यो. "हे वत्सो! उत्तम दाननां महात्म्यना वशथी हुं शासनदेवता तमने प्रसन्न थइ छुं. तमारा पूर्वभवनां पुण्य योगथी वनवासना दुःसह बार वर्ष पुरा थइ रह्या छे. हवे पछी तमे ऊट मत्स्य देशमां जइ त्यां पोतानां कल्याण माटे रूप फरवी नीश्चे तेरमुं वर्ष पूर्ण करो." शासनदेवी आ प्रमाणे कहीने अंतर्ध्यान थइ. पछी पोतानी गाढप्रतिज्ञाने जाणता एवा पांडवो भेगा थइ फरी विचार करवा लाग्या. तेमां युधिष्ठिरे पोताना न्हाना भाइयो आगल कह्युं के, "हुं कंक नामनो विप्र (गुरु) थइने वैराट राजाना घरने विषे रहीश." आ प्रमाणे तेमणे पोतानो निश्चय कर्यो. भीमे कह्युं. "हुं पण बल्लव नाम धारी राजानो रसोइयो थइने रहीश." अर्जुने कह्युं. "हुं ते राजाने घरे बृहन्नड नामे पावइउ थइने रहीश." नकुले कह्युं. "हुं पण ग्रंथिक नामनो अश्वाधिप थइश."

सहदेवे कह्युं, “ हुं तंत्रपाल नामे गोवाल थइश. ” डौपदीये कह्युं. “ हुं ते राजानी स्त्रीयोनी दासी थइश. ” पछी ते सर्वे पांमवोए विराट नगरीनी समीपे स्मशानमां खीजमाना वृक्ष उपर एक म्होटा शबथी ढांकीने पोतानां सर्व शस्त्रो मूक्यां. त्यार पछी बहु जाण एवा तेन पोत पोतना वेशने अने उपकरणने धारण करी विराट राजानी सन्नामां आव्या. त्यां विराट राजाए तेउने अनुक्रमे सत्कार करीने सौ सौना काममां राख्या, तेथी गुप्तवेश धारण करनारा ते पांमवो त्यां सुख करीने रहेवा लाग्या. पांमवो हमेशां सवारमां उठीने कोइ घरने विषे गुप्तरीते रहेला पोतानी माता कुंतीने प्रणाम करता अने तेमनी हीत शिक्षाने धारण करता. एक दिवस डुर्योधने त्यां मल्लोने मोकल्या हता. तेमने त्यां रहेला पाचकवृत्तिवाला न्नीमसेने मल्लयुद्धमां मारी नाख्या, तेथी न्नीमसेन वैराट राजा तरफथी बहु मान पाम्यो.

हवे वैराटराजानी स्त्री सुदेष्नाने एकसो छ न्नाइयो हता, तेमां महा न्नुजपराक्रमथी शोन्नतो कीचक सौथी मुख्य हतो. आ सौ वैराटराजाने त्यांज रहेता हता. कोइ दिवस पोतानी व्हेनने घरे गयेला कीचके त्यां डौपदीने दीठी, तेथी ते डौपदीनुं बहु लावण्य जोइ मोह पाम्यो. पछी सर्व देहने विषे रोमांचना मीषथी कामबाणने धारण करतो ते कीचक पोतानुं मस्तक धुणावतो छतो पोताना निवासघरप्रत्ये गयो. पछी कामदेवने उत्पन्न करवामां प्रवीण एवा वचनोवमे डौपदीने प्रार्थना करतो ते डुपदराजपुत्रीथी बहु धिक्कार पाम्यो. कह्युं छे के–कयो पुरुष अकार्य करवाथी लघुता नथी पामतो ? अर्थात् सर्व पामे छे. पछी कामदेवनी कलाकेलीरूप महा पिशाचना बलथी नाश पामी छे शरीर चेतना जेनी एवा कीचके पोतानां मननी वात सुदेष्ना (पोतानी व्हेन)ने कही. सुदेष्नाए पण कामज्वरथी पीमाता पोताना न्नाइने कह्युं के, “ हे बंधो ! हुं कोइ मीषथी ते म्हारी दासीने त्हारा घरे मोकलीश. त्यां तुं त्हारुं इष्टकार्य करजे. ” आ प्रमाणे सुदेष्नाए आश्वासन करेलो ते कामज्वरपीमित कीचक पोताने घरे गयो. पछी न्नूपप्रिया सुदेष्नाए कोइ मीषथी डौपदीने कीचकना घरे मोकली. पृथ्वी सामा नेत्र राखीने पोताना घरे आवती एवी डौपदीने जोइ गांमा थयेलानी पेठे कीचके तुरत उन्ना थइ लांबा हाथ करीने कह्युं के, “म्हारा शरीरनुं रक्षण करनारी हे लोलाक्षी ! हे दिव्यरुपा !

ऊट अहिं आव अहिं आव अने कामदेवना तापथी तप्त थयेला मने वेगथी आलिंगन दइने प्रसन्न कर." तेनां आवां कानने छुःख उपजावनारां वचन सांन्नलीने छ्रौपदीये कह्युं. "हे मूढ! तुं आवुं छुष्ट पुरुषनी पेठे नीच कुलने योग्य मने न कहे. कारण म्हारा गुप्त पतियो उन्मार्गे जनारा अने नीतिमार्ग त्यजी देनारा तने निश्चे यमलोक प्रत्ये पहोचामशे, माटे तुं मनने विषे तत्त्वने धारण कर." आ प्रमाणे कहेती एवी छुपदराजपुत्रीने केशे पकमी छुष्ट कीचके पाटुवमे प्रहार कस्यो. छ्रौपदी पण शीलना अतिशयपणाथी बुटीने तुरत राजा पासे आवी. त्यां ते राजसन्नामां युधिष्ठिरने जोता ठतां वीखराइ गयेला केशवाली छ्रौपदी आ प्रमाणे पोताना पतिना गुप्त नामनो उच्चार करवा पूर्वक गाढ स्वरथी रोवा लागी. "जेन रणसंग्राममां (युधि) स्थिर रहेनारा ठे, (युधिष्ठिर) जेन न्नयंकर ठे, (न्नीम) जेन निश्चे विजयना चिन्हवाला ठे, (विजय–अर्जुन) अने जेन बलवंत बे हाथने धारण करनारा ठे. (नकुल सहदेव) आवा न्नूपतियो म्हारा प्रिय प्राणनाथो ठतां मने कीचके पीमा पमामी." आ प्रमाणे कूट रोषाकुरथी रुदन करवा पूर्वक विलाप करती छ्रौपदीने कंक (युधिष्ठिर) गुरुए कह्युं. "हे चंचल नेत्रवाली! जो कोइ स्थानके त्हारा महाबलवाला गुप्त पतियो होय, वली तेनमां जो त्हारुं नियमथी रक्षण करनारो कोइ न्नयंकर (न्नीम) पति होय तो, हे कमलमुखी! अहिं तने तेनाथी न्नय नाश पामो. (अर्थात् न्नीमसेन पासे तुं ए छुष्ट कीचकने मरावी नाख.) अने तुं पोताने स्थानके जा." कंकगुरुनां आवां वचन सांन्नली छ्रौपदीये रात्रीने वखते न्नीम पासे जइने पोतानी सर्व वात कही. न्नीमसेने पण मोहमां बुद्धि जइने तेने मधुर वचनथी कह्युं के, "में धर्मपुत्रनी सत्य प्रतिज्ञा पालवा माटे छुर्योधननो अपराध सहन कस्यो ठे; परंतु हवणां आ कीचकना आवा अपराधने सहन नहि करुं. हे प्रिया! आज रात्रीने विषे तुं कपटसंगनां वचनथी तेने अहिं लाव्य के, जेथी करीने त्हारा ए शत्रुने हुं अहिं आ रंगमंमपमांज तुरत मारी नाखुं." न्नीमे आ प्रमाणे आश्वासन करेली छ्रौपदीये पोताने आश्रमे जता रस्तामां मलेला कीचकने कपटमोह वचनथी रात्रीए रंगमंमपमां आववानुं कह्युं. पठी छ्रौपदीनां वचनथी हर्ष पामेलो ते शठ कीचक रात्रीना पहेला पहोरने विषे "हे वल्लन्ना! तुं क्यां ठे? क्यां ठे?" एम उच्चार करतो ऊट रंगमंम-

पमां आव्यो. आ वखते द्रौपदीनो वेश धारीने त्यां संताइ रहेला भीमे तेने गाढ आलिंगनवडे मारी नाख्यो. पछी ते उद्धत आत्मावालो भीम, तुरत गुप्त रीते पोताना रसोडामां जतो रह्यो. चरपुरुषोथी मृत्यु पामेला कीचकने जाणी बहु शोकमां मग्न थयेला तेना भाइयो झट तेने पालखीमां बेसारी श्मसान तरफ चाल्या. आ वखते रस्तामां तेउए द्रौपदीने दीठी; तेथी "आ स्त्रीना निमित्ते आपणा बंधुनो घात थयो छे." एम कहेता एवा तेउए बहु कोपथी ते द्रौपदीने चिताग्निमां फेंकी देवा माटे केश पकडीने उत्साहथी साथे लीधी. जाणे साक्षात् पोतानी लक्ष्मीज होयनी? एम पोताना पतिने संभारती तथा रुदन करती एवी द्रौपदीने तेउए तुरत चितानी पासे आणी. आ वखते एक महावृक्षने मूलमांथी उपाडी त्यां उचिंता आवी पहोचेला बलवंत भीमसेने ते सर्वे पुरुषोने (कीचकना भाइउने) अग्निमां फेंकी दीधा. भीमे अग्निमां कीचकना भाइयोनी पूर्ण आहुति आपीने नाश कर्यो छे विघ्नो समूह जेनो एवी द्रौपदीने लक्ष्मीनी पेठे शांति पमाडी. पछी भीमसेनथी पोताना सर्व बंधुउनो नाश सांभली शोकथी आकुल व्याकुल थयेली सुदेष्नाने बहु स्नेहवशथी उल्लास पमाडतो वैराटराजा कहेवा लाग्यो. "हे सुंदर मुखवाली प्रिये! तुं मने बीजो कांइ दंड आप; परंतु म्हारी प्रतिज्ञानो भंग न कर. वली कोप त्यजी दइ पोताना मंदीरमां सौरंध्रीने बोलाव्य. "अवसरे पोतानां स्वरूपने अंगीकार करनारा सौरंध्रीना पतियो, पोतानी मेले एने लइ जशे." पछी स्वस्थ थयेली सुदेष्ना राणीये तेने पोताना घरमां राखी.

हवे दुर्योधननी आज्ञाथी बहु देशोने जोतां छतां पण पांडवोने नहि देखवाथी पाछा आवेला बहु अनुचरो दुर्योधनने विनंती पूर्वक कहेवा लाग्या के, "हे महाराजा! तमारा भयरूप समुद्रमां काचबानी पेठे ते सर्वे पांडवो बूडी गया छे. जो के तेउ विद्यमान छे छता जाणे न होयनी? एम पृथ्वी उपर अमोए बहु शोध कर्या छतां पण तेउने दीठा नहि" अनुचरोनां आवां वचन सांभली दुर्योधने भीष्म तथा विदुरनां मुख सामुं जोयुं. पछी तेनो भाव जाणीने ते बन्ने जणाए कह्युं. "हे पुत्र! श्री जिनेश्वरना विहारनी पेठे जे देशमां उत्पात, भय, रोग, अने दुष्टभाव नथी, ते देशमां पांडवो संभवे छे." पछी दूतोए कह्युं. "हे पृथ्वीनाथ! सर्व देशोमां एक मत्स्य देशज

धन, धान्य, लक्ष्मी अने सुखे करीने तेमज सर्व व्याधि (रोगो) ना रहित पणाए करीने स्वर्गनी पेठे शोन्ने वे." डुर्योधने कह्युं. "मने महाशल्यनी पेठे मनमां बहु पीमा करनारा अने बाह्य न्नय रहित ते गुप्त पांमवोने शी रीते जाणवा ?" आ वखते सुशर्मा न्नूपति प्रणाम करीने डुर्योधनने केहेवा लाग्यो. "हे नृपति ! खरेखर पांमुराजाना पुत्रो अति समृद्धिवंत एवा मत्स्य देशने विषे विचरे वे, माटे आपणे मत्स्य देशना न्नूपतिना विराटपुरनी गायोनुं हरण करीए, जेथी ते पांमवो अकाले पोतानी मेले प्रकट थशे. आपणे एक तरफथी वैरी एवो ते मत्स्यदेशनो राजा निग्रह करवा योग्य वे अने बीजी तरफथी गायोना हरणवमे करीने पांमुपुत्रोने प्रगट करवानुं कार्य वे." सुशर्मानां आवां युक्तिवालां वचन जाणीने डुर्योधने तेने आज्ञा आपी एटले सुशर्माए बहु सैन्य सहित त्यां जइने विराट नगरनी गायोनुं हरण कर्युं. आ अवसरे न्नयन्नीत आत्मावाला गोवाले तुरत सन्नामां आवीने विराट न्नूपतिने नमस्कार करता वतां कह्युं के, "हे महाराजा ! जेने युद्धमां कीचके जीत्यो हतो ते सुशर्माए हवणां गायोनुं हरण कर्युं वे." पठी धनुष्यना टंकारथी त्रणलोकने बेरुं करी देता ते विराट न्नूपतिये कोपथी सैन्य सहित तेनी पावल जइने तुरत ते शत्रुना सैन्यने घेरी लीधुं. परस्पर क्रोधवाला अने रणसंग्रामरूप महा समुइने मंथन करता एवा ते राजाउना शत्रुने नाश करवामां कुशल एवा बाण समुहोए करीने सर्व आकाश ढंकाइ गयुं. जेम क्षणमात्रमां सूर्य अंधकारनो नाश करे तेम विराट राजाए पण लाखो शत्रुउने मारी नाख्या. आ वखते परनां डुःख जोइ डुःखी थयेलो सूर्य अस्त पाम्यो.

पठी सवारे पोताना तेवा असंख्य सुन्नटोना नाशथी क्रोध पामेलो सुशर्मा न्नूपति ऊट पोतानुं धनुष्य चमावी विराट राजा तरफ दोड्यो. सुशर्माए फेंकेला अनेक बाणोथी संग्रामरूप समुइमां व्याकुल थयेलो विराटराजा मत्स्यनी पेठे देखावा लाग्यो. क्षणमात्रमां शस्त्र रहित अने रथविनाना थयेला मत्स्य देशाधिपने बांधी अने रथमां नाखी सुशर्मा पोताना सैन्य सहित डुर्योधन पासे चाल्यो. आ वातनी नगरमां जाण थइ एटले क्रोध पामेला युधिष्ठिर तथा न्नीमसेनादि अनेक शस्त्रधारी सुन्नटोए तुरत त्यां जइने सुशर्मानी सेनाने घेरी लीधी. पठी क्षणमात्रमां विराट न्नूपतिने वेमावता एवा

भीमसेने " हुं त्हारो दास छुं अने म्हारी सर्व संपत्ति तने आपीश. " एम उच्चार करता एवा सुशर्माने बलात्कारे बांध्यो. पछी बहु हर्ष पामेला विराटराजाए युधिष्ठिरनी साथे पांडवोनी कथा करता छता सैन्य सहित महोत्सवपूर्वक ते रात्री त्यांज निर्गमन करी.

हवे अहिं बीजे दिवस सवारे गोवालो सर्व गायोने उत्तर दिशामां चरावा माटे लइ गया. त्यां पण विराटनगरनी नजीकमां पडाव करीने रहेला, विचार विनाना दुर्योधने ते गायोनुं हरण कर्युं. गोवाले तुरत अंतःपुरमां आवीने उत्तराकुमारने गायोना हरणनी वात कही. पछी कुमार पोतानी माता अने स्त्रीनी आगल कहेवा लाग्यो के, " हे मात ! हवणां हुं शीरीते युद्ध करवा जाउं ? कारण मारे तेवो कोइ सारथी नथी के, जेथी हुं एकलो पण सिंहनी पेठे ते कौरवोना सैन्यने मारी नाखुं. " उत्तराकुमारनां आवां बलातिशयनां वचन सांभली तुरत द्रौपदीये इर्ष्या सहित कह्युं के, " हे कुमार ! त्हारी व्हेनने कलाउनो अभ्यास करावनारो जे बृहन्नट नामे पावइउ छे ते त्हारो सारथी थवाने योग्य छे. " पछी कुमारे पोतानी व्हेनने मोकली बृहन्नटने तेडाव्यो अने तेनी पासे बहु प्रयासथी पोतानुं सारथीपणुं कबुल कराव्युं. जो के पोते बहु जाण छतां प्रथम अवलुं कवच धारण करी स्त्रीयोना समूहने हसावतो ते अर्जुन पाछलथी तुरत सवली रीते पहेरी कुमार सहित रथमां बेठो. अर्जुन पूर्वे अभ्यास करेली कलाउवडे पोताना रथने कौरवोनां सैन्य पासे लइ गयो. त्यां भयंकर सैन्यने जोइ उत्तराकुमार बहु भय पाम्यो; तेथी ते पोताना सारथी बृहन्नटने केहवा लाग्यो के, " हे महानुभाव ! तुं म्हारा रथने ऊट पाछो वाल ! पाछो वाल ! ! कारण के, हुं आ महा समुद्रना सरखा उछलता भयंकर सैन्यने जोवा समर्थ नथी. " अर्जुने हसीने कह्युं. " अरे कुमारवीर ! तुं म्होटा राजवंशमां उत्पन्न थयो छुं. वली पोतानी माता अने स्त्रीनी पासे एवा शूरवीरपणानां वचन केहतो हतो अने हवणां आवुं दीनवचन केम बोले छे ? साम्राज्यपदना लाभने अर्थे महा घोर युद्ध करनारा सुभटोनुं जीवित आलोकमां यशने अर्थे अने मृत्यु परलोकमां देवांगनाउना सत्कारने अर्थे थाय छे. " पछी " वीरपुरुषोने मृत्युनुं फल कीर्ति छे, बीजाने नहि. " एम कहीने नासी जवानी इच्छावालो उत्तराकुमार रथ उपर-

थी नीचे पम्तुं मूकी नासवा लाग्यो. पाछल अर्जुन पण तुरत रथथी नीचे उतरी केहेवा लाग्यो. " हे उत्तराकुमार ! तुं धीरज राखी म्हारो सारथी था के, जेथी करी हुं आ सर्व शत्रुउने जीती त्हारी विस्तारवाली कीर्तिनुं स्थापन करुं. हे राजपुत्र ! तुं नय त्यजी दइ श्मसानमां खीजम्ाना वृक्ष उपर शबथी ढंकायेलां अमारां शस्त्रोमांथी म्हारां धनुष्य बाणने लावी आप के, हुं जेणे करीने आ त्हारा सर्व शत्रुउने मारी नाखुं." पछी उत्तराकुमारे धनुष्यबाण लावी आपे छते अर्जुने पोतानुं अने पोताना नाइयोनुं खरुं स्वरूप कही दीधुं. त्यार पछी ते, धनुष्यबाण हाथमां लइ रथ उपर बेसी शत्रुउना सन्मुख चाल्यो.

हवे अहिं कौरवनी सेनामां रहेला नीष्मे, दिव्य शंखना नयंकर शब्दथी अर्जुनने जोइ तुरत डुर्योधनने कह्युं के, " निश्चे आ स्त्री वेशधारी अर्जुन देखाय छे. हे धृतराष्ट्रपुत्र ! आ पांम्वो अवसरे आवी पहोच्या छे, माटे तेउ, हवणां तने बंधु सहित मारी नाखशे, माटे तुं आ अर्जुननी साथे झट संधी कर. नहिंतो आ म्होटा सैन्यना चोथा नागथी रक्षण करायेलो तुं गायोना धणने साथे लइ नासी जा अने अमे आ सैन्यना मध्य नागने विषे रहीशुं. कह्युं छे के—सर्व प्रकारथी राजानुं रक्षण करवुं जोइए." पितामह (दादा)नां आवां वचन सांनली बीकण डुर्योधन, गायोना धणने साथे लइ पोतानां सैन्यना चोथा नाग सहित चाली निकल्यो. डुर्योधनने नासी जतो जोइ अर्जुने उत्तराकुमारने कह्युं. " अरे कुमारराज ! आ डुर्योधन म्हारा बहु नयथी नाशी जाय छे, माटे तुं आ तरफ अश्वोने झट वाल " अर्जुननां आवां वचनथी कुमारे सूर्यना रथनी पेठे शीघ्र चलावेलो रथ तुरत शत्रुनां सैन्य पासे आवी पहोच्यो. त्यां अर्जुनना रथने देखवा मात्रथी शत्रुनुं सैन्य बहु दीन बनी गयुं. अर्जुने पोतानो शंख वगाड्यो, तेना शब्दथी मोह पामेली सर्व गायो उंचा पूंछम्ा करीने तुरत पोतानां नगर प्रत्ये नासी गइ. पछी अर्जुने डुर्योधनने कह्युं. " अरे मूर्ख ! तें प्रथम कुलने कलंक दीधुं छे अने हवणां पण गायोनुं हरण करी नयथी नासी जवा मांम्युं. शत्रु मल्या छतां तुं क्यां नासी छवानो छे ? हवे तो धनुष्य धारण करीने तैयार था. " एम कहीने अर्जुने पोतानुं धनुष्य हाथमां लीधुं. इंद्रपुत्र (अर्जुन)नां उछलतां बाणोना समूहरूप मेघथी आकाश चारे तरफ ढंकाइ गयुं अने सूर्य पण पोतानो परानव

थवाना जयथी अस्त थइ गयो. आ वखते चारे तरफ अंधकार फेलाइ गयुं. बेवट दयाथी भिंजाइ गयेला चित्तवाला अर्जुने, कोटि वीरपुरुषोनो नाश जोइ सर्व मनुष्योने निद्रा आपनारुं संमोहन नामे अस्त्र फेंक्युं. फक्त भीष्म अने द्रोण गुरु विना बीजा सर्वे गाढ निद्रा पामे बते अर्जुने उत्तराकुमारने कह्युं. " हे राजपुत्र ! दुर्योधन राजाना लीलां, कर्णना पीलां अने बीजानां विचित्र वस्त्रो लइ तुं झट अहिं आव. " उत्तराकुमार, ते प्रमाणे सर्वेनां वस्त्र लइ आव्यो एटले अर्जुन, ते सर्व वस्त्रोने लइ तथा पितामह (भीष्म)ने प्रणाम पूर्वक शत्रुउना दलने मथन करी पाबो नगर प्रत्ये आव्यो.

हवे अहिं अर्जुनना पहेलो विजयवंत विराटराजा पोताना नगर प्रत्ये आव्यो हतो ! तेथी ते पोताना माणसो पासेथी पोताना पुत्रनुं शत्रुउनी पाबल जवुं सांभली कांइक मनमां खेद पामवा लाग्यो. पबी जेटलामां ते भूपति पोतानां सैन्य सहित पुत्रनी पाबल जवानी तैयारी करे बे, तेटलामा कुमारना अनुचरोए तुरत आवीने हर्षथी राजाने कुमारना विजयनी वात निवेदन करी. आवी वधामणीथी बहु संतोष पामेला राजाए कंकगुरु सहित हर्षथी नगरमां उत्सव कराव्यो अने पोते पण सभामां कंकगुरु साथे पासावमे क्रीमा करवा लाग्यो. पबी पुत्रना विजयनी प्रशंसा करता एवा विराट भूपतिने कंकगुरुए (युधिष्ठिरे) कह्युं के, " हे नरेंद्र ! जेनो सारथी बृहन्नट (अर्जुन) थयो तेने शुं विजय सुलभ नथी ? अर्थात् तेवा पुरुषने विजय मेलववो बहु सुखकारक बे. " विराटराजा अने कंकगुरु आ प्रमाणे वातो करता हता एवामां पोताना रथथी नीचे उतरी अर्जुन पोतानां स्थाने गये बते उत्तराकुमारे सभामां बेठेला पोताना पिताने नमस्कार कर्यो. पबी तेणे पिताने कह्युं के, " में जेनाथी युद्धमां विजय मेलव्यो बे ते महा पराक्रमवंत पुरुष, पोताना बंधुउ सहित पोतानी मेले आजथी त्रीजे दिवस प्रगट थशे. "

पबी त्रीजे दिवस अद्भुत वेशधारी धर्मपुत्रे पोताना कल्याण माटे स्नान करी, पूजन करी अने तुरत अक्षुद्र एवा देवताउने बलिदान आप्युं. त्यारपबी ते जेटलामां पोतानां आसन उपर बेठा तेटलामां भीमसेनादि सर्व भाइयोए पोतपोतानुं खरु स्वरूप प्रगट करी तेमने भक्तिथी प्रणाम कर्या. विराटरा-

जाए पण नमस्कार करवापूर्वक कह्युं के, "हे महाराज! आ म्हारुं राज्य, विभव अने बीजुं जे कांइ छे ते सर्व आपनुंज छे." आवी रीते विराटराजाए विनंती करेला युधिष्ठिर जोके त्यांथी जवा माटे तैयार थया हता तो पण विराट राजाना आग्रहथी त्यांज रह्या. विराट राजाए हाथ जोम्रीने अर्जुनना पुत्र अभिमन्युने पोताना पुत्री परणाववा माटे हर्षथी युधिष्ठिरनी विनंती करी. आ वातनी युधिष्ठिरे कृष्णने खबर आपी, तेथी श्री कृष्ण अभिमन्युसहित पोतानी व्हेन सुभद्राने साथे लइ बहु सेनाथी परवस्था छता विराटपुरे आव्या. त्यां तेमणे प्रीतिथी उत्तम लग्नवाला शुभ दिवसने विषे विराटराजाने अने पांम्रवोने हर्षकारी एवो अभिमन्युनो अने उत्तरानो लग्नमहोत्सव कर्यो. पछी प्रसन्न मनवाला श्री कृष्ण विराटराजानी रजा लइ कुंतीसहित पांम्रवोने बहु आग्रहथी उत्सवपूर्वक पोतानी नगरी (द्वारका) प्रत्ये तेम्री गया. त्यां यादवोमां श्रेष्ठ एवा श्री कृष्ण अने बलभद्रना महा आग्रहथी चार भाइयो चार कन्याउने परण्या अने सुखेथी रहेवा लाग्या.

हे भव्यजनो! आ प्रमाणे पगले पगले लोको उपर बहु उपकार करवाथी महा यशवाला, महा राक्षसोना भयने दूर करवाथी भीम अने अर्जुनवमे उत्सलता पराक्रमवाला, द्यूतने लीधे सर्व राज्यनां विभवथी भ्रष्ट थयेला, कृत्यादि राक्षणीयोना विघ्नरहित एवा सर्वे पांम्रवो पोतानी प्रतिज्ञा पूर्ण करी मत्स्य देशना अधिपति विराटराजानी नगरीथकी द्वारकाप्रत्ये गया.

इति पांम्रवचरित्रे भीमबकहिम्रंबादिजय हिम्रंबापाणिग्रहणार्जुनविद्यासाधन खेचरेंद्रादिजय कृत्यादिविघ्ननिवर्त्तन गोवालनादिवर्णननाम पंचमोऽधिकारः ॥

गर्भमां रहेला जे प्रभुना अतिशये करीने जितशत्रुराजा पण विजयाराणीनो पराभव करवा समर्थ थया नहि एवा ते श्री अजितनाथ जिनेश्वर निरंतर भक्तिवंत पुरुषोना अकल्याणोने दूर करो.

पछी दश दाशार्हो, बीजा राजाउ अने बलभद्र कृष्णादि म्होटा यादवो भेगामली पांम्रवोनी साथे विचार करता तेउने आ प्रमाणे कहेवा लाग्या के, "अहो! सत्य प्रतिज्ञावाला अने सुकुलमां उत्पन्न थयेला तमोए बहु दुःख

वेठयुं वे; परंतु हवणां अवसर मलेलो होवाथी तमारे ऊट शत्रुरूप वृक्षोनो नाश करवो." तेननां आवां वचन सांजली धर्मपुत्र युधिष्ठिरे कह्युं. "निश्चे हुं राज्य माटे पोताना बंधुननो घात करीश नहि." युधिष्ठिरनां आवां वचन सांजली जीमसेने कह्युं. "अरे! तमे शत्रुननी उन्नतिने सहन करशो; परंतु हुं तेमनाथी थता पराजवने सहन करनारो नथी." युधिष्ठिरे कह्युं. "जो के आ जीमसेनादि सर्वे युद्ध करवा उत्साहवंत बे, तेम ए शत्रुन पण वध करवा योग्य बे; तो पण प्रथम यशने माटे आपणे तेने सामादि नीतिनां वचनथी समजाववा जोइए. पछी दशार्ह, बलजद्र, कृष्ण अने बीजा यादवपतियोनी आज्ञाथी जय नामनो एक वाचाल दूत तुरत रथमां बेसी हस्तिनापुर प्रत्ये गयो. त्यां ते पोताना स्वामीना बलथी निर्जय बतो जीष्म अने धृतराष्ट्रादि अनेक पुरुषोथी जरपुर एवी सज्जामां आवी डुर्योधनने आ प्रमाणे कहेवा लाग्यो. "हुं द्वारका नगरीना महाराजा श्री कृष्णनो राजमान्य जय नामनो दूत बुं. हे जूमिपति! कर्ण सहित तुं एमनो संदेशो म्हारां मुखथी सांजल. हे नरेंद्र! सत्य प्रतिज्ञावाला अने न्यायवंत पांमुपुत्रो के, जेन त्हारा बंधुन थाय बे, तेन हवणां पोतानी प्रतिज्ञा पूर्ण करीने प्रगट थया बे. जेवी रीते तेन पोताना कालने निर्गमन करता बता निश्चे सत्यजावने पाम्या बे, तेवी रीते तुं पांमवोने पोतानां राज्यनो जाग आपतो बतो वेगथी तेमनो आश्रय कर. वली हे राजन्! पूर्वना राजाननी पेठे हवणां अहिं तमारो पण परस्पर एक बीजाना पक्षना घातना कारणरूप महा युद्धनो आरंज न थान. हे जनाधिप! फक्त वारुणावर्त्तपुर, तिलपुर, इंद्रप्रस्थ, कासीपुर अने हस्तिनापुर आ पांच गामो पांमवोने आपीने बाकीनुं सघलुं राज्य तुं जोगव." दूतनां आवां वचन सांजली क्रोधथी पोताना होठने मसता तथा हाथवमे नेत्रनो स्पर्श करता एवा डुर्योधने गर्वथी कह्युं के, "हे दूत! महाद्यूतना पणथी हारी गयेला पोतानां राज्यने ए पांमवो शी रीते मेलवी सके? ए म्हारा बांधवो नथी; परंतु प्रथमथीज महा अपराधने लीधे जीमसेनादि सर्वे म्हारा खरेखरा शत्रुन बे. ए पांमवो म्हारी रक्षण करेली जेटली पृथ्वीमां बलात्कारे प्रवेश करे तेटलो तेमनो पृथ्वीनो जाग बे. बाकी हुं म्हारा हाथथी तेमने जरापण आपीश तो नहिज. हे जय! गमे तो पांमुपुत्रो म्हारे विषे द्वेषजाव धरता

होय अथवा मीत्र न्नाव राखतो होय; परंतु द्यूतना पणथी प्राप्त थयेली पृथ्वी-मांथी हुं तेमने जरा पण देवानो नथी." जयदूते कह्युं. "हे नृप ! जो के तें न्यायमार्गवालुं युक्ति वचन कह्युं ने; परंतु तुं म्हारुं वचन मानीने पोताना उत्तम गोत्रने पीमा न उपजाव. हे ऽुर्योधन नरेश्वर ! जे पवनपुत्र न्नीमसेने फक्त परोपकारने माटेज सर्वलोकने ऽुःखकारी एवा हिमंब, बक अने कीचकने तत्काल मारी नाख्या ते न्नीमसेनथी जेम गाढ वनमां रहेला सिंहथी हाथी पोतानुं रक्षण न करी शके तेम तुं पोतानुं रक्षण शीरीते करी शकीस. हे राजन् ! पूर्वे अनेक विद्याधरोने जीतिने अर्जुने निरंतर अपकारी एवा तने रक्षण करेलो ने. तो ते अर्जुन त्हारे शुं पूजवा योग्य नथी ? वली धर्मने विषे एक सारवाला युधिष्ठिर पण निश्चे अपकारी एवा त्हारा उपर प्रेमन्नावज राखे ने, एटलुंज नहि; परंतु हमेशां त्हारुं हित इने ने. ठीकज ने उत्तमचंदन वृक्ष पोतानो नेद करनारा कुवामाने पण सुगंधीमान करे ने. जेम अग्नि वायुवमे करीने काष्टना समूहने न्नस्मरूप करे ने तेम ते सिंहरूप बलवंत पांचे पांमवो, श्री कृष्णनी सहाय्यथी हस्तिरूप तमने नाश करशे."

आ वखते ऽोण न्नीष्म अने विऽुरादि अनेक न्नूपतियोए पण जयनी पेठे ऽुर्योधनने बहु सारां वचन कह्यां; परंतु तेथी तो तेना मनमां बहु कोपरूप अग्नि प्रगट थयो. पनी ऽुर्योधने बहु तिरस्कार करेलो होवाथी क्रोधातुर मनवालो श्री कृष्णदूत जय "निश्चे आजे धृतराष्ट्रना पुत्रो हणाया ! हणाया !!" एम उचार करतो त्यांथी ऊट चाली निकली द्वारकामां आव्यो. त्यां तेणे सर्वे वात श्री कृष्ण बलन्नऽादिकने कही. आ वात पोतानी मनगमती थयेली जाणी न्नीमसेनादि सुन्नटो बहु हर्ष पामता नता नृत्य करवा लाग्या.

पनी महा संग्रामने विषे प्रसरता गाढ हर्षवाला पांमवोए श्री कृष्णादि यादवेंऽोनी साथे विचार करीने समुऽविजयराजानी आज्ञाथी शीघ्र महा रणसंग्रामनी म्होटी तैयारी करीने पोतानी सेना सज्ज करी. तेमां पांमवनी सेनामध्ये यादवो, सत्यकी, विराटराजा, ऽुपद न्नूपति, धृष्टद्युम्न अने सुन्नऽाना पांच पुत्रो विगेरे हता. तेमज अर्जुननो पुत्र अन्निमन्यु, न्नीमनो पुत्र घटोत्कच अने बीजा शुद्ध वंशमां उत्पन्न थयेला बहु राजपुत्रो आव्या हता. वली अर्जुनना स्नेहथी चंऽ, इंऽ, मणिचूम, चंऽपीम अने चित्रांगद विगेरे बहु विद्याधरो पोतपोतानी सेनासहित त्यां आव्या.

हवे अहिं हस्तिनापुरमां कर्णादि नरेंद्रोए प्रेरेला दुर्योधन राजाए रणसंग्रामनी इच्छाथी क्षणमात्रमां दूत मोकलीने पोतानी पक्षना बहु राजाउने बोलाव्या. दुर्योधनना सैन्यने विषे पण भूरिश्रवा, भगदत्त, शल्य, अंगदेशनो राजा शकुनि, कृपाचार्य, भीष्मगुरु, तटिनानो पुत्र बाल्हीक, सोमदत्त, वृषासन, कृतवर्मा, धर्म, सौबल, हलपाणी अने भलूकादि अनेक राजाउ आवी मल्या. महात्मा अने ज्ञानी एवा विदुर पोताना गोत्रनुं कदर्थन जाणीने वैराग्यना रंगथी श्री जिनेश्वर प्रभुए निरुपण करेला चारित्रने अंगीकार करी तुरत वनमां चाल्या गया. कुंतीये कर्णने पोताना पुत्रपणानी खबर आपीने पांमवो तरफ आववानुं कह्युं एटले तेणे एम कह्युं के, " हे मात! में आ म्हारा प्राणो प्रथमथीज दुर्योधनने आपेला छे, तो हवे हुं तेने त्यजी दइ बीजा राजानो आश्रय करुं तो तेथी आजे आपने लज्जा पामवा जेवुं थाय अने लोकमां म्हारो अपवाद थाय. " कर्णनां आवां वचन सांभली बहु पीमा पामेली कुंती, कर्णने विषे बहु प्रेम धरती छती तेनो जय इच्छवा लागी. कह्युं छे के– निरंतर मनुष्योने पोतानी माता खरेखरी हितकारी होय छे.

पछी प्रचंम भुज पराक्रमथी उद्धत एवो दुर्योधन क्रोधथी म्होटी सेना सहित शीघ्र प्रयाणथी महा विस्तारवाला प्रसिद्ध कुरुक्षेत्रमां गयो. हाथीयोरूप पर्वत, पायदलरूप जल अने अन्यमनुष्योरूप तरंगोथी सुशोभित एवो ते सेनारूप समुद्र अगीयार अक्षौहिणि सेनारूप नदीयोए करीने बहु शोभतो हतो. पछी दुर्योधने हर्षथी प्रसिद्ध भुजबलवाला श्री भीष्मपिताने प्रणाम करी तेमने अति आदरपूर्वक कोटिवीरने मथन करनारुं पोतानुं सेनापति पद आप्युं. गर्ववंत पांमवो पण पोताना सैन्यभारथी पृथ्वीने कंपावता छता शीघ्र प्रयाणथी सात अक्षौहिणि सेनासहित कुरुक्षेत्रमां गया. त्यां पांमवोए सर्वे वीर पुरुषोने वहाला एवा द्रुपदराजाना पुत्र बलिष्ट एवा धृष्टद्युम्नने सेनापतिपणुं अने सर्व कार्यमां मुख्यपणुं आप्युं. पछी त्रण उपायथी निर्णय कर्यो छे युद्धना दिवसनो जेमणे एवा पांमवनी सेनाना वीर पुरुषोए हर्षपूर्वक पोताना क्षेत्रदेवतानुं अने पोतानां आयुधोनुं पूजन कर्युं. जाणे पोताना पतियोने महा विजय अने यश आपवाने उद्यमवंत थयेलांज होयनी ? एम सुगंधवाला प्रफुल्लित पुष्पोथी पूजन करेलां आयुधो शोभतां हतां. त्यां वागतां एवा संग्राम-

नां वाजींत्रो जाणे विजयलक्ष्मीना झांझरनो शब्द होयनी ? एम तीक्ष्ण शस्त्रोना समूहे करीने शोन्नतां हतां. महा डुर्जय शत्रुउनी जालरूप अंधकारना समूहने नाश करतो एवो ते सुन्नटोनो समूह जाणे तीक्ष्ण कांतिवालो अने बहु लाल तेजवालो साक्षात् वीररस होयनी ? एम शोन्नतो हतो. वृक्षसमूहना अग्रन्नागने विषे अने आकाशने विषे थता पम्छंदाउ निश्चे रणान्निलाषी सुन्नटोना सिंहनादने वृद्धि पमामता हता. ते वखते बन्ने सैन्यना चारे तरफथी युद्धनां महा वाजींत्रो वागवा लाग्यां. तेमज जाणे उदय पामता एवा सूर्यना रथना अश्वोनी स्पर्द्धाथीज होयनी ? एम श्रेष्ठ अश्वो खोंखारा करवा लाग्या. रणसंग्रामरूप वर्षाऋतुमां शत्रुउना समूहरूप घासने न्नक्षण करनारा अने झरता मदरूप जलना समूहथी कादवरूप बनेली पृथ्वीमां चपल गतिवाला महा हस्तिउ गर्जना करता बता शोन्नता हता. न्नेरी नोबत अने ढक्कादि वाजींत्रोना शब्दथी, तेमज महा पायदलना, रथना अने हस्तिउना नादथी सर्व जगत् शब्दमय थइ गयुं. सुवर्ण अने रत्नोनी अद्भुत कांतिथी शोन्नता, हाथमां देदीप्यमान खड्गने धारण करी रहेला, ढालोने उगालता अने युद्धमांज प्रवीण एवा योधाउ सर्व स्थानके फरता हता.

हवे प्रथम महा डुर्द्धर एवा धनुष्यधारीयो पोतपोतानां धनुष्यनो वारंवार शब्द करता बता आगल चाल्या. तेमनी पाबल युद्धमां उत्साहवंत एवा महा बलवाला तोमरधारी सुन्नटोए चालवा मांम्युं. त्यारपबी अश्वोने पोताना कबजामां राखनारा प्रौढ स्फुरतीवाला स्वारो चालवा लाग्या. तेमनी पाबल उंची सुंढवाला, म्होटी सांकलोवाला अने महा न्नय उपजावनारा हस्तिउनो समूह चाल्यो. त्यारबाद बत्रीश प्रकारनां शस्त्रसमूहथी न्नरपुर, पैमांथी पृथ्वीना तलने पीली नाखनारा अने युद्धमां उत्साहवंत एवा अनेक सुन्नटोथी मनोहर एवा रथोनो समूह चाल्यो. आ वखते महा सैन्यना पाद प्रहारथी होयनी ? एम तुरत महा कंपथी समुड्ना जलो उछलवा लाग्या. पबी बीजे दिवस सज्ज थइ रहेली ते बन्ने सेनाना उछलता वीररसवाला उन्नट शस्त्रधारी सुन्नटोए युद्धनां वाजींत्रोना शब्दोथी रणसंग्राम आरंन्यो. तेमां खड्गधारीयोनी साथे खड्गधारीयोनो, रथीयोनी साथे रथीयोनो अने पायदलनी साथे महा सुन्नटोनो एम परस्पर संग्रामोत्सव थवा लाग्यो. जेम ज्वाज-

ध्यमान एवा सूर्यनां किरणो जोइ सकातां नथी तेम महा शत्रुओनी सामा उगामेला आयुधवाला, क्रोधना भारथी दुर्धर एवा बखतरधारी ते महा सुभटो जगत्ने नहि जोवायोग्य रूपवाला थइ पड्या. बखतरथी ढंकायेला शरीरवाला अश्वो, भयथी चालवडे चंचलता होवाथी जाणे तेओ पांखोवाला होयनी? एम देखाता हता. आ त्यजी दीधेली मर्यादावाला महा संग्रामरूप समुद्रमां मगररूप सर्व प्रकारनां शस्त्रो, पर्वतरूप महा हस्तिओ, अश्वरूप महा तरंगो, उत्तम पायदलरूप जल, रथीरूप मगरो अने वहाणरूप आकाशमां रहेला वैमानो देखाता हता. वली वीरपुरुषोनां हुंकाररूप शब्दथी जाणे पोते सेनारूप समुद्र गर्जना करतो होयनी? एम शोभतो हतो.

पछी दीपकनी पेठे क्षणमात्रमां वैरीरूप अंधकारनो नाश करतो, वृद्धि पामेला क्रोधवालो अने रथ उपर बेठेलो अभिमन्यु (अर्जुनपुत्र) शत्रुना सैन्यमां पेठो. कोपथी अमोघ बाणना समूहवडे पोतानां सैन्यनो नाश करता एवा अर्जुनपुत्रने जोइ रथमां बेठेला अने बाण फेंकता एवा बृहद्बल अने कृपाचार्य तेना सामां दोड्या. अभिमन्यु बृहद्बलना सामो थयो ते जोइ बाणोवडे शत्रुना सैन्यने त्रास पमाडतो एवो कैकेय अभिमन्युनी सहाय्य करवा माटे कृपाचार्यनी सामो थयो. सर्व विश्वना मनुष्योने अति भयकारी एवा ते चारे वीरपुरुषोना परस्पर थता युद्धने सुभटोना समूहवाली उत्तम सेना जोवा लागी. रथो भागी जवाथी फक्त उभारहीने परस्पर युद्ध करता एवा कैकयराजा अने कृपाचार्य बन्नेजणा सर्व सेनाना सुभटोने भयंकर देखावा लाग्या.

सार तेजवाला बृहद्बले वायुनी पेठे अनेक बाणो फेंकीने बगांसु खावाथी परवश थयेला पार्थपुत्र अभिमन्युना रथनी ध्वजाने छेदी नाखी अने सारथीने मारी नाख्यो. पछी महा कठोर शब्दथी गर्जना करतो अने पैडाथी पृथ्वीना तलने विदारी नाखतो एवो भीष्म पितानो रथ क्षणमात्रमां पांडवोनी सेना प्रत्ये आव्यो. भीष्मना कोपथी बाल्हीके, दिव्यबाणोथी आकाशमां मंडप बनावी दीधो; तेथी शत्रुनी सेना चलाचल थवा लागी. आ वखते वेगथी क्रोध पामेला अभिमन्युए असंख्य बाणोथी आकाशने ढांकी देता छता दुर्मुख राजाना सारथीने अने भीष्मपिताना रथनी ध्वजाने तुरत छेदी नाख्या. भीष्म कोप पाम्ये छते अर्जुनपुत्रनुं रक्षण करवा माटे उगामेला आयुधवाला द-

श रथी राजाउ तुरत अन्निमन्युने घेरी वळ्या. पठी जेटलामां पोताना रथना चीत्कार शब्दथी वीर पुरुषोने क्षोन्न पमाम्तो न्नीमसेन रणांगणमां आव्यो तेटलामां न्नीष्मे, तेना रथनी ध्वजा बाणवमे तोमी पामवाथी ते बहु कोप पाम्यो. न्नीमे पण गदाना प्रहारथी न्नीष्मना रथने पापमनी पेठे चूर्णरूप करी नाख्यो एटले न्नीष्मे पण तेने फरीथी क्षणमात्रमां बाणोवमे उत्साहरहित करी मूक्यो. महा पराक्रमवंत न्नीमसेनने आ प्रमाणे निस्तेज बनेलो जोइ क्रोधथी कालनी पेठे कौरव सैन्यनो नाश करतो ठतो अर्जुन तुरत न्नीष्म सामो थयो. प्रपितामह न्नीष्म पण न्नीमने त्यजी दइ अर्जुन सामा बहु बाणो फेंकवा लाग्या; परंतु अर्जुने ते सर्व बाणोने आकाशमांज ठेदी नाखीने सामा तेमना रथनी ध्वजाने अने सारथीने ठेदी नाख्या. न्नीष्मपिता अने अर्जुननुं महा दारुण युद्ध असंख्य देवताउने पण आश्चर्यकारी थयुं; परंतु आ वखते हृदयमां उत्पन्न थयेला संशयवाली विजय लक्ष्मीये ए बन्नेमांथी एकेनो पाणीग्रहण कस्यो नहि. अर्थात् एकेनो विजय थयो नहि. जेना वारंवार बबे रथ न्नागी नाख्या हता एवा शल्य राजाए तुरत उत्तराकुमार तरफ सुवर्ण शक्ति फेंकी, जेथी ते शीघ्र नाश पाम्यो. पठी सर्व सेना सहित कोप पामेला सेनापति धृष्टद्युम्ने, मंथानक (रवैयारूप) मेरुपर्वतनी पेठे कौरवनी महासेनारूप समुद्रने मंथन करी नाख्यो. पठी आठमा दिवसनी सांजे पांमवो पोताना पमावनी अंदर आवीने परस्पर विचार करवा लाग्या के, “ शत्रुनी सेनामां अति न्नयंकर एवा सेनापति न्नीष्मनो शी रीते वध थशे ? ” कृष्णे कह्युं. “ पृथ्वीमां प्रसिद्ध एवी न्नीष्मनी एवी प्रतिज्ञा ठे के, हुं नपुंसकने विषे, शस्त्र रहितने विषे, अवला मुखवालाने विषे अने स्त्रीने विषे क्यारे पण प्रहार करीश नहि. हे अर्जुन! माटे तुं आ डुपदराजपुत्रने नपुंसकनो वेश पहेरावी पोताना रथमां बेसाम्य अने पठी प्रतिज्ञाने लीधे शस्त्र रहित थयेला न्नीष्म न्नूपतिने निःशंकपणे शस्त्र प्रहार कर. ” आ प्रमाणे सर्व मसलत करीने पठी सवारे तैयार थइ ठे सेना अने सुन्नट जेना एवा ते महा पराक्रमवाला पांमवो अने कौरवो रणांगणमां आव्या. सेनाना अग्रन्नागमां उन्नेला न्नीष्मपिताए मेघनी पेठे बाणवृष्टिथी मृगनी पेठे पांमुपुत्रोने उपद्रव पमाम्या. अर्जुने पण तुरत पोताना रथमां नपुंसकरूप डुपदराजपुत्रने वेसारीने अने तेने देखवाथी पोतानी प्रति-

ज्ञाने लीधे युद्धमां आदर रहित थयेला जीष्मपिताने तीक्ष्ण बाणोना समूह-थी जर्जरीत शरीरवाला बनावी दीधा. " निश्चे सर्व शरीरनां मर्मने छेदन करनारां आ बाणो अर्जुननां छे. " एम पोताना सारथी प्रत्ये कहेता एवा जीष्मपिता रथना मध्यजागने विषे आलोटवा लाग्या. आ वखते बहु गाढ शोकमां मग्न थयेला पांमवो अने कौरवो जनालामां सरोवरनी पेठे तेमनां वचन रूप जलनुं पान करवानी इच्छाथी तुरत तेमने विंटलाइ वव्या. पछी जीष्मे कह्युं के, " हे पार्थ ! मने तृषारूप राक्षसी बहु पीमा करे छे, माटे जल लावी आप. " प्रपितामहनां आवां वचन सांजलीने आश्चर्यकारी अर्जुने सूर्यनी पेठे बाणवमे मेघने आकाशमां खेंची आएयो. हितकारी जीष्मपिताए, अर्जुननुं आवुं अजुत पराक्रम तुरत डुर्योधनने देखामीने तेने कह्युं के, " त्हाराथी अधिक महा पराक्रमवाला पांमुपुत्रोनी साथे तुं संधी कर. " परंतु तेतो सांजव्युं अणसांजव्युं करीने पोताना बंधुर्च सहित त्यांथी चाली निकव्यो. जीष्म पण विशुद्ध धर्मनुं आराधन करी अनशन ग्रहण करवा पूर्वक स्वर्ग प्रत्ये गया. आ वखते अर्जुने, डोणगुरुने प्रणाम करवा पूर्वक धनुर्वेद त्यजी दीधो. कह्युं छे के–संत पुरुषो, गुरु दक्षिणाने अर्थे शुं कांइ योग्य वस्तु नथी आपता? अर्थात् आपे छे. पछी ते बन्ने सैन्यना उद्दंम बाणना विस्तारथी अनुक्रमे पोतानां किरणोने हरण करता एवा सूर्ये चक्रवाक् (चकला)ना कुलने विषे अति विरह कर्यो. अर्थात् सूर्य अस्त पाम्यो.

पछी जेम सिंह, हरिणोनी साथे युद्ध करे तेम संसप्तक राजाउँए आमंत्रण करेला अर्जुने सेनानी बहार तेउँनी साथे महायुद्ध आरंज्युं. " अर्जुन बीजा राजाउँनी साथे युद्ध करवा सेनानी बहार गयो. " ए वात जाणीने बारमे दिवसे हस्ति उपर बेठेला महा जयंकर जगदत्त राजाए, युधिष्ठिरनी सेनाने पीमा करवा मांमी. अर्जुन पोतानां सैन्यमां क्षोजथी उत्पन्न थयेला कोलाहलने सांजली तुरत संसप्तक राजाउँने त्यजी दइने जगदत्तनी साथे युद्ध करवा लाग्यो. बहुकाल टक्या पछी अर्जुन क्रोधथी जगदत्तने मारी नाखी फरी संसप्तक राजाउँने मारवा माटे तुरत त्यां आव्यो. तेउँने पण मारी नाखवाथी कौरवनी सेना रक्षण रहित थइ. पछी विचार करीने कौरवोए रात्रीने विषे नहि जेदी सकाय एवो चक्रव्यूह रच्यो. तेमां डुर्योधन, डोणगुरु, कृपाचार्य अने

कर्णनां शस्त्रोने छेतरी भीमपुत्र (घटोत्कच) विगेरे वीर पुरुषोथी विंटलायेला अर्जुनपुत्र अभिमन्युए प्रवेश कर्यो. दुर्योधनादिके, भीमादि पुरुषोने व्यूहनी बहार रोके छते महा पराक्रमवाला अभिमन्यु अने जयद्रथ बन्ने सुभटो परस्पर युद्ध करवा लाग्या. बहु काल पर्यंत दिव्यलोह शस्त्रवडे युद्ध करीने पछी अर्जुनने दुःख पमाडवा माटे जयद्रथे सायंकालने विषे अभिमन्युने स्वर्ग लोकप्रत्ये मोकल्यो. पुत्र अभिमन्युना मृत्युने सांभली बहु क्रोध पामेला अर्जुने प्रतिज्ञा करी के, " जो हुं आजे जयद्रथने नहि मारुं तो हवे पछी आ भवमां भोजन करीश नहि. " जो के क्रोधथी जयद्रथने मारवा जता एवा अर्जुनने द्रोणादिके युद्धमां रोकी राख्यो, तोपण तेणे अमोघ बाणो फेंकवाथी शत्रुना स्थानने बहु रुधिरना कादववालुं करी मूक्युं. भीम अने सत्यकी, अर्जुननी सहाय्य माटे जता हता; परंतु दुर्योधने भीमने अने भूरिश्रवाए सत्यकिने रोकी राख्यो. जाणे बीजा बहु रंगोथी घेरायेलो एक जातनो रंग होयनी ? एम ते अनेक राजाउथी रक्षण करायला जयद्रथ राजाने सांजे अर्जुने दीठो. भीमसेनना अने दुर्योधनना, भूरिश्रवाना अने सत्यकिना, अर्जुनना अने जयद्रथना आ छ राजाउना परस्पर एक बीजा उपर फेंकातां शस्त्रोए करीने विश्वना मनुष्योने प्रलयकालनी दुःसह शंका उत्पन्न थइ. अर्जुने पोतानी प्रतिज्ञानुं स्मरण करता छता सायंकालने वखते जयद्रथना रथने अने सारथीने छेदन भेदन करीने तथा तेने शस्त्र रहित करीने बहु क्रोधथी मारी नाख्यो. पांडुपुत्रोए, चौदमा दिवसनी सांज सुधीमां दुर्योधन भूपतिनी सात अक्षौहिणी सेनानो नाश करी नाख्यो. पछी बहुज थोडा सैन्यवाला कौरवोए रात्रीने विषे युद्ध करवानो विचार करीने पांडवो सूता हता एवामां घुडनी पेठे तेमना उपर तत्काल धसारो कर्यो. आ वखते भीमना सरखो महा भयंकर अने मायावि भीम पुत्र घटोत्कच, अनेक शस्त्रोवाला युद्धथी शत्रुना पक्षने आश्चर्य पमाडतो छतो त्यां युद्ध करवा लाग्यो. तेने कर्णे अखंडित शस्त्र समूहथी तिरस्कार कर्यो. घटोत्कचे पण गदावडे कर्णना शस्त्र समूहने कापी नाख्या. पछी बहु क्रोध पामेला कर्णे, देदीप्यमान अग्निना कणोथी व्याप्त एवी देवताउए आपेली शक्ति घटोत्कच सामे फेंकी, जेथी ते भीमपुत्र निश्चे प्राण रहित थयो. बीजे दिवस सवारे काल समान

महा तेजवंत डोणगुरुए युद्ध आरंज्युं, तेमां विराट अने डुपद बन्ने राजाउ तुरत मृत्यु पाम्या. आ बन्ने राजाना मृत्युथी पांमवोनुं सैन्य बहु खेद पामवा लाग्युं एटले धृष्टद्युम्न ते पोतानी सेनाना वीर पुरुषोने धीरज आपतो छतो तुरत क्रोधथी डोण सामे युद्ध करवा आव्यो. पमता हाथीउवालुं, त्रास पामता अश्वोवालुं, जागी जता रथोवालुं अने मृत्यु पामता सुजटोवालुं ते बन्ने वीरपुरुषोनुं दीर्घकाल पर्यंत थयेलुं जयंकर युद्ध जोइ आकाशमां रहेला विद्याधरो पण मनमां जय पामवा लाग्या. एवामां युधिष्ठिरे मालवदेशना जूपतिना अश्वस्थामा नामना हाथीने मारी नांख्यो एटले बीजा सैन्यमां चारे तरफ एवी वात फेलाणी के, "अश्वस्थामा मराया." आ वात डोणगुरुए सांजली; तेथी ते पोताना पुत्रने मरायो जाणी गाढ चिंताथी पीमा पामता छता अति डुःखी थइने संग्रामकार्यमां बहु मंद आदरवाला थया. पछी दंजवाला डुपद राजपुत्रे डोणने बाण समूहथी वींधि नाख्या, तेथी बहु पीमा पामेला डोणगुरु अनशन व्रत लइ नमस्कार मंत्रनुं ध्यान करता छता ब्रह्मदेव लोक प्रत्ये गया.

पीतानो नाश सांजली क्रोधातुर बनेला अश्वस्थामाए पोतानी सेना सहित बाणवृष्टीथी जयातुर एवी पांमवोनी सेनाने नाश पमामवा मांमी. पछी तेमणे (अश्वस्थामाए) पांमवोनो वध करवा माटे मेघमां विजलीनी पेठे स्फुरणायमान एवा तिखाराना समूहथी दिशाउने पूरी देतुं एवुं अमोघ नारायणीय नामे शस्त्र फेंक्युं; परंतु श्रीकृष्णना कहेवा उपरथी विनयवंत एवा पांमवोए ते डुःसह बाणने शीघ्र निष्फल करी नाख्युं. कह्युं छे के–महात्माउना विनयथी कयुं कार्य सिद्धि नथी पामतुं ? अर्थात् सर्व कार्य सिद्धि पामे छे. पछी युद्धनी इछा करता एवा कौरवो महा उत्कट पुरुषार्थवाला कर्णने आगल करी सर्व प्रकारनां शस्त्रो सजीने आदरथी रणांगणमां आव्या. ते बन्ने डुर्जय सैन्यना परस्पर कोटि सुजटोनो नाश करनारो, सर्व विश्वना मनुष्योने डुःसह अने डुर्जेद संग्राम चाल्यो. कांन सुधी खेंचेली धनुष्यनी दोरीवाला अने समुड्नी समान गर्जनावाला कर्णे पहेलाज युद्धमां शस्त्र समूहथी सर्व शत्रुना समूहने पामी दीधो. जेम सूर्य पोतानां किरणोने चारे तरफ प्रसारे तेम सूर्य पुत्र कर्ण पण शत्रुउनी सेनामां चारे तरफ बाणोरूप किरणो फेंकतो छतो तेना (सूर्यना) जेवो देखावा लाग्यो. पछी उग्र जूजबलवाला अर्जुन

अने कर्ण बन्ने सुन्नटो जाणे प्रलयकाले उत्पन्न थयेला सूर्यज होयनी? एम तीक्ष्ण धारोवाला बाणोवमे परस्पर युद्ध करवा लाग्या. प्रथमथी कोपवमे कंपी रहेला पवनपुत्र न्नीमसेने वीर एवा दुःशासनने अटकावी राखीने पृथ्वी उपर पामी नाख्यो. त्यारबाद तेना बन्ने हाथ कापी नाख्या. पोताना देहथी निकलता रुधिरवमे बहु पृथ्वीने राता वर्णनी करता एवा दुःशासनने जोइ सूर्ये पण आकाशने राता वर्णनु करता बता पश्चिम दिशानो आश्रय कर्यो.

पबी बीजे दिवस सवारे अर्जुनना वधनी इच्छा करनारो कर्ण, शल्यने पोतानो सारथी बनावी बहु गर्जना पूर्वक शंखनो शब्द करतो बतो दंन्नथी युद्ध न्नूमि प्रत्ये आव्यो. महा पराक्रमवंत अर्जुन अने कर्णना पृथ्वीने विषे, दिशानमां, आकाशमां अने शत्रुनना समूहने विषे चारे तरफ पमता एवा बाणोना समूहो जाणे वरसादनी धारान होयनी? एम देखता हता. सर्पास्त्रना बाणथी कर्णे मूकेला अनेक सर्पसमूहोने अर्जुने गरुमास्त्र मूकी दूर कर्या.

आ प्रमाणे सुमंत्रना जाण एवा ते बन्ने वीरो एक बीजा उपर बहु शस्त्रो फेंकता हता. बेवट अर्जुने कर्णने सूर्यास्त वखते बोलावीने शेष राजे आपेली शक्तिवमे प्रहार कर्यो, तेथी ते मृत्यु पाम्यो. आ अवसरे देवतानए बहु हर्षथी पुष्पवृष्टी करी. हवे बीजे दिवस सवारे, मृत्यु पामवाथी बाकी रहेला कौरवो उत्साह रहित थया बता शल्यने सेनापति पद आपी युद्धन्नूमि प्रत्ये आव्या. शत्रुनना चित्तने विषे शल्य (बाण) रूप शल्य राजाए अनेक बाणो फेंके बते युद्धमां फक्त पुण्यना समूहथी उत्कृष्ट एवा युधिष्ठिरज स्थिर उन्ना रह्या. कोपाकुल थयेला सहदेव वीरे क्रोधातुर एवा शकुनि राजानी सामा थइ बाणना मंमलथी आकाशने पूरी देता बता तेने रोकी राख्यो. युधिष्ठिरे मनमां उत्तराकुमारना नाशना वैरने स्मरण करता बता सफल कोपथी पोताना सैन्यने शल्यरूप शल्यराजाने अमोघ शक्तिवमे मारी नाख्यो. सूर्य अस्त पाम्ये बते कर्मनी लज्जाना वशथी अति विकल एवो सेनापति दुर्योधन पण त्यांथी नासीने तत्काल एक सरोवरमां संताइ पेठो. पाबल तेने शोधता एवा कृपाचार्य, महाराजा कृतवर्मा अने अश्वस्थामादि पगले पगले त्यां आवीने जेटलामां दुर्योधनने कांइ कहेवा जाय बे तेटलामां एक अक्षौहिणी सैना सहित पाबल आवता एवा पांमवोए ते सरोवरने घेरो घाली दुर्योधनने कह्युं के, "हे

वीर शिरोमणि ड्डर्योधन ! तने आम नासी जवुं योग्य नथी. कारण सत्पुरुषो संकट बतां पण पोताना कुलने लज्जा करावनारुं जे कार्य होय ते काम करता नथी. अरे वीर एवो अर्जुन कोप पाम्ये बते तुं आ सरोवरमां शुं रहि शके तेम बे? जे विद्याबाणोवमे समुड्रने शोषण करवा समर्थ बे, तेनी आगल आ सरोवर कोण मात्र बे? जो तुं अमारा सर्वनी साथे युद्ध करवा समर्थ न होय तो अमारामांथी गमे तेनी साथे त्हारी मरजी होय तेवां शस्त्रथी युद्ध करवाने तैयार था." पांमवोनां आवां वचन सांन्नली मनस्वी अने धारण कर्युं बे महाबल जेणे एवा ड्डर्योधने कह्युं के, "हुं, न्नुजाबलवाला न्नीमसेन न्नमनी साथे गदावमे युद्ध करीश." पांमवोए ते वात कबुल करी एटले ड्डर्योधन जलमांथी जाणे जलज होयनी ? एम वेगथी निकट्यो. पबी बीजा सर्व सुन्नटो दूर रह्ये बते महान्नुज पराक्रमवंत एवा ड्डर्योधन अने न्नीमसेन बन्ने जणा गदान्नवमे करीने युद्ध करवा माटे रणन्नूमिमां सामसामा दोमया. बन्ने जणाउ चारे तरफथी एक बीजाना गदा प्रहारोने स्खलना पमामता अने आकाशमां उबलता बता क्रोधथी राती कांतिवाला बनीने लोकोने बहु ड्डःप्रेक्षरूप देखावा लाग्या. पबी न्नीमसेने क्रोधथी उबलवानी कलामां प्रवीण एवा ड्डर्योधनने प्रचंम वृक्षनी पेठे वेगथी पृथ्वी उपर पामी दीधो. पबी पृथ्वी उपर पमेला ड्डर्योधननां मस्तकने न्नीमसेने पांमुना प्रहारथी चूर्णरूप करी नाख्युं. आवा कार्यने जोइ बलन्नड्रना मनमां बहु क्रोध थयो. जो के बलन्नड्र पांमुपुत्रोने हणवा समर्थ हता, तोपण ते पितादिकना न्नयथी तेम न करता पांमवोने जीवता मूकीने अने तेमनो तिरस्कार करी मनमां बहु क्रोध पामता बता क्यांइ चाल्या गया. विधिना जाण एवा पांमवो पण पोतानी सेनाना रक्षण माटे ड्डपदराजपुत्रने तथा अर्जुनने राखी पोते बलन्नड्रने शांति पमामवा तेमनी पाबल गया. पाबल कृतवर्मा, अश्वस्थामा अने कृपाचार्य ए त्रण जणाउ, दीनमुख थइ ड्डर्योधनने जोवा माटे रणन्नूमि प्रत्ये आव्या. त्यां तेउ तेवी अवस्थामां पमेला ड्डर्योधनने जोइ आदरथी कहेवा लाग्या के, "हे स्वामीन्! प्रसन्न थइ अमने आज्ञा आपो के, जेथी अमे आजेज ते पांमुपुत्रोने मारी नाखीए." तेउनां आवां वचन सांन्नली हर्ष पामेला ड्डर्योधने पोतानां चरणमां नमि रहेला तेउने पांमवोनो वध करवानी आज्ञा आपी. पबी ते त्रणे

जणाउ, पांमवोनां शून्य सैन्यमां आवी अर्जुन अने डुपराजपुत्रनी साथे दीर्घकाल युद्ध करी अने भ्रमथी तेउना (पांमवोना) पांच पुत्रोने मारी तेमनां मस्तको डुर्योधननी आगल मूकीने प्रणाम करवा लाग्या. डुर्योधन पण पांमव पुत्रोनां मस्तकोने जोइ बहु खेद पामतो ठतो तेमने कहेवा लाग्यो के, अरे धिक्कार ठे ! धिक्कार ठे !! जे तमे म्हारी आगल आ बालकोनां मस्तको लइ आव्या. निश्चे म्हारुं तेवुं भाग्य नथी के, हुं पांमवोनुं मृत्यु जोवुं." महा वेदनाथी पीमा पामेलो डुर्योधन आ प्रमाणे कहेतो ठतो तुरत मृत्यु पाम्यो. पठी शोकमां बूमी गयेला चित्तवाला कृपाचार्यादिक क्यांइ चाल्या गया.

हवे पांमवो अनुकुल भक्तिवालां वचनोए करीने श्रीवलभइने पोतानां सैन्य प्रत्ये तेमी लाव्या. त्यां तेउ पोताना पुत्रोने मृत्यु पामेला जाणी मनमां बहु शोक करवा लाग्या. पठी तेउ सरस्वती नदीने कांठे जइ पोताना ते मृत्यु पामेला पांच पुत्रोनां, कौरवोनां अने बीजा श्रेष्ठ राजाउनां प्रेत कर्यो कर्यां. त्यारपठी दशार्होनी संमतीथी संतुष्ट चित्तवाला रामकृष्णादिके फरीथी महोत्सव पूर्वक श्री युधिष्ठिरने हस्तिनापुरने विषे राज्याभिषेक कर्यो. भूजा बलथी विश्वना शत्रुउने जीती विजय मेलवनारा, श्री डोण भीष्म अने कर्णादि भूपतियोने युद्धमां पराभव पमामी, तथा कौरवोना असंख्य सैन्य महासागरने बलथी मथन करी विजय लक्ष्मीना पतिपणाने पामेला ते पांचे पांमवो पोतानां हस्तिनापुर नगरने विषे राज्य भोगववा लाग्या.

इति ऋषिमंमलवृत्तौ पांमवचरित्रे श्रीकौरवादिक्षयश्रीपांमवजयभवनपुनःराज्योपविशननाम षष्ठोधिकारः समाप्तः

पठी शत्रुउना दंभने तोमी नाखनारा अने सर्व साम्राज्यना लाभने पामेला पांमवो निरंतर उछलती नीतिना वलवमे प्रजानुं पुत्रनी पेठे पालन करवा लाग्या. कोइ वखते श्री जिनेश्वरना धर्मना मर्मने जाणनारा, पवित्र शरीरवाला अने हितेछु एवा धर्मपुत्र युधिष्ठिरे बहु भय पामता ठता पोताना भीमसेनादि बंधुउने कह्युं के, " आपणा पिता पांमुराजा के, जे मृत्यु पामीने देवलोकमां देवता थया ठे, ते आज आवीने मने एम कहेवा लाग्या के, हे वत्सो ! तमे पोताना गोत्रघातादि महा घोर पाप कर्युं ठे. ते पाप समूहथी

तमारो अनंत दुःखथी जरपूर एवा नरकने विषे पात थशे. आथी मने मनमां बहु चिंता थाय छे के, तमे बहु दुःख पामशो. धिक्कार छे तेवा क्रूर कर्मने !!! हे पुत्रो ! माटे हुं तमने खबर कहेवा आव्यो छुं के, तमे ते पापनी शीघ्र रीते शांति करो के, जेथी तमारे पापना समूहवमे नरकरूप खामीमां न पमवुं पमे." (युधिष्ठिर पोताना जाइयोने कहे छे के,) पितानां आवां वचन सांजली अत्यंत जय पामेला में तेमने पूछ्युं के, हे पिता ! एवो कयो शुद्ध धर्म छे के, जेनुं आराधन करवाथी अमारे नरकने विषे न पमवुं पमे ?" पछी पांमुपितारूप देवताए कह्युं. "हे सुतो ! श्री जिनेश्वर प्रणित अने सर्व जगतूना प्राणीयोने हितकारी एवो दया प्रधान धर्म सर्व दुःखरूप समुद्रने पार उतारवामां वहाण समान समर्थ छे. निश्चे श्रीअरिहंत प्रजुए कहेलो सुख हेतुरूप ते धर्म, साधु अने श्रावकना जेदथी बे प्रकारनो छे. त्रण गुप्ति अने पांच महाव्रतरूप साधुनो धर्म पांच समितिथी प्रशंसा करवा योग्य छे. अति शुद्ध क्रियावाला साधुउने ते धर्मनुं सारी रीते आराधन करवाथी, उत्कृष्टथी मोक्ष फल मले छे अने जघन्यथी सघला स्वर्ग लोकनी लक्ष्मी मले छे. चार शिक्षाव्रत, त्रण गुणव्रत अने पांच अणुव्रत ए रूप बार प्रकारनो अति शुद्ध एवो श्रावक धर्म अच्युत देवलोकनां सुख आपनारो छे; माटे हवणां तमो पाप समूहने नाश करनारो उत्तम श्रावक धर्म आदरो अने चारित्रनो समय आवे उते निश्चे शुद्ध जावथी साधुधर्म पालजो." में आवां पितानां वचन अंगीकार कर्यां एटले प्रसन्न मनवाला ते पिता पांमुदेव पोताने स्थानके गया.

(युधिष्ठिर पोताना बंधुउने कहे छे के,) हे बंधुउ ! माटे तमे पोतानां पापनो नाश करवाने अर्थे पिताए कहेला जिनराज धर्मने आदरो." पोताना म्होटा बंधुनां आवता कालने विषे लक्ष्मी आपनारां अने पाप समूहनो नाश करनारां आवां वचन सांजलीने जीमादि सर्व जाइयो, मोक्ष सुख आपनारुं पुण्य करवा लाग्या. बीजाउथी क्षोज पमामी न शकाय तेवा स्वजाववाला ते पांचे पांमवो, शुद्ध श्रावक धर्मने विषे तत्पर थइ लक्ष्मीने चपल स्वजाववाली जाणता उता दान आपवामांज उत्तम बुद्धि करवा लाग्या. सात क्षेत्रने विषे द्रव्यनो व्यय करता अने दरेक गामे अति प्रमाणवाला उत्तम जैन देरासरो करावता एवा ते पांमवोए रूपादि धातुउनां एक लाख जिनबिंब क-

राव्यां. वली तेमणे पोतानां कर्मनी शुद्धिने माटे जिनेश्वर प्रणित शास्त्रनां बहु पुस्तको लखाव्यां अने वस्त्र, अन्न, पान विगेरेथी शुद्ध ज्ञाववमे चार प्रकारना संघनी बहु ज्ञक्ति करी. तेमज शुद्ध अशनादिकथी पात्रनुं पोषण, अगएय ड्व्यथी दीन पुरुषोना उद्धार अने उद्घोषणा पूर्वक पोताना देशमां अमारी प्रवर्त्तावी. लोकमां महा डुर्गति अने डुःखदायी एवा द्यूतादि सात व्यसननो निषेध करवा पूर्वक जिनालयने विषे पूजादि कृत्यो कराव्यां. वली "उत्तम तीर्थोमां मुख्य शत्रुंजय पर्वतने विषे ज्ञावथी श्रीजिनेश्वरनी यात्रा करवाथी मलीन मनुष्योनां हत्यादि सर्वे पापो नाश थाय छे." आवुं गुरुनां मुखनुं वचन सांज्ञली पांमवो पोताना आत्माने मलीन जाणता छता विचार पूर्वक त्यां यात्रा जवानो विचार करवा लाग्या. पछी तेउए दशार्ह, राम कृष्ण विगेरे अनेक राजाउने बोलाववा माटे पोताना दूतो मोकल्या; तेथी त्यां तीर्थयात्रा माटे अनेक राजाउ आव्या. पछी बहु ज्ञाववाला पांचे पांमवो, बहु शोज्ञावाला श्रीसंघने साथे लइ श्री शत्रुंजयनी तीर्थ यात्रा माटे चाल्या. दयाथी ज्ञिंजाइ गयेलां चित्तवाला पांमवोए मार्गमां पुर पुरने विषे म्होटा जैन प्रासादोनो उद्धार करवा पूर्वक दीन मनुष्योने नाना प्रकारनां बहु दानो आपवां मांम्यां. पांमवो शुद्ध ज्ञावथी चार प्रकारना संघनी उत्तम ज्ञोजनादिवमे ज्ञक्ति करता, तेमज रौप्यमय जिनालयोमां स्नात्र पूजा ज्ञणावता हता. संघने विषे निरंतर उत्तम ज्ञाववाला मनुष्यो जिनेश्वरोना गीतो गाता, पात्रो जिनालयमां नृत्यो करता अने वाद्यक पुरुषो वाजींत्रो वगामता. केटलाक लोको पालखीमां वेसीने, केटलाक दिव्य हाथीउ उपर वेसीने, केटलाक घोमाउ उपर स्वार थइने अने केटलाक पगे चालीने उत्साह धरता छता जिनेश्वरनुं पूजनादि करवा जता. अनुक्रमे बहु दिवसे संघ, शत्रुंजयनी तलेटीनी वजारमां आवी पहोच्यो. त्यां ते शत्रुंजय पर्वतने जोइ बहु हर्ष पामवा लाग्यो. पछी दशार्हो सहित कृष्ण वलज्ञद्रे सारा लग्नने वखते महोत्सव पूर्वक श्रीधर्मपुत्र युधिष्ठिरने संघना अधिपतिपणानो अज्ञिषेक कर्यो. सवारे सर्व संघ सहित संघपति [युधिष्ठिर] विमलाचल उपर चमवा लाग्या के, जे विमलाचल पगले पगले खरेखर पूर्व कर्मनो नाश करे छे. अनुक्रमे श्री संघ हर्षथी श्री तीर्थराजना वारणामां आवी पहोच्यो. त्यां तो केटलाक श्री

तमारो अनंत दुःखथी नरपूर एवा नरकने विषे पात थशे. आथी मने मनमां बहु चिंता थाय छे के, तमे बहु दुःख पामशो. धिक्कार छे तेवा क्रूर कर्मने !!! हे पुत्रो ! माटे हुं तमने खबर कहेवा आव्यो छुं के, तमे ते पापनी शीघ्र रीते शांति करो के, जेथी तमारे पापना समूहवमे नरकरूप खाममीमां न पमवुं पमे." (युधिष्ठिर पोताना नाइयोने कहे छे के,) पितानां आवां वचन सांनली अत्यंत नय पामेला में तेमने पूछ्युं के, हे पिता ! एवो कयो शुद्ध धर्म छे के, जेनुं आराधन करवाथी अमारे नरकने विषे न पमवुं पमे ?" प-छी पांमुपितारूप देवताए कह्युं. "हे सुतो ! श्री जिनेश्वर प्रणित अने सर्व जगत्ना प्राणीयोने हितकारी एवो दया प्रधान धर्म सर्व दुःखरूप समुद्रने पार उतारवामां वहाण समान समर्थ छे. निश्चे श्रीअरिहंत प्रनुए कहेलो सुख हेतुरूप ते धर्म, साधु अने श्रावकना नेदथी बे प्रकारनो छे. त्रण गुप्ति अने पांच महाव्रतरूप साधुनो धर्म पांच समितिथी प्रशंसा करवा योग्य छे. अति शुद्ध क्रियावाला साधुउने ते धर्मनुं सारी रीते आराधन करवाथी, उत्कृष्टथी मोक्ष फल मले छे अने जघन्यथी सघला स्वर्ग लोकनी लक्ष्मी मले छे. चार शिक्षाव्रत, त्रण गुणव्रत अने पांच अणुव्रत ए रूप बार प्रकारनो अति शुद्ध एवो श्रावक धर्म अच्युत देवलोकनां सुख आपनारो छे; माटे हवणां तमो पाप समूहने नाश करनारो उत्तम श्रावक धर्म आदरो अने चारित्रनो समय आवे उते निश्चे शुद्ध नावथी साधुधर्म पालजो." में आवां पितानां वचन अंगीकार कर्यां एटले प्रसन्न मनवाला ते पिता पांमुदेव पोताने स्थानके गया.

(युधिष्ठिर पोताना बंधुउने कहे छे के,) हे बंधुउ ! माटे तमे पोतानां पापनो नाश करवाने अर्थे पिताए कहेला जिनराज धर्मने आदरो." पोताना म्होटा बंधुनां आवता कालने विषे लक्ष्मी आपनारां अने पाप समूहनो नाश करनारां आवां वचन सांनलीने नीमादि सर्व नाइयो, मोक्ष सुख आपनारुं पुण्य करवा लाग्या. बीजाउथी क्षोन पमामी न शकाय तेवा स्वनाववाला ते पांचे पांमवो, शुद्ध श्रावक धर्मने विषे तत्पर थइ लक्ष्मीने चपल स्वनाववाली जाणता उता दान आपवामांज उत्तम बुद्धि करवा लाग्या. सात क्षेत्रने विषे द्रव्यनो व्यय करता अने दरेक गामे अति प्रमाणवाला उत्तम जैन देरासरो करावता एवा ते पांमवोए रूपादि धातुउनां एक लाख जिनबिंब क-

राव्यां. वली तेमणे पोतानां कर्मनी शुद्धिने माटे जिनेश्वर प्रणित शास्त्रनां बहु पुस्तको लखाव्यां अने वस्त्र, अन्न, पान विगेरेथी शुद्ध भावथी चार प्रकारना संघनी बहु भक्ति करी. तेमज शुद्ध अशनादिकथी पात्रनुं पोषण, अगण्य द्रव्यथी दीन पुरुषोना उद्धार अने उद्घोषणा पूर्वक पोताना देशमां अमारी प्रवर्त्तावी. लोकमां महा दुर्गति अने दुःखदायी एवा द्यूतादि सात व्यसननो निषेध करवा पूर्वक जिनालयने विषे पूजादि कृत्यो कराव्यां. वली "उत्तम तीर्थोमां मुख्य शत्रुंजय पर्वतने विषे भावथी श्रीजिनेश्वरनी यात्रा करवाथी मलीन मनुष्योनां हत्यादि सर्वे पापो नाश थाय छे." आवुं गुरुनां मुखनुं वचन सांभली पांडवो पोताना आत्माने मलीन जाणता छता विचार पूर्वक त्यां यात्रा जवानो विचार करवा लाग्या. पछी तेउए दशाई, राम कृष्ण विगेरे अनेक राजाउने बोलाववा माटे पोताना दूतो मोकल्या; तेथी त्यां तीर्थयात्रा माटे अनेक राजाउ आव्या. पछी बहु भाववाला पांचे पांडवो, बहु शोभावाला श्रीसंघने साथे लइ श्री शत्रुंजयनी तीर्थ यात्रा माटे चाल्या. दयाथी भिंजाइ गयेलां चित्तवाला पांडवोए मार्गमां पुर पुरने विषे म्होटा जैन प्रासादोनो उद्धार करवा पूर्वक दीन मनुष्योने नाना प्रकारनां बहु दानो आपवां मांड्यां. पांडवो शुद्ध भावथी चार प्रकारना संघनी उत्तम भोजनादिवडे भक्ति करता, तेमज रौप्यमय जिनालयोमां स्नात्र पूजा भणावता हता. संघने विषे निरंतर उत्तम भाववाला मनुष्यो जिनेश्वरोना गीतो गाता, पात्रो जिनालयमां नृत्यो करता अने वाद्यक पुरुषो वाजींत्रो वगाडता. केटलाक लोको पालखीमां बेसीने, केटलाक दिव्य हाथीउ उपर बेसीने, केटलाक घोडाउ उपर स्वार थइने अने केटलाक पगे चालीने उत्साह धरता छता जिनेश्वरनुं पूजनादि करवा जता. अनुक्रमे बहु दिवसे संघ, शत्रुंजयनी तलेटीनी बजारमां आवी पहोच्यो. त्यां ते शत्रुंजय पर्वतने जोइ बहु हर्ष पामवा लाग्यो. पछी दशार्हो सहित कृष्ण बलभद्रे सारा लग्नने वखते महोत्सव पूर्वक श्रीधर्मपुत्र युधिष्ठिरने संघना अधिपतिपणानो अभिषेक कर्यो. सवारे सर्व संघ सहित संघपति [युधिष्ठिर] विमलाचल उपर चडवा लाग्या के, जे विमलाचल पगले पगले खरेखर पूर्व कर्मनो नाश करे छे. अनुक्रमे श्री संघ हर्षथी श्री तीर्थराजना बारणामां आवी पहोच्यो. त्यां तो केटलाक श्री

जिनेश्वरने जोइ पृथ्वी उपर आलोटवा लाग्या, केटलाक नृत्य करवा लाग्या अने केटलाक द्रव्य उछालवा लाग्या. प्रथम नथी धोया पग जेमणे एवा संघना सर्वे लोकोए, बहु हर्षथी श्रीआदिनाथने जक्तिपूर्वक सुगंधि पुष्पादिके करीने पूज्या.

पछी सवारे संघना मनुष्यो सहित संघाधिपे एवो स्नात्र महोत्सव कर्यो के, जेने जोवा माटे सर्वे देवताउ जाणे निमेष रहितपणाने पाम्या होयनी ? एम देखाय छे. आरती, मंगलदीवो अने ध्वजारोप करी तेमज दीन पुरुषोने दान आपी महा हर्ष पामेलो संघ शत्रुंजय पर्वत उपरथी नीचे उतर्यो. त्यां श्रीकृष्ण अने बलजद्र छे मुख्य जेमां एवा सर्व संघने उत्तम पदार्थथी जोजन करावीने बंधु सहित अति हर्ष पामेला युधिष्ठिरे हाथ जोमी विनंती करी के, "हे पूज्यो ! तमे सौ म्हारुं वचन सांजलो. जो तमे कहेता हो तो तीर्थोमां मुकुटमणिरूप आ विमलाचलने विषे हुं हवणां उद्धार करावुं." हर्ष पामेलां चित्तवाला रामकृष्णादि संघना सर्व लोकोए अनुमति आपी एटले पोतानां कार्यनी सिद्धि थवाथी युधिष्ठिर बहु हर्ष पाम्या. पछी तेमणे थोमा दिवसमां बहु द्रव्यनो खर्च करीने जिनप्रासादनो उद्धार कराव्यो. वली सुगंधजावथी लेप्यमय जिनप्रतिमा करावी. त्यां वरदत्त नामना गणीश्वरे ते जिनप्रतिमानी देव तथा असुरने पण आश्चर्यकारी म्होटी प्रतिष्ठा करी. पछी रेवताचल [गिरिनार] उपर श्रीनेमिनाथ प्रजुने, देवकपुरमां श्रीचंद्रप्रज स्वामीने, जृगुकछमां (जरुचमां) श्रीसुव्रतनाथने अने सोपारक (सोपारा) मां श्रीआदिनाथ प्रजुने पूजनादि पूर्वक प्रणाम करीने संघना सर्वे मनुष्यो सहित युधिष्ठिर महोत्सवथी स्वर्ग समान द्वारकानगरी प्रत्ये आव्या. त्यां बलजद्र अने श्रीकृष्णादि अनेक राजाउए संघ सहित पांमवोनी विविध प्रकारनां वस्त्र, आजूषण अने दिव्य जोजनथी बहु जक्ति करी. पछी केटलेक दिवसे, बहु पुण्यथी पवित्र एवा संघ सहित युधिष्ठिर शणगारेलां पोतानां नगरमां महोटा महोत्सवथी आव्या. त्यां तेमणे नाना प्रकारना आहार, सुवर्ण अने रत्नमय अलंकारनां दानथी संघनी विविध प्रकारे बहु जक्ति करीने तेने अनुक्रमे विदाय कर्यो. पछी यात्रानां कार्यथी सर्व पापने नाश करनारा, प्राप्त थयेला यश अने प्रतापवाला ते पांमवो अति जोगववा योग्य एवा इंद्रनां रा-

ज्यसमान पोतानां बहोला राज्यने जोगववा लाग्या. पांमवो राज्य करता उता निरंतर सर्वे गामो स्वर्गसमान शोजवा लाग्या अने शोकरहित सर्वे लोको सुखी थवा लाग्या. पांमवोनां राज्यमां अनिति, डुर्जिक्ष, स्वराज्यजय, परचक्र जय अने अकाल मृत्यु एमांनु कांइ पण नहोतुं. पांमवोए पोतानां राज्यमांथी अनितिरूप डुष्ट स्त्रीने बहु अपमान पहोचाम्ी हती; तेथी ते पांमवोनां शत्रुउना राज्यमां तेमनां नामने सहन करती उती रहेवा लागी. पांमवो राज्य करता उता चोरी तेमना देशमां निवास करता एवा लोकोने त्यजी दइ बीजा देशना लोकोनो निरंतर आश्रय करवा लागी. असंख्य डव्य खर्चथी शत्रुंजय तीर्थने विषे कल्याणकारी यात्रा तेमज तीर्थोद्धार करीने वली चार प्रकारना संघनी विविध प्रकारना उत्सवोथी आश्चर्यकारी जक्ति करीने पठी पोतानां नगर प्रत्ये आवेला पांमवो पुण्योत्सव करवा लाग्या.

इति रुषिमंमलवृत्तौ पांमवचरित्रे श्री शत्रुंजययात्रा तीर्थोद्धारकरणादि पुण्यविधाननाम सप्तमोऽधिकारः ॥ ७ ॥

पठी एकदा श्रीधर्मपुत्र युधिष्ठिर, पोतानी सजामां बेठा हता एवामां सर्व पृथ्वी उपर फरता एवा नारद रुषि उचिंता त्यां आव्या. नारदने जोइ बहु हर्ष पामेला पांमावोए, तेमने नाना प्रकारनी जक्तिथी संतोष पमाम्ीने पूठयुं के, “ मुनीश्वर ! तमे पोतानां चरणरजथी कया कया देशोने पवित्र कस्या ? अने वाणीना विलासथी कया कया राजाउने बहु हर्ष पमाड्या ठे ? वली तमोए सर्व देशोमां विचरवावमे शुं शुं आश्चर्य दीठुं ? अने तमे नवी नवी शी शो वार्ताउ सांजली ? ” पांमवोनां आवां वचन सांजली अत्यंत हर्ष पामेला नारदे कह्युं. “ हे पांमवो ! में बहु देशो जोया; परंतु आ देश समान बीजो एके देश नथी. आ देशमां शत्रुउना समूहने जुजा बलथी नाश करनारा बहु राजाउ ठे. वली धर्म संपत्तिये करीने तेमज शुद्ध एवी न्याय संपत्तिये करीने तमारा सरखो बीजो कोइ नृपति नथी. जोके पृथ्वी उपर फरता एवा में सर्व स्थानके नाना प्रकारनां बहु कुतुहलो दीठां ठे; परंतु मनुष्योने तमारां चरित्रथी बीजुं कांइ आश्चर्यकारी नथी. हे नृपो ! तमोए जिनोक्त धर्मना सेवनथी बाह्यनां अने अंतरंगनां सर्वे विघ्नोने नाश पमाम्यां ठे; तो पठी त-

मोने पीमा क्यांथी होय ?” नारद आ प्रमाणे कहीने पठी तुरत त्यांथी नठी अंतःपुरमां गया. ठीकज ठे–विशुद्ध शीलव्रत धारण करनारा नारदादिकनुं शुं क्यांइ पण स्खलन होय खरुं ? अर्थात् नज होय. पठी अंतःपुरमां आवता एवा नारदने जोइ द्रौपदी पोतानां मनमां विचार करवा लागी के, “आ कुलिंगीनी सेवा नक्ति करवाथी स्वधर्मनुं मलीनपणुं थाय ठे.” आम धारी तेणे नारदनो आदर सत्कार कर्यो नहि; तेथी नारदने बहु क्रोध चम्यो. कह्युं ठे के–जैनधर्मरहित मनुष्योने कोप सुलन्न होय ठे.

पठी नारद पोतानां चित्तमां विचार करवा लाग्या के, “ आ द्रौपदीने चित्तमां बहु लक्ष्मीनो तेमज पोताना पतियोनां महा पराक्रमनो अति अनर्थकारी गर्व थयो ठे, माटे हुं तेना गर्वनो नाश करुं.” आम धारीने नारद त्यांथी निकली धातकीखंमना नरतक्षेत्रनी अमरकंका नगरी प्रत्ये गया. त्यां चपल चित्तवालो अने महा नुजपराक्रमवालो पद्मोत्तर नामे राजा राज्य करतो हतो. नारद मुनि तुरत ते नूपतिनी सन्नामां गया. विस्मय पामेला राजाए पण हर्षथी नारदऋषिने आसन आपी, कुशल समाचार पूठी अने फलादि नोजनथी संतोष पमामी पूछ्युं के, “ हे मुनीश्वर ! आ लोकमां भ्रमण करता एवा तमोए राजाउनां नाना प्रकारनां अंतःपुरो जोयां ठे तो कहो के, कया राजानुं अंतःपुर म्हारां अंतःपुर समान रूपवालुं ठे ? ” नारदे कंइक हसीने कह्युं. “ हे नूप ! तुं खरेखर कूवाना देमका जेवो देखाय ठे. कारण जे तने मनमां आवां अल्प रूपवाला अंतःपुरने दीठाथी पण अति कठोर गर्व थयो. जंबुद्वीपमां रहेला नरतखंममां हस्तिनापुर नगरमां प्रचंम पराक्रमवाला पांच पांमवो ठे, तेमनुं अंतःपुर त्हारा समान ठे. ए पांमवोना अंतःपुरने विषे जे द्रौपदी नामे स्त्री ठे, तेना समानपणाने पामवा त्रणलोकनी स्त्रीयो इच्छा करे ठे.” जेमने क्लेश करावबोज प्रिय ठे एवा नारद मुनि आ प्रमाणे कहीने तुरत मरजी प्रमाणे आकाश मार्गे चाली निकल्या. पद्मोत्तर राजा पण द्रौपदीनां अद्भुत रूपने सांनली बहु कामतप्त थवा लाग्यो. पठी तेणे पोतानां कार्यनी सिद्धि माटे नक्तिथी कोइ देवतानुं आराधन करवा मांम्युं. केटलाक दिवसे करेली पूजाथी प्रसन्न थयेला देवताए कह्युं के, “ हे वत्स ! वरदान माग. ” देवतानां आवां वचनथी बहु हर्ष पामेला राजाए तेने दिव्य

रूपवाली डौपदी लावी आपवानी याचना करी. देवे कह्युं. "अरे मूढ ! तुं ए महासतीने अहिं म्हारावमे शा माटे तेमावे बे ? निश्चे देव अने दानवो तेना शीलव्रतने खंमन करवा समर्थ नथी. तो पबी हे नूमीनाथ ! एक कीमाना सरखो तुं तो शा लेखामां बे ? माटे तुं तेनी आशा त्यजी दे." देवताए आम कह्या बतां पण बहु रागने लीधे मूर्खपणाथी राजाए मान्युं नहि, त्यारे वचनथी बंधायेला देवताए तत्काल डौपदीने त्यां आणी. सर्व स्त्रीयोनां रूप गर्वने नाश करवामां समर्थ एवी डौपदीने जोइ पोतानी कार्यसिद्धि मानतो एवो ते पद्मोत्तर राजा बहु हर्ष पामवा लाग्यो.

हवे अहिं सवारे पांमवो पोतानां घरमां डौपदीने न देखवाथी बहु आकुलव्याकुल थया बता देशोमां सर्व स्थानके शोध करवा लाग्या. तेउए गाम, नगर, अरण्य, महोटा वन, पर्वत, नदी अने गुफाउमां शोध करी; परंतु कल्पवेलनी पेठे क्यांइ डौपदीने दीठी नहि. पबी अति डुःखथी आकुलव्याकुल मनवाला ते सौ नेगा थइ परस्पर विचार करवा लाग्या के, "आपणे नथी जाणता जे आपणी प्रियाने कोइ देव अथवा विद्याधरे हरण करी बे ? सर्व शक्तिमंत एवा यादवपति श्री कृष्ण विना डौपदीनी शुद्धि मलवी मुश्कल बे, माटे चालो आपणे तेमनी पासे जइए." आम विचार करीने अत्यंत खेद धरता पांमवो कृष्णनी पासे गया. कृष्णे पण ग्लानि पामेला ते पांमवोने जोइने कह्युं. "लोकोत्तर बलसमूहने धारण करनारा तमने कोइ शत्रु परानव पमामी शके तेम तो नथी, बतां तमने आवमी शी चिंता बे के, जेथी तमे आवा निस्तेज देखाउ बो.?" पबी स्त्रीनां हरणथी बहु लज्जा पामेला अने नम्र मुखवाला पांमवोये तेमनी आगल डौपदीनां हरणनी वात कही. कह्युं बे के—मननी वात कह्याथी कार्यनी सिद्धि थाय बे. पांमवोनां मुखथी डौपदीनुं हरण सांनली अत्यंत खेद पामेला श्री कृष्ण जेटलामां पोतानां मनमां विचार करे बे तेटलामां त्यां नारदमुनि आवी पहोच्या. चिंतातुरपणाथी नथी जाण्युं पोतानुं आगमन जेमणे एवा श्री कृष्णने नारद रुषिये कह्युं के, "हे पुण्यवंत ! तमने एवी शी महा चिंता बे ?" कृष्णे कह्युं. "हे मुनीश्वर ! तमे अस्खलित गतिने लीधे विश्वमां चारे तरफ भ्रमण करो बो; माटे तमे कोइ स्थानके डौपदीने दीठी बे ?" नारदे कह्युं. "में बीजा द्वीपना नरतक्षेत्रमां अमरकंका नगरीने विषे

पद्मोत्तर राजाना अंतःपुरमां ड्रौपदीना समान कोइ स्त्रीने दीठी छे. में तेज वखते विचार कर्यो हतो के, " आ पांमवोनी स्त्री ड्रौपदी अहिं क्यांथी ? वली में धार्युं जे, नाना ए ड्रौपदी तो नहि; बीजी कोइ देखाय छे; परंतु हे जनार्दन ! हवे तमारा पूछवाथी मने मनमां खरेखरो निर्णय थाय छे के, निश्चे ते ड्रौपदी छे, माटे तमाराथी ते कार्य पूर्ण थाय एम मने मनमां लागे छे." क्लेशप्रिय नारद आ प्रमाणे कहीने तुरत पक्षीनी पेठे आकाश मार्गे चाल्या गया. पछी श्रीकृष्णे पांमवोमे कह्युं. " हे बांधवो ! कहो, हवे आपणे केम करिशुं ? ते बीजो द्वीप बे लाख योजनना लवण समुद्रनी पेली पार छे. आपणे भूमिचर (भूमी उपर चालनारा) छीए; माटे आ कार्य असाध्य थइ पड्युं छे." पांमवोए कह्युं. " हे यादवेंद्र ! बीजा समर्थ पुरुषोथी पण तमारा विना आ कार्य थवुं असाध्य छे." श्री कृष्णे फरी गर्वथी कह्युं. " हे वत्सो ! तमे स्थिरमनवाला थइने रहो. हुं महा कष्टकारी उपायोथी पण ते म्होटां कार्यने पार पामीश." आम कहीने पछी कृष्ण श्री जिनेश्वरनी पूजा करवा पूर्वक अनशन करी अने समुद्राधिष्ट देवनुं मनमां स्मरण करी दर्भासन उपर बेठा. पोतानां चित्तनी एकाग्रताथी अने पूर्वपुण्यना योगथी त्रीजे दिवसे प्रत्यक्षपणाने पामीने समुद्रदेवे कृष्णने कह्युं के, " हे वत्स ! वरदान माग." कृष्णे कह्युं. " मने पांमवो सहित बीजा द्वीपमां अमरकंका नगरी प्रत्ये लइ जा के, ज्यां हुं पद्मोत्तर राजाने मारी ड्रौपदीने अहिं पाछी लावुं. " देवताए कह्युं. " म्हारा अतिशये करीने तमो छए जणा छ रथवमे आ समुद्रने उलंघन करी ते नगरी प्रत्ये जाउ अने त्यां कार्य सिद्धि करी तुरत बंधुउ सहित पाछा आवजो." पछी हर्ष पामेला कृष्णे समुद्राधिदेवने रजा आपी एटले महा बलवाला पोते सवारे पांमवो सहित पारणुं करीने छ रथोए करीने बीजा द्वीप प्रत्ये चाल्या. देवना प्रभावथी समुद्रमां पण जमीननी पेठे चालता एवा पांमुपुत्रो सहित श्री कृष्ण नारदे कहेली अमरकंका नगरी प्रत्ये आवी पहोच्या. त्यां एक उद्यानमां पमाव करीने पछी कृष्णे पांमवोने हर्षथी कह्युं के, " हुं ए शत्रुने जीती ड्रौपदीने लइ अहिं आवुं त्यां सुधी तमे अहिं आ उद्यानमां रहो." कृष्णनां आवां वचन सांभली अति हर्ष पामेला पांमवोए कह्युं. " हे देव ! आपना विद्यमानमां अमारां डुष्कर कार्यो पण सिद्ध थशे. परंतु पो-

तानी कार्यसिद्धिमां अमारे पोतानी शक्ति जोमवी जोइए, बता ते कार्यसिद्धि न थइ तो पबी तमे तो बोज." पबी श्रीकृष्णनी आज्ञाथी पांचे पांमवो रथ नुपर बेसीने चाल्या अने तेमणे पोतानुं आगमन दूत मारफते पद्मोतर राजाने कहेवराव्युं. पद्मोत्तर नूपति पण तुरत नगर बहार आव्यो. अति क्रोधातुर थयेला पद्मोत्तर नूपतिये पांमवोने युद्ध करवा आवेला जोइ कांइक पोतानुं बल देखामीने एवी रीते सिंहनाद कर्यो के, जेथी तेनां तेजने नहि सहन करी शकनारा पांमवो कागमानी पेठे नासी जइ "अमारुं रक्षण करो! रक्षण करो!!" एम कहेता बता बहु नयथी कृष्णनो आश्रय करवा लाग्या. पबी "हे पांमवो! तमे चित्तमां नय न पामो. ए कीमो म्हारी आगल कोण मात्र बे?" एम कहीने नयंकर आकृतिवाला कृष्ण तुरत पद्मोत्तर राजा सामा थया.

पबी "अरे पारकी स्त्रीयोना संगने इच्छनारा दुराचारी पापी! तुं क्यां जाय बे? हुं सर्व पुत्रादि सहित तने हवणां वातरूपे करुं बुं. अर्थात् मारी नांखुं बुं." आम कहीने कृष्णे सिंहनाद समान एक म्होटो एवो नयंकर शब्द कर्यो के, जेथी ते राजानुं सर्व सैन्य सिंहना नयथी हाथीयोनां टोलांनी पेठे नासी गयुं. कल्पांत कालना अग्निनी पेठे अति क्रोध पामेला कृष्णने आवता जोइ बहु नयथी पद्मोत्तर राजा पण नासी गयो. ठीकज बे, तेवा पुरुषोना आगल रहेवाने कोण समर्थ बे? पद्मोत्तर राजाए, तुरत पोतानी नगरीमां पेसी दरवाजा बंध कराव्या एटले कृष्ण नरसिंहरूप धारण करी तेनी पाबल चाल्या. पद्मोत्तर नूपतिये दरवाजा बंध करेला जोइ पोतानां क्रोधरूप अग्निमां आहुति आपवानी इच्छावाला कृष्णे पोताना पग प्रहारथी सर्व कील्लो तोमी पाम्यो. पबी नगरीमां पेसी पोतानां अति नयकारी रूपथी सर्व जनोने बहु त्रास पमामता कृष्णे राजद्वारमां प्रवेश कर्यो. महा नयंकर आकृतिने धारण करनारा ते कृष्णने पोताना अंतःपुरमां आवता जोइ बहु नय पामेला राजाए बीजा कोइने पोतानुं रक्षण करवा समर्थ न दीठाथी द्रौपदीनुं शरण लीधुं. कृष्णे द्रौपदीनी पासे गयेला पद्मोतर नूपतिने जोइ कह्युं के, "अरे महा अपराधी पद्मोत्तर! तुं आवुं म्होटुं कुकर्म करीने वली तेज द्रौपदीने शरणे गयो? अरे अधम राजा! जो तें आ महासतीनुं शरण

लीधुं, तो महा अपराधी एवाय पण तने हुं छोडी दउं छुं, पण हवेथी आवुं पाप करीश नहि." पछी त्यांथी द्रौपदीने लइ कृष्णे पांडवोने अर्पण करी. पांडवो पण बहु हर्ष पूर्वक विस्मय पामीने कृष्णने प्रणाम करवा लाग्या. पोतानी कार्यसिद्धिथी अति प्रसन्न थयेला चित्तवाला कृष्ण पांचजन्य शंखनो शब्द करीने जेटलामां पांडवो सहित पाछा वळ्या तेटलामां तीर्थंकरनी सभामां बेठेला, भयभ्रांत चित्तवाला अने महाशक्तिवाला ते द्वीपना वासुदेवे श्रीतीर्थंकर प्रभुने पूछ्युं के, "हे प्रभो ! आवो सर्व बलने हरण करनारो पांचजन्य शंखनो शब्द कोणे कर्यो ?" वासुदेवनां आवां वचन सांभली तीर्थंकर महाराजे कृष्णनुं आगमन विगेरे सर्व वृत्तांत कही आप्युं. वासुदेवे फरीथी पूछ्युं. "हे तीर्थनाथ ! हुं त्यां जाउं तो मने तेमनुं मलवुं थशे ?" तीर्थपतिये कह्युं. "तमारा एक बीजाना शंखनादथी शुं साक्षात् मलवुं न कहेवाय ? अर्थात् कहेवाय."

पछी वासुदेव त्यांथी झट उठी कृष्णने मलवा माटे जेटलामां समुद्रने कांठे आव्या तेटलामां कृष्ण, समुद्रने विषे बहु दूर जता रह्या. धातकी खंडना वासुदेवे, कृष्णना रथनी ध्वजा जोइ चित्तमां बहु हर्ष पामीने पोताना पांचजन्य शंखनो शब्द कर्यो. कृष्णे पण पोताने मलवा आवेला धातकी खंडना वासुदेवने जाणी तेना सामो पोताना पांचजन्य शंखनो शब्द कर्यो. पछी देवना प्रभावथी न्हाना तलावनी पेठे समुद्रने उल्लंघन करी भागीरथी (गंगा) ने कांठे आवेला कृष्णे पांडवोने तुरत कह्युं के, "हे बांधवो ! आपणे आ दुर्लंघ्य एवा समुद्रने उलंगी अहिं आव्या ते देवताना प्रभावनुं खरुं पवित्र कारण जाणो; पण हवे आ नदी आपणे रथोवडे तरवी अशक्य छे, माटे क्यांइथी उत्तम होडी लइ आवो." श्री कृष्णनी आवी आज्ञाथी पांडवो क्यांइथी होडी लइ आव्या एटले फरी कृष्णे तेमने कह्युं के, "तमे प्रथम आ होडीथी गंगाने पेले पार जाउ. पछी ते पाछी म्हारे माटे झट मोकलजो के, जेथी हुं पण तुरत तेमां बेसी त्यां आवुं." पवित्र पत्नी सहित पांचे पांडवो "बहु सारुं" एम कहीने तुरत होडीमां बेसीने चाल्या अने थोडा कालमां हर्षथी गंगाना सामे कांठे गया. हवे अहिं पांडवो परस्पर विचार करवा लाग्या के, "आजे आपणे कृष्णनुं बल जोइए. कारण के, ते

पोताना ज्जुजथी गंगाने जतरी अहिं आवशे." आम धारी तेजए होम्री पाडी मोकली नहि. बहु वखत थयो पण होम्री आवी नहि; तेथी "शुं पांम्वोने कंइ विघ्न तो नहि थयुं होय?" एवा विचारथी आकुलव्याकुल थयेला कृष्ण ज्जुजबलथी गंगाने तरता तरता मध्ये आव्या, तेटलामां तेमना ज्जाग्यथीज त्यां एक टेकरी आवी. थोम्रीवार विश्राम लइ पडी गंगाने तरी जेटलामां सामे पार प-होंच्या तेटलामां तेमणे पांम्वोने कुशल दीठा. पडी हर्ष पामेला कृष्णे तेमने पूड्युं के, "हे बांधवो! तमे आ होम्री म्हारा माटे केम न मोकली?" पांम्वोए हसीने कह्युं. "अमे तमारा बलनी परीक्षा करवा माटे ते होम्री न मोकली." पां-म्वोनां आवां वचन सांज्जली बहु क्रोध पामेला कृष्णे कह्युं. "अरे! पद्मोत्तर राजाना ज्जयथी नासी गयेला तमोए शुं त्यांज म्हारी परीक्षा नहोती करी? हवे तमारे म्हारा देशमां रहेवुं नहि अने हुं तमारुं मुख नहि जोउं." एम कही बहु कोपथी पांम्वोना रथोने ज्जागी नाखी कृष्ण पोतानी द्वारका नगरीप्रत्ये चाल्या गया.

पडी बहु खेद पामेला पांम्वो परस्पर विचार करवा लाग्या के, "आ-पणने धिक्कार डे! जे आपणे आवुं अहित कार्य विचार्युं. अत्यंत रोष पा-मेला कृष्णे आपणने पोतानी आज्ञाथी अर्थात् पोतानी आज्ञा वर्त्तती होय तेटला देशमांथी बहार काढ्या डे. तो हवे आपणे क्यां जवुं? कारण के, अर्द्ध ज्जरत क्षेत्रमां तो तेमनी आज्ञा वर्त्ते डे. सर्व यादवोने आपणी माता कुंती मान्य डे, माटे कृष्णने शांत करवा माटे तेमने मोकलीए. कह्युं डे के—पूज्यनुं वचन हरिने पण मान्य होय डे." पडी त्यां पोतानी माता कुंतीने बोलावी अने पोतानां कार्यनी वात करीने कृष्ण पासे मोकली. कुंती पण थोमा दि वसमां श्री कृष्ण पासे जइ पहोंची. नमस्कार, आसन जपर बेसारवुं अने दिव्यज्जाव इत्यादिकथी कृष्णे बहु सत्कार करीने पडी पूड्युं के, "हे फोइ! तमे जचिंतां शा कारणे आव्यां डो?" कुंतीये कह्युं. "हे वत्स गोविंद? बंधुरूप पां-म्वोने विषे क्यारे पण अहित नहि इडनारा तमने तेमना जपर मनुष्योथी अ-सह्य एवो बहु कोप शा माटे थयो?" कृष्णे कह्युं. "हे माता! मने आपना पुत्रोने विषे शुं अहित होय? परंतु एमणेज म्हारा जपर बहु द्वेषो कर्या डे तेज मने विरुप लागे डे अने तेज कारणथी में तेमने म्हारी आज्ञा वर्त्तती हो-

य त्यां रहेवानी ना कही ले. हे फोइ ! खरेखर आ अनीतिरूप डुष्ट वेलना फलनेज तमे जाणो." कुंतीये कह्युं. " पांफवोए बंधुरूप तमारी साथे हास्य कर्युं हतुं, तेमां तमे आवुं कृत्य मुग्धपणाथी कर्युं ले. तमो म्होटा गो माटे ते ते सर्व सहन करता आव्या गो, तेथी तमारा न्हाना नाइयोनो आ अपराध पण सहन करो. हे हरि ! अर्द्ध नरतखंफमां सर्व स्थानके तमारी आज्ञा वर्त्ती रही ले तो पली पांफवो क्यां जशे ? तमे तेमने खरेखर मृत्युकारी आज्ञा करी ले. पांफवोनां मृत्यु पली तुरत म्हारुं पण मृत्यु थशे अने तेथी तमने म्होटो पस्तावो थशे, माटे विचार करीने तेवी आज्ञा करवी मूकी द्यो. कह्युं ले के–म्होटा पुरुषो विचार्या विना कांइ पण कार्य करता नथी." कुंतीनां आवां वचन सांनली कृष्णे कोप त्यजी दीधो. कह्युं ले के–लोकमां म्होटा पुरुषो निरंतर गुरुनी आज्ञा माननारा होय ले. पली कृष्णे कह्युं. " हे मात ! में जे कह्युं ले ते अन्यथा न होय, माटे तमारा पुत्रो त्यांज एक म्होटुं नगर वसावीने रहो. वली अर्जुनना पौत्र (अन्निमन्युनो पुत्र) परिक्षित पिताना पदे राज्य करो. हे मात ! आ म्हारी आज्ञा तमारा पुत्रोए क्यारे पण उल्लंघवी नहि. पली कुंतीये कृष्णना आवा कदाग्रहने जाणी तुरत पोताना पुत्रो पासे आवीने ते सर्व वात कही. पांफवो पण कृष्णनुं कहेलुं सांनली बहु हर्ष पाम्या. सरल हृदयवाला पांचे पांफवो श्री कृष्णना बलथी धातकीखंफनी अमरकंका नगरीना पद्मोत्तर राजाने जीती अने हरण करेली पोतानी प्रिया डौपदीने पाली लावीने कृष्णनी आज्ञाथी गंगाने तटे नगर वसावी त्यां निरंतर सुखेथी रहेवा लाग्या.

इति ऋषिमंफलवृत्तौ पांफवचरित्रे डौपद्यपहारकधातकीखंफस्थामरकंकापूःपतिपद्मोत्तरजयडौपदीवालनादिवर्णननामाष्टमोऽधिकारः॥८॥

पली त्यां पांफवोए पासेना अनेक राजाउने युद्धमां जीती पोतानां पूर्वना सरखुं राज्य करवा लाग्या. कह्युं ले के–पुण्यवंत पुरुषोने सुखज मले ले. कोइ वखते हर्षित चित्तवाला पांफवो सन्नामां बेठा हता, एवामां जराकुमारे त्यां आवीने तेउनी आगल कौस्तुन्नमणि मूक्यो. पली मणि जोवाथी उत्पन्न थयेली शंकावाला पांफवोए तेने पूल्युं. "हे नाई ! यडुपति (कृष्ण)नां हृदयस्थ-

लने सुशोन्नित करनारो अने बीजा अनेक राजाउथी पण अलन्य एवो आ मणि त्हारी पासे क्यांथी आव्यो? कृष्णनुं महा दुःखदायी एवुं मृत्यु थयुं के शुं?" जरा कुमारे कह्युं. "कोप पामेला देवताए उत्तम एवी द्वारकापुरी दग्ध करी, तेथी भ्रष्ट थइ छे संपत्ति जेनी एवा कृष्ण अने बलन्नद्र बन्ने जणा तमने तुरत मलवा माटे आवता हता. रस्ते महावनमां कृष्णने बहु तरस लागी, तेथी ते एक लतावनमां वृक्षनी नीचे सूता अने बलन्नद्र तेमना माटे जल लेवा गया. में वनमां न्नमता न्नमता हरिणना भ्रमथी सूतेला कृष्णने बाण मार्युं, तेथी ते मृत्यु पाम्या. पोतानां बाणथी विंधायला कृष्णने जाणी बहु खेद करता अने घाढ शोकथी व्याप्त थयेला मने कृष्णे कह्युं. "तें म्हारा पगने विंध्यो, पण तेथी खेद न कर; कारण जिनेश्वरनुं वचन वृथा थतुं नथी. निश्चे में श्रीजिनेश्वरनां कहेवाथी जाण्युं छे के, म्हारुं मृत्यु आ बाणवे दनाथी थवानुं छे; माटे हवे तुं अहिंथी झट नासी जा. कारण जो हवणां बलदेव आवशे तो तने तुरत मारी नाखशे." में कह्युं. "हे बंधो! हुं आवुं घोर पाप करीने क्यां नासी जाउं? वली म्हारुं न्नावी स्थान क्यां छे?" कृष्णे कह्युं. "तुं आ कौस्तुन्नरत्न लइने झट पांमवो पासे जा अने तेमने तें आ करेला म्हारा मिथ्या अपराधरूप पापनी खबर केजे. तेउ उत्तमपणाथी तने इष्ट वस्तु आपशे, माटे तुं झट तेमनी पासे जा.(जराकुमार, पांमवोने कहे छे के,) हे नृपतियो! कृष्णनां जीवितपर्यंत बहु दुःख पामेलो हुं त्यांज रह्यो; परंतु तेमना मरण पछी हणाइ छे आशा जेनी एवो हुं बलन्नद्रना बहु न्नयने लीधे त्यांथी झट नासीने अहिं तमारी पासे आवतो रह्यो छुं." महावज्रपात समान कृष्णनुं मृत्यु सांन्नली गाढ शोक समूहथी आकुलव्याकुल थयेला पांमवो मूर्छा पाम्या. बहु वखते शीतल वायुना योगथी तत्काल सचेत थयेला तेउ दीर्घकाल पर्यंत खेद करीने पछी चित्तमां गाढ उत्पन्न थयेला वैराग्यने लीधे परस्पर कहेवा लाग्या के, "धिक्कार छे! धिक्कार छे!! आ संसारनी स्थितिने के, जेमां अंत वखते आवा पुरुषोनी पण आवी अशुन्न व्यवस्था थाय छे. निश्चे आपणे पण सर्व दुःखसमूहना एक कारणरूप आ संसार त्यजी देवा योग्य छे. आ न्नवमां आपणने संसाररूप समुद्रने विषे वहाण समान श्री नेमिनाथ प्रन्नुना चरणो शरणरूप थाउ." पांमवो आ प्रमाणे विचार करता हता एवामां एम बन्युं

के, आ वखते शरणे आवेलानुं रक्षण करनारा श्री नेमिनाथ प्रज्जुए पांम्वोने जैन दीक्षानो अवसर जाणी तेमने प्रबोध पमाम्वा माटे पांचसे साधुज्ज सहित श्री धर्मघोष मुनिने मोकल्या. पछी मुनिने उद्यानमां आवेला जाणी वहु हर्ष पामेला पांम्वो परिवार सहित तेमने वंदन करवा गया. त्यां तेज्जए वहु आदरथी तेमनी मोहविनाशकारी धर्मदेशना सांज्जली. त्यारबाद प्रबोध पामेला पांम्वोए आदरथी मुनिने पोताना ज्जवो पूछ्या एटले ते मुनिवरे ज्ञानथी तेमना ज्जवो जाणीने पछी तुरत मधुर वचनथी आ प्रमाणे कह्युं.

" धरणीज्जूत नगरमां परस्पर प्रीतिवाला सुरति, शांत, सुदेव, सुज्जद्रक अने संयुत नामना पांच बंधुज्ज रहेता हता. एकदा दारिद्र्रूप कादवमां अति निमग्न थयेला तेज्जए यशोधर सूरिनां मुखथी अतिहितकारी धर्म सांज्जल्यो, तेथी तेज ज्जवमां विरक्त थयेला तेज्जए आदरथी अरिहंत धर्मनुं आचरण कर्युं. पोतानां शरीरने विषे पण निःस्पृह एवा तेज्जए अति ज्जयंकर उनालाथी उत्पन्न थयेला उत्तम तपरूप सूर्यना आकरा तापथी पोताना घाटा कर्मरूप तलावमाने थोमा वखतमां सूकवी दीधां; जेथी तेज्ज बहु शांत थया. त्यारपछी तेज्जए पहेलो कनकावली नामनो तप कर्यो. बीजो मुक्तावली नामे, त्रीजो पण मुक्तावली नामनो तप करीने पछी चोथो सिंहनिकेत नामनो. एम अनुक्रमे चार तप कर्या. छेवट आंबिल पूर्वक वर्द्धमान नामनो तप करीने सुज्जद्रक एवा नामनो तप कर्यो. आ प्रमाणे तप करता एवा तेज्ज, पांच इंद्रियोने वश राखी पांच महाव्रतोने पालता हता. छेवट पोतानां कर्मरूप देहने तेमज धातुरूप देहने तपरूप अग्निना तापथी शोषण करी अंते अनशनपूर्वक मृत्यु पामीने अनुत्तर वैमानमां श्रेष्ठ देवताज्ज थया. त्यांथी चविने महा बलवंत एवा तमो पांम्वरूपे उत्पन्न थया छो. हे नरेंद्रो ! आ ज्जवने विषे पण तमने म्होटो मोक्ष लक्ष्मीनो लाज्ज थशे. " यशोधर मुनीश्वरनां आवां वचन सांज्जली वैराग्यरसथी पूर्ण थयेला अने मोक्षलक्ष्मीनी इच्छा करता ते पांम्वोए पोतानां राज्यने विषे जराकुमारने स्थापन करी पोते गुरुनी पासे चारित्र लीधुं. कृष्णनी वात सांज्जली जेनो आत्मा छीन्न छीन्न थइ गयो हतो एवी कुंतीये पण दीक्षा लीधी. पांच अज्जिग्रहथी सुशोज्जित एवा पांम्वो, नाना प्रकारनां तप करवा लाग्या. चार समिती, त्रण गुप्ति अने पांच महाव्रतोने धारण करनारा

ते पवित्र पांचे पांडवो विविध प्रकारे गुरुए कहेली शिक्षाने धारण करवा पूर्वक अति निर्मल एवां चारित्रने पालवा लाग्या. दुर्दम एवा पांच इंद्रियोरूप अश्वोने संवेगरूप दोरीथी बांधी लइ दुःकर्मरूप शत्रुओथी जय पामता एवा पांडवो नवकल्पी विहार करवा लाग्या. घोर उपसर्गोने तेमज अत्यंत दुःसह एवा परीषहोने सहन करता एवा पांडवोरूप मुनीश्वरो चार प्रकारना देवताओने पण अत्यंत अक्षोभ्य थया. उजयंत (गिरनार) उपर श्री नेमिनाथने समवसरेला जाणी भक्तिथी उछलती पुलकावलीने धारण करता एवा पांडवो तेमने वंदन करवानी इच्छाथी ते पर्वत तरफ चाल्या. अनुक्रमे पांडवो विहार करता जेटलामां हस्तिनापुर प्रत्ये आव्या तेटलामां तेमणे माणसो पासेथी श्री नेमिनाथ प्रभुनी गरिष्ट एवी मोक्षगति सांभली. पछी बहु खेद पामेला पांडवो, विचार करवा लाग्या के, " आपणने धिक्कार छे, जे जगत्‌ने नमस्कार करवा योग्य श्री नेमिनाथ प्रभुने आपणे प्रमादने लीधे वंदना करी शक्या नहि. हवे आपणे आ पाछल रहेला देहवडे शुं कार्य छे ? माटे चार प्रकारना आहारने त्याग करी तुरत कुकर्मनो क्षय करीए. " आम विचार करीने पछी पांडवो, गिरनारने प्रदक्षिणा करी शत्रुंजय तीर्थ प्रत्ये आव्या. त्यां तेओ कुंती सहित, सर्वकर्मनो क्षय करी अनंत सुखवाला सिद्धिपदने पाम्या. द्रौपदी पण शुद्ध एवां चारित्रनुं आचरण करी पांचमा देवलोकनुं दीर्घकाल पर्यंत सुख भोगवीने निश्चे तेज भवमां मनुष्योना महोदयने पामशे. जराकुमारनां मुखथी श्री कृष्णना मृत्युने सांभली स्पष्ट उत्पन्न थयेला वैराग्यवाला पांचे पांडवो पोताना पूर्व भवने सांभलीने वैभव त्यजी दइ कुंती सहित शत्रुंजय पर्वत उपर सिद्धिपद पाम्या. द्रौपदी पण पांचमा देवलोक प्रत्ये गइ.

इति ऋषिमंडलवृत्तौ द्वितीयखंडे श्रीपांडवचरित्रे
पांडवमोक्षगमननाम नवमोऽधिकारः ॥

॥ इतिपांडवचरित्रं समाप्तम् ॥

॥ इति ऋषिमंडलवृत्तौ पूर्वार्द्धं समाप्तम् ॥

आ ग्रंथमां दृष्टिदोषथी थयेली भूल्योनुं शुद्धिपत्र.

पृष्ट.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
४	६	घनसार्थपातिनो	धनसार्थपतिनो
१२	२५	रत्नकंबनी	रत्नकंबलनी
१३	१०	उक्कृष्ट	उत्कृष्ट
१५	२२	चंक्षुकांता	चक्षुकांता
१७	१५	विगेरना	विगेरेना
१९	४	विगेरना	विगेरेना
२१	११	केवलज्ञानं	केवलज्ञान
२३	५	तप	ताप
३७	१३	पुष्पने	पुष्यने
४२	५	घ्यानमां	ध्यानमां
४९	२५	उपसर्ण	उपसर्ग
५३	२	तेमने	तमने
८८	७	ज्वलनटी	ज्वलनजटी
१३५	२६	विधानवालो	निधानवालो
२१४	३	तेने	तने
२३१	१४	भारतने	भरतने
२३४	१९	ते	तें
२४५	१	लोकोपवादने	लोकापवादने
२४५	६	अपवादन	अपवादने
२४५	१५	सुकृतवंतवंघो	सुकृतवंतवंधो
२४६	१४	तेन	तेने
२६४	२५	जनकरात्री	जनकपुत्री
२७८	२१	तापस्वीपोमां	तपस्वीयोमां
२८६	१	वधुओनो	बंधुओनो
२९१	१२	देव	देवे
२९४	९	वेठेला	वेठेला
३०१	३	पुरुपोन	पुरुषोने
३१६	१७	दुर्दर	दर्दुर
३१९	१५	शत्नुओए	शत्रुओए
३५१	२३	नैमिात्तिक	नैमित्तिक
३८२	२८	पोतज	पोतेज
४०४	११	राज्यसन	राज्यासन
४०७	१२	पुत्रीने	पुत्रने
४०८	२१	कारवपक्षीने	कौरवपक्षीने
४१८	२३	तिस्कार	तिरस्कार
४४१	५	दीधी	दीधो
४६२	१४	पीतानो	पितानो



आ ग्रंथमां दृष्टिदोषथी थयेली भूलोनुं शुद्धिपत्र.

पृष्ट.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
४	६	घनसार्थपतिनो	धनसार्थपतिनो
१२	२५	रत्नकंवनी	रत्नकंवलनी
१३	१०	उकृष्ट	उत्कृष्ट
१५	२२	चंक्षुकांता	चक्षुकांता
१७	१५	विगेरना	विगेरेना
१९	४	विगेरना	विगेरेना
२१	११	केवलज्ञानं	केवलज्ञान
२३	५	तप	ताप
३७	१३	पुष्पने	पुष्यने
४२	५	ध्यानमां	ध्यानमां
४९	२५	उपसर्ण	उपसर्ग
५३	२	तेमने	तमने
८८	७	ज्वलनटी	ज्वलनजटी
१३५	२६	विधानवालो	निधानवालो
२१४	३	तेने	तने
२३१	१४	भारतने	भरतने
२३४	१९	ते	तें
२४५	१	लोकोपवादने	लोकापवादने
२४५	६	अपवादन	अपवादने
२४५	१५	सुकृतवंतवंधो	सुकृतवंतबंधो
२४६	१४	तेन	तेने
२६४	२५	जनकरात्री	जनकपुत्री
२७८	२१	तापस्वीपोमां	तपस्वीयोमां
२८६	१	वधुओनो	बंधुओनो
२९१	१२	देव	देवे
२९४	९	वेठेला	बेठेला
३०१	३	पुरुषोन	पुरुषोने
३१६	१७	दुर्दर	दर्दुर
३१९	१५	शस्रुओए	शत्रुओए
३५१	२३	नैमित्तिक	नैमित्तिके
३८२	२८	पोतज	पोतेज
४०४	११	राज्यसन	राज्यासन
४०७	१२	पुत्रीने	पुत्रने
४०८	२१	कौरवपर्क्षीने	कौरवपक्षीने
४१८	२३	तिस्कार	तिरस्कार
४४१	५	दीघी	दीधो
४६२	१४	पीतानो	पितानो



हवे प्रथम चक्रवर्त्ती एवा भरतमुनिनी स्तुति करे छे.

भरहमहारायरिसिं, गिहिवेसुपन्ननाणवररयणं ॥
दसहिं सहस्सेहि समं, निक्खंतं वंदिमो सिरसा ॥ ४ ॥

अर्थ–जेमने गृहस्थना वेशमांज केवलज्ञानरूप रत्न उत्पन्न थयुं छे अने जेमणे दशहजार राजाउनी साथे चारित्र अंगीकार कर्युं छे एवा ते भरत महा राजर्षिने अमे मस्तकवडे नमस्कार करीए छीए.

हवे महाबल एवा बाहुबलि महर्षिनी स्तुति करे छे.

हत्थिविलग्गस्स न के-वलं तिसोऊण वरिसपडिमंते ॥
पयपउमसमुप्पाडिअ-नाणवरो जयउ बाहुबली ॥५॥

अर्थ–जेमणे एक वर्ष कायोत्सर्गे रह्या पछी "हाथी (गर्वरूप हाथी) उपर चडेलाने केवलज्ञान न होय." एवां पोतानी व्हेनोनां वचन सांभली आगल चालवा माटे पग उपाडवाथी जेमने केवलज्ञान प्राप्त थयुं छे एवा बाहुबलि जयवंता वर्तो ॥ ५ ॥

आ भरत अने बाहुबलिनो संबंध श्री रुषभदेवना चरित्रथी जाणी लेवो. हवे भरतराजाना वंशना अजितनाथ सुधीना सर्व राजर्षिउनी स्तुति त्रण गाथाथी कहे छे.

सुरवइणा अहिसित्ता, भरहपए अद्धभरहवरपहुणो ॥
आइच्चजसप्पमुहा, अठवि सासयसुहं पत्ता ॥ ६ ॥

अर्थ–सौधर्मेंद्रे जेवी रीते भरतराजाने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं ते वखते तेमनो केवल महोत्सव करीने तेमना पदे तेमना पुत्रने राज्याभिषेक कर्यो तेज प्रकारे अर्ध चक्रवर्त्तीनो अर्धा भरतक्षेत्रना राज्यने विषे राज्याभिषेक कर्यो छे. भरतना पुत्रोनो वंश नीचे प्रमाणे १ आदित्ययशा, २ महाबल. ३ अतिबल. ४ बलभद्र, ५ बलवीर्य, ६ कार्तवीर्य; ७ जलवीर्य अने ८ दंडवीर्य एम आठ आठ पुत्रो साश्वता सुखने पाम्या छे. ते वात आदिनाथना चरित्रथी जाणी लेवी ॥ ६ ॥

अन्नेवि पुहविवइणो, उसभस्स पउप्पए असंखिज्जा ॥
जावजिअसत्तुराया, अजियजिणपिआ समुप्पन्नो ॥ ७ ॥

अर्थ—श्री ऋषभदेव प्रभुना पछी तेमना वंशने विषे श्री अजितनाथ
रना पिता जितशत्रु राजा जेटला कालमां उत्पन्न थया छे तेटला का-
(पचास क्रोड लाख सागरोपम कालमां) बीजापण असंख्याता पृथ्वीप-
थइ गया छे ॥ ७ ॥

तेउए शुं कर्युं छे ? ते नीचेनी गाथाथी कहे छे.

उज्झित्तु रज्जलच्छिं, पव्वइआ केवि सिवपुरं पत्ता ॥
सव्वठ्ठपवरम्मवरे, अवरे ते वंदिमो सिरसा ॥ ८ ॥

अर्थ—तेमांथी केटलाक तो राज्यलक्ष्मीने त्यजी दइने दीक्षा धारण करी
रने पामेला छे अने बाकीना सर्वार्थसिद्ध वैमाने प्राप्त थया छे. ते सर्वेने
तकवडे नमस्कार करुं छुं ॥ ८ ॥

भरत चक्रवर्त्ती संबंधी जे कांइ कहेवानुं हतुं ते आगलनी गाथामां क-
गयुं छे. हवे बाकी रहेला चक्रवर्त्तीनी स्तुति एक गाथाथी कहे छे.

तणमिव भरतपहुत्तं, चइत्तु नरवइसहस्सपरिअरिए ॥
निक्खंते नरनाहे, नमामि नवसगरपामुक्खे ॥ ९ ॥

अर्थ—भरतक्षेत्रना प्रभुपणाने तृणनी पेठे त्यजी दइने हजारो भूपति-
परवरेला अने दीक्षा धारण करेला सगर विगेरे नव चक्रवर्त्ती राजाउने
स्कार करुंछुं. आ गाथानी अंदर "नव" ए शब्द मूक्यो छे, ते उपरथी
मजवानुं के, चक्रवर्त्तीयो बार छे. तेमां प्रथम भरतनुं आख्यान आगल
छे. सुभूम अने ब्रह्मदत्त सातमी नरके गयेला होवाथी तेउ वंदना करवाने
नथी; बाकीना नव वंदना योग्य छे एज हेतुथी "नव" शब्द मूक्यो छे.

हवे तेमां प्रथम सगर चक्रवर्त्तीनुं चरित्र कहेवाय छे.

॥ श्री सगर चक्रवर्त्ती चरित्रम् ॥

साकेत नगरने विषे इक्ष्वाकु कुलमां उत्पन्न थयेला अने पापथी भय पामता
जितशत्रु अने सुमित्र नामना बे भाइउ राज्य करता हता. तेमां जित-
जाने विजया नामनी स्त्री हती अने सुमित्रने वैजयंती नामनी गुण-
त्री हती.

एक दिवस विजया अने वैजयंती ए बन्ने स्त्रीयोए जूदा जूदा गजादि चौद

महास्वप्नो दीठां. प्रज्ञाते ते वात तेउए पोतपोताना पतिने कही एटले जितशत्रु अने सुमित्र ए बन्ने ज्ञाइयोए स्वप्न पाठकोने बोलावीने स्वप्ननो अर्थ पूछ्यो. ते उपरथी स्वप्न पाठकोए तेउने कह्युं के, "तमारे एकने तीर्थंकर अने बीजाने चक्रवर्त्ती एवा बे पुत्रो थशे." अनुक्रमे तेउने उत्तम लक्षणवाला बे पुत्रो थया. तेमां एके पोताना पुत्रनुं नाम अजित अने बीजाए सगर पाड्युं. पठी अनुक्रमे वृद्धि पामीने उत्कृष्ट यौवनने पामेला ते बन्ने पुत्रोने माता पिताए उत्तम रूपवाली राजकन्याउ परणावी. पठी जितशत्रु राजाए अजितने राज्यासन उपर बेसारी सगरने युवराज पद्वि आपी पोते महोत्सवपूर्वक सुमित्र बंधुनी साथे ज्ञावथी दीक्षा लइ उत्तम प्रकारे चारित्रने पाली मोक्षपद पाम्यो.

हवे अजित राजा पण दीर्घकाल सुधी राज्यने पाली पठी सगरने पोताने पदे स्थापी पोते दीक्षा लइ त्रिजगत्प्रज्ञु एवा तीर्थंकर थया. अढार लाख पूर्व कुमार अवस्थामां, त्रेपन लाख पूर्व राज्यावस्थामां, बार वर्ष ठद्मस्थावस्थामां अने एक लक्षपूर्वथी कांइक उठुं चारित्रावस्थामां एम सघलुं मली प्रज्ञुनुं बोंतेर लाख पूर्वनुं आयुष्य हतुं.

हवे सगर राजा पण ठ खंमवाला ज्ञरतक्षेत्रने साधीने चौद महारत्न तथा नव निधाननो अधिपति थयो. साम्राज्यनुं पालन करता एवा ते राजाने सर्वांगे सुंदर एवा जन्हुकुमार विगेरे साठहजार पुत्रो थया. एक दिवस तेउ सर्वे पितानी आज्ञा लइ सघला ज्ञरतक्षेत्रने जोवा माटे पोताना नगरथी निकळ्या. अनुक्रमे तेउ दीन अने अनाथ लोकोने प्रीतिदान आपता तथा महोत्सव करता अष्टापद पर्वतप्रत्ये गया. त्यां तेउ ज्ञरतराजाए करावेलुं श्री अरिहंत प्रज्ञुनुं प्रासाद जोइ अने पोत पोताना वर्ण अने प्रमाणयुक्त तेमनी प्रतिमाने जोइ तेमने वंदन करी आश्चर्ययुक्त थया ठता पोताना मंत्रिने पूठवा लाग्या के, " जगत्ने आश्चर्यकारी एवुं आ प्रासाद कोणे कराव्युं ठे ? " मंत्रीये कह्युं. " हे कुमारेंडो ! सांज्ञलो, ते हुं तमने कहुं. "

पूर्वे तमारा कुलने विषे समर्थ एवा श्री युगादि प्रज्ञु तीर्थंकर थया ठे. जेमणे प्रथम राज्यपद्वि धारण करी चार वर्णनी व्यवस्था करी ठे. शिल्पशास्त्र, कला, विकला अने अढार प्रकारनी लिपी पण तेमणेज लोकोना उपकारने माटे करी ठे. पठी लोकांतिक देवताए आवीने दीक्षानो अवसर नजिक

आवेलो कहेवाथी प्रभुए पोताना सो पुत्रोने जूदा जूदा राज्यने विषे स्थापीने अने एक वर्ष पर्यंत दानरूप आषाढ मासना मेघथी छखंड पृथ्वीने शीतल करीने इंद्रे करेला महोत्सव पूर्वक चार हजार राजाउ सहित चारित्र धारण करी छेवट दश हजार साधुउ सहित मोक्षलक्ष्मीनो अंगीकार कर्यो. पछी प्रभुना सो पुत्रोनी मध्ये जे पवित्र बुद्धिवालो म्होटो भरत हतो ते आ भरतक्षेत्रने विषे प्रथम चक्रवर्त्ती थयो. तमारा पिता तुल्य एवा ते राजाए आ जिनेश्वरनुं प्रासाद करावीने तेमां पोत पोताना प्रमाण तथा वर्णवाला जिनेश्वरोनी चोविश प्रतिमाने स्थापन करी. आ प्रमाणे कर्या पछी महात्मा एवा ते भरत चक्रवर्त्तीये पोताना वार्द्धिकि रत्नवडे रत्नमय स्तुपो अने बीजुं सघलुं एज प्रमाणे कराव्युं. ज्यां सुधी भरत चक्रवर्त्तीये पांच लक्ष पूर्व पर्यंत राज्य कर्युं त्यां सुधी तेणे पोतेज पूर्ण भक्तिथी ए सर्वप्रतिमाउनुं पूजन कर्युं. पछी समग्र अलंकार युक्त देहवाला अने भावनाने भावता एवा भरत राजा अरिसाभुवनमां केवलज्ञान पामी अनुक्रमे मोक्षलक्ष्मीने पाम्या. पछी इंद्रे आवीने भरतना पुत्र श्री आदित्ययशाने तेना पदने विषे स्थापन कर्यो. बीजा पण सात राजाने अनुक्रमे तेज पदे स्थाप्या. आ प्रमाणे आदित्ययशा विगेरे आठे राजाउ अरिसा भुवनमां केवलज्ञान प्राप्त करी मुक्तिना भोक्ता थया."

मंत्रीनां आवां वचन सांभली सगर चक्रवर्त्तीना साठ हजार पुत्रो विस्मय पामता छतां कहेवा लाग्या के, "अहो ! आ अमारुं कुल जयवंतु वर्तो." आवा सिंहनादथी तेउए आकाश गजावी मूक्युं. पछी तेउ परस्पर कहेवा लाग्या के, "जेवी शोभा भरतराजाए तेमना पिताश्री आदिनाथनी करी छे तेवी शोभा "आपणे आपणा पिताश्री अजितनाथनी करावीशुं अने तेवुंज जिनालय बंधावीशुं." आम धारी तेउए अष्टापद समान बीजो पर्वत जोवा मांड्यो; परंतु अष्टापद पर्वत समान तेउए एके पर्वत दीठो नहि, तेथी तेउ पोताना प्रधानने पूछवा लाग्या के, "हे प्रधान ! कहो, आ अष्टापद केटला काल सुधी अक्षय रहेवानो छे ?" मंत्रिये कह्युं. "हे राजकुमारो ! सांभलो, केवलज्ञानीये एम कहेलुं छे के, अवसर्पिणीकाल पर्यंत ए अक्षय रहेवानो छे." कुमारोए कह्युं. "जो एम छे तो आपणे आ जिनालयनुं रक्षण करीए के, जेथी करीने लोभी माणसो ए श्रेष्ट स्थाननो नाश करी शके नहि."

पछी तेउए दंमरत्नवमे अष्टापद पर्वतने मेखला रहित कर्यो. आटलुं करवाथी तेमने तृप्ति थइ नहि, तेथी तेउए ए पर्वतनी चारे तरफ खाइ खोदवा मांमी अने ते तेमणे पहेला पाथरा सुधी खोदी. एवामां अग्निना समान कांतिवालो नागेंइ त्यां आवी तेमने कहेवा लाग्यो. "हे कुमारो ! तमे आ खाइ खोदवावमे करीने अमारा निवास स्थाननो ज्ञंग न करो." कुमारोए कह्युं, "आ पृथ्वी कोनी छे ?" नागेंइे उत्तर आप्यो के, "हे श्रेष्टो ! ए तमारी छे." राजकुमारोए कह्युं. "जो एम छे तो पछी अमारी पृथ्वीमां खोदता एवा अमोने त्हारे ना कहेवानी शी जरुर छे ? तुं पोताने स्थानके जा अने हवे पछो फरीथी आवुं बोलीश नहि." आम कुमारोए तिरस्कार कर्यो एटले नागेंइ पोताने स्थाने गयो. पछी कुमारो पण ते खाइने पाणीथी ज्ञरवा माटे गंगाने त्यां लाव्या. खाइने विषे पमती एवी गंगाने जोइ प्रसन्न मनवाला ते सर्व कुमारोए जगत्ने पूरी देनारा सिंहनाद कर्या. पछी तेउना सिंहनादथी अने अखंमित धारावाला जलवमे पोतानुं स्थान व्याप्त थवाने लीधे अत्यंत क्रोधातुर थयेला तेमज ज्वाजल्यमान कांतिवाला नागेंइे त्यां आवीने तत्काल पोतानी विषदृष्टिना अग्निथी ते साठहजार पुत्रोने ज्ञस्मीज्ञूत करी नाख्या. आ प्रमाणे ज्ञस्मीज्ञूत थयेला जन्हु विगेरे साठ हजार राजकुमारोने जोइ बीजा राजा विगेरे सर्वे सामंतो विलाप करवा लाग्या. वली छुटा केशवाली, कंठना हारोने तोमी नाखती, कंकणोने ज्ञांगी नाखती अने अति दुःखित थयेली ते कुमारोनी स्त्रियो पण विह्वल थइने पृथ्वी उपर आलोटवा लागी अने विलाप करवा लागी के, "हा देव ! हा नाथ! हा स्वामिन् ! निर्नाथ एवी अमोने त्यजी दइने तमे क्यां जता रह्या ?" आ प्रमाणे विलाप करता एवा सर्व सैन्यने मुख्य प्रधान कोमल वाणीथी आश्वासन करवा लाग्यो के, "आ संसारज असार छे; ज्ञावी अन्यथा थतुं नथी; माटे हवे सौ पोत पोताना कार्यने विषे चित्त राखो. कारण के, आ पुत्रो शोक करवा योग्य नथी. तेउ तो बहु तीर्थोने वंदना करी अने आ स्थाननुं रक्षण करीने सत्पुण्य मेलवी मोक्षगतिनां पात्र थयां छे." प्रधान मंत्रीये आ प्रमाणे सर्व सैन्यने बोध पमामी प्रयाण कराव्युं. अनुक्रमे ते सर्वे सामंतो सहित मंत्रीयो नगरनी पासे आवी पहोच्या एटले तेउ परस्पर विचार करवा लाग्या के, "हवे सगर महाराजानी पासे जइने एम कोण कहेशे के, "हे नाथ!

राजकुमारो विना अमे सौ आव्या छीए." आम विचार करतां अग्निमां प्रवेश करवो योग्य धारी तेउ सौ ते प्रमाणे तैयारी करवा लाग्या. एवामां ते वखते कोइ एक ब्राह्मण त्यां आवी चड्यो. ब्राह्मण तेउनी आवी तैयारी जोइ कहेवा लाग्यो के, "तमे वृथा खेद करवो त्यजी दो. कारण माणसने सुख दुःख प्राप्त थाय ए कांइ आश्चर्य नथी. आ आदि अने अंत रहित एवा संसारमां नाना प्रकारना कर्मने वश थइ रहेला जीवोने एवी कोइ वस्तु नथी के, जेनो क्षय थतो नहि होय. माटे हे सामंतो! तमे मृत्यु पामशो नहि अने सगर चक्रवर्त्तीने आ सर्व व्रतांत हुं कहीश." ब्राह्मणनां आवां वचन सांभली तेउ घणो हर्ष पाम्या.

पछी ब्राह्मण "हुं ठगायो छुं! हुं छेतरायो छुं!" एम पोकार करतो दीनमुखवालो थइ राजद्वारे आव्यो. त्यां सगर राजाए पोकार करता ते ब्राह्मणने तत्काल बोलावीने पूछ्युं के, "हे द्विजेंद्र! तुं कोनाथी ठगायो छे?" तेणे उत्तर आप्यो के, "हुं दैवथी ठगायो छुं. कारण के, म्हारे एकनो एकज पुत्र हतो, तेने दुष्ट साप करडवाथी ते तत्काल निर्जीव थइ गयो छे. माटे हे कृपानिधि! म्हारा उपर दया करी तेने जीवतो करो." आ वखते पेला प्रधान विगेरे सामंतोए आवीने सगर चक्रवर्त्तीने नमस्कार कर्यो. पछी सगर राजाए वैद्य लोकोने आज्ञा करी के, "हे वैद्यो! ए ब्राह्मणना पुत्रने सापना विषथी मुक्त करो." वैद्यो ब्राह्मणने घेर गया अने पुत्रने मरी गयेलो जोइ फरी राजा पासे आवी कहेवा लाग्या के, "हे नृपेंद्र! ए पुत्र मृत्यु पामेलो छे; माटे हवे जेना कुलमां के जेना गोत्रमां कोइ पण मरी गयुं न होय तेना घेरथी भस्म मंगावी आपो तो हुं तेने जीवतो करीए." वैद्यनां आवां वचन सांभली सगर चक्रवर्त्तीये तेवा कुल अथवा गोत्रना घेरथी भस्म लइ आववानी पोताना सेवकोने आज्ञा आपी, परंतु ते यत्नथी शोधतां पण क्यांइथी मली शकी नहि. कारण के, सर्व कुलने विषे मरण थयेलांज हतां. आ वात वैद्ये राजाने करी एटले तेणे ब्राह्मणने कह्युं के, "हे द्विज! तुं शा कारण माटे शोक करे छे. जगत्मां मृत्यु साधारणरुप छे तो पछी त्हारे पुत्रनो शोक करवो घटे नहि. केमके आ संसारज निश्चय जन्ममृत्युरुप छे; माटे हे द्विज! तुं रुदन मूकी दइ शोकनो त्याग करी आत्महित कर. कारण के, तने पण थोडा कालमांज मृत्युरूप सिंह गली जशे." ब्राह्मणे कह्युं. "हे नाथ! आप कहोछो ते सत्य

छे; परंतु पुत्र विना म्हारा कुलनो क्षय थाय छे एटला माटे हुं शोक करुं छुं. आप न हणायेला एवा म्होटा महिमावाला तथा दुःखी अने दीन पुरुषो उपर दया करनारा छो, माटे हे कृपालु स्वामी ! म्हारा पुत्रने तत्काल जीवतो करो." राजाए कह्युं. "हे द्विजवर ! मृत्यु पामेलाने जीवाडवा इंद्र पण समर्थ नथी; तो पछी माणसोनी तो वातज शी ? माटे तुं आ त्हारी हठने त्यजी दे. वली प्राप्त थयेला मृत्युने शास्त्र अथवा मंत्र के तंत्रथी पाछुं वाली शकातुं नथी; माटे तुं त्हारा पुरुषार्थने त्यजी न दे. वली शोक त्यजी दइ शीघ्र आत्मानो विचार कर. कारण के, मुर्ख पुरुषोज विनष्ट वस्तुने विषे शोक करे छे विवेकी करता नथी." ब्राह्मणे कह्युं. "हे सत्वना समुद्र महाराज ! जो उत्तम पुरुषोए विनष्ट वस्तुने विषे शोक न करवो, एम आप कहो छो तो आपे पण क्यारे शोक करवो नहि." ब्राह्मणनां आवां वचन सांभली सगर महाराजाए कह्युं. "अरे ! तुं शुं मने पण शोक न करवानुं कहे छे ! तो पछी दैवे रक्षण करेला एवा मने पण शुं शोकनुं स्थान प्राप्त थवानुं छे ?" ब्राह्मणे कह्युं. "आपने उत्पन्न थयेला शोकनुं स्थान बहु दुःसह अने असंभाव्य छे तो पण आपे धीरपणुं अंगीकार करवुं." विप्रनां आवां वचनथी भयभ्रांत थयेला सगर चक्रवर्तीये तेने "हे विप्र ! म्हारे पण शोकनो शो हेतु छे ?" एम पूछ्युं एटले तेणे जणाव्युं के, "आपना साठ हजार पुत्रो मृत्यु पाम्या छे." ब्राह्मणनां आवां वचन सांभली वज्रथी हणायेलानी पेठे अत्यंत दुःखित मनवालो सगर राजा मूर्छा पामीने सिंहासनथी भूमि उपर पडी गयो. मूर्छाने अंते शोकथी भरपूर हृदयवालो ते रुदन करतो छतो विविध प्रकारना विलाप करवा लाग्यो. हा उत्तमस्वभाववाला पुत्रो ! मनने वहाला अने गुणना समुद्रो ! मने अनाथने त्यजी दइने तमे क्यां जता रह्या छो ? मने एकवार तो दर्शन आपो. अरे ! म्हारा पुत्रोने बलात्कारे गृहण करीने दैवेज म्हारो अपकार कर्यो छे. हाहा कठोर हृदय ! तुं पुत्रना वियोगथी केम फाटी जतुं नथी ? अरे प्राणो ! हवे तमारुं विधिपूर्वक रक्षण करनार कोण थशे ? हवे हुं तो अग्निमां पेशुं के पर्वत उपरथी झंपापात करुं !!!" आ प्रमाणे विलाप करता एवा सगर महाराजाने फरीथी ब्राह्मणे कह्युं. "हे महाराज ! आप मने उपदेश देता हता ते शुं तमे विचारता नथी ? आपे जे संसारनी असारता कहेली छे ते सत्यज छे. शोकथी विधुर बनी

गयेला प्राणीयो पोतानुं हित विचारी शकता नथी; परंतु सर्वेनुं परोपदेश करवामांज कुशलपणुं देखाय छे." सगर चक्रवर्त्तीये कह्युं. "एक पुत्र मृत्यु पामवाथी तने केवुं दुःख थयुं हतुं? तो पछी म्हारा तो साठ हजार पुत्रोनो दैवे नाश करी नाख्यो छे." ब्राह्मणे कह्युं. "हे महाराज! म्होटाने म्होटुं दुःख होय छे. कारण के, वज्रना प्रहार तो पृथ्वीज सहन करी शके छे तृण सहन करी शकतुं नथी. वली सज्जन पुरुषो तो संपत्तिने विषे तथा आपत्तिने विषे एकज स्वभाववाला होय छे. जेमके सूर्य उदय समये तथा अस्त समये एकज स्वभावनो (लाल रंगनो) होय छे; माटे हे महाराज! धीरपणुं धारण करी संसारनी असारता विचारी त्रण जगत्समान वियोगनी पीडामां विह्वलपणुं न करो. वली शोक मनुष्यने कांइ रक्षण कर्ता थतो नथी, परंतु तेथी उलटुं कर्म बंधन थाय छे, माटे डाह्या पुरुषो संतापना कारणरूप शोक करता नथी." इत्यादि वचनोथी ब्राह्मणे प्रतिबोध पमाडेलो सगर राजा बीजाउने पूछवा लाग्यो के, "म्हारा पुत्रो शी रीते मृत्यु पाम्या?" आ वखते इंद्रे प्रत्यक्ष थइ तेना पुत्रोनो सर्व वृतांत कही संभलाव्यो. ते उपरथी सगर राजा विचार करवा लाग्यो के, "क्यारे पण भवितव्यता वृथा थती नथी."

आ वखते अष्टापदनी पासे रहेनारा सर्वे माणसो त्यां आवीने करुण स्वरथी सगर चक्रवर्त्तीनी विज्ञापना करवा लाग्या के, "हे विभो! तमारा पुत्रोए अष्टापदनुं रक्षण करवा माटे जाह्नवीनो प्रवाह आणेलो छे ते बहु देशने बोली दे छे; माटे समुद्रनी पेठे प्रसरता एवा ते प्रवाहने निवृत्त करवामां आपना विना बीजा कोइनुं सामर्थ्य नथी." पछी सगर राजाए पोताना पौत्र भगीरथने कह्युं के, "हे वत्स! तुं त्यां जा अने दंडरत्नथी ते जलना प्रवाहने समुद्र प्रत्ये लइ जा." पछी भगीरथ पितामह (सगर राजा)नी आज्ञा लइ त्यां गंगानी पासे जइ विधिपूर्वक अठम तपवडे भक्तिथी नागेंद्रनुं आराधन करवा लाग्यो एटले तेनी भक्तिथी संतुष्ट थयेला अने ज्वाजल्यमान कांतीवाला नागेंद्रे त्यां आवीने तेने कह्युं के, "हे भगीरथ! कहे, हुं त्हारुं शुं अभीष्ट करुं?" भगीरथे नमस्कार करीने कह्युं. "हे नागेंद्र! हुं त्हारा प्रसादथी लोकने दुःख आपनारा आ गंगाना प्रवाहने समुद्र प्रत्ये लइ जाउं." नागेंद्रे कह्युं. "हे भगीरथ! तुं त्हारुं इच्छित कर. हुं म्हारा सर्वे नागोने निवृत्त पमाडीश." पछी भगीरथे वलीदान

अने पुष्पादिकथी नागेंद्रनी पूजा करी अने पछी हर्षथी दंमरत्नवमे गंगाना प्रवाहने समुद्र प्रत्ये जोम्यो. भगीरथ राजाए नागनी पूजा करी ए उपरथी लोकमां नागपूजा चालु थइ अने गंगासागरनुं तीर्थ पण लोकमां प्रसिद्धि पाम्युं. जन्हु राजा गंगाने अहिं लाव्यो, माटे ते गंगानुं नाम जान्हवी पम्युं अने भगीरथ समुद्र प्रत्ये लेइ गयो, माटे तेनुं भागीरथी एवुं नाम प्रसिद्ध थयुं. पछी नागसमूह एकठा थइने भगीरथनो पूजादिकथी सत्कार कर्यो एटले तेणे साकेतनपुर प्रत्ये जइ सर्व वात पितामह (सगर चक्रवर्त्ती)ने निवेदन करी. पछी सगर राजाए कुमार भगीरथने पोताने पदे स्थाप्यो अने पोते अजितनाथ प्रभु पासे विधिपूर्वक व्रत आदर्युं. अनुक्रमे सगर ऋषि तप करवाथी घोर कर्म रूप मलनो त्याग करी अनंत सुखरूप मोक्षपद पाम्या.

एक वखत भगीरथ राजाए केवल ज्ञानीने जोइ तेमने हर्षथी जन्हु विगेरे कुमारोनो पूर्व भव पूछ्यो के, " हे प्रभो! म्हारा पिता जन्हु विगेरे सगर राजाना साठ हजार कुमारो एकी वखते केम मृत्यु पाम्या?" केवलीये कह्युं. " हे नृपति! ते वृत्तांत सांभळ्य.

कोइ एक महासंघ समेतशिखरनी यात्राये जतो हतो. रस्ते ते कोइ महा अरण्यने उल्लंघी एक गाम पासे आवी पहोच्यो; परंतु ते गामना लोको अनार्य अने पाप बुद्धिवाला होवाथी दुर्वचनादिके करीने संघने उपद्रव करवा लाग्या; तेथी तेउए सामुदायिक अशुभ कर्म बांध्युं. एवामां त्यां कोइ एक कुंभारे आवीने ते संघने उपद्रव करनारा दुष्टलोकोने निवृत्त कर्या अने कह्युं के, "हे मूढो! जिनेश्वरनी यात्राये आवेला आ पवित्र एवा संघने घोर एवो उपद्रव न करो. कारण के, बीजा साधारण प्राणीने पण उपद्रव करवाथी मनुष्य घोर कर्म बांधे छे, तो पछी आ जगत्पूज्य एवा संघने उपद्रव करवाथी घोरकर्म बांधे तेमां तो शुंज कहेवुं. हे महामूढो! जोके पापात्मा पुरुषो पोते, आवेला परुणाउनी सेवाभक्ति करता नथी तो पछी तेमने उपद्रव शामाटे करवो जोइए?" आम कहीने संघने उपद्रव करनारा लोकोने निवार्या, तेथी संघ पोताने स्थानके गयो अने कुंभार पण प्रसन्न चित्तवालो थयो.

हवे एम बन्युं के, एक दिवस तेज गाममां रहेनारा चोरलोकोए राजाना घरमां खातर पाम्युं; तेथी राजानी सेनाये त्यां आवीने अने ते गामना

दरवाजा बंध करीने ते गामने सलगावी मूक्युं. संघने उपद्रव करवा रूप वृक्षनुं ते तेमने कडवुं फल उत्पन्न थयुं. आ वखते कुंभारने कोइ संबंधीये कांइ विचार माटे बीजे गाम बोलावेलो होवाथी ते त्यां गयो हतो, तेथी संघना रक्षणना पुण्यथी ते बची गयो. पछी ते गाममां साठ हजार माणसो बलीने भस्मरूप थइ गया. कारण के, करेलुं घोर पाप शुं वृथा थाय खरुं? अर्थात् नज थाय. आ प्रमाणे ते मृत्यु पामेला माणसो पोताना कर्मवशे एक अरण्यनी पासेना गाममां उत्पन्न थया. त्यां तेओ एकठा थइने रहेता हता एवामां कोइ एक वनना हाथीये तेमने मारी नाख्या, तेथी तेओ दुःखना समूहथी व्याप्त एवी अनेक प्रकारनी योनिने विषे भमतां भमतां अनेक जन्मने धारण करी कोइ पण पुण्यना प्रभावने लीधे सगर राजाना साठ हजार पुत्रपणे उत्पन्न थया. हवणां पण ते पूर्व भवनां कर्मने लीधे तेओ साथेज मृत्यु पाम्या छे. हवे कुंभार पण मृत्यु पामीने कोइ एक नगरने विषे धनवंत वणिक् थयो. त्यांथी ते बीजा जन्मे राजा थयो. ए भवमां तेणे चारित्र अंगीकार करी महा समृद्धिवंत एवुं देवपद मेलव्युं. पछी ते देवभवमां पण देवता संबंधि अनेक दिव्यभोगोने भोगवी महापुण्यवंत एवो तुं सगर चक्रवर्त्तीना पुत्र जन्हु राजाना पुत्रपणे उत्पन्न थयो छे." आ प्रमाणे ज्ञानीनां मुखथी जन्हु विगेरेनो पूर्वभव सांभली वैराग्यथी पूर्ण थयेलो भगीरथ पोताना घरे गयो.

॥ इति श्री सगर चक्रवर्त्ती चरित्रम् ॥

॥ श्री मघवान् चक्रवर्त्ती चरित्रम् ॥

हवे संक्षेपथी श्री मघवान् चक्रवर्त्तीनुं चरित्र कहेवाय छे.

श्रावस्ती नामनी महा नगरीमां समुद्रविजय नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने उत्तम गुणोने धारण करनारी भद्रा नामे स्त्री हती. ते भद्राये रात्रीने विषे चौद महा स्वप्न जोयां. पछी पूर्णमासे ते भद्राये एक पुत्र रत्नने जन्म आप्यो. राजाए तेनुं महोत्सव पूर्वक "मघवान्" एवुं नाम पाड्युं. पछी ते बालक अनुक्रमे चंद्रनी पेठे उत्कृष्ट समृद्धि सहित यौवनावस्थाने पाम्यो एटले पिताए तेने पोताना राज्यने विषे स्थाप्यो. पछी मघवान् भूपतिये भरतक्षेत्रने साधी चक्रवर्त्ती पद धारण कर्युं. अनुक्रमे तेने वहुकाल विषयसुख

भोगवतां वैराग्य प्राप्त थयो; तेथी वैराग्यना रंगथी रंगीत थयेलो ते विचारवा लाग्यो के, " जे पदार्थो प्रतिबंधना हेतुरूप छे ते सर्वे अस्थिर देखाय छे. उदार पुत्रो, मनोभिष्ट प्रियाउ, मनोहर भोगो, म्होटी संपत्तियो, निरोगी शरीर, दीर्घ आयुष्य अने अद्भुत रूप ए सर्व संसारनी वृद्धि करनारा अने नाशवंत जणाय छे. तेमज आ संसारनुं सुख पण स्वप्न समान देखाय छे." आ प्रमाणे विचार करी श्री मघवान् चक्रवर्त्तीये पुत्रने विषे राज्यनो भार आरोपण करी पोते चारित्र अंगीकार कर्युं. पछी घोर तप करी कर्मनो मल धोइ नाखनारा ते महामुनि केवलज्ञान पामी अंते मुक्ति रमणीने वर्या.

॥ इति श्री मघवान् चक्रवर्त्ती चरित्रम् ॥

॥ श्री सनत्कुमार चक्रवर्त्ती चरित्रम् ॥

आ भरतक्षेत्रना कुरुजांगल देशने विषे श्री हस्तिनापुर नामे मनोहर नगर छे. त्यां प्रजाने आनंदकारी अश्वसेन नामे राजा राज्य करतो हतो. तेना म्होटा अंतःपुरने विषे सहदेवी विगेरे अनेक स्त्रियो हती अने चक्रवर्त्तीना लक्षणवालो सनत्कुमार नामे तेने एक पुत्र हतो. ए कुमारने सूरकालिंदी भूपतिनो पुत्र महेंद्रसेन वहालो मित्र हतो. तेणे पोताना मित्र सनत्कुमारने सर्वकलामां निपुण कर्यो हतो.

एक दिवस ते बन्ने मित्रो घोमा उपर बेसी उद्यानमां क्रीमा करता हता एवामां अविनित घोमाए ते राजकुमार सनत्कुमारनुं हरण कर्युं. पंचमगतिथी चालतो ते घोमो क्षणवारमां अद्दश्य थइ गयो. ते वात राजाए सांभली, तेथी ते अश्वसेन भूपति पण कुमारनी पाछल शोध करवा चाल्यो. राजा कुमारना घोमानां पगलां जोतो जोतो आगल जातो हतो; परंतु वायुथी उमती धुलने लिधे घोमानां पगलां ढंकाइ जवाने लिधे रस्तो मालम न पमवाथी ते पाछो वली घरप्रत्ये आव्यो. पछी महेंद्रसिंह पोताना मित्रनी शोधे चाल्यो. ते एक वर्ष पर्यंत भम्यो; परंतु क्यांइथी कुमारनी शोध पाम्यो नहि. पछी सिंहसमान पराक्रमी ते कोइ एक अरण्यमां पेठो. त्यां ते अनेक पक्षीउना शब्द सांभलतो अने कमलवनोना परिमलने ग्रहण करतो फरतो हतो. एवामां तेणे वेणुंनुं गायन सांभल्युं. " ए शुं हशे ? " एम धारी जेवो ते तेना सन्मुख जा-

य छे एटलामां तो तेणे ते वनमां स्त्रीयोनी मध्ये रहेला सनत्कुमारने दीठो. पछी तो ते महेंद्रसिंह विस्मय पामी विचार करवा लाग्यो के, "शुं आ सनत्कुमार छे के कोइ बीजो विद्याधर छे ?" आम जेटलामां ते विचार करे छे तेटलामां बंदिजनोए जय जय शब्दपूर्वक कह्युं के, "अश्वसेन राजाना वंशमां मुक्ताफल समान, कुरुवंशरूप घरना स्तंभरूप, त्रण जगत्‌ना पति, देवलक्ष्मीना स्थान, सर्वत्र महात्म्यने पामनारा अने सर्वगुणोना समुद्र एवा हे सनत्कुमार ! तमे जयवंता वर्तो." बंदिजनोनी आवी वाणी सांभली थयोछे निश्चय जेने एवा ते महेंद्रसिंहे पोतानी सन्मुख उभेला सनत्कुमारने उलख्यो. सनत्कुमारे पण तेने उलख्यो; तेथी ते उठीने महेंद्रसिंहने भेटी पड्यो. आम तेउ परस्पर भेटीने पछी एक आसन उपर बेठा एटले तो सर्वे विद्याधरो विस्मय पामी गया. पछी कुमारे "तुं अहिं केम आव्यो ?" एम महेंद्रसिंहने पूछ्युं. ते उपरथी तेणे एना नगरनो अने पोतानो सर्व वृत्तांत कही संभलाव्यो. पछी महेंद्रसिंहे सनत्कुमारना आग्रहथी भोजनादि करीने कुमारने तेनो सर्व वृत्तांत पूछ्यो एटले तो ते पोतानो वृत्तांत जणावा माटे तेने पोताना अंतःपुरमां तेडी गयो. त्यां सनत्कुमारे पोतानी प्रिया बकुलमतिने आज्ञा करी के, "आ म्हारा मित्रने म्हारो सर्व वृत्तांत कहे." पछी ते बकुलमतिये प्रज्ञप्ति विद्यानुं स्मरण करी सनत्कुमारनो सर्व वृत्तांत कहेवो शरु कर्यो.

"हे मित्र ! दुर्विनीत घोडो जेटलामां कुमारने आ अरण्य प्रत्ये लइ आव्यो तेटलामां ते घोडो तत्काल मृत्यु पाम्यो. कुमार पण दावानलथी दग्ध थयेला आ वनमां अत्यंत तृषाथी पीडा पामतो छतो मूर्छा पाम्यो. एटलामां अहिंज रहेनारा कोइ दयावंत विद्याधरे तेने जलनुं सिंचन कर्युं. थोडीवारे मूर्छानो नाश थयो एटले कुमारे पेला पासे उभेला विद्याधरने पूछ्युं के, "तुं कोण छे अने आ जल क्यांथी आण्युं ?" तेणे उत्तर आप्यो के, "हुं आ अरण्यमां रहेनारो विद्याधर छुं अने आ जल मान सरोवरनुं छे." कुमारे कह्युं. "हे गुह्यक ! तुं मने झट मान सरोवर प्रत्ये लइ जा के, ज्यां हुं स्नानविधि करीने शीतल थउं." पछी विद्याधर कुमारने तत्काल मान सरोवर प्रत्ये लइ गयो. कुमार मान सरोवरमां स्नान करतो हतो एवामां वैताढ्य पर्वत उपर रहेनारो असिताक्ष नामनो विद्याधर के, जे तेनो शत्रु हतो तेणे तेने दीठो; तेथी पूर्वना

वैरने लीधे ते बन्नेनुं महा युद्ध चाल्युं. तेमां प्रथम ते विद्याधरे महा वायु विकुर्वी घाढ अंधकार करी नाख्युं. पछी महा भयंकर घोर पिचाशना सरखां अनेक रूपो बनाव्यां. कुमार आथी भय पाम्यो नहि एटले तो विद्याधरे तेने पाशवमे बांध्यो; परंतु ते पाशने तो तेणे हाथथी दोरीनी पेठे तत्काल तोमी नाख्यो. ज्यारे महा बलवंत एवा सनत्कुमारे पाशने तोमी नाख्यो त्यारे तो अत्यंत दुष्ट एवा ते विद्याधरे कुमारना हृदयमां मुद्गरनो प्रहार कर्यो. कुमारे चंदननुं वृक्ष उपामी तेने मार्युं एटले तेणे महा कोपथी कुमारना उपर म्होटो पर्वत फेंक्यो. कुमारे वज्र समान पोतानी मुठीथी ते पर्वतने चूर्ण रूप करी नाख्यो. आम थवाथी तो क्रोधथी व्याप्त थयेला मनवालो ते विद्याधर कुमारनी साथे युद्ध करवा लाग्यो; परंतु छेवटे कुमारे पोतानी वज्रसमान मुठीथी तेने एवो तामन कर्यो के, जेथी ते म्होटी बूम पामतो छतो कागमानी पेठे नासी गयो. आ वखते आकाशमां उभा रहेला अन्य विद्याधरो "आ कुमारनुं भुजबल आश्चर्यकारी छे के, जेणे युद्धमां आवा विद्याधरने जीत्यो." आवी उद्घोषणापूर्वक कुमारना उपर पुष्पवृष्टि करवा लाग्या.

पछी महेंद्रसिंह सनत्कुमारनी स्त्री बकुलमतिने पूछवा लाग्यो के, "कुमारने ए विद्याधर साथे केम वैर थयुं हतुं ?" बकुलमतिये पोतानी विद्याना बलथी कह्युं के–

पूर्वे कांचनपुर नगरने विषे महायशवंत विक्रमयश नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने अंतःपुरमां पांचसे प्रियाउ हतो. वली ते नगरमां उत्तम बुद्धिवालो नागदत्त नामे सार्थवाह रहेतो हतो. तेने विष्णुश्री नामे स्त्री हती. एक दिवस विक्रमयश भूपतिये रागने लीधे विष्णुश्रीनुं हरण कर्युं. ए उपरथी मोहने लीधे नागदत्त सार्थवाह गांमो थइ गयो अने विक्रमयश राजा विष्णुश्रीनी साथे आसक्तिथी क्रीमा करवा लाग्यो; तेथी बीजी स्त्रीयोये द्वेषथी कामण करावी विष्णुश्रीने मारी नाखी. पछी विक्रमयश राजा मोहथी तेने अग्निसंस्कार करवा देतो नहोतो; तेथी प्रधान विगेरे पुरुषोए राजानी नजर चुकवीने विष्णुश्रीना कलेवरने एक म्होटा अरण्यमां मोकलाव्युं. पछी राजाए मोहथी त्रण दिवस सुधी भोजन लीधुं नहि; तेथी प्रधान विगेरे पुरुषोए "आ भूपति विष्णुश्रीना शरीरने दीठा विना मृत्यु पामशे." एम धारी तत्काल ते

दुर्गंधवाला अने अनेक जीवोथी व्याप्त थइ गयेला विष्णुश्रीना कलेवरने मंगावी राजाने देखाड्युं. राजा पण ते कलेवरने जोइ विचार करवा लाग्यो के, "अरे जीव ! तें जेने माटे जाति, कुल, शील, लज्जा अने कीर्ति विगेरे सर्व त्यजी दीधुं छे, तेनी आ अवस्था थइ ! हा धिक्कार छे महापाप करनारा एवा मने !! हवे परलोकने विषे म्हारी शी गति थशे !!!" आम पस्तावो करता एवा ते राजाने तत्काल महा वैराग्य उत्पन्न थयो; तेथी तेणे श्री सुव्रत गुरु पासे संसार समुद्रने तारनारी दीक्षा लीधी. पछी ते निरतिचारपणे चारित्रने पाली अने अंते मृत्यु पामी सनत्कुमार देवलोकने विषे देवतापणे उत्पन्न थयो. त्यांथी चवीने ते रत्नपुर नगरमां कोइ शेठना जिनधर्मा नामना पुत्रपणे उत्पन्न थयो. त्यां ते शुद्ध एवो श्रावकधर्म पालतो हतो.

हवे नागदत्त सार्थवाहनो जीव पण प्रियाना वियोगथी संसारने विषे भमतो भमतो सिंहपुर नगरमां धनवंत अग्निशर्मा नामना ब्राह्मणपणे उत्पन्न थयो. अनुक्रमे वैराग्य प्राप्त थवाथी तेणे त्रिदंडीव्रत ग्रहण करयुं. घोर तप करतो एवो ते त्रिदंडी कोइ वखते रत्नपुर नगरने विषे गयो. त्यां तेनुं परिव्राजकना भक्त एवा हरिवाहन राजाए भावथी पारणाने माटे आमंत्रण कर्युं; तेथी ते त्रीदंडी राजाना घर प्रत्ये गयो. त्यां तेणे पेला जिनधर्मा श्रावकने दीठो एटले तो त्रिदंडी क्रोध करीने राजाने कहेवा लाग्यो के, "हुं त्हारा घरने विषे त्यारेज पारणुं करीश के, ज्यारे आ शेठ पोतानी पीठ उपर म्हारा भोजननो थाल धारण करी राखे. वली हे राजन् ! हुं अत्यंत उष्ण एवा पायसान्नथीज (खीरथीज) पारणुं करीश." राजाए भक्तिथी त्रिदंडीने तेज प्रमाणे पारणुं कराव्युं. त्रिदंडी पारणुं करी रह्या पछी शेठनी पीठ उपरथी थाल लइ लीधो तो त्यां म्होटा फोल्ला उत्पन्न थया. शेठने तेनी बहु पीडा उत्पन्न थवाथी वैराग्य उत्पन्न थयो; तेथी पर्वत समान धीर एवा तेणे पोताने घरे जइ सर्व परिवारनी रजा लइने जिनेश्वरनी पूजा करवा पूर्वक अनशन व्रत धारण करयुं. पछी उत्तम बुद्धिवालो ते एक पक्ष पर्यंत चारे दिशाउमां कायोत्सर्गे रह्यो. त्यां गीध अने शियाल विगेरे पशुउथी निरंतर भक्षण करातो ते शुभ भाववालो जिनधर्मा मृत्यु पामीने सौधर्म देवलोके देवेंद्रपणे उत्पन्न थयो. त्रिदंडी पण मृत्यु पामीने पापकर्मने लीधे तेज देवेंद्रना वाहन ऐरावण हाथी

रूपे उत्पन्न थयो. आ प्रमाणे ते हाथी मनुष्य अने तिर्यंच योनिने विषे दीर्घकाल सुधी भ्रमण करी असिताक्ष नामना यक्षपणे उत्पन्न थयो अने सौधर्म देवलोकनो इंद्र अश्वसेन राजाना पुत्र सनत्कुमारपणे उत्पन्न थयो. हे मित्र ! यक्षनी साथे कुमारने वैरनुं एज कारण जाणय. बकुलमतिये महेंद्रसिंहने आ प्रमाणे वैरनुं कारण कही संभलाव्युं.

वली बकुलमतिये कह्युं के, हे महेंद्रसिंह! पछी सनत्कुमार यक्षने जीती आगल चाल्यो. अनुक्रमे ते पाछला पहोरे सर्व प्रकारनी शोभाथी मनोहर एवा नंदन वनने विषे आवी पहोच्यो. त्यां तेणे भानुवेग विद्याधरनी आठ कन्याउने दीठी. "आ कोण हशे!" एम विचारी तेणे एक न्हानी कन्याने पूछ्युं के, "तमे कोण छो अने अहिं केम रहो छो?" ते कन्याये कह्युं. "हे कुमारेंद्र! ते वात सांभलो.

प्रियसंगमा नामनी नगरी छे. त्यां विद्याधरोने विषे उत्तम एवो भानुवेग नामे विद्याधर राज्य करे छे. तेनी अमे आठ पुत्रीयो छीए. हे भद्र! तुं ते अमारी नगरी प्रत्ये चाल. त्यां अमारो पिता त्हारी पूर्ण हर्षथी सेवा भक्ति करशे." पछी ते कन्याना सेवके देखाड्यो छे मार्ग जेने एवो ते कुमार जेटलामां ते नगरनी पासे पहोच्यो तेटलामां सूर्यास्त थवाने लीधे सर्व जगत् अंधकारमय थइ गयुं. कंचुकि कुमारने भूपति पासे तेडी गयो एटले भानुवेग राजाए तेने बहु आदर सत्कार करीने पछी कह्युं के, "हे कुमार! मने अर्चिमाली मुनिये पूर्वे कह्युं हतुं के, जे सुभट पोताना भुजबलथी असिताक्ष नामना यक्षने जीतशे तेज भाग्यशाली पुरुष त्हारी आठे पुत्रीयोने परणशे; माटे हे भद्र! हवे तुं ते म्हारी पुत्रीयोनी साथे लग्न कर." भानुवेग विद्याधरनी आवी आज्ञाथी कुमारे महोत्सव पूर्वक हर्षथी ते सर्वे कन्याउनी साथे लग्न कर्युं. पछी ते सर्व स्त्रीयोनी साथे रतिग्रहमां सुतेलो कुमार ज्यारे सवारे जागी उठ्यो त्यारे तो तेणे पोताने पृथ्वी उपर पडेलो दीठो. पछी कुमार आश्चर्यथी विचारवा लाग्यो के, "शुं आते सत्य छे के माया छे!?" आम विचार करता एवा तेणे पोताना हाथने विषे कंकणदोरो दीठो; तेथी तो ते अत्यंत खेदातुर थयो. पछी कुमार त्यांथी चाली निकल्यो अने एक म्होटा अरण्यमां आवी पहोच्यो. त्यां तेणे पर्वतना शिखर उपर देव लोकना वैमानसमान मणि अने सुवर्णथी रचेलो एक म्होटो सात मालनो महेल जोयो. कुमार तेनी पासे

गयो तो तेणे कोइनो करुणायुक्त रुदननो शब्द सांभळ्यो. पछी अंदर पेसी जेवो ते सातमे माले गयो तो त्यां तेणे कोइ एक कन्या दीठी. वळी "हे अश्वसेन राजाना वंशना विभूषण सनत्कुमार ! तमे भवांतरने विषे पण म्हारा भर्तार थजो." एवा शब्दथी विलाप करीने रुदन करती सांभळीने कुमारे ते कन्याने तेनुं कारण पूछ्युं एटले ते कन्याये कह्युं.

"साकेतपुरना सुरभि नृपतिनी चंद्रयशा राणीना उदरने विषे उत्पन्न थयेली हुं सुनंदा नामनी पुत्री छुं. एक दिवस चित्रपटने जोइ हुं अश्वसेन राजाना पुत्र सनत्कुमारने विषे आसक्त थइने में हृदयथी तेनेज म्हारो पति धार्यो. पछी म्हारा माता पिताए म्हारो तेनी साथे विवाह कर्यो; परंतु आज सुधी तेनी साथे म्हारुं लग्न कर्युं नहोतुं. एवामां कोइ विद्याधर रत्नमंदिरमांथी हरण करी मने अहिं लाव्यो. पछी ते पोतानी विद्याना बळथी बनावेला आ मनोहर मंदिरने विषे मने मूकी ते क्यांइ चाल्यो गयो छे." सुनंदा जेटलामां आ प्रमाणे पोतानी वार्ता कुमारने निवेदन करे छे तेटलामां ते विद्याधरे आवीने सनत्कुमारने आकाशमां फेंक्यो. आथी सुनंदा "हा हा" शब्द करवा लागी. पछी पृथ्वी उपर पडेलो कुमार पोतानी दृढमुष्टिथी ते विद्याधरनो नाशकरी स्त्रीरत्न थनारी ते सुनंदाने परण्यो.

हवे जे विद्याधरने सनत्कुमारे हण्यो, तेनी संध्यावली नामे व्हेन विद्याधरी ते वखते त्यां आवी चडी. ते पोताना बंधुने मरायेलो जोइ पहेली अत्यंत क्रोधातुर थइ; परंतु पाछळथी ते "तुं त्हारा बंधुने हणनारनी प्रिया थइश." एवां निमित्तियानां वचन संभारी शांतपणुं पामीने कुमार उपर आसक्त थइ. पछी कुमारे सुनंदानां वचनथी तत्काळ ते विद्याधरीनो पाणीग्रहण कर्यो. एवामां कोइ विद्याधरना बे पुत्रो त्यां आवी सनत्कुमारने नमस्कार करीने केहेवा लाग्या के, "हे स्वामिन् ! अमे चंड अने भानुवेग नामना विद्याधरोना हरिचंड अने चंडसेन नामना पुत्रो छीए. अमारा पिताए अमने तमारी पासे संदेशो केहेवा मोकल्या छे के, अशनिवेग नामनो विद्याधर पोताना पुत्रनां मृत्युथी क्रोध पामी तमारा उपर चडी आवे छे; माटे अमे तमारी साहाय करवा आवीये छीए. अमारा पिताउ अमारी पाछळज आवे छे." आम ते विद्याधरना बन्ने पुत्रो कहे छे एटलामां तो अशनिवेग विगेरे सर्वे विद्याधरो तत्काळ

आवी पहोच्या. आ समये संध्यावलीये पोताना पिता अशनिवेगने दुर्जय मानी पोताना पति सनत्कुमारने तुरत प्रज्ञप्ति विद्या आपी. पछी कुमार अने अशनिवेग बन्ने जणा क्रोधातुर थइने परस्पर युद्ध करवा लाग्या. तेमां अशनिवेगे कुमार उपर सर्पास्त्र फेंक्युं एटले कुमारे गरुमास्त्र मूकी सर्पास्त्रने तत्काल निष्फल करी नाख्युं. विद्याधरे आग्नेयास्त्र मूक्युं तेना उपर कुमारे वारुणास्त्र मूक्युं. विद्याधरे पर्वतास्त्र मूक्युं तेना उपर कुमारे वज्रास्त्र मूक्युं. पछी बाणनी वृष्टि करता एवा विद्याधरनां धनुष्यनी दोरी कुमारे तोमी नाखी. विद्याधरे खड्ग खेंच्युं एटले कुमारे तेनो हाथ कापी नाख्यो अने छेवटे बाहु युद्धने इच्छता एवा ते विद्याधरनुं मस्तक पण चक्रवमे छेदी नाख्युं. पछी विजयवंत एवो सनत्कुमार अनेक विद्याधरोथी परवर्यो थको वैताढ्य पर्वत उपर गयो. त्यां विद्याधरोए तेने महोत्सवपूर्वक चक्रवर्तीपदे स्थाप्यो. एक दिवस विद्याधरपति चंमवेगे आवीने सनत्कुमारनी विनंती करी के, "हे स्वामिन्! म्हारे उत्तम रूपवंती एक हजार पुत्रीयो छे; ते सर्वेना पति आप थवाना छो, एम ज्ञानीये कह्युं छे; माटे हे प्रभो! तमे ते सर्वेने परणो." पछी कुमारे ते सर्वे विद्याधरकन्यानी साथे लग्न कर्युं.

(बकुलमति महेंद्रसिंहने कहे छे के) हे महेंद्रसिंह! पछी सनत्कुमार वैताढ्य पर्वतने साधी अने जिनेश्वरनी पूजा करी जेटलामां अहिं क्रीमा करवा आव्या छे तेटलामां आजे तमे मळ्या छो." आ प्रमाणे बकुलमतिये टुंकामां सनत्कुमारनुं सर्व चरित्र कह्युं. पछी सनत्कुमार बकुलमतिना घेरथी उठी महेंद्रसिंहनी साथे वैताढ्य पर्वत उपर गयो. त्यां महेंद्रसिंहे सनत्कुमारनी विनंती करीने कह्युं के, "हे स्वामिन्! तमारा मातपिता तमारा वियोगथी बहु पीमा पामे छे." मित्रनां आवां वचन सांभळी चित्तमां मातापिता उपर अत्यंत स्नेहवंत थयेलो सनत्कुमार चक्रवर्त्ती विविध प्रकारनां वैमानो सहित तत्काल हस्तिनापुरे आव्यो. त्यां मातापिता पोताना पुत्रनी आश्चर्यकारी संपत्ति जोइ घणो हर्ष पाम्यां. सर्व नगरवासी लोक पण अत्यंत आनंदित थया.

पछी अश्वसेन नृपतिये पोताना राज्यने विषे सनत्कुमारने अभिषेक करी मित्र महेंद्रसिंहने सेनापति पदे स्थाप्यो अने पोते श्री धर्मार्हत्तीर्थने विषे चारित्र अंगीकार करी तपस्या करवा लाग्यो.

अहिं सनत्कुमारे पचास हजारवर्ष कुमार अवस्थामां अने तेटलाज मंडलिक पदे निवृत्त करीने चक्रवर्ती पद धारण कर्युं. पछी मागध अने वरदामादिक सहित सर्व भरतक्षेत्रने साधी ते पाछो एक हजार वर्षे हस्तिनापुर प्रत्ये आव्यो एटले इंद्रे तेने पोताना समान जाणी पोताना बंधुना प्रेमथी कुबेरने आज्ञा करी के, “ तुं भरतक्षेत्रने विषे जइ म्हारा नामथी सनत्कुमारने विचित्र प्रकारना महोत्सव पूर्वक चक्रवर्तीनो अभिषेक कर तथा वनमाला, दिव्य वस्त्र, कुंडल, मुकुट, छत्र, चामरो, हार, सिंहासन अने पादपीठ विगेरे तेने आप. वली त्हारे म्हारुं नाम लइने तेने कहेवुं के, पहेला देवलोकनो इंद्र तमने कुशल समाचार पूछे छे. ” आ प्रमाणे इंद्रे आज्ञा करेलो ते कुबेर सर्व वस्तुने लइ हस्तिनापुर प्रत्ये गयो. वली इंद्रे ते अभिषेकना महोत्सव कार्यमां हस्तिनापुरप्रत्ये पोतानी रंभादि बहु दिव्य अप्सराउने मोकली; तेथी ते अप्सराउ पण त्यां गइ.

कुबेरे पण हस्तिनापुरप्रत्ये आवीने सनत्कुमारनी आगल सर्वे वस्तुउ मूकी इंद्रे कहेला समाचार निवेदन कर्या. पछी योजन प्रमाण मणिपीठ रची तेना उपर अभिषेक मंडपने विषे रत्न सिंहासन बनावी तेमां स्त्रीरत्न सहित चक्रवर्तीने बेसारी क्षीरसमुद्रमांथी मणि जडित्र सुवर्णना कलशोमां भरेलां जलवडे वाजींत्रोना शब्द पूर्वक अभिशेक कर्यो. ते वखते रंभादि देवांगनाउ प्रीतिपूर्वक नृत्य करवा लागी. आ प्रमाणे बार वर्ष पर्यंत महा संपत्तिथी अभिषेक करी अने तेने हस्तिनापुरप्रत्ये प्रवेश करावी कुबेरादि सर्वे देवताउ स्वर्गप्रत्ये गया. पछी विख्यात कीर्तिवंत एवा सनत्कुमार चक्रवर्तीये कुटुंब सहित एक लाखवर्ष पर्यंत असंख्य भोगो भोगव्या.

एक दिवस हर्षित एवा देव दानवोनी पंक्तिथी भरपूर एवी सभामां विविध प्रकारनी नाट्यविधिने जोतो छतो सौधर्मेंद्र बेठो हतो. ते वखते ईशान देवलोकमां रहेनारो संगमक नामनो देव त्यां आव्यो. तेना शरीरनी कांतिथी सर्वे देवताउ निस्तेज थइ गया. ते उपरथी आश्चर्य पामेला देवताउए इंद्रने पूछ्युं के, “ हे सुरेंद्र! आ देवतानी बार सूर्यथी पण अधिक कांति शा कारणे छे? ते अमने कहो.” इंद्रे कह्युं. “ हे देवो! एणे परभवने विषे विशुद्ध एवुं आंबिल करी तपने वृद्धि पमाड्युं हतुं; तेथी तेनी आ भवने विषे अधिक कांति थइ छे.” देवताउए

फरीथी पूछ्युं. "आना समान तेजवंत बीजो कोइ पण पृथ्वीने विषे छे?" इंद्रे कह्युं. "पृथ्वी उपर सनत्कुमार चक्रवर्त्ती एनाथी अधिक कांतिवालो छे." इंद्रनां आवां वचन सांभलीने संतुष्ट थयेला विजय अने वैजयंत नामना बे देवताउ ब्राह्मणनुं रूप धारण करी सनत्कुमारनुं स्वरुप जोवा माटे हस्तिनापुरप्रत्ये आव्या. आ वखते मध्याह्नो समय होवाथी सनत्कुमार न्हावण करतो हतो; त्यां देवताउ तेना देहने जोइ अत्यंत हर्ष पाम्या. ते वखते सनत्कुमारे तेमने कह्युं के, "हे विप्रो! हवणां तमे म्हारुं शरीर शुं जूउ छो ? परंतु सर्व अलंकारयुक्त एवा ए म्हारा शरीरने तमारे सांजे सभामां आवीने जोवुं." पछी चक्रवर्त्तीये ते दिवसे विशेष आभरणोथी पोताना शरीरने सणगारी सभामां बेसी पेला बन्ने विप्रोने बोलाव्या. ब्राह्मणनां रूप धारण करनारा देवताउ त्यां आवी राजाना देहनी हानी जोइ खेद पामता छता तत्काल पोताना मस्तकने धूणाववा लाग्या. मस्तक धूणावता एवा ब्राह्मणोने जोइ विस्मित थयेलो सनत्कुमार चक्रवर्त्ती तेमने पूछवा लाग्यो के, "तमे तमारुं मस्तक केम धूणावो छो?" तेउए कह्युं. "हे महाराज ! हवणां तमारा देहने विषे कांइ हानी देखाय छे. कारण जेवुं रूप अमे पूर्वे दीठुं हतुं तेवुं हवणां देखातुं नथी." आ प्रमाणे ते विप्ररूप देवताउनां मुखथी पोतानां शरीरनी हानी सांभली पुण्यवंत एवा सनत्कुमार चक्रवर्त्तीये बोध पामीने विनयंधर गुरु पासे दीक्षा लीधी. पछी ते बन्ने देवताउ तेने कहेवा लाग्या के, "हे वीर ! तमे पण प्रसिद्ध यशवंत एवा पोताना पूर्वज भरत राजानी पेठे सत् आचरण आदर्युं ते बहु सारुं कर्युं." आम ते बन्ने देवताउ तेनी स्तुति करी तत्काल स्वर्गप्रत्ये गया.

पछी सनत्कुमार मुनि विहार करवा लाग्या. तेमनी पाछल तेमनो परिवार पण फरवा लाग्यो, परंतु मुनिये तेना सामुं जोयुं नहि. आम छ मास सुधी चाल्युं. पछी इंद्रे आवीने ते सर्व परिवारने पाछो वाल्यो. एक दिवस ते मुनिये छठना पारणाने विषे बकरानी छाश युक्त कांगना सरखा खराब चोखानुं भोजन कर्युं; तेथी तेमना शरीरे दुःसह एवा सात रोगो उत्पन्न थया. ते आ प्रमाणे. १ भोजनादि उपर अरुचि, २ शरीरे खरज, ३ पेटमां महा वेदना, ४ नेत्रमां म्होटुं दुःख, ५ ताव, ६ श्वास, ७ अने दाह. सनत्कुमार चक्रवर्त्तीये ते साते रोगोने सातसें वर्ष सुधी सहन कर्या; तेथी तेमने आमर्षौषधि

वेगेरे सर्व लब्धियो प्राप्त थइ.

एक दिवस इंद्र देवसभामां हर्षथी प्रशंसा करवा लाग्यो के, "सनत्कुमार मुनि जेवी रीते रोगने सहन करे छे तेवी रीते बीजो कोइ करशे नहि." इंद्रनां आवां वचन सांभली उत्पन्न थइ छे इर्ष्या जेमने एवा ते विजय अने वैजयंत बन्ने देवताउ वैद्यनां रूपने धारण करी तत्काल सनत्कुमार मुनिनी पासे आव्या अने कहेवा लाग्या के, "हे राजर्षि! तमारा आ सर्व रोगोनो अमे तत्काल नाश करीए." मुनिए कह्युं."कया रोगोनो नाश करवामां तमारी शक्ति छे?" देवताउए कह्युं. "हे साधु! केटला प्रकारना महारोगो कहेला छे?" मुनिये कह्युं. "हे वैद्यो! बाह्य अने आभ्यंतर एवा भेदथी रोगो बे प्रकारना छे. तेमां कया रोगोनो नाश करवामां तमारी शक्ति छे?" तेउए कह्युं."हे मुनि! बाह्य रोगनो नाश करवामां अमारी शक्ति छे." ते सांभली मुनिये कह्युं. "हे महाभाग! ते शक्ति तो म्हारी पण छे." एम कही मुनिये पोताना हाथनी आंगली पोताना मुखमां नांखी सुवर्ण समान बनावी आपीने तेमने कह्युं के, "श्लेष्मादिकथी म्हारा बाह्य रोगो नाश थाय छे; परंतु आभ्यंतर रोगो नाश थता नथी तेनो तमे विनाश करो." देवतारूप वैद्योए कह्युं. "हे साधु! आभ्यंतर रोग समाववाने अमारी शक्ति नथी. ते रोगोने नाश करवामां तो तमारीज शक्ति छे." एम कही तेउए पोताना स्वरूपने प्रगट करी देवसभामां इंद्रे करेली तेमनी प्रशंसा कही संभलावी. पछी तेउ मुनिने नमस्कार करी स्वर्गप्रत्ये गया. मुनि सनत्कुमार पण अनशन व्रत धारण करी सनत्कुमार देवलोक प्रत्ये गया. त्यांथी चवीने महाविदेह क्षेत्रने विषे कर्मनो क्षय करी सिद्धि पामशे. पच्चास हजार वर्ष कुमार अवस्थामां, पच्चास हजार वर्ष सामान्य राजापणे, एक लाख वर्ष चक्रवर्त्तीपदे अने एक लाख चारित्रमां एम ए सनत्कुमार चक्रवर्त्तीनुं कुल त्रण लाख वर्षनुं आयुष्य हतुं.

॥ इति सनत्कुमार चक्रवर्त्ती चरित्रम् ॥

॥ श्री शांतिनाथ चरित्रम् ॥

जेमणे गर्भमां रह्या छतां सर्व जीवोने शांति करी छे, ते शांतिना करणहार श्री शांतिनाथने हुं नमस्कार करुं छुं. श्री शांतिनाथ जिनेश्वरना वार

नवनुं स्वरूप हुं पोताना प्रतिबोधने अर्थे कहुं छुं; माटे हे नव्यजनो ! तमे ते श्री शांतिनाथनां चरित्रने नावथी सांनलो.

आ जंबूद्वीपना नरतक्षेत्रने विषे अनंत रत्नोथी नरपूर एवुं रत्नपुर नामनुं नगर छे. त्यां धर्ममां प्रविण, परोपकारी, प्रजानुं पालन करवामां सावधान, शत्रुनो नाश करवामां समर्थ तेमज नदार, धीर अने गंनीरादि गुणोवालो श्रीषेण नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने शील रूप आनूषणोने धारण करनारी, प्रेमनुं पात्र अने सर्व कलामां कुशल एवी एक अनिनंदिता अने बीजी सिंहनंदिता एम बे स्त्रीयो हती. आ बन्ने स्त्रीयोनी साथे विषय सुख नोगवता एवा श्रीषेण राजाना एक दिवसनी पेठे बहु वर्षो चाल्या गया.

एक दिवस ऋतुकाले स्नान करेली मुख्य स्त्री अनिनंदिता रात्रीये पोताना शयनमंदिरमां सूति हती ते वखते तेणे स्वप्नामां अंधकारनो नाश करनारा सूर्यचंद्रने एकी वखते पोताना खोलामां जोया. पछी जागी नठेली ते राणी हर्ष पामती छती मनमां विचार करवा लागी. “ शास्त्रना जाण पुरुषो एम कहे छे के, नत्तम स्वप्न जोइने ते स्वप्नानी वात जेवातेवा बीजा माणसने कहेवी नहि तेमज पछी सूवुं पण नहि.” आ प्रमाणे विचार करीने ते अनिनंदिता राणीयें स्वप्नानी वात प्रनाते पोताना पति श्रीषेण राजाने कही. राजाए पण पोतानी बुद्धिथी अने शास्त्रथी स्वप्ननां फलनो विचार करीने प्रसन्न वाणीथी राणीने कह्युं. “हे देवी ! आ स्वप्नना महिमाथी तने पृथ्वीमां विख्यात अने कुलने प्रकाश करनारा नत्तम बे पुत्रो थशे.” राजानां आवां वचन सांनलीने प्रसन्न थयेली राणी जेम नपकारी अने करेला गुणने जाणनारा एवा बे पुरुषथी पृथ्वी शोने तेम बे गर्नने धारण करती छती शोनवा लागी. पछी पूर्ण समये जेम नत्तम नीति धर्म अने अर्थने प्रगट करे तेम राणीये शुन अवसरे बे पुत्रोने जन्म आप्यो. पिताए दश दिवस गया पछी महोत्सवपूर्वक ते बन्ने पुत्रोनां इंडुषेण अने बिंडुषेण एवां नाम पाड्यां. अनुक्रमे ते बन्ने कुमारो आठ वर्षना थया एटले पिताए तेमने कलाचार्य पासे अन्यास करवा मोकल्या. त्यां तेन कलानो अन्यास करता करता यौवनावस्था पाम्या.

हवे आ नरतक्षेत्रमां मगध देशने विषे लक्ष्मीथी सुशोनित एवुं अचल नामनुं गाम छे. त्यां वेद अने शास्त्रनो जाण एवो धरणिजटा नामनो ब्राह्म-

ण रहेतो हतो. तेने यशोभद्रा नामनी स्त्री हती. ए यशोभद्राथी नंदिषेण अने श्रीभूति ए नामना बे पुत्रो थया हता. धरणीजटा ब्राह्मण ए बन्ने पुत्रोने निरंतर यत्नथी वेदशास्त्रनो अभ्यास करावतो हतो. वली ए ब्राह्मणने कपिला नामनी दासी हती के, जेनो कपिल नामनो पुत्र हीन जातिनो होवा छतां बहु बुद्धिवान् हतो. धरणीजटा ब्राह्मण पोताना पुत्रोने जे जे भणावतो ते ते सांभलीने कपिल चौद विद्यानो पारगामी थयो. पछी नीच जातिने लीधे मान नहि पामवाथी कपिल पोतानो कंठमां बे जनोइ धारण करी त्यांथी चाली निकल्यो अने "हुं म्होटो ब्राह्मण छुं." एम मानीने पृथ्वी उपर फरतो फरतो रत्नपुर नगरने विषे आव्यो. आ नगरमां सत्यकी नामनो उपाध्याय रहेतो हतो अने ते बहु शिष्योने भणावतो हतो. कपिले ते अभ्यास करनारा शिष्योने वेद तथा उपनिषद्नां एवां प्रश्न पूछ्यां के, जेनो उत्तर आपवाने एक शिष्य पण समर्थ थयो. पछी सत्यकीये तेने बहु गंभीर प्रश्नो कर्यां; पण तेनो उत्तर तो तेणे पोतानी बुद्धिना बलथी तुरतज आपी दीधो; तेथी सत्यकी बहु प्रसन्न थयो. पछी सत्यकीये तेने महा बुद्धिवान् जाणी पोताना उपाध्याय पदने विषे स्थापन कर्यो. कह्युं छे के—गुणोथी कयुं पद नथी मली शकतुं? अर्थात् सर्व पद मली शके छे.

हवे केटलाक दिवस गया पछी कोइ वखते ए सत्यकीनी स्त्री जंबुकाये पोताना पतिने एकांतमां कह्युं के, "हे नाथ! आ सत्यभामा नामनी तमारी पवित्र पुत्री यौवनावस्था पामी छे; माटे हवे तेनो विवाह करवो योग्य छे. वली हे नाथ! आ एक कपिल विना बीजो कयो पुरुष ए पुत्रीनो योग्य वर छे? माटे विशाल बुद्धिवाला ए कपिलनी साथे पुत्रीनो विवाह करो." सत्यकी उपाध्याये प्रियानां आ सर्व वचन मान्य राख्यां. कह्युं छे के—विवाहनां कार्यमां पुरुषो घणुं करीने स्त्रीयोनां कहेवा प्रमाणे करे छे. पछी सत्यकी ब्राह्मणे शुभ दिवसे उत्तम लग्नमां पोतानी पुत्रीने कपिलनी साथे परणावी. वली धन धान्यादिकथी पूर्ण एवुं घर तेने रहेवा माटे आप्युं; तेथी कपिल सघला नगरने विषे प्रसिद्धि पाम्यो. पछी कपिल सत्यभामानी साथे विषयसुख सुख भोगवतो त्यां सुखेथी रहेवा लाग्यो. कारण के, कुलरहित एवाय पण जो विद्यावंत पुरुषो होय तो ते वखणाय छे.

हवे धान्य अने तृणनी वृद्धि करवाथी जगत्ना जीवोने हर्ष पमामनारो ाने डुकालने दूर करनारो वर्षाकाल आव्यो. एवामां एक दिवस रात्रीये देव- ांदिरमां नाटक चालतुं हतुं ते जोवा माटे कपिल त्यां गयो. बहु रात्री गया ाढी नाटक बंध थयुं एटले सौ माणसो पोतपोताने घेर जवा लाग्या. आ व- ाते वर्षाद बहु पमतो हतो अने रात्रीनो घोर अंधकार होवाथी रस्ते कोइ ातुं आवतुं नहोतुं; तेथी कपिल पोताना मनमां विचार करवा लाग्यो के, ' हुं लुगमांने फोगट शा माटे ञिजवुं? अत्यारे रस्तामां कोइ जतुं आवतुं ाथी." आम धारी ते पोताना सर्व लुगमां काढी एक पोटली वांधीने काख- ां घाली नागो नागो पोताना घरनां वारणा पासे आव्यो. त्यां ते सर्व लु- ामां पहेरी घरमां पेठो. आ वखते तेनी स्त्री सत्यञामा घरमांथी बीजां लुग- ां लावीने तेने कहेवा लागी. "हे प्राणनाथ! वरसादथी ञिजायेलां लुगमां- ा काढी नाखी आ कोरां पहेरो." प्रियानां आवां वचन सांञली कपिले कह्युं. 'हे प्रिया! मंत्रशक्तिना प्रञावथी म्हारां लुगमां ञिजायां नथी. जो शंशय ाय तो तपासी जो." पढी सत्यञामाये आश्चर्यथी हाथवमे तपासी जोयुं ो तेनां लुगमां कोरां दीठां; तेथी ते जेटलामां मनमां कांइ विचार करती ाती तेटलामां विजलीना प्रकाशथी सत्यञामाये पोताना पतिनुं शरीर ञिं- ाोयेलुं दीठुं एटले ते विचार करवा लागी के, "निश्चे आ म्हारो पति वरसा- ाथी पोतानां लुगमां ञिजावाना ञयने लीधे सर्व लुगमां गोपवी राखी नागो नागो घेर आव्यो छे. ए पोतानी फोगट स्तुति करे छे. तेनां आवां आचरणथी ते कुलीन नथी, एम निश्चय थाय छे. आवा कुल रहितनी साथे घरवास रा- खवाथी म्हारी पण विंटबना थशे." आ प्रमाणे विचार करी सत्यञामाये तेना उपरथी राग ञगो कर्यो; परंतु लोक लाजथी तेनी साथे घरवास तो राख्यो.

हवे एम बन्युं के धरणीजटा ब्राह्मण महा विद्यावंत छतां कर्मना दोष- थी निर्धन बनी गयो; तेथी कोइ वखते धननी आशाथी ते लोकमां प्रसिद्धि पामेला अने महा धनवंत बनेला कपिलने जाणीने तेने त्यां परुणा तरीके आ- व्यो. पढी ञोजन करवाना अवसरे कपिल कांइक मीष काढी धरणीजटाथी जूदो ञोजन करवा बेठो. आथी सत्यञामाने मनमां वधारे ञ्रांति पेठी; तेथी ते पोतानो पति ञोजन करीने व्हार गया पढी एकांतमां पोताना ससरा ध-

रणीजटा ब्राह्मणने सोगन आपीने पूछवा लागी. " हे तात ! जो तमे म्हारी पासे जुठुं बोलो तो तमने ब्रह्महत्यादि महापाप छे. आ तमारो बुद्धिवान् पुत्र शुद्ध माता पितानां कुलमां उत्पन्न थयेलो ब्राह्मण छे अथवा नीच जातिनो बीजो कोइ छे ? तमे आ वात म्हारी पासे साचे साची कही आपो. " पछी धरणीजटा ब्राह्मणे सोगन पूर्वक जेवुं हतुं तेवुं कपिलनुं सत्य वृत्तांत कही आप्युं. कारणके, संत पुरुषो हंमेशां सत्यने विषे प्रीतिवाला होय छे. पछी कपिले योग्य धन विगेरेथी सत्कार करीने रजा आपवाथी धरणीजटा ब्राह्मण पोताना गामप्रत्ये आव्यो.

हवे विरक्त थयेली सत्यभामा कपिलना घेरथी श्रीषेण राजापक्षे जइ हाथजोडीने कहेवा लागी. " हे देव ! तमे जगतनुं रक्षण करनारा पांचमा लोकपाल छो, वली दीन, अनाथ अने शरणे आवेला सर्व माणसोना आधार छो. माटे हे महाराज ! म्हारा उपर दया करो. " राजाए कह्युं. " हे वत्से ! प्रथम तुं पूज्य एवा सत्यकी उपाध्यायनी मान्यवंत पुत्री अने त्हारा पिताने प्रिय एवा कपिलनी स्त्री छुं, छतां तने एवुं शुं दुःखनुं कारण आवी पड्युं छे-ते कहे ? सत्यभामाये कह्युं. " हे राजन् ! आपे कह्युं ते योग्य छे; परंतु म्हारो पति अकुलीनपणाथी दुषित छे." राजाए "तें ए शी रीते जाण्युं ?" एम पूछ्युं एटले सत्यभामाये पोताना पतिनुं सर्व वृत्तांत कही आप्युं. वली तेणे कह्युं के, " हे पृथ्वीनाथ ! म्हारे एनी साथे घरवासथी सर्युं. हवे आप एवुं करो के, जेथी हुं हंमेशां शुद्ध एवुं शीलव्रत पालुं. " पछी राजाए कपिलने बोलावीने कह्युं के, " हे भद्र ! आ त्हारी प्रिया सत्यभामा घरवासथी वैराग्यवाली थइ छे, माटे तुं पोताना परिग्रहथी ते स्नेह विनानी स्त्रीने त्यजी दे के, जेथी ते पोताना पिताना घेर रही कुलने योग्य एवो धर्म आचरे. " कपिले कह्युं. "हे देव ! हुं एना विना क्षणमात्र रहेवा समर्थ नथी, माटे केम शी रीते त्यजी दउं ?"राजाए फरी सत्यभामाने पूछ्युं एटले तेणे उत्तर आप्यो के, " जो ते मने त्यजी देशे नहि तो हुं निश्चे मृत्यु पामीश." राजाए फरी कपिलने कह्युं के, "अरे तुं एने आग्रहथी पकडी राखी शामाटे स्त्री हत्यानुं पाप बांधे छे ? तुं पापथी पण शुं भय पामतो नथी ? ए अमारी राणीयो पासे सुखेथी केटलाक दिवस रहेशे." राजानां आ वचन कपिले मान्य राख्यां. वि-

नीत एवी सत्यजामा पण शीलनुं रक्षण करती उती केटलाक दिवस सुधी श्रीषेण राजानी प्रियाउ पासे रही.

हवे कोइ वखते कौशांवी नगरीना बल राजाए श्रीमती राणीना उदर थी उत्पन्न थयेली श्रीकांता नामनी पोतानी पुत्री श्रीषेण राजाना पुत्र इंदुषेणनी साथे परणाववा माटे परिवार सहित तेना नगरने विषे मोकली. अत्यंत रूपवाली अने नवयौवनथी मनोहर एवी ते कन्याने जोइ श्रीषेण राजाना इंदुषेण अने बिंदुषेण नामना बन्ने पुत्रो तेने परणवा माटे तैयार थया. पछी तेउ हथीयार बांधी अने कवच धारण करी मदोन्मत्त हाथीनी पेठे देवरमण उद्यानमां जइने परस्पर युद्ध करवा लाग्या. थोमा कषायवालो, निर्मल मनवालो, जिनवचनथी जावित आत्मावालो, क्षमावान् अने प्रियवादी एवो श्रीषेण राजा पोताना पुत्रोने युद्ध करता जोइ तेमने वारवाने समर्थ न थवाथी वैराग्यवंत थइ विचार करवा लाग्यो के, "अहो! विषयनुं लंपटपणुं आश्चर्यकारी छे! कर्मनुं विचित्रपणुं आश्चर्यकारी छे! रागद्वेषरूप शत्रुउ आश्चर्यकारी छे अने मोहनुं विलसित पण आश्चर्यकारी छे! म्हारा पुत्रो महा बुद्धिवंत अने महात्मा छे, उतां तेउ एक कन्याने माटे आवो घोर युद्ध करे छे. पुत्रोनां आवां दुराचरणथी लज्जा पामेलो हुं सज्जामां प्रधानादि उत्तम पुरुषोने म्हारुं मुख केम देखामी शकीश? हवे आ वखते तो मरण पामवुं ए वधारे सारुं छे." आ प्रमाणे विचार करीने श्रीषेण राजाए पोतानो विचार पोतानी बे स्त्रीयोने कह्यो. पछी ते बन्ने स्त्रीयो सहित श्रीषेण राजा पंच नवकारनुं स्मरण करी विषयुक्त कमलने सुंघवाना प्रयोगथी मृत्यु पाम्यो. (पहेलो भव) सत्यजामाये पण नीच एवा कपिलना संगथी जय पामीने श्रीषेण राजानी पेठे पोताना जीवितने त्यजी दीधुं. पछी ते चारे जीवो जंबूद्वीपनी मध्ये रहेला उत्तर कुरुक्षेत्रमां युगलियापणे उत्पन्न थया. तेमां श्रीषेणनो जीव अने तेनी पहेली स्त्री अनिनंदितानो जीव ए एक युगल थयुं तथा बीजी स्त्री सिंहनंदितानो जीव अने सत्यजामानो जीव ए बीजुं युगल उत्पन्न थयुं. (बीजो भव).

हवे कौशांबी नगरीना बल राजानी पुत्री श्रीकांताने माटे श्रीषेण राजाना बे पुत्रो युद्ध करता हता, एवामां क्यांइथी कोइ चारण मुनिये आवीने तेमने कह्युं के, "अरे! उत्तम वंशमां उत्पन्न थयेला तमे बन्ने जणा आवां निंद

करवा योग्य कार्यने माटे युद्ध करतां केम लज्जा नथी पामता? आवुं तमारुं अयोग्य आचरण जोइ तमारो पिता श्रीषेण राजा तमारी बन्ने माताउ सहित विष सुंघवाना प्रयोगथी मृत्यु पाम्यो छे. जे मातापिताना उपकारनो सीमाम्हो आ पृथ्वी उपर मली शके तेम नथी ते मातापिताना विनाशने अर्थे थयेलां आ तमारां दुराचरणने धिक्कार थाउ! धिक्कार थाउ!! अरे मोहनी वेल, बलदने बांधवानी दोरीना सरखी पुरुषने बांधवानी दोरी तेमज पोतानी इच्छा प्रमाणे चालनारी अने क्लेशनी भूमि एवी स्त्रीने त्यजी द्यो."

चारण मुनिनां आवां वचन सांभली प्रबोध पामेला ते बन्ने भाइयोए युद्ध त्यजी दइ अने मुनिने नमस्कार करीने स्तुति करी. हे मुनि! तमेज अमारा गुरु, मातापिता अने स्नेहवंत बंधु छो के, जे तमे रागद्वेषवडे मेलवाती दुर्गतीथी अमारुं रक्षण कर्युं छे." पछी तेउ मुनिने नमस्कार करी अने श्रीकांताने त्यजी दइ घेर गया. त्यां तेमणे पोताना मातापितानुं प्रेतकार्य कर्युं. त्यार पछी तेमणे पोताना गोत्री पुरुषने राज्य आपी धर्मरुचि मुनि पासे चार हजार माणसो सहित चारित्र लीधुं. दीर्घकाल सुधी चारित्र पाली, छठ अठम विगेरे विविध प्रकारनुं तप करी अने छेवट केवल ज्ञान मेलवी तेउ बन्ने भाइयो मोक्ष पाम्या. श्रीषेण राजाना जीव विगेरे जे बे युगल थया हता तेउ पण उत्तर कुरुक्षेत्रने विषे त्रण पल्योपमनुं आयुष्य पूर्ण करी अने पछी चवीने तेउ सौधर्म देवलोकने विषे त्रण पल्योपमनां आयुष्यवाला देवता थया. (त्रीजो भव).

हवे आ भरतक्षेत्रमां वैताढ्य पर्वतनी उत्तर श्रेणिनां आभूषणरूप रथनूपुरचक्रवाल नामनुं उत्तम नगर छे. त्यां ज्वलनजटी नामनो बलवंत विद्याधर राजा राज्य करतो हतो. जेम अग्निने स्वाहा स्त्री छे तेम ते राजाने वायुवेगा नामनी स्त्री हती. ते स्त्रीना उदरथी सूर्यनुं स्वप्न सूचवीने उत्पन्न थयेलो, शत्रुना समूहरूप गाढ अंधकारने नाश करवामां सूर्य समान अर्ककीर्त्ति नामनो पुत्र जन्म्यो हतो. कलाउनो अभ्यास करतो एवो ते पुत्र ज्यारे यौवनावस्था पाम्यो त्यारे सर्वगुण संपन्न ते पुत्रने पिताए युवराज पद्दी आपी. त्यार पछी चंद्रलेखाना स्वप्नने सूचवीने ते वायुवेगाथी बीजी स्वतंत्रपणा रहित स्वयंप्रभा नामनी पुत्री थइ.

एक दिवस ते नगरने विषे पापने नाश करनारा अभिनंदन अने जगत्-

नंदन नामना बे चारणमुनि आव्या. स्वयंप्रभा राजपुत्री ते बन्ने मुनियो पासेथी धर्म सांभली शुद्ध सामाचारीवाली अने पवित्र मनवाली श्राविका थइ. पछी बन्ने मुनियोए त्यांथी विहार कर्यो. कोइ वखते पर्वने दिवसे स्वयंप्रभा राजकन्याये पौषधव्रत कर्युं. पारणाने दिवसे तेणे घरमां रहेली जिनप्रतिमानुं पूजन करी अने पछी पितानी पासे जइने प्रभुनी शेषामाला पिताने आपी. पिताये पण ते शेषामालाने पोताना मस्तक उपर चमावीने पुत्रीने खोलामां वेसारी. पछी पिता पण ते पुत्रीनुं रूप अवस्था विगेरे जोइ मनमां विचार करवा लाग्यो के, "आ म्हारी पुत्री हवे परणाववा योग्य थइ छे; परंतु रूपगुणादिके करीने समान एवो कयो विद्याधर तेनो पति थशे?" आ प्रमाणे विचार करता एवा ज्वलनजटीये "हे वत्से ! जा पारणुं कर." एम कही पुत्रीने रजा आपीने संभिन्नश्रोत नामना निमित्तियाने बोलावीने पूछयुं के, "म्हारी पुत्रीनो योग्य वर कोण थशे?" निमित्तियाए कह्युं के, "हे राजन् ! पोतनपुरना प्रजाप्रति नामना राजाना जे त्रिपृष्ठ अने अचल नामना बे पुत्रो छे, तेउ आ भरतक्षेत्रमां वासुदेव अने बलदेव थवाना छे अने तेउ आ हयग्रीव नामना प्रतिवासुदेवने मारशे. आ प्रमाणे में साधुना मुखथी सांभल्युं छे. वली हुं म्हारा ज्ञानबलथी जाणीने कहुं छुं के, तेज त्रिपृष्ठ तमने विद्याधरपतिपणुं आपशे अने आ तमारी स्वयंप्रभा पुत्री तेनी मुख्य पट्टराणी थशे."

पछी ज्वलनजटी विद्याधरे सत्कार करी निमित्तियाने रजा आपीने मारीचि नामना दूतने पोतनपुरे मोकल्यो. दूते त्यां जइ प्रजापति राजाने नमस्कार करीने कह्युं के, "ज्वलनजटी नामनो अमारो विद्याधरराजा पोतानी स्वयंप्रभा नामनी पुत्री तमारा पुत्र त्रिपृष्ठने आपवानुं कहेवामाटे मने तमारी पासे मोकल्यो छे." प्रजापति राजाए "ए वात अमने पण गमती छे; तेथी हुं ते कबूल करुं छुं." एम कही सत्कार करी दूतने रजा आपी एटले ते दूते रथनूपुरचक्रवाल नगरमां आवी ज्वलनजटीने सर्व समाचार आप्या.

हवे एक दिवसे प्रतिवासुदेव एवा हयग्रीव राजाये अश्वबिंदुप्रत्यय नामना निमित्तियाने पूछयुं के, "म्हारुं मृत्यु कोनाथी थशे?" निमित्तियाए कह्युं "जे पुरुष तमारा चंमवेग नामना दूतनो तिरस्कार करशे अने तमारा शांगरना खेतरोमां उपद्रव करनारा सिंहने मारशे, ते पुरुषथी तमारुं मृत्यु थशे.

निमित्तियानां आवां वचन सांभली हरिग्रीव राजाये तेने सत्कार करी रजा आपी. कोइ वखते हयग्रीव राजाये प्रजापति भूपतिना त्रिपृष्ठ अने अचल नामना बे पुत्रोने क्रूर सांभळ्या; तेथी तेणे ते बन्ने कुमारोने जोवामाटे पोताना चंडवेग नामना दूतने पोतनपुर मोकल्यो. दूत पोतनपुरमां राजानी सभामां गयो ते वखते त्यां नृत्य चालतुं हतुं तेमां ते दूतना आववाथी भंग पड्यो; तेथी त्रिपृष्ठ अने अचल ए बन्ने कुमारो दूत उपर बहु क्रोध पाम्या; परंतु तेउ ते वखते कांइ बोल्या नहि. प्रजापति राजाये दूतनो सत्कार करी रजा आपी एटले ते पोताने नगरे जवा तैयार थयो. आ वखते आगलथी मोकली राखेला दूतोए बन्ने कुमारोने खबर आपी एटले त्रिपृष्ठ तथा अचल बन्ने राजपुत्रोए तेनी पाछल जइ रंगमां भंग करवा रूप ते दूतना अविनयने वारंवार संभारी तेने मुठी अने पाटु विगेरेना प्रहारथी बहु मार्यो. प्रजापतिराजाए पोताना पुत्रोनुं आ वृत्तांत जाण्युं; तेथी तेणे दूत पासे आवी तेनी क्षमा मागीने बहु द्रव्यादिकथी भक्ति करी. हयग्रीव राजाये पोताना दूतनो तिरस्कार थवानी वात सेवको पासेथी सांभली. चंडवेग दूते पण तेनी पासे आवी सर्व वात कही अने कह्युं के, "ए प्रजापति राजाना पुत्रोनुं कर्तव्य हतुं; परंतु प्रजापतिराजा पोते जरा पण तमारी आज्ञा उल्लंघन करतो नथी, माटे आपे तेना उपर क्रोध करवो नहि."

हवे हयग्रीव राजानां डांगरनां खेतरोमां दरेक वर्षे सिंह उपद्रव करतो हतो, तेथी बहु राजाउ वारंवार ते खेतरोनुं रक्षण करता हता. आ वर्षे प्रजापतिनो वारो नहोतो, तो पण क्रोधथी हयग्रीव राजाए दूत मोकली तेनेज खेतरोनुं रक्षण करवानुं कहेवराव्युं. पछी खेतरोनुं रक्षण करवा जवा माटे तैयारी करता एवा पिताने ना पाडीने बलवंत एवा त्रिपृष्ठ तथा अचल ए बन्ने कुमारो डांगरना खेतरो पासे गया. ते वखते डांगरना खेतरोनुं रक्षण करनारा बीजा पुरुषोए विस्मय पामी तेमने कह्युं के, "अरे! आ डांगरना खेतरोनुं तो म्होटा बलवंत राजाउ वाहन उपर बेसी म्होटी सेनाथी रक्षण करे छे अने सेना तथा कवचादिक विना तेनुं रक्षण करवा माटे तमे नवा कोण आवेला छो ?" त्रिपृष्टे कह्युं. "अरे रक्षको! प्रथम तमे मने सिंह देखाडो के, जेने मारीने हुं खेतरोनुं रक्षण करवानो सौनो क्लेश दूर करुं." पछी ते पुरुषोए पर्वतनी गुफामां बेठेलो सिंह देखाड्यो; तेथी त्रिपृष्ट रथमां बेसी गुफाना बारणा पासे गयो. रथना चित्कार शब्दथी

सिंह पण जागी उठीने म्होढाने पोलुं करतो छतो गुफाथी बहार निकळ्यो. सिंहने पगे चालतो जोइ त्रिपृष्ट कुमार रथथी नीचे उतरी पड्यो. वली सिंहने आयुध विना जोइ पोते पण शस्त्र कोरे मूकी दीधां. आवुं कुमारनुं आचरण जोइ सिंह विस्मय पामी विचार करवा लाग्यो के, "अहो! मने आश्चर्य थाय छे के, एक तो ते पोते एकलो आव्यो छे. वली बीजुं मने पगे चालतो जोइ पोते रथथी नीचे उतरी पगे चालवा लाग्यो. छेवटे मने आयुध विनानो जोइ पोते पण आयुध त्यजी दीधां!!! परंतु हुं आजे तेने म्हारा अपमाननुं फल बतावुं." आम धारी सिंहे उंचे उछली तेना माथा उपर पडतुं मूक्युं. कुमारे पण तुरतज पोताना बन्ने हाथ तेनां मुखमां घाली दीधा. पछी एक हाथथी उपला होठने अने बीजा हाथथी नीचला होठने पकडी जीर्ण पांदडानी पेठे ते सिंहने चीरीने पृथ्वी उपर फेंकी दीधो. आ वखते सिंहनुं कलेवर क्रोधथी कंपतुं हतुं; तेने जोइ त्रिपृष्टना सारथीये ते कलेवरने कह्युं के, "अरे सिंह! आ राजकुमार माणसोनो सिंह छे अने तुं पशुओनो सिंह छे. जो सिंहे सिंहने मार्यो छे तो पछी तुं शा माटे क्रोध करे छे?" सारथीनां आवां वचन सांभली प्रसन्न थयेलो सिंह मृत्यु पामी नरके गयो. पछी त्रिपृष्टे सिंहनुं चामडुं विद्याधर साथे हयग्रीव राजाने मोकलावीने कहेवराव्युं के, "तुं म्हारा प्रसादथी हवे शांतपणे चोखानुं भोजन कर." हयग्रीव राजा पण सिंहना चामडाने जोइ अने विद्याधरनां वचन सांभली विचार करवा लाग्यो के, "निश्चे आवा भुज पराक्रमथी ते मने पण पोची वले तेवो छे."

हवे ज्वलनजटी विद्याधरनी पुत्री स्वयंप्रभाने त्रिपृष्टनी साथे परणाववा संबंधी कांइ वात सांभली हयग्रीव राजाए दूत मोकली ते कन्यानुं मागुं कर्युं. ज्वलनजटीये पण तेने कांइ योग्य उत्तर आपीने शांत कर्यो. पछी ते विद्याधरपतिये पोतानी पुत्री स्वयंप्रभा गुप्तरीते पोतनपुर मोकली त्रिपृष्टनी साथे परणावी दीधी. आ वात हयग्रीव राजाना प्रधान हरिस्मश्रुए सांभली; तेथी तेणे ते वात पोताना राजा हयग्रीवने कही. वात सांभलतांज तुरत क्रोध पामेला हयग्रीवे तेने आज्ञा करी के, "त्रिपृष्ट तथा अचल ए बन्ने भाइयोने तथा विद्याधरपति ज्वलनजटीने बांधी तुरत म्हारी पासे लावो." पछी प्रधाने दूत मोकल्यो. दूते रथनूपुरचक्रवालपुरे जइ ज्वलनजटीने कह्युं के, "अरे अमारा महाराजा हयग्रीवने माटे कन्यारत्न मोकली आप. तुं शुं नथी जा

णतो के, रत्नोनो धणी राजा होय छे?" ज्वलनजटीये उत्तर आप्यो के, "मैं ते म्हारी पुत्री त्रिपृष्ठने परणावी छे, माटे ते पुत्रीनुं रक्षण हवणां त्रिपृष्ठ करे छे." पछी त्रिपृष्ठे त्यां आवी दूतने कह्युं के, "अरे दूत! ते कन्याने तो हुं परण्यो छुं, माटे ते कन्यानी इच्छा करनारो त्हारो राजा शुं जीववाथी मृत्युने वधारे पसंद करे छे?" दूते आ वात हयग्रीव राजाने कही; तेथी क्रोध पामेला हयग्रीवे ते पोताना शत्रुउने मारवा माटे बहु सुभटो मोकल्या. त्यां तेउने महा बलवंत एवा त्रिपृष्ठ कुमारे क्षणमात्रमां जीत्या. पछी हयग्रीव पोते चमी आव्यो. त्रिपृष्ठ पण सामो थयो. प्रथम मुख्य सेनापतियोनुं युद्ध चाल्युं, तेमां विद्याधरोये राक्षस, वाघ, भूत, विगेरेनां रूपो धारण कर्यां; तेथी त्रिपृष्ठनी सेना नासी जवा लागी. पछी त्रिपृष्ठे रथमां बेसी सेनानी आगल आवीने शंख वगाड्यो, जेथी तेनो शब्द सांभली सेना तैयार थइने तेनी पासे आवी. पछी त्रिपृष्ठ अने हयग्रीवनुं युद्ध चाल्युं. हयग्रीव जे जे दिव्य शस्त्रो फेंकवा लाग्यो ते ते शस्त्रोने त्रिपृष्ट कापी नाखवा लाग्यो. छेवट अर्धचक्री एवा त्रिपृष्ठे भयंकर चक्र फेंक्युं; पण ते चक्र तो त्रिपृष्ठनी छातिनो स्पर्श करीने तेनी पासे रह्युं. पछी चक्र हाथमां लइ त्रिपृष्ठे हयग्रीवने कह्युं के, "तुं मने नमस्कार करी पोताने मारनारने निवृत्ति पमाड." हयग्रीवे कह्युं. "शत्रुने नमस्कार करवाथी मृत्यु पामवुं ए वधारे सारुं छे; माटे तुं म्हारा उपर चक्र मूक." पछी त्रिपृष्ठे चक्र फेंक्युं; तेथी ते चक्र हयग्रीवनुं मस्तक कापीने फरी त्रिपृष्ट पासे आव्युं. आ वखते आकाशमां उभा रहेला देवताउए त्रिपृष्ठ उपर पुष्पनो वर्षाद कर्यो. पछी त्रिपृष्ठे अर्धा भरतक्षेत्रनें साधी छत्रनी पेठे डावा हाथथी [१]कोटीशिला उपाडी ते उपरथी अनेक विद्याधरो सहित ज्वलनजटी विद्याधरे तेने अर्धचक्रीनो अभिषेक कर्यो. वली त्रिपृष्टनी आज्ञाथी मेघवर्ण नामना विद्याधरे पोतानी पुत्री ज्योतिर्माला (के जे विद्युत्प्रभ विद्याधरनी व्हेन थती हती तेने) अर्ककीर्तिनी साथे परणावी, जेथी अर्ककीर्ति तेनी साथे विषय सुख भोगववा लाग्यो.

हवे श्रीषेण राजानो जीव सौधर्म देवलोकथी चवीने जेम तलावमां राजहंस उतरे तेम ज्योतिर्मालाना उदरने विषे उत्पन्न थयो. ज्योतिर्मालाये ते रात्रीये स्वप्नामां कांतिवंत एवा सूर्यने दीठो. अनुक्रमे अवसरे पुत्र जन्म्यो

---

१ क्रोडमाणसथी उपडे तेवी शिला.

अने तेनुं अमिततेज नाम पाड्युं. पछी अर्ककीर्तिना पिता ज्वलनजटी विद्याधरे अभिनंदन मुनि पासे दीक्षा लीधी. त्यार पछी कपिल ब्राह्मणनी स्त्री सत्यभामानो जीव पहेला देवलोकथी चवीने ज्योतिर्मालाना उदरने विषे अर्ककीर्तिनी पुत्रीपणे उत्पन्न थयो. माताये स्वप्नामां ताराउथी सुशोभित रात्री दीठी हती, तेथी ते पुत्रीनुं सुतारा नाम पाड्युं. अनुक्रमे ते पुत्री युवावस्था पामी. हवे श्रीषेणराजानी स्त्री अभिनंदितानो जीव पहेला देवलोकथी चवीने त्रिपृष्टनी स्त्री स्वयंप्रभा के जे ज्वलनटी विद्याधरनी पुत्री हती तेना उदरने विषे पुत्रपणे अवतर्यो. माताये स्वप्नामां महालक्ष्मीनो अभिषेकोत्सव दीठो हतो; तेथी ते पुत्रनुं 'विजय' एवुं नाम पाड्युं. स्वयंप्रभाये बीजापण एक पुत्रने जन्म आप्यो. तेनुं नाम विजयभद्र पाड्युं, छेवट सिंहनंदितानो जीव स्वर्गथी चवी त्रिपृष्ठनी ज्योतिप्रभा नामनी पुत्रीपणे उत्पन्न थयो. पछी ते पुत्री ज्यारे अनुक्रमे म्होटी थइ त्यारे तेनो स्वयंवर मंडप करी त्रिपृष्ट वासुदेवे दूत मोकली अनेक राजाउने तेड़ाव्या.

आ वखते अर्ककीर्तिये कांइ कार्यमाटे पोताना प्रधानने त्रिपृष्ट वासुदेव पासे मोकल्यो. ते प्रधान त्रिपृष्ट पासे आवी हाथ जोडीने कहेवा लाग्यो के, "हे देव ! जो आप आज्ञा आपो तो अमारा राजा अर्ककीर्तिनी पुत्री सुतारा पण आ तमे रचेला स्वयंवरमां एकठा थयेला राजाउमांथी पोताने इच्छित वर वरे." प्रधाननां आवां वचन सांभली हर्ष पामेला त्रिपृष्ट वासुदेवे कह्युं. "हे प्रधान! तमारे अर्ककीर्ति राजाने केहवुं के, म्हारे तेमना अने म्हारा घरमां कांइ अंतर नथी." पछी पुत्रीने साथे लइ अमिततेज पुत्र सहित अर्ककीर्ति राजा त्रिपृष्ट वासुदेवना पोतनपुर आव्यो. त्यां तेनो त्रिपृष्टे बहु आदर सत्कार कर्यो. पछी त्रिपृष्टे स्वयंवर मंडप रचावी तेमां जूदा जूदा नामवाला सिंहासनो मूकाव्यां. तेमां सर्व राजाउ पोतपोताने सिंहासने बेठा अने त्रिपृष्ट तथा अचल ए बन्ने भाइयो स्वयंवरना मध्यभागे रहेला पोतानां सिंहासन उपर बेठा.

आ वखते स्नान करी श्वेत वस्त्रने धारण करवाथी सुशोभित बनेली, उज्वल अंगराग अने पुष्पमालाथी मनोहर देखाती, म्होटी पालखीमां बेठेली, बन्ने बाजुये चामरोथी विंजाती, ज्योतिःप्रभा अने सुतारा बन्ने कुमारीयो स्वर्गमांथी उतरेली देवकन्यानी पेठे स्वयंवर मंडपमां आवीने पालखीमांथी नीचे

उतरी सर्वे राजाउने जोवा लागी. सर्वे राजाउने जोया पछी त्रिपृष्टनी पुत्री ज्योतिप्रन्नाये अर्ककीर्तिना पुत्र अमिततेज कुमारना कंठमां वरमाला पहेरावी अने अर्ककीर्तिनी पुत्री सुताराये त्रिपृष्टना पुत्र विजयना कंठमां वरमाला पहेरावी. ते अवसरे विद्याधरो, राजाउ अने बीजा माणसो हर्ष पामता छतां "सारुं वरी! सारुं वरी!!" एम म्होटा शब्द करवा लाग्या. पछी त्रिपृष्टे अने अर्ककीर्तिये बीजा सर्व राजाउने सत्कार करी रजा आपीने पोतपोतानी पुत्रीनो विवाह कर्यो. पछी अर्ककीर्ति ज्योतिप्रन्ना (पोताना पुत्र अमिततेजनी वहु) ने साथे लइ अने पोतानी पुत्री सुताराने त्यां त्रिपृष्टने घेर मूकी पोताना नगर प्रत्ये आव्यो. केटलाक दिवस पछी वैराग्यवंत थयेला तेणे मुनि पासे चारित्र लीधुं.

हवे त्रिपृष्ट वासुदेव मृत्यु पाम्या पछी कोइ वखते श्री श्रेयांसनाथना शिष्य सुवर्ण कुंन्न नामना मुनि परिवार सहित पोतनपुरे आव्या. मुनिने आव्या जाणी त्रिपृष्टनो न्नाइ अचल (बलदेव) तेमने वंदना करवा गयो. *त्यां तेणे आचार्यने नमस्कार करी योग्य स्थानके बेसी मोहनिद्राने नाश करनारी* धर्मदेशना सांन्नली. पछी अवसरे तेणे मुनिने पूछ्युं के, "हे न्नगवन्! विश्वमां प्रख्यात अने गुणोए करीने म्होटो एवो म्हारो न्हानो न्नाइ त्रिपृष्ट वासुदेव कइ गति पाम्यो छे?" मुनिये कह्युं. "हे राजन्! पंचेंद्रियनो वध करवामां प्रीतिवालो अने महा आरंन्न करवामां सावधान एवो ते क्रूर त्हारो न्हानो न्नाइ त्रिपृष्ट वासुदेव मृत्यु पामीने सातमी नरके गयो छे." मुनिनां आवां वचन सांन्नली स्नेहथी मोह पामेलो अचल विलाप करवा लाग्यो के, "विश्वमां वीर एवा हे धैर्यधारी न्नाइ! त्हारी आ शी गति थइ!!! गुरुए कह्युं. "हे राजन्! तुं शोक न कर. पूर्वना जिनेश्वरोए कह्युं छे, ते सांन्नल. ए त्हारो न्नाइ आ न्नरतक्षेत्रने विषे छेल्लो तीर्थंकर थशे." मुनिनां आवां वचन सांन्नली अचले (बलदेवे) विजयने राज्यासन उपर बेसारी अने विजयन्नद्रने युवराज पद्वी आपी पोते तेज सुगुरु पासे दीक्षा लीधी.

पछी एक दिवस सन्नामां बेठेला विजयराजानी पासे द्वारपाले आवीने विनंती करी के, "हे प्रन्नो! आपना मंदिरना बारणा पासे आपने मलवानी इछा करतो एवो कोइ निमित्तियो उन्नो छे, ते अहिं आवे के पाछो जाय?" राजाए तेने आववानी रजा आपी एटले निमित्तियो सन्नामां आवी राजाने

आशीर्वाद आपीने योग्य स्थानके बेगे. पगी राजाए तेने कह्युं के, "हे निमित्तना जाण! त्हारा हाथमां पुस्तक रहेलुं बे, माटे हवणां जे कांइ सारुं अथवा खोटुं त्हारा जोवामां आवतुं होय ते मने कहे." निमित्तियाए कह्युं. "हे देव! हुं आ वखते म्हारा ज्ञानथी जे कांइ जोउं बुं, ते कहेवाने समर्थ नथी बतां पण आपनी आज्ञाथी कहुं बुं के, "आजथी सातमे दिवस पोतनपुरना राजाना मस्तक उपर विजली पमशे." निमित्तियानां आवां वचन सांजली सर्व सन्ना वज्रथी हणायेलानी पेठे बहु दुःखवाली थइ. विजयराजाए पण क्रोध पामी तेने कह्युं के, "अरे दुर्मति! पोतनपुरना राजाना मस्तक उपर ज्यारे विजली पमवानी बे त्यारे त्हारा मस्तक उपर शुं पमवानुं बे ते तो कहे?" निमित्तियाए कह्युं. "महाराज! तमे म्हारा उपर शामाटे कोप करो बो? में जेवुं म्हारा ज्ञानथी जाण्युं बे तेज प्रमाणे थवानुं बे. बीजी रीते ते थवानुं नथी. वली म्हारा मस्तक उपर वस्त्र, आन्नूषण अने रत्नोनी वृष्टि थवानी बे." राजाए कह्युं. "तुं आ निमित्तशास्त्र कोनी पासेथी जण्यो बे?" निमित्तियाए कह्युं. "हे महाराज! जे वखते बलदेवे दीक्षा लीधी ते वखते में पण तेमनीज साथे दीक्षा लइ केटलोक काल पाली हती. ते अवसरे में शास्त्रनो अन्यास कर्यो हतो तेज हुं आपने कहुं बुं के, सर्वज्ञना शासन विना बीजे कोइ ठेकाणे सम्यक्ज्ञान नथी. त्यार पगी हुं विषयमां आसक्त थवाथी फरी गृहस्थावस्थामां आवी पम्यो अने विवाह करी धननी इच्छाथी अहिं आव्यो बुं."

पगी ते निमित्तियानुं सत्य निमित्त जाणी सर्वे राजलोको ते वखते पोताना राजानुं रक्षण करवाना विचारथी आकुल व्याकुल थवा लाग्या. एवामां एक मंत्रीये कह्युं के, "आपणे सात दिवस सुधी महाराजाने वहाणमां बेसारी प्रयत्नथी समुद्रनी मध्ये राखीये" बीजाए कह्युं के, "पाणीनी अंदर विजली पेसी शके नहि, परंतु वहाणमां पमती एवी ते विजलीने कोण निवारण करी शके तेम बे? माटे महाराजने वैताढ्य पर्वतनी गुप्त गुफामां राखीने विजलीना जयथी रक्षण करवा." आ अवसरे त्रीजो मंत्री बोली उठ्यो के, "ए उपाय पण सुखकारी नथी; परंतु नाशनुं कारण बे. तेनुं दृष्टांत सांजलो:

विजयपुर नगरमां रुद्रसोम नामनो ब्राह्मण रहेतो हतो. तेने ज्वलन-

शिखा नामनी स्त्री हती. तेने सखी नामनो पुत्र हतो. ते नगरमां मांसनो लोलुपी कोइ राक्षस रहेतो हतो. ते हमेशां बहु माणसोने मारतो हतो, तेथी ते नगरना राजाए तेने एक एक माणस हमेशां आपवानी व्यवस्था करी हती. तेमां तेणे एवी गोठवण करी हती के, ते नगरना माणसोना नामनी चीठी- यो करीने एक म्होटा पात्रमां भरी राखीने तेमांथी हंमेशां एक चीठी काढ- वी. तेमां जेनुं नाम आवे ते माणसनो वारो ते दिवसे होवाथी तेने राक्षस पा- से मोकली आपे अने ते दिवसे बाकीना माणसोनुं रक्षण करे. एम करतां क- रतां एक दिवस रुद्रसोम ब्राह्मणना पुत्रनुं नाम निकलवाथी तेनो वारो आ- व्यो एटले तेनी माता बहु दुःख पामीने रोवा लागी. तेनो रोवानो शब्द सां- भली तेना घरनी पासे रहेनारा दयावंत भूतो त्यां आवीने कहेवा लाग्या के, "हे मात! तमे दुःख पामशो नहि. राजा ज्यारे तमारो पुत्र राक्षसने सोंपशे त्यारे अमे तेने पाछो लावी तमने आपिशुं." भूतोनां आवां वचनथी ज्वल- शिखा हर्ष पामी. पछी राजाए ज्यारे तेनो पुत्र राक्षसने सोंप्यो त्यारे भूतोए तेने पाछो आणी माताने सोंप्यो. पुत्रना मृत्युथी भय पामती एवी माताये पण तेने तुरत पर्वतनी गुफामां मूकी बारणुं बंध करी दीधुं. परंतु ते गुफानी अंदर पण म्होटो अजगर रहेतो हतो तेणे ते पुत्रने रात्रीये गळ्यो. त्रीजो मं- त्री कहे छे के, हुं एटलाज माटे कहुं छुं के, माणसोनुं कर्म कोइथी फेरवी श- काय तेम नथी. महाराजानुं जे थवानुं हशे ते थशे; तो पण तेमना विघ्ननी शांतिने माटे अमे तो तप करिशुं.

चोथा मंत्रीये कह्युं. "ए त्रीजा मंत्रीये कह्युं ते सत्य छे; परंतु जे म्हारा मनमां छे ते पण हुं तमने कहुं. आ निमित्तियाए पोतनपुरना राजाना मस्तक उपर विजली पडवानुं कह्युं छे; कांइ विजय राजानाज मस्तक उपर पडवानुं कह्युं नथी; माटे आपणे सात दिवस सुधी पोतनपुरनी राजपद्वी बीजा कोइ- ने सोंपवी." चोथा मंत्रीनां आ वचनने निमित्तियाए बहु वखाण्यां अने वली तेणे कह्युं के, "हुं आ वातज कहेवा माटे अहिं आव्यो हतो. ए विना बीजा विचार करवाथी शुं ? राजा सात दिवस सुधी जिनमंदिरमां रहीने तप करो के, जेथी आ म्होटी आपत्ति उल्लंघी जवाय." राजाए कह्युं. "आपणे जे कोइने सात दिवस राजपद्वी आपशुं ते मृत्यु पामशे; माटे आ वातनो भेद

व्हार पामवो नहि." मंत्रीयोए कह्युं. "महाराज! आपे कह्युं ते योग्य छे; परंतु आपणे राज्याभिषेक आ यक्षप्रतिमाने करीये. जो देवताना प्रभावथी आपत्ति नहि आवे तो सारुं, नहितो आ काष्टमय यक्षप्रतिमानोज नाश थशे." पछी विजय राजा अंतःपुर सहित जिनमंदिरमां जइ पौषध व्रत लइने संथारा उपर बेसी तप नियमथी पवित्र आत्मावालो थयो छतो मुनिनी पेठे रह्यो. मंत्री सामंत विगेरे बीजा अधिकारीयो पण राजाना पदे यक्षनी प्रतिमाने स्थापीने तेनी पासे रह्या. पछी सातमे दिवस मेघथी आकाश व्याप्त थइ गयुं अने घोर गर्जनाथी वरसाद पमवा लाग्यो. विजली वारंवार प्रकाश करती छती आकाशमांथी जाणे यम राजानो दंम होयनी? एम यक्षनी प्रतिमा उपर पमी, जेथी राजाने ते महा उपसर्ग आवी विधि करवाथी विनाश पाम्यो. पछी निमित्तियानां वचनथी राजा पोताना घर प्रत्ये आव्यो. त्यां अंतःपुरनी स्त्रीयोये हर्षितचित्तथी वस्त्र, आभूषण अने रत्नोथी निमित्तियानो सत्कार कर्यो. राजाए पण तेने बहु धन आपवा पूर्वक रजा आपीने यक्षनी रत्नमय मूर्ति करावी. वली कल्याणनी परंपरा करनारी जिनबिंबनी पूजा रचावीने जाणे फरीथीज जन्म पाम्यो होयनी? तेम महोत्सव करी राजा फरीथी राज्यासन उपर बेठो.

हवे एक दिवस विजय राजा सुतारा पट्टराणी सहित क्रीमा करवा माटे ज्योतिर्वन नामना उद्यानने विषे गयो. त्यां पर्वतनी एक बाजुए छायामां पतिनी साथे क्रीमा करती एवी सुताराये सुवर्णना अंगवालुं अने मनोहर नेत्रवालुं एक मृग दीठुं. पछी तेणे पतिने कह्युं के, "हे नाथ! ए मृग मने लावी आपो." प्रियाना स्नेहथी मोह पामेलो राजा ते मृगनी पाछल दोम्यो, पण मृग तो बहु दूर गया पछी वेगथी उछलीने आकाशमां चाल्युं गयुं.आ वखते अशनिघोष नामनो विद्याधर वायुना वेगथी सुताराने हरण करी पोताने नगरे लइ गयो. वली पापी एवा ते विद्याधरे प्रतारणी नामनी पोतानी विद्याने त्यां सुतारानुं रूप बनावी मूकी. पछी ते कार्त्रिम सुताराने कुर्कुट सापे दंश दीधो; तेथी ते "हे नाथ! ऊट पाछा आवो! ऊट पाछा आवो!!" एम पोकार करवा लागी. विजय राजा तुरत पाछो आव्यो तो तेणे विषनी वेदनाथी पीमा पामती एवी प्रियाने दीठी. क्षणवारमां तो करमाइ गयेला मुखवाली